श्रीनाथजी.

श्रीनृत्यगोपालो जयतितराम् ।

श्रीकृष्णगढाधीश श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा
जी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री सावन्तसिंहजी
द्वितियहरिसंबंधनाम नागरीदासजीकृत—

नागरसमुच्चय:

जिस्को

श्रीमन्महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८ श्री श्री शार्दू
लसिंहजी महाराज जी. सी. आई. ई.
कृष्णगढाधिपतिके आज्ञानुसार

मुंबईमें.

पं० श्रीधर शिवलालजीनें अपने स्वकीय

ज्ञानसागर

पं० श्रीधर[illegible]के प्रसिद्ध लील ग

श्रीनाथजी

अर्पणपत्रिका.

श्रीमान् क्षत्रियकुल तिलक, राठोर वंशावतंस, वीर पुंगव महाराजाधिराज, गोब्राह्मण प्रतिपालक श्री श्री श्री १०८ श्री श्री शार्दूल सिंहजी महाराज जी. सी. आई. ई. धीर वीर चिर प्रतापी सदा समरविजयी कृष्णगढाधीश तथा श्रीमानके लघु भ्राता श्रीमान दीक्षितादि पदवी प्राप्त श्रीयुत महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८ श्री श्री जवानसिंहजी महोदयकी सेवामें श्रीयुतकी गुणग्राहकता, परोपकार, स्वधर्म परायणता, प्रजापालनता, प्रभृति अनेक सद्गुणोंके तथा श्री महाराज के यहां विद्या ओर लक्ष्मी सदैव निवास करतीहै जिन्होंके पूर्वज श्रीयुत् महाराजाधिराज नागरीदासजी कृत नागर समुच्चयको श्रीमहाराज के आज्ञानुसार छापके नम्रता पूर्वक अर्पण करता हूं।

महाराजकी प्रजा ... राज्यभक्त,

पं० श्रीधरा... किसनलाल गो...

श्रीनाथजी.

भूमिका.

उस सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर करुणा वरुणालय श्रीकृष्ण चंद्र आनन्द कन्द विविधगुण विशिष्टको कोटिशः धन्यवादहै जिसके कृपासागरके एक बिंदुमात्रपर प्राणीमात्रका कल्याण निर्भरहै. उसी कृपा समूहके आधारपर अवलंवन कर सृष्टिके आरंभसे लेकर आज तकमें अनेक भगवद्भक्त इस असार संसारमें जन्म ग्रहणकर अपने सुललित उपदेशों और अपने सद्गुणोंसे प्राणीमात्रका उपकार करगये हैं. यों तो कृष्ण गढका राज्य वंश आरंभसे लेकर आज तक प्रजा पालनादि सद्गुणोंमें और न्याय परायणता तथाच दया धर्म में विख्यात हो गया और होते जाता हैं पर जिसकी समता इस समयभी अन्य राज्य वंशोंमेंसे कोई भगवद्भक्ति नहीं कर सकता परंतु अहाहा ! इस ग्रंथके रचयिता श्रीमान् महाराजा धिराज सावन्तसिंहजी द्वितिय हरिसंबंध नाम नागरीदासजी महाराज महोदयकी अपूर्व भक्तिका तो कहना ही क्याहै !! जिन्होने केवल ईश्वर भक्तिके लिये राज्यको छोड संसारसे विरक्त हो श्रीवृंदावन धाममें वास कर अपनेको इस घोर कलिकालमें एक उदाहरण बनादिया. ऐसे महात्माका जीवन च-त्र और उनकी कतिपय कविताओंका संग्रह प्रिय हिन्दी रसिकोंके त रखना कितना आवश्यक है इस बातका विचार प्रिय पाठकों ही करना चाहिये. उन भगवद्भक्ति परायण महानु भावके जीवन रित्रसे शिक्षा प्राप्त करने और उनके सदुपदेशोंसे अपने चारित्रका संशोधन करनेके लिये यह पुस्तक एक उत्तम मार्गहै. ऐसे अलभ्य रत्नों का संग्रह करनाभी मेर जैसे तुच्छ मनुष्यके लिये महाकठिन था परंतु

धन्यहै श्रीमान् महाराजा धिराज श्री श्री श्री १०८श्री श्रीशार्दूल सिंहजी महाराज जी. सी. आइ. ई. धीर वीर चिर प्रतापी कृष्ण गढाधीश एवं उनके लघु भ्राता श्रीयुत श्रीश्रीश्री १०८श्रीश्री दीक्षितजी महाराज श्री जवान सिंहजीको सो जिनकी कृपासे मुझको यह बहु मुल्यरत्न आज पाठकोंके दृष्टि गोचर करनेके लिये प्राप्त हुवाहै. इस बातसे उक्त श्रीमानोंनें हिन्दी रसिकोंके लाभ एवं मनोरंजनके लिये मुझको इस पुस्तकके छापनेकी आज्ञा देनेके सिवाय धनसंबंधी सहायता देकर प्रथम आवृत्तिके लिये इसका मूल्य केवल, दो (२) रुपैये अंदाजन रखनेकी आज्ञा दी है. क्योंकि भाग्यवान तो चाहेसो द्रव्य खचके ले सक्ता है परंतु साधु माहात्मा या साधारण को कष्ट न होनेके लिये.

यदि हिन्दीके रसिक जन इसको आश्रय देकर कुछभी लाभ उठावेंगे तो मैं अपनेको कृतार्थ समझूंगा.

मुंबई श्री ज्ञानसागर यंत्रालय चैत्रशुक्ल१ ॥ संवत् १९५५	कृष्णगढकी प्रजाँमे से राज्यभक्त और हिन्दीका हितैषी प्रकाशक

पंडित श्रीधरात्मज

किसनलाल गौड

सलेमाबाद निवासी.

श्रीनाथजी ॥

सूचना

-इस पुस्तकमें खकार दोनों तरहके छपे हैं सो पाठक-
ापर ध्यान देके समझ लेवें ।

तहा, जहा, जिहि, इहि इत्यादि शब्दोंपर अनुस्वार
ह सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

कोऊ, इत्यादि शब्दोंमें गुरुका लघु पढा जाता है
। पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

भापा—यह पद जहां है वहां वचानिका चाहिये सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

ध, घ—ये अक्षर भी वहुतसे समान हैं सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें ।

श, ष, स—इनको भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

व, ब,—इनको भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

सो वानैं, सो; वानैं—ऐसे कई स्थानपर पद मिल रहे हैं सो भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

को, कौ, टो, टौ—इत्यादि शब्दोंको अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें ।

ऱ्हैं—इसको (ह्वैं) समझना चाहिये

१४० के पृष्ठसे बहुतसे अक्षरोंके व्यंजनका चिन्ह नीचे लगाया है। उसका तात्पर्य यह है कि, ग्रंथ कर्त्ताने उनका पूरा उच्चारण नहीं किया हैं। कदाचित् इनका पूरा एक मात्रिक उच्चारण किया जाय तो छंद् भंग होता है। और जिनके नीचे व्यंजनका चिन्ह किया है उनका उच्चारण पूर्वअक्षरके साथ होता है। सो पाठक गणको उच्चारण करनेमें विदित होगा।

ग्रंथ संशोधक—

कवीश्वर जयलाल.

श्रीनाथजी ।

नागरसमुच्चयके ग्रंथोंका सूचीपत्र.

वैराग्यसागरे ।

शृंगारसागरे।

उत्सवमालाके उत्सवोंका सूचीपत्र।

उतसवमालामें रागहैं जिनके नाम ।

ये राग कई वार आगये हैं । परन्तु पाठक गणोंके जाननेके लिये एक वार लिखे हैं कि इस ग्रंथमें इतने राग हैं ॥

पद मुक्तावलीमें रागहैं जिनके नाम.

ये राग कईबार आगये हैं। परंतु पाठकगणोंके जाननेके लिये एक एकबार लिखे हैं कि इस ग्रंथमें इतने रागहैं।

उत्सवमालाके पदोंका सूचीपत्र।

पदमुक्तावलीके पदोंका सूचीपत्र

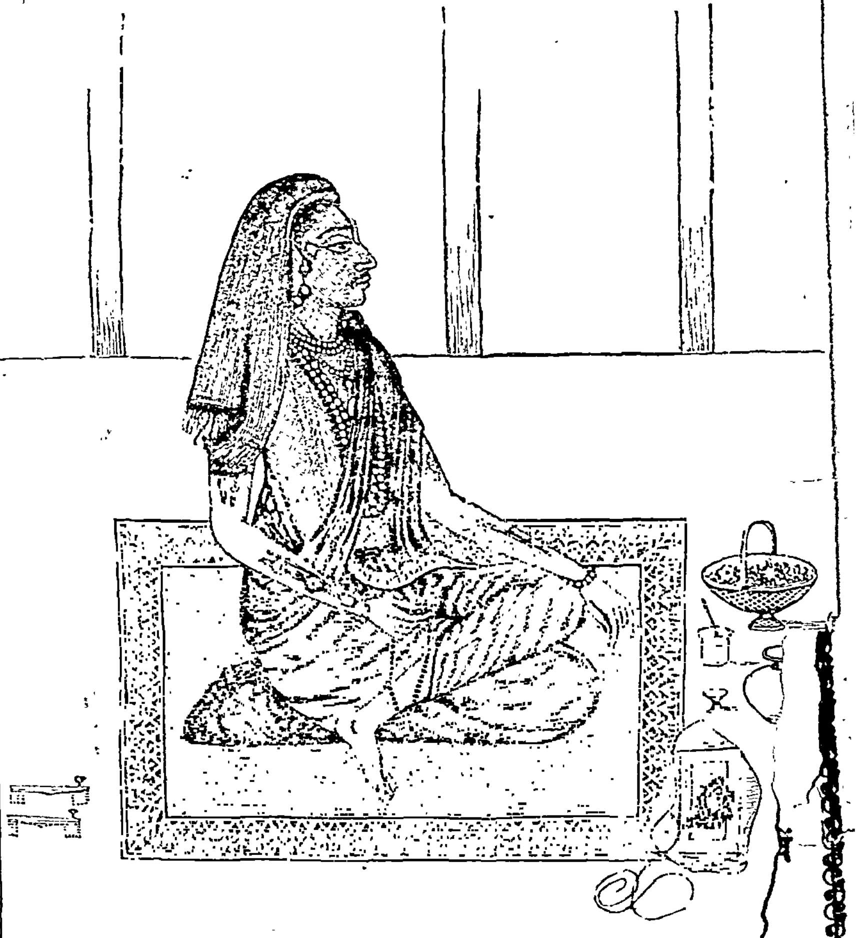
ष

श्रीनाथजी।
महाराज श्रीनागरीदा-
सजीका जीवनचरित्र।

॥ श्रीनाथजी ॥

॥ श्रीनृत्यगोपालोजयति ॥ श्रीयज्ञनारायणोजयति ॥

॥ सर्बसके शिर धूरदे ॥ सर्बस की व्रज धूर ॥



तसवीर कृष्णगढाधीश माहाराजाधिराज माहाराज श्री

न्तसिंहजी तद्वितीयहरिसम्बंधि नाम माहाराज श्रीनागरीदासजी

श्रीः ।

(बाबू राधाकृष्णदास लिखित)

श्रीनागरीदासजीका जीवन चरित्र*.

पिय प्यारी अनुराग मधु, मत्त मधुप सुखरास ।
गुप्त प्रेम अनुभव छके, जयति नागरीदास ॥

आज हम उस महानुभाव भगवद्वंश महात्माके चरित्र लिखनेमें प्रवृत्त हुए हैं जिसके गुप्त प्रेमानुभव भाव को स्मरण करतेही सहृदय रसिक मात्र को

---

* मेरी इच्छा बहुत दिनों से श्रीनागरीदासजीका जीवनचरित्र लिखनेकी थी परन्तु ठीक २ पता न लगनेसे न लिखसका, मित्रवर बाबू अमीरसिंहजी द्वारा कई ग्रन्थोंके मिलने से वह इच्छा पूरी हुई और एक जीवनी लिखीथी जो कि "नागरीप्रचारिणी सभा"के उत्साही सभ्योंकी इच्छानुसार ता०२४ मार्च सन १८९४ ई० को सभामें पढ़ीगई थी। सभाके अनुरोधसे "खड्गविलास यंत्रालय" के स्वामी महाराजकुमार बाबू रामदीनसिंहजी ने अपने यंत्रालयमें उसको छाप कर प्रकाशित किया था। परन्तु उससे मुझे संतोष न हुआ ...अपने मित्र कुंअर जोधसिंह जी मेहता की कृपा से कृष्णगढ़ के दीवान राव... ...ुर श्यामसुन्दरलालजी द्वारा कृष्णगढ के कवीश्वर जयलालजी से नाग... ...सजी के वृत्तांत मँगाए, उसके देखने पर मेरे हृदय में कई सन्देह हुए और ...ो लिखकर उन सभों के उत्तर मँगाए और तब जीवनी लिखनी आरम्भ ...इसी बीच में पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजीने इनकी जीवनी पर ...लेख एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपवाया, जिसे देख कर और भी ...ढ़ा और यह जीवनी लिख आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करता हूं ...क्त महाशयों को धन्यवाद देता हूं।

इसके पहिले संस्करणमें भ्रम से महाराज सावंतसिंह के स्थानपर महाराज ...सिंह छप गया था।

॥ श्रीनृत्यगोपाल॥ जिसे भाषा का जयदेव कहने पर भी हृदय को संतोष
॥ सर्बस ! हमारे प्यारे नागरीदासजी के प्रेम रंग रँगे चित्र का
.न करेंगे वे अनुरागरसमत्त झुके और डबडबाए नेत्रों में अलौ-
झलक से अवश्य मोहित से होजांयगे और जैसा महानुभाव
.के दर्शन मात्र से अपने चित्त का विलक्षण परिवर्तन होता है उसका
.वं प्राप्तकरसकेंगे। हम यहां उनके हृदय के चित्रस्वरूप इस पद को अपने
.प्रय पाठकों को सुनाये विना आगे नहीं बढ़सक्ते--

"गावनि रोवनि मौनहिमें व्है मौनहि मांझ सराहनि। रोके ऊर्द्ध उसास मौन में यह दुख कठिन निबाहनि॥ बरे बिजाती निकट काठ से लगे रहैं हियदाहनि। नागर सुखसागर किन भेटौ यह अब दुख अवगाहनि॥ १॥"

नागरीदास इस नाम के चार महात्मा हुए हैं। सबसे प्रथम श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु के शिष्य आगरा में रहते थे जिनकी कथा[1] "चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता" में है और जिनके विषय में गोस्वामि श्रीहितहरिवंशजी के शिष्य श्री-ध्रुवदासजी ने अपने ग्रन्थ "भक्तनामावली" में लिखा है।

"नेही नागरिदास अति, जानत नेह की रीति
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रंगीली प्रीति॥ २॥"

ध्रुवदास जी ने सम्वत १६८६ में "श्री वृन्दावन सतक" और सम्वत १७०२ में "रहसि मंजरी" बनाई थी परंतु "भक्त नामावली" में सम्वत नहीं लिखा।

इन्हीं बड़े नागरीदास जी के विषय में भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्र ने अपने "उत्त-रार्द्ध भक्तमाल" में लिखा है।

"हिय गुप्त वियोगहि अनुभवत बड़े नागरीदास हे।
वारवधू ढिग वसत सबै कछु पीयो खायो॥
पै छनहूं हिय सों नहिं सो अनुभव बिसरायो।

---

१ "इन नागरीदासजी का नाम चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता में तथा दोसो[बावन] वैष्णवों की वार्ता में नहीं मिला। परन्तु ग्रंथकर्ता बाबूराधाकृष्ण दासज[ी के] लिखने से लिखा।

सुनतहिं विट्ठल नाम भक्त मुख श्रवन मझारी ॥
प्रान तज्यो कहि अहो अजौं सुधि लिन्हें हमारी ।
दरसनही दे हरि भक्त अपराध कुट जन दुख दहे ॥"

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य का जन्म सम्वत १५३५ में हुआ था अतएव उसी के लगभग इनका भी काल है ।

दूसरे नागरीदास जी श्रीस्वामी हरिदासजी के शिष्य परंपरामें हुए हैं । मिस्टर ग्रोस साहब अपने "मथुरा" नामक ग्रन्थ में यह परंपरा यों लिखते हैं- श्री स्वामी हरिदास के शिष्य विट्ठलविपुलजी (जो कि उक्त स्वामी के चाचा थे) उनके बिहारिनिदास और उनके नागरीदासजी । सम्वत १५३७ में श्रीस्वामीजी लीला में प्राप्त हुए और उनकी गद्दी पर विट्ठल विपुलजी विराजे । यदि २० बर्षकी अवधि महंती की मानली जाय तो श्री नागरीदासजीका सम्वत १५७७ के लगभग होता है । इनके विषय में ध्रुवदासजी लिखतेहैं ।

' नागरि अरु हरिदास मिलि, सेये नित हरिदास ।
वृन्दावन पायो दुहुनि, पूजी मन की आस ॥ १ ॥

तीसरे नागरीदास जी श्री गोस्वामी हितहरिवंशजी वा श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके सम्प्रदाय में हुए हैं इनका काल भी १५५० सम्वत से १६०० के लगभग समझना चाहिए । इनके विषय में ध्रुवदास जी लिखते हैं:—

" रमन दास अद्भुत हुते, करतकवित्त सुढार ।
बात प्रेमकी सुनतही, छुटत नैन जलधार ॥ १ ॥
बोरोरस में फिरै सो, खोजत नेह की बात ।
आछे रस के बचन सुनि, बेगि बिवस व्है जात ॥ २ ॥
कहा कहौं मृदुल सुभाउ अति, सरस नागरीदास ।
बिहारी बिहारिनि को सुजस, गायो हरषि हुलास ॥ ३ ॥

इन दोनों नागरीदासजी के विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं ।

"श्रीवृन्दावन के सूरससि, उभय नागरीदास जन ।
*निज गुरु श्रीहरिवंश कृष्णचैतन्य चरनरत ॥

---

* यहां भ्रम होता है ।

हरि सेवा में सुद्द, काम क्रोधादि दोष गत ।
अद्भुत पद बहु किए दीनजन हे रस पोषे ॥
प्रभु पद रति विस्तारि भक्त जन मन संतोषे ।
दृढ़ सखी भाव जिय में बसत सपनेहुं नहिं कहुं औरमन ।

चौथे नागरीदासजी हमारे ग्रन्थ के नायक महाराज सावंतसिंह कृष्णगढ़ (राजपूताना) नरेश उपनाम श्रीनागरीदासजी हैं । ये महाप्रभु वल्लभाचार्य संप्रदाय के शिष्य थे । इनके विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं ।

"हरिप्रेममाल रस जाल के नागरिदास सुमेर भे ।
वल्लभ पथहिं दृढ़ाइ कृष्णगढ़ राजहिं छोड्यो ।
धन जन मान कुटुम्बहिं बाधक लखि मुख मोड्यो ॥
केवल अनुभव सिद्ध गुप्त रसचरित बखाने ।
हिय सँजोग उच्छलित और सपनेहुं नहिं जाने ।
करि कुटी रमण रेती बसत संपति भक्ति कुबेर भे ॥"

भाषा कवि चूडामणि श्री आनन्दघनजी से इनसे बड़ाही प्रेमथा । हमारे यहां एक अत्यंत प्राचीन चित्र है जिसमें नागरीदासजी और घनआनंदजी एक साथ विराजते हैं । घनआनंदजी के विषयमें भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्रजी "सुजानशतक" की भूमिका में लिखते हैं:—

"आनंदघनजी जाति के कायस्थ थे और मुहम्मदशाह के मुन्सी थे ज्ञान-विद्या और कविता दोनों विषयों में अति कुशलथे और सच्चे प्रेमीथे अंतसमय में घर छोड़ कर श्री वृन्दावन बास करतेथे । नादिरशाहने जब मथुरा लूटी तो उसी मार काट में ये भी मारे गए ।"

"शिवसिंह सरोज" में इनका समय सम्वत् १७१५ लिखाहै ।

ठीक यही बात नागरीदास जी के विषय में भी प्रसिद्ध है कि मथुराके कत्लेआममें कट गए परन्तु श्रीवृन्दावन बास न छोड़ा, परन्तु "वनजनप्रशंसक" ग्रन्थ में जिसे नागरीदासजी ने सम्वत १८१९ में बनाया वे लिखते हैं:—

"अष्टादश शतदश जु नव, सम्वत माघसुमास ।
वनजनप्रसंस ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ॥"

---

१ बाबू राधाकृष्ण दासजीके यहां

इससे प्रमाणित हुआ कि सम्वत १८१९ तक नागरीदासजी वर्तमान थे और सम्वत १८१४ [सन् १७५७ ई० में] शाह आलम सानी के समय में अहमद दुर्रानी ने मथुरामे कत्लेआम किया था। इस विषय में कवीश्वर जयलालजी ने मुझे* यह लिखा है:—

"कत्लेआम होने की खबर यहां कृष्णगढ़ रूपनगर में गुप्त आ पहुंचीथी, नागरीदासजी के छोटे भाई बहादुरसिंहजी और नागरीदास जी के पुत्र सरदारसिंहजी ने इनको अर्जी लिखीथी कि कुटुम्बयात्रा के लिये यहां अवश्य पधारें तब इसधोखा दई से यहां आगए थे फिर छ महीने रह कर पीछे वृन्दावन ही पधार गए।

सं० १८२१ की भादव सुदी ३ को वृन्दावनही में परलोक निवासी हुए वहां उनकी छतरी है जिसमें लेख भी है।"

चारों नागरीदास जी कविता करते थे और ये सब कविता ऐसी मिल जुल गई हैं कि कुछ पता नहीं लगता कि कौन कविता किसकी है परंतु यह भ्रम व्यर्थ है क्यों कि कृष्णगढके पुस्तकालयमें श्रीनागरीदासजीके वर्त्तमान समयके सर्व ग्रंथ उनके हस्ताक्षरोंसहित अद्यापि हाजिर है इससे इनकी वाणीका दूसरे नागरीदासजीकी वाणीमें मिल जुल जाना यह भ्रम व्यर्थ है और राजा नागरीदास जी की अलौकिक कविता में कुछ ऐसा माधुर्य और गूढ भाव भरा है कि थोड़ेही काल में इसकी झन्कार सहृदय मात्र के हृदयमें गूंजउठी और हिन्दीभाषा के कवियों के मुकुटमणि का स्थान इन्हों ने पाया।

हमको खेद है "शिवसिंहसरोज" मे शिवसिंहजी ने इनका सम्वत बहुत ही अशुद्ध लिखा है। उन्हों ने सम्वत १६४८ लिखा है। यदि कहा जाय कि उन्होंने पहिले के नागरीदास में से किसी का वर्णन किया है तो यह इससे अशुद्ध ठहरता है कि निम्न लिखित सवैये जो "शिवसिंह सरोज" में उक्त कवि की कविता में लिखे गये हैं वे महाराज सावंतसिंह उपनाम नागरीदासजी के ग्रन्थो में पाये जाते हैं और यदि इनके समझे जायँ तो समय ठीक नहीं है, क्योंकि इनका जन्म सम्वत १७५६ का है—१०८ वर्ष का अन्तर है और इसी

---

* राधा कृष्णदासजीके नाम

विश्वास पर डाक्टर ग्रियर्सन साहब ने * इनके जन्म का समय सन् १५९१ ई० अपने ग्रन्थ The Modern Vernacular Literature of Hindustan में दिया है. पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजीने अपने लेख Antiquity of the poet Nagari Das* में इनके जन्म का समय ठीक दिया है परंतु शिवसिंह+ और डाक्टर ग्रिअर्सन के भ्रम को स्पष्ट नहीं दिखलाया हैं, क्योंकि यदि समय के अनुसार इन्हें छोड़ पहिले नागरीदासों में से कोई माने जांय तो कविता नहीं मिलती और यदि कविता के अनुसार ये माने जाय तो समय ठीक नहीं।

" भादो की कारी अंध्यारी निसा लखि बादर मंद फुही बरसावै । स्यामाजी अपनी ऊंची अटा पै छकी रस रीति मलारहि गावै ॥ ता समै नागर के दृग दूरि तें चातिक स्वाति की बूंद यों पावै । पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनी दीप दिखावै ॥ १ ॥ "

" देवन की औ रमापति की दोउ धाम की वेदन कौन बडाई । संखरु चक्र गदा पुनि पद्म सरूप चतुरभुज की अधिकाई ॥ अमृतपान विमानन बैठिबो नागर के जिय नेक न भाई । स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाहीं तौ कोरी,कहा लै करै ठकुराई ॥ २ ॥ "

" गांस गंसोलिये बातें छिपाइये इश्क ना गाईये गाईये होलियां । गेंद बहाने न बीरा चलाइए सूधे गुलाल उड़ाइये झोलियां ॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहौ दिल प्रीति कलोलियां ॥ पाइ परौं जू डरौ टुक नागर हाइ करौ जिनि बोलियां ठोलिया ॥ ३ ॥

इन कविताओं में कुछ पाठांतर नागरीदास जी के ग्रन्थों से हैं जिसे पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजी ने लिखा है उसका आशय नीचे प्रकाशित करते हैं।

" हमारी पास इनके ग्रन्थों के संग्रह में नम्बर ३८ पत्र १९२ में एक अ-

---

*डाक्टर ग्रिअर्सन का The Modern Vernacular Literature of Hindustan नम्बर ९५ पृष्ट ६३८ और नंबर ३३ पृष्ट १३८ देखो। *Journal Asiatic Society Of Bengal Vol LXVI Part 1 No 1—1897 Page 63 देखो। +शिवसिंह सरोज—नं० ११ पृष्ट १७२ देखो

धुरा ग्रन्थ " वर्षा के कवित्त " है जिसमें केवल ८ कवित्त हैं, उसका सातवां कवित्त यह है इसमें बड़ा पाठांतर यही है कि शिवसिंह ने जहां नागर लिखा है वहां इसमें ' मोहन ' है:—

भादों की कारी अंध्यारी निसा झुकि बादर मन्द फुही बरसावै। श्यामा जू आपनी ऊंची अटा पै छकी रस रीत मलारहि गावै ॥ ता समै मोहन की दृग दूरि ते आतुर रूप (रूप) की भीष यों पावै। पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनि दीप दिखावै ॥ ७ ॥

उसी संग्रह में नम्बर ३५ पत्र १८४ में " होरी के कवित्त " नामक ग्रन्थ है जिसमें १९ कवित्त हैं, उसका १९ वां कवित्त यह है, इसमें भी बड़ा अंतर यही है कि नागर के स्थान पर भावते लिखा है।

गास गसीलीये बातें छिपाइये इश्क न गाइये गाइये होलियां। गेंद बहाने न बीरा चलाइये सूधे गुलाल चलाइये झोलियां ॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावेंगे दावे रहो दिल प्रीति कलोलियां। पाय परां ज डरो टुक (टुक) भावते हाय करो मति बोलियां ठोलियां ॥ १९ ॥

उसी संग्रह में नम्बर ४१ पत्र २९६ " फाग विहार " नामक ग्रन्थ है उसमें यह सवैया ८ वां है ॥

देखन केरु रमापति के दोऊ धाम को देवनि कोनी बड़ाई। संखरु चक्र गदा अरु पद्म सरूप चतुर्भुज की अधिकाई ॥ अमृतपान बिमानन बैठिबो जेती कही तेती एक न भाई। स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाही तौ कोरी कहा लै करै ठकुराई ॥ ८ ॥

कविता में नागरि, नागर, नागरीदास और नागरिया नाम रखते थे।

इनका कुल सदा से वीर वैष्णव चला आता है। इनके हृदय में राज-काज में फँसे रहने पर भी सदा उज्वल प्रेमशिखा प्रदीप्त थी और श्रीवृन्दावन के लिये तरसा करते थे जैसा कि उनके पदों से झलकता है।

" ज्यों ज्यों इत देखियत मूरख विमुख लोग त्यों त्यों सुखरासी ब्रजवासी सुधि आवै है। खारे जल छीलर दुखारे अंधकूपचितै कालिन्दीके काज महामन ललचावै है ॥ जैसी अब बीतत सु कहत न आवै बैन नागर न चैन परै प्रान अ-

विश्वास पर डाक्टर ग्रियर्सन देखि देखि कै बबूल बुरे हाय हरे हरे वे तमाल सुधि
अपने ग्रन्थ The Mode
है. पण्डित मोहनलाल ज्यका ७२४ मील मुरब्बा है। सन १८८१ इ० में इसमें
Nagari Das* में योंकी बस्ती थी, जिनमें ५९०९८ पुरुष और ५३५३५ स्त्रियां,
डाक्टर ग्रिअर्सन गर और २१० गावोंमें रहते हैं, और सब २४९२८ घर हैं; जिनमें
नुसार इन्हें छो हिन्दू ८४९२ मुसलमान और ६२९५ जैन रहतेथे । इस राज्यमें कृष्ण-
लती और (राजधानी) रूपनगर और सरवार ये तीन नगर हैं।

जी इस राज्यको जोधपुरके महाराज उदैसिंहके द्वितीय पुत्र कृष्णसिंहने पैतृक अधिकारको छोडकर अब जिस देशमें कृष्णगढराज्य है उसे विजय किया.

कृष्णगढ़ नगर बहुतही सुन्दर गूंदोलाव नामकतालाव के किनारे पर बसा है, जिसके बीचमें महाराजका बाग गुहकमविलास बना हुआ है, नगरमें श्रीमदनमोहनजी श्रीब्रजराजजी श्रीद्वारकानाथजी श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा मोहनलालजी सुखनिधानजी नरसिंहजीका मंदिरहैं और जैनके मंदिरोंमेंभी चिन्तामणिजीका मंदिर मकराणेके पत्थरका बहुत अच्छाहै। कृष्णगढसे १२ मीलपर सलीमाबादमें एक निम्बार्क संप्रदायका मन्दिर है जिसमें उस प्रान्तके बहुतसे हिन्दू यात्री दर्शनके लिए आया करते हैं और निम्बार्कोंमें यहगद्दी सबसेबडीहै जैसे कि वल्लभकुल संप्रदायमें श्रीनाथद्वाराकी गद्दीहै और सलीमाबादमें ठाकुरजी विराजतेहैं जिनका नाम श्रीराधामाधवजी है यह स्वरूप कविचूडामणि जयदेवजीके मस्तकके हैं मूर्ति अति बिसाल मनोहर है। और श्रीसर्वेश्वरजीका स्वरूपभी वहीं विराजताहै जो कि सनकादिकोंके सेव्य है ऐसी प्रसिद्ध ख्याति है।* और सलेमाबादग्रामके दक्षिण दिशामें पंडित श्रीधरकी १ छोटीसी वाटिकाहै जिसमें हनुमानजीकी मूर्ति अति बिसाल है. इस लघु ग्रामका नाम बहुत देशांतरोंमें फैला है कारण पं०श्रीधरके द्वा० सा० छा० की पुस्तकें या पंचांगों मात्रमें सर्वत्र इस ग्रामका नाम लिखाजाता है इस्से

कृष्णगढ राज्यके स्थापनाके विषयमें कृष्णगढ दर्बारके कवेश्वर जयलालजी ने मेरे प्रश्नके उत्तरमें यह लिखा है:—

* (Dr Hunter's Imperial Gazetteer of India Volume VIII Page 223)

"सम्वत १६५४ में जोधपुरसे प्रथक राज्य, प्रथम तो 'हिंडोण' § में हुआ और फिर 'सेठोलाव' में जो कि कृष्णगढ़से पश्चिम तरफ २ मीलके लगभग दूरी पर है वहां हुआ और महाराज श्रीकृष्णसिंहजीने सम्वत १६६८ में कृष्णगढ बसाया"

ये महाराज कृष्णसिंहजी श्रीवल्लभकुलके अनुयायी वैष्णव थे और तबसे बराबर यह कुल उन्हींका अनुयायी चला आता है इस विषयके प्रश्नोत्तरमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैं:—

"यह कृष्णगढकी राजधानी नियत करने वाले जो महाराज कृष्णसिंहजी थे जबहीसे वल्लभाचार्यजीके अनुयायी हैं० और उनके मस्तकपर दो स्वरूप श्री नृत्यगोपालजीके विराजते थे, वे दोनों स्वरूप अद्यापि यहां विराजते हैं, जिनमें एक स्वरूप श्रीदाऊजीका और दूसरा श्रीकृष्णजीका है, और महाराज श्रीकृष्णसिंहजी नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी + जो श्रीवल्लभाचार्यजीके अनुयायी महा वैष्णव थे और जिनका प्रसंग वैष्णवोंकी वार्तामें है जिनके भानजे थे।०"

---

§ हिंडोण–पहिले अच्छा नगर था महाराष्ट्रों ने उसे नष्टकर दिया प्राचीन प्राचीर टूटी फूटी पडी है। अब यह जयपुर राज्यान्तर्गत है।

(Dr. Hunter's Imperial Gazetteer Vol. V Page 414)

+ नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी—डाक्तर ग्रिअर्सन लिखते हैं. Askaran Das, the Kachhwaha Rajput of Narwargarh, in Gwaliyar Fl. C. 1550 A. D.

Rag; He was son of King Bhim Singh See Tod II 392 Calc. Ch. II 390—The Modern Literature of Hindustan page 31 No. 71

यही शिव सिंहभी सरोजमें लिखते हैं। (पत्र ६ न० ३७)

यह गोस्वामि श्रीविट्ठलनाथजीके शिष्य थे, इनका चरित्र "दो सौ बावन वैष्णवकी वार्ता" में (नं० २०२) जो लिखा है हम उसका संक्षेप यहां देते हैं:-

इन्हें रागपर बडी आसक्तिथी, देश देशान्तरके गवैयोंका आदर सत्कार करते थे. एक समय तानसेन इनके यहां आए और उन्होंने "कुंवर बैठे प्यारीके

महाराज रूपसिंहजीने ' रूपनगर ' बसाया और उसे राजधानी बनाया इस विषयमें उक्त कवीश्वर जी लिखते हैं.—

" सम्वत १६६८ में महाराज श्रीकृष्णसिंहजीने कृष्णगढ बसाया और राजधानी नियत की फिर सम्वत् १७०० में महाराज श्रीरूपसिंहजीने रूपनगरको राजधानीका मुख्य स्थान नियत कियाथा जबसे वहीं रहतेथे फिर महाराज नागरी-

---

संग अंग अंग भरे रंग बलि बलि बलि त्रिभंग युवतिन मनभाई " गाया । राजा प्रेमसे मत्त हो मूर्च्छित होगए । चैतन्य होनेपर पूछा यह किसका पद है ? तानसेनने बताया गोकुलके गोसाईं विट्ठलनाथजी के शिष्य गोविन्दस्वामीका । राजा तानसेनको दो सहस्र रुपैया देने लगे पर उन्होंने नहीं लिया कहामैं रुपयेका भूखा नहीं, गुण ग्राहक ढूंढता हूं सो जैसा सुनाथा वैसा पाया " तानसेनको संग ले राजा गोकुल आए और श्रीगोशांईजीके सेवक हुए श्रीगोशांईजीकी आज्ञासे गोविन्दस्वामीजीने रमणरेती पर लिवाजाकर राजाको सेवाकी रीति तथा कीर्तन आदि सिखाये । तदनन्तर राजा श्रीगुशांईजीकी आज्ञा ले और श्रीमदनमोहनजी ठाकुरको सेवाके लिये पधरा अपने देश आये एक समय दक्षिण देशका कोई राजा इनपर चढआया, इन्होंने सेवामें विघ्न न पडै इसलिये विचार किया कि राज्य इसे सौंप आप गोकुल चल बसें. परंतु स्वप्नमें आज्ञा हुई कि मानसी सेवा कर और शत्रुसे लड, ऐसाही किया और प्रभुकी कृपासे जयी हुए । एक दिन जाडेकी ऋतुमें राजा चार घडीके तडके सेवामें नहाये, वहां चार चोर छिपे थे, उन सभोंने राजाको तीर मारी जो पीठको छेद बाहर निकलगई, भितरियोंने पट्टी बांध दी, परंतु राजा सेवामें ऐसा देहाध्यास भूलगए थे कि कुछ खबरही न हुई । जब सेवासे निकले पट्टी बँधी देखी लोगोंने सब वृत्त कहा, राजाने सोचा कि सब अनर्थ का मूल धन है, राज अपने भतीजेको दे ठाकुरजीका वैभव श्रीगुशाईंजीके यहां भेज. एक झांपीमें श्रीठाकुरजीको केवल गुंजा मोरपंख धरा अपने साथ ले श्रीगोकुल चले आये, और विरक्त भावसे रहने और लीलाका अनुभव करने लगे ।

यह वार्ता श्रीगोस्वामी गोकुलनाथजीकी बनाई बताते हैं जिनका जन्म सम्वत १६०८ मि० माघ सु० ७ का है ।

दासजीके एक पीढीपीछे अर्थात् सम्वत् १८२३ के पीछे कृष्णगढहीको पीछा राजधानीका मुख्य स्थान नियत किया सो अद्यापि है। और उक्त महाराजको कृष्णगढाधिपति इस कारणसे लिखते हैं कि अब प्रसिद्ध राजधानीका स्थान कृष्णगढही है नहीं तब ये तो रूपनगरकेही राजा थे. ॥"

नागरीदासजी किन वल्लभकुल गोस्वामीके शिष्य थे इसके उत्तरमें उक्त कविराजाजी लिखते हैं:—

"महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पौत्र रूपसिंहजी थे वे श्रीवल्लभाचार्यजी* के पुत्र विट्ठलनाथजी÷ जिनके पुत्र टीकैत (बडे) श्रीगिरिधरजी† थे जिनके तृतीय पुत्र दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी‡ थे जिनके शिष्य हुए थे उन्हींके पास ब्रह्म संबंध भी लिया था और श्रीकल्याणरायजीका स्वरूप दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजीने इन (रूपसिंहजी) के मस्तकपर पधराया था वह स्वरूप अद्यापि यहां विराजता है । और इन्हीं (रूपसिंहजीने)। श्रीवल्लभाचार्यजीके उस चित्रको जो बादशाह अकबरने बनवाया था जो बादशाह शाहजहांसे मांगके ले लिया था। वह चित्र अद्यापि यहां है और श्रीकल्याणरायजीके समीप सेवामें विराजता है। पूर्वोक्त श्रीनृत्यगोपालजीके दो स्वरूप थे जिनमें एक स्वरूप बडा श्रीठाकुरजीका सो तो श्रीकल्याणरायजीके गोदमेंहीं विराजता है और दूसरा छोटा स्वरूप श्रीकृष्णजीकासो वर्तमान महाराजाधिराज महाराज श्रीशार्दूलसिंहजी बहादुर जी. सी. आई. ई. के अनुज महाराज दीक्षितजी श्रीजवानसिंहजीके मस्तकपर विराजता है।"

"जो कि महाराज श्रीरूपसिंहजीके गुरू गोस्वामी दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी थे जिनके प्रपौत्र गोस्वामी श्रीरणछोडजी+ नागरीदासजीके गुरू थे इनका स्थान कोटेमें श्रीबडे मथुरेशजीका है और श्रीरूपसिंहजीसे लेकर अबतक उसी

---

* श्रीवल्लभाचार्य—जन्म सम्वत १५३५ मि० वैशाख कृष्ण ११

÷ श्रीविट्ठलनाथजी—जन्म सम्वत १५७२ मि० पौष कृष्ण ९

† श्रीगिरिधरजी टीकैत—जन्म सं० १५९७ कातिक व० १२

‡ श्रीगोपीनाथजी—जन्म संवत १६३४ माघ कृष्ण ६

\+ गोस्वामी श्रीरणछोडजी—जन्म सम्वत १७७७ ज्येष्ट कृष्ण ५

स्थानके शिष्य होते हैं और उनका मन्दिर कृष्णगढमेंभी श्रीमदनमोहनजीका है जिनके भेट यहांकी तरफसे ग्रामभी हैं और लगान सहित दस सहस्रके लगभगकी जीविका है.

नागरीदासजीके सेव्य ठाकुरके विषयमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैं:-

"नागरीदासजी स्वयं पूर्वोक्त श्रीकल्याणरायजीकी सेवामें उपस्थित रहते थे और प्रदेश जाते तब श्रीनृत्यगोपालजीका स्वरूप साथमें रखते थे। वृन्दावनमें रहे तबभी श्रीनृत्यगोपालजीकीही सेवाकी।"

नागरीदासजीका जन्म सम्वत १७५६ पौष कृष्ण १२ को हुआ। इनके पिताका नाम महाराज श्रीराजसिंह था। इनका विवाह भानगढ नामक नगरके राजा राजावत (राजावत कछवाहोंकी एक शाखा है) यशवंतसिंहजीकी कन्यासे सम्वत १७७७ के ज्येष्ठ सुदी ९ को हुआ था। इन्हें ४ संतति हुईं। प्रथम पुत्र जिनका जन्म सम्वत १७८३ में हुआ था बाल्यावस्थाहीमें परलोक गामी हुए। दूसरे कुमार सरदारसिंह जिनका जन्म सम्वत १७८७ के भाद्रपद शुक्ल २ को हुआ था। यही इनके उत्तराधिकारी हुए। पहिली कन्या किशोर कुंवरिजीका विवाह बूंदीके हाडा दीपसिंहजीसे हुआ था और दूसरीका नाम गोपाल कुंवरिजी था। इनका संबंध जयपुरके महाराज श्रीमाधोसिंहजीसे निश्चय हुआ था, परन्तु परम वज्र हृदय विधातासे यह सुखमय संबंध न देखा गया. उक्त महाराज विवाहके पहिलेही सुरधाम गामी हुए। इनके भ्राता महाराज सरदारसिंहजीने इनका विवाह दूसरे कहीं करनेका उद्योग किया, परन्तु जिस सती रमणी रत्नके शरीरमें परम भगवदीय महानुभाव नागरीदासजीका पवित्र रक्त संचालित होता था, जिसने पवित्र कुलकी शोभा बढायी थी, वह क्या कभी सांसारिक सुखोंके लोभमें फंसकर अपने परम पवित्र सतीत्व धर्मको तिलांजलि दे सक्ती थी? प्रातस्मरणीया गोपालकुंवरिजीने दृढता पूर्वक दूसरा संबंध अस्वीकार किया और कहा जो होना था हो चुका क्या एक शरीर दो पतिको अर्पण हो सकता है? और संसारके सुखोंसे मुख मोड भगवच्चरणारविंदमें मन लगाया अपने सिरपर एक स्वरूप श्रीठाकुरजीका पधराया जिनका नाम श्रीरामलालाजी रक्खा और इन्हींके प्रेममें मगन रहकर अपने इस क्षणस्थायी जीवनको परम संतोष पूर्वक व्यतीत किया। धन्य राजपूत कुल कमलिनी! धन्य सतीत्व मान संवर्धिनि!! धन्य नागरीदास यशोविस्तारि

नि !!! धन्य आज कलिकी कुल बालाओंको इनका उदाहरण लेना चाहिये, उन्हें हृदयकी आंखोंसे देखना चाहिये सती साध्वी पतिव्रताओंके लिये पति कैसा आदरणीय देवता है. उन्हें चाहिये कि गोपाल कुंवरिके आदर्शमय चरित्रको रात्रि दिवस अपने गलेका हार बनावें । कहां हैं गोपाल कुंवरि और कहां गए महाराज नागरीदास ? परन्तु यह उनका उज्वल चरित्र आजतक यश फैला रहा है और अनन्त कालतक ऐसेही महानुभावोंके चरित्र भारतवर्ष तथा क्षत्रिय कुलका गौरव सारे संसारमें स्थिर रक्खेंगे । कहिये संसारमें कितनेही इनके ऐसे तथा इनसे बढ-कर लोग जन्मे और कालके कराल गालमें विलीयमान हुए परन्तु किसका नाम कौन लेता है ! किसका चिन्ह पृथ्वीपर वर्तमान है ? परन्तु हां.–

कीर्तिर्यस्य सजीवति ।

महाराजा सावंतसिंह संस्कृत, फारसी अच्छी पढे थे भाषा पिंगल और डिं-गलके तो पण्डितही थे, राग, चित्र और शस्त्र विद्यामें परम प्रवीण थे । एक दिन जब कि ये श्रीवृन्दावनसे घर आए थे इनके भ्रातृपुत्र कुमार बिरदसिंहजीने कहा कि "मैंने सुना है कि आप शिकार अच्छा खेलते हैं मुझेभी दिखाइए, आपने उत्तर दिया कि "अब मुझे शिकारसे क्या प्रयोजन परन्तु तुम कहते हो तो दिखाऊंगा एक हिरनके पीछे आपने घोडा डाला और थोडी दूर जाते जातेही उसकी सींगमें अपनी कुबडीको लगाकर उसे रोक रक्खा । चित्रमें ऐसे निपुण थे कि कई एक भाव प्रिया प्रीतमके चित्रका आपने नयाही निकालाथा । और विद्याका परिचय तो उनके काव्योंहीसे मिलता है ।

ये परमशूरवीर थे और बचपनहीसे परम निर्भय थे । संवत १७६६ में जब कि ये केवल १० ही वर्षके थे, एक दिन दिल्लीमें राज्यदर्बारसे लौटती समय एक मस्त हाथी जो कि महावतोंके काबूसे बाहर था, इनपर टूटा, महावत लोग लाख पुकारते रहे इधर मत आओ भागो, परंतु बीर बालकने पीठ देना सीखाही न था, इन्होंने हाथीसे मुठभेड होतेही एक हाथ तलवारका ऐसा मारा कि वह चु-पचाप दुम दबाकर पीछे भागा और आप अपने घर आये, उससमयका चित्र कृ-ष्णगढ दर्बारमें है ।

संवत १७६९ में जब कि इनकी अवस्था केवल १२ वर्षकी थी इन्होंने अ-

अकेले ही बूंदीके हाडा जैतसिंहको मारा था जिसमें इन्हें कुछ घावभी लगे थे ।

इसी संवतमें दिल्लीके बादशाह बहादुरशाह मरे और गद्दीके लिये जहांदारशाह और फरुखसियरसे लडाई हुई और फरुखसियरने विजयी होकर दिल्लीके तखतपर अधिकार किया इस लडाईका वर्णन श्रीधरकविने बहुत सुंदर लिखा है। यह श्रीधर कवि जिसका नाम मुरलीधरभी था प्रयागका रहनेवाला था इसने इसी "जंगनामा" में लिखा है ।

"श्रीधर मुरलीधर उरुफ, द्विजवर बसत प्रयाग ।
रुचिर कथा यह शाहिकी, बढ्यो कथन अनुराग ॥

यह शृंगार और वीर रस दोनोंही कविता सुंदर करता था । उस समयके अमीर उमराओंका बहुत कुछ गुणानुवाद किया है और पारितोषिक पाया है जिसने कुछ दिया नहीं है उसकी ऐसी हजो की है कि अश्लीलताके कारण वह कविता प्रकाशित करने योग्य नहीं है ॥

शिवसिंहने अपने ग्रंथमें चार श्रीधर लिखे हैं । जिनमेंसे एकका नाम राजा सुब्बासिंह चौहान था और ओयल जिला खीरीके रहनेवाले थे । इनका समय संवत १८७५ दिया है जिन्होंने "विद्वन्मोद तिरंगिनी" नामक साहित्य ग्रंथ बनाया दूसरे श्रीधर राजपुताना वाले इनका समय १६९० दिया है जिन्होंने "भवानी छंद" नाम एक दुर्गाकी कथाका ग्रंथ बनाया है । शेष दोनो श्रीधर निश्चय एकही हैं क्योंकि दोनोकी कविता जो दी है वह श्रीधर उर्फ मुरलीधर कविहीकी है । शिवसिंहने एक श्रीधर (जिनके नाममें मुरलीधर नहीं लगाया है) का समय १७८९ संवत दिया है और लिखा है कि "शृंगाररसमें सरस कवित्त हैं" और कवित्त इनका यह दिया है:—

"श्रीधर भावत प्यारो प्रवीनके रंग रंगे रथ साजन लागे ।
अंग अनंग तरंगनिसों सब आपने आपने काजन लागे ॥ १ ॥
किंकिनी पायल पैजनियां बिछिया घुघरू घन गाजन लागे ।
मानो मनोज महीपतिके दरबार मरातिबे बाजन लागे ॥ २ ॥

यह कविता श्रीधर उर्फ मुरलीधरके ग्रंथमें मुझे ढूंढनेपर मिली, यह प्राचीन हस्तलिखीत पुस्तकके ७७ पन्नेमें ३१ अंकका कवित्त है और प्रथमके एक पादमें कुछ पाठांतर है । हस्त लिखित पुस्तकमें यह पाठ है:—

श्रीधर भावतो प्यारी प्रवीनसों रंग भरे रति साजन लागे। हम इस कवित्तके ऊपर नीचेका एक एक कवित्त उद्धृत कर देते हैं:—

" ठाढेही साहेही साजसों आजु उछाह भरी मद सीतिको खूंदिकै। आंचर खूंटि खुल्यो अचका निकसे कुच कोरक कंजसी दूंदिकै॥ छाति छपावति भाय भरी तकि श्रीधर लाल रहे रसगूंदिकै। हेरि इतै दृग फेरि गई हँसि घूंघटके पटसो मुख मूंदिकै॥ ३०॥

मेरे जबै आवतहो हंसत हंसावतहो रीझत रिझावतहो रंगनि रंगतहो॥ और कें पधारतहो ताहिउर धारतहो छलनि सुधारतहो प्रेमसों पगतहो॥ श्रीधर अहिरा कछु जानत न पीरा सदा खीरा चार हीरा मीले जगत ठगतहो। मीतकी प्रतीति होति देखें रीति रावरेकी नेक भीति ओट है अमीतसे लगतहो॥ ३२॥

समय तो ठीक मिलताही है क्योंकि संवत १७६९ में इन्होंने जंगनामा बनाया यथा:—

" संवतसो सत्रह से उन्हत्तरि पूसपून्यो बुध तहीं।
सनसो अग्यारह तेतिसा माहे मोहर्रम चौदहीं" । १ ।
अरू पातसाही माहे आजर वाएसी श्रीधर कही।
सफजंगकी साएति सधी साहेबजहां कीनो सही॥ २॥

अब यहां हिजरी सनमें भ्रम है क्योंकि फर्रुखसियरकी जहांदारशाहसे लडाई सन् ११२४ में हुई है यह भूल लेखककी प्रतीत होती है।

दूसरे श्रीधर मुरलीधरका संवत शिवसिंहने नहीं दिया है. लिखा " कवि विनोद नाम पिंगल बनाया" और कवि विनोद पिंगलके ये दोहे उठाये हैं:—

" श्रीधर मुरलीधर सुकवि मानि महा मन मोद।
कवि विनोद मय यह कियो उत्तम छंद विनोद। १।
श्रीधर मुरलीधर कियो निज मतिके अनुमान।
कवि विनोद पिंगल सुखद रसिकनके मन मान" । २।

यही भ्रम डाक्तर ग्रियर्सनकोभी हुआ है।

अस्तु यह तो निश्चय है कि यह दोनों एकही श्रीधरथे।

सम्भव है कि इस संवत् १७६९ की लडाई में महाराज सावंत सिंहजीभी रहे हों क्योंकि कृष्णगढसे आये हुए इतिवृत्तमें लिखा है कि " इन साहिबोंपर

बादशाह फर्रूखसियरकी बहुत मेहरबानीथी इन साहबोंके पास घोडे फिरवाके बहुत देखता" और इधर श्रीधर अपने "जंगनामा में लिखते हैं किः—

"सब मीर जुमिला संग व्है। द्वै लाख स्वार उमंग है ॥
यह बंक कोतल फौज है। सावंत उरमें ओज है ॥"

परन्तु अधिक सम्भव यही है कि कवि ने सावंत शब्द बीरके लिए लिखा हो, क्योंकि प्रायः ऐसाही किया है जैसेः—

"समसेर सरकि सिरोहकी सावंत ए दोऊ लरे।
घनघाइ खाइ अंगाइ अंगनि अटल व्है दोऊ अरे ॥"

सम्बत १७७१ में जबकि आप १५ वर्षकेथे, जलूस महफिल हो रहीथी. उस समय इनके पिता महाराज श्रीगजसिंहजी कोटाके महाराज श्रीभीमसिंहजी, सोपर के महाराज श्रीराजसिंहजी, और महाराज भदोरिया श्रीगोपालसिंहजी प्रभृति बैठे थे। उस समय अकस्मात इनके जामाके दामनमें एक विषधर सर्प आगया आपने इसकी किसीकोभी खबर न होने दी, चुपचाप उसके फनको पकडकर मसल दिया और किसी बहानेसे उठकर मृतक सर्प बाहर फेंक आए इस भेदको उनके खिदमतगारोंके अतिरिक्त और किसीनेभी न जाना।

सम्बत १७७४ में जब किये १८ वर्षके थे थूणकी गढी को फतह किया। थूणकी गढीके स्वामी जाट बदनसिंहको पराजित करनेके लिये फर्रुखसियरने नव्वाब मुजफ्फरखां* जयपुरके महाराज जयसिंह, और कोटाके महाराज भीमसिंहको भेजा था, थूणकी गढी जो मेवासामें है वहां लडाई हो रहीथी, परन्तु गढी कब्जेमें नहीं आती थी क्योंकि जगह बेढंगथी चढनेका रास्ता न था, तब नव्वाब नौलादखां खानदौरा+ बख्शीके भाई ने अर्ज करके इन्हें भेजवाया, यह वहां

---

* नवाब मुजफ्फरखांकी बीरताके विषयमें श्रीधर लिखते हैंः—
"सज्यो मुजफ्फरखां फतह कर। समसामुद्दौला सुबीर बर"

\+ खानदौरा—पूर्व नाम ख्वाजा मुहम्मद आसिन, उसके पीछें अरफ़ा तत्पश्चात शमसामुद्दौला, अमीरुलउमरा खानदौरा बहादुर मनसूरजंगकी पदवी मिली इनके पिता ख्वाजः कासिमनकश बंदीथे। खानदौरा नादिरशाहकी लडाईमें २३ फर्वरी सन १७३९ में जखमी हुए और चारही दिन पीछे २७ तारीखको ६८ वर्षकी अवस्थामें मरे।

पहुंचतेही बख्तर पहिरे हुए, गोलियोंकी वर्षाके बीच हाथीपर सवार घुस पडे और गढीके फाटक पर पहुंच हाथियोंसे फाटक तोडवा गढी भेल दी पीछेसे सारी फौज भी आ पहुंची यह दिन सम्वत १७७४ वैशाख वदी ६ था। इस समय एक गोली इनके शरीरसे भिडती हुई निकल गईथी परंतु कुछ गहरी चोट नहीं लगी; वहांसे पालकीमें सवार हो डेरे पर आए, उस समय नवाब और महाराज जयसिंह उनके डेरे पर आए और कहा कि यह आपहीका काम था, और नवाबने बादशाहके पास अर्जी भेजी उसमें फतह इन्हीके नाम लिखी। बादशाहने प्रसन्न हो बडीही प्रशंसाकी और खिलत शमसेर आदि भेजा।

सम्मत१७७६बीस वर्षकी अवस्थामें अकेलेही सिंहका शिकार किया जिसका चित्र कृष्णगढ दर्बारमें है।

सम्वत १७९३ में दक्षिणी मल्हार राव गुजरातसे मारवाड आया। इन्होंने उसे खिरणी (कर) नहीं दिया, कुछ लडाई भी हुई। अन्तमें बाजीराव पेशवाने मल्हार रावसे कहाः–

" *बाजेराय मल्हारसों कहतो गयो कथाह।*
और राव सब राव है सांवत बात अथाह॥ "
यह दोहा उस देशमें अत्यन्त प्रसिद्ध है।

सम्वत १८०४ में जब कि मुहम्मदशाह दिल्लीके तख्त पर बैठ चुके थे, पठानोंने दिल्ली पर चढाईकी, उस समय मुहम्मद शाहने यहां भी फर्मान भेजा था, इनके पिता श्रीमहाराज राजसिंहजी जानेकोप्रस्तुत हुए. परन्तु इन्होंने कहा कि आप बहुतेरी लडाइयें लड चुकेहैं इसपर हमें जाने दीजिये, निदान पिताकी आज्ञासे ये अपने पुत्र सरदारसिंहके साथ दिल्लीगए परंतु बादशाहने इन्हें मुहिम

See Journal Asiatic Society Bengal Part 1 No. I
Vol. LXVI page 57.

यह खानदौरा फर्रुखसियरके भी सर्दारोंमें था। श्रीधर लिखते हैंः

" सज्यो खानदौरा सुबहादुर। समसामुद्दौला सिपाहपुर।
उतहि उनको खानदौरा। इतहि सजि यह खानदौरा॥
संग केतिक खानदौरा। मनहु उनको खान दौरा॥ १३॥

ऐसेही अनेक स्थानपर लिखा है।

पर नहीं भेजा, अपनेही पास रक्खा विदित होता है कि इसी समयसे इनसे आनँदघनजीसे मित्रता हुई। सम्वत १८०५ में मुहम्मद शाह मर गए और उसी समय इनकेपिता महाराज राजसिंहजीकाभी परलोक हुआ और सम्वत १८०५ वैशाख सुदी ५ को ये गद्दीपर बैठे।

इस घटनाको एक वर्षभी न वीता था. ये इधर दिल्ली आए थे उधर इनके छोटे भाई बहादुरसिंहजीने राज्यपर अधिकार कर लिया। दिल्लीकी बादशाहतमें तो कुछ जोर रहही नहीं गया था, और मरहठोंका चढता समय था. उन लोगोंके पास सहायता लेनेके लिये यह भी गए, रास्तेमें अपने पुत्र सरदारसिंहको बासेडा नगरजो बडगूजर जातिके राजपूतोंकी राजधानी था और जहां सरदारसिंहजी ब्याहेथे, भेज दिया और आप मरहठोंके पास गये। उनके साथ आप कुमाऊंकी मुहिम्मपर गये।

कमाऊंकी लडाई संवत १८०८ में हुई थीं; वहीं 'जुगलभक्तिविनोद' ग्रंथ बनाया था।

"अष्टादश सत अष्ट पुनि, संवत माघ सुमास। जुगल भक्त गुन ग्रंथ यह, कियो नागरीदास॥ निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटपकी भीर। तहां ग्रंथ रचना भई, नदी कौसिकी तीर॥"

वहांकी लूटके विषयमें लिखते हैं:—

"लाज छांडि मनकौं भजौ, दीजै मनकौ छूट।
कम्माऊंकी मुहिम मैं, जैसैं लूटा लूट॥"

इसीके पीछे ही आपने "तीर्थानन्द ग्रंथ" बनाया है और उसमें उसी सिलसिलेसे मुकाम भी दिये हैं, जैसे रूपनगरसे सांभर गये, वहां देवयानीका वर्णन किया है, जैपुरमें गलता (गालवाश्रम) का वर्णन किया है फिर वृन्दावन आए वहांसे अपने पुत्रको बासेडामें भेज आप मरहठोंके पास गये. फिर उनकेसाथ कुमाऊं। मरहठोंको अपने साथ लेकर फिर श्रीवृंदावन आए; आप तो वहीं रहगये और अपने पुत्रको मरहठोंके साथ लडनेको भेज दिया, इन्हें वृंदावन स्वप्नमें आज्ञा हुई थी कि तुम यहीं निवास करो राज्य तुम्हारे लडकेको मिलैगा, निदान बहुत लडाईके पीछे संवत १८१३ में बहादुरसिंहजी और सरदार सिंहजीने राज्यको दो भाग करके बांट लिया।

संवत १८१३ के फाल्गुणमें इन्होंने कुटुंब यात्राके निमित्त प्रस्थान किया सुनते हैं कि उस समय इनके साथ आनंदघनजीभी थे परंतु जयपुरहीसे लौट आये, और इस भ्रातृ विरोधने कुछ ऐसा असर इनके हृदयपर किया कि फिर इन्होंने राज्यगद्दीपर पैर न रक्खा और संवत १८१४ द्वितीय आश्विन शुक्ल १० को अपने कुंवर सरदार सिंहजीको युवराज बना आप आश्विन सु० ११ को श्रीवृंदावन चले गये, उनके हृदयका भाव कैसा बदलगया था यह ये दोहे कहे देते हैं:—

"जहां कलह तहां सुख नहीं, कलह सुखन कौ सूल।
सबह कलह इक राज मैं, राज कलहको मूल॥
मेरे या मन मूढ तैं, डरत रहत हौं हाय।
वृन्दावनकी ओर तैं, मति कबहूं फिरि जाय॥
लेत न सुख हरिभक्तिकौ, सकल सुखनि कौ सार।
कहा भयो नृपहू भए, ढोवत जग बेगार॥
और भौन देखौं न अब, देखूं वृन्दा भौन।
हरिसौं सुधरी चाहिये, सबही बिगरै क्यौंन॥
ब्रजमैं व्है व्हैकढत दिन, किते दिये लै खोय।
अब कैं अब कैं कहत ही, वह अब कैं कब होय॥
राज बडे बडे देत हरि, तिनमैं लाख करोर।
पैकाहूको नाहिं वै, खीचत अपनी ओर॥"

संवत १८१० में 'तीर्थानन्द' ग्रंथ बनाया। परंतु यह ग्रंथ संवत १८०८ से आरम्भ होकर संवत १० में पूरा हुआ प्रतीत होता है यदि ऐसा न हो तो इसमें तो संदेह नहीं है कि इन्हीं दो वर्षोंकी कथा इसमें लिखीगई हैं और इसीकी समालोचनामें हमारे पाठक बहुत कुछ समाचार आपके जीवनचरित्रका पावैंगे। इस ग्रंथका भारंभ यों किया है:—

"जब चले स्थिति तें देस आन। चित्र किए देवयानी सनान॥" फिर लिखते हैं "पुनि चले तहां तें नाय माथ। परसे गोविन्द गोकुलके नाथ॥ पुनि गालव आश्रम अति अगम्य। जहां भ्रमत फिरत अति मधुप झुंड॥" वहांसे ब्रजमें आए। पहिले श्रीगोवर्धन आकर रहे। यहां का वर्णन पाठकोंके सुनने योग्य है:—

"पायन प्रदच्छना दई फेर। चित्र रसिकसंग गन गुनी घेर॥ कलगान

कीरतन बन्यों रंग । बड झांझ झनक बाजत मृदंग ॥ बन ग्वाल गऊ चले सुनत साथ ॥ मधु पिवत श्रवन पुट कृष्ण गाथ ॥ सब अनन्य मंडली छकी प्रेम । चित गए भूलि तब मनके नेम ॥ आये चलि तेहि ठां रसिककुंड । तहँ राधाकुंड अरु कृष्णकुंड ॥ उत तें उमगे सुनि रसिकवृन्द । उठि चले सामुहे बढि आनन्द ॥ तहं रुपे सूर सन्मुख संभारि । वहि चले परस्पर प्रेमवारि ॥ हुंकार शब्द करि गिरि निसंक । कोउ चलत धरनि धुकि भरत अंक ॥ बंसीदास अरु मुरलिदास । मनु महारथी ये प्रेमरास ॥ बिच खेत परे मूर्छित निदान । सोए सर सज्जा गान तान ॥ सुख प्रेम भक्तिको भयो प्रात । मुखसों न कछू है वरन्यो जात ॥ दंपत रस संपत बर बिहार । फिर गाय चले तन मन संभार ॥ परक्रमा दै गिरिवर सुभाय । मधुपुरी चले दुख विरह छाय ॥"

गिरिराजसे श्रीमथुरामें आए वहां विश्रांतघाट स्नान किया । सांझको विश्रांत पर श्रीयमुनाजीको आरतीकी बड़ी शोभा वर्णनकी है । वहां एक वृद्धा तपस्विनी रहतीथीं, जो केवल दूधही पीतीथीं, उनका दर्शन करके श्रीवृन्दावन आए इन समय इनका नाम चारों ओर फैल गयाथा और इनके प्रेमका आस्वाद प्रेमीमात्रको मिल चुकाथा, क्योंकि श्रीवृन्दावनमें इनको महाराज कृष्णगढ सुनकर तो लोग उदासीन भावसे अलगही अलग रहे परंतु जब सुना कि नागरीदासजी येही है तो दौड २ कर श्रीवनके महात्मा लोग लिपट गए ।

"सुनि ब्योहारक नाम मो. ठढे दूर उदास ।
दौरि मिले भरि नैन सुनि, नाम नागगरीदास ॥

इक मिलत भुजनि भरि दौरि दौरि । इक टेरि बुलावत और और ॥ कोउ चले जात सहजै सुभाय । पद गाय उठत भोगहिं सुनाय ॥ जेपरे धूर मधि मत्त चित्त । तेउ दौरि मिलत तजि रीति नित्त ॥ अतिसय बिरक्त तिनके सुभाव । ते गनत न राजा रंक राव ॥ वे सिमिट सिमिट सब आय आय । फिर छाडत पद पढवाय गाय ॥"

इससे विदित होता है कि उस समयतक इनकी कविताका पूरा प्रचार होगयाथा और महात्मा लोग बडे चावसे पढते और याद करतेथे ।

वहां श्रीबांके विहारीजी (श्रीस्वामी हरिदासजीके सेव्य ठाकुर) का दर्शन किया इस समय इनके साथ इनकी पासवान (उपस्त्री) बनीठनीजी भी थी और उन्होंने रसिकबिहारीछाप देकर कई एक पद गाये पहिले मुझे सन्देहथा कि उस अव-

सरपर रसिक बिहारी छाप रखकर स्वयं ही पद बनायेथे परंतु कृष्णगढके लेखसे विदित हुआकि रसिक बिहारी छाप उनके पासवान बनीठनजीकी है तब विचार पूर्वक निम्न लिखित कविताके देखनेसेभी यह निश्चय हुआ आप लिखते हैंः—

'बनो बिहारिनि रससनी निकट बिहारी लाल ।
पान कियो इन दृगनि तें अनुपम रूप रसाल ॥
तहं पद गाए औसर संजोग । बिच रसिक बिहारीहीके भोग ॥'

जान पडता है नागरीदासजी बनी ठनीजीको प्रेमसे केवल बनीही कहकर पुकारतेथे और यहभी इससे स्पष्ट है कि वे प्रायः उनको साथ रखतेथे तथा विशेष पर्दा आदिका विचार नहीं करतेथे ।

हम पाठकोंको उनमेंसे एक पद "उत्सवमाला" ग्रन्थसे उद्धृत करके सुनाते हैं । इस छापके तीन पद और चार दोहे उक्त ग्रन्थमें है ।

'कुंजमहलमें आजु रंग होरी हो । फाग खेलमें बना बनीकी व्है रही पट गठ जोरी हो ॥ मुदित व्है नारिगुलाल उडावें गावें गारि दुहुंओरी हो । दूलह रसिकबिहारी सुन्दर दुलहिनि नवल किसोरी हो ॥ १ ॥"

यहां यहभी कहे बिना नहीं रह सकतेकि इनका प्रेम अधिक हरिवंशी और हरिदासी वैष्णवोंसे था क्योंकि इनके पदोंकी शैली प्रायः उनसे मिलती जुलती है और ये प्रायः श्रीवृन्दावनही में रहतेथे और वहां इन्हीं संप्रदायोंके महात्मा अधिकथे, गोकुलका वर्णन बहुत कम किया है ।

गोधूलक समय ज्ञान गुदरी आए, वहांभी देरतक समाज रहा । वहांसे जमुना पार उतरे ।

"सहि गई दुर्मति दुख असहि, बहि गई बुरी बयार ।
रहि गई ब्रज अवसेर हिय, उतरे जमुना पार ॥ "

वहांसे श्रीजमुनाजीका स्नान करके सोरूंमें आकर रहे । यह स्थान जिला एटामें है यहां बुढगंगाजीका स्नान किया । यहीं भगवानका श्रीवाराहावतार हुआ है हिरण्याक्षको माराहै । इसका उपनाम उकल क्षेत्र और दूसरा शूकरक्षेत्र है ।

वहां एक नौकरने श्रीगंगाजीके तटपर बकरा मारा इसपर गंगाजीने क्रोध किया बडी बाढ आई फिर नागरीदासजीने स्तुति किया तब शान्त हुई ।

"तहँ किए एक अनुचर अधर्म । तटि हत्यो अंजासुत पापकर्म ॥ कछु

क्रोध कियो गंगा कृपाल। दई आन अचानक जल उछाल॥ भुवकाट गिरत अरस्रात जोर। अति भयो भयंकर समय सोर॥ भजि पट्कि २ डेरा निकारि। भयभीत सकल कौतिक निहार॥ जब करी स्तुतिसु सिर नाय पाव। करिछमा कियो सीतल सुभाव॥"

दूसरे दिन दीपदान किया।

वहांसे कपिलाश्रम (कपिलमाम) में आए जहां कपिलदेवजीने तपस्याकी है। वहांसे नावके पुलपर गंगापार उतरे। एक नदी रामगंगा§ और मिलीं उनका स्नान करके धवलागिरिके पास कौसिक नदीके तटपर कमाऊं×में पहुंचे वहां वहुत दिन रहे और वहांसे संधि करके लौटे। हम ऊपर लिख चुके हैं संवत १८०८ में यह ग्रंथ बनना आरम्भ हुआ "जुगल भक्त विनोद" वहीं संवत१८०८ में बनाया है जिसका वर्णन ऊपर है।

" रहे वहुत दिवस कौसिकी तीर। करि चले तहां तें संधिबीर " फागुन वहीं बीता। ब्रजके फागका ध्यान करते यह वर मांगाकि परसाल अब होरी ब्रज में ही हो यही हुआभी।

उसी रास्ते से लौटते हुए श्रीवृन्दावनके उस पार रातको पहुंचे। उस

W. W. Hunter's gazetteer of India.

§ Ramganga—Eastern—a river in Kumaun district N. W. P. rises on the Southern Slope of the main Hamalayan range at an elevation of 9000 ft above sea level and falls into the Sarju at Rameshwar.

Vol VII 537 Page.

× Kamaun—The Principal District of the Division of the same name. In 1814 it was resolved to annex it to British possessions. At tho end of January 1815, every thing was ready for the attack on Kamaun. The first successful event on the British side was the capture of Almora by colonal Nicholson on 26 April 1815. Population 425963 Hindus 5569 Mussalmans in 1872. It has a mild climate. Vol V 471 Page. Population in 1881 493641.

समय कोई नाव या बेडा न मिला; उधर श्रीवृन्दावनका वियोग कौन सह सकता था। अतः श्रीयमुनाजीमें कूद पडे और तैर कर श्रीवृन्दावन पहुंचे कुछ लोग इनके साथ आए कुछ रह गए। आप यों लिखते हैंः—

"देख्यो श्रीवृन्दाबिपिन पार। बिच बहत महा गंभीर धार॥ नहिं नाव नहीं कुछ और दाव। हे दई कहा कीजै उपाव॥ रहे वार लगनिकौं लगै लाज। गए पारहिं पूजै सकल काज॥

प्रेमपंथकौं पीठ दै, यह जीवौ न सुहाय।
मंगल दिन है आजुकौ, प्रिय सन्मुख जियजाय॥

यह चित्त मांझ करिकै विचार। परे कूद कूद जल मध्यधार॥ चले पैर पैर तराय धाय। तहां भई लगन सबै बिधि सहाय॥ तरि गए तरुन जा दयौ पार। गहि हाथ लए व्रजनाथ वार॥

वार रहे रहे वार ते, पार भये भये पार।
दरसे वृन्दाबिपिन बिच, राधानन्द कुमार॥"

वहांका आनन्द लूटकर दिल्ली आए और यहां वर्षोंसे छुट्टी पा सांसारिक व्यवहारोंको छोड राज्य कुटुंबसे मुंह मोड अकेले श्रीवृन्दावन वास आरम्भ किया। यह समय संवत १८०९ के आरम्भका है। क्योंकि १८०८ का फाल्गुन कमाऊंमें हुआ और वर्षोत्सवका वर्णन आगे चलकर इस ग्रंथमें किया है उसके उपरांत अर्थात् वर्ष दिन श्रीव्रजमें रहने पीछे संवत १८१० के माघमें यह ग्रंथ "तीर्थानन्द" पूराहुआ है।

आप दिल्लीका वृत्तांतयों लिखते हैंः—

"फिर बहे बीच राजस प्रवाह। गए इन्द्रप्रस्थ हिय बिरह दाह॥ दिल्ली दिवार कहकहा धाम। लियो फेरि तहां ते मोहि श्याम॥ तजि दयो तहां सब प्रवृत्त संग। भयो व्रज सनमुख फिरी बढयो रंग॥ जब कह्यो सुता लडकाय भाय। लयो बोलि मोंहि वृषभानुराय॥ तब चले चरन बरसाने ओर। किए पैंड पैंड तीरथ करोर॥"

आगे फिर लिखते हैंः—

"ऐसो बरसानो निरखि, गहवर आयो प्रेम। करत दंडवत लुटतरज, छुटि गए राजस नेम॥"

इसके आगे आषाढ फिर सावनमें हिंडोलाका वर्णन बरसानेमें किया है फिर

भादोंमें श्रीकृष्ण जन्मोत्सव नंदगांवमें और ललिता जन्मोत्सव करेला ग्राममें किया वहांसे सुनहराकी कदमखंडीमें दानलीलाका अनुभव किया फिर भादों सुदी सप्तमी• को बरसानेमें आकर श्रीराधाजन्मोत्सवका दर्शन किया। नवमीको मोरकुटी, दानगढ, मानगढ,की लीला देखी; दशमी कोकिलावन, फिसलनीशिला, सांकरीखोरमें दानलीला।

श्रीवृन्दावन, आश्विन मासमें सांझी, शारदीय पूर्णिमा, रासोत्सव देखा।

कार्तिक कृष्ण सप्तमीको श्रीराधाकुंड आए! दीपमालीका और अन्नकूट श्रीगिरिराजमें किया। गोपाष्टमीको नंदगावमें। अगहन और पूस बरसानेमें रहे। बरसानेमें बसन्त और होली किया। होली वर्णन बडी धूमसे किया है। चैत्र बैशाष जेठका वर्णन कुछ नहीं किया यही लिषा दियाः—

"मधु माधव जेठोत्सव, याते वरन्यो नाहिं।
एक फाग आगें जिते, सब फीके दरसाहिं॥"

अंतमें इन दोहोंके साथ "तीर्थानंद" को पूरा किया है।

वहां व.. "गौर सांवरे रसिक दोउ, यह दीजे सुख रास।
में ही है. कबहुं नागरीदास अब, तजै न व्रजको वास॥
माघ अष्टदससतजु दस, बिच वृन्दावन बास।
—— ग्रंथ तीर्थानन्द यह, कियो नागरीदास॥"

नागरीदासजीके बनाए ग्रंथ इतने हैं

(१) सिंगारसार वा व्रजलीलापदप्रसंग
(२) गोपीप्रेमप्रकाश (सं १८००)
(३) पद प्रसंग माला
(४) व्रजवैकुंठ तुला (सं १८०१)
(५) व्रज सार (सं १७९९)
(६) भोर लीला
(७) प्रातरस मंजरी
(८) विहारचंद्रिका (सं १७८८)
(९) भोजनानन्दाष्टक
(१०) जुगलरस मंजरी
(११) फूल विलास
(१२) गोधन आगमन
(१३) दोहन आनन्द
(१४) लग्नाष्टक
(१५) फाग विलास
(१६) ग्रीष्म विहार
(१७) पावस पचीसी
(१८) गोपी बैन विलास
(१९) रास रस लता
(२०) रैन रूपरस
(२१) शीतसार
(२२) इश्क चिमन

(२३) मजलिस मंडन
(२४) अरिलाष्टक
(२५) सदाकी मांझ
(२६) वर्षाऋतुकी मांझ
(२७) होरीकी मांझ
(२८) कृष्णजन्मोत्सव कवित्त
(२९) प्रियाजन्मोत्सव कवित्त
(३०) सांझीके कवित्त
(३१) रासके कवित्त
(३२) चांदनीके कवित्त
(३३) दिवारीके कवित्त
(३४) गोवर्धनधारनके कवित्त
(३५) होरीके कवित्त
(३६) फाग गोकुलाष्टक
(३७) हिंडोराके कवित्त
(३८) वर्षाके कवित्त
(३९) भक्ति मगदीपिका (सं१८०२)
(४०) तीर्थानन्द (१८१०)
(४१) फाग विहार (सं. १८०८)
(४२) बालविनोद (सं. १८०९)
(४३) सुजनानन्द (सं. १८१०)
(४४) बन विनोद (सं. १८०९)
(४५) भक्तिसार (सं. १७९९)
(४६) देहदसा
(४७) वैरागवल्ली
(४८) रसिक रत्नावली (सं १७८२)
(४९) कलि वैराग वल्लरी (सं. १७९९)
(५०) अरिलपचीसी
(५१) छूटकविधि
(५२) पारायणविधिप्रकाश (सं१७९९)
(५३) सिखनख
(५४) नखसिख
(५५) छूटक कवित्त
(५६) चरचरियां
(५७) रेखता
(५८) मनोरथ मंजरी (सं. १७८०)
(५९) रामचरित्र माला
(६०) पद प्रबोध माला
(६१) जुगलभक्ति विनोद (सं.१८०८)
(६२) रसानुक्रमके दोहा
(६३) शरदकी मांझ
(६४) सांझी फूल बीनन समेत सम्वाद
(६५) वसन्त वर्णन
(६६) फाग खेलनसमेतानुक्रम कवित्त
(६७) रासानुक्रमके कवित्त
(६८) निकुंज विलास (सं. १७९४)
(६९) गोविन्द परचई
(७०) बनजनप्रशंसा (सं.१८१९)
(७१) छूटक दोहा
(७२) उत्सव माला
(७३) पदमुक्तावली

(७४) बैन विलास
(७५) गुप्तरस प्रकाश

कृष्णगढके कवीश्वरजी लिखते है कि इनदोनों ग्रंथोंके नाम नागरीदासजीके ग्रंथावलीमें है परंतु ग्रंथ मिलते नहीं।

इनमेंसे जिनका समय ग्रंथोंमें दिया है उसे उद्धृत करते हैं।

मनोरथमंजरी (नं० ५८)

दोहा। संवत सतरासै असी, चौरस मङ्गलवार।
प्रगट मनोरथ-मंजरी वदि भासू अवतार॥

रसिकरत्नावली (नं० ४८)

दोहा। सत्तरै से वड्यासिये, भादो सुदि भृगु वार।
तिथि परिवा कीनी इहै, लीजो सन्त सुधार॥

बिहारचंद्रिका (नं० ८)

दोहा। सत्तरै से अठ्यासिया, संबत सांवन मास।
नव विहार यह चन्द्रिका, करी नागरीदास॥

कलिवैरागवल्ली (नं० ४९)

दोहा। सत्तरासै पच्याणवें, संबत सावण मास।
कलिवल्लीवैरागकी, करी नागरीदास॥

भक्तिसार (नं० ४५)

कुण्डलिया। सुख पायौ पूरन भयैं, ग्रन्थ जु भाषा चार।
सतरासै निनांनवै, द्वैज थौस गुरुवार॥
द्वैज थौस गुरुवार मास सावन मन भावन।
कृष्णपक्ष सुभ मन्त्र सन्त जन श्रवन सुहावन॥
भक्ति सार उचार कियौ निज मन समुझायौ।
नागरी दास न कहूं विमुष काहू सुख पायौ॥

पारायणविधि प्रकाश (नं. ५२)

दोहा। सत्तरैसै निनांनवै, संबत सावन मास।
पारायन जु प्रकास-विधि कियौ नागरीदास॥

व्रजसार (नं. ५)

दोहा। सत्तरैसै निनांनवै, पोस जु सुदि रवि-वार।
नौमी नागरीदास यह कियो ग्रन्थ व्रज-सार॥

गोपीप्रेमप्रकाश (नं. २)

दोहा। संवत अठारैसै सुकल प... जेठ सुभ मास।

गोपीप्रेमप्रकाश यह, कियौ नागरीदास ॥

ब्रज वैकुंठतुला (नं. ४)

दोहा । संवत अठारैसै जु इक, दिन वसन्त सुभ मास ।
ब्रज वैकुण्ठ तुला कियौ, ग्रन्थ नागरीदास ॥

भक्तिमगदीपिका (नं० ३९)

दोहा । संवत अष्टदस सतजु द्वै, क्वार तीजगुरुवार ।
रूप नगर विचि कृष्णपक्ष, भयौ ग्रन्थ विस्तार ॥

फागविहार (नं० ४१)

दोहा । संवत अष्टदस सतजु पुन, अष्टवर्ष मधु मास ।
ग्रन्थ गङ्गतटि कृष्णपक्ष, कियो नागरीदास ॥

जुगलभक्तिविनोद (नं० ६१)

दोहा । अष्टादस सत अष्ट पुनि, संवत माघ सुमास ।
जुगल भक्ति गुन ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ।
निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटपकी भीर ।
तहां ग्रन्थ रचना भई, नदी कौसिकी तीर ॥

वनविनोद (नं० ४४)

दोहा । समत अठारह सौ जु नव, कृष्णपक्ष मधु मास ।
वन विनोद कल ग्रन्थ यह, क्रियो नागरीदास ॥

बालविनोद (नं० ४२)

दोहा । समत अष्टदस सत जु नव, मास अस्वनि भृगुवार ।
तिथि षष्टमि अरु शुक्लपक्ष, रच्यौ ग्रन्थ विस्तार ॥

तीर्थानन्द (नं० ४०)

दोहा । माघ अष्टदस सत जु दस, विचि वृन्दावन वास ।
ग्रन्थ तीरथानन्द यह, कियौ नागरीदास ॥

सुजनानन्द (नं० ४३)

दोहा । समत अष्टदस सत जु दस, बरसानेके वास ।
ग्रन्थ सु-सुजनानन्द यह, कियो नागरीदास ॥

वनजन प्रशंसा (नं० ७०)

दोहा । अष्टादस सत दस जु नव, संवत माघ सु मास ।
वन जन-प्रसन्स ग्रन्थ यह, कियौ नागरीदास ॥

सबसे पहिला ग्रन्थ जो इनका मिला वह मनोर्थमंजरी जो सं० १७८० में बना, दूसरा रसिकरत्नावली सं० १७८२ में तीसरा "विहारचंद्रिका" संवत १७८८ में बना ।

इस समै जैसी सुन्दर और प्रौढ कविता आपकी है उसे हम अपने पाठकोंको "विहारचंद्रिका" का एक अंश लेकर सुनाते हैं इसीसे वे सारे ग्रंथका गौरव समझलेंगें ।

"उज्जल पक्षकि रैन चैन उज्जल रस दैनी ।
उदित भयो उडराज अरुन दुति मन हर लैनी ॥
महा कुपित व्है काम ब्रह्म अस्त्रहिं छोड्यौ मनौ ।
प्राची दिसि तें प्रजुलित आवति अगिनि उठी जनौं ॥
दहन मानपुर भए मिलनकौं मनहुलसावत ।
छावत छिपा अमन्द चन्द ज्यों ज्यों नभ आवत ॥
जगमगाति वन जोति सोत अमृतधारासे ।
नवद्रुम किसलय दलनि चारु चमकत तारासे ॥
स्वेत रजतकी रैन चैन चित मैन उमहनी ।
तैसी मन्द सुगन्ध पौन दिनमनि दुख दहनी ॥
मधिनायक गिरिराज पदिक वृंदावन भूपन ।
फटिकसीला मनि शृंग जगमगति दुति निर्दूषन ॥
सिला सिला प्रति चन्द चमकि किरननिछवि छाई ।
बिच बिच अम्ब कदम्ब झम्ब झुकि पायनि आई ॥
ठौर ठौर चहुं फेर ढेर फूलनके सोहत ।
करत सुगन्धित पवन सहज मन मोहत जोहत ॥
बिमल नीर निर्झरत कहूं झरना सुख करना ।
महा सुगन्धित सहज बास कुमकुममद हरना ॥
कहुं कहुं हीरन खचित रचित मंडल सु रासिके ।

जटित नगन कहुं जुगल खम्भ झूलनि विलासिके ॥
ठौर २ लखि ठौर रहत मनमथ सोभारी ।
विहरत विविध विहार तहां गिरिपर गिरि धारी ॥
दोहा । कहत कहत कहँ लगि कहै, अब कवि छवि अभिराम ।
प्रिया कमल पद परस हित, धरयो रूपगिरि श्याम ॥ १ ॥

नागरीदासजीकी सभामें निम्न लिखित कवि वर्तमानथे ।

१ प्रसिद्ध कवि वृन्द (जिनकी बनाई वृन्दसतसई है) के, पुत्र वल्लभजी, इनको महाराज नागरीदासके पिता महाराज राज सिंहजीने "सुकवि" की पदवीदी थी, अतएव ये सुकवि वल्लभ कहलातेथे ।

२ पूरबकी ओरके रहनेवाले सनाढ्य हरिचरणदासजी, इनके बनाए ग्रंथ सभाप्रकाश, कवि वल्लभ (इन दोनों ग्रंथोंमें काव्य प्रकाशका ठीक ठीक उलथा किया है) बिहारी सत सईकी "हरिप्रकाश" नामक टीका, रसिकप्रियाकी टीका, कविप्रियाकी टीका इत्यादि हैं ।

३ करौलीके सनाढ्य हीरालालजी. इनका बनाया "सिरदार सुजस" नामक ग्रंथ है, जिसमें महाराज नागरीदासजीके अनुज महाराज बहादुरसिंहने जब राज्य छीन लियाथा और नागरीदासजीने अपने पुत्र सरदारसिंहजीके साथ कुमाऊं आदि प्रदेशमें जाकर मरहठोंको लाकर अपना राज्य लिया उसका वृत्तांत लिखा है ।

४ मुंशी कनीरामजी, इनके मीर मुंशी थे, कवीभी थे ।

५ कल्लाह पन्नालालजी, कविथे

६ वैष्णव विजय चन्द्रजी, कविथे

७ बनी ठनीजी, जिनका वर्णन ऊपरहो चुका है ।

८ दाहिवां विजय रामजी , कवि थे ।

९ बाहरके बहुतेरे कवि पंडित आतेथे, जिनमेंसे नरवर गढके राव उदयनाथजी

---

१ वृन्द-No. 837 The Modern Literature of Hindustan.

२ हरिचरणदास-No. 939-Do.

३ हीरालाल-No. 948-Do.

बहुत प्रसिद्ध थे इन्होंने नागरीदासजीके सिंहके शिकारका एक ग्रंथ बनाया है इनमेंसे डाकर ग्रिअर्सन और शिवसिंहने केवल पहिले लिखे तीन कवियोंका यत्किञ्चित वर्णन किया है परंतु प्रायःसमयमें भ्रम है और वर्णनभी नाम मात्र है।

अन्तमें वनजनप्रशंसक ग्रंथसे श्रीवृन्दावन बासपर नागरीदासजीके हृदयमें कैसा संतोष इस पदमें झलकता है।

"हमारी सवही बात सुधारी।
कृपा करी श्रीकुंजविहारिनि अरु श्रीकुंजविहारी।
राख्यो अपने वृन्दावनमें जिहिको रूप उंज्यारी।
नित्त केलि आनंद अखंडित रसिक संग सुखकारी॥
कलह कलेस न व्यापै इहिठां ठौर विश्वतें न्यारी।
नागरीदासहिं जनम जिवायौ वलिहारी वलिहारी॥ १॥"

"ब्रज सम्बन्ध" ग्रन्थसेः—

"सांचो मित्र गोपाल है मेरो परम पियारौ।
जिहिं दीनौ ब्रजवासलै वैकुंठ तें भारौ॥
निज साधनको संग दयोनीकेते नीकौ।
जाके पटतर क्यों लगे सुख स्वर्गको फीकौ॥
राज कलहके मूलको विष अमल छुटायौ।
नागरियावृन्दाविपुल रस अमृत प्यायौ॥ १॥"

हम इन महानुभाव प्रेमरस छके महात्माका चरित्र उन्हीके इस छप्पयके साथ समाप्त करते हैं।

"धनि वह कुल धनि नगर धन्य वह देस सुमंडल।
धन्य खंड वह द्वीप धन्य वह सकल महीतल॥
धन्य धन्य सवलोक होत जेहि पावन पावन।
मुख रसना वह धन्य करत तिनकौ गुण गावन॥
जाकी महिमा कहि सकै को कवि नागर मध्य छित।
करत धन्य इन नैनिको जेहि उर प्रेमानन्द नित" ॥ १॥

वर्तमान महाराजाधिराज महाराज श्रीश्रीश्री १०८श्री श्रीशार्दूलसिंहजी म.



श्रीः ।

नृत्यगोपालो जयतितराम् ॥

अथ छप्पनभोगचंद्रिका

लिख्यते ॥

तत्रादौपूर्वार्द्ध

॥ दोहा ॥ चरनकंजअशरनशरन, हरनअमितअपराध ॥ वंदौंश्रीगुरुदेवके, देवहुबुद्धिअगाध ॥ १ ॥ श्रीजीनृत्यगुपालके, चरनकमलउरधारि ॥ छप्पनभोगउछाहको, रचौंग्रंथसुखकारि ॥ २ ॥ कृष्णगढ्ढपतिराठवर, श्रीशार्दूलनरेश ॥ तिनकेअनुजजवानसिंह, पालकधर्महमेश ॥ ३ ॥ तिनकीनौंआनंदसौं, छप्पनभोगउछाह ॥ श्रीकल्यानसुरायके, चरनकमलचितचाहि ॥ ४ ॥ नृपजवानमहाराजहिय, छप्पनभोगहूलास ॥ कीनोपूरनचंदसो, जगमेंपरमप्रकाश ॥ ५ ॥ जहांदीखतहैचंद्रिका, तहांहीचंदलखाय ॥ सोचिवांचियोग्रंथतें, भईबातलखिजाय ॥ ६ ॥ छप्पनभोगसुचंद्रिका, नामग्रंथकोदीन ॥ हरिसँबंधगुनसमझिकैं, लेऊसराहप्रवीन ॥ ७ ॥

कृष्णगढ्मदाराजके, गृहमेंहैंनिधिपांच ॥ तिनकीनिजवार्ताप्रथम, कहौंगहैंपनसांच ॥ ८ ॥ नृपवंशजुपुनिवर्निहौं, प्रभुवार्ताअनुसंग ॥ पूर्वारधमेंप्रेमधरि, कहिहौंपरमप्रसंग ॥ ९ ॥ प्रथमहिबर्ननकरत हौं, सुंदरताकोदेश ॥ श्रीकल्यानसुरायकी, निजवार्ताकौंवेश ॥१०॥ श्रीजीअरुश्रीनाथजी, नामग्रंथमाधिआहि ॥ जहांकल्यानसुराय को, जानऊनामसराहि ॥ ११ ॥ छप्पय ॥ जयतिजयतिकल्या नरायकलिमलदुखभंजन ॥ जयतिजयतिबकबकीअसुरकंसादि विभंजन ॥ जयजयमुरलीमधुरनादकरिब्रजजनरंजन ॥ जयजय रासविलासरसानंदितमुनिमंजन ॥ जयजयतिरूपगिरिराजधरज यसुरपतिमदभंगकिय ॥ जयनंदसंगवृषभानगृहभोगरागअनुराग लिय ॥ १२ ॥ दोहा ॥ यानिधिकोआगमसरस, नगरकृष्णगढ जांनि ॥ भयोसुजैसीरीतिसौं, सोसबकहौंबखांनि ॥ १३ ॥ श्रीव ल्लभआचार्य प्रभु, कृष्णसुमुखअवतार ॥ तिनकेविठ्ठलनाथ प्रभु, गोस्वामीसुउदार ॥ १४ ॥ सप्तपुत्रतिनकेभये, तिनमेंश्रीटीकैत ॥ गिरधरलालकृपालहैं, मायावादविजैत ॥ १५ ॥ गिरधरकेसुतत्र यभये, श्रीमुरलीधरज्येष्ठ ॥ दामोदरहैंदूसरे, सबगुनसौंअतिश्रेष्ठ ॥ ॥ १६ ॥ अतिसुंदरहैंतीसरे, दीक्षितगोपीनाथ ॥ पुष्टिधर्मपालक बनी, बढीसुजसकीगाथ ॥ १७ ॥ तिनकेचरनसरोजकी, शरन गहीसुखमान ॥ कृष्णगढपतिराठवर, रूपसिंहराजान ॥ १८ ॥ सतरैसैंअरुच्यारमें, लियोमंत्रउपदेश ॥ लखिगोवर्द्धननाथकौं, द

---

१ छप्पनभोगका मनोर्थ किया जाता है जिसकी भावना यह हैं कि श्रीकृष्णचंद्र नंदरायजीके साथ वृषभानजीके पाहुने पधारे हैं. ।

रस्योसवब्रजदेश ॥ १९ ॥ मंत्रजपतहरिभक्ति रस, लीनभयोमन
मीन ॥ स्वपनेमेंश्रीनाथजी, दर्शनआज्ञादीन ॥ २० ॥ मोस्वरू
पपधराहु अब, रूपसिंहतुवगेह ॥ यहसुनिउठिमनचकितह्वैं, कीन
विचारजुएह ॥ २१ ॥ यहेंलाभगुरुदेव विन, कोकरिसकैंप्रवीन ॥
रूपसिंहकरजोरि तब, इकदिनविनतीकीन ॥ २२॥ जैंजैंप्रभुकीजैं
सफल, मोहिमनोरथसिद्ध ॥ सेवाकेहितदीजियैं, हरिस्वरूपकीनि
द्ध ॥ २३ ॥ दीक्षितगोपीनाथ प्रभु, आतुरदासहिचीन ॥ निजज
नपैंवात्सल्यकरि, ऐसैंआज्ञाकीन ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ सीखेसब
शृंगार, सातौंवालकप्रथमही॥ हैंस्वरूपसुखसार, विठ्ठलप्रभुकेसमय
को ॥ २५ ॥ जावहुलेहुनिहार, आज्ञासुनितबनृपचले ॥ छकि
गयेरूपनिहार, लखिस्वरूपश्रीनाथको॥२६॥ अनुभवभयोअमाव,
तवहीनृपकेहृदयमें॥ पहिलैंदियदरसाव, स्वपनेमेंश्रीनाथजी॥२७॥
॥ दोहा ॥ नृपदरशनकरिगुरु निकट, कीनीविनतीजाय ॥ यही
स्वरूपकृपालुमो, दीजैंशिरपधराय ॥ २८ ॥ श्रीदीक्षितगोस्वामि
प्रभु, निजजनकौंअपनाय ॥ श्रीजीकेसुस्वरूपकौं, दियेशीसप
धराय ॥ २९ ॥ दामोदरभटसंग दिय, सेवारीतिसुहेत ॥ तासौंनृ
पसमझीसवैं, सेवारीतिसचेत ॥ ३० ॥ विदामांगिगुरुसौंचले, चि
तमेंअतिशचुपाय ॥ अतिउमंगकरिकैंनृपति, श्रीजीसंगपधराय ॥
॥ ३१ ॥ दरमजलैंमुक्कामकरि, सेवाकरतसप्रेम ॥ पधरायेनिजदे
शमें, साधतनवधानेम ॥ ३२ ॥ मांडलगढपधरायकैं, मंदिरसि
द्धकराय ॥ सबसाहित्यवनायकैं, चित्तबीचहरपाय ॥ ३३ ॥ स
तरेंसैइग्यारहैं, संवतमाघसुमास ॥ कृष्णपक्षतिथिप्रतिपदा, पाटो

त्सवसुखरास ॥ ३४ ॥ मांडलगढकेपरगनैं, भटखेडीइकगाम ॥ दामोदरभटकौंदियो, रूपनृपतिअभिराम ॥ ३५ ॥ रूपसिंहम हाराजके, ताहिसमयकेंमांहि ॥ मांडलगढमेवारको, हुतोअमलके मांहि ॥ ३६ ॥ मांडलगढमेवारको, जैसैंआयोहाथ ॥ रूपसिंह महाराज के,सोसुनियेंअबगाथ ॥ ३७ ॥ कृष्णगढ्केनिकटइक, खोडांकोगिरिआहि ॥ विकटदुर्गतहांरचन नृप, कियआरंभसरा हि ॥ ३८ ॥ दिल्लीपतिश्याज्याहजू, यहैं खबरसुनिलीन ॥ रूपनृ पतिसौंजबकही, किंहिंकारनयहकीन ॥ ३९ ॥ रूपसिंहकीनीतबैं, दिल्लीपतिसौंअर्ज ॥ राजारानागढबिनन, करतव्याहकीगर्ज ॥ ॥ ४० ॥ बन्योबनायोगढतुम्है, देहौंकहिनृपईश ॥ मांडलगढमेवा रको, करिदीनौंबखसीस ॥ ४१ ॥ मांडलगढहीकोरतन, देशाधि पकरिदीन ॥ तासौंतहांश्रीनाथको, मंदिरसिद्धसुकीन ॥ ४२ ॥ मांडलगढमेंनृपकियो, छबिसौंछप्पनभोग ॥ भयेप्रसन्नश्रीनाथजी, छप्पनभोगअरोग ॥ ४३ ॥ तनमनधनसुसमर्पिकैं, भूपतिरूपब लिष्ट ॥ छप्पनभोगछकायकैं, कियेप्रसन्ननिजइष्ट ॥ ४४ ॥ श्रीक ल्यानसुरायप्रभु, होयभक्तआधीन ॥ रूपसिंहमहाराजसौं, सानु भावताकीन ॥ ४५ ॥ तिनप्रसंगकौंसुनतही, व्हैहैंसुखमेंलीन ॥ जिनजनकोमनव्हैरह्यो, भक्तिसिंधुरसमीन ॥ ४६ ॥ जिहिंठांजे सोसमयमें, जबैंभयोजिहिंढंग ॥ लिख्योलख्योदफतरमहीं, सोइ कसुनियप्रसंग ॥ ४७ ॥ देशाधिपश्याज्यांहको, आयोजबफरमान ॥ श्रीजीकौंपधरायसंग, कीनौंनृपतिप्रयान ॥ ४८ ॥ रहतभयेकेतेदि वस, दिल्लीपतिकेदेश ॥ एकदिवसऐसोभई, अद्भुतवातविशेष ॥ ४९ ॥

रूपनृपतिकेहृदयमें, नवधासाधतनेम ॥ प्रेमभक्तदशमीभई, प्रभु पोषकजिंहिंप्रेम ॥ ५० ॥ श्रीजीकेशृंगारकौं, करतभयेरसलीन ॥ राजकाजकीवातकी, जहांकछुजातकहीन ॥ ५१ ॥ असवारीदिल्लीशकी, निकसीआयअचान ॥ तवश्रीजीनिजरूपकिय, रूपसिंहराजान ॥ ५२ ॥ रूपसिंहकोरूपधरि, दिल्लीपतिपैंजाय ॥ नजरकरीतवश्याज्यहां, मुदरीदईसुहाय ॥ ५३ ॥ सेवासौंअवसर भयो, तवैंकरीसवअर्ज ॥ देशाधिपइंहिराहगो, कोजानैंकिंहिंगर्ज ॥ ५४ ॥ इतनेमेंदेशाधिपति, आयेयाहीराह ॥ तवैंजायकीनी नजर, रूपसिंहनरनाह ॥ ५५ ॥ रूपसिंहअतिशीघ्रतैं, देशाधिपकेपास ॥ गयेतवैंदेशाधिपति, कीनौंयहैंप्रकास ॥ ५६ ॥ पाछैंभीतुमरूपसिंह, करीनजरयहांआय ॥ दईअंगूटीहमतुमैं, करीनजरफिरआय ॥ ५७ ॥ अनुभवकरिहियमेंलख्यो, यहहरिहीको मर्ज ॥ अद्भुतसुनिधीरजधरी, करीमाधुरीअर्ज ॥ ५८ ॥ हरिगुरुस्वामीकेनिकट, जवजवसनमुखजाय ॥ भेटनजरनोछावरसु, करियेंअतिहरपाय ॥ ५९॥ शिविरआपनेआयकें, रूपसिंहनरनाथ॥ श्रीजीसौंविनतीकरी, दीजेमुंदरीनाथ ॥ ६० ॥ सिंहासनसौंउछरि तव, परीअंगूठीआय ॥ प्रेमविवसव्हैंनृपतिजव, लीनीहियैंलगाय ॥ ॥ ६१ ॥ यौंसवभृत्यनकौंकही, करियैंप्रकटनयाहि ॥ वहिमुंदरीकीउर्वशी, करिवाईनृपचाह ॥ ६२ ॥ श्रीजीकेधारननृपति, [१]और वाईहरपांहि ॥ वहउर्वशिअयापिहैं, हाजरभूपनमांहि ॥ ६३ ॥ यह अद्भुतनाहिंमानियैं, समझिभजनकीरीति ॥ प्रभुरच्छकहैंभक्तके,

१ फोजके मुकामके डेरे.

जोसेवैंधरिप्रीति ॥ ६४ ॥ प्रेमसुभक्तिप्रभावतैं, भक्तहोतहरिरूप ॥ यहअद्भुतश्रीजीधरचो, रूपसिंहकोरूप ॥ ६५ ॥ रूपसिंधकेतबभयो, जोविचारचितमांहि ॥ सोप्रकाशकविजयकरत, सुनियैंरसिकउमांहि ॥ ६६ ॥ दिल्लीपतिकीनजरको, ममहितप्रभुकौंखेद ॥ तासौंअवनिजदेशमैं, पधरावैंविनखेद ॥ ६७ ॥ यहैंमनोरथधारिमन, रूपसिंहनरनाह ॥ प्रभुकीप्रभुतासमझिचित, वाहवाहकहिवाह ॥ ६८ ॥ कृष्णगढ्ढउत्तरदिशहि, नामकवेराग्राम ॥ ग्रामववेरामधिहुतो, भारमल्लकोधाम ॥ ६९ ॥ भारमल्लकेपुत्रयह, रूपसिंहअभिराम ॥ नगरवसायोप्रथमतहां, रूपनगरदियनाम ॥ ७० ॥ प्रपितारूपनरेशके, कृष्णसिंहमहाराज ॥ कृष्णगढ्ढनिजनामपैं, जैसैंकिययहसाज ॥ ७१ ॥ सतरैंसैअरुपांचमें, दइरूपनगरनींव ॥ किलाकोटसबसिद्धिभो, वीरसुखदकीसींव ॥ ७२ ॥ गढमेंमंदिरसिद्धकिय, याअवसरकौंपाय ॥ अरुजलक्रीड़कवापिका, करिवाईसुखदाय ॥ ७३ ॥ यहसबसिद्धभयेतबैं, मनमैंधरिउत्साह ॥ रूपनगरश्रीनाथजी, पधरायेनरनाह ॥ ७४ ॥ छप्पय ॥ जयपुरपोत्तमरूपजयतिजयगिरिवरधारी ॥ जयजयव्यापकब्रह्मजयतिजयकुंजबिहारी ॥ जयजयशुचिरसरूपजयतिजनमनअनुहारी ॥ जयविट्ठलेशसुतसप्तखेलसेवाकेधरी ॥ जयरूपसिंहनरईशकेशीसराजेआंनकैं ॥ कल्यानरायवरनामसौंरूपनगरब्रजमानकैं ॥ ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ मंदिरकेसनमुखमहल, अपनेरहिवेहेत ॥ नृपवनायरहनेलगे, जवैंअनवसरलेत ॥ ७६ ॥ ओरबातकहांलौंकहौं, सेवाहितजेकीन ॥ नितगागरजलपानकी, वापीसौंभरिलीन ॥ ७७ ॥

तनमनधनसौंप्रीतकरि, साधेनवधानेम ॥ सर्वस्वात्मानिवेदनसु, भक्तिकरीकरिप्रेम ॥ ७८ ॥ नवधाभक्तिप्रभावको, बर्ननकियकविवृंद ॥ वहिकवित्वयहांलिखतहौं, मोमनधरिआनंद ॥ ७९ ॥ कविवर्यवृंदजीकृतमहाराजश्रीरूपसिंहजीकीवचनिका तामेंनवधानभक्तिकेकवित्वहैं वेहीयहांलिखैंहैं ॥ नवधाभक्ति ॥ तत्रादौश्रवणभक्ति ॥ वचनिका ॥ प्रथम श्रीगिरिधारीजूकी श्रवनभक्ति जैसैं करी परीक्षित हितचित ॥ तैसैं राजारूपसिंह हरि गुन श्रवन करत नितनित ॥ कवित्त ॥ सागरसुधारकोहरिजसकोउजागरहैंनिर्मल रतनगुनआगरधरतहैं ॥ तापहरैंपापहरैंविषयविलापहरैंकलिकेकलापहरैंआनंदभरतहैं ॥ श्रवनसुवर्नकेकटोरानसौंभरिभरिअचवत अतिहीयहौंसनहरतहैं ॥ भूपतिपरीक्षितज्यौंभूपरूपनितप्रतिभगति सौंभागवतश्रवनकरतहैं ॥ १॥८०॥ गुनकीर्त्तन ॥ वचनिका ॥ दूजैं भगति श्रीनारायन गुन कीरतन ॥ जासौं जाको निह चल मन पूरनपन ताको कीजैं वर्नन ॥ कवित्त ॥ आतमतरनपरमातमकरनसममहातमहरनमहातमवतायोहैं ॥ अशरनशरनशरनताकैंकोऊ आंनधरानिधरनहूनजाकोपारपायोहैं ॥ पलपलछिनछिनप्रतिदिन प्रतिरैंनसुपनसुपनहूमेंभूलिनभुलायोहैं ॥ रूपभूपभगतिसूंभागवत सुनिसुनिशुकमुनिकीसीधुनिहरिगुनगायोहैं ॥ २ ॥ ८१ ॥ पूजन भक्ति ॥ वचनिका ॥ एक भगति हरिपद कंजनको पूजन जैसैं करैं भक्तजन ॥ जैसैं राजापृथु भगति करी तैसैं राजा रूपचित धरी ॥ कवित्त ॥ एनसारघनसारकुंकुमउवटिअंगगंगजलसौंन्हवाइतामैंमनदीनौंहैं ॥ वसनवनाइनगभूपनवनाइतनचंदनचढाइरुचिरु

चिरसभीनौहैं ॥ पुहपचढाइवनमालापहराइधूपदीपदरसाइवालभो
गआगैंकीनौहैं ॥ पृथ्वीपतिपृथुजैसैंप्रभुपदपूजिपूजिरूपभूपपूजन
भगतिफललीनौहैं ॥ ३ ॥ ८२ ॥ स्मर्नभक्ति ॥ वचनिका ॥ और
एक भक्ति हरि सुमिरन तामैं दीजैं मन जैसैं सावधान भये प्रह-
लाद ॥ तैसैं राजा रूप पायो भक्ति सुधाको सवाद ॥ कवित्त ॥
गुरुउपदेशपाइ औरविसराइ ताहिविसरयोनछिनहियपाटीमांहिप
ढयोहैं ॥ करिमनमनकासुरतिसूतशुद्धकरिब्रह्मगांठिदेकैकरीमाला
चाउचढयोहैं ॥ रैनदिनरसरसीरसनातैंछिनछिनफेरफेराफिरिफिरि
यहैरटरढयोहैं ॥ रूपप्रहलादजैसैंधारिधरहरिओरनामपरिहरिगिरि
धरनामपढयोहैं ॥ ४ ॥ ८३ ॥ चरनसेवन भक्ति ॥ वचनिका ॥
और एक भक्ति चरन सेवन करन ॥ सुख करन दुःख हरन
ताको जैसैं कमलाकैपन ॥ जासौं तैसैं अनुरागी भयो रूपमन ॥
॥ कवित्त ॥ करिथिरताईपरिहरिकैंअथिरताईसेवतसदाईसुखवेदमु
खभाख्योहैं ॥ परमसुवासपरिपूरनप्रकाशवासिताहीमैंविलासओर
कौंनअभिलाख्योहैं ॥ कोमलअमलप्रेमरससौंसरसभरेसोईरसअमि
तसुचितचितचाख्योहैं ॥ भूपरूपसिंहकमलाज्यौंकमलापतिकेच
रनकमलकेशरनमनराख्योहैं ॥ ५ ॥ ८४ ॥ वंदन भक्ति ॥ वच
निका ॥ बहुरौं एक वंदन भगति ॥ अति हित सहित अलस र-
हित जैसैं करी अक्रूर नितप्रति ॥ तैसैं राजा रूप करी दंडवति ॥
॥ कवित्त ॥ तनकरिमनकरिवचनरचनकरिनयननिहारिअनुहारिचि
तभरीहैं ॥ पदजानुउराशिरभूमिसौंछुवाईअतिमूरतिमधुरसौंसुमति
अनुसरीहैं ॥ प्रभुपदकंजनपरासिकरकंजनसौंऐसैंदंडवतराचेरचि-

रुचिभरीहैं ॥ पूरिपूरिहितनितप्रतिहीअक्रूरजैसैंभूपरूपबंदनभग
तिभलीकरीहैं ॥ ६ ॥ ८६ ॥ दास्यभावभक्ति ॥ वचनिका ॥ और
एक दास्य भावकी भगति ॥ जे हैं दास जगति ॥ तिनकौं अति
नीकीलगति ॥ जैसैं करी हनुमान सुमति ॥ तैसैं राजा रूपकैं
याही सौंसुरति रति ॥ कवित्त ॥ प्रातउठिआइभाइभरिहरिमंदिरमें
प्रेमपदगाइकैंजगाइछविछायोहैं ॥ न्हाइकैंन्हवाइतनबसनवनाइग
नभूपनरचाइचोवाचंदनचढायोहैं ॥ नानाभांतिभोगभुगताइवनवी
रादैकैंपाछैंआज्ञापाइकैंमहाप्रसादपायोहैं ॥ दासहनुमानजैसैंआज्ञा
कारीनाथजूसौंरूपभूपऐसैंदासभावदरसायोहैं ॥ ७ ॥ ८६ ॥ स-
ख्यभक्ति ॥ वचनिका ॥ एक भक्ति सखा भावकी ॥ चितहित-
चावकी केवल श्रीनाथही अनुग्रह धरैं ॥ नाहीसौंसखा भाव करैं॥
जैसैं अर्जुनसौं कियो ॥ तैसैं राजा रूपसिंहजीकौं श्रीनाथजी अ-
पनौं करि लियो ॥ कवित्त ॥ विविधिविलासनमेंरहासिरहासनमेंगो
पीरसरासनमेंवातनाछिपाइकी ॥ गढगिरिघाटनविषमसमवाटनमेंथि
रचरथाटनमेंनैंकनजुदाइकी ॥ वनघनपुंजनमेंरनजनपुंजनमेंहरिक
रिगुंजनमेंआइकैंसहाइकी ॥ अर्जुनज्यौंनाथजूकैंनिरंतरसंगरहैंरू
पभूपजानीहैंभगतिसखाभावकी ॥ ८ ॥ ८७ ॥ सर्वस्वात्मनिवेदन
भक्ति ॥ वचनिका ॥ और एक भक्ति सर्व स्वात्म निवेदन ॥जातैं
तनमनधन श्रीनारायनहीकौं अरपन ॥ जैसैं राजा वलिकीनौं स-
मर्पन ॥ तैसैं राजारूपसिंहहूकौं यहैं पन ॥ कवित्त ॥ वाहीकेनिमि
त्ततनवाहीकेनिमित्तमनवाहीकेनिमित्तजनरीतिनितप्रतिकी ॥ वेदवि
धिधारनकौंव्रजकेविहारिनकौंधर्मअनुसारिनकौंसंपतिसुभतिकी ॥

सवधनधामकामकामनासमरपनहरिहीकेनामथितिक्षितिक्षितिपति की ॥ वलिजैसैंनाथजूकेरूपवलिहारिरूपसरवसआतमनिवेदनभगतिकी ॥ ९ ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ सुनियैंद्वितियप्रसंगअव, जिंहिंसुनिमनहरषाय ॥ सानुभावतारूपपर, जगमेंदइदरसाय ॥ ८९ ॥ दिल्लीपतिश्याज्यांहको, फिरआयोफरमान ॥ भगवतइच्छाधीनव्है, कियोवलखप्रस्तान ॥ ९० ॥ जायवलखकौंसरकरी, फेरिदिल्लीशदुहाइ ॥ दिल्लीपतिकेहुकमतैं, रहेतहांजयपाइ ॥ ९१ ॥ तहां रहतबहुदिनभये, प्रभुसौंभयोवियोग ॥ व्हैंअत्यंतवियोगवश, हियउपज्योयहयोग ॥ ९२ ॥ विनतीपदसुवनायनृप, पठयोपत्रीवीच ॥ मुखियाभीतरियानकौं, लिखीनेहरससीच ॥ ९३ ॥ विनतीपदकेपत्रकौं, तुमनिजकरतैंलेहु ॥ समयअनवसरकेमहीं, प्रभुचरननिधरिदेहु ॥ ९४ ॥ रूपनगरकासीदसंग, आयोपत्रसुखेन ॥ मुखियादिकपत्रसुपढ्यो, नृपकौंअतिसुखदेन ॥ ९५ ॥ भयोअनवसरसमयजव, विनतीपदकोपत्र ॥ धरचोचरनचोकीनिकट, पदपायोपदछत्र ॥ ९६ ॥ प्रोहितगिरधरकौंप्रभू, वहिनिशिसुपनेमांहि ॥ यहआज्ञाकीनीसुखद, आजवुलायेयांहि ॥ ९७ ॥ आज्ञादिनकी लिखिमिती, भेजजादियेकासीद ॥ दिल्लीपतिहूवाहिदिन, लिखी सीखताकीद ॥ ९८॥ आज्ञाकीअरुसीखकी, मिलीमितीजवएक ॥ रूपसिंहलखिकहिप्रभू, रखीभक्तकीटेक ॥ ९९ ॥ प्रेमावेशविशेषव्हैं, धरिप्रभुकोहियध्यांन ॥ दरमजलैंपहुंचेजलद, रूपनगरनृपआंन ॥ १०० ॥ श्रीजीकेदरशनकिये, कियनोछावरभेट ॥ सेवाकेसुखमेंपगे, मिटीकुसंगकिफेट ॥ १०१ ॥ ॥ छप्पय ॥ जयज

यजनप्रल्हादहेतनरहरिवपुजाता ॥ जयगरुडासनछांडिचलेगज ग्राहगहाता ॥ जयद्रोपदिहितदेरनहींकियचीरवढाता ॥ जयजयश्री कल्यानरायभक्तनिसुखदाता ॥ जयदीक्षितगोपीनाथदइरूपनगर मधियहसुनिधि॥ जयरूपसिंहनरईशकेसकलमनोरथकरनसिधि ॥ ॥ १०२ ॥ महाराजश्रीरूपसिंहजीविनायभेज्योसो पद ॥ प्रभुजुइ हांरहैंकछुनांई ॥ करियैंगवनभवनदिशिअपनैंसुनियेअरजगुसांई ॥ देखीवलखबरफहूदेखीअधमअसुरअवलोके ॥ मध्यमदेशवेपहूमधू, मइहांकहांलैंरोके ॥ भक्तवत्सलकरुणामयसुखनिधिकृपाकरो[illegible] ॥ धारी ॥ रूपसिंहप्रभुविरदलजतहैंब्रजलैंबसोबिह[illegible] ॥१०३ ॥ यहांर श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायांपूर्वार्द्धेश्रीकल्यानरायप्र[illegible]नसुनिजवा[illegible]गरह [illegible] ॥२१ ॥

अथ श्रीनृत्यगोपालजीकी निज [illegible] [illegible]ज्ञाकि[illegible] ो पद॥

॥ दोहा ॥ अबश्रीनृत्यगुपालको, निजवार्ताकैंसोसुखदैभहोट्टग सुन्यौंदेख्योकहौं, रंगजंगकेसंग ॥ १ ॥ श्रीमन्तरायो॥ नागरिया स्वरूपअभिराम ॥ छोटेश्यामसुजानहैं, वडेरुचिरवा[illegible]दासजीकीप्र यहस्वरूपदोऊसुखद, कृष्णसिंहमहाराज ॥ पधरा[illegible]सजीकह्यासो कियसेवासबसाज ॥ ३ ॥ पट्टेपरवानेनपर, श्रीदस्त ॥ हरी[illegible] [illegible]के ष्णसिंहकेसमयको, अजहूलिखियोपाय ॥ ४ ॥ [illegible]ष्णसिंहकेश्रीपि ता, उदयसिंहवरियाम ॥ मोटाराजाजोधपुर, हैंप्रसिद्धइहिंनाम ॥ ॥ ५ ॥ मोटाराजाउदयसिंह, तिनकेबारहपुत्र ॥ बडेसूरसिंहजोध पुर, अरुसबभयेसुपुत्र ॥ ६ ॥ सूरसिंहअरुकृष्णसिंह, भयेसहोदर भ्रात ॥ आसकरनमातामहसु, जोनरवरगढत्रात ॥ ७ ॥ आसकर

नवैष्णवपरम, वल्लभकुलकेदास ॥ वैष्णवप्रतिसुखकररह्यो, जिन-
कोसुजसप्रकास ॥ ८ ॥ सोरहसैंअठसठलखो, संवतमाघसुमास ॥
शुक्लपक्षपंचमिवस्यो, कृष्णगढ्ढसुखरास ॥ ९ ॥ कृष्णसिंहकेच्या
रसुत, सहसमल्लजगमल्ल ॥ भारमल्लहरिसिंहभो, रिपुदलदलनअट
ल्ल ॥१०॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, यथापुरातनप्रीति ॥ इनसवहीकेस
मयमें, सेवाभइसुखरीति ॥ ११ ॥ सतरैसैंइग्यारहै, संवतलौंइहिंभा
ँ ॥ रूपसिंहजूकेसमय, सेवाभईसुहाय ॥ १२ ॥ श्रीजीकौंजवरू
पसिंह, पधरायेनिजशीस ॥ तवइनदोउस्वरूपकौं, पुष्टिकरायेवरी
य ३ १३ ॥ दिग्विगतगोपीनाथप्रभु, व्हैंकैंअतिसंतुष्ट ॥ स्थापनाकिय
च ।थकी भाभीमांहिकरिपुष्ट ॥ १४ ॥ तवैंकहायेगोदके, ठाकुर
पदवेगपाल , ढंगरखेसवठोरमें, रूपसिंहमहिपाल ॥ १५ ॥ दि
निधीकोः ॥ ९४ हूकमभयोअनूप ॥ दक्षिणवलखरंधारकी, मु
यादि न्त्रसुपढचे१६ ॥ तवतवनृत्यगुपालप्रभु, चलतफोजकेमां
समयजव, विनर्तयंदके, अंवावाडीमांहि ॥ १७ ॥ जवैंरहतनिज
पदछत्र ॥ ९ हमहिपाल ॥ तवश्रीजीकीगोदमें, राजतनृत्यगुपा
यहआज्ञार्क गानसिंहकेराजअरु, राजसिंहकेराज ॥ यहीरीतनि
लिख्निमिती, भेज साज ॥ १९ ॥ भगवतइच्छाधीनव्हैं, नृपादि
ल्लीपतिपास हांगयेतहांसंगकिय, नृत्यगुपालप्रवास ॥ २० ॥
जवजवनृत्यगुपालप्रभु, संगरहेपरदेश ॥ वहुवैभवजल्लूससौं, से
वाहोतसुदेश ॥ २१ ॥ रजतहेमकेमहलवर, रहतंप्रभुकेसंग ॥ ति
नमेंसदाविराजते, नृत्यगुपालअनंग ॥ २२ ॥ वहवैभवजल्लूसकी,
सुवरनचोकीएक ॥ हाजरहैंअद्यापिलौं, कीजैंनहिंअविवेक ॥ २३ ॥

अठारहसैंऊपरैं, प्रासच्यारकीशाल ॥ तबैंगयेदिल्लीशपैं, सांवतसिं हनृपाल ॥ २४ ॥ सांवंतसिंहनरेशको, नामनागरीदास ॥ कविता पदसुप्रबंधमें, सबजगबीचप्रकास॥ २५ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकौं, पधरायेनिजसंग ॥ प्रतिउछवउछाहसौं, कीनौंबहुरसरंग ॥ २६ ॥ अट्ठारहसैंऊपरैं, संवतनवकेमांह ॥ व्रजमंडलथलथललख्यो, नाग रकरिउच्छाह ॥ २७॥ तहांवृंदावनबीचमें, भूपनागरीदास ॥ वैष्ण वपरमशिरोमणिहिं, मिलेसंतहरिदास ॥ २८॥ तबैंकहीहरिदासजू, सुनहुनागरीदास ॥ राजकाजतजिहरिभजो, करिवृंदाबनवास ॥ ॥ २९ ॥ राजकाजकेसर्वसुख, तेरेराजकुमार ॥ भोगैंगेतुमयहांर हो, करियैंव्रजसुविहार ॥ ३० ॥ हरिरससांनेबचनसुनि, नागरदृ ढचितधार ॥ कियवृंदावनवासलिय, भक्ततख्ताशिरभार ॥ ३१ ॥ महाराजश्रीनागरीदासजीयाभावकोवासमयमेंआज्ञाकियोसो पद॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुनपरसकरसकैंसोसुखइनहीदृग निदिखायो॥गृहव्यौहारभुरटकोभाराशिरपरतैंउतरायो॥नागरिया कौंश्रीवृंदावनभक्ततक्तबैठायो ॥ १ ॥ ३२ ॥ श्रीहरिदासजीकीप्र शंसाका ॥ दोहा—इस्कचिमनमेंमहाराजश्रीनागरीदासजीकह्यासो दोहा ॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनेदिलदस्त ॥ हरीदासके हालमें, दरदिवालभीमस्त ॥ १ ॥ ३३ ॥ इश्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय ॥ हरीदाससबकौंगया, चेटकरूपदिखाय ॥ ॥ २ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ जोलौंवृंदावनबसे, भूपनागरीदास ॥ तोलौं नृत्यगुपालप्रभु, राखेनृपनिजपास ॥ ३५ ॥ सेवतनृत्यगुपालकौं, व्रजरसकोसुखलेत ॥ साधतनवधाभक्तिनृप, व्हैकैंपरमसचेत ॥ ३६॥

अथ महाराज श्रीनागरीदासजीकी नवधाभक्ति वर्ननकी भक्तिपंचाशिका तत्रादौ गुरुशरण हरि शरण लक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ आगमनिगमपुरानप्रमानसुकहतजाहिको ॥ संप्रदायसुप्रसिद्धराजमगलसतताहिको ॥ ताकेव्हैंआचार्यशुद्धकुलमांहिप्रकटपर ॥ भक्तिवानगुनवानज्ञानयुतप्रेमरूपवर ॥ ऐसेगुरुकेचरननकीजवशरनगहैंदृढचित्तकर ॥ हरिशरनभक्तिनवधातवहिसिद्धिकरैंनरसुक्खकर ॥ १ ॥ हरिशरनगुरुशरनउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ व्हैंहरिमुखअवतारविदितवल्लभजगजिततित ॥ पुष्टिधर्मकियप्रकटआपपुरुषोत्तमजनहित ॥ श्रीवल्लभअणुभाष्यआदिग्रंथनमधिभाख्यो ॥ नागरनृपमनताहिसंप्रदास्वादसुचाख्यो ॥ सुतदीक्षितगोपीनाथकेप्रभुजीभोतिंहिंजोरको ॥ दृढचरनशरननागरगह्योप्रभुजीसुतरनछोरको ॥ २ ॥ श्रवणभक्तिलक्षणं ॥ श्रवणभक्तिहैंमुख्यभक्तिसवतासौंउपजै ॥ श्रवनकियेंविनअंधमनुजपगकैंसैंरुपजे ॥ करनलगततउवस्तुनामविनसुनिरहिछुपजे ॥ श्रवनकरतहरिसुजसअमितअघजावतधुपजे ॥ त्रिविधितापविध्वंशव्हैसुखपावतप्रेमसमाजको ॥ श्रवनकियैंविनहरिसुजसपशुसींगपूंछविनकाजको ॥ ३ ॥ नवरसमयसवकथाविश्वलौकिकपरलौकिक ॥ जिंहिंरसचाहतवहीकरीलीलाहरिलौकिक ॥ अपनीलीलाहेतप्रभूकैंसोश्रमकीनौं ॥ मच्छादिकअवतारब्रह्मकइवपुधरिलीनौं ॥ जिहिंइच्छातैंजगतकीयहसृष्टिस्थितिलयहोतहैं ॥ हरिजसाजिं

हिंश्रवननकियोतिहिंनरकोसूकरगोतहैं ॥ ४ ॥ असतशास्त्रबकवादच्छाडिभागोतसुनीजै ॥ शुकमुखतैंरसश्रव्योनिगमकोतामेंलीजें ॥ श्रवनकटोरामांहिताहिलहिपानकरीजे ॥ तासौंव्हैंहियअमलतबैंहियहरिदेखीजे ॥ प्रभुकथाश्रवनकेहेतपृथुयाचेश्रवनसुदशसहश ॥ जसश्रवनविनांअनुरागहियहोतननैंनालगनवस ॥ ५ ॥ सुनतभागवतकथातथाअनुसारताहिके ॥कोऊभाषामांहिहोउतिंहिंसुनियचाहिके ॥ सुनतकथारोमांचसजलदृगगदगदवैंनां ॥ लोकरीतदविरसानंदमदआवतनैंनां ॥ हरिरूपश्रवनकीछाकतैंछकेरहतहरिजनसुधर ॥ जगसाधुपुरुषऐसैंकहैश्रवनभक्तिकीसिद्धिवर ॥ ६ ॥ श्रवनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ सुनिसुबोधिनीसहितभागवतभाष्यश्रवनाकिय ॥ पुष्टिमार्गसिद्धांतसमझिसुनिसुनिहियभरलिय ॥ आनंदघनहरिदासआदिसंतनवचसुनिसुनि ॥ धमारादिमेंकहविहैंनाहिंकहीसुशुकमुनि ॥ हरिलीलासुनिप्रेमवसदृगसजलवचनगदगदधरिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीश्रवनभक्तिनागरकरिय ॥ ७ ॥ १ ॥

अथ कीर्त्तनभक्ति लक्षणम् ॥

छप्पय ॥ करतकीरतनभक्तिभक्तहैभक्तिसुसाधैं । श्रवनभक्तिअरुभक्तिकीरतनसंगआराधैं ॥ करतकीरतनछकतचित्तआनंदअगाधैं कीर्तनकेसुप्रभावकोउभवदुखनहिंबाधैं ॥ च्यारौंयुगमेंमुख्यताशुककहीकीरतनभक्तिकी ॥ पैंकलियुगमेंअतिशयकहीजगउद्धारकशक्तिकी ॥ ८ ॥ नामीश्रीभगवानजीवगिनगिनउद्धारें ॥ नामरटतविनसंख्यजीवभवपारसिधारे ॥ कीर्त्तनपीछैंसधतसबैंसाधनसु-

खकारी ॥ आगमअगनितसाखिदेततताकीजयभारी ॥ वहुकरतयज्ञ
तपवहुवरपतवप्रसन्नकछुहोतहरि ॥ लघुकालभक्तिकीर्त्तनकरतव्हेप्र
सन्नसोप्रीतिकरि ॥ ९ ॥ कीर्त्तनमहिमाकहतलहैंनाहिंपारविधाता ॥
देशकालधनपात्रआदिनहिंयहांचहाता ॥ नरशरीरछिनभंगलखहु
भवमहादुरंतर ॥ जहांकीर्तनहोततहांहरिवसतानिरंतर ॥ जयअना
यासराजीहुवैकीर्तनतैंयदुवंशरवि ॥ यहसवलछनसरसव्हैंतिहिंकी
र्तनभक्तिसुकहतकवि ॥ १० ॥ कीर्त्तनभक्तिउदाहरनमहाराजश्री
नागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ अखिलविश्वकोरूपनंदनंदनसुखका
री ॥ ताकोजन्मविवाहवाललीलारुचिकारी ॥ हासविलाससुरास
जासुकेकौतुकभारी ॥ लीलाकुंजनिकुंजप्रेमरससरसेविहारी ॥ तिंहिं
सुरनरभापाआदिमेंपदरचिकेतग्रंथकिय ॥ यौंनागरनृत्यगुपालकी
कीर्तनभक्तिकिसिद्धिलिय ॥ ११ ॥ स्मर्नभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥
श्रवनकीरत्तनभक्तिकोसुफलभक्तिस्मरनहै ॥ हरिस्मरनकेहोतजा
तमिटित्रिविधिजरनहै ॥स्मरनकरतहरिगेहकरतअपनौंजनहियकौं॥
कीटभृंगदृष्टांतसमझिसमझावहुजियकौं ॥ ज्यौंविपयसुखनिकौंस्म
रनकरिविषयमांहिवैचितलहै ॥ त्यौंस्मरनकरतछकिजाततवस्मरन
भक्तिसिद्धिसुवहै ॥ १२ ॥ स्मर्नभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरी
दासजीमें ॥ छप्पय ॥ करिकरिनितसतसंगश्रवनहरियशकोकी
नौं ॥ ताकोकियकलगांनकाव्यपदवंधप्रवीनौं ॥ वहिरदृष्टिकौंमूंदि
वहुरिमनरसतिंहिंभीनौं ॥ पग्योप्रेमहरिस्मरनमांहिज्यौंजलनिधिमी
नौं ॥ नितस्मरनकरतस्थलस्थलसकलव्रजलीलाअनुभवतकिय ॥
श्रीमन्नृत्यगुपालकोयौंस्मरनभक्तिनागरछकिय ॥ १३ ॥ पदसेवन

भक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कहीशास्त्रकेमांहिकरनजोसेवारीतिसु ॥
कीनीवहिविधितवैंदेहफललीनौंजीतिसु ॥ सेवाहितपरब्रह्मकीसुप्र
तिमाकहिशुकमुनि ॥ शिलादारुमणिधातुमृत्तिकाचित्रलेप्यगुनि ॥
अरुमनोमयीकरिअष्टविधिप्रतिमापरमानंदकी ॥ शुचिरसस्वरूप
सुखकंदश्रीनंदनंदब्रजचंदकी ॥ १४ ॥ जैसीव्हैसामर्थ्यकरैंन
रतैसीसेवा ॥ नानाविधिसौंटहलकरतजनजानतभेवा ॥ नितप्राति
सेवाकरतसुखदहरिरूपनिहारैं ॥ सुखअसुवनकीचलैंजबैंनैननितैं
धारैं ॥ जिहिंबढतप्रेमअनुरागतिंहिंसमताकोउनकरिसकैं ॥ अरुट
हलकरतहरिभक्तकीतिंहिंगुनअहिपतिकहिथकैं ॥ १५ ॥ आदिभा
गवतपद्मपुरानसुदेवतसाखी ॥ हरिहरिजनकीटलकीसुनिजमुखयौं
भाखी ॥ मेरोभक्तकहायमोहिजनकोनहिंचेरो ॥ मैंमेरोनाहिलखौंता
हिपुनिरखौंननेरो ॥ हरिहरिजनपदरतिकरतपरमशांतिकौंचितल
हैं ॥ ऐसेलच्छनहोततबपदसेवनभक्तिसुकहैं ॥ १६ ॥ पदसेवनभ
क्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ वसुविधिप्र
तिमामांहिमनोहररुचिरस्वरूपसु ॥ नृत्यगुपालसुनामललितसबअं
गअनूपसु ॥ दीक्षितगोपीनाथपुष्टकियरूपबिनयधीर ॥ पधरायेक
ल्यानरायकीगोदकृपाकरि ॥ नृपताहिस्वरूपकौंसंगलैंब्रजवृंदाव
नमधिवसिय ॥ सबयथासमयकरिटहलइहिंपदसेवनभक्तिसुकरिय
॥ १७ ॥ शय्यामेंपधरायचरनसेवनमनदेवत ॥ कमलाकौंसुखप्राप्त
वहैंअनुभवसुखलेवत ॥ साधुसंतकीटहलकरतपुनिनिर्मलकरमाति ॥
लखिलखिरूपअनूपछाकछबिछाकतछितिपति ॥ मनवचनकर्मसौं

१ इसका अर्थ भेद. २ आठप्रकारकी प्रतिमा पहिलेकही जिनमें.

प्रेमधरिहरिहरिजनकोशरनलिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीयोंपदसेव
नभक्तिसुकरिय ॥ १८ ॥ अर्चनभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ सींचत
मूलहिहोतपत्रअरुडारहरितमुख ॥ सबजगकेहरिमूलसमझिअर्चेहु
व्हेंसनमुख ॥ अर्चनविधिआचार्यमार्गकेजोकहिनिजमुख ॥ तिहिं
विधिअर्चनकरतविश्वमधिपावतसवसुख ॥ हरिमायाहरिपैंधरतअ
पनीनहिंसमझीनजिंहिं ॥ करतसफलधनतैंसुतनअर्चनभक्तिसुकह
ततिंहिं ॥ १९॥ अर्चनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमैं ॥
॥ छप्पय ॥ स्नानादिकसौंदेहशुद्धिकरिमंदिरअंतर ॥ देयसोहनी
आदिसाजसजिसकलसुखंतर ॥ करिमंगलाकरिवायस्नानशृंगार
धरंतर ॥ छविलखिमनबलिहारिलेतरसस्वादनिरंतर ॥ करिधूपदीप
धरियतसुनमिराजभोगअर्पनकरत ॥ पुनिनीरांजनकरिनेहसौंअनव
कासकरिहरिररत ॥ २० ॥ करिउत्थापनधरियभोगकरिसंध्यारा
त्तिक ॥ सुखसौंशयनकरायफेरवांचतहरिवार्तिक ॥ तनमनधनकौं
भक्तिरीतयौंकरिलियसार्थिक ॥ श्रीवल्लभमुखरचितसुविधिसाधीप
रमार्थिक ॥ नृपरूपसिंहज्योंप्रेमधरिनिजकुलरीतिसुअनुसरिय ॥
नृपनागरनृत्यगुपालकीअर्चनभक्तिसुसिधिकरिय ॥ २१ ॥ ५ ॥
वंदनभक्ति लक्षणम् ॥ छप्पय ॥ प्रभुपदपंकजनमतशीसहीहरिअ
पनावत ॥ देनिजभक्तिप्रसंगभक्तशिरभारबढावत ॥ ताहिभारतैंन
मतशीसहरिजनजहांपावत ॥ लहैंउच्चपदजितोचढतजलनलज्यौं
आवत ॥ दशअश्वमेधसमकहतफलएकबेरवंदतहरिहि ॥ भवबंध
कटैवंदनसटैवंदनभक्तिसुकहततिंहिं ॥ २२ ॥ वंदनभक्ति उदाहरन
महाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ प्रातउठिहरिनामलेयवं

दनकियनितप्रति ॥ पुनिमंदिरमधिजायकारियवंदनप्रभुपदप्रति ॥
जवजबहरिसुधिआतनमततबतवसुखकरिअति ॥ संतनकौंलखि
जहांतहांवंदनाकियवरमति ॥ कियतनमनवचसाष्टांगसौंज्यौंअक्रू
रत्यौंधारिजिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकीवंदनभक्तिसुसिद्धकिय
॥ २३ ॥ दास्यभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ हरिकोंव्हैंकैंदासदासके
चिन्हसुधारैं ॥ तुलसीमालाकंठतिलकमधिभालसंवारैं ॥ गोपीचं
दनछापधारहरिप्रेमसुभारैं ॥ विनांचिन्हनहिंचीन्हसकतमनइष्टजु
सारैं ॥ ज्यौंवेश्यासुतकेबापकोविनांचिन्हनिर्धारनहिं ॥ त्यौंदेखोस
वहीशास्त्रतैंविनांचिन्हनोंहिंदासकहिं ॥ २४ ॥ जिहिंतनद्वादशति
लकहोयजोअंतसमयमें ॥ वाकौंलखिजमदूतजातडरिव्हैंविस्मयमें॥
पुनिप्रभुपदकीप्राप्तिहोयजिहिंअतिसुखमयमें ॥ महिमातिलकप्रभा
वसकैंकहिकोकुवलयमें ॥ जियतिलकमनोहरजानिकैंरामरच्योसि
यभालमधि ॥ सबसंतकहतइहिंभक्तिकौंदास्यभक्तिप्रेमसुअवधि ॥
॥ २५ ॥ दास्यभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छ-
प्पय ॥ गौरवरनतनलसतलसतपीतांबरकटिपर ॥ लसतउपरनाकं
धलसतउपवीतसुसुंदर ॥ तुलसीमालालसतकंठलसितिलकभालव
र ॥ कबहुप्रभूपरकरतमोरछललसतालियैंकर ॥ वरचामरढोरतकब
हुकरकबहूपंखीकरलियैं ॥ करलसतआरसीकबहुहरिरूपसुधानाग
रपियैं ॥ २६ ॥ प्रभूप्रसादीपुष्पमालनिजकंठहिधारत ॥ हरिउच्छि
ष्टप्रसादलेयअंगअंगसुपारत ॥ प्रभुअर्पितवसनादिसर्वसौगंधिपदा
रथ ॥ विनअर्पनकरिकोउवस्तुधारतनहिंस्वारथ ॥ संतसंगतिपरभा

१ पृथ्वी.

वतैंदासक्रियासाजिकैंसुहिय ॥ नागरनृत्यगुपालकीदासभक्तिकीसि द्धिलिय ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ सख्यभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कहां जीवकरिसकैंसख्यताप्रभुसौंभाई ॥ पैंकरनौंआवश्यरीतिहरिजनजो गाई ॥ सख्यभक्तिमेंसर्वभक्तिसौंयहअधिकाई ॥ करतसखाहित आपयतननितयादवराई ॥ प्रभुग्वालनिकौंकांधैंलियैंअर्जुनसौंमित्र त्वलहि ॥ स्मृतिपुरानमेंसकलमुनियहसख्यभक्तिलच्छनसुकहि ॥ ॥ २८ ॥ सख्यभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छ- प्पय ॥ लीलाकुंजनिकुंजरहसिरसमनअधिकारी ॥ पदप्रबंधरचि कह्योसखाज्यौंमतिअनुसारी ॥ तिंहिंकबितागानकियेयुगकुंज बिहारी ॥ अर्जुनज्यौंसवठौरकरीअरुरक्षाभारी ॥ नृपरचितग्रंथम धिप्रकटहैंयहप्रभावयहांकछुकहिय ॥ यौंनागरनृत्यगुपालकोसख्य भक्तिकौंसिद्धकिय ॥ २९ ॥ ॥ ८ ॥

अथ आत्मनिवेदन भक्तिलक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ तनधनातियसुतगेहआदिसबप्रभुकौंधारैं ॥ अपनौं समझैंकछुनजानिप्रभुकोरखवारैं ॥ यौंआवश्यकदेहगेहकेकारजसा रैं ॥ हरिसौंविनतीकरिसुद्रव्यबहुअल्पउपारैं ॥ हरिउच्छवादिबहु द्रव्यसौंसबसंमंधहरिअनुसराहिं ॥ परप्रेमछकेहरिजनकहतआत्मनि वेदनभक्तिइहिं ॥ ३० ॥ आत्मनिवेदनभक्तिउदाहरनमहाराजश्री नागरीदासजीमैं ॥ छप्पय ॥ सिंहासनयुवराजदियोपितुराजसिंह जब ॥ उच्छवफागविहारआदिबहुकीनमहातव ॥ पुनिसुतकौंदैरा जबडनकीरीतिकहीसब ॥ यहप्रभुहीकोराजजानिकरियैंअबकरत ब ॥ करिवृंदावनकोवासनिजतनधनसबसुसफलकिय ॥ यौंनागर

नृत्यगुपालकीआतमनिवेदनभक्तिलिय ॥ ३१ ॥ ॥ ९ ॥ इनन
वधाभक्तिसौंदशमप्रेमप्रकटैयातैंप्रेमवर्णनं ॥ छप्पय ॥ इनतैंउपजैं
भावभक्तिअरुप्रेमभक्तिवर ॥ जिंहिंविनआनउपायकियैंवशहोतन
गिरधर ॥ वहैंप्रेमविधितीनकह्योरसलीनसुमुनिवर ॥ लघुअरुमध्य
मकहतप्रेमपूरनअतिसुखकर ॥ जानतहौंकछुनांहितउक्षामिहहुप्रेमी
हरिसुजन ॥ लच्छनइनकेकहतहौंसमझहुचितदैंमुदितमन ॥ ३२ ॥
भावभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कथाकीरतनसुनतलगतअतिनीकी
ताकौं ॥ जगतवातसवलगतसकलविधिफीकीजाकौं ॥ अलिसुगंध
हितजातकथाहितज्यौंजवधावैं ॥ समयजन्यजहांवादहोततवअति
दुखपावैं ॥ पूरनभक्तिप्रभावकोदीपतमहात्म्यअतिहीप्रवल ॥ हरि
गुनलीलारूपकोजवव्हैंप्रकाशहियमेंअचल ॥ ३३ ॥ कोमलव्हैंहि
यभूमिरीझमयवेलिसरसता ॥ कछुरीझतहरिसुजसताहिसौंहोयसर
सता ॥ भावतउत्तमवस्तुतहांहरिसुधिसुवरसता ॥ ब्रजवृंदावनवास
दरशकोवढततरसता ॥ हरिभक्तपृथकतानहिंचहैंओगुनतजिगुनकौं
गहैं ॥ लखिप्रेमभक्तधनधनकहतभावभक्तियाविधिलहैं ॥ ३४ ॥
भावभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ शिशु
ताअरुयुवराजतासुमाधिहरिचितलायो ॥ वादजानिवकवादकथाकी
र्त्तनमनभायो ॥ राजकाजलखिव्यर्थवासवृंदावनचायो ॥ ओगुनत
जिगुनगहेसंतसवधनधनगायो ॥ उत्तमपदार्थजहांतहांसुलखिहरि
हीकीहियसुधिकरिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकोभावभक्तियौंहिय
धरिय ॥ ३५ ॥ लघुप्रेमलक्षणम् ॥ छप्पय ॥ छुटतननवधाभक्ति
नेमसवकरतप्रेमयुत ॥ गदगदकंठसुहोयकवहुतनपुलकअश्रुयुत ॥

समयपाययौंहोयबहुरिव्हैंपूरवकोसुधि ॥ आवतयौंजबप्रेमतबैंजग लज्जायुतबुधि ॥ यहयाहीतैंलघुप्रेमहैंकहतसकलसुज्ञानमुनि ॥ हि यकामक्रोधव्हैंआतज्यौंसमयपायव्हैंयहसुपुनि ॥ ३६ ॥ कामादिक ज्यौंमिटैंसमयत्यौंप्रेमसुमिटवत ॥ छोटोयाकौंजानितजतजोजग सौंसिटवत ॥ तनकअग्निज्यौंबढतबहुतवनदहिकैंगिटवत ॥ जलनि धिअंबुफुंहारपवनवशलखितनभिटवत ॥ ज्यौंमहोरमहोरइकअरुब हुतसबैंस्वर्णहीकीसुगुनि ॥ भेदपराक्रमजानिकैंलघुप्रेमकहतइंहिंवि धिसुमुनि ॥ ३७ ॥ लघुप्रेमउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ ॥ छप्पय ॥ नवधासाधतनेमप्रेमकोपंथसुधारचो ॥ रहसिप्रेममयक बहुपुलकितनदृगजलढारचो ॥ राजकाजतिंहिंदियोदाबगुरुमुखर खवारचो ॥ समयपायबढिगयोतबहिवहब्रजसुखसारचो ॥ काम क्रोधलोभादिकौंकरिभष्मतहांअविचलरहिय ॥ यौंश्रीनृत्यगुपाल कोलघुप्रेमभयोनागरसुहिय ॥ ३८ ॥

अथ मध्यमप्रेम लक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ मध्यमप्रेमावेशरूपयौंहरिजनगावत ॥ रूपभाव नामांहिरहतदृगछकिछबिछावत ॥ अधरनमेंमुसिकानथकितमुख प्रफुलितमृदुरव ॥ झलमलातदृगनीरपुलकितनहोयमंदगव ॥ अरु चलतजबैंडगमगतपगमनहीमनबातैंकरत ॥ श्रवनादिकसुखभक्ति कोगहिसमयज्ञाननहिंचितधरत ॥ ३९ ॥ श्रवनकीर्तनस्मरनकरत अर्चनजबबंदन ॥ इनपांचनितैंप्रकटिप्रेममादकताफंदन ॥ चढतप्रे मकोछाकतबैंचालतनिजछंदन ॥ व्हैंउन्मादस्वरूपमहाकलिमलदु

१ लघुप्रेम. २ निजछंद अर्थात् स्वछंद नहीं चलै।

स्वकंदन ॥ कबहुरुदतिनाचतिहसतिकहिवाहचाहराहिजातमुनि ॥ सुंदरमध्यमप्रेमतैंयहलच्छनव्हैमतिधरिरशुनि ॥ ४० ॥

अथ मध्यमप्रेम उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें

॥ छप्पय ॥ जातिपांतिकुलनेमराजतजिभोव्रजवासी ॥ मोहनमनुमुखजापराधकानामउपासी ॥ करिअनुभवपुनिवर्तमानलीलेव्रप्रकासी ॥ तिहिंप्रभावबढिभावलगनकीभईउजासी ॥ हरिरसानंदकीप्राप्तिकौंप्रेमापंथप्रवेशतैं ॥ समयजन्यसबज्ञानकौंजबभूलेप्रेमावेशतैं ॥ ४१ ॥ अंकुररूपसुभयोप्रेमलघुजबैंहीयमांधि ॥ हरिगुनचर्चाकहतसुनतसचारीदिधिमांधि ॥ आनंदघनहरिदासआदिसौंसंतसभामधि ॥ प्रकटभयेअनुभावसवैयाकेजुयथावधि ॥ व्रजवृंदावनवासबसिवरभक्ततक्कशोभासुलहि ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकोनृपनागरमध्यमप्रेमगहि ॥ ४२ ॥

अथ पूरनप्रेमलक्षणम् ॥

छप्पय ॥ फिरतदुहाईदेहबीचजबनेहनृपतिकी ॥ संचारीगतिप्रेमभयोवहस्थाईगतिकी ॥ तनमनजबसुधिविसरजातगतिबहिरदृष्टिकी ॥ ऐसेजनकोदरसहोतहरिसुधावृष्टिकी ॥ परिपूरनप्रेमस्वभावतैंप्रेमानंदसौंपूरिव्हैं ॥ हियप्रेमजुस्थाईहोतहैनिवधानेमसुदूरिव्हैं ॥ ॥ ४३ ॥ जैसेगुडियनखेललगततियकोहियप्यारो ॥ अंकभरतनाहिंभुजनबीचजोलौंपियप्यारो ॥ पियगरबांहींदियैंबढतसुखजगतैंन्यारो ॥ निसिदिनकीसुधिरहतनांहिनाहिंपियहियन्यारो ॥ तियजहां

तहांपियहीलखैंऔरनदरशातप्रेमवश ॥ ज्यौंभापतकृष्णस्वरूजग हरिजनकेहियप्रेमवश ॥ ४४ ॥ इंहिंविधितैंजवचढतरंगमनकृष्णप्रेमको ॥ कृष्णासईदृगहोतसवैंसुधिगसाप्रेमको ॥ सन्निपाताजिव्हकजुताहिकीदशापात्रको ॥ नैननीरमुखमौनरहततनकहनमात्रको ॥ पुनिपूरनप्रेमानंदतैंदेहतजतहरिमिलताजिहिं ॥ लच्छनऐसेमिलतमुनिपूरनप्रेमसुकहतातिंहिं ॥ ४५ ॥

अथ पूरनप्रेम उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें

॥ छप्पय ॥ गुरुसेवतबहुशास्त्रसुनतनवधाजियजागी ॥ नवधातैंसतसंगभयोतबममताभागी ॥ वृंदावनकेवासप्रेमकीआशालागी ॥ कृष्णमईसबविश्वलखतदृगभयेसभागी ॥ तवऐसेक्रमसौंवाढिचलेलैंसुखप्रेमबजारको ॥ जबनागरनृपमारगगह्योलीलानित्यविहारको[1] ४६ ॥

अथ सतसंगति महिमा वर्ननम् ॥

॥ छप्पय ॥ वेदपाठअरुगंगस्नानसबतीरथसेवन ॥ भूमिपरिक्रमासर्वदानभूम्यादिकदेवन ॥ कादतदशमैंद्वारप्रानकैवल्यसुलेवन ॥ जपतमंत्रकौंकरतसविधिधूपादिकखेवन ॥ अरुबहुतकष्टकरितपतपैं जायगरैंहिमशैलमाहिं ॥ नरपूर्वकथितसबकरततनुसतसंगतिसमहोत नाहिं ॥ ४७ ॥ सतसंगतिमहिमासुआपउद्धवप्रतिभाखी ॥ यहमोकौंवशकरतत्यौंसुविधिआननराखी ॥ व्हैंकुसंगकोनाशअविद्याहूकीखाखी ॥ वहीधन्यजगमांझमधुरतायाकीचाखी ॥ सबजगतदेहसंबंधकेतूटतनातेयाहितैं ॥ दुर्लभतासुखलाभव्हैंयहसबतैंबडीसुत्ता

1 नित्यविहारलीलाकामार्गगहाअर्थातपरलोकवासीहुये.

हितैं ॥ ४८ ॥ अमरओरगंधर्वदैत्यपुनिराक्षसजैसे ॥ मानुषस्त्रीअरु शूद्रतरेवेश्यागजकैसे ॥ राजसतामसभरेतरेअंत्यजजनवैसे ॥ सत संगतितैंतरेगनेजावतकहिकैसे ॥ अतिदुर्लभप्रभुकीप्राप्तिजोयातैंसुख सौंलहतनर ॥ गोपदसमानसुखमानकैंभवसागरकौंजाततर ॥४९॥

अथ सतसंगति महिमा उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें ।

छप्पय ॥ विप्रनिसौंसुनिवेदभागवतअर्थसुधारयो ॥ हरिदासहि तमानकहीसोहीअनुसारयो ॥ मुरलिदासअरुवंसिदाससौंसमयगु जारयो ॥ आनंदघनकोसंगकरततनमनकौंवारयो ॥ नर्तितगुपाल मिलिजानयौंसतसंगतिनागरकरिय ॥ गोपदसमानसुखमानकैंभव सागरकौंलहितरिय ॥ ५० ॥ दोहा–कहीभक्तिपंचाशिका, जय कविसमक्षिप्रसंग ॥ याकेबांचतसुनतहिय, बढहिभक्तकोरंग॥५१॥ श्रीनागरमहाराजके, पूरनप्रकटीभक्ति ॥ ताकेकहिवेहेतनाहिं, मेरी मतिकीशक्ति ॥ ५२ ॥ तउजवानमहाराजजू, दीनीरीतबताय ॥ तैसैंहियाग्रंथमें, दीनीप्रकटजताय ॥ ५३॥ ग्रंथभक्तिमगदीपिका, र च्योनागरीदास॥तिंहिंमतसौंलच्छनकहे, हरिजनकोजयदास॥५४॥ नागरनृपकेरचितहैं, प्रभुयशकेबहुग्रंथ ॥ तिनसौंअनुभवकारियहां, उदाहरनदियग्रंथ ॥ ५५ ॥ प्रेमरूपहीकृष्णहै, कृष्णरूपहीप्रेम ॥ ज्यौंभावैंत्यौंहीभजैं, सगुणअगुणविननेम ॥ ५६ ॥ ९२ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीमन्नृत्यगुपालनिजवार्त्तायां महाराज श्रीनागरीदास देववर्मणां नवधाभक्ति वर्णनं भक्तिपंचा-

शिका ॥ दोहा—अठारहसैंऊपरैं, संवततेरहजान ॥ चैत्रकृष्णतिथि
द्वादशी, व्रजतैंकियोप्रयान ॥ ९३ ॥ कुटंबयात्राहेतुनृप, रूपनगर
मधिआय ॥ देशकोशसुतभ्रातुको, लीनौंसुखसरसाय ॥ ९४ ॥
तबैंपधारेसंगही, श्रीमन्नृत्यगुपाल ॥ रूपनगरअरुकृष्णगढ,
जहांगयेमहिपाल ॥ ९५ ॥ अठारहसैच्यारदश, मासद्वितियआ
सोज ॥ शुक्लपक्षएकादशी, फेरधरीब्रजमोज ॥ ९६ ॥ पीछेइंहिं
दिनगमनकिय, नागरनृपउरधार ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालतव, ब्रज
कौंकियोविहार ॥ ९७ ॥ जबैंश्यामआज्ञाकरी, नृपकौंसुपनेंमांहि॥
लीलानित्यविहारमम, अबदेखहुचितचांहि ॥ ९८ ॥ अठारहसैंबी
शइक, तबभादववदितीज ॥ लीलानित्यविहारको, नागरमगगहि
रीझ ॥ ९९ ॥ अठारहसैवीशइक, संवत्सरमेंजांन ॥ सोहतनृत्यगु
पालप्रभु, फिररूपनगरआंन ॥ १०० ॥ रूपनगरसुपधारिकैं, श्री
मन्नृत्यगुपाल ॥ श्रीजीकीवरगोदमें, बैठेरसिकरसाल ॥ १ ॥ तजि
श्रीजीकीगोदकौं, श्रीमन्नृत्यगुपाल ॥ नांहिविराजेआजलौं, न्यारे
काहूकाल ॥ १०२ ॥ पृथ्वीसिंहनरेशके, पुत्रद्वितीयजवान ॥ ध
र्मधीरताकोलसैं, मानौंमूरतिवान ॥ १०३ ॥ राजकुमारजवानके,
कलियुगमेंकमनीय॥भगवतइच्छासौंभयो, यहैंमनोरथहीय॥१०४॥
करीअरजअतिगरजकरि, व्हैंअतिआतुरवान॥ पृथ्वीसिंहनरेशसौं,
राजकुमारजवान ॥ ५ ॥ उत्तमगरजोदेखिकैं, प्रभुकीमरजीजान॥
सुनिअरजीहुकमकियो, सुनियेंकुंवरजवान ॥ १०६ ॥ श्रीमन्नृत्य
गुपालके, दोऊरुचिरस्वरूप ॥ कृष्णसिंहमहाराजसौं, अपनेंशी
सअनूप ॥ १०७ ॥ जैसीनिधिश्रीनाथजी, अपनेराजतशीस ॥

तैसोंनृत्यगुपालकी, लसतराजकेशीस ॥ १०८ ॥ यहपधरावेयोग
नहिं, सुनियैंकुंवरजवान ॥ तदपि तिहारोभावलखि, पधरावैंसुख
मान ॥ १०९ ॥ श्रीमतविठ्ठलनाथप्रभु, गोस्वामीगुरुदेव ॥ जबैंप
धारैंगेयहां, तबबिनवौंयहभेव ॥ ११० ॥ विनतीसुनिगुरुदेवजब,
आज्ञाकरैंबरीश ॥ तब उनकेश्रीहस्तसौं, पधरावैंतुवशीस ॥ १११ ॥
समयआंनऐसोभयो, हरिइच्छाअनुसार ॥ पृथ्वीसिंहनरेशको, भौ
परलोकविहार ॥ ११२ ॥ इंहिंअवसरमाधिकृष्णगढ, श्रीमतगुरुमहा
राज ॥ आपपधारेकरिकृपा, पुष्टिधर्मकेपाज ॥ ११३ ॥ विनतीगु
रुमहाराजसौं, कियअग्रजशार्दूल ॥ पूर्वभयोवृत्तांतसब, मालुमकि
यसुखमूल ॥ ११४ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, कहेजुद्वैभेद[1] ॥
छोटेनृत्यगुपालजी, नंदनंदशुचिरूप ॥ ११५ ॥ करिवात्सल्यस्व
रूपयह, दियोशीसपधराय ॥ नृपजवानकोचित्तकी, आतुरतामन
भाय ॥ ११६ ॥ उगनीसैछत्तीसमें, पोषशुक्लपखजांन ॥ अष्टमिश
सिअरुअश्विनी, सिद्धियोगसरसांन ॥ ११७ ॥ शयनसमयश्रीह
स्तसौं, गुरुमहाराजाधिराज ॥ श्रीश्रीजीकीगोदसौं, पधरायेजनका
ज ॥ ११८ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्गमें, जीवरखाकेमांहि ॥ महलएकचो
खंडिया, चंद्रमहलकेमांहि ॥ ११९ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकौं, दिये
तहांपधराय ॥ उच्छवभोगसमार्पिकैं, अरुअचवनकरिवाय ॥१२०॥
टेरोदूरकरायकैं, श्रीविठ्ठलद्विजराय॥तिलककियोश्रीहस्तसौं, वीडा
वस्त्रधराय ॥ १२१ ॥ शंखझल्लरीघंटअरु, दुंदुभिझांझमृदंग ॥ वा
जनलागेअरुभयो, गानवधाईरंग ॥ १२२ ॥ अतिउत्साहउमंगक

---

1 भेद.

रि, पाटोत्सवसरसान ॥ श्रीविठ्ठलकीमहरसौं, कीनौंनृपतिजवान ॥ १२३ ॥ कितेदिवसचोखंडिया, महलमांहिगोपाल ॥ नृपजवान शिरकरि कृपा, राजतदीनदयाल ॥ १२४ ॥ श्रीजीकेमंदिरमहीं, हुतोमहलवरएक ॥ तहांपधरावैंयह भयो,नृपकेहृदयविवेक॥१२५॥ व. महलसुधरायकैं, मंदिरयोग्यकराय ॥ श्रीजीकेअतिनिकटसौं मनमेंअतिहरषाय ॥ १२६ ॥ कवित्त ॥ शय्यागृहबनायओरसोई बनाईवेसरस्थानजलपानकोपवित्रमनभावनौं ॥ फरसफँवारेहोजकी नेमकरानेंहीकेसुधासौंसवारेस्वच्छसाचेहीढरावनौं ॥ काचकेकिंवार चारुखचितरजतवीचकेतेद्वारबंदकैंरुनूतनकढावनौं ॥ महलकोव न्यौंहैंयोरसिकरसालललालनर्तितगुपालजूकोमंदिरसुहावनौं॥१२७॥ दोहा—उगनीसैंसैंतीसमैं, भादववदिवरियाम ॥ अष्टमिशनिअरुरोहिणी, हर्षयोगअभिराम ॥ १२८ ॥ यादिननृत्यगुपालकौं, याहि महलकेमांहि ॥ पधरायेअतिप्रीतिसौं, मनमेंवहुतउमांहि ॥ १२९ ॥ वरचोखंडेमहलमें, मंगलभोगधराय ॥ अरुमंदिरकेमहलमें, लिये वेगपधराय ॥ १३० ॥ यहांपंचामृतस्नानके, कियदर्शनजनसर्व ॥ छविलखिनृत्यगुपालकी, मिटतमदनकोगर्व ॥ १३१ ॥ कवित्त ॥ राजैंशीसजूरारूराभालहैंविसालबंकभृकुटीचपलनैनश्रौनछविभावनी ॥ उन्नतकपोलचारुनाशिकाअधरवीचमुसकिचिबुकग्रीवाअलकझुकावनी ॥ अंसउपरैंनाउच्चवामकरपीनउरदच्छकरलड्डुवाहैंकटिलचकावनी ॥ पीतपटझुकेउरुनर्तितगुपालजूकीकोटिकाममूरतिसौंसूरतिसुहावनी ॥ १३२॥ दोहा—चरननिमेंनूपुरझनक, रणित किंकिनीलंक ॥ करनिकटककंठाभरण, मुखलखिलजितमयंक ॥

॥ १३३ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, यवानिककौंदेख ॥ दर्शनचाह भरेनके, लगतननैंननिमेख ॥ १३४ ॥ दर्शनीनिवोडायकैं, मंगल स्नानकराय ॥ बहुभारीरत्नानिसौं, कियशृंगारबनाय ॥ १३५ ॥ भयेसुदर्शनतिलकके, छायोबहुआनंद ॥ राजभोगकेफिरभये, द र्शनपरमानंद ॥ १३६ ॥ व्हैंउत्थापनभोगअरु, संध्यारार्तिकहोय ॥ शयनआरतीकेभये, दर्शनरससुखजोय ॥ १३७ ॥ भोदर्शनजा गरनके, आईनिशिअधरात ॥ तबभोदर्शनजनमके, निजजनमन हुलसात ॥ १३८ ॥ नंदमहोत्सवकोजुसुख, वर्ननकियोनजाय ॥ नंदरायकेगेहको, सांचोसुखसरसाय ॥ १३९ ॥ पलनैंनृत्यगुपालप्र भु, निजमंदिरमेंझूल ॥ पुनिश्रीजीकीगोदमें, जाकैंपलनैंझूल ॥ ॥ १४० ॥ श्रीजीकेसंगझूलकैं, निजमंदिरहिपधार ॥ करनलगेनि तरीतसौं, सेवासुखस्वीकार ॥ १४१ ॥ छप्पय ॥ लखिसुकुमारसु ढारपीनतनलजितमीनधुज ॥ चरनकमलरजचंचरीकचितचहतवृष भधुज ॥ ग्वालबालसंगदेखिचकितचितभयोहंसधुज ॥ प्रकटगुह मिमयपरममित्तपदपायोकपिधुज ॥ कल्यानरायकीगोदकेऐसेनृत्य गुपालवर ॥ जयराजतनित्यसुखेनसौंनृपजवानकेशीसपर ॥ १४२ ॥ दोहा—कितेदिवसपाछैंनृपति, मंदिरमणिमयकीन ॥ श्रीमन्नृत्यगु पालको, सुनिसुखपातप्रवीन ॥ १४३ ॥ मकरानेकीफरसजहां, शोभितस्वेतविशाल ॥ मनौंसतोगुनरूपधरि, भयोप्रकटछविमा ल ॥ १४४ ॥ मकरानेकेकटहरे, शोभितफरसमझार ॥ मनौंसतोगु नकेभये, अंकुरसरसअपार ॥ १४५ ॥ होजफंवारेकोसरस, फरस मझारसुहात ॥ कीनौंमनवतकामतहां, मनुमनमथनिजहात ॥ १४६ ॥

सबैंभाँतिदर्पनमई, स्वर्णगचितसरसात ॥ शरदचंद्रिकामेंमनौं, दामिनिद्युतिदमकात ॥ १४७ ॥ दर्पनकेखंभारुचिर, शोभितहैंइहिंभाय ॥ हरनारदहरिदरशहित, मनुठाढेहरपाय ॥ १४८ ॥ टोडीखंभान्ह झूलत, देहलिसिंगदलिआदि ॥ बनवाईसबकाचकी, स्वर्णमुं... ॥ १४९ ॥ लंबाईचौडाइको, जहांकोजितनोमाप ॥ ...तहींआकारवर, गचकियकाचअमाप ॥ १५० ॥ दर्पनभित्तिनमेंसरस, जितिततहरिदरसात ॥ मनुभक्तनकेहेतप्रभु, रूपअनेकलखात ॥ १५१ ॥ दर्पनभित्तिनमेंसरस, जितिततहरिदरसात ॥ दक्षसुताकोदरशभो, सोलीलालखिजात ॥ १५२ ॥ शोभितहैंतहांरत्नके, जटितझाडबहुभांत ॥ मनुउडगणबहुजुत्थकरि, हरिदरशनहितआत ॥ १५३ ॥ तिनझाडनकेनामअत्र, कहौंसुमुनियेंमित्त ॥ वैभवकोअद्भुतपनौं, व्हैंचतुरनकेचित्त ॥ १५४ ॥ जहांसोसनकेझाडमधि, नीलमकेहैंफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीसुखमूल ॥ ॥ १५५ ॥ दावदीकेझाडमें, मोतिनकेहैंफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीरसमूल ॥ १५६ ॥ हैंनरगसकेझाडमें, पुखराजनकेफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीबहुमूल ॥ १५७ ॥ गुल्लालाकेझाडमें, हैंहीरनकेफूल ॥ ताकेमाणिककीकिरण, सोहततिंहिंअनुकूल ॥ ॥ १५८ ॥ डोडीपन्नाकीमहीं, माणककीसुजिवारि ॥ पत्रकिलंगीरुचिरअति, पन्नाकीबहुभारि ॥ १५९ ॥ इनसबझाडनकेलसैं, कंचनकिरणअनूप ॥ लज्जितरविइनओटव्हैं, मनुनिरखंतनिहाररूप ॥ १६० ॥ गुलचकरीकेफूलहैं, पुखराजनकेखास ॥ मनुकृतिकाबहुरूपधरि, आइब्रजशशिपास ॥ १६१ ॥ नवरत्ननकेझाडवर, शो

भितहैंइहिंवेस ॥ गर्ववैरताजिनवसुग्रह, मनुआयेहरिदेश ॥ १६२ ॥ पन्नाकेतुकमातहां, राजतरुचिरअनंत ॥ अतिलघुसुरसरिनीरमें, पद्मपत्रझलकंत ॥ १६३ ॥ पन्नेकीतखतीमहीं, इश्कहुस्नयेवर्ण ॥ सुदेसुशोभितयौंमनौं, मोहरमन्थकर्ण ॥ १६४ ॥ शोभितवज्राकि किरणविच,वृहतवज्रचोकोर ॥ स्वेतकमलपरमनुउदय, भयोशु क्रकरिजोर ॥ १६५ ॥ दीपकशाखारजतके, भित्तिनमेंसरसाय ॥ मनौंचंद्रिकानिजकरनि, करतवारनांआय ॥ १६६ ॥ निजमंदिर केकाचके, कंचनरजतकिंवार ॥ मनौंमोहवशनरकरन, मायाखडी सम्हार ॥ १६७ ॥ झाडगुलाबकोद्वारपर, विद्रुमरचितसुढार ॥ भ योचांदनिमेंप्रगट, मनुमंगललखिसार ॥ १६८ ॥ चौपाई ॥ स्वर्ण धनुषनिजद्वारसुऊपर ॥ यहअक्षरखुदिरहेतिहिंभूपर ॥ (नीकेनैन मुसकिछविपाहैं ॥ यहछविशशिमेंकहोकहांहैं ॥) याकीउपमाहेत सुमति ॥ हेरतहेरतभईसिथिलगति ॥ १६९ ॥ दोहा—दुजेद्वार निकाचके, बहुरंगकेसुकिंवार ॥ मानौंनवरसथिरभये, दर्शनलोभ विचार ॥ १७० ॥ परदेलसतसुतासके, सोनेरीरूपेरि ॥ मानौंदम कतएव्है, रविशशिकिरनघनेरि ॥१७१॥ कीनखापकोछातजहां, शोभितयौंरसमूल ॥ मानौंफूलीसांझमें, वरपेसुरतरुफूल ॥१७२॥ मणिमयऐसोहरिभवन, अद्भुतअमलअनूप ॥ पूरनवर्ननकरिसकैं, जोहोवैंअहिभूप ॥ १७३ ॥ जोकोऊयाभवनको, दरशनकरिहै आय ॥ वहलखिहैवर्ननकियो, जयकविसत्यबनाय ॥ १७४ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, निजवार्तासुप्रसंग ॥ जयकवियहवर्ननाकि यो, मनमेंबहुतउमंग ॥ १७५ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीनृत्यगोपालयोः निजवार्ता ॥

अथ श्रीमहाप्रभुजीको चित्रविराजैंताकी निजवार्त्ता लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्रीलक्ष्मणभटगृहभये, श्रीवल्लभद्विजराज ॥ पनरा सैंपैंतीसमें, भक्तउधारनकाज ॥ १ ॥ शाहसिकंदरलोदिभो, दिल्लीपतिवडभाग ॥ प्रभुतासुनिलखिहियभयो, सरसश्रवनअनुराग ॥ २ ॥ भयोश्रवनअनुरागतैं, दरशनकोअनुराग ॥ तवदिल्लीपति चितभई, चित्रकरावनलाग ॥ ३ ॥ होनहारनामाहुतो, चतुरमुसव्वरविज्ञ ॥ तवताकौंहुकमदियो, दिल्लीपतिसुअभिज्ञ ॥ ४ ॥ श्रीवल्लभआचार्यको,लाव हुचित्रबनाय ॥ लेउयथार्थमिलायकैं, व्रजमंडलमें जाय ॥ ५ ॥ होनहारकरतारसो, गर्वधारिव्रजजाय ॥ श्रीवल्लभमहाराजके, सुंदरदरशनपाय ॥ ६ ॥ चित्रबनायोचित्तदै, अतिचातुरताधारि ॥ मिल्योकछूनाहींतवै, फेररच्योचितधार॥७॥ द्वितियचित्रहूनहिंमिलत, होनहारकेचित्त ॥ दिल्लीपतिकीकहरको, प्रकटयोप्रभयअमित्त ॥ ८ ॥ तवश्रीवल्लभराजके, चरनवंदिछलछोर ॥ कीनीविनतीदीनव्है, होनहारकरजोर ॥ ९ ॥ दिल्लीपतिकेहुकमतैं, हौंआयोव्रजमांहि ॥ लिखनरावरेचित्रकौं, पूरनचिन्हमिलाहि ॥ १० ॥ मोमतिकेअभिमानतैं, कीनेचित्रसुदोय ॥ कछुनमिलेनिजरूपमें, देखेवहुविधिजोय ॥ ११ ॥ जोनाहिंमिलिहैचित्र तो, दिल्लीपतितकरार॥करिकैंपुनिकरिहैंकहा, कहाजानौंतिंहिंवार ॥ १२ ॥ दीनवंधुकरुणाजलधि, श्रीवल्लभद्विजराय ॥ तवकरुणा करिकैंकही, निजप्रभुतादरशाय ॥ १३ ॥ अवतूचित्रवनायकैं, ले

जावहुधरुधीर ॥ यहवचनामृतसुनिमिटी, होनहारहियपीर ॥ १४॥ पायअनवसरसमयकौं, श्रीजमुनातटधाम॥ कहतभागवतकीकथा, श्रीसुबोधिनीनाम ॥ १५ ॥ तहांभटमाधोदासजू, हाजररहतहमेश ॥ श्रीसुबोधिनीलिखतहैं, शीघ्रसुशुद्धविशेष ॥ १६ ॥ कृष्णदासमेघनजहां, हाजरहैकरजोर ॥ तीनदिवसठाढोरह्यो, पुरुषोत्तमके जोर ॥ १७ ॥ दामोदरहरषानिजहां, करतदंडवतआय ॥ ग्रीषमऋतुकेसमयमें, ऐसोसमयसुपाय ॥ १८ ॥ पनरासैसडसठलखो, संवतकोअनुमान ॥ संप्रदायकल्पद्रुमसु, पुस्तकमांहिप्रमान॥१९॥ आज्ञालैचित्रसुलिख्यो, अवयवचिन्हमिलाय ॥ प्रभुस्वरूपप्रतिबिंबसौं, लीनौशीघ्रबनाय ॥ २० ॥ हौनहारयहचित्रकिय, दिल्लीपतिपैंपेस ॥ लोदिसिकंदरतवकही, हौनहारसौंवेस ॥ २१ ॥ हौनहारयहचित्रतुम, क्यौंकरिलियोबनाय ॥ हाथजोरिजाहिरकरी, ज्योंशिरवीतीआय ॥ २२ ॥ सुनिवृतांतनृपेशलखि, प्रभुहीकोअवतार॥ दृढकरिलीनोंचित्तमें, यहविचारनिर्धार ॥ २३ ॥ निजचित्रालयमें यहै, दियोचित्रधरिवाय ॥ दर्शनरुचिजबचित वढै,तवहीलेतकढाय ॥ २४ ॥ याप्रसंगसौंरूपसिंह, वाकिबथेमनमांहि ॥ यहउपायचितनितकरत, पधरावौंगृहमांहिं ॥ २५ ॥ रूपसिंहकौंयहसमय, प्राप्तभयोजिंहिरीत ॥ सोअवसवहीकहतहौं, सुनियेंअतिकरिप्रीत ॥ २६ ॥ अकवरकेजहांगीरभो, ताकेशाहजिहांन ॥ रूपसिंहपैंमहरकरि, लिखभेज्योफरमान ॥ २७ ॥ जाहुवलखकीमुहमपर, करहुशत्रुकौंचूर ॥ तेरेमुखपैंलसतहैं, रजपूतीके नूर ॥ २८ ॥ हुकमपायपहुंचेवलख, रूपसिंहमहावीर ॥ दिल्लीपतिकीफोजको, सेना-

पतिहैधीर ॥ २९ ॥ तुपकतीरतरवारसौं, कीनौंअतिघमसान ॥ व
लखाधिपकेजंगमें, लीनौंछीननिसान ॥ ३० ॥ वलखाधिपकोंजेरि
करि, आयेदिल्लीमांहि ॥ शाहजिहानदिलीशजू, कीनीवहुतसरां
हि ॥ ३१ ॥ स्वेतलालरंगकोजुवह, हुतोपठाननिसान ॥ दिल्लीपति
दैकैकह्यो, राखहुयहीनिसान॥३२॥हैंप्रसन्ननृपरूपसौं फरमाईक
रिप्यार ॥ जोतेरेमनमेंचहो, लेवहुवहीअवार ॥ ३३ ॥ तवेंरूपनृप
अर्जकिय, समयपाययहवेस ॥ अपनौंइष्टविचारकैं मांग्योयहीन
रेश ॥ ३४ ॥ श्रीवल्लभआचार्यको, होनहारकेहाथ ॥ चित्रकरायो
प्रीतकर, शाहसिकंदरनाथ ॥ ३५ ॥ वहीचित्रअतिमहरकरि, करि
दीजैवगसीस ॥ यहसुनिकैंदिल्लीशयौं, हूकमकियोवरीस ॥ ३६ ॥
देशकोशकौंछाडिकैं, कहामांग्योवडभूप ॥ रूपसिंहकरजोरितव,
कीनोअरजअनूप ॥ ३७॥ परमइष्टहमकोयहैं, सुनहुगरीवनिवाज़॥
यातैंवहीसुदीजियैं, भूपनकेशिरताज ॥ ३८ ॥ चित्रालयअध्यक्ष
सौं, करिहुकमदिल्लीश ॥ वहीचित्रकढवायकैं, करिदीनोवगसीस॥
॥ ३९ ॥ फिरदिल्लीपतिहुकमाकिय, फिरमांगहुमहाराज ॥ तवैंअर
जकीनीसम्झि, रूपसिंहनरराज ॥ ४० ॥ सवलसिंहकौंमहरकरि,
दीजैजेसलमेर ॥ यहभाटोअतिखोरहैं, अवकरियैनहिंदेर ॥४१॥
दिल्लीपतिनृपरूपकी, करीअरजमंजूर ॥ तवभाटीसवलेशकैं, व
ढ्योचोगुनौनूर ॥ ४२ ॥ रूपसिंहकेतातश्री, भारमल्लमहाराज ॥
तिनकेमातुलकोतनय, सवलसिंहयदुराज ॥ ४३ ॥ हौंनहारकोक
हतहौं, अवैसकलइतिहास ॥ ताकेसुनतहिहोतहैं, चतुरनिचित्तहुला

१ इसका अर्थ खराब होरहा है.

स ॥ ४४ ॥ चित्रलिखनकेइलमकौं, सीखसुबुद्धिअथाह ॥ गयोहाजरीदैनकौं, दिल्लीपतिदरगाह ॥ ४४ ॥ दिल्लीपतिसौंअर्जकिय, लोजैंमोइमत्यान ॥ हजरतजबैंपधारकैं, लैंनलगेसुखमान ॥ ४६ ॥ हौंनहारतबयौंकरी, इकउष्णोशमंगाय ॥ व्हैंनरकौंटाढेकर, झिल्लाकौंपकराय ॥ ४७ ॥ हौंनहारहयपैंचढचो, करमेंलइंजुगाल ॥ घोरेकौंरपटायकैं, खैंचारेखअटाल ॥ ४८ ॥ वहउष्णीसमंगायकैं, हौंनहारकियअर्ज ॥ याकेसूत्रकढायकैं, लखहुरेखकोमर्ज ॥ ४९ ॥ दिल्लीपतिउष्णीषको, देख्योसूत्रकढाय ॥ रेखएकवहिसूत्रपैं, आदअन्तसरसाय ॥ ५० ॥ यागुनकौंलखिकैंबहुत, दियोदानसनमान॥ हौंनहारसुखितात्रदैं, गुनकोकियोवखान ॥ ५१ ॥ छप्पय ॥ श्रीलक्ष्मणभटगेहप्र्रूअवतारलिवायो ॥ श्रीवल्लभआचार्यमहाप्रभुनामकहायो ॥मायावादविखंडभक्तिपथपुष्टिवधायो ॥ दैवीजीवउधारहेतयहमार्गबतायो ॥ भटमाधवकृष्णहिदासजूदामोदरकौंकरिसुथिर॥ धरिविग्रहरूपसुचित्रमयजयतिजयतिनृपरूपशिर ॥ ५२ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे पुष्टिपथप्रवर्तक श्रीतैलंगकुलदिवाकर श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभूणां चित्रस्य निजवार्ता ॥

अथ श्रीसालग्रामजीकी निजवार्ता लिख्यते ।

दोहा—रूपसिंहकेसेव्ययह, सालग्रामस्वरूप ॥ तिनकेदर्शनकरतहीं, होतभक्तसुखरूप ॥ १ ॥ कहांकहांदफतरमहीं, इनहीकोअभिराम ॥ राजसिंहकेसमयमें, लिख्योसुदर्शननाम ॥ २ ॥ अगलेनृपतिपधारते, कारजवशपरदेश॥तबैंसंगरइतेसदा,नृत्यगुपा

---

१ पाग. २ इमलीका कोइला.

लसुरेश ॥ ३ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, गोदमांहिंसुखधाम ॥ नितप्र तिसंगबिराजते, यहश्रीसालग्राम ॥४॥ श्रीजीकेसान्निध्यमें, पंचामृ तसौंस्नान ॥ जयंतीनमेंहोतहैं, अवलौंइनकौंजान ॥ ५ ॥ छप्पय॥ जयतिगांडकि नामांहिप्रगटपरमानंदराशी ॥ जयतिविष्णुवररूपअ मरमुनिजनमनवासी ॥ जयतिश्रौतअरुस्मार्त्तसंततिंहिकरतउपा सी ॥ जयतिसंप्रदाच्यारमांहिकारिरहेउजासी ॥ सबकहतवेदमय तीर्थमयसर्वदेवमयजयतिजय ॥ नृपरूपसिंहकेशीशपरजयजय सालग्रामजय ॥ ६ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्री सालग्रामस्वरूप निजवार्ता ॥

अथ हरिभक्तिगुनप्रशंस गर्भित नृपवंश बर्नन

दोहा–इकस्वरूपश्रीनाथको, नृत्यगोपालकेदोय ॥ चित्रसुम हाप्रभूनको, सालग्रामसुजोय ॥ १ ॥ यहपांचौंनिधिकोकह्यो, नि जवार्त्तासुप्रसंग ॥ अबबरनौंनृपवंशकौं, भक्तिरंगकेसंग ॥ २ ॥ महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पुत्र सहसमल्लजी, जगमल्लजी, भार मल्लजी, हरिसिंहजी ॥ कृष्णसिंहमहाराजके, पुत्रसुच्यारहुसिंह ॥ सहसमल्लजगमल्लअरु, भारमल्लहरिसिंह ॥ ३ ॥ भारमल्लजीके पुत्र रूपसिंहजी ॥ भारमल्लकेपुत्रश्री, रूपसिंहनरनाथ ॥ इनसब कोवर्ननकियो, पांचौंनिधिकेसाथ ॥ ४ ॥ रूपसिंहजीके पुत्र मा- नसिंहजी ॥ रूपसिंहकेसुतभये, मानसिंहमहाराज ॥ श्रीजीकी सेवाकरी, चितसौंअतिहितसाथ ॥ ५ ॥ सिद्धकरायोस्वर्णको, मह लसुअतिअभिराम ॥ तामेंनित्यविराजते, श्रीजीपूरनकाम ॥ ६ ॥ राजभोगनितहींधरयो, स्वर्णपात्रकेमांहि ॥ ऐसेंवैभवसौंकरी, सेवा

मानउमांहि ॥ ७ ॥ अजवकुंवरिकेवचनकौं, तिय पुत्र सावंत सिं
चाह्योग्रामसिवारकौं, तजिव्रजओगिरिराज ॥ ८ राजकाजयुवरा
त्पात । श्रीगोवर्धननाथ॥गमनकियोमेवाडकौं, निजजो नामनाग
थ ॥ ९ ॥ नगरखेरववंटसुबन, आकरपुरअरुग्राम ॥ सरि गोस्वा
पुनीतकिय, जहांतहांकरिमुक्काम ॥ १० ॥ मानसिंवको, फैलर
विजयराज्यकेमांहि ॥ कृष्णगढ्ढकेदेशमें, नाथपधारेच॥ रूपनृप
नाथ पधारेदेशमें, यहसुनिकैंनृपमान ॥ दर्शनकौंपहुंचेजलद, नि
वानीसुखमान ॥१२॥ श्रीगोविंदगोस्वामिकौं, विनतीकियदंड ॥
श्रीगोवर्धननाथके, दर्शनतैंसुखहोत ॥ १३ ॥ गंगाबाईसौंकरीनिकैं
ज्ञाश्रीगोस्वामि ॥ प्रभुसौंविनतीभूपहित, कदरशादय, श्रीजीहोय
गंगासौंसान्निध्यही, आज्ञाकरतेनाथ ॥ तान्त्रिरसाल ॥ ७ ॥ जन्मा
तेयाकौंगाथ ॥ १५ ॥ विनतीसुनिश्रीनाथनकेमनहोतहैं, ताकेसुन
भगवदीययहबंशहैं, दर्शनहोयअवश्य ॥ श्रीरामजिहिंनाम ॥ उप
लौं, फागोत्सवसरसान ॥ करिहहुदिनचाली वहसप्रेमकीर्त्तनक
खमान ॥ १७ ॥ कृष्णढ्ढदक्षिणदिशा, सार्द्धकोगरह्योसरसाय ॥
तान्त्रकीगालमें, तहांविराजेआंन ॥ १८ ॥ सवैया॥ वडभागीनं
सुढंगसुराजतस्वच्छशिलातलहैंबहुठामा ॥ कीरमयूतसमय, श्री
सुगंधितसीतलमंदललामा ॥ निर्झरकूपमनोहरहैंज॰ १२॥ वैठो
लसैंअभिरामा ॥ छाईकदंबकुरंबनिसौंसुपहारकिगारांफैं, लीउठा
॥ १९ ॥ दोहा ॥ पीतांबरकीगारमैं, कदंबखंडिकीछांह राय ॥
दिनचालीशलौं, शोभितभयेसुतांह ॥ २० ॥ श्रीप्रभुजीग्बडेवडे
गुरु, इनपैंभयेकृपाल ॥ भगवदीयऐसैभये, जवैमानमहिदेवाय

॥ १५ ॥ जापदके गावत श्रीजी माला दीनी सो वह यह पद ॥ जसोदेवधाइयां ॥ नंदरानींदेलालरूपनांससीनेहियांसवैजिवाइ यां ॥ सोहनियांसवगोपीयांतोघरआइयां ॥ पुत्रजायाजगजीवन रीतैंपैंरूलगीवडाइयां॥तैंडाभागसुलछनीसइयैंसभैंघोलिघमाइयां॥ अमृतसारजुलध्यानीसइयेपूरियांकितीकमाइयां ॥ साजनचंदारव कीताऐसीफूलियांअंगनमाइयां ॥ खुसीहुयेसुरनरमुनिजनजनुरं कांनिधपाइयां ॥ दूधदहींसिरपावदेनाचंदेग्वालांखेडमचाइयां ॥ वडभागीनंदवहठादैंदामुँहमांगीठकुराइयां ॥ रामरायप्रभुप्रगटिया भगवानगलांमनभाइयां ॥ १ ॥ दोहा ॥ सावंतसिंहनरेशको, सुनि यैंहितियप्रसंग ॥ ताहिसुनतमनमेंवढैं, भक्तिरंगकोरंग ॥ १७ ॥ रूपवावरोनंदको, पुनिहोरीकोछैल ॥ यापदकोश्रीजीनिकट, होत फागरंगरैल ॥ १८ ॥ पदमाफकशृंगारहैं, ताहिमुजबसवठाट ॥ सबैंउपासिकसुनिचलैं, लेवैंरसकौलाट ॥ १९ ॥ करिदर्शनबहुदर्श- नी, छकिजाकिजातविशेष ॥ भाविकजनकेमनतहां होवतप्रेमावेश ॥ २० ॥ निजमरजीसौंठटयह, श्रीजीकियरवे कार ॥ नृपआदि कभक्तनिसबनि, लीनौंहियमधिधार ॥ २१ ॥ रसिकचतुररिझवार जू, कीनोजोस्वीकार ॥ एकवरसनाहींभयो, यापदकोसुप्रकार ॥ २२ ॥ स्वपनेमेंनृपसौंतबैं, कियआज्ञाहैवार ॥ वहीगवावहुपद सरस, जामेंफागविहार ॥२३॥ जापदकौंश्रीजी आज्ञा देकैं गवायो सो वह यह पद ॥ राग ॥ रूपवावरोनंदमहरकोबहुरिबन्यौहोरी कोछैल ॥ रोकतटोकतघूंघटखोलतभरिपिचकारीतकतउरोजनिगो

१ अपनौं विभाग । जैसे-अमुकने अपनी जमीनका अन्न लाटा ।

कुलरीमाईचलतनगैल ॥ छलसौंमसरिगुलालकपोलनिचितैंरहतप लभूलिनिलजव्हैंहियैंभरतजोबनकेफैल॥ छुटीबैंसंधिवैसहचरिसुख मदनमवासरहततनताकैअँगअँगरीझिकटीलीसैल॥१॥२४॥ दोहा—सावंतसिंहनरेशकोसुनियैंतृतियप्रसंग ॥ याहिसुनतमनमैंवढैं, भक्ति रंगकोरंग ॥२॥ हिंडोरनकेदिननमें, जवगावतपदयेह ॥ रमकिरम किझूलनमहीं, झमकिसुआयोमेह ॥२६॥ अंवरमधिवादरकहूं, जो रंचकनहिंहोय॥तऊआनवरसनलगैं, गरजिसघनघनहोय॥ २७॥ मुकटचंद्रिकाजातझुकि, मुक्तमालउघिरात ॥ श्रीजीकेश्रीअंगकी, शोभावरनिनजात॥२८॥ आनसुपदगावतजवैं, तबवरपारहिजात॥ यहपदगावतव्हैंपरत, बहुवरपासरसात ॥२९॥ मुखियाभीतरियानृ पति, जानगयेमनमांहि ॥ यहपदठाकुररीझिको, यातैंअवश्य गवांहिं ॥ ३० ॥ यहपदजादिनहोतव्हैं, अधिकनोछावरभोग ॥ याउच्छवकेदरशकरि, होतविमोहितलोग ॥ ३१ ॥ जा पदके गावत वर्षा होय अरु श्रीजीके फेंटा चंद्रिका झुकि जाय श्री अंगकी शोभा अधिक बढै सो वह यह पद ॥राग॥ रमकिरमकि झूलनिमेंझमकिमेहआयोनहिंसुरझतिवातनितैं ॥ नवपल्लवसंकुलित फूलफलबरनबरनद्रुमलतातैंझुलवतभयोबचावभयोपातनितैं ॥ मंदमंदझुलावनलागीथंभनिसौंओढैंअंवरजलघातनितैं ॥ कृष्णदा सगिरिधारितऊभीज्योवागोसारीभौंरनकीभीरभारीटरतनटारी क्यौंहूंउपजीछवीलीघटानिजगातनितैं ॥१॥३२॥ दोहा—साँ वंतसिंहनरेशको, सुनियचतुर्थप्रसंग ॥ ताहिसुनतमनहोतहैं, भक्ति रंगकोरंग ॥ ३३ ॥ सतरैसैंपिच्यासिमैं, माणकचंदकोठारि ॥ अ

तिमरजौंकोंहैंदगो, रच्योकुमतिउरधार ॥ ३४ ॥ याकौंविधिपूर्व कसकल, तवरिसकेमांहि॥देखिलेहुचांतुरपुरप, मोपैंक्षमाकराहि ॥ ॥ ३५ ॥ तेजसिंहभाटीकह्यो, ताकोसववृत्तांत ॥ तवहूकमअै सैंदियो, समझिकुंवरसिद्धांत ॥ ३६ ॥ माणकचंदकेहाथकौ, ला हुलिखायकैंफर्द, ॥ तवैंसत्यसवमानिहौं, करिहहुमोहिसुपर्द ॥ ॥ ३७ ॥ कितेदिवसवीततवैं, भईजुऐसीरीत ॥ लिखिकागदयाकौं दयो, फोजलैंनकीचीत ॥ ३८ ॥ तेजसिंहतवपत्रलैं, गयोरात्रिके वख्त ॥ गयोनगरवाहिरतवैं, यामैंभईजुसख्त ॥ ३९ ॥ मारगमेंप गधरततव, मारगसूझतनांहिं ॥ जितदेखैंतितहीदिखैं, श्रीजीरूप हितांहि ॥ ४० ॥ अरुलकुटीसौंमारदैं, दइवुद्धिकौंफेर ॥ समझित त्वपाछोफिरचो, तेजसिंहतिंहिंवेर ॥ ४१ ॥ पत्रलियैंहाजरहुयो, सांवंतसिंहकेपास ॥ सकलभयोवरतावसो, कहिकैंकियोप्रकास ॥ ॥ ४२ ॥ तवमहाराजकुमारश्री, दियहूकमफरमाय ॥ माणकचंद कौंजलदही, लावहुयहांवुलाव ॥ ४३ ॥ वाकेहाजरहोतकछु, लि खिवायोतिंहिंपास ॥ यहअक्षरवापत्रके, मिलिगयेएकहितास ॥ ॥ ४४ ॥ तवक्रोधकरिकैंकह्यो, सांवंतसिंहकुमार ॥ यहहरामखोर निसुमिलि, कररह्योधूमअपार ॥ ४५ ॥ तवहीरचिसांवंतकुंवर, इ कदोहाफरमाय ॥ माणककौंपंचत्ववेंदी, गजकेपायवंधाय ॥ ४६ ॥ जोजोनरसामिलभये, याकीसलाममझार ॥ यथायोग्यतिनकौंदि यौं, दंडनीतिउरधार ॥ ४७ ॥ दिल्लीमधिथेइहिंसमय, राजासिंहम

१ महाराज नागरीदासजी । २ माणकचंदके हाथकी फर्दह मारे सुपर्द करेगा तब तेरी अर्ज सत्य मानी जावेगी. ३ मृत्यु.

हाराज ॥ स्वपनेमाधिआज्ञा तिहैं, कियश्रीजीमहाराज ॥ ४८ ॥ रक्षाकीनीदेशमधि, यहसुनिउठेनरेश ॥ सानभावतासमाझिकैं, कियदंडोतविशेष ॥ ४९ ॥ याकोकागददेशतैं, आयोकछुदिनवाद ॥ राजसिंहतवसबनिसौं यहकीनोअनुवाद ॥ ५० ॥ या समय महाराज सांवतसिंहजी दोहो फरमायो सो वह यह ॥ दोहा—जे अपराधीस्वामिके, ताहिगैवकीमार ॥ मूरखमनसमझैनहीं, ताको यहैविचार ॥ १ ॥ ५१ ॥ सांवतसिंहजीके पुत्र सरदारसिंहजी ॥ दोहा—सांवतसिंहनरेशके, कुंवरभयेसिरदार ॥ प्रीतनीतकुलरीत युत, अतिउदाररिझवार ॥ १ ॥ अठारहसैंच्यारमें, दिल्लीपतिके पास ॥ सांवतसिंहकेसंगही, गमनेधरिहुल्लास ॥२॥ पीछैंसैनृपराज सिंह, गमनकियोहरिधाम ॥ दिल्लीतैंभेज्योसुलिखी, साँवँतसवरियाम ॥ ३ ॥ प्रतिनिधिकरिशिवसिंहकौं. दीनोंकामतमाम ॥ इन कीरहिवहुगाफली, तवैभयोयहकाम ॥ ४ ॥ गढसहरूपनगरलियो, ऐसोअवसरपाय ॥ साँवँतसिंहकेअनुजश्री, भूपबहादुरआय ॥ ॥ ५ ॥ याविपत्तिकेमांहिहीं, कहीभक्तहरिदास ॥ साँवँतसिंहनरेश तब, कियवृंदावनवास ॥ ६ ॥ मरेटानसोंसंधिकरि, श्रीसिरदारकुमार ॥ रूपनगरकौलैनकौं, लायेउनकौंलार ॥ ७ ॥ काकाऔरभतीजके, भोसंग्रामअथाग॥तबदोऊमिलिराजके, कीनेदोयविभाग॥ ॥ ८ ॥ रूपनगरदाखिलभये, श्रीसिरदारकुमार ॥ तबश्रीजीकीभेटकिय, ग्रामएकउरधार ॥ ९ ॥ इहिंरनकोइतिहाससब, रचिकैंबहुतविशाल ॥ ग्रंथसुजससिरदारमें, कह्योसुहीरालाल ॥ १० ॥ श्री

१ महाराजा राजसिंहजीकी खवास (उपस्त्री)के पुत्र थे ।

जीवनगोस्वामिगुरु, तिनकीकृपाप्रताप ॥ जुद्धजीतिनयरीतिसौं, लीनौंसुयशअमाप ॥ ११ ॥ जोपांचौंनिधिवडनकी, नृपसिरदार केशीस ॥ रूपनगरकेदुर्ग्गमें, राजतरहीवरीस ॥ १२ ॥ राजसिंहजीके चोथे पुत्र बहादुरसिंहजी ॥ दोहा–राजसिंहकेपुत्रश्री, भोच तुर्थगंभीर ॥ बहादुरसिंहसुनामजिंहिं, सांवतेशवडवीर ॥ १ ॥ अठारहचोवीसमें, श्रीसरदारनरेश ॥ माधवमासजकुहूदिवस, सुरपुरकियोप्रवेश ॥ २ ॥ तवबहादुरनिजपुत्रकौं, तिनकेगोदहीदीन ॥ एकराजदोउराजके, वुद्धिवलसौंकरिलीन ॥३॥ तवश्रीजीकौंकृष्ण गढ, पधरायेसहुलास ॥ अठारहपचीसमैं, वदिपंचमिमधुमास ॥ ॥ ४ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्ग्गमें, हैंदहलानसुठाम ॥ हरीसिंहकेनामतें, हैंप्रसिद्धअभिराम ॥ ५ ॥ भूपतितिंहिंदहलानमें, श्रीजीकौंपधराय ॥ करनलगेसेवासुविधि, मनमैंअतिछकपाय ॥ ६ ॥ तहांउपद्रवअग्निको, भयोकछुकादिनवाद ॥ तवपीछेरूपनगरहि, पधरायेसुखसाद ॥ ७ ॥अठारहपच्चीशमैं, चैत्रशुक्लभृगुवार ॥ तिथिनवमीश्रीरामको, जन्मोत्सवसुतिवार ॥ ८ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्ग्गमें, यादिनमंदिरनींव ॥ दईबहादुरसिंहजू, दूजोभुजवलभींव ॥ ९ ॥ मंदिरशीघ्रसुसिद्धकिय, युतसाहित्यसुथांन ॥ यहसंवतसरकारको, जानहुसुकविसयांन ॥ १० ॥ अठारहउनतीसमें, फागुनसुदिबुधवार ॥

---

१ सावंतसिंहजी (वडवीर) वडे भाई थे जिनके अर्थात् बहादुरसिंहजीके वडे भाई सावंतसिंहजी थे। २ वैशाख। ३ अमावास्या। ४ चैत्र ५ सरकारी संवत् आपाढसे माना जाता है जिससे विक्रमी संवत् १८२६ जानना चाहिये।

तिथिनवमीहरिदुर्गमें, राजतभयोपधार ॥ ११ ॥ पुनिश्रीजीकौं प्रीतिकरि, श्रीवहादुरनरनाह ॥ रूपनगरतैंकृष्णगढ, पधरायेकरि चाह ॥ १२ ॥ तवतैंकाहूसमयमैं, अवलौंकाहूठोर ॥ नांहिपधारे नाथजी, मंदिरतैंकिंहिंओर ॥ १३ ॥ सेवाविधिकुलरीतिसम, होत रहीअतिवेष ॥ हरिसेवनयहयज्ञतैं, सुवशवस्योसवदेश ॥१४॥ अ वजवानमहाराजके, हियकौंप्रेरिसुचाह ॥ फूलमहलराजतभये छप्पनभोगउछाह ॥ १५ ॥ ताकेसववृतांतकौं, उत्तरार्द्धकेमांहि ॥ सहितअनुक्रमवर्णिहों, निजहगलखीसुतांहि ॥ १६ ॥ वहादुर सिंहनरेशजू, छितिपरतप्योअमाप ॥ गोस्वामीजीवनप्रभू, गुरुके तेजप्रताप ॥१७॥ पुत्रपौत्रसेवकसचिव, कोशदेशरनखग्गा ॥ जी तनीतकलरीतयुत, नृपसुखलहेअथग्गा ॥ १८ ॥ राजासिंहजीकेपां चवेंपुत्रवीरसिंहजी ॥ राजासिंहसुतपांचवें, वीरसिंहमहाराज ॥ तिन कोवंशरलावतैं, राजतहैंसुखसाज ॥ १ ॥ वांकावतकेगर्भमें, जन्म लियोनृपवीर ॥ कछवाईकेगर्भतैं, च्यारोंभयेसुधीर ॥ २ ॥ वहादु रसिंहजीकेज्येष्ठपुत्रविरदसिंहजी ॥ वहादुरसिंहनरेशके, भयेकुंवर वरदोय ॥ बिरदसिंहतिनमेंवडे, वाघसिंहलघुजोय ॥ १ ॥ गोस्वा मीश्रीयुतसरस, विठ्ठलनाथकृपाल ॥ तिनसौंब्रह्मसँबँधलिय, विरद सिंहमहिपाल ॥ २ ॥ सुरवानीमेंअतिसुघर, पटशास्त्रनिविस्तार ॥

---

१ राजासिंहजीके दो रानी थी। वडे कछवाईजी छोटे वांकावतजी। यह कछवाइजी जयपुर महाराज श्रीमिर्जाराजा जयसिंहजीके छोटे पुत्र कीरतसिंहजी जो कामाके राजा थे जिनके पुत्र उमेदसिंहजी थे जिनकी पुत्री थी चतुर कुंवरिजी नाम था। २ संस्कृतमें.

पढिकैंपंडिनवरभये, अतिगुणज्ञरिझवार ॥ ३ ॥ टीकागीतगोविंद पैं, लघुअरुवृहतकरीसु ॥ विज्ञरसज्ञानिहितसरस, अतिपांडित्यभरीसु ॥ ४ ॥ टीकावृहतकरीतबैं, यहैंप्रतिज्ञालीन ॥ द्वितियेशब्द मिलतेसतैं, पुनिशब्दनधरिदीन ॥ ५ ॥ यातैंवावनकोशकौं, लैसानिध्यविचार ॥ हेरशब्दपर्यायको, लीनोनृपउरधार ॥ ६ ॥ यह टीकायासमयमें, यातैंक्लिष्टमहान ॥ सहसाअर्थप्रकाशकौं, मथ्नरहतबुद्धिवान ॥ ७ ॥ वावनकोशजुयादव्हैं, अतिव्याकर्णविनोद ॥ सरसाईसाहित्यकी, अरुसंगीतप्रमोद ॥ ८ ॥ न्यायवात्स्यायन यवनें, भाषाऊहापोह ॥ जोजानैंसोकाहिसकैं, प्रकटअर्थतजिमोह ॥ ॥ ९ ॥ श्रीजीकीकुलरीतसम, सेवानिसिदिनकीन ॥ फेरनिवासहुलासयुत, वृंदावनकोकीन ॥१०॥ लीलानित्यविहारमग, वृंदावन केमांहि ॥ विरदसिंहपायेप्रवर, भवसमुद्रअवगांहि ॥ ११ ॥ श्री नागरमहाराजकी, छतरीरहीदिपाय ॥ ताकेछतरीपासही, इनकी दईबनाय ॥ १२ ॥ महाराज श्रीवहादुरसिंहजीके द्वितीय पुत्र वाघसिंहजी ॥ वाघसिंहनृपकोलसैं, वंशफतेगढमांहि ॥ रसिकविहारीप्रभुजहां, अंतःपुरकेमांहि ॥ १ ॥ विरदसिंहजीके पुत्र प्रतापसिंहजी ॥ विरदसिंहमहाराजसुत, धीरवीरगुनवान ॥ रूपमहानप्रतापसिंह, वुद्धिवानबलवान ॥ १ ॥ श्रीविट्ठलगोस्वामिगुरु, दियोमंत्र उपदेश ॥ श्रीजीकीसेवाकरी, प्रेमसमेतनरेश ॥ २ ॥ श्रीप्रतापम

---

१ जब गीतगोविंदपर बृहत टीका बनाई तब बावन कोषोंमें शब्द मिला जहांतक वह शब्द दूसरी बेर नहीं धरा । २ फारसी । ३ ठाकुरजीकी नित्य विहार लीलाका मार्ग अर्थात परलोक ।

हाराजमैं, संकटपरेविशेष ॥ तवारीखमेंदेखियो, वहइतिहासअशेष ॥ ३ ॥ ऐसेसंकटआपरे, जासौंविगरैंराज ॥ तिनसबकौंकाटेजलद, श्रीनाथजुमहाराज ॥ ४ ॥ प्रतापसिंहजीके पुत्र कल्यानसिंहजी ॥ इनकेसुतकल्यानसिंह, केतेकरेप्रबंध ॥ अष्टादशवेंवर्षमें, लियोब्रह्मसंबंध ॥ १ ॥ श्रीवल्लभगोस्वामिप्रभु, तिनकेचर्नसरोज ॥ जिनकीगहिशर्नेजुलई, भक्तिमार्गकीमोज ॥२॥ श्रीयुतरायकल्यानकी, नृपकल्यानउदार ॥ टहलकरीअतिप्रीतिसौं, ताकोवारनपार ॥ ॥ ३ ॥ चमरछत्रअरुपात्रबहु, स्वर्णरौप्यकेवेश ॥ संकटवशकछुराजमें, कीनेखर्चविशेष ॥ ४ ॥ तिनसबकोंबनवायकैं, नूतनअतिकमनीय ॥ नृपकल्याननृपरूपज्यौं, भेटकियेरमनीय ॥ ५ ॥ पद्मरागमरकतजलज, इनकेभूपनचारु ॥ सिद्धकरायकल्यानसिंह, भेटकियेसुखसारु ॥ ६ ॥ राजभोगद्विगुनितकियो, करिमनोर्थअभिराम ॥ तिंहिहितभेटकियोनृपति, नोनिधपुरोसुग्राम ॥ ७ ॥ ग्रंथसुसेवारीतिको, रचिरमनीयनरेश ॥ कविताकीर्त्तनकौंकरी, अतिरसभरीविशेष ॥ ८ ॥ खासाअपरसरीतिसौं, सेवारीतिप्रबंध ॥ बांधिदियोनाहिसुविधि, अवलौंव्हैसुखसंध ॥९॥ कल्यानसिंहजीके पुत्र ह्मोकमसिंहजी ॥ नृपकल्यानकेकुंवरवर, ह्मोकमसिंहनरेश ॥ तिनकेश्रीवल्लभगुरू, गोस्वामीसुद्विजेश ॥ १ ॥ सेवाकियकुलरीतिसौं, श्रीजीकीकरिप्रीत ॥ व्हैयुवराजसुराजको, काजकियोयुतनीत ॥ २ ॥ अल्पांतरकेसमयमें, कुंडवारेबहुकीन ॥ बीजेरवाडो

---

१ ग्रामका नाम नोनिध पुरा । २ ठाकुरजीके मनोरथसे भोग धरते हैं उसे कुंडवारा कहते हैं । ३ ग्रामका नाम बीजरवाड़ा ।

ग्रामइक, नृपतिभेटकरिदीन ॥ ३ ॥ ओरमनोरथसबकरे, जासौं जीतेयुद्ध ॥ भोअभिरामसुकामसम, नीतशुद्धमहाबुद्ध ॥ ४ ॥ श्री म्होकममहाराजकी, राणावतमहारानि ॥ महारानाअमरेशकी, तनयावडकुलवानि ॥ ५ ॥ तिंहिंमंदिरसिद्धसुकियो, वहुभारीसुअनूप ॥ तहांगोवर्द्धननाथको, पधरायोलघुरूप ॥ ६ ॥ ग्रंथसुयाकेसुयशाको, मतिमाफकमैंकीन ॥ तबहाथीशिरपावयुत, लाखपसावसुदीन ॥ ७ ॥ म्होकमसिंहजीके पुत्र पृथ्वीसिंहजी ॥ दोहा—नीकेदत्तकपुत्रश्री, पृथ्वीसिंहनरेश ॥ राजप्रजापालनप्रवर, मानहुद्वितीयसुरेश ॥१॥ श्रीविठ्ठलगोस्वामिउप, नामकहैयालाल ॥ दियोब्रह्मसंबंधवर, व्हैकैंपरमकृपाल ॥ २ ॥ प्रेमपगेसेवनलगे, श्रीगोवर्धननाथ ॥ राजभोगनित्यानसौं, दुगनितकियमुदसाथ ॥ ३ ॥ श्रीजीकीसेवामहीं, दोनौंसमयेमांह ॥ आपसदाहीपँहुचते, धारेमनमेंउच्छाह ॥ ४ ॥ श्रीजीकेग्रामनिमहीं, वहुतखुदायेकूप ॥ वृद्धिकरीपैदासयौं, बुधिबलकरिकैंभूप ॥ ५ ॥ स्वर्णरत्नअरुरौप्यके, भूषणभाजनवेश ॥ नूतनसिद्धकरायकैं, भेटाकियेपृथवेश ॥ ६ ॥ नवधा भक्ति वर्णनम् ॥नवधाभक्तिसुसिद्धिकिय, पृथ्वीसिंहनरेश॥ ताकोअबवर्ननकरौं, इकइकदोहावेश ॥७॥ श्रवनभक्ति ॥ सुनिभागोतसुबोधिनी, सुनिसिद्धांतअशेष॥भूपपरीक्षितज्यौंकरी, श्रवनभक्तिपृथवेश ॥ १ ॥८॥ कीर्त्तन भक्ति ॥ निजमुखसौंकीर्त्तनकरयो, हरिलीलासुखसार ॥ शुकज्यौंकीर्त्तनभक्तिकिय, पृथ्वीसिंहउदार ॥ ॥२॥ ९ ॥ स्मर्नभक्ति ॥ राजकाजकौंकरतही, हरिसाधिभूलेनांहि ॥

---

१ छोटा स्वरूप । २ ग्रंथ कर्त्ता कवि जयलाल । ३ गोद आये ।

सिद्धकरीप्रहलादज्यौं, स्मर्नभक्तिउरमांहि ॥ ३ ॥१०॥ अर्चनभक्ति॥ स्नानादिकशृंगारयुत, नीराजनपर्यंत ॥ पृथुज्यौंपृथ्वीसिंहनृप, अर्चनभक्तिकरंत ॥ ४ ॥ ११ ॥ ॥ चरन सेवनभक्ति ॥ कमलापतिकेचरनको, शरनगहीसुखमानि॥कमलाज्यौंपृथिसिंहकिय, चरनसुसेवकजानि ॥ ५ ॥ वंदनभक्ति ॥ पदजानूउरासिरधरानि, धरिकुरकरिदंडोत ॥ कियपृथवेशअक्रूरज्यौं, वंदनभक्तिउदोत ॥६॥१३॥ दास्यभक्ति ॥ सबसेवासौंपौंहरिकैं, आज्ञाकारीवेश ॥ लैप्रसादहनुमानज्यौं, साधिदास्यपृथवेश ॥ ७ ॥ १४ ॥ सखाभक्ति ॥ ... कौंप्राप्तिसुभयो, हासविलासविनोद॥वहअनुभवसुखहरिदियो, सखाभक्तिरसमोद ॥ ८ ॥ १५ ॥ सर्वस्वात्मनिवेदनभक्ति ॥ तनमनधनसुसमर्पिकैं, बलिज्यौंनिजबलजान॥सर्वस्वात्मनिवेदनसु, सिद्धकरीराजान ॥ ९ ॥ १६ ॥ प्रेमाभक्ति ॥ इनतैंदशमीसिद्धभइ, प्रेमभक्तिरससार ॥ श्रीपृथिसिंहनरेशके, ताकोवारनपार ॥१०॥ १७ ॥ अरुश्रीजीकीमिहरसौं, सिद्धभयेअभिराम ॥ पृथीसिंहमहाराजके, उत्तमउत्तमकाम ॥१८॥ अग्निशकट[1]आगमनतैं, भइसायरमधिहानि ॥ गैवर्मेंट[2]तैंनृपलियोताकोसबनुकसानि ॥ १९ ॥ इत्यादिकइतिहासकौं, तवारीखकेमांहि॥विधिपूर्वकसबदेखियो, सकलअभिज्ञउमांहि॥ ॥ २० ॥ पृथीसिंहमहाराजजू, कुलमेंभानुसमान ॥ वीरधीरगंभीरभो, भाग्यवानसुमहान ॥ २१ ॥ महाराज श्रीपृथ्वीसिंहजीके पुत्र श्रीशार्दूलसिंहजी जवानसिंहजी रघुनाथसिंहजी ॥ पृथ्वीसिंहनरेशके, तीनौंपुत्रमहान ॥ श्रीशार्दूलजवानअरु, अरुरघुनाथहिजान ॥

---

१ रेलगाडी. २ अंग्रेजसरकार.

॥ १ ॥ तनुधारिकैंप्रकटेमनौं, अर्थधर्मअरुकाम ॥ पृथ्वीसिंहनरेश
के, पुरुषारथअभिराम ॥ २ ॥ श्रीशार्दूलनरेशमें, धर्मरुकामसमा
न ॥ राजकाजकेहेतुतैं, सदाअर्थअधिकान ॥ ३ ॥ अर्थरुकामसमा
नहैं, दर्शतधर्ममहान ॥ जगमेंरहीजवानकी, धर्मध्वजाफहरान ॥
॥ ४ ॥ लसतभूपरघुनाथमें, अर्थरुधर्मसमान ॥ मासिभीनैंवयहेत
...मअधिकसरसान ॥ ५ ॥ विजयराज्येमहाराजाधिराजमहा
राजश्रीशार्दूलसिंहजीबहादुर जी. सी. आई. ई. श्रीशार्दूलनरेश
को, अवैंकहौंवरताव ॥ सत्यसत्यसबभांतिनित, जोनैनांदरसाव ॥
॥ १ ॥ महाभक्तश्रीनाथके, अनुभवरससुखहेत ॥ तनमनधनसौंप्रे
मयुत, सेवाकोसुखलेत ॥ २ ॥ परमप्रीतिश्रीनाथके, चरनकमलके
मांहि ॥ प्राचीननकेपुन्यतैं, कोलगिकहैंसरांहि ॥ ३ ॥ पृथ्वीसिंह
महाराजजू, जोजोबांधीरीत॥ताकौंअतिदृढकरतहैं, शारदूलनृपप्री
त ॥ ४ ॥ रूपसिंहकेसमयतैं, अवलौंवनेपदार्थ ॥ जीर्णोद्धारसुसव
निको, कीनौंलखिनिजस्वार्थ ॥ ५ ॥ सिंहासनपलनारुरथ, पहि
लैंसौंबडवार ॥ करिवायेशार्दूलनृप, रीतिवडनकीधार ॥ ६ ॥ ज
टितघटिततासौंकियो, भूषनवासनकोजु ॥ जीर्णोद्धारजलूसको,
कहालौंकहिसककोजु ॥ ७ ॥ मकरानेकीजालियां, नवललगाइसु
घाट ॥ निजमंदिरकेद्वारसव, चांदीकेजुकपाट ॥ ८ ॥ हिंडोरान
केफागके, आदिमनोरथसर्व ॥ आपकरैंअतिप्रीतिसौं, धारिधर्मको
गर्व ॥ ९ ॥ भ्रातुप्रमातुकलैत्रसौं, कहिसुबचनरसमूल ॥ करिवावें
शुभनोर्थबहु, श्रीजीकेशार्दूल ॥ १० ॥ उच्छववैभवकहिसकन, ग्रं

१ दादी. २ स्त्री.

थवढनकेभीत ॥ ज्योदेखहिनिजनैंनसौं, करिहैंकहाप्रतीत ॥११॥ महाराजश्रीजवानसिंहजी ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, वार्त्ताहीकेमांहि ॥ कह्योबहुतवृत्तांतवर, नृपजवानकोवांहि ॥ १ ॥ नृपजवानकी नौंसरस, छप्पनभोगउछाह ॥ ताहिहेतुकौंसुनत्तही, कहिहैंजगवावाह ॥ २ ॥ छियालीसउगनीससैं, मार्गशीर्षसुदिजान ॥ तिथिअष्ठमिशनिशतभिषा, हैर्षसुबैवपहिचान ॥ ३ ॥ यादिननृपतिजवानके, लीनौंजन्मकुमार ॥ श्यामसिंहतिंहिनामदिय, नृपद्विजमंत्रविचार ॥ ४ ॥ अग्रजश्रीशार्दूलनृप, अनुजभूपरघुनाथ ॥ जन्मोत्सवआनंदउमंगि, कीनौंसरसअगाथ ॥ ५ ॥ होतपुत्रकेजन्महीं, चितमेंधरीजवान ॥ करियब्रह्मसंबंधकरि, छप्पनभोगविधान ॥ ६ ॥ तबपठयोगुरुदेवके, चर्नकमलकेमांहि ॥ विनतीपत्रसुप्रीतसौं, मनमेंउमंगउमाहि ॥ ७ ॥ सुनिकैंविनतीपत्रको, श्रीविठ्ठलद्विजराय ॥ महुरतछप्पनभोगको, दियोलिखायपठाय ॥ ८ ॥ सैंतालिसउगनीससैं, पौषशुक्लबुधवर्ण ॥ द्वादशितिथिमृगशिरनछत, ब्रह्मयोगबवकर्ण ॥ ९ ॥ तबनृपछप्पनभोगकी, करनलगेततबीर ॥ श्रीजवानमहाराजजू, वीरधीरगंभीर ॥१०॥ महाराज श्रीरघुनाथसिंहजी ॥ श्रीरघुनाथनरेशजू, जिंहिंविधिभक्तिकरंत ॥ उत्तरार्द्धमेंलखहिंगे, भक्तिवंतगुनवंत ॥११॥ महाराज कुमार श्रीमदनसिंहजी ॥ श्रीशार्दूलनरेशके, श्रीमहाराजकुमार ॥ चिरंजीविमदनेशके, जेआचर्नविचार ॥ १२ ॥ उत्तरार्द्धमेंवर्निहौं, अतिउमंगहरषाय ॥ ज्यौंज्यौं निजनैंनालखौं, त्यौंदैंहौंदरसाय ॥ १३ ॥ छप्पनभोगसुचांद्रिका,

---

१ हर्षनामक योग. २ बव नामक कर्ण.

भोसमासपूर्वार्द्ध ॥ श्रीगुरुहरिकोस्मनकरि, काहिहौंअबउतरार्द्ध ॥१४॥ भयेवृंदविख्यातकवि, वृंदसतसईकीन ॥ तिहिंकुलकोजयक वियहैं, पूर्वार्द्धसुकरिदीन ॥ १५ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचांद्रिकायां हरिसंबंधगुन प्रशंसगर्भितनृप वंशवर्ननं ॥

इति श्रीमत् कृष्णगढाधिपति महाराजाधिराज महाराजा
श्रीपृथ्वीसिंहजी तद्वितीय पुत्र महाराजा श्रीजवान
सिंहजी देववर्मणाज्ञया जयकवि रचित छप्पन
भोगचांद्रिका पूर्वार्द्ध संपूर्णम् ॥

श्री नाथजी ॥

श्रीनृत्यगोपालो जयति ॥

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजाजी श्रीश्रीश्री १०८ श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरिसंबंध नाम नागरीदास जी कृत,

नागरसमुच्चयः ॥

तत्रादौ मंगलाचरण ॥

दोहा ॥ परम पुष्टि रस जल अमित, उर्मी प्रेमावेश ।
नागर प्रकट आनन्दनिधि, बल्लभ सुतबिठलेश ॥ १ ॥
धन बल्लभ बिठलेश धन, धन्य सात सुत वंश ।
भव निस्तारनि हित प्रकट, नागर जगत प्रशंस ॥ २ ॥

नागरसमुच्चये–

वैराग्यसागर ॥

तत्रादौ

प्रथम भक्तिमगदीपिका ॥

मंगलाचरण ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीभागवतसुअर्थरूपगुर । प्रणऊंतिनकौंतिनहिं धारिउर॥सर्वधर्मपरधर्म्मधर्मधुज।उचरौंआरम्भसाखिसहितसुज १॥

यहऔसरचूकोमतिकोय । यहनरदेहबहुरिनाहिंहोय ॥ लख
चौरासीभोग्यभोगसब । भयोजुनरसुभजोगजोगअब ॥ २ ॥
ताहिवृथामतिखोयकुढंग । जगनिधितरननावनरअंग ॥ कछुसुभ
कर्मअवसिकरिलीजे । आतमघातकहोक्योंकीजे ॥ ३ ॥ तहांप
रएकादशस्कंधे ॥ श्लोक ॥ नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभं, प्लवंसुकल्पं
गुरुकर्णधारं ॥ मयानुकूलेन नभस्वतेरितं, पुमान् भवाब्धिं न
तरेत्सआत्महा ॥४॥ अर्थ–देवादिक शरीर तिनहूकी आदि यह
मनुष्यदेहकों पायो वह मनुष्य देह अति दुर्लभ हैं । भगवत
कृपाकरि याको सुलभ भयो यह देह संसारसमुद्र तरवेकों नौकाहैं
सो सब अङ्गनकरिसंयुक्तहैं । गुरुहीखेवकहैं मेरीअनुकूलतापवन
हैं ऐसेहू मनुष्यदेहकरिकें जो संसारसमुद्र न तरैं तो आत्मघातीहैं
॥ ५ ॥ चोपाई ॥ जगसमुद्रकहोकैसैंतरिये । कौनकर्मकरिकेंजुउ
बरिये ॥ त्रिविधितापमैंप्रजुरितदेह । निसिदिनअतिदुखपरमअ
छेह ॥ ६ ॥ जग्यदानतपकरैंजुकोय । लक्ष्मीआयुविनानाहिंहोय
॥ पुन्यफलतुच्छस्वर्गअरुराज । दुखहीमैंकियोदुखकोसाज ॥७॥
स्वर्गतैंपुन्यछीनव्हैंपरैं । राजात्रिविधितापमैंजरैं ॥ सबविधिपूरन
श्रीभगवान । सोतजिकैंचितचाहैंआंन ॥ ८ ॥ भजिहैंऔरैंदेवउ
जागर । तऊनतरसकिहैंदुखसागर ॥ यहजानौंनिहचैंनिरधार स्वा
नपूंछगहिकोभयोपार॥९॥ तहांपरषष्ठस्कंधे ॥ श्लोक ॥ अविस्मि
तंतं परिपूर्णकामं, स्वेनैवलाभेनसमंप्रशांतं । विनोपसर्पत्यपरंहि
वालिशः श्वलांगुलेनातितितर्त्तिसिन्धुं ॥ १० ॥ अर्थ–भगवानविषैं
कछू आश्चर्य्य नहीं अपने स्वरूपानन्दही करिकैं परिपूरणहैं ।

या जीवतें कछू चाहतनहीं सबविषैं समानरससागर ॥ ४५ ॥
नहीं ऐसे प्रभुविना जो देवतान्तर की सरन जाय्यातसारयह
पुरुष जडहैं जैसैं कोऊ कुत्ताकी पूंछ पकरि समुद्र कृष्णभक्ति
॥११॥ चौपाई ॥ स्वानपूंछगहैंकोमतिमंद । छाडिकृष्णपककहूंठ
लगयंद ॥ मिटैंनदुखकियैंआंनउपाय । वृथानमनइतउतकोजाय ॥ १२ ॥ सर्वधर्मकलिमैंदुरिभाजे । पर्मधर्मसर्वोपरिगाजे ॥
अनन्यशर्नेहरिपायनपरियैं । श्रीमुखकृष्णकह्योसोकरियैं ॥
॥ १३ ॥ तहांपरगीता ॥ श्लोक ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य, मा
मेकं शरणं व्रज ॥ अहं त्वां सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा
शुचः ॥ १४ ॥ अर्थ—सर्वधर्म छाडिकैं एक मेरी सरण
होहु मैं तोकौं सब पापनितैं छुडाऊंगो तू सोक नां करि॥१५॥
॥ चौपाई ॥ यहसन्देहजोरहैंहियभोय । तनपातादिविघ्नवि
चहोय ॥ शर्नभक्तिदृढतानहिंपावैं । उतकौंआंनधर्ममिटिजावैं
॥ १६ ॥ इतकोहोयनउतकोप्रानी । रहैंझूलहीबीचअज्ञानी ॥
यहत्रिसंकगतिनाहिंनव्हैंहीं । तनकभक्तिफलपूरनदैंहीं ॥ १७ ॥
तहांपरप्रथमस्कंधे ॥ श्लोक ॥ त्यक्त्वास्वधर्मचरणांबुजं
हरेर्भजन्नपक्वोथपतेत्ततोयदि ॥ यत्रक्वबा भद्रमभूदमुष्यकिं,
कोवार्थआप्तो भजतां स्वधर्म्मतः ॥ १८ ॥ अर्थ—अपने
वरणाश्रम धरमकौं त्यागिकैं भगवानके चरणारविन्दको भजन
करत परपक्व भयें विना भ्रष्ट होयजाय तो वाकौं काहू देहमैं
अमङ्गल नाहीं जातैं भक्ति संसकार दृढहैं जाको नास नहीं
अरु भजन रहित वर्णाश्रम धर्म्मन तैं कौन अर्थकी सिद्धि

होतुहैं ॥ १९ ॥ [illegible] चौपाई ॥ मानुषसिररिणजनम्यौंतवको । देवपितररिषिभ[illegible]तनसवको ॥ हरिकेअनन्यशरनजबहोय । छूटै रिणसंदेहन[illegible]कोय ॥ २० ॥ तहांपरएकादशस्कंधे ॥ श्लोक ॥ देवर्षिभू[illegible]ाप्तनृणां पितृणां, न किंकरो नायमृणी च राजन् ॥ सर्वा त्मना यः शरणं शरण्यं, गतो मुकुंदं परिहृत्यकृत्यम् ॥ २१ ॥ अर्थ–देवता ऋषि औरहू प्राणीमात्र और कुटम्ब मित्रादिक पितर इनको किङ्कर कहिये आज्ञाकरता ऋणी नहीं कौंन जो कायक बाचक सुभाव करिकैं अहङ्कार छाडि श्रीकृष्णचन्द्र सबनिके मुक्तिके दायक तिन प्रभुकी सरनआयो ॥ २२ ॥

अथ हरिशरण विधि । प्रथम गुरुशरण विधि ।

॥ चौपाई ॥ प्रथमहिंगुरुकीशर्णव्हैंप्रानी । तनमनधन बचन निमृदुबानी ॥ प्रसिधसंप्रदामैंगुरुकरियें । मनकल्पितमतमैंनहिं परियैं ॥२३॥ तापैं ॥ श्लोक ॥ तस्माद्धिसुभगे नित्यं, सम्प्रदायं समाचरेत् ॥ सम्प्रदायविहीना ये, मंत्रास्ते निष्फलामताः॥२४॥ अर्थ–ता कारण तैं हे पारवती नित्यही काहू संप्रदायको आचरण जीव करैं अरु जे सम्प्रदायकैं विहीनहैं तिनके मंत्र निःफल माने हैं ॥२५॥ इति गुरु शरण अंग ॥ अथ हरिसरनअंग ॥ चौपाई॥ पहिलैंव्हैकैंगुरुकीशर्नै। नवधाभक्तिकरैंसुभकर्नै ॥ सोनवधाविधि सुनिमनलाय । सुनतहितनमनहियोसिराय ॥ २६ ॥ तहांपरस प्तमस्कंधे ॥ श्लोक ॥ श्रवणं कीर्तनं विष्णोः, स्मरणं पाद सेवनम् ॥ अर्चनं वंदनं दास्यं, सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ २७ ॥

अर्थ–भगवान के गुननिको श्रवण अरु कीर्तन अरु प्रभुके स्वरूप लीला गुननिको स्मरण अरु चरणारविन्दकी सेवा अरु प्रभुके श्रीविग्रहको अर्चन सुगन्ध पुष्प अलङ्कारादि करिकैं अरु वन्दन कहिये प्रभुकौं साष्टांग प्रणति अरु दम्भ छाडिकैं भगवानको दास्यभाव अरु सख्यकहियैं प्रभुकौं सकलपुरुषार्थ दायक परमहितकारक जानैं यामैं दृढविश्वास अरु आत्मनिवेदन कहिये अपने पुत्र कलित्र द्रव्य देह प्रभुकी सेवाविषैं समर्पण करैं॥२८॥

अथ श्रवण अंग ।

॥ चौपाई ॥ नवधाभक्तिमैंमुख्यश्रवणहैं । श्रवणश्रवणहियभक्तिद्रवणहैं ॥ श्रवणकियैंविनुनरकहाध्यावैं । जैसैंअंधनमारगपावैं ॥ २९ ॥ श्रवनसुनेविनुकछूनजानैं । विनजानेवस्तुनपहिचानैं ॥ यातैंसवमैंमुख्यश्रवनहैं । महात्रिविधितनतापदवनहैं ॥ ३० ॥ अष्टभक्तिहूइहितैंआवत । पुनदसमीहूयातैंपावत ॥ विनाश्रवननर महाअग्यान । सींगपूंछविनपशुहैंजान ॥ ३१ ॥ चौपदभाग्यतैंपासनखावत । प्रगटिग्रामसूकरदरसावत॥ छाडिकथाहरिअमृतजथा । करतहैंदुर्भोजनजगकथा ॥ ३२ ॥ तहांपरतृतियस्कंध ॥ श्लोक ॥ नूनं दैवेन निहता, ये चाच्युतकथासुधाम् ॥ हित्वाशृण्वंत्यसद्गाथाः पुरीषमिव विड्भुजः ॥ ३३ ॥ अर्थ–निश्चयकरि जो पुरुष श्रीकृष्णचन्द्रकी कथारूपी अमृत ताकौं छाडिकैं आन विषय गाथा सुनैं ते पुरुष दैवन्यकीर्त्तनसा जैसैं सूकर विष्टा खाइ ऐसे विष्टा के खानहारहैं ॥ ३तनअंग । कीरतनेदच्छाकियोज

गतप्रकाश । अरु इच्छातैंहैंसबनाश ॥ जिहिंकरिलीलावहुवपुसाज । सोतोकथाहौंनकेकाज ॥ ३५ ॥ इतोकथाहितप्रभुश्रमकीनौं जोनसुनैंसोईमतिहीनौं ॥ कृष्णकथाकौंरुचिसरसात । ज्यौंलंपट सुनिजुवतीबात ॥ ३६ ॥ गदगदपुलकहरषव्हैंआवत । श्रवननि प्यारीकथासुहावत ॥ व्रजमथुराद्वारावतनाथा । नौरसमईसुजाकी गाथा ॥ ३७ ॥ जाकीजिहिंरससौंरुचिहोइ । कृष्णकथाक्यौंसुनैंनजोइ ॥ सुनततृपतिकौंकथाविधान । दसहजारमांगेपृथुकान ॥ ॥ ३८ ॥ तहांपरचतुर्थस्कन्ध ॥ श्लोक ॥ तदप्यहं नाथ न कामयेक्वचिन्नयत्रयुष्मच्चरणांबुजासवः ॥ महत्तमांतर्हृदयान्मुखच्युतो विधत्स्वकर्णायुतमेषमेवरः ॥ ३९ ॥ अर्थ—हेनाथ जहाँ तुह्मारे चरणारविन्द की मकरन्द नहीं सो कामना मैं न मांगूं जो मोकौं वर देतहो तो यह देहु जो सन्तजन तिनके अन्तष्करन हृदय मुखतैं श्रव्यो ऐसो जो तिहारो जस ताके श्रवनकौं दस हजार श्रवन देहु ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ विनाश्रवनअनुरागनहोय। यहनिश्चयजानौंसबकोय ॥ प्रथमहोयश्रवनानिअनुराग । तबबाढतमननैननिलाग ॥ ४१ ॥ बढैंलागजवहींमननैंननि । प्रीतमबात विनाछिनचैंनानि ॥ अपनीकथासंगकरिगौन । करनद्वारआवतहियभौन ॥ ४२ ॥ तहांपरद्वितीयस्कंध ॥ श्लोक ॥ प्रविष्टः कर्णरंध्रेण स्वानांभावसरोरुहम् ॥ धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा शरत् ॥ ४३ ॥ अर्थ—श्रीकृष्णचन्द्रजू अपनें भक्तजनके हृदय कमलविषैं कर्णद्वारकरि श्रवण की मलीनताकौं दूरि करैं॥ ४४ ॥ ॥ चौपाई ॥ स्पर्शनं वंदनं दास्यं, स... । हियतमहरनप्रगटभुवभान ॥

ग्यानवैरागभक्तिकोआगर । लीलाललितकृष्णरससागर ॥ ४५ ॥ जथासमयसोनित्यसुनीजे।श्रवननिकथासुधारसपीजे॥बातसारयह चित्तमैंचुनियैं । नानाअसतशास्त्रनाहिंसुनियैं ॥ ४६ ॥ कृष्णभक्ति दृढताहिनपावैं । असतशास्त्रभ्रमकौंउपजावैं ॥ याहो[illegible] [illegible]ककहूंठ [illegible]गैं ॥ [illegible] हराय । चकाव्यूहभ्रममैंपरिजाय ॥ ४७ ॥ कहाशास्त्र [illegible]रसं पाचार । जोईभागवतकेअनुसार ॥ सोईसुनिसुनिहियेहितइये हरिचरित्रसुनिजनमवितइये ॥ ॥ ४८ ॥ (पैं) एकसमयभागोतसु नीजे । ज्यौंगुरुमंत्रनामनिजलीजे ॥ एकहिअर्धहिसुनियेश्लोक । किधौंपदहिरसश्रवननिओक ॥ ४९ ॥ तहांपरपद्मपुराणे ॥ श्लोक ॥ श्लोकार्द्धं श्लोकपादंवा, श्लोकं भागवतस्यच ॥ शृणुयाद्वैष्ण वो नित्यं, विष्णुप्रीतिकरं परम् ॥ ५० ॥ अर्थ—एकश्लोक आधो श्लोक चोथाई श्लोक भागवत को नित्य सुनैं । भागवत को श्लोक भगवानकौं प्रसन्न करैं हैं ॥ ५१ ॥ चौपाई ॥ जाकेंहो यभागवतकथा । ताकोगृहहैंतीरथजथा ॥ तिनकेमिटतजगतसं ताप । सोनरपावननितानिहपाप॥ ५२ ॥तहांपरपद्मपुराणे ॥श्लोक ॥ कथा भागवतस्यापि, नित्यं भवति यद्गृहे ॥ तद्गृहं तीर्थरूपंहि, वसतां पापनाशनम् ॥ ५३ ॥ अर्थ—श्रीभागवत की जो कथा निति जाके गृहविषैं होय ताको गृह तीरथरूप हैं अरु वसै हैं तिनके पाप नाश होय हैं ॥ ५४ ॥ इति श्रवण अंग ॥

अथ कीर्तन अंग ।

॥ चौपाई ॥ कृष्णकथानित्यकीर्त्तनसाजियैं । कीर्त्तनकरतन कबहूंलजियैं ॥ द्वैवधर्मइककीरतनअंग । कीरतनश्रवनहोतहैंसं

ग ॥५५॥ नाम कीरतनधुनिमुमोहनी । हृदैंमंदरमलकीजुसोहनी ॥ च्यारौंजुग मैंकीरतनसार । कलिमैंप्रगटतभयोअपार॥५६॥ कीरतनमहिमा कहीनजात । अजामेलकीसुनिलैंबात ॥ यहरसनाहैंमुखमैं ...णकीरतनाबिनबेकाम ॥ ५७॥ नामकीरतनअरुभ ...रीकथा । येदोऊहैंएकसमान ॥ पैनामीतैंनामअधिकरे । नामीरा ...नामनिधितरे ॥ ५८॥ नामीगनेंसुजीवउवारे । एकनामअगनितजियतारे॥ नाममहातमपारनलह्यो॥ ब्रह्माहूतैंजातनकह्यो॥५९॥ औरैंसाधनकीर्त्तनपाछैं । ताकीअगनितसासतरसाछैं ॥ यामैंपात्रनदेशनकाल । धनचहियेनकछुजंजाल ॥ ६० ॥ तनछिनभंगआयुगतिछीन॥ यातैंकीरतनकरोप्रवीन॥भोनरजनमकीरतनसाधो कीरतनहोतजहांहींमाधो ॥ ६४ ॥ तहांपरपद्मपुराण ॥ श्लोक ॥ नाहंवसामि वैंकुंठे योगिनां हृदये नच ॥ मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ ६५ ॥ अर्थ—हे नारद मैंबैंकुंठमैं वसौं नहीं॥ अरु न जोगी जनौंके हृदयमैं बसौं जहां मेरे भक्त कीरतन करैंहैं तहां मैं वसत हौं ॥ ६६ ॥ चौपाई॥ जग्यकरत तपकरत कष्टकरि।बहुतवरषहूतैंव्है प्रसन्नहरि॥सोकीयेकीर्तनलघुकाल।रीझतथोरेमांझदयाल॥६७॥तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक॥ कलेर्दोषनिधेराजन् नास्तिह्येकोमहान्गुणः ॥ कीर्तनादेवकृष्णस्य मुक्तबंधःपरंव्रजेत् ॥ ६८॥ अर्थ—यह कलिजुग सकल दोषनिधि हैं तामैं एक गुन सर्वोपर हैं जो भगवानके गुन कीर्तन मात्रहीं करिकैं सब बन्धनतैं छूटिकैं भगवानकौं प्राप्त होय ॥ ६९ ॥ इति कीर्तन अंग ॥

॥ अथ स्मरण अंग ॥

॥ चौपाई ॥ श्रवनकीरतनकरैंजुकोय । ताकोफलहरिसमरन होय ॥ हरिसमरनलाग्योजबहौंन । ताकोहृदयकियोहरिभौंन ७० अपनौंभवनबहुरिकोत्यागै ॥ अतिऊज्जलरापतअनुरागैं ॥ सम्म रनभक्तिपरमहैंनिधि ॥ यातैंअधिकनऔरौंरिधि ॥ ७१ ॥ कीटभृं गभयसमरनकरैं ॥ यातैंकीटभृंगवपुधरैं ॥ मोहनसमरनमोहनमई। ताकीकहाअचिरजगतिभई ॥ ७२ ॥ रोकीगृहजगिपतनीगोपी । सोतजिदेहदिव्यतनओपी ॥ समरनकरिहरिप्रापतिभई । समरन महिमाजातनकही ॥ ७३ ॥ ज्यौं विषईवहुसुमरिविषयनित । वि षयमईव्हैंजावतवेचित ॥ यौंहरिसुमरैहरिसौंप्रीत । यहनिश्चयजि यराषिप्रतीत् ॥ ७४ ॥ तहांपरएकादसस्कंध ॥ श्लोक ॥ विषयान् ध्यायतश्चित्तं विषयेषुविषज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येवप्रवि लीयते ॥ ७५ ॥ अर्थ—जैसैं पुरुप निरंतर विषयनिको ध्यान करैं तो विषयनिहूमैं चित्त आसक्त होय जातहैं ॥ ऐसैं श्रीकृ ष्ण चंद्र कहैंहैं जो मेरो निरंतर समरन करैंहैं ते मेरे विषैं आ षक्तहोतुहैं ॥ ७६ ॥ इतिस्मरणअंग ॥

अथ पदसेवन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ सेवाकरैंजेसासतरकही । देहधरैंकोहैंफलयही ॥ सि लामईमणिमनोमईहैं । धातमईसुभचित्रठईहैं ॥ ७७ ॥ औरस्मृत्ति कालेप्यादार । सेवाकरतव्यअष्टप्रकार ॥ जासौंजिहिंविधिकोवनि आवैं । जथासमयजहांतनमनलावैं ॥ ७८ ॥ तहांपर एकादशस्कं

घ ॥ श्लोक ॥ शैलीदारुमयी लौही, लेप्यालेख्याच शैकती ॥ मनोमयी मणिमयी, प्रतिमाष्टविधाःस्मृताः ॥ ७९ ॥ अर्थ—सिलामई ई काष्टमई धातुमई लेप्यमई अरु चित्रमई मृत्तिकामई मान्त तथा मणिमई यह आठ प्रकारकीप्रतिमा कहिये ॥७९॥ चौपई ॥ व्हैंसामर्थ्याजेतिकदेह । तेतिकटहलकरैंजुतनेह ॥ विविधिटहलकहाकहैंवषान । करैंजथाऔकासप्रमान ॥ ८० ॥ नित्यप्रभूकीसेवाअनुसरैं ॥ लषिलषिरूपनैंनजलभरैं ॥ सेवामैंउपजैं अनुराग ॥ तोतासमनकोऊबडभाग॥८१॥ हरिसेवतअरुसेवतसाध ॥ ताकीमहिमाभाग्यअगाध ॥ लग्योकोऊजोसेवामांहीं । प्रीतिभावभक्तनसोंनांहीं ॥ यौंवभागवतटेरसुनावत । सोवहप्राकृतभक्त कहावत ॥ ८२ ॥ तहांपरश्रीमद्भागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे जनकप्रतिनवजोगेश्वरवाक्य ॥ श्लोक ॥ अर्चायामेवहरये पूजां यःश्रद्धयेहते । नतद्भक्तेषुचान्येषु सभक्तःप्राकृतःस्मृतः ॥ ८२ ॥ अर्थ—प्रतिमा विषैं तो पूजाकरैं श्रद्धाकरि हरिकी अरुताहरिकेभक्तनविषैंश्रद्धापूर्वकपूजाकरैंनहीं सो प्राकृत भक्तकहिये॥८३॥पुनः पद्मपुराणे॥श्लोक॥ आराधनानांसर्वेषां विष्णोराराधनंपरम्॥ तस्मात्परतरंदेवि तदीयानां समर्चनं ॥ ८४ ॥ अर्थ—सब देवतानके आराधन तैं विष्णुको आराधनश्रेष्टहैं ताहूतैं उनके भक्तनिको आराधन सेवन बिसेषहैं ॥ ८५ ॥ चोपाई ॥ पुनिश्रीमाधोकह्यो सुनाय । सोवसुनौंश्रवनानिचितलाय ॥ जद्यपिमेरोभक्तकहावत ॥ मुहिसेवतनिसद्यौसबिहावत ॥ ८६ ॥ तदपिनहींभक्तनिकोभक्त ॥ ताकीभक्तिबृथामाधिजक्त ॥ मैंनगनूंतांहिंभक्तिनिवास ॥ जोनहिं

मोदासनकोदास ॥ ८७ ॥ केवलमेरेसोनाहिंमेरे । मेरेजोमोजन केचेरे ॥ यहकह्योअर्जुनसौंभगवान । प्रगटसाषिमध्यआदिपुरान ॥ ८८ ॥ तहांपरआदिपुराणे ॥ श्लोक ॥ येमेभक्ताजनाः पार्थ नमेभक्ताःश्चतेजनाः ॥ मद्भक्तानांचयेभक्ता ममभक्तास्तुते नराः ॥ ८९ ॥ अर्थ--हे अर्जुन जे जन मेरे भक्तहैं तिनकौंमैं अपने भक्त न गनौं मेरे भक्तनके जे भक्तहैं ते जन मेरे भक्त हैं ॥९०॥ चौपाई ॥ प्रभुकह्योअपनौंभक्तप्रभाव। यातैंदोऊसेवोजुतभाव ॥ जिहिंनरहरिकीसेवागही । मुक्तिसमीपइहींतनलही ॥ ९१ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ इत्यच्युतांघ्रिंभजतोनुवृत्त्या भक्तिर्विरक्तिर्भगवत्प्रबोधः ॥ भवंतिवैभागवतस्यराजं स्ततःपरां शांतिमुपैतिसाक्षात् ॥ ९२ ॥ अर्थ--जब निरंतर भगवानके चर्नारविंद की सेवाकरैं तब याकौं श्रीकृष्णचन्द्रके स्वरूपमैं राति और सवपदार्थनि विषैं वैराग्य अरु भगवत स्वरूपको अनुभव होय तबही साक्षात् परम शांतिकौं प्राप्तिहोइ ॥ १०० ॥ इति पदसेवनअंग ॥

अथ अर्चनअंग ॥

चौपाई ॥ जथासक्तिहरिअर्चाकीजैं । धनतैंतनहिंसफलकरिलीजैं । सींचैंविटपमूलज्यौंकोय । साषापत्रहरितसवहोय ॥१॥ (जो) मूलटारिपल्लवजलदीनौं । निर्फलजायसकलश्रमकीनौं ॥ हरिकी मायाहरिपैंधरनी । अपनीनाहिंसुअपनीकरनी ॥ २ ॥ तहांपरषष्ठ स्कंध ॥ श्लोक ॥ यथाहिस्कंधशाखानां तरोर्मूलावसेचनं ॥ एव

माराधनंविष्णोः सर्वेषामात्मनश्चहि ॥ ३॥ अर्थ--जैसें वृक्षके मूल के सींचेतैं सबही स्कंध अरु डार पत्रादिकनिकी तृप्ति होतुहै ऐसैं श्रीकृष्णचंद्रके आराधनतैं सर्व देवतानकी अरु अपनीहू तृप्तिहोतुहैं ॥ ४ ॥ इति अर्चनअंग ॥

अथ बंदनअंग ॥

॥ चौपाई ॥ प्रभुपदकमलनिजोसिरनावत । ताहिस्यामआपुनअपनावत ॥ देतभक्तिअपनायप्यारतैं । नमतसीसतवभक्तिभारतैं ॥ यहनिश्चयमेरैंजियआई । सीसनमैंनाहिंविनगरवाई॥ अच्युतगोत्रीद्विजगुरदरसैं । भगवतरूपजांनिजियसरसैं ॥ ६ ॥ पहिलप्रनामकरैंसिरनाय। समयपायसिरपरसैंपाय ॥ फलतअंबकीझंव झुकौंहीं । डारिबंबूरअकासउठौंहीं ॥ ७॥ इहिंजगमांझनमैंगोजोइ । पदवीऊंचलहैंगोसोई ॥ जितोजंत्रनलनीचोहोई । ततोऊंचोपहुंचैतोई ॥८॥ नरसुरअसुरदोषजिहिंकीनौं । बंदनकियैंक्षमाकरिदीनौं ॥ यांतैंनितनिश्चयाजियधरिये । वंदनप्रियसौंबंदनकरिये ॥ ॥९॥बंदननित्यलाभकिनलूटैं । बंदनतैंबंधनसबछूटैं॥ बंदनवंदनदसअश्वमेद । कहतपुरानमहातमभेद ॥१०॥ तहांपरस्कंधपुराण॥ ॥ श्लोक ॥ एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामो दशाश्वमेधावभृथैर्नतुल्यः॥ दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्म कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय॥११॥ ॥अर्थ–जो श्रीकृष्णचंद्रकौं एकही वंदन करैं तो ताके दस अश्वमेध यज्ञांत स्नानहू तुल्यनहीं क्यौं कि यह अधिकता जो दस अश्वमेध कियेतैं वहुर जन्मकौ धरैं अरु श्रीकृष्णचद्रकौं

प्रणामकिये तैं वहुरिजन्मकौं प्राप्त न होय॥११२॥ इति वंदनअंग॥

अथ दास्यअंग ॥

॥ चौपाई ॥ दासहोयकैंदासकहावैं । दासरूपनिजअंगबनावैं ॥ मुद्रातिलकसुतुलसीमाल । रहैंबेसमंडितसबकाल ॥११२॥ राखैंअंगपवित्रसंवार । सेवतस्वामीनिकटविहार ॥ ज्यौंवपतिवतीवधूदेपिपथ । काजरतिलकतंवोलपोतिनथ॥११४॥ वीभछरहैंरुरूपभयंकर। पदवीदासनसोहततापर॥(ज्यौं)भौंडीदीसतपतिविनजाया। रूपअमंगलसूंनीकाया ॥ ११५॥ इष्टनजानपरैंविनछाप । कोलहैंवेस्यासुतकोवाप ॥ बिनवानैंनहिंमानैंकोय । महावीरवानैंतहैं सोय ॥ ११६ ॥ सवजानैंजवव्हैंसहदान । ज्योंवछापतैंपत्रप्रमान ॥ कृष्णचरनअंकितजवठयो । गरुडतैंकालीनिर्भयभयो ॥११७॥ ऊंचनीचअधिकारीसवही दासरूपवडभागीतवही ॥ तुलसीगोपीचंदनकाय । इनकीमहिमाकहीनजाय ॥ ११८ ॥ तहांपरस्कंदपुराणे ॥ श्लोक ॥ तुलसीकाष्टजांमालां कंठस्थांवहतेतुयः ॥ अप्यशौचोप्यनाचारो मामेवैतिनसंशयः ॥ ११९ ॥ अर्थ--जोतुलसीमालाकौं कंठविषैं धारैं सो अपवित्रहोय आचाररहित होय तोहू मोकौं प्राप्तहोय यामैंसंशयनहीं ॥ १२० ॥ तहांपरस्कंदपुराणे ॥ श्लोक ॥ यस्यांतकालेस्त्युतगोपिचंदनं बाव्होर्ल्ललाटे हृदिमस्तकेच ॥ प्रयातिलोकं सरमापतेर्मम गोबालघाती यदिब्रह्महास्यात् ॥ १२१ ॥ अर्थ--गोपीचंदन जाके बाहु ललाट हृदय मस्तक विषैं होय सो जन गो बालघाती ब्रह्मघाती होय तोभी र-

माकोजुपतिमैं ताके लोककौं प्राप्ति होय ॥ १२२ ॥ चौपाई ॥ तुल सीचंदनमहिमामहा । लघुमतिवरनसकौंहौंकहा ॥ ताकेतिलकललि तहरिमंदिर । लिष्योभालजनौंगोपपुरंदर ॥ १२३ ॥ सोवैभवझिल कतमनौंबाहिर ज्यौंवमिहींपटमांझजंवाहिर ॥ नरधारोधारोकिन नारी । तिलकदामनितमंगलकारी ॥ १२४ ॥ कौंनकरैंजगयाकौं दूषन । परममनोहरनैननिभूषन ॥ रूपानंदचाहभईजियकैं । मं गलतिलकरामरच्योसियकैं ॥१२५॥ तहांपररामचरित्र ॥ श्लोक ॥ सनिर्वृष्यांगुलिंरामो गिरिधातौमनःशिले ॥ चकारतिलकंपत्न्या ललाटे रुचिरं तदा ॥ १२६ ॥ अर्थ–श्रीराम चंद्रजू चित्रकूट पर्व तविषैं धातजो मनःशिल तामैं अंगुरिनतैं पत्नी श्रीज्यानकीजू ता के लिलाटविषैं सुंदर तिलक बनावत भये॥१२७॥इतिदास्यस्वरूप॥

अथ दासक्रिया ॥

॥ चौपाई ॥ हरिउच्छिष्टभोगीव्हैंरहैं । बिनउछिष्टकछुवस्तु नलहैं ॥ सब्दपरसपररूपसुवास । प्रभुसमंधभोगैंसोदास ॥१२८॥ यौंभोगभुक्तिमैंहोयनबाधा । व्हैंसबासिद्धिसहजसुषसाधा ॥ बिनप्र सादभोगीजेदुषी । हरिकेदासरहैंनितसुषी ॥ १२९ ॥ तहांपरएका दशस्कंध ॥ श्लोक ॥ त्वयोपभुक्तस्रग्गंध वासोलंकारचर्चिताः ॥ उछिष्टभोजिनोदासा स्तवमायांजयेमहि ॥ १३० ॥ अर्थ–तुम्हारी उतीरण भोगीजो माला सुगंध वसन भूषण इनकारि सोभित ऐसे उछिष्ट भोगी जो हम दास सो तुह्मारी माया कौं जीतैं इति दास्य अंग ॥

अथ सख्यअंग ॥

॥ चौपाई ॥ वेईश्वरयहजीवजदपिहैं। मित्रत्वनातोकरनौंतदपिहैं ॥ मित्रभावतैंप्रीतविसेषो । लौकिकदेपिअलौकिकदेषो ॥ १३ ॥ प्रीतिकहांऐस्वर्जजहांहैं । प्रीतिरीतिव्रजभूमितहांहैं ॥ हैंसष्यतुगोपीगोपनके । प्रीतिपारनहिंउनकेमनके ॥ १३३ ॥ हरिजलमीन सकलव्रजबासी । सहजसपाश्रीकृष्णउपासी ॥ अचिरजमतिभइविश्वसृजनकी । सष्यतुभक्तिदेषिव्रजजनकी ॥ १३४ ॥ तहांपर वत्सहरणसमयकोब्रह्मवाक्य ॥ श्लोक ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसां ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनं ॥१३५॥ अर्थ–श्रीनंदगोपजूकोजु व्रज ताकेजुव्रजवासी तिनको जु भाग्य सो आश्चर्य उपजावतहैं जीनके परमानंद रूप परिपूर्ण ब्रह्मकहिये सर्व कलाजुत सनातन कहिये नित्य ऐसेजु श्रीकृष्णचंद्रजू जिनके मित्र कहिये सखाहैं ॥ १३६ ॥ चौपाई ॥ नित्यप्रतिसष्यत्वभक्तिरूपधर । सेवतवृंदाविपुनभूमिवर ॥ नितिनवजोबनभक्तिअंगेटा । ग्यानवैराग्यवृद्धसंगबेटा ॥ १३७ ॥ सष्यतुभक्तिसदातनतरुनी । रसिकस्यामकीहैंमनहरनी ॥ नवलभक्तिबिचनववृंदावन । नृत्यकरतरसमत्तमहामन ॥१३८॥ तहांपरपद्मपुराण ॥ श्लोक ॥ वृंदावनंपुनःप्राप्यनवीनांगासुरूपिणी जाताहंयुवतीसम्यक् प्रेष्ठरूपातु सांप्रतं ॥ १३९ ॥ पुनः नारदवचन भक्तिप्रति ॥ श्लोक ॥ वृंदावनस्यसंयोगात् पुनस्त्वंतरुणीनवा॥धन्यंवृंदावनंतेन भक्तिर्नृत्यातियत्रच ॥ १४० ॥ अर्थ–वृंदाबनकौं बहुरिमैं प्राप्त होय नवीन

रूपा जुवती भलैंप्रकार प्रिय रूपभई॥१४१॥नारद वचन॥वृंदावन केसंजोगतैं बहुरितैं तरुणी नौतनभई वृंदावन धन्यहै ताकरि जहां भक्तिनृत्यकरैं हैं ॥१४२॥ चौपाई ॥ हरिअष्टभक्तिसेवतअभिराम। सष्यभक्तिकौंसेवतस्याम ॥ ब्रह्मादिकजाकीपदरजध्यावैं । सीस छुवनकौंसोउनपावैं ॥ १४३ ॥ जोप्रभुसष्यतैंभक्तिरिझाये । कांधे अपनेग्वारचढाये ॥ हारेआपुनजीतेग्वाल । महिमासष्यतुभक्तिविसाल ॥ १४४ ॥ तहांपरदशमस्कंध ॥ श्लोक ॥ उवाहकृष्णोभगवान् श्रीदामानंपराजितः ॥ वृषभंभद्रसेनस्तु प्रलंबोरोहिणी सुतं ॥१४५॥ अर्थ–श्रीकृष्ण आप क्रीडामैं हारे तब सषाश्रीदामाकौं अपने कांधे राषतभये भद्रसेन बृषभकौं कांधैं धारत भयो अरु प्रलंबासुर रोहिणीसुत बलदेवजी ताकौं धारत भयो ॥ १४६ ॥ इति सष्य अंग ॥

अथ आत्म निवेदन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ तनमनधनकुटंबजुतनेह । कृष्णनिवेदनगृहकरिदेह ॥ हरिवैभवकोरक्षकरहैं । वस्तुनकोऊअपनीकहैं ॥ १४७ ॥ अपनौंअवस्यकाजकछुआवैं ॥ करिप्रार्थनाद्रव्यलगावैं । अधिक आडंवरनांहिनकरैं । जथाकाजसुलपहिअनुसरैं ॥ १४८ ॥ कृष्णोत्सवजन्मादिकआवैं । ह्वैउदारअतिद्रव्यलगावैं ॥ रक्षाकरैनकछूतवतनधन । हरिउत्सवआनंदमत्तमन ॥ १४९ ॥ कृष्णासमंधकरैं गृहकाज । कृष्णासमंधीसवसुपसाज ॥ निजमंगलहूकरैंअमंधी। मंगलगावैंकृष्णासमंधी ॥ १५० ॥ कहाकहींनहिंरहैंजक्तकी । सहजरी

तिपरिजायभक्तकी ॥ सर्वकालयौंकरैंबितीत । आत्मनिवेदीकीय हरीत ॥ १५१ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ एवंधर्मैर्मनुष्याणा मुद्धवात्मनिवेदिनां मयिसंजायतेभक्तिः कोन्योर्थोस्यावशिष्यते ॥ १५२ ॥ अर्थ—याभांति इनधर्मनि करिकैं जेमेरे विषैं आत्म निवेदन करैं हैं तिनकी मेरैं विषैं भक्ति होतुहै तब याकौं और कोनसो अर्थ बाकीरहैं सबही पूर्ण हैं ॥ १५३ ॥ छप्पय ॥ हरिपवित्रजसमधुरसुधारसश्रवनसुनीजे । लीलाललितवतारनाम नित्यकीर्तनकीजे ॥ समरनकरिपदसेवमिटैंभवभवकीवेदन । अरचनवंदनदास्यसष्यरसआत्मनिवेदन । इहिंभांतिभक्तिनवधाकरत उपजैंदसवोंप्रेमहैं। नागरीदाससतसंगतैंयेनिवहतसबछेमहैं॥१५४॥ इतिश्री ग्रंथभक्तिमगदीपकामैं नवधाभक्ति निरूपणं प्रथमप्रकरणं

अथ सत संग प्रकार प्रथम महातम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ नौधाकहोनिबहैंकिहिंभांत । जुतअहलादनित्यसरसात ॥ सबमैंमुष्यएकसतसंग । भक्तिकोयासौंनिबहतरंग ॥ १ ॥ परमभक्तियाहीतैंपावैं । अरुनिवाहयातैंबनिआवैं ॥ मिलैंकृष्णन्हैं प्रेमनिदान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २ ॥ सर्वपृथीपरदछिनाकरैं । उत्तरजायहिमालयगरैं ॥ दसौंद्वारव्हैंकाढैंप्राण । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३ ॥ सांष्यजोगध्रमबेदअध्यैंन । तपअरुत्यागकरैंतजिचैंन ॥ अग्निहोत्रबापीकूपदान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ४ ॥ व्रतजिग्यरहस्यमंत्रजेसबही । येहारिवसकारिहैंनहिंकबही ॥ नेमजापबहुतीरथस्नान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान

॥ ५ ॥ औरतैंकहीनाहिहैंहियकी । कृष्णकहीउद्धवप्रीतिजियकी ॥ वसीकरनमोहिओरनजान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ६ ॥ जीवअविद्यायासौंछूटैं । जगतदेहकेनातेतूटैं ॥ अरुकुसंगछूटतहै आन । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ७ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ ॥ श्लोक ॥ नरोधयतिमांयोगो नसांख्यंधर्मएवच ॥ नस्वाध्याय स्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तंनदक्षिणा ॥ ८ ॥ अर्थ—मोकौं जोग सांख्य-धर्म वेदअध्ययन तप त्याग अग्निहोत्रादिक वापी कूपादिक दान वस न करैं हैं ॥ ९ ॥ पुनः श्लोक ॥ व्रतानियज्ञछंदांसि तीर्थानि नियमा यमाः ॥ यथावरुंधेसत्संगः सर्वसंगापहोहिमां ॥ १० ॥ अर्थ—व्रत जग्य रहस्य मंत्र तीरथ नेम यम ये भी वस न करैं जैसैं सब संगकौं दूर करनहार सतसंग मोकौं वस करैं हैं ॥ ११ ॥ ॥ चौपाई ॥ संगमहातमकहांलगभनियें । यातैंतरेनकीगतिगनियें ॥ गायोसुन्यौंसुबेदपुरान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १२ ॥ देवगंधर्वसिद्धअरुचारन । गुह्यकविद्याधरअरुवारन ॥ राक्षसदैत्य तूतरेंनिदान ॥ नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १३ ॥ स्वर्गअपसरा मानुषनाग । जिंहिसतसंगकियोवडभाग ॥ तिनकौंआवतनाहिंप्र मान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १४ ॥ पगमृगवेस्यासूद्ररु नारी । अंत्यजरजतमकेअधिकारी ॥ बहुतैंतरेपापकीषान । न हिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १५ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ सत्संगेनाहिदैतेया यातुधानाः खगामृगाः ॥ गंधर्वाप्सरसोनागाः सिद्धा श्चारण गुह्यकाः ॥ १६ ॥ अर्थ—सत्संगकरि दैत्य राक्षस पग मृग गंधर्व अपसरा नाग सिद्ध चारण गुह्यक ये बहुत मेरे पदकौं

प्राप्त होतभये ॥ १७ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ विद्याधरामनुष्येषु
वैश्याः शुद्रास्त्रियोंत्यजाः रजस्तमःप्रकृतयस्तास्मिन्तस्मिन्युगेयुगे
॥ १८ ॥ अर्थ–विद्याधर मनुष्य वैश्य सूद्रस्त्री अंत्यज अरु औरु
हू रजोगुनी तमोगुनी तिनके स्वभावसो सत्संग करि मेरे पदकौं
प्राप्ति होतभये जुग जुग विषैं ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ हरिप्रापति
केऔरनधर्म । हैंसबमहाकष्टकेकर्म ॥ संतनकोढिगसुपकीपान ।
नहिंनहिंकछुसत्संगसमान ॥ २० ॥ सतसंगतिसुपजाकौंलग्यो ।
ताकैंचितऔरनसुपपग्यो ॥ तनकसुहावतनहिंसुपआन । नहिंनहिं
कछुसतसंगसमान ॥ २१ ॥ उद्धवव्रजकौंस्यामपठाये । एकहि
पहररहनकौंआये ॥ वीतिगयेषटमासनिदान । नहिंनहिंकछुसत
संगसमान ॥ २२ ॥ ऊद्धवगोपिनकैसतसंग । करीस्यामकी
आज्ञाभंग ॥ विनकहेरहेपटमाससुजान । नहिंनहिंकछुसतसंगस
मान ॥ २३ ॥ उद्धवगोपिनकैंहितवोल । वढीकथारससिंधुकलो
ल ॥ मत्तकथाप्रेमासवपान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २४ ॥
स्वर्गवैकुंठकोसुखदनिवास । सर्वभूमिकेराजविलास ॥ केतिककहूं
आनंदविधान।नहिंनहिं कछुसतसंगसमान॥१२५॥तहांपर प्रथमस्कं
घ॥श्लोक॥तुलयामलवेनापिनस्वर्गंचापुनर्भवं। भगवत्संगिसंगस्य
मर्त्यानांकिमुताशिषः ॥ २६ ॥ अर्थ–भगवतसंगी जो विष्णुभक्त
तिनके संगको जो लव ताकरि स्वर्ग मुक्तिकौं सम न देषूं तो मानु-
षौंकी तुछ कामना राज्यादिक करि कहा ॥ २७ ॥ चौपाई ॥
उद्धवचितसतसंगलुभायो । हरिढिगपरचोनभायोआयो ॥ हरितैं
अधिकप्रेमवतरान नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २८ ॥ प्रभूमि

लैहूंमांगतदास। सतसंगतदीजेसुपरास॥ हरिहूतैंगरवोयहदान। नहिंनाहिंकछुसतसंगसमान॥ २९॥ तहांपरचतुर्थस्कंध॥श्लोक॥ यावत्तेमाययास्पृष्टा भ्रमामइहकर्म्मभिः। तावद्भवत्प्रसंगानां संगः स्यान्नोभवेभवे॥ ३०॥ अर्थ-जहांलौं तुह्मारी मायाके स्पर्श करिकैं अरु कर्मन करि इहां हम भ्रमैं तहांलौं तुम्हारे संगीजु संत-जन तिनको सतसंग जन्मजन्मविषैं हमकौं होहु॥ ३१॥ ॥ चौपाई॥ कहांलगिकहैंनरसंगमहातम। आयुछीनमतिमंददुरातम॥ जिहिंसुपभिय्योसुजानतप्रान। नहिंनहिंकछुसतसंगसमान॥ ३२॥ जाकैंनहिंसतसंगतिचाह। ताकैंउरनमिटैंदुपदाह॥ वृथाउपायकरतहैंआन। नहिंनहिंकछुसतसंगसमान॥ ३३॥ साधोरेसतसंगतिसाधो। सतसंगतिकरिहरिआराधो॥ सर्वोपरस तसंगपहिचान। नहिंनहिंकछुसतसंगसमान॥३४॥ पहिलैंतनति लमनहोतेल। फूलसंगभयोनामफुलेल॥ हरिहितसंगसुवासतप्रान। नहिंनहिंकछुसतसंगसमान॥३५॥ आगहोतसवआगिकेसंग। लोहपरसपारसकोअंग॥ व्हैकंचनरहैंरंचनआन। नहिंनाहिंकछुसतसंगसमान॥३६॥ सर्वोपरियहजानिकैंलीजें। महापुरसकीसंगतिकीजें॥ जगकहैंकरामातकीपान। महापुरुसतिनकौंमतिजान॥३७॥

अथ अष्टसिद्धिधारकसिद्धअंग॥

॥ चौपाई॥ जैसैंनाटकचेटकसपनौं। भलोकरतनांहिंवेअपनौं॥ तिनपरकृष्णकृपाकीरिद्धि। अष्टसिद्धिमानतनहिंसिद्धि॥ ३८॥ सिद्धिप्रतिष्ठाकोब्यौहार। यासौंरीझतनाहिंमुरार॥ हरिपदविमुप

करनकीमाया । इनकौतकनरमूढभुलाया॥ १३९॥ भक्तिजोगकौं जेनिरदरैं । अंतरायतिनकौंयेकरैं ॥ १४० ॥ तहांपरएकादश स्कंध ॥ श्लोक ॥ अंतरायान्वदंत्येता युंजतोजोगमुत्तमं ॥ मयि संपद्यमानस्य कालक्षपणाहेतवः ॥ ४१ ॥ अर्थ—जो मोकारि जुक्त उत्तम जोगकौं करैं ताकौं कालक्षपण हेतु ऐसीजु येसब सिद्धि अंतराय करता कहैं है ॥४२॥इति अष्ट सिद्धि धारक सिद्ध अंग ॥

अथ महापुरुषसाधुअंग ॥

॥ चौपाई ॥ भक्तनिकोकारियेसतसंग । प्रभुपदप्रीतबढावतरंग ॥ तीनभांतिकेभक्तहैश्रेष्ट । उत्तममध्यमऔरकनेष्ट ॥ ४३ ॥ उत्तमतैंनहिंव्हैंपरमारथ । उनअपनौंकरिलीनौंस्वारथ ॥ काजन व्हैंज्यौंरसरीजरी । तनआकृतहीरहिगईधरी ॥ ४४ ॥ मध्यमकै सबचारबिचार । भलोबुरोजानतव्यौहार ॥ दिक्षाशिक्षादेतदयाकारि । भवनिधितारतपरममयाकरि ॥ ४५ ॥ तहांपरश्रीमद्भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे उद्धवप्रति श्रीकृष्णचंद्रवाक्यं ॥श्लोक॥ ईश्वरेतदधीनेषु बालिशेषुद्विषत्सुच ॥ प्रेममैत्री कृपोपेक्षा यःकरोतिसमध्यमः ॥ ४६ ॥ अर्थ—ईश्वर विषैंतो प्रेम अरु ताके सेवकनि विषैं मित्रता अरु अग्यानी जनौंविषैं कृपा अरु शत्रुनि विषैं त्याग सो मध्यस्थ भक्त कहिये ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ तिनकोसतसंगकरोविचछन । जिनमैंप्रगटतपुनयेलछन ॥ अतिकृपाल अद्रोहसुग्यांनीं । देतमानपरआपअमानी ॥ ४८ ॥ रहितकामनाइंद्रीजीत । हरिपदकमलनिप्रीतप्रतीत ॥ कोमलउपकारीरुपवित्र ।

नित्यउचरतप्रभुचारुचरित्र ॥ ४९ ॥ निरमत्सरनिहकामानिकंच न । सांतरुसुहृदईरषारंचन ॥ निर्व्यलीकअरुसहनसीलअति । सुषदुषएकसमानधीरमति ॥ ५० ॥ मितभाषीमितभोजनकर्न । षटगुणजितकेवलहरिसर्न ॥ निर्विकारनिरउद्यमरहैं । निस्पृहकटुकबचननहिंकहैं ॥ ५१ ॥ सावधानसतवलकरुणाकर । धर्मसुथिरसामर्थबुद्धिवर ॥ नम्रनिरालससबसौंमित्र । सुधावचनउपदेस विचित्र॥५२॥इकइकगुनकेवहुतप्रकार । तिनकौंवरनतव्हैंविस्तार ॥ जेसंछेपपुराननिलहे । तेसाधूकेलक्षनकहे ॥५३॥ तहां पर एकादश स्कंध ॥ श्लोक ॥ कृपालुरकृतद्रोहस्तितिक्षुःसर्वदेहिनां ॥ सत्यसारोनवद्यात्मा समःसर्वोपकारकः ॥५४॥ अर्थ–कृपाल द्रोह रहित सहनसील सत्य बल ईरषा रहित सुष दुष जाकै सम उपकारी॥५५॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ कामैरहतधीर्दांतो मृदुः शुचिरकिंचनः॥अनीहो मितभुक्शांतः स्थिरोमच्छरणोमुनि॥५६॥अर्थ–कामना रहित इंद्री कोमल पवित्र निकंचन ईहा रहित लघुअहार सांतअंतः करण स्व-धर्म विषैं सथिर मेरी सरण मनसील॥५७॥ पुनः ॥श्लोक॥ अप्रमत्तोगभीरात्मा धृतिमान्जितषड्गुणः॥ अमानीमानदः कल्योमैत्रः कारुणिकःकविः ॥५८॥ अर्थ–सावधान निर्विकार धीर्जवांन षट गुणजित मानरहित मानदाता ग्यानदेवेमै प्रवीण सबसौं मित्र करुणापान ग्यानी ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ इनमैंकेलछनव्हैंसाधनमैं । कृष्णमाधुरीजिनकेमनमैं ॥ कछुअपलक्षनहूंजोहोई । ताकोऔगुनगनैंनकोई ॥ ६० ॥ गुनतजिनहिंऔगुनकौंलीजें । हृदयचालनीसोक्यौंकीजैं ॥ वसतसुधाउरअमलउजास । सदासिंधुकैं

सीसनिवास ॥ ६१ ॥ पोषकअनीअवनिवनराई । सीतलसुंदरहैं सुखदाई ॥ जदपिहैंवहसहितकलंक । तदपिनघटिअधिकारमयंक ॥ ६२ ॥ तहांनृसिंहपुराण ॥ श्लोक ॥ भगवतिचहरावनन्यचेता भृशमलिनोपिविराजतेमनुष्यः ॥ नहिशशकलुषछबिः कदाचित् तिमिरपराभवतामुपैतिचंद्रः ॥ ६३ ॥ अर्थ–जाको चित्त निरंतर हरिमै लग्योहै तामनुष्यमैं जो कछु पाप दोषहू होयतो वाकी सोभा मिटैं नहीं जैसैं चंद्रमा कलंकसों मलिन हैं तोहू अधिकार सों हारैं नहींतैसैं वैष्णवनको पाप होय तोहू दबायसकै नहीं ॥ ६४ ॥ इति साधु अंग ॥

अथ साधु प्रगटन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ इनलछिनकेकलिमैंसाध । थोरेनांहिंहैंहैंजुअगाध ॥ दीसतनाहिंअभिमानदृष्टिसौं । महारजोगुनबुद्धिभ्रष्टसौं ॥ ६५ ॥ दृष्टांत ॥ धूरिसर्करामिलैजुतबहीं । गजपैन्यारीहोयनकबहीं ॥ चैंटीसमलघुताईमानैं । साधुसर्कराजबपहिचानैं ॥ ६६ ॥ सतयुगत्रेताद्वापुरमहीं । ऐसेसाधुबहुतहैंनहीं ॥ अबकलिमैंकलिदोषहरतहैं । गंगादिकनिपुनीतकरतहैं ॥ ६७ ॥ गंगाभागीरथसौंकह्यो । सोमैंमध्यसासतरलह्यो ॥ याकारनभुवलोकनऐहैं । कलमपकलिकेजीवलगैहैं ॥ ६८ ॥ भागीरथवाक्य ॥ परमसंतजलपरसकरैंगे । वेसबकलमषदोषहरैंगे ॥ यातैंजबलगसाधअभंगा । तबलगप्रगटपह्रुमिश्रीगंगा ॥ तहांपरनवमस्कंध ॥ श्लोक ॥ किंवाहंनभुवंयास्ये नरामय्यामृजंत्यघम् ॥ मृजामितदघंकुत्र

राजनतत्रविचिंत्यतां ॥ ७० ॥ अर्थ–हे राजन् मैं वहोर पृथ्वीमैं न जाऊंगी काहेतैं जो उहां नर मोविषैं पाप प्रक्षालन करैंगे सो वा पापकौंमैं कैसैं दूरि करौंगी सो ताको उपाय चिंतवन करो ॥७१॥ तहांगंगाप्रतिभागीरथवचनं ॥ श्लोक ॥ साधवोन्यासिनः शांताब्रह्मिष्ठालोकपावनाः॥ हरंत्यघंतेंगसंगात्तेष्वास्तेह्यघाभिद्धरिः ॥ ७२ ॥ अर्थ–साधुजन अपने अंगसंगतैं तिहारे पाप हरैंगे अरु ते वे साधुकैसे है त्यागीहै अरु शुद्ध अंतस्करणाहै अरु ब्रह्मके जानन हार है अरु लोकको पवित्र करण हार हैं अरु तिनके विषैं पापनके हरण हार हरि बिराजैं हैं ॥ ७३ ॥ ॥ चौपाई ॥ सतत्रेताद्वापुरकेलोग । यहचितचाहतहैसंजोग ॥ जोहमकोंप्रभुबेगउधारो । कलिमैंदीजेजन्महमारो ॥ ७४ ॥ कलिबहुभक्तिलोगसरसैंहैं । नारायनपारायनव्हैंहैं ॥ यापरबचनपुरानसुनीजैं । आरषसाषिमानिकैलीजैं ॥ ७५ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ कृतादिषुप्रजाराजन् कलाविछंतिसंभवं॥ कलौखलुभविष्यंति नारायणपरायणाः ॥ ७६ ॥ अर्थ–हे राजन् सतजुगादिक विषैं जो प्रजा हैं जो कलिजुग विषैं जन्म चाहत हैं निश्चय करि कलिजुग विषैं घनें नारायण परायण होहिंगे॥७७॥ ॥ चौपाई ॥ कलिमेंपरमभक्तहैमहा । बिनजग्यासीपावैंकहा ॥ मथुराद्विजगनजग्यलुभाये । श्रीभगवाननिकटतहांआये ॥ ७८ ॥ तिनपहिचानेनहिंभगवान । तोसकैंकौनभक्तनिपाहिचान ॥ ज्यौं उलूककोंभाननसूझत । त्योंप्रभुभक्तहिंविमुषनवूझत॥७९॥ घटतीनाहिंकालिमैंसंतनकी । हैंघटतीअपनैंहीमनकी ॥ सतसंगाकियेसाधप

हिचानैं। धन्यसोईसतसंगतिठानैं॥ ८०॥ इति साधुप्रगटनअंग॥

अथ सारासार॥

॥ छप्पय ॥ वेदसारसत्रहपुरानद्भुतदहतआगवत। नवदुगनौं तिनमांझसारकोसारभागवत॥ ताकोअवसुनिसारफंदसंसयमनसु रझैं। नवधानिवहैंनेमप्रेमदसवौंउरउरझैं॥ हैंसर्वसारसुषसारयह जातैंपावतवेगहरि। नागरिदासदासानिकोसर्वोपरसतसंगकरि॥ ॥ ८१॥ इति श्रीग्रन्थभक्तिमगप्रदीपिकामें सतसंगनिरूपणं द्वि तीयप्रकरणं॥ २॥

अथ प्रेमप्रकार॥

॥ चौपाई॥ नवधावयधीसतसंगतिकल। भावभक्तिउपजत तिनकोफल॥ भावभक्तितैंप्रेमहिआवैं। आरषपउरपदोऊगावैं॥ ॥ १॥ सोप्रेमहिकहिहौंपश्चात। पहिलैंभावकहौंविष्यात॥ २॥

अथ भाव भक्ति लछन॥

कथाकीरतनचितसुषपगैं। जगसुषवातैंफीकीलगैं॥ ३॥ क थासुननजिततितउठिधावैं। ज्यौंअलिकुसमगंधपरआवैं॥ कबहू कालजायजोबाद। तबउपजैचितपरमाविषाद॥ ४॥ पूरनभक्ति महातमभासैं। हरिगुनलीलारूपप्रकासैं॥ हृदयभूमिकोमलव्हैजा य। रीझवेलितामैंसरसाय॥ ५॥ नाहिंरिझयोजिनबातनमूर। तिनहीपैंरीझहौंनलग्योचूर॥ नीकीवस्तुजोईजबभावत। तबहीतहां स्यामसुधिआवत॥ ६॥ ब्रजबृन्दावनसोंरुचिहोय। दरसनवास आसहियभोय॥ हरिकेभक्तलगैंजियप्यारे। कियेनभावतक

न्यारे ॥ ७ ॥ ओगुनातिनकेदृष्टिनआवत । गुनहींदृष्टिपरतगुनगावत ॥ भक्तहिंप्रेमभयोलपियापरि । घनिघनिकहतरींझकैंतापरि ॥ ॥ ८ ॥ इति भावभक्तिअंग ॥

अथ प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ नवधासंगतैंव्हैयोंभाव । भावतैंहोतहैप्रेमबढाव ॥ सोंहैंतीनभांतिकोप्रेम लघुमध्यमपूरनविननेम ॥ ९ ॥

अथ प्रथम लघु प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ छुटतननवधाभक्तिप्रेमबस । विधिवतरकरतनेम सोंजुतरस ॥ ताकोंकहांलगिकहौंप्रकार । वरनतवरनतव्हैंविस्तार ॥ ॥ १० ॥ गदगदकंठपुलकितनआवें । व्हैंरोमांचबहुरिमिटीजावें ॥ समयपायकबहुकदृगबहैं । बहुरिजथापूरबज्योंरहैं ॥ ११ ॥ नवधाकरतकबाहियोंहोत । अधिकहोतनहिंप्रेमउदोत ॥ प्रेमावतजगलज्याआवैं । याहीतैंलघुप्रेमकहावैं ॥१२॥ कामक्रोधादिकव्हैंआवतज्यौं । कबहूंप्रेमसमयपावतज्यौं ॥ हियगृहसुंदरठौरसुभाय । नीचऊचसबहीतहांजाय ॥ १३ ॥ उच्चलग्योजावनतिहिंथांन । सो गृहतजिहैंनीचनिदान ॥ ऐसैंप्रेमजहांसंचारेहैं । अंतकामादितहांतैंटारिहैं ॥१४॥ तनकअनळआतेंव्हैंवनदाढैं । सुछमप्रेमतैंप्रेमज्यैंवाढैं॥ यौंवटिप्रेमकौंघटिमतिमानो। वडेप्रेमकीजातिहैंजानौ॥१५॥ ज्यौंसमुद्रजलपवनफुंहार । जातवहीजलकोनिरधार ॥ कहूंएकअरुकहूंअनेक । महोरमहोरसबजातहैंएक ॥१६॥ जातिजातिमैंभेनाहनाहीं । जानौंभेदपराक्रममांहीं ॥ १७ ॥ इतिलघुप्रेमअंग ॥

अथ मध्यम प्रेम अंग ॥ प्रथम मध्यम प्रेमावेससरूप॥

॥ चौपाई ॥ सहजहिअंषियांरहतछकीसी । रूपभावनालगतजकीसी ॥ थकितरहतअधरनमुसिक्यान । वदनप्रफुल्लितमृदुवतरान ॥ १८ ॥ झलमलातनैंननिमैंनीर। छिनछिनव्हैंरोमांचसरीर ॥ चलतमंदअतिडगाडिगुलात । करतजातमनहींमनवात ॥ १९ ॥ सेवाश्रवनकीरतनआदिक । करतकरतअतिवाढतमादिक ॥ २० ॥

अथ मध्यम प्रेमधारक जन श्रवणरीति ॥

॥ चौपाई ॥ प्रीतमवातनिचितदृढगह्यो । विनाश्रवननहिंजातहैंरह्यो ॥ ज्यौंतियबसनवतनहितपीर । बूझतडोलतवातअधीर॥२१॥ सुनिलीलागुनिमोहनवैनानि । भरिभरिलेतप्रेमजलनैननि ॥ कवितारीतिदोषनाहिंसूझैं । स्यामसमंधसुधाश्रुतबूझैं ॥ २२ ॥ बादनकरतस्वादरसटरैं । फिरिफिरिपूछतपायनिपरैं ॥ कृष्णकथाविनाछिननसुहात । सुनतसुनतभूलतमुरछात ॥ २३ ॥ श्रोताऐसोप्रेमकोधाम । कोरेवक्ताकेकिहिकाम ॥ कोरेपंडितचतुरनमानै । भीजेमनकीपीरनजानै ॥ २४ ॥ कृष्णकथाजलकोमनमीन । बिरह-तीरआतुरतनछीन ॥ २५ ॥ इति श्रवणअंग ॥

अथ मध्यम प्रेमधारक जन कीर्तन करन रीति ॥

॥चौपाई॥ करनकीरतनहितहियरंग॥गदगदकंठहोतिसुरभंग ॥ उमगतगहवरप्रेमविसाल । भूलतरागतानअरुताल ॥ २६ ॥ जथाजोगसमयोविसरावैं । मनलग्योजहांसोहीधौंभावैं ॥ प्रेमविनांभयेरहतसुजान । जेहंसिपरतसुनतयहगान ॥ २७ ॥ कइघुनसातकई

मुसिक्यात। लगतश्रवनहुपकइउठिजात। जिहिंहियनाहिंप्रेम आनंद। जानतकहाअभेदीमंद ॥ २८ ॥ भेदीजोजाकेउरप्रेम। जरिरह्योहितपावकचितहेम ॥ पुनिअपरसजपजातनकियो। प्रेम लियोकरसपरसहियो ॥ २९ ॥ प्रीतिरसासवबढतपुमार भूलतनित्यचारआचार ॥ ३० ॥ इतिकीर्तनअंग ॥

॥ अथ मध्यम प्रेम धारक जन समरन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ व्हैंगयोचितअतिसमरनमई। विसरतक्रियाछकनिचढिगई ॥ दांतौंनिकरमुखमैंरहिजात। व्हैंमध्यानजाहिटरिप्रात ॥ ॥ ३१ ॥ रूपसुरतचितडोरीअंतर। बिविधिभावनांकरतनिरंतर ॥ फैलिपरतमनमानसीसेवा। बिनभेदीकोजानैंभेवा ॥ ३२ ॥ कोकरैंसाधनसंध्यान्हान। कोकरैंजगलोकनिसनग्यान ॥ वहोधामौंनरहैं दिनरात। बोलैंकछुसौंकछुकहिजात ॥ ३३ ॥ इतिस्मरणअंग ॥

॥ अथ मध्यम प्रेम धारक जनसेवा करन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ रचिसिंगारओरहतनिहार। फिरिफिरिउठिदेखत रिझवार ॥ ३४॥ हगजलवरषतबाढतप्रीत। धरीरहतसेवाकीरीत॥ लोटतबिवसरीझकैंरोग। कौनधरैसीतलव्हैंभोग॥३५॥ टरतसमयनैं ननिजलवहैं। प्रीतिकेआगैंरीतिनरहैं ॥ आरतनैंननिसौंमुखहेरत। आरतीअधिकप्रमानतैंफेरत ॥ ३६ ॥ फेरतफेरतफेरतजाय। हंसतलोकलखिकैंयहभाय ॥ छुवाछुईकीसुधिनहिरहैं। प्रेमछुयेकी कोगतिकहैं ॥ ३७॥ यथाजोग्यसेवानहिंहोय। प्रेमकेवसमबविधि दैंखोय ॥ ३८ ॥ इतिसेवाअंग ॥

॥ अथ मध्यम प्रेमधारक जन वंदन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ सुनियेबंदनकीगतिबांकी । व्हैंसरूपसेवाकीझांकी ॥ सीसननवैंरहैंलखियौंहीं । पुलकिप्रेमतनसुरातिससौंहीं ॥३९॥ अरुझतनैंनमीनछबिजार । साधनभक्तिभूलिव्योहार ॥ माधुरिपीवतपलकानिरंतर । बंदनकरिकरैंकोटगअंतर ॥ ४० ॥ जबमनप्रेमहिंडोरैंझूलैं । नित्यनेमहूबंदनभूलैं ॥ औरठौररीझतमनजहां । पुनिपुनिपायनिपरतहैंतहां ॥ ४१ ॥ जोकोउइनकौंवंदनकरैं । येताकेचरननिदिसिढरैं ॥ घटिवढिकौंनकौंनहीग्यान । महानम्रताचितहितस्वान ॥ ४२ ॥ कृष्णपदअंकितपहुमिव्हैंजहां । वाहिंरजलुटतघसनसिरतहां ॥ नेमजुक्तबंदनउडिगयो । प्रेमप्रवलकैमनवासिभयो॥४३ ॥ इतिवंदनअंग ॥ चौपाई ॥ नौधातैंसुप्रेमउठिजागैं । पुनिताहीकौंमेटनलागैं ॥ उमगतजवैंउदधिज्यौंप्रेम । छुटिछुटिजातहैंनौधानेम ॥ ४४ ॥ प्रेमीप्रेमकेसुखकौजानैं । गूंगोकहागुरस्वादवखानैं ॥ प्रेमानंदवढतउरस्वाद । वाहिरदीसतज्यौंउनमाद ॥ ४५ ॥ गावतरुदतहंसतअरुनाचत । गहवरप्रेमतवैंउरमाचत ॥ वाहवाहकहिउठतसराहि । कबहुकमौनपकरिरहिजाहि ॥ ४६ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ क्वचिद्रुदंत्यच्युतचिंतयाक्वचिद्धसंतिनंदंत्यवदंत्यलौकिकः ॥ नृत्यंतिगायंत्यनुशीलयंत्यजंभवंतितूष्णींपरमेत्यनिर्वृताः ॥ ४७ ॥ अर्थ–कवहू अच्युतको चिंतवन करि रुदन करैं कवहू हसैं अरु आनंद जुक्ति होय अरु अलोकिक भयो बचन कहैं अरु नृत्य करैं अरु गावैं अरु हरिकौं प्रसन्न करैं अरु परम वस्तुकौं पाय आनंदित होय चुप व्हैरहैं ॥४८॥

॥ चौपाई ॥ ऐसीप्रेमदसाअभिराम । ताकोकहतमहातम स्याम ॥ ४९ ॥ इनहिंदेहिजोमुक्तिवडाई । सुतोमुक्तिदेतनिरूपाई॥ औरकछूकहिबोनहिरह्यो। तवहरिउद्धवसैंयौंकह्यो ॥५०॥सोसवलो कानिवाहिरसंत । सेसलोकअजलोकप्रजंत ॥ ऐसोममजनपरसि महीकौं । करतपवित्रलोकसवहीकौं॥५१॥ तहांपरएकादशस्कंध॥ ॥ श्लोक ॥एवंव्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागोद्रुतचित्तउच्चैः॥ हसत्यथोरोदितिरौतिगायत्युन्मादवन्नृत्यातिलोकबाह्यः ॥ ५२ ॥

अर्थ–ऐसो है आचरन जाके जो अपनौं प्रिय जो श्रीकृष्णा चंद्र ताके नामही कहने करि उपज्यो हैं अनुराग जाकैं तासौं द्रव्योहैं चित्त जाको ताकरि कवहूं ऊंचे प्रकारे हंसैं कवहूं रोवैं अरु गावैं उन्मादको नांई होय करि नृत्य करैं सोलोक बाह्य हैं ॥ ५३ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्तं रुदत्य भीक्ष्णं हसतिक्वचिच्च ॥ विलज्ज उद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनंपुनाति ॥ ५४ ॥ अर्थ–जाको वानी गदगदतें चितद्रवें अरु वारंवार रुदन करैं अरु कवहू हंसैं अरु कवहू निलज्ज होयकैं गावैं अरु नृत्य करैं सो ऐसी मेरी भक्ति जुक्त सर्वलोक पवित्र करैं ॥ ५५ ॥ इतिमध्यमप्रेमअंग ॥

॥ अथ पूरन प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ फिरैंनेहकीदेहदुहाई । व्हैंसंचारीप्रेमस्थाई ॥ तन मनहूंकोसुधिविसरावै । बाहिरदृष्टिकभूनहिंआवैं ॥ ५६ ॥ ऐसेनि कोकहासंगसुखारी । दरसनमात्रहिमंगलकारी ॥ पूरनरहैंजूस्था

इप्रेम। दूरिकियेनौधाकेनेम ॥ ५७ ॥ ज्यौंतियजवलगगुडियन खेलत। तवलगिपियभुजभरिनहिंखेलत ॥ जवपियसौंबाढीरंगर लियां। तववेगुडियांलगतनभलियां ॥ ५८ ॥ प्रेममगनपियसौं गरवांहीं। निसदिनहूकीसुधिरहैनांहीं ॥ छुटिगयेश्रौरस्वादसब हीके। लहेनिरंतरजीवनजीके ॥५९॥ जोईढिगसोईसबधांदरसात। कृष्णामईश्रांखियांव्हैंजात ॥ होतसवैसुधिप्रेमकोगसा। जिन्हकसं निपातजिमदसा ॥ ६० ॥ मुखमैंमौनिद्दगनिमैंनीर। कहनमात्र हीरहैंसरीर ॥ इहिंविधिकोबाढैंजवनेह। वेगहिछूटिजातहैंदेह ६१॥ इतिपूर्णप्रेमअंग ॥ चौपाई ॥ प्रेमकीमहिमाकहिनसकतहौं। सुन तमहातमरहतचकितहौं ॥ प्रभुतैंअधिकप्रेमकौंजानौं ॥ प्रगटिप्रमा नदियेतैंमानौं ॥ ६२ ॥ रामकृष्णवहौदरसनकरते। सवहिप्रेम आनंदनहिंभरते ॥ ताकीमतितैंसीयेरहती। शत्रुनिकीलखिछाती जरती ॥ ६३ ॥ देतेदरसप्रेमनहिंदेते। सदाश्यामघनप्रेमविजेते ॥ वेदओसकलपुराननिमांही। यांतैंअधिकपदारथनांही ॥ ६४ ॥ जाकौंस्यामप्रेमहीदीनौं। ताकैंमनकोनौंआधीनौं ॥ कृपापात्रज नजाकोंकहिये। ताकैंतनप्रेमानंदलहिये ॥ ६५ ॥ गदगदकंठबि नारोमांच। विनश्रश्रुपातप्रेमउरश्रांच ॥ कैसैंकृष्णप्रीतविनवुद्ध। कैसैंव्हैमनउज्जलसुद्ध ॥ ६६ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥श्लोक॥ कथंविनारोमहर्षं द्रवताचेतसाविना ॥ विनानंदाश्रुकलया शुद्धेद्भ त्याविनाशयः ॥ ६७॥ अर्थ—विन रोमहर्ष अरु विनाचित्तकेद्रवैं अरु बिन आनंदके अश्रुपात ऐसो भांतिकी प्रेम लछना भक्ति विनां कैसैं अंतहकरण शुद्ध होय ॥६८॥ चौपाई ॥ यवनानहूके

मुखिहैंप्रेम । प्रेमैंस्वजंकरनदृढनेम ॥ नकलश्रोअसलप्रेमभयोभान। सकलव्हैंठाढेकरैंसनमान ॥ ६९ ॥ येऊमुण्यप्रेमकौंजानैं । धिकजो प्रेमोत्कर्षनमानैं ॥ कृष्णाहैंप्रेमप्रेमहैंकृष्णा । याकोफिरिकारिवोन हिंप्रष्णा ॥ ७० ॥ छप्पय ॥ कोरिकजनमनिसुकृतकियेंनवधाकौं करिहीं । नवधाभक्तिहिंकियेंभावअंतरसंचरहीं ॥ भावभक्तितैंप्रे महोतहरिकृपारूपहैं । प्रेमतैंअधिकनकोऊवस्तुहरिपैंअनूपहै ॥ प्रभुहूतैंगरवोमहाप्रभुयाकेवसरहतनय । प्रणवतनागरिदासनितिज यजयप्रेमानंदजय॥७१॥पुनः॥धनिवहकुलधनिनगरधन्यवहदेशसु मंडल । धन्यखंडवहदीपधन्यवहसकलमहीथल ॥ धन्यधन्यसव लोकहोतजिहिंपावनपावन । मुखरसनावहधन्यकरततिनकोगुन गावन ॥ जाकीमहिमाकहिसकैंकोकविनागरमध्यछित । करतध न्यइननैंनकौंजिहिंउरप्रेमानंदानित ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ विनसतसं गविननवधानेम । अनायासव्हैंआवैंप्रेम ॥ सिद्धभक्तिउपजैंविन साधन । हरिकीकृपाकैंपूर्वाराधन ॥ ७३ ॥ काहूजनमजातनहिं छीज । उपजपरतजैंसैंवटवीज ॥ तनकछुवैंछांडतनहिंगोहन । भक्तिमिलायरहतजगमोहन ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ भाषावातीनेहजुत लोयश्लोकप्रकास । ग्रंथभक्तिमगदीपकाकियोनागरीदास॥ ७५ ॥ पढैंसुनैंयाग्रंथकौंमनदैंसरससुठौन । भक्तिपंथसूझैंतिन्हैंपहुंचैंप्रीतम भौन ॥ ७६ ॥ संमतअष्टदससतजुदैंकारतीजगुरवार । रूपनगर विचकृष्णपक्षभयोग्रंथविस्तार ॥ ७७ ॥ इतिश्रीग्रंथभक्तिमगप्रदी पिकामैं प्रेमनिरूपणं तृतीयप्रकरणं समाप्तम् ॥ इतिभक्तिमगदीपि कासंपूर्ण ॥

॥ अथ देहदसा ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीगुरकेपदपंकजध्याय। देहदसावरनौंचितलाय॥ उपजनहितवैरागनरनकौं । गेहमगननहिंनरकपरनकौं ॥ १ ॥ श्रोणितबीजेमिलैंजबदोय। पंचरात्रिमैंबुदबुदहोय॥ दसदिनमैंव्है बेरसमान। मस्तकमांसवहुरिपिंडवान॥ २॥ द्वितीयमासमैंवाहुर पाय । त्रितीयछिद्रनखकचसवकाय ॥ चोथैंमासधातुतनपागैं । पंचममासछुधाहूलागैं॥ ३ ॥ अन्ननीररसकीयौंजुगतैं। आप्याय निनाडीसूंभुगतैं॥ निजनासानिजनाभीछूवैं। बंध्योजराहृढपरचो जुकूवैं॥ ४॥ घुटैंनासिकास्वासमहादुख। भुगतैंचमनकैं,तहिंसुख॥ विष्टामूत्रमहादुर्गंधि। तामैंफस्योजुपापसमांधि ॥ ५ ॥ जीवउदर केकाटततनकौं। रौंमरौंमपीडादुखमनकौं ॥ ऊष्णातिक्तभुक्तैंजव माता। चरमरातकोमलअतिगाता ॥ ६॥ कलमलायव्याकुलअ तिप्रांनी । सप्तमासमैंसवसुधिआंनी ॥ करनलग्योविनतीजवहरि सौं। महादुखीदुखहीकैडरसौं॥ ७॥ अहोअहोकरुनानिधिस्वामी। काटोदुखमेरोवहुनामी॥ हौंप्रभुकीसेवाअनुसरिहौं । जगप्रपंचमैंनां हिनपरिहौं॥ ८॥ यहसुनिवचननिकास्योऐसैं। जंतीमांझतारव्है तैसैं॥ सोदुखदारुनकह्योनजाय। मनकीमनमैंवातविलाय॥ ९॥ निकसतहीविसरयोगोविंदा। परयोपवनलगिमायाफंदा॥ बालाप नखेलनमैंवीत्यो । तरुनापनमैंजुवतिनजीत्यो॥ १०॥ अतिमद अंधओरनहिबूझैं । एकविषैउनहीकौंसूझैं॥ भरनपोखउनहीको करैं। कालव्यालतैंनांहिंडरैं॥ ११ ॥ साधनकीमनवातनमानी। अतिदुर्मतिकेवलअभिमानी॥ वहुरिवृद्धतनकोवलगयो। चिंतामो

ह्महामनछयो ॥ ७० ॥ खासतथूकतचल्योनजाई । तहांलष्टकाभ
ईसहाई ॥ नातीपुत्रचहूंदिसडोलैं । तिनसौंहोयतोतलोबोलैं ॥ १३ ॥
मोहविवसगईबुद्धिविलाइ । गोविवेकवैरागनसाइ ॥ तीनअवस्था
यौंहीखोई । धुरसौंबेलिनरककीबोई ॥ १४ ॥ वहुरिजुकालआइकैं
अरयो । व्हैकैंदुखीखाटमैंपरयो ॥ अतीसारभोकपराविगरै । महा
विपतितैंदुरेजुसगरै ॥ १५॥ अतिदुर्गंधिमाक्षिकाछाई । सज्जनहूल
खिनाकचढाई ॥ कृष्णनामरसनांनहिंधरैं । सुतनातीकौंटेरतमरैं ॥
॥ १६ ॥ निकसतजीवमहादुखभयो । सोतोमोपैंजातनकह्यो ॥
इतयाकींफूकीलैमाटी । उतजमआगैंपीटापाटी ॥ १७ ॥ साधाविवे
कीहितवेशातैं । निकसनिउदरमांझकीबातैं ॥ वहुविधिकरिकैंसु
धिजुदिवाई । मार्नीनांहिमारअतिखाई ॥ १८ ॥ यहसुनिमतिविस
रोरेभाई । कोटिकोटिहैंरामदुहाई ॥ विषैमांझमनमतिदैतेरो । जन
मऔरहूंमांझघनेरो ॥१९॥ इहमानुषतनप्रभूमिलनकौं । सतसंगति
सुखसिंधुझिलनकौं ॥ हरिकीभक्तिकरोचितलाय । तीनौंतापवेगमि
टिजाय ॥ २० ॥ करदयोदीपगलोचनदूवैं । अवजानिवूझिमति
परोजुकूवैं ॥ नवधाभक्तिभागवतकही । ताकोफलदसधाहैंसही
॥ २१ ॥ सोसुखरूपजुस्यामामिलावैं । जोकबहूसतसंगतिपावैं ॥
उपजतग्यानकरनसुखरास । कहीवातइहनागरिदास ॥ २२ ॥
हरिसनमुखदैवोजगपीठ । अभिमानीमानैंगोनीठ ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥ सुनैंसुनावैंजोकोऊ यहगाथाचितलाय ॥ दासना
गरीजासके परैंस्याममगपाय ॥ २४ ॥ नागरियायाजगतमैं भाग
ताहिकोभूर ॥ व्रजभक्तनकेचरनकी जिहिंधरीसिसपरधूर ॥ २५ ॥

नागरिदासहुलाससौं तेईगयेजगजीति ॥ मनसाबाचाजिनकरी हरिभक्तनसौंप्रीति ॥२६॥ देहदसाबरनीइहैं । मोमतिकैंअनुसार ॥ संतविवेकीसुनिसुकवि । लीज्योयाहिसुधार ॥ २७॥ इतिदेहदसा ॥

॥ अथ बैराग बटी लिख्यते । प्रथम धनभारी गृहस्थ ष्वारी ॥

॥ चौपाई ॥ परनैमंगलचारबधाई मरैंसीसमिलिकूटैं । पांचपिसनतनकेनहिंजीते बाहिरअरिसोंजूटैं ॥ जैतअजैतहाथहरियहविच हारिकहावैंकायर । ऐसोदुखीनत्यागिसकैंघर योंमायाजोरावर ॥१॥ छप्पनभोगदासमिलिपावैं इन्हैंदालिकोपांनी । रोगग्रसतवैभवाकिंहिं कारज मनदुखियाहैरांनी ॥ नित्यनवैरैंन्यावसबनके परदुखमैंमनरहनौं । ऐसोदुखीनत्यागिसकैंघर योमायाकोलहनौं ॥ २ ॥

अथ गृहस्थ मध्यस्थ धनद्वार ख्वार ख्वार बर्ननं ॥

आठपहरदुपहीमेंबीतैं कायकूयपरजाकी । विषैभोगआछैंहूं नाहीं चिंतामैंमतिछाकी ॥ जिताततिअपजसदुरदुरघरघर तनमनकीअतिख्वारी ॥ ऐसोदुपीनत्यागिसकैंघर मायाकीगतिभारी॥३॥ नित्यचाकरीसौंचितडरपैं कछुचूक्योअरुमारचो।कारजद्रव्यविनांवलधीसैं मनसौंजातनहारचो ॥ दिनकुटंबकेभरनपोषमैं निसविचारकरिसोयो ॥ ऐसोदुपीनत्यागिसकैंघर मायारांडबिगोयो ॥४॥ (नहिंधनटांकगृहस्थरांक) । बहुतठीकराठाटषडभडैं एकहूनांहिनलोटी । सांपगोहिराकरत कलेलैंपै बेकौंनहिरोटी ॥ कालीकुटिलकुक्यैंतीकामिनी गुहीमूंजसोंचोटी ॥ ऐसोहूगृहत्यागिसकैं नाहिं मा

याकीगतिमोटी ॥ ५ ॥ जनौंऔदसावारविराजत ऐसीटूटीछान ॥ बालकबहुतमनौंभुतलेटे तिन्हैंमिलतनहिंधांन ॥ नितउठिहोतिकलह अतिकर्कस जिततितपैंचातांन ॥ ऐसोहूगृहत्यागिसकैंनहि मायाकीगतिजान ॥६॥ (भेषधरैंसहजसुपटेर) धरैंभेपजोईजादिनतैंबंदनकौंअधिकारी । व्हैंनिर्भैनिश्चितसहजमैंबिपतिमिटैंतवसारी ॥ सिपरनभातषीरकेन्यौंता नितउठिमंगलबद्धै । याहिलैंनसुपकौंनतजैंगृहमायाकेमुहचद्धै ॥ ७ ॥ पराधीनतामिटैंपापिनी व्हैंसुतंत्रअरुबिचरैं । जहांनजांवनपावनहोतहां जायनिडरमुपउचरैं ॥ तीनहुतापमंदव्हैंजावैं बहुरिडरैंजमदूत । यहीवातनहिंसमझतजैंगृह हरिकीमायाधूत ॥ ८ ॥

अथ सिद्धआनंदीदूरकरीमायालैगंदी ॥

कृपारंगतैंसंगमिलैंकहुंजोउज्जलरासिकनको राधारवनरूपकेरसमैं बूडैंनषसिषमनको ॥ उपजैप्रेमानंददेहिमैं तबसुषकोसुपलूटैं । नागरिदासहोयमतिवारो मायाकोसिरकूटैं॥९॥ इतिश्रीबैराग्यबटी॥

अथ रसिकरतनावलीलिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमोहनगुरुप्रेमवपु । बंदौंपंकजपाय ॥ मोपैंपूरनकरिकृपा । दीनैंसंतबताय ॥१॥ तेईहरिजनइष्टमम । तिनहीकौंसिरनांउ॥ तिनहीकेजुप्रसादतैं । तिनहीकोजसगांउ ॥ २ ॥

अथ बैष्णवसहजसरूपबर्ननं ॥

कवित्त ॥ मालागरैंतुलसीकीलपौंहियतैंमुक्तावलिजालबिसारौं । गूदरपैंकेईकंचनकेपटटूटीकोपीनपैंकाहिउचारौं ॥ जीरनजूतीधि

सीफिरैंनागरतापैंसिंघासनफेरिकैंडारौं ॥ औरबषानौंकहामूंडमाधुरीस्वामीकीचांदिपैंचंदाकौंवारौं ॥ ३ ॥

अथ अनुरागसहितसरूपबर्ननं ॥

॥ कवित्त ॥ लोचनसजललालधूमतबिसालछकेचलनिमरालकीसीठाढेरैंमतनमैं । उज्जलरसभीनैंताकैंदीनैंगरबांहिरहैंस्यामास्यामदोऊंहियैंसुंदरसदनमैं ॥ पुलकितगातगिरागद्गदरोमांचिनितधारैंछापकंठीओतिलकनिजपनमैं ॥ कहाभयोनागरकियैंतैंतपजपदानजोपैंसंतमाधुरीव्रसीनऐसीमनमैं ॥ ४ ॥

अथ वैष्णवमदोन्मत्तसुभाववर्णनं ॥

॥कवित्त॥ लीलारसआसवश्रवनपानकीनेहरिग्यांनाहिगजकआननांहिचहियतुहैं । विधनांकुबेरइंद्रआदिसबरंकदीसैं ऐसेमदछायेपैंनमनिगहियतुहैं ॥ भावनांहिंभोगमैंमगनदिनरैंनरहैंताकेनैंकताकीनितछाकेरहियतुहैं॥औरमतवारेमतवारेनाहिंनागरवेप्रेममतवारेमतवारेकहियतुहैं॥५॥ कुंडलिया॥दोहा॥ चितवतनहिंबइकुंठदिस। नैंनकोरतैंमूर ॥ सबसरबससिरधूरदैं । सरबसकीब्रजधूर ॥ सरबसकीब्रजधूरिपूरिनितरहेएकरस । मनअंषियांतनबातनिरषिपुनिबंधलरीझबस ॥ जहांजहांसुनिपियबात नैनभरिछिनछिनचितवत । नीरसरसमईहोत तनकदृगकोरहिचितवत ॥ ६ ॥ लोकनमैंकैसैंमिलैं परमप्रेमनिधिचोर । देपतहीलषिजाइयैं आंषिनहीकीओर ॥ आंषिनहींकीऔरचोरपकरतवाहिनिधकौं । पियप्रकासझलमलतमनौंबादरतरविधकौं ॥ जिहिंविधयौंउरआहिमहातीछनिदृगनोकनि । म

धिअवीधक्योंरलैंजाहिहियसूतविलोकनि ॥७॥ मूधेअतिबांकेमहा । फसेनेहकेपंक॥ दीनलगतचितवतनिपट।कहैंकुबेरसौंरंक ॥ कहैंकुबेरसौंरंकसंकाहियमैंकछुनांहीं॥ फिरतविवसआवेस बलितबनघनकी छांहीं॥ब्रजसमाजछबिभीररहतनितप्रतिहियरूधे । बोलतअटपटेवैंनलगतसूधनकौंसूधे ॥ ८ ॥ वृंदाबनरसमैंपगे । जीत्योअजितसुभाव॥ सातगांठिकोपीनकैं । गनैंनरानाराव ॥ गनैंनरानारावभावाचितरहेमहाभारि । लषैंदीनतैंदीनलीनव्हैंपरतिपगानिढारि ॥ अहाअनोषीरीत कहाकहौंरहतरहिततन । व्हैंचकोरसासिवदनजुगलनिरषतवृंदावन ॥ ९ ॥ नैंननिजलचितव्हैंरहे । चूरचूरतनछीन ॥ चूरचूरढिगगूदरी। कहैंइंद्रसौंदीन॥ कहैंइंद्रसौंदीनमीनदृगलीनस्यामजल। जकरिजुलफजंजीर कियोबसमनमतंगपल ॥ रूपरसासवमत्तमुदितगदगदसुरबैंननि ।तनघूमतलगिघाय स्यामसुंदरसरनैंननि॥१०॥ताननिकीताननिमहीं । परचोजुमनधुकिधाहि॥ पैठचोरवगावतस्रवनि । मुषतैंनिसरतआहि॥मुषतैंनिसरतआहि साहिनहिसकतचोटाचित । ग्यानहरदतैंदरदमिटतनहिंबिबसलुटतछित॥ रीझरोगरगमग्योपग्योनहिंछूटतप्राननि । चितचरननिक्यौंछुटैं प्रेमबारनकीताननि ॥ ११ ॥ बोलनिहींऔरैंकछू। रसिकसभाकीमानि ॥मतवारेसमझैंनहीं । मतिवारेलैंजानि॥ मतवारलैंजानिआंनकौंवस्तुनबूझैं । ज्यौंगूंगेकोसैंनकोऊगूंगोहीबूझैं ॥ भीजिरहेगुरुकृपावचनरसगागारिढोलनि । तनकसुनतगरिजातसयानपअलबलबोलनि ॥ १२ ॥

॥ अथ वैष्णव प्राप्ति सिक्षा कथन॥

बूराविस्वरचोरैनमैं। मगजनगजकौपाय॥तजिऊंचेअभिमानकों। चैं

टीन्हैंतोखाय ॥ चैंटीन्हैंतोखायचायचितरजनिवारिकैं। कानिकार सिकाहिलहैंअपनपोतनकधारिकैं ॥ मांनीमलिनमतंगतारहिइहक होनमूरा। दीजैंतिनाहिंबतायजाहिभावैंजनबूरा ॥ १३ ॥ दोहा ॥ जग्यदानसंजमनियम, कियेतीरथतपपूर॥ नेहनीरपरस्योनहीं, तो सबकीनौंधूर ॥१४॥ कवित्त ॥ नागरवेदपुरानपढ्योसबबादकैकी नीकईमतिपांगुरी। गंगओगोमतीन्हातफिरचोअतिसीतमैंप्रीतसौंहा थलैंकांगुरी ॥ गल्यकान्हायगोदावरीन्हायोसुत्यागिदैंअन्नरुखावत सांगुरी॥औरहून्हायोसुमैंनबदीजौपैंनेहनदीमैंनदीपगआंगुरी॥१५॥ भाज्योफिरचोबहुतीरथकेहितवांधिकुटीव्रजगाढोगह्योना। नागर वेदपुरांनपढ्योमुषमोहनप्रेमसौंनांवकह्योनां॥साधनकैव्रतकीनैंसबैं ब्रिजवासीकोसीतलैंखायोमह्योनां। कीनैंउपायघनेंतरबेकेपैंने हनदीमाधिबूडिरह्योनां॥ १६॥ दोहा ॥ रसिकदसावरनीइहैं, अद भुतप्रेमउमंग ॥ सबनिदुहाईइष्टकी, सुनिकीज्योसतसंग ॥ १७ ॥ जोबांचैश्रवनानिसुनैं, रीझिहोयअनुरक्त॥तेमोकौंकहियोइन्हैं, उप ज्योअतिहरिभक्त ॥ १८ ॥ कहीरसिकरतनावली, पूरनप्रेमप्र कास॥सुरतिहियेंव्रजवासकी, धारिनागरीदास॥१९॥ सतरैसैंबइया सिये, भादौंसुदिभृगुवार॥ तिथिपरिवाकीनीइहैं, लीज्योसंतसुधार ॥२०॥कवित्त॥ केऊकरैंबिष्णुसेवकेऊपूजैंदेवीदेव केऊचाहैंमुक्तिके ऊउदरानिबासनां। आठौंसिद्धनवानिद्धचाहतअनंतजनकेऊचाहैंपु त्रकेऊनिजघटनासनां॥मेरैंवेईदेवसंतउज्जलतिलककीनैंभीनैंरसउ ज्जलओजुगलउपासनां ॥ नागरनिहोरीकरजोरमांगौंतिनपैंतैं। देहुप्रेमभक्तिओछुडायविषैंबासना ॥२१॥ इतिरसिकरतनावली ॥

॥ अथ कलि बैराग्य वल्ली लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ कलमषचितचीगटहरन, वंदौंगरपदरैन ॥ रहोभालभूप नसदा, अभैभक्तिफलदैन ॥ १ ॥ छप्पय ॥ धनिश्रीबल्लभबिदि तधन्यधनिकुंवरविभूषन । बिठ्ठलेससुतसातधन्यहरिअंसवंसधन ॥ धनचौरासीभक्तजक्तहितपुरुसरूपाछित । धनिगोविंदकुंभनादि प्रीतगिरधरनअपरामित ॥ धन्यभानभुवभागवतनागरियाहियतम हरन । धन्यधन्यफिरधन्यहैंमहामंत्रकेवलसरन ॥ २ ॥ चौपाई ॥ एसबएपुरवोअभिलाषा । कछुशुकबचनकहूंकरिभाषा ॥ श्रीभाग वतवेदतरकोफल । पूरितरसहरिकथामधुरकल ॥ ३ ॥ दोहा ॥ ताकेद्वादशस्कंधकी, द्वुतियत्रितियजेध्याय ॥ तहांकहीशुकसोसमैं, अबैंप्रापितभइआय ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ समैंघोरकलिकालधर्मपदछे दनकीनैं । विफलक्रोधकंदर्पजीतिजीवनिकौंलीनैं॥लोभमोहतैंकरी प्रबर्तिमारगमतिपंगी । चितचंचलअतिअजितनीचसंगीबहोरंगी ॥ नागरिदासनऔरकछुत्रिबिधितापसीतलकरन । प्रगटितबल्लभवद नतिहिंसरनमंत्रकीहौंसरन ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ पावसमैंपौंनधूपनि मलअकासहोत सीतमांनिभीतलोगरोगसरसायगो । ग्रीषमभयंकर ताअंधकारधूरपूरचील्हऔउलूकसब्दकूकरानिछायगो ॥ व्हैंरहीहैं सामसूमजिततितधामधूमकलहकलेसदेसदेससरसायगो । नागरबि लासहासिउरउदमादमिटेदेखतहीदेखतमैंऐसोसमैआयगो ॥ ६ ॥ मैकर्मप्रीतरीतसज्जनसुहृदताईसकलभलाइनकोपुंजसोविलायगो अंतरमलीनव्हैकैंकलहप्रबीनभयेनरनिकलेससबदिनसरसायगो ॥

नांहिरागरंगनांहिचरचाचतुरताकीनांहिंसुखसैलस्वादआनंदनसा यगो । नागरउदासाजियहौंसनहुलासहियदेखतहींदेखतमैंऐसोस मैंआयगो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अबवर्णाश्रमकीदसा, जोदिनदिनद रसाव ॥ सोन्यारोन्यारोकहूं, पलट्योसमैंसुभाव ॥ ८ ॥

॥ अथ प्रथम वर्ण द्विजदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ बहोबिप्रनितजिदीनैंधर्म । हरिसमंधबेदोक्ति कर्म ॥ सिसनउदरपोषनकीप्रीत । शुचिआचारनइंद्रीजीत ॥ ९ ॥ महातमोगनहियमैंधरैं । शस्त्रघाततनचांदीकरैं ॥ विद्यारहितमहाज डमनके । कर्मकुसांनमलिनअतितनके ॥ १० ॥ पातरथोरेबहुतकु पात्र । रहीजुएकजनेऊमात्र ॥ ११ ॥ कविबचन ॥ दोहा ॥ द्विज कुलकलिऔगुनभरे तऊसमर्थोदोय ॥ भलोकरैंसेयेइन्हैं वुरोअसेयें होय ॥ १२ ॥ जद्यपिऔगुनहूभरे तऊबरनकेभूप ॥ कहीहैंदेवब्रह्म न्यहरि बिप्रमामकीरूप ॥ १३ ॥

॥ अथ द्वितीय वर्ण नृप छत्री दसा ॥

॥ चौपाई ॥ छत्रीनृपधर्मनिकौंतजैं । करतकुकर्मनिनांहींलजैं ॥ रक्ष्याहितजेशस्त्रनिधरैं । तेधनप्रानप्रजाकौहरैं ॥ १४ ॥ गौब्राह्मण प्रतिपालकहावैं । तेफिरतिनहींगाहिगहिल्यावैं ॥ बच्छागऊविरहसं ताप । द्विजकुलतिन्हैंदेतअतिश्राप ॥ १५ ॥ आपहुचोरचोरढिग रहैं । कबहूमुखतैंसांचनकहैं ॥ कपटकलपतरुदुष्टधुरंधर । निर्दैंद्वदैं पापपुरंदर ॥ १६ ॥ अतिअभिमानीअरुमदपानी । बिनहीगुनानि जमुखगुनगानी । पाघकोआगागरदनपाछैं ॥ ज्यौंभांडभेखमत

वारोकाछैं॥ भृकुटितिरेखामूंछैंचढी । कटिक्रूपानआधिकरहैकढी॥
॥ १७ ॥ यहछबिसोइसूरकहावैं । रनछांडतलज्यानहिंआवैं ॥
हरिगुरपिताभक्तिसौंदूर । झूठहीचंडीसेवतकूर ॥ १८ ॥ लघुस्वार
थहितगैलेमारैं । गायगायमुखकहतप्रहारैं ॥ द्विजभिक्षुकस्वामीसं
न्यासी । काहुनछाडतएदुखरासी ॥ १९ ॥ कापैंकरैंकुटिलजव
रिसकौं । बारागांवजरावैंनिसकौं ॥ कैंरजनीसुखसोयेमारत । कैं
भोजनमैंलैंबिपडारत ॥ २० ॥ नवतनदगेवहोतविधिठाने । तिन्हैं
कहांलगिकोऊबखांनैं ॥ सांतसुहृदताकबहुनधारैं । तनकभूंमिहि
तसुतपितमारैं ॥ २१ ॥ तेजहीनइनपापनिछत्री । धारिनसकतधी
रमनधत्री ॥ शस्त्रअस्त्रनिजविद्याहीन । वनिककर्ममैंमहाप्रवीन ॥
॥ २२॥ दोहा ॥ सतत्रेताद्वापुरमहीं । नृपछत्रीअधिकार ॥ रद्योन
अवकलिकालमैं । वर्नावर्नविचार ॥२३ ॥ चौपाई ॥ द्रुतियबर्नको
रह्योनकाजा । जोबलिष्टसोइंन्हैंराजा ॥ तिनकैंएकलोभकोस्वारथ ।
दयामयानहिंमनपरमारथ ॥ २४ ॥ विनविवेकमूरखचितभंग ।
निद्राआलसअधिकअनंग ॥ जानिर्बलकेसुंदरनारी । गहिआंनत
ऐसेविभचारी ॥ २५ ॥ महानिपुनछलविद्यामाहीं । गतिजससमर
पराक्रमनाहीं ॥ साधिनसकतकछूनिजअर्थ । परदुखहरनकोनसा
मर्थ ॥ २६ ॥ अंगसरोगसदाबलछीन । धनकरिहीनभाग्यहूहीन ॥
जोकछूकरैंमनोरथकोय । सोनहोयउलटीसबहोय ॥ २७ ॥
अबयहसमैंबुरीहीकरैं । भलीबातश्रवननिनहिंपरैं ॥ वनैंजुकष्टदा
सकौंआय । तबस्वामीनाहिंकरैंसहाय ॥ २८ ॥ संकटआवैंस्वामी
पास । छाडिकैंजातअधरमीदास ॥ जिनकैंस्वारथहीकीप्रीत ।

स्वामिधर्मकीचलैंनरीत ॥२९॥ दोहा ॥ नृपछत्रिनकीयहकथा। कहीयथाकलिकाल। कीनीद्वादशस्कंधजो।प्रगटव्यासकैलाल ॥३०॥

॥ अथ बैस्य बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ बैस्यबंसबहोपापीभये। मनउपंगधर्मनिकौंलये॥ मलिनवस्त्रतनमहाकुचील । परसैंउपजतन्हानसचील ॥ ३१ ॥ दुर्भोजनरुबिभछिक्रियाअति। इहींदेहभुगतंतनर्कगति ॥ यापरनिंदिकऔरधरमके। छाडतसारपहारभरमके ॥ ३२ ॥ केवलनिजस्वारथकेसगे। लोभीएकलोभरसपगे॥ परमारथकबहूंनहिंकरैं चतुराश्रमसेवातेंटरैं ॥ ३३ ॥ बणिजकपटपरिपाटीपढे । मिथ्यामहाबिबादनिबढे ॥ छाडतराहरुचलैंकुराह । चोरीकरैंकहावैंसाह ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ बैस्यबर्नबर्ननकियो। कलिजुगकेअनुसार॥ सुद्रनिकुलकीकहाकहौं। ताकोवारनपार ॥ ३५॥ चौंपाई ॥ मुख्यबर्नहूंकीजुयहैगति । सुद्रनिछुद्रनिकीधौंकहामति ॥ तपसीरूपपतिग्रहलेत। जानतनांहिनअपनोवेत ॥ ३६ ॥ बिनकुलतूटकुटंबीमूढ। उतमनकौंउपदेसतगूढ ॥ ठगईहितबहुविधिअनुसरैं। कूरनरकतैंमूरनडरैं॥ ३९ ॥ बिबिधिअकर्मनिकेपरकार । तिनकेवरनतव्हैंविस्तार ॥ अंतजसूद्रअंतकोलहैं । पापकर्मकौंकहांलगिकहैं॥४०॥ दोहा ॥ कहीसुद्रकीकछुकथा। नैंननिजथानिहारि॥लगीबहोतअबहोनजग। जैसीबरनौंनारि ॥ ४१ ॥

अथ स्त्रीदसा वर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ छोटीकायाछोटीबुद्ध। खोटीतनमनमहाअसुद्ध ॥

साहसबहौतनिडरहियमाहीं । पुरुषतुच्छसमगिनैंजुनांही ॥ ४२ ॥
हाथनिलवैंपगनिबुझावैं । वातनकछुहियमैंठहरावैं ॥ पगीरहैंमति
जगजंजाल । अतिबिबादनीप्रकृतिकराल ॥ ४३ ॥ ब्रह्माविष्णुम
हेश्वरआय । तीन्यौंरहैंबहुतसमझाय ॥ इनहींकीकछुकहीनमानैं ।
जोठानैंसोठानैंईठांनैं ॥ ४४ ॥ झूठीमतिअतिलोलउपंगी । सहज
हिंअणमिलवचनकुढंगी ॥ लोर्भीमहालोभचितमढी । लैवेहीकीपा
टीपढी ॥ ४५ ॥ धनकुबेरकोजोघरभरैं । तऊतियतनकत्रिपतनहिं
करैं ॥ लैवेहीकीरीतिठानिहैं । दैवेहीमैंप्रीतिजानिहैं ॥४६ ॥ बिन
दीनेंसुखहूनाहिंदेत । लैवेहीकोतिनकैंहेत ॥ मतिहलचलचोरीमैंचौ
कस । कलहप्रियामतिमंदअलपरस ॥ ४७ ॥ औरतियनबिनहूंन
सुहात । करैंतियनसौंमिलिउतपात ॥ आपहिंकैंमत्सरताआगि ।
आपहितैंजुउठैउरजागि ॥ ४८ ॥ आपहिकलपैंआपहिरोवैं । आ
पहिअपनौंसबसुखखोवैं ॥ सुद्रीसहजकुचीलकुबेस । वेदवचनप
ढिदैंउपदेस ॥ ४९ ॥ गुरव्हैंनरकौंदक्ष्यादैंहीं । मूढअपनोंपयकौं
बिसरैंहीं ॥ बिभचारनकोपारनवार । ज्यौंजडबेलीकैंनबिचार५०॥
निकटहोयतासौंलपटावैं । जोगअजोगदृष्टिनाहिंआवैं ॥ पैठिभूमि
निकसैंआकास । व्हैंनसकैंछलछिद्रप्रकास ॥ ५१ ॥ जारहेतकछु
बैनविचारैं । पापनिसुतपितपतिकौंमारैं ॥ नौदसबरसनिकटजब
आवैं । कामकथातबहीतैंभावैं ॥ ५२ ॥ वारहतेरहमांहिप्रसूत ।
साधकोईअरुअगनितधूत ॥ नहींरूपनहिंगुनउरअंतर । इतनैंपैं
अभिमाननिरंतर ॥ ५३ ॥ पतिब्रतमानमानचतुराई । जानतमान
हिंमानबडाई ॥ रातिरुद्यौसमानमनमानैं । बिनामानकछुऔरन

जानैं ॥ ५४ ॥ निसदिनगर्वपरचोगलगाजैं । हियेक्रोधकेपुंजबिराजैं ॥ तचततेजतामसतनमाहीं । देखिलरैंअपनीपरछाहीं ॥ ५५ ॥ ॥ कवित ॥ धूंधरीभयानकचढायेंकररातकोपिदंतपंतिकाढिकैंकरालमुषबाहरी । लपकनिरसनाकीनैंनज्वालमेजरततामसकोतनमैंलग्योईरहैंदाहरी ॥ ठाढौव्हैंकैसोहैंअैसोकौनबतरावैंमानौंकंठहीगहैंगीदौरिजातनहींसाहरी । भभकनिभारीनैंकजातनसंभारीतनओढैंखालनारीकीमुलमांकीनीनाहरी ॥५६॥ दोहा ॥ द्वैफलपापरुपुन्यके । यहजानतसबकोय ॥ महापापतैंहोततिय । पुन्यपुरसबपुहोय॥५७॥ सातसिंधुकीमसिकरैं । लेखनसबबनराय ॥ भूमिपत्रजोबिधिलिखैं । तियगुणलिखेनजाय॥५८॥यथाकालकैंतियनजुत।च्यारौंबर्नैंवर्न॥ अबआश्रमकीयहदसा । सुनियौंदैंकैंकर्न ॥ ५९ ॥

॥ अथ प्रथमाश्रम ब्रह्मचारीदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ ब्रह्मचारिनिकेनाममांझसुठि । अनुस्वारराकारगयेउठि ॥ ग्रस्ताश्रमतोपहिलैंकह्यो । अबतोकछुकहनौंनहिरह्यो६० बानप्रस्तकीक्रियाकठिनअति । सोक्यौंनिबहैंकलिजुगकेंमति ॥ सबोंपरसंन्यासउदोत । कलिमैंकाहूसौंनाहिंहोत ॥ ६१ ॥ अंबरदिसाकिंदराभौंन । करहीपात्रकरैंधौंकौन ॥ भयेबगतिबिपरीतसंन्यासी । हयगयकोसभवनसुखरासी ॥ ६२ ॥ महाबिभौभूभुजउनिहार । क्रुध्धक्रुध्धकरिबरसतसार॥ ६३ ॥ दोहा ॥ बरनैंऔगुनयुत सबैं । बर्णाश्रमइंहिंभाय ॥ बहुरिएकव्हैंजांहिगे । सकलभ्रष्टताछाय ॥ ६४ ॥ इति वर्णाश्रमदशा ॥

॥ अथ कविनिजदशा बर्ननं ॥

। कुंडलिया ॥ दोहा ॥ देखोमोओगुनयहैं । हूंओगुननिजिहाज ॥ ओगुनबरनतऔरके । मोहिनआवतलाज ॥ मोहिनआवतलाज भरयोअतिअगनितदोसनि । पगनिअगनिनहिंसूझतसूझतलागीकोसनि ॥ तजिनिजछिद्रनिकहतओरकेयहकहालेखो । समझिसोचिचुपरहतनजडनागरजगदेखो ॥ ६५ ॥ इति कविनिजदसा ॥

अथ सर्बबिस्वदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ कलिजुगमहातिमरघनजुरे । रबिबेदोक्तकर्मसबदुरे ॥ मनउपंगमतमनुखद्योत । तिनहींकीजागीजगजोत ॥ ६६ ॥ नाटकचेटककेसेजोग । तिनहींमैंपागेसबलोग ॥ सतमितभाषीपंडितसोई । ताहिनहींमानतहैंकोई ॥ ६७ ॥ जाकैंचंचलबचनबिलास । ताहिकहैंपंडितगुनरास ॥ अरुदंभीसोसाधकहतहैं । साधहिंदंभीजांनिगहतहैं ॥ दूरकेतीरथश्रद्धालहैं । तीरथनिकटअश्रद्धारहैं ॥ जोअबकलिमैंअतिधनवान । ताहिकहतसबबुद्धिविधान ॥ ६९ ॥ सोईप्रतापीसोईकुलीन । जोगृहमैंधनकारिनहिहीन ॥ जोबलिष्टअतिपरबलहतो । जानतताहिन्यायकोकर्ता ॥ ७० ॥ अरुधनाढ्यपरनिधनीजरैं । संपतिदेखिईरषाकरैं ॥ प्रजाजीविकारहतदलद्री । कंदमूलफलखावतबद्री ॥ ७१ ॥ रहैंजुस्वारथपेटभरनकौं । लेसनपरमारथहिकरनकौं ॥ मातपिताकीटहलनकरैं । सारेसुसरनकौंअनुसरैं ॥ ७२ ॥ सबहीकौंलोनेतियजीति । भामिननरनरभामिनरीति जोमनमानीसोहोतिया । सोमनमान्योंजोहीपिया ॥ ७३ ॥ मन

लागतवाहीदिसढरैं। जातिपांतिसौंब्याहनकरैं ॥ बिनाबिपतिहीध मैंछूटिगे। पुनिबिपतनिहूंमांझटूटिगे ॥ ७४ ॥ करतजुपापजीविका तबैं। पूरितपापव्हैंगयेसबैं ॥ छोटीकायाबदनविरूप। छुधाबहोत घटभोजनकूप ॥ ७५ ॥ निर्बलअंगअन्नकैंटोटा। नरगतक्रांतिम नहुंभुतलोटा ॥ चिंतारहतबदनपरछई। बिश्वससोकसबैव्हैंगई ७६ अरुसबभ्रष्टसुचिनआचार। सुबसनसुगंधसंवारैंबार ॥ ताहीकौंस बअतिसुचिमानैं। क्रियास्नानकोऊनहिंठानैं ॥ ७७ ॥ जबइच्छात बसोवनलगैं। जबमनमानैंतबहींजगैं ॥ ऐसैंहींजलभोजनकरैं। समैंबिचारनकछुजियधरैं ॥ ७८ ॥ देतनकछूधर्मकैंहेत। जोकछुदे तसुजसहितदेत ॥ कैलेवादेईव्यवहार। रहीपरसपरगधाखुजार७९ बहुरिनपात्रअपात्रहिजानैं। जोजिहिंमानैंसोतिहिंमानैं ॥ अरुसदू धगोसेवतभाय। बिनादूधकीत्यागतगाय ॥ ८० ॥ होतहैंसुरभीअ जासमान।भ्रष्टअहारमिलतनहिंधान ॥ मेट्योजगसबचितहिततोप मांचिगोबिनाप्रयोजनदोप ॥ ८१ ॥ कोकाहूकोभलोनचाहत।मच्छ रतानलअंतरदाहत॥ जितातितकलहकलहकीरोर। बिनाकलहकछु बातनओर ॥ ८२॥ करैंकलहसुतपितमिलिमात। करैंकलहभग नीअरुभ्रात ॥ नारिपुरुसहूंकलहमचावैं। तबऔरनकीकौनचला वैं ॥ ८३ ॥ कलहबिनाचितचैननपरैं। चलतेपवनपातसौंलरैं ॥ जितातितकलहकलहकीधूम। व्हैंगईकलहमईसबभूम ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ कलहचतुरआवतातिन्हैं। बिविधिकलहकेजोग ॥ बुद्धिवान जिनकौंकहत। कलिजुगकेसबलोग ॥ ८५ ॥ चौपई ॥ गईजुमिटिभु वकीछबिरास। नहींकरतकछुसमैंप्रकास ॥ ताहूमैंवर्षानाहिंमूर।

चतुर्मासनभमांडितधूर ॥ ८६ ॥ पवनतीव्रलागतनिसिसीत। सबैं
निरखिउपजतचितभीत ॥ निकसतगगनकहूंजोबादर । ताहि
दौरिसबदेखतसादर ॥ ८७ ॥ लागेपरनकालपरकाल। जगतमी
नजलबिनजंजाल ॥ सकुचिभूमिअनधनमिटिगयो । बढिदलिद्रस
बकौंदुखभयो ॥ ८८ ॥ जोघनबरसततोइहिंभाय । घोरघटाकारी
घुमडाय ॥ झूंमिझूंमिझुकिझुकिसरसाय। एकसींवछींटैंबरसाय८९
दूजीसींवनिकटतरसाय। जातहैंबादरबहुरिविलाय ॥ मींड़तहाथ
कहैंजगहाय । इंद्रहिंगारीदैंअकुलाय ॥ ९० ॥ अंबकदंबादिक
नहिंहोत । मिटिगयेभलेद्रुमानिकेगोत ॥ मुंजाकैरजवासारास।
रहिगयेथोहरबंबुलफरास ॥ ९१ ॥ अवनीकीसोभाभईदूर । रहिग
ईएकधूरहीधूर ॥ महाक्षुधितजगतजिपुरग्राम । जातहैंसूनेंक
रिनिजधाम ॥ ९२ ॥ लागेकरनिपरबतनिवास । कंदमूलफलईंध
णआस ॥ महलघटासमतेपुरग्रामनि । तिनमैंतियजनुदमकतिदा
मनि ॥ ९३ ॥ तहांघासघरकतहैंमूक । बोलतनिसदिनचील्हउलू
क ॥ बढतअमंगलमिटिगोमंगल । जितातितअतिदुखदुसहउदंग
ल ॥ ९४ ॥ नितअपसुगनानिसौंचितचंपैं। उल्कापातभूमिहूंकंपैं ॥
दिवसमृगालरैनकौंकाग । वचनलगतश्रवनानिकोंआग ॥ ९५ ॥
पौनसीतघनघामअनर्थ। एनहिदूरिकरनसामर्थ ॥ राजदंडअरिचो
रनिकरिकैं। नितप्रतिहियोप्रजाकोधरकैं ॥ ९६ ॥ एतेपैंउपजतव
पुरोग। तनइंद्रीबलछीनेलोग ॥ मायापापनचायैंनचैं । त्रिविधिता
पमैंसबजगतचैं ॥ ९७ ॥ निसदिनरहैंसकलदुखभोय । कबहुनको
ऊनिर्भयहोय ॥ यापरहानलगीलघुआव। डोलतकालविलोकतदाव

॥ ९८ ॥ जोकोइसकलजननिसुखदायक । वहोगुनपूरतसबविध लायक ॥ सोभोगतयहआयुनिधान । बरसवीसकैंतीसप्रमान ॥९९ जोजगकौंकंटकदुखदैंन । सोवहुजीवैंबेगमरैंन ॥ कलिजुगदुखही दुपकोजोग । दुखहीकीमूरतिसबलोग ॥ १०० ॥ महादोषनिधहैं कलिकाल । कहांलगिकहियेदुखजंजाल ॥ १ ॥ दोहा ॥ एतेऔगु नतैंउगुन । औगुनभरेअनेक ॥ तऊनकलिसमजुगकोऊ । तामैंअ तिगुनएक ॥ ३ ॥ जोहरिहोतप्रसन्ननाहिं । कीनैंतपबहोकाल ॥ त नकभक्तिकलिमैंकियैं । रींझैमहादयाल ॥ ४ ॥ चोपई ॥ तातैंअव मनहरिभजिभाई । ताजिदिनादिनजगदुखसरसाई ॥ जोतूंकछुचा हैजगभोग । अबनकहूंमिलिवेकोजोग ॥ १०५ ॥ खबरनपलकी तनछिनभंग । कलसेटूटिछूटिहैअंग ॥ अरुभुवमंगलसुखहूगये । ठा मठामदुखथानाठये ॥ १०६ ॥ कलहकलपनांदावधावतजि । गृह मैंनिसप्रेरहिंकैंहरिभाजि ॥ यथाशक्तिकछुआतिथदीजैं । जतनसा धिवहोसतसंगकीजैं ॥ १०७ ॥ श्रवणमहातमसबतैंभारी । जातैंब ढतभक्तिसुखकारी ॥ कथाजथाऔकासप्रमान । सुनियेश्रीभागो तपुरान ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ जपतपसंजमनेमव्रत । जोगजज्ञकर पूर ॥ भक्तभागवतसंगबिन । भक्तिनउपजैंमूर ॥ १०९ ॥ सुनैंभा गवतभक्तहैं । भक्तभयेहोयचैन ॥ जगतमांझआसक्तक्यौं । दुख वितवैंदिनरैन ॥ ११० ॥ समृतवेदपुरानहैं । सबहीहरिकेअंग । रंग नलागैंभक्तको । बिनाभागवतसंग ॥१११॥ जगतभक्तबहोभांतिक ह । नानामतकेमांहि ॥ सुकमुखकेविनफलद्रवैं । व्रजरसपावैंनांहि ॥ ११२ ॥ नागरीदासविचारियह । अफलजातहैदेह ॥ चापिभा

गवतअमृतफल । जनमसफलकरिलेह ॥ ११३ ॥ चौपई ॥ जोगृहमैंअतिकलहकलेस । करिनहिंसकैंभक्तिलवलेस ॥ तोबसिब्रजवृंदावनमांही । प्रेमभक्तिरंगलगैंतहांही ॥ ११४ ॥ कवित ॥ काहेकौंरेनानामतसुनैंतूंपरानन केतैंहीकहातेरीमूढगूढमतिपंगकी । वेदकोविवादनिकोपावैंगोनपारकहूं छाडिदेहुआसासबदानन्हानगंगकी ॥ औरसिद्धिसोधैंअबनागरनासिद्धकछूमानिलेहुमेरीकहीबारतासुढंगकी ॥ जाहुब्रजभोरेकोरेमनकौंरंगाइलैरेवृंदावनरैनीरचीगौरस्यामरंगकी ॥ ११५ ॥ चौपई ॥ जद्यपितूंउतहूंचालिजैंहैं । रसिकमिलैंबिनरसनहिंपैहैं॥बिनउहिंठांरंगेरसिककहांहैं।रसिकरतनकीखानितहांहैं ॥ ११६ ॥ कवित ॥ आयआयजांहिकोरिकोरिकअजाननरपावतनबस्तुरहैंनीरीअरुन्यारीजू । संतमनमानिकहारितनीलपीतस्वेतमिलेज्यौंज्यौंधूरमैंत्यौंक्रांतभईभारीजू ॥ रींझिरींझितिहैंउरधारतसुजानएकमैंतोमतिमेरीवहिनागरपैंवारीजू । काहूकौंनसूझैंतोनसूझोहैंप्रकासमानवृंदावनरत्नखानिजौंहरीविहारीजू ॥ ११७ ॥ दोहा ॥ ऐसेवृंदाविपुनबासि । करिरसिकनकोसंग ॥ ज्यौंचितचटकीलोचढैं । गउरस्यामदृढरंग ॥ ११८ ॥ कवित ॥ जमुनानदीसीतोनदीसीकोऊऔरतहांभक्तिरसरूपमईजाकोजलसोतहैं । कूलकूलफूलफूलझूलकुंजलतारहींबोलतचकोरमोरकोकिलाकपोतहैं ॥ रसिकसुजानसंतहरिगुनगानकरैंहरैंतापात्रिविधिसुआनंदउदोतहैं। जगदुखदंदतामैंदुखीकहानागरतूंबसिऔसेवृंदावनसुखीक्यौंनहोतहैं॥११९॥सहजैश्रीकृष्णकथाठौरठौरहोततहांकीरतनधुनिमीठीहियकेउलासतैं । स्यामास्यामरूपगुनलीलारंगरंगेलोग

तिनकैंनध्वांतउरप्रेमकेप्रकासतैं ॥ एरेमनमेरेचेतउनहींसोकारिहेत नागरछुटायदेतजगदुखपासतैं । कामक्रोधलोभमोहमच्छरताराग दोषचाहदाहजैहैंसबवृंदावनवासतैं ॥ १२० ॥ इतिश्रीवृंदावन प्रगटसरूप ॥

॥ अथ गोपितरूप वर्ननं ॥

॥ कवित्त ॥ कुंजनिकलपतरुरतनजाटितभूमिछविजगमगतज कीसीलगैंकामकौं । सीतलसुगंधमंदमारुतबहतनितउडतपरागरैंन चैंनसबजामकौं ॥ देवबधूद्रूमनिमैंकोकिलासरूपगावैंदंपतिबिहार बीचवृंदाबननामकौं । नागरियानागरसुदोनैंगरबांहींतहांमनरूपर वनीव्हैंदेखिऐसैधामकौं ॥ १२१ ॥ दोहा ॥ नागरियानितचित बसो । यहवृंदाबनथान ॥ नसोजक्तआसक्तमन । मायामदरस पान ॥ १२२ ॥ सतरासैंपच्याणवैं । संवतसावणमास ॥ कलि बल्लीबैरागकी । करीनागरीदास ॥ १२३ ॥ इति कलिबैरागबल्ली ॥

॥ अथ अरिल्लपच्चीसी लिख्यते ॥

संगाफिरतहैंकाल भ्रमतनितसीसपर । यहतनअतिछिनभंगधुंवे कोधौंलहर ॥ यातैंदुर्लभसासनवृथागमाईयैं । व्रजनागरनंदलाल सुनिसदिनगाइयैं ॥१॥ चलीजातहैआयुजगतजंजालमैं । कहतटेरि कैंघरीघरीघरीयालमैं॥समैंचूकिबेकामनफिरिपछिताइयैं। व्रजना० ॥ २ ॥ सुतपितपतितियमोहमहादुखमूलहैं । जगमृगतृष्णादेखिर ह्योक्यौंभूलहैं ॥स्वपनराजसुखपायनमनललचाइयैं । व्रजना०॥३॥ कलहकलपनांकामकलेसनिवारनौं । परनिंदापरद्रोहनकबहुविचा

रनौं ॥ जगप्रपंचचटसारनचित्तपढाइयैं। व्रजना० ॥ ४ अंतरकुटिलकठोरभरेअभिमानसौं। तिनकेगृहनाहिंरहैंसंतसनमानसौं ॥ उनकीसंगतिभूलनकबहूजाइयैं। व्रजना० ॥ ५ ॥ कहूनकबहूंचैनजगतदुखकूपहैं। हरिभक्तनकोसंगसदासुखरूपहैं ॥ इनकैंढिगआनंदितसमैंविताइयैं। व्रजना० ॥ ६ ॥ कृष्णभक्तिपरपूरनाजिनकैंअंगहैं। दृगनिपरमअनुरागजगमगैंरंगहैं। उनसंतनकेसेवतदसधापाइयैं। व्रजना० ॥ ७ ॥ ब्रजवृंदावनस्यामपियारीभूमिहैं। तहांफलफूलनिभाररहैंद्रुमझूमिहैं ॥ भुवदंपतिपदअंकतिलोटलुटाइयैं। व्रजना० ॥ ८ ॥ नंदीश्वरबरसानौंगोकुलगांवरो। बंसीबटसंकेतरमततहांसांवरो ॥ गोवर्द्धनराधाकुंडसुजमुनांजाइयैं। व्रजना० ॥ ९ ॥ नंदजसोदाकीरतिश्रीवृषभानहैं। इनतैंबडोनकोऊजगमैंआनहैं। गोगोपीगोपादिकपदरजधाइयैं ॥ व्रजना० ॥ १० वंधेअलूखलल्लालदमोदरहारिकैं। विश्वदिखायोवदनवृच्छदयेतारिकैं ॥ लीलाललितअनेकपारकितपाइयैं। व्रजना० ॥ ११ ॥ मेटमहोछोइंद्रकुपितकीन्होमहा। जबवरस्योजलप्रलयकरनकहियेकहा ॥ गिरधरकरीसहायसरनजिहिंजाइयैं। व्रजना० ॥ १२ ॥ बकीबकासुरआदिकअसुरअभावनैं। हतेसदगतेकियेस्याममनभावनैं ॥ रक्षिकघोषगुपालसुनाहिंविसराइयैं ॥ व्रजना० ॥ १३ ॥ निरविषजमुनाकरी दवानलकौंपियो। नंदत्रासअहिहरी सबनकौंसुखदियो ॥ आरतिवोपनिवारनसौंमनलाइयैंव्रजना० ॥ १४ ॥ मंडलगोपसमाजस्यामतिनमांहिंहैं। हंसिहंसिजैंवतछाकढाककीछांहिहैं ॥ विधिमोहनकोतूहलध्यानसमाइयैं। व्रजना० ॥ १५ ॥

मोरपच्छधरगुंजधाततनलांवहीं। गोपवेसगोचारसहतबलगांवहीं॥
रजमंडितमुखध्यानपरमसचुपाइयैं । व्रजना० ॥ १६ ॥ रोक
तगैलगुपालदानमिसलैंछरी । गहबरबनअंधियारहारतियहैंकरी ॥
नैनवैनतनउरझनमनउरझाइयैं । व्रजना० ॥ १७ ॥ तियम
नमाखनहरतजुधरतदुराइकैं । देवीपूजतलीन्हैंचीरचुराइकैं ॥ इहीं
चोरकौंचाहिचित्तचुरवाइयैं । व्रजना० ॥ १८ ॥ सुनिमुरलीव्र
जबधूभईबसकामहैं । थिरचरगतिविपरीतिबिवससुरवामहैं ॥ मा
दिकधुनिसुमिरतमनमादिकछाइयैं । व्रजना० ॥ १९ ॥ सरदनि
सासुखरच्योरासबिसतारिहैं । गतिसमाविचलचित्तभयेत्रिपुरारिहैं॥
रसानंदआवेससुमिरसरसाइयैं । व्रजना० ॥ १९ ॥ अन्योन्य
संकुलितबाहुमृदुपदचलैं । मंडितचक्राकारहारकुंडलहलैं ॥ विस्मै
देवकुतूहलक्यौंविसराइयैं । व्रजना० ॥ २१ ॥ गुनसागरसंगीत
गतनआतिछबिबढी । वोलमधुरथेईथेईलोलभृकुटीचढी ॥ कामबि
जइलीलारसप्रानभिजाइयैं । व्रजना० ॥ २२ ॥ नृत्तपेदरसम
सेधसेजमुनातवैं । बिरहतजनुगजसंगजूथकरनीसवैं ॥ छबिछींटैं
छिरकनकीसुमारिसिहाइयैं । व्रजना० ॥ २३ ॥ राधाहितव्रजतज
तनहिंपलसांवरो । नागरनित्तबिहारकरतमनभावरो ॥ राधाब्रज
मिश्रतजसरसनिरसाइयैं । व्रजना० ॥ २४ ॥ व्रजरसलीलासुनत
नकबहुअधावनौं । ब्रजभक्तनिसतसंगतिप्रानपगांवनौं ॥ नागरि
याव्रजबासकृपाफलपाइयैं । व्रजनागरनंदलालसुनिसदिनगाइयैं ॥
॥ २५ ॥ १५ ॥ इति श्रीअरिलपच्चीसीसंपूर्णम् ॥

अथ छूटकपद लिख्यते ॥

श्रीहरिजयति॥ हमव्रजसुखीव्रजकेजीव॥ प्रानतनमनंनैनसर्वसु राधिकाकोपीव ॥ १ ॥ कहांआनंदमुक्तमैंइहकहांमृदुमुसकान॥ कहांललितनिंकुंजलीलामुरलिकाकलगान ॥ २ ॥ कहांपूरनसरदरजनीजौन्हजगमगजोत । कहांनूपुरवीनधुनिमिलिरासमंडल होत ॥ ३ कहांपांतिकदंबकीझुकिरहीजमुनावीच । कहांरंगविहारफागुनमचतकेसरकीच ॥ ४ ॥ कहांगहवरविपनमैंतियरोकिवोमिसदान ॥ कहांगोधनमध्यमोहनचिकुररजलपटान ॥ ५ ॥ कहांलंगरसखासोहनकहांउनकोहासि ॥ कहांगोरसछांछिटैंटी छाकरोटीरासि ॥ ६ ॥ कहांश्रवननकीरतन जगमगानिदसधारंग ॥ कंठगदगदरौमहर्षन प्रेमपुलकितअंग ॥ ७ ॥ जहांएतीवस्तपइयतबीचवृंदाधाम ॥ हौंवऐसेव्रजसुखदसौंवाहिरैंवेकाम ॥ ८ ॥ दासनागरचहतनहिंसुखमुक्तिआदिअपार । सुनहुव्रजवसिश्रवनमैंव्रजवासननकीगार ॥ ९ ॥ १ ॥ व्रजकेपरमसनेहीलोग ॥ गारीदैंहसिमिलतगहवरेअंतरप्रेमसंजोग॥ रागरूपअख्खरवनलीलायहतिनकोनितभोग ॥ नागरीदाससदाआनंदीसुपनैंहूंनहिंसोग ॥ १ ॥ करियेव्रजवासिनसौंनेह॥ नखसिखभरेप्रीतरससागर आवतकवहुनछेह । नंदनंदनप्यारेकेप्यारोनितमतवारेरूप । नागरीदासमिलावतमोहनरसिककुंवरव्रजभूप ॥ २ ॥ जौकोऊव्रजलीलारसचाखैं ॥ ताकोफिरिकहुंऔरकथामैंकवहुनमनअभिलाखैं ॥ खटरसछप्पनभोगनभावतजोव्रजगोरसपावैं । हितव्रजरसिकउपासिकसौंकरिआनसौंमननमिलावैं ॥ नागरियाव्रजमहमारसनांतनकहुंजातकहीं

नां ॥ बिनरसरूपाभक्तिजक्तज्यौंमुरधरजेठमहीनां ॥ ३ ॥ हमा
रैंमुरलीवारोस्याम ॥ बिनमुरलीबनमालचंद्रिकानाहिपहिचानत
नाम ॥ गोपरूपवृंदाबनचारीब्रजजनपूरनकाम ॥ याहीसौंहितर्गने
त्तवढोनितदिनदिनपलछिनजाम॥ नंदीसुरगोवर्धनगोकुलबथ्योनभ
विश्राम ॥ नागरीदासद्वारिकामथुराइनसौंकैसोकाम ॥ ४ ॥
चरचाकरीकैसैंजाय॥ बातजानतकछुकहमसौंकहतजियथहराय ॥
कथाअकथसनेहकीबिनउरनमावतऔर ॥ बेदसंमृतिउपनिषदकौ
रहीनाहिनठौर ॥ मौनिहींमैंकहनिताकीसुनतश्रोतानैंन ॥ सोबना
गरलोगबूझतकहिनआवतबैंन ॥ ५ ॥

अथ राधावल्लभोजयति ॥

आयोआयोरेकलिकालआयो॥ धरमहिंमारउठावतआतुरअधरमरा
जसवायो ॥ अमरमानिछिनभंगुरतननरपापनकरतसकायो ॥ छ
लकरिपुत्रपिताकौंमारतपितापुत्रहतिकैंसुखपायो ॥ औरजीवकी
कौंनचलावैंहिंसाहीकोस्वादसुहायो ॥ जहांतहांद्रोहकलहकर्कस
तामत्सरक्रोधउरनिउफनायो ॥ महाअमंगलघरघरदीसतरुदित
बदनबिलखायो ॥ कूकरकागअलूकभयानकसदासब्दरहैंछायो ॥
अल्पवृष्टआकासनिहारतत्राहित्राहिजगबचनसुनायो ॥ व्हैंगइकु
टिलबुद्धिजीवनकीलोभमोहकैंहाथबिकायो ॥ रहतनहटढतापनका
हूकोभवनकामतननाचनचायो ॥ तातैंगृहतजितीरथबसियेरहैं
सतसंगसदासुखछायो ॥ दुर्लभमहापायनरदेहीचूक्योसमैंसोई
पछितायो ॥ ठाकुरनागरीदासपाससौंइहउपदेसकहायो ॥ १ ॥

देखोसबजीवनकौंप्यारी ॥ महाघोरकलिजुगकीभामिनकलहभईस
बहीकैंप्यारी ॥ लगीरहैंडरअंतरमांहींभावतनांहिकरीछिनन्यारी ।
गहीकौंसर्बसकरिजानैंसकलसुखनकीबातबिगारी ॥ यहजार
नैत्तलरावैंफिरिराखैंज्यौंकीत्यौंयारी ॥ नागरियाकेवलभ
कहां
नईहिदारीदूरिनिकारी ॥ २ ॥ बिनहरिसरनसुखनहिंकहूं ॥ छा
डिछायाकलपद्रुमजगधूपदुखक्यौंसहूं ॥ कलिकालकलहकलेसस
लितावृथातामधिबहूं ॥ दासनागरठौरनिर्भै कृष्णचरनानिरहूं॥३॥
सबसुखस्यामसरनैंगयैं ॥ औरठौरनकहूंआनंदइंद्रहूकैंभयैं ॥ दुखमू
लएकप्रबर्तिमारगकहिनमानतकोय ॥ सुखपग्योजिहिंनिबर्तिकौंम
नजांनिहैंदुखसोय ॥ सतसंगअंबुजब्रजसरोवरकीरतनसुखबास ।
कीजियैंहरिबेगतिनकोभंवरनागरिदास ॥ ४ ॥ अबहौंसरनकेवल
स्याम॥घोरकलिकेतेजकोतनसह्योजातनघाम॥लीजियैंतरुचरनछा
यामूलसुखाविसराय॥ अजितमनतैंकामसुभकछुव्हैंनव्हैंछिनजांम॥
सबनिलीनोजीतिहूंभयौभीतसरतनकाम । अबरहैंनागरिदासकैंर
टलगीरसनांनाम ॥ ५ ॥ सबदुखगेहगेहसही ॥ जानिअनुभवश्रव
नसुनिफिरिदेखिनैननिबही ॥ महाप्रगटपुरानअजहूसुनौंशुकमुपक
ही ॥ हरषसोकप्रवर्त्तमारगमिटतक्यौंहौंनहीं ॥ दुखमूलबिबिधिप्र
कारबातैंबहोतकहनीरही ॥ घरमिलैंनागरिदासठाकुरतऊसुखवन
महीं ॥ ६ ॥ दुसहदुखजगसिंधुमैंहौंपरचोब्याकुलहाय ॥ भवनभंव
रतैंनिकसिसकतनदयोअधिकभ्रमाय ॥ बंधीसिलगरइंगरैंपरसोब
ढ़ाईलोक ॥ नैंकइतउतउकससकतनदेतनीचैंझोक ॥ बहोरिपद
करगातिथकतअतिअरझिलाजसिंवार॥ जलजीवचौंटतकुटंबकारज

विबधाबिबधप्रकार ॥ अप्राधमूरतग्राहकीधरिगह्योदृढपगमर्म । गड
तकहरकरालदाढैंसेईभोगअकर्म ॥ रौंमरौंमनिपीरपूरसरीरधीरजनै
कास । अतिअमूझनिकलमलीरुकिघुटतनासास्वास ॥ अहोकृ
नासिंधुस्वामीलेहुमोहिनिकास ॥ नांवनागरिदाससुनिकोउ ह्वोनभ
हिंउपहास ॥ ७ ॥ क्यौंनहिंकरैंप्रेमअभिलाष ॥ याविनमिलैंननंददु
लारोपरमभागवतसाष ॥ प्रेमस्वादअरुआनस्वादयौंज्यौंअकडोडी
दाष ॥ नागरिदासहियेमैंऐसैंमनबचक्रमकरिराष ॥ ८ ॥ क्यौंनहिं
करतउपायभक्तिको ॥ पावतकियैंरूपआनंदीआनंदउरहिअपा
रलगतको॥ देहकुटंबआपकेस्वारथदीसतहैंसबमोहिठगनको॥ नाग
रीदासबैठिसतसंगतिभेटिदेहुदुखदाहजगतको ॥ ९ ॥ माईनीको
रसगोपालको ॥ औरैंरसकिहिंकामसखीरीगृहव्योहारजंजालको ॥
याकेगुनवाकीरूपमाधुरीसुमिरनप्रानरसालको ॥ नागरियाताजिगं
गकौंनकरैंह्वांवनडोलीपालको॥१०॥ परयोकाममनसौंआय ॥ महा
मनकीलगनिबिननाहिंलहतमोहनराय ॥ सोबचंचलनीचसंगीछिन
नकहुंठहराय ॥ कबहुकुटिलकठोरकबहूसिथलथिरव्हैंजाय ॥ कबहु
कामानलजुतपकैंलाषज्यौंपिघलाय ॥ निपटआतिगतिबिकटमनकी
कहूंकाहिसुनाय ॥ कहूंसोईसामुहैंदुखउठैमनकोगाय ॥ थक्योझौं
झटकरिबहुतविधिकछूबसनबसाय ॥ मूंदिलोचनसरनव्हैंबिचागि
रयोगुरकैंपाय ॥ दासनागरिकोजुहरिसौंदेहुचित्तलगाय ॥ ११ ॥ ह
मतैंभजनगयोहैंभाजि ॥ एकघरीओकासनपावैंघेरिलयेगृहका
ज ॥ हियेअविद्यावाहिरअरथीदोऊतनकनआवैंबाज । नागरीदास
कोकहाजायहरिजोतुमकोआवैंनहिलाज ॥ १२ ॥ समयोहेरत

कहाभजनकोसमयोकबहुनपावैंगो ॥ दिनसमयोजगद्दुंदमैंबीततनि
समनजागभ्रमावैंगो ॥ कृष्णकुंवरसुमिरनकोआछैसमयोकबहुन
ावैंगो । नागरीदाससमोहेरतहीअंतसमोआयजावैंगो ॥ १३ ॥
रा॰ मोहीखबरनहिंमेरीहौंजुकौंनहौंकिनमैं ॥ जोभावैंसोईमोहिकी
जैहौंअबठहरोंतिनमैं॥ भगतनमैंकोउकहैंमोहितोभगतगंधनहितेरी।
जोकेवलपततनमैंतोक्यौंतिलकछापतनतेरी । मनसंभ्रमकछुस
मझिपरतनहिंअलगथलगरह्योझूल ॥ नागरिदासनांवदैकैंहरिकरनी
दईनमूल ॥ १४ ॥ गोयाआसनावनथेकभी ॥ तोतेकीसीआंखिगई
फिरिदेखतदेखतअभी ॥ किसीकाकछुचलतानाहींहिकमतथकीस
भी ॥ नागरीदासगलतअसनाईगायबहुईजभी ॥ १५ ॥ कहांवेसु
तनातीहयहाथी ॥ चलेनिसांनबजाइअकेलेतहांकोऊसंगनसाथी ॥
रहेदासदासीमुखजोवतकरमीडैंसबलोग॥ कालगह्योतबसबहिनछा
ड्योधरेरहेसबभोग ॥ जहांतहांनिसदिनबिक्रमकौंभट्टथट्टाबिरद
त्ति । सोसबबिसरिलगेएकैंरटरामनामकहैंसत्ति॥ बैठनदेतहुतेमाखी
हूंचहुंदिसचंवरसचाल ॥ लयेहाथमैंलट्ठाताकोकूटतामित्रकपाल ॥
सौंधैंभीनौंगातजारिकैंकरिआयेबनढेरी ॥ घरआयेतंभूलिगयेसब
धनिमायाहरितेरी ॥ नागरीदासबिसरियेनांहींयहगतिअतिअसुहा
ती ॥ कालव्यालकोकष्टनिवारनभजिहरिजनमसंगाती ॥ १६ ॥
तिन्हैंकोरिकोरिकाधिरकार । रागदोषमतसरितातजिकैंस्मृतिजानि
मानीनहिंहार ॥ सुन्योभागवतभक्तकहावतकछुइकरीतिकरीबी ॥
पैंसुखसाररूसतसंगतिफलआइनांहिगरीबी ॥ हियेअभिमानगोपध
नगाडयोताकोसबैंबिकार । जोसचुपयोचैहैंतोउरसौंदुरधनदेहनि

कार॥ साधुबचनसुनिदीनभयेविनक्यौंहुंनजारिनमिटैंगी ॥ नागरी
दासबहुतपछितैंहोदुखमैंदेहपिटैंगी ॥ १७॥ जानतप्रीतिस्वादहरि
राई ॥ रसकनिमनिहितरसआस्वादीमोहनसबसुखदाई ॥ जावन्स
कोयैंजग्यजाचंग्यासुरमुनिमतितरसाई ॥ जिंहिंजग्यपतिनन्हिंथानभ
मग्रीमांगिमांगिकैंपाई॥कर्नद्रौनदुर्जोधनकैंगृहभोजनबिधिनसुहाई॥
खाएबकुलहिंविदुरबधूकरलहीस्वादसरसाई॥ बिप्रसुदामातंदुलल्या
योसजनसुहृदगुरभाई ॥ छप्पनभोगतजितिनकौंजैयैंकारिक
रिबहुतबडाई ॥ अर्पतरमाबिबिधिबिंजनबिचद्वारावतठकुराई॥ तद
पिमधुरताब्रजगोरसकीभूलतनांहिभुलाई। गोपीवरजितरजिताडत
तऊचोरिचोरिदधिखाई ॥ वारसकीफिरिसुधिआईजबअंखियांजल
भरिआई ॥ परमप्रीतिआधीननंदसुतजानतप्रेमसगाई। नागरीदास
कोऊक्यौंविसरैंऐसोकुंवरकन्हाई ॥ १८॥ जिंहिंजनभक्तसुधारस
पीयो॥ सुर्गराजसुखगेहकाजमैंफिरमनकबहुंनदीयो ॥ बेदकलपत
रुफलमाधवतजिजगविपफलनहिछीयो । नागरऔरसंगनाहिराचैं
साधसंगतिनाकियो॥१९॥ जबलगहीजगकोसुखपागैं॥तबलगजिय
हरिभगतसंगकोरंगनहींकछुलागैं॥ गृहव्यौहारखेलगुडियनकोजब
लगहोंजियभावैं ॥ तबनवजोबनव्हैंमदरामयतियपियकंठलगावैं॥
तिनचाख्योअतिस्वादअलौकिकस्याममधुररसपाक । नागरीदास
लगतजाकौंफिरऔरबस्तुसबआक ॥ २० ॥ हरिविमुखनकेसंगतैं
भलीसउचकीठौर। उनपैंकलहकलेसबढतहैंवहांनकोऊऔर ॥ अ
तिएकंतस्थलआनंदमयगुणातीतनिरद्वंद । तिंहठांव्हैंनिश्चिंतबैठियें
पटनासामुखमुंद॥ तनमनकोदुखदूरहोयजहांपरमचैनसरसइयैं। ना

गरन्यारेबैठजगतसैंचितसुभवोरलगईयैं ॥ २१ ॥ सबदुखबडेकहा यैंहोय॥इंद्रसबमैंबडोकहियतरहतनितिदुखभोय ॥ उग्रतपरिखिकर नसुनिकैंलुटतसेझअंगार । असुरडरअमरावतीतजिभजतबारंबार ॥ राधिकृत्यातैंपलानैंदुरेकमलमृनाल । अंगभगमंडितभयोगिरिगयेनृ पणविहाल॥ बुझ्योदीपकबडोजैंसैंबडोकहियतुभूल । मानिलघुहरि सरननागररहैंसोसुखमूल ॥ २२ ॥ रागधनासरी ॥ करिहैंवेईसहाय हमारी ॥ जिंहिंप्रभुजरासंधकेगृहलैंबहोनृपदुसहआपदाटारी ॥ का राग्रहविमुखनकेसंगकोहरिनिवारिहैंअबदुखभारी । जमुनातटसत संगतिदैंहैंकरुणानिधिनागरसुखकारी ॥ २३ ॥ श्रीजमुनाजमुनाक हियैं ॥ जमुनानीरपरसियैंनितिबसिजमुनातीरतीरहीरहियैं ॥ जमुना जलअचवतहीतनकेपापजाहिउरभक्तिहिलहियैं । नागरीदासत्रास जमुनाव्हैंजमुनापदउपासदृढगहियैं ॥ २४ ॥ स्वप्नपद ॥ रसनाह रिगुनलगनलगी ॥ कथाअमृतमधुररसआनंदपगनिपगी ॥ पलकां तरविरहअखियांअजकजगनिजगी ॥ कृपानागरताकीमतियौंप्रीत खगनिखगी ॥ २५ ॥ मुनिसबलोकपावनकरे ॥ प्रगटश्रीभागवत कीनैंकरुणासागरढरे ॥ ल्यायभागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे ॥ तुम जुसबउरभवनभवनमैंभक्तिदीपकधरे ॥ कृष्णचरितबिचित्ररसमद प्रेमगहवरभरे ॥ सहजश्रीशुकचरननवकादासनागरतरे ॥२६॥ राग सोरठ॥इकताल॥रेमनजनमकरमगुनगाय ॥ लोकबेदविस्तारसारबि ननीरसकथाबहाय ॥ कैंसैंबालकेलिकोतूहलगोकुलमांझकरे ॥ कैंसैं दुरिघरघरदधिचोरयोकैंसैंचीरहरे ॥ कैंसैंब्रजबृंदावनविहरेकैंसैंगाय चराई । कैंसैंजमुनाकूलकदमतरमोहनबैनबजाई॥ कैंसैंजगपतिननि

पैंभोजनमांगिलयोबलबीर ॥ कैंसैंढाकानिकीछहियांमिलिछाकखा तआभीर। कैंसैंसुंदरहस्तकंवलपरसातद्यौसागिरिधारयो ॥ कैंसैं बारबारब्रजजनकोबहोबिधिकष्टनिवारयो ॥ कैंसैंसरदनिसाबन कीनैंरासकेलिआनंद ॥ कैंसैंकामबिजैकरिर्लीनौंथकितरह्योनभ चंद ॥ कैंसैंघोखनिवासनिकौंहरिछुखदीनौंबहोभांत। नागरीदा सकहोसोनिसदिनजातहैंआयुबिहांत ॥ २७ ॥ मेरैंयेईबेदव्या स ॥ श्रीहरिबंसरुव्यासगदाधरपरमानंदनंददास ॥ श्रीहरिदास बिहारानिदासबिठलविपुलसुजांन ॥ रामदासनाभादामोदरअ लिभगवानसखीभगवान ॥ चतुर्भुजदासदासमेहापुनिश्रीभटच तुरबिहारी ॥ प्रीतमरसिकरसिकबल्लभअरुध्रुवरसरीतिउचारी ॥ तुलसीदासमीरांमाधवअरुउभैंनागरीदास। आसकरननरसीवृंदाव नकविमाधुरीप्रकास ॥ कृष्णदाससूरगोविंदअरुकुंभनछीतुस्वामि अनुरक्ता। श्रुतिपुरानमेरैंइनकेपदहौंश्रोताएवक्ता ॥ तजिइनके पदअर्थसुनैंकोनानामतिविभचार ॥ मूलसासत्रसिधक्यौंहरैंपदछा डिअमृतफलसार ॥ रसनाश्रवननिमैंइनकेपदरहोंहियमैंनिर्दूखन ॥ नागरियाइनकीपदरजसोहोहुभालमोभूखन ॥ २८ ॥ होतोनहीं भागवतपुरान ॥ तोइहिंतनफूटेअरघासेवृथाभयेहेकान ॥ सबभ्रम तेबिनपायेमारगबीचजगतढमढेर ॥ अंधढुंडज्यौंव्हैंफिरतेकरिमुं डमुंडभटभेर ॥ भक्तिसंगसुखबिननरसगरेबातश्रावकेजंत्र ॥ नाग रीदाससारसर्बोपरसाधुभागवतमंत्र ॥ २९ ॥ होहरिनींबहुफूलचुके॥ मत्तभंवरनवकुसमगंधपरनिसदिनझूलचुके । रितुबसंतबैसाखबि तित्योतुमधौंभूलचुके ॥ नागरीदासकुसंगतकेनहिंमिटिदुखसूलचु

के ॥ ३० ॥ कलिकेजनमबिगारतलोग ॥ मूरखमहादोउवेखोव
तहरिकीभक्तिबिखैंसुखभोग ॥ कलहकलेसकरतदिनबितवताविवि
धिबिपतिआस्वादी । ऐसैंहींसबआयुबितावतटेवतजतनहिंबादी ॥
दासीदासकुटंबमित्रसबयाहीदुखरसपगे । नागरकोउनांहिसमझा
वतसबस्वारथकेसगे ॥ ३१ ॥ कलिमैंतेक्यौंभक्तकहावैं । वृद्ध
होयजेबिमुखसंगफिरिदेसदेसउठिधावैं ॥ होतनिरादरदुखनाहिमा
नतनींवदेतअतिऔंडी ॥ चेततनहींबजतासिरऊपरयहघरियालका
लकीडौंडी ॥ बिनुजमुनापरसैंक्यौंउतरतस्वेतकचनाविचधूर ।
नागरस्यामबैठिनहिसुमरातिव्रजकोजीवनिमूर ॥ ३२ ॥ कलिकेलो
गकुमंत्रीसिगरे ॥ देतकुमंत्रबिगारतमनकौंआपुनमनकेबिगरे ॥ ए
कपेटकैंकाजहिखोवतदोऊलोकसुखअनुचर ॥ निजस्वामीकौंलियैं
फिरतहैंज्यौंगाहिघरघरबनचर ॥ दुखअपमानकोव्यापतनाहींलोभी
लोभसुखारे ॥ पापभारसबवाकौंलागतदासरहतहैंन्यारे ॥ चतुरथ
आश्रमआयदेतफिरिलाखबरसकीनींव ॥ नागरीदासजानिउनसब
कौंमहापापकीसींव ॥ ३३ ॥ कदलीबेरढिगपाछितात ॥ पवनपर
सतहलतत्यौंत्यौंगडतकंटकगात ॥ पीराबिनुवहहरीनितयहनीरबिनु
कुम्हिलात ॥ संगनागरतजैंताकोहोयजबकुसरात ॥ ३४ ॥ ते
क्यौंहंसतहांसुखपावैं ॥ स्वेतकासकोबिमलसरोवरजांनिजांनिकैंआ
वैं ॥ जहांकंवलजलमुक्तानांहितप्रढीमितहांपावैं । नागरअपनीभू
लकौंनकौंकहिकहिकैंपछितावैं ॥ ३५ ॥ भयोदुखीगजदौंसौंद
ह्यो ॥ दौरिचल्योमुरधरदिसमूरखनीरनकहूंलह्यो ॥ छाडिनृवर्तजल
परयोप्रवर्त्तथलदुखनहिंजातसह्यो ॥ नागरआयस्यामसलितातटभ

रिआनंदरह्यो ॥ ३६ ॥ जिनकौंझूठलग्योसंसार ॥ जगसौंनिसपृह सतसंगतिकरिलेतसदासुखसार ॥ तेकलेसमैंपरतनकबहूंसारअसार विचार ॥ नागरीदासकुसंगतिकरिकैंकौनभयोनहिख्वार ॥ ३७ ॥ सदासुखहरिभक्तनिकैंमांहि ॥ दशरथसुतअरुनंदनंदनकीबातानिसमैं बितांहिं ॥ बिबिधिकलेशरुकलहकलपनातिनमैंउपजतनांहिं॥ नागरियाब्रह्मानंदहूतैंभजनानंदअधिकांहिं ॥ ३८ ॥ जिनकैंनहींसतसंगतिचाह॥ तिनकैंउरकबहूंमिटिहैंनहिंमहादुसहदुखदाह॥बिनसाधन कीकृपाकहोक्यौंकलिमैंहोतनिबाह ॥ नागरीदासभक्तबचननिसुनि भयेचोरतैंसाह ॥ ३९ ॥ बिनसतसंगमतिबेढंग॥ फिरतडांवाडोलमनज्यौंबिनलगामतुरंग ॥ कबहूगिरगिरउठतअतिश्रमचढतक्रोधउतंग । कबहुमूरखभ्रमतआतुरउपजअंगअनंग ॥ कहातपब्रतदानसंजमकहान्हायेगंग॥ दासनागरबिनांसाधनसकलसाधनभंग॥ ४० ॥ अवतोदहोतबिपतमैंभोगी॥ अतिपिटवायोमायापैंतैंकृपादृष्टिकबहोगी ॥ बिबिधिकुगतिमैंनाच्योकूद्योकेतादुखशिरझेल्यो।काहूबिधिमैं सचुनहिंपायोफाफडफोंदाखेल्यो ॥ खैंचाखैंचीजनमाबिगारचोजन जनकोमनराखत॥नागरियाहरिसरनतिहारीबृंदाबनअभिलाषत ४१ करियतुबृथामनकीदौर॥ जियचहतइतऔरहीउतहोतऔरकीऔर॥ छीनआयुशहोतनिततनकालव्यालकोकौर ॥ दासनागरव्हैनिवृतब सब्रासतीरिथठौर ॥४२॥ मनयहनीचसंगीनींच ॥ उच्चपदकौंचढत नाहींजदपिनियरीमींच ॥ नवनपापकौंगवनकरिहींज्यौंबनीरउलैंड । प्रबलअतिनहिंरुकतरोकैंग्यानधूरकीमैंड ॥ मिलतजाहीरंग आपुनहोतवाहीरंग । देहुनागरिदासकौंयातैंप्रभूसतसंग ॥ ४३ ॥

जानरकौंप्रभूयहधनलीनौं ॥ ताकौंनिसदिनजीवतहीतैंनरकामिल ककरिदीनौं ॥ जनमकरमउत्सवलीलागुनकथाकीरतनहौंन ॥ झालरझांझमृदंगतालधुनिसंतसमागमभौंन ॥ इतनीवस्तुगईजापैंतैंवापैंरह्योनक्यौंहीं ॥ नागरकेवलदुखसहिवेकोंदेहराहिगईयौंहीं ॥४४॥ रागदेवगंधारतिताल ॥ नरकोजनमविगारतआसा ॥ स्वारथदाव अठारैंचहियतुतीनपरतबिचपासा ॥ यहजगहैंचौपरकीबाजीअपने बसनहिख्याल॥ नागरीदासकरोसतसंगतछाडजगतजंजाल॥४५॥ अबजियकाहेकौंदुखभोवैं । कबहुकहरखसोककबहूव्हैंकबहूंहंसैंक बहुरोवैं ॥ याजगमैंहैंयहीतमासाऐसैंहीनितहोवैं ॥ नागरीदासभ जहुनंदनंदनजन्मवृथामतखोवैं॥४६॥ गुपतिआतिमनमैंलागीलाय॥ विविधिकामनांउठतचंडझरआसापवनसहाय ॥ ग्यानबैरागहिब रतदेखितनभक्तिहुरहीछिपाय ॥ नागरलोगवुझावतघांसैंभोगतैं नांहिबुझाय ॥ ४७ ॥ पद ॥ यहमनमूढमहाअहंकारी ॥ हारतनां हिआपनैंहठसठअतिकुटेवटहंगारी ॥ हरिसमंधसुखकरिलैंबेकोयह नरतनसुखकारी ॥ ताकौंफिरतभ्रमायेंदिसादिसतजव्रजकुंजविहा री ॥ इहींदेहभुगतावतअतिदुखपर्मपापअधिकारी ॥ आंधेलोग बतावतमारगामिलमिलमहाविकारी ॥ अबसतसंगमित्रसजननमैं रहूंसदाजमुनातटचारी ॥ अपघरतैंपरघरमतडारोनागरसरनतिहा री॥४८॥पद॥सूझतनहीआपनीआव॥ लाखबरसकीनोंवदेतइतडोल तकालविलोकतदाव ॥ एतेपरक्यौंप्रियस्तजननसौंफिराफिरकरत बियोग॥ अंतावियोगएकादिनव्हैहींउपजविघ्नतनरोग ॥ यातैंक्यौं सुखसंगततजियेलजियेनहींजगतसौं । नागरीदासवासबृंदाबनव्हैं

हौसुखीभगतसौं ॥ ४९ ॥ पदः ॥ वृद्धहोयकैंधनउपजावत ॥ वही कहावतकरतमूढमतिगंगाकीराहमदारहिगावत ॥ जोधनउपज्यो तोवकहाकोकरिहैंलखमीभोग। घटलरूपबलदेहदिनाहिदिनबढत जुरातनरोग ॥ नागरियाबसियैंबृंदाबनबितयेबरसपचास ॥ हरिउ च्छबलीलासुखलीजैंकथाकीरतनरास ॥ ५० ॥ पदः ॥ पापसपीट तजनमगयो ॥ चिततैंथकिविश्रामनलीनोअधिकअधिकदुखभयो॥ ज्यौंज्यौंतनयहजीरनव्हैंहींमनव्हैंनयोनयो ॥ नागरीदासबसोवृंदा वननितसुखरहैंछयो ॥ ५१ ॥ पदः ॥ सुनियोकहतसबनिहैंटेरैं॥ यहविधिनाकोप्रगटचूकहैद्वैमनकियेनमेरैं ॥ एकैंमनकौंसौंपिराखि तोसाधनगृहव्यौहार ॥ मनइकसौंहरिभक्तिहिकरतोजगदुखसबनि रवार॥नागरीदासएकमनतैंकहिंक्यौंबनिहैंद्वैजोग॥ बिबधविपतको रोगइतैंउतहरिरसलीलाभोग ॥ ५२ ॥ जोमेरैंतनहोतेदोय ॥ मैंका हूतैंकछूनाहिंकहतोमोतैंकछुकहतोनहिकोय ॥ एकजुतनहरिविमुख निकेसंगरहतोदेसविदेस॥ विविधभांतकेजगदुखसुखजहांनहींभक्त लवलेस॥एकजुतनसतसंगरंगरांगिरहतोअतिसुखपूर । जनमसफल करलेतोब्रजबसिजहांब्रजजीवनमूर॥ द्वैतनविनद्वैकाजनव्हैंहींआयु सछिनछिनछीजैं । नागरीदासएकतनतैंअबकहोकहाकरिलीजैं ॥ ॥ ५३ ॥ पदः ॥ भक्तविननरछकडाकेबैल ॥ लोगबडाईदैदैहांं कतचलतदुखतव्हैंगैल ॥ कारजद्रव्याविनाबलघांसिंमनसौंसकैंन हार ॥ लीनौंस्वारथसाधसबानिमिलयाकैंसिरदैंभार ॥ भटकतहीं भरजायवृषभमतनथेजगतकीलाज । नागरीदासबैठिबृंदाबनक रैंनअपनौंकाज ॥ ५४ ॥ हौंहारिथाक्योविसवाबीसौं ॥

पीसतपीसतजनमगयोअबपीसेकोकहापीसौं ॥ हारयोबहोतमजू
रीकरिकरियहदुखअबैंनसइयैं ॥ नागरीस्यामकृपाकरिकैंमोहिवृंदा
बिपुनवसइयैं ॥ ५५ ॥ मेरोमनयहविगरपरयो ॥ व्हैंगयोदहीप्रीत
जांवनतैंदूधनजातकरयो ॥ नहिऊगतनहिंकाजऔरहूजैसैंनाजज
रयो । नागरियामनकामनआवतप्रेमबायबिचरयो ॥ ५६ ॥ मोप
रकाहेहरिअनखाये ॥ भक्तसुधासागरतैंटारयोमृगमरीचजलध्या
ये ॥ स्वादबूंदघनमेटधुवांकेबादरभलेदिखाये ॥ रसिकमंडली
न्यारीकरपापिष्टीलोगमिलाये ॥ अपनीघांतनमननहिंराख्योजित
तितभूलभ्रमाये॥ नागरनिजब्रजभवनदुरायोऊवटबाटचलाये५७॥
अवहमहिंहमारीसमझपरी । नहिंवैरागप्रीतहरिसौंनहिमोमतिझूठ
भरी ॥ कंचनजानकसोटीलायोपीतरव्हैंनिकरी ॥ नागरीदासनाव
कैंनातैंकीजेकृपाहरी ॥ ५८ ॥ देखोअसमंजसअबहोवत ॥ त
नकलग्योगंगाजलतनकैंसोमदिरासौंधोवत ॥ अमृतचाखिफेरनहिं
चाहतगुरखैबेकौंरोवत ॥ तुलसीपेडउखारभक्तघरबीजआककेबो
वत ॥ महावृद्धवयब्याहकरननिजआसामैंदिनखोवत ॥ नागरआ
पकहायपरेहठपोतसूतरीपोवत ॥५९॥ अबदिनखोवैंकौनअलेखैं॥
बैसीसमैंदेखिफिरऐसीकौनसमैंकोदेखैं ॥ इहिंसमयेकोजेजेबातैंते
नपैंमननलुभाय ॥ नागरीदाससिंधभूखौरहैंतऊघासनहिंखाय॥६०
॥ पदः ॥ धीरपुरसजाकौंसबकहैं ॥ कबहुहोतअधीरनाहिचितवि
विधविपतसिरसहैं ॥ भक्तिकरनिमैंअंतरपरतैंधीरजधरैंबिचार॥ना
गरियाऐसेधीरजकौंकोरकोरधिरकार ॥ ६१ ॥ हमकोंकियेकुसंग
तिप्यार ॥ वृंदावननियरेंव्हैंनिकसेझांकानिदयौंनद्वार ॥ हरिचरचा

कोउकहतसुनतनहिंओरबातावसतार ॥ प्रभुसमंधसुखसाधनकी चितभूलगयेउनिहार ॥ दितसुतसेनरकलहकलपतरुदेतहैंदुखअनपार ॥ इनतैंलेहुछुडायमोहिअबनागरनंदकुमार ॥ ६२ ॥ मेरैंद्वारसंतफिरिजावैं ॥ दियैंाचहतदरसनकरुनाकरिआवनहूनहिपावैं ॥ बधकबावरीथोरानिकौंआनंदितव्हैंव्हैल्यावैं । क्यौंभूलैंनहिंनागरहरिकीमायातिन्हैंभुलावैं ॥ ६३ ॥ दर्पनदेखतदेखतनाहीं ॥ बालापनफिरिप्रगटिस्यामकचबहुरस्वेतव्हैंजाहीं ॥ तीनरूपयामुखकेपलटेनहींअग्यानताछूटी ॥ नियरैंआवतमृत्युनसूझतआंखैंहिय्र कीफूटी ॥ कृष्णभक्तिसुखलेतनअजहूंबृद्धिदेहदुखरासी ॥ नारियासोईनरनिश्चयजीवतनर्कनिवासी ॥ ६४ ॥ अबकैंसैंयेद्यौंस भैरैं ॥ आठपहरमैंवृंदाबनकीकबहुनकोऊबातकरैं ॥ नंदनंदनगोपीजनवल्लभनांवनमेरेंश्रवनपरैं । नागरीदासविनासतसंगतकोयामनकीपीरहरैं ॥ ६५ ॥ जहांकोजीवजहांसुखपावैं ॥ चंदनकौकीराथोहरमैंकैसैंमनाविरमावैं ॥ जलतैंमीनपरयोमदरामैंकिहिंविधिजीवजिवावैं । नागरीदासकुसंगतमैंसंतसंगीनाहिंठहरावैं ॥ ६६ ॥ अबैंयेयौंलागेदिनजान ॥ मानौंकबहूहुतीनांहिनैंवासुखसौंपहिचान ॥ हरिअरचाचरचाकबहूनहिंनहींकथाबंधान ॥ जनमकरमहरिउत्सवनाहींरासरंगकलगान ॥ बिमुखअनन्यनिकटरहैंनिसदिनमहादुष्टदुखखान । येदुखतरैंकृपाकरिहैंजबनागरस्यामसुजान ॥ ६७ ॥ अबतोयहीबातमनमानीं । छाडौंनहींस्यामस्यामाकीवृंदाबनरजधानी ॥ भ्रम्योबहुतलघुधामविलोकतछिनभंगुरदुखदानी । सर्बोपरआनंदअखंडितसोजियठौरसुहानी ॥ हरिभक्तनिमैंस्तुतिव्हैंहीं

निंदासुखअभिमानी । नागरियानागरकरगहिहैंरहिहैंजगतकहा
नी ॥ ६८ ॥ अवतोजोईमित्रकहावैं ॥ जोश्रीवृंदावनवसिवेकी
निश्चयबातदृढावैं ॥ याविनकहैंसुसत्रुहमारोसोजियकवहुनभावैं ॥
कहैंऔरुकैंऔसरचूकैंसोनागरपाछितावैं॥६०॥जगमैंलुब्धहीनसुखपा
वैं॥ वहिकाहूकैंनिकटनजावैंवापैंकोउनआवैं॥ताकौंदुखव्यापैंनहिंक
बहूकेवलउदरभरावैं ॥ नागरभक्तिबिनाचातुरजेदुखमैंजनमवितावैं
७०॥हौंहरिमारकंडरिषिनाहीं॥मायाभलीदिखाइमोकूंझकझोरचोज
गमांहीं ॥ अतिकलिकलहधूपतनतचहींजाऊंजहांजहांहीं ॥नागरि
याकौंदेहुकृपाकरिवृंदावनकीछांहीं ॥ ७१ ॥ हमारोसांचोहितूंव
हैं । गांधारीकेपतिसौंजैसीविदुरकहीसुकहैं ॥ सोईसत्रुजोमोहिव
हावैंआपहूसंगवहैं । नागरियाकौंप्यारोसोसंगवृंदावनरहैं॥ ७२॥
अवहरिमेटोदसातृसंक ॥ अधबिचपरचोमोहिलैंदीजैनिजसाधनकैं
अंक ॥ कीजैंसरलकृपानिधिस्वामीजोमेरीमतिबंक ॥ नागरकृपा
प्रसाददेहुकोचावौंविपतकरंक ॥ ७३ ॥ अवहौंदिनदिनदुखनहि
सहिहौं ॥ कैंवचबनतैंबेगनिकासिकैंवृंदावनमैंरहिहौं ॥ यहविनतीमे
रीहरितुमबिनऔरकौंनसौंकहिहौं । नागरीदासनांवगवतैंफेंटतिह
रीगहिहौं ॥ ७३ ॥ आयेहमवृंदाबनरसभोगी ॥ जासुखभोगहिक
नसकतजेजगतविपतकेरोगी ॥ रासविलासरुकथाकीर्तनहरिउ
त्सवआनंद ॥ निसदिनमंगलमईसमयजहांनागरियाव्रजचंद ७४॥
हमयहकवहूसुनीनहींआगैं ॥ खैंचतस्यामआपनीदिसनरपीछेपी
छेभागैं ॥ मानुसरोवरचाहतनाहींसांभरसरअनुरागैं ॥ नागरभवन
बुरेतजिदेखौंरंगमहलकीजागैं ॥ ७५ ॥ तजिउपाधिजेहरिपदभज

ते। वेनृपकहाहुतेबावरेमनिमयकंचनकेगृहतजते ॥ अबछाडतन हिंकलहमूलघरभक्तिबिमुखलोगनिसौंलजते ॥ नागरियानरमृत्यु खिलौंनारहतनहिंदुखसेनांसजते ॥ ७६ ॥ सबनरपगेउपद्रवमां हीं ॥ कृष्णभक्तिकीइच्छाकैसीविपैंभोगहूनांहीं ॥ कलहबिना कछुऔरुनभावैलरैंदोखिपरछांहीं ॥ नागरतापाविरुद्धनहींइकवृं दाविपनजहांहीं ॥ ७७ ॥ कृष्णकृपाआयेदिनभले ॥ बहुतैंभ्र म्यौंआजलौंहौंअबवृंदाबनदिसचरनचले ॥ दुरजनटरेसजनमिलि हैंजेनंदनंदनकेंरंगरले ॥ भूखेहुतेश्रवनमनलोचनतेनागररसपोखप ले ॥७८॥ हमारीअबसबबनीभलीहैं ॥ कुंजमहलकीटहलदईमोहि जहांनितिरंगरलीहैं ॥ साहिबस्यामास्यामउसीलीललिताललितअ लीहैं ॥ नागरियापैंकृपाकरीअतिश्रीवृषभांनललीहैं ॥७९॥ कोई नधारिउंहाप्तावैं॥ जितजाऊंतितसिरभटभेरतऊबटचल्योनजावैं ॥ वृथागईसबबातआजुलौंकहटिछिनहूंसुखनबिहावैं ॥ नागरघरबं नहींमनकरतजत्तमन रैचलावैं ॥ ८० ॥ हरिजूअजुगतजुगथोंभ्र मआई ॥ श्रीवृंदा हलकाचकीनीकैलेनिकरैंगे ॥ गहिरैंजेकृपा करोनागरसुखसा भांतितरैंगे ॥ मैंनतुरंगचढेपावकाबिचहाफां दी ॥ कैसैंपतिव्रतेअसमंजसहोकिनप्रभुदृढकरपकरैंगे ॥ नभांग भसूंकितरफरत डरनडरैंगे ॥ ८१ ॥ हमारीचरचागम कूटैंगौचांदी॥ बहोश्रुतहीतिनकहतहीसमझलई ॥ फिरि योभांखरोज्यौंअ चितवनिरीझदई ॥ नागरकहतक अंग॥ नागरि ॥ ८२ ॥ येसिवहीसौंसंगनिभै ॥ वृष सुअभै॥ बिनभगवानसंगअसमंजसऔ

रतैंनांहिबनैं ॥ नागरिदासकुसंगततौंनितिवढतनभक्तिमनैं ॥ ८३ ॥
अमलपदकमलचारसुचार ॥ अरुननीलसुबरनमिलिमनहरनिभये
छबिजार ॥ मुखरमनिमंजीरमनमथकरतप्रगटिचरित्र ॥ गउरजा
वकाचित्रचित्रेचतुरमोहनमित्र॥नखचंद्रिकाप्रतिबिंबप्रसरतकुंजकौतु
कभूमि ॥ दासनागरमनमधुपतहांरहोझुकिझुकिझूमि ॥ ८४ ॥ तुम
बिनकौनसहायकरैं ॥ जानतप्रीतरीतरासिकनिमानिकोऊकहाउच
रैं ॥ पद्मावतिजयदेवकेस्वामीयहमनवृथाडरैं ॥ नागरसुखसागरपद
ध्यायेकोदुखजरनिजरैं ॥ ८५ ॥ अबतोकृपाकरोगोपाल ॥ दीन
बंधुकरुनानिधिस्वामीअंतरपरमकृपाल ॥ जगआसाविषफलमत
प्यावोप्यावोभक्तिरसाल ॥ नागरियापरदयाकरोकिनजनदुखहर
निदयाल ॥ ८६ ॥ अबतोकृपाकरोगिरधारी ॥ अपनोबांहछांहत
रराखोदेखोदसाहमारी ॥ जुरेघोरकलिकलहतिम ... गत
...री ॥ नागरसुखसंगउनकोदीजैजिनके ॥ नागरकृपा ... तन
॥ कैंवच...रियेकृपाविहारी ॥ जगमुंजारनतैंलैर ... दिनदुखनहि ... यह
माबिन...नसमाजसहितातिंहिंठांरसभक्तिकरौंसुखवो ... हबिनतीमे ... बिहा
॥ ७२ ... काकिनदेषादसाहमारी ॥ ८८ ॥ अबतो ... फैटतिहा ... लोग
तेजग ... बिपुनबभौंश्रीस्वामिनिछाडिजगतकीबा ... गहिकर ... ननमें
ंद ॥ ... बनकीलीलाललितअगाधा ॥ नागरिय ... कीर्तनहरिउ ... तिहा
बह ... खसाधा ॥ ८९ ॥ अबतोकृपाकरोललित ... जचंद ७४॥ ... तडोल
रनकोऊसाधनसबतैंतिहारीसरनबली ... दसनरपीछेपी ... करत
बेनवकुंजगली । होतहैंनागरियानागर ... ॥ नागरभवन ... क्यौं
अबतोकृपाकरोव्रजबासी॥जुगजुग ... येजेहरिपदभज ... नन०हैं

तउपासी ॥ कामनओरपुनीतठौरसौंगंगगयाकहाकासी ॥ नागरियापैंकरुणाकरिकैंकरियैंधोषनिवासी ॥ ९१ ॥ अवतोकृपाकरोसबसंत ॥ यातनमनसौंभ्रमतभ्रमतहीव्हैंगयेदिवसअनंत ॥ घटतबुद्धबलदेहदिनहिदिनतृष्णाकोनहिअंत ॥ नागरियाअबउहांबसइयेजिहिठांनित्यबसंत ॥ ९२॥ अवतोकृपाकरोश्रीबृंदा ॥ हेदेवीतुवबिपनभवनकीउल्हंगिनजाउंश्रालिंदा ॥ वैष्णवसहिततहांकोनित्यरसपानकरौंसुखकारी ॥ नागरियापैंकृपाकीजियेकृष्णकमलपदप्यारी ॥ ९३ ॥ अबतोकृपाकरोश्रीजमना ॥ दरसपरसतटदेहुबासवनतृविधितापतनदमना ॥ होदातारसभक्तिदानकीसलिताऔरुतुसमना ॥ नागरियाकोमेटदेहुजियजगतृष्णाकीभ्रमना ॥ ९४ ॥ बहुरिपरेवादिसकौंपांव ॥ परममनोहरजमुनातटपरिजादिसमेरोगांव ॥ स्वामीतहांहमारेमोहनस्वामिनिराधानांव ॥ नागरह्यांबहोचरनधारिउहांपहुंचपंगुव्हैजांव ॥ ९५ ॥ हमसतसंगतिबहुतलजाई॥ वृथागईसवबातआजुलौंजोकछुसुनीसुनाई ॥ भक्तिरीतिअनुसरतनहींमनकरतजक्तमनभाई ॥ अजहुंनतजतउपाधिअवस्थाचतुर्थाश्रमआई ॥ श्रीवृंदाबनबासकरनकीजातहैंसमैंबिहाई ॥ अबतोकृपाकरोनागरसुखसागरकुंवरकन्हाई ॥ ९६ ॥ तजतनहीमतिकूदाफांदी ॥ कैसैंपतिव्रतकरैंस्यामसौंज्यौंवाबिलल्लीबांदी ॥ मायाभांगभसूकितरफरतहोतनहींमतिमांदी ॥ नागरसाधबचनमानैंबिनजमकूटैंगौचांदी॥९७॥ जबतैंमिटयोरंगीलोसंग । घटिचितचटकरूभयोभांखरोज्यौंअटानकोरंग ॥ मंदजुरैंनबिनादीपकदिनज्यौंअनंगबिनअंग॥ नागरियापैंकृपाकरोहरिहौंननदेहुकुढंग ॥ ९८ ॥ इत

नींहैसबठोरहमारी ॥ वृंदाबनजमुनागोवर्द्धनराधाकुंडसुखकारी ॥
नंदगांवबरसांनौहैंजहांरहतस्यामकीप्यारी ॥ इन्हैंछांडिनहिंजाउंअ
नतकहुंयहनागरजियधारी ॥ ९९ ॥ हमतोबरसांनेकेबासी ॥ गह
वरागिरजहांखोरसांकरीललितठौरसुखरासी ॥ कुंडभरेजलवनउपव
नछबिकुंजकुटीअनयासी । कुंवरिललीकीदेतदुहाईसबसुखसैलनि
वासी ॥ नरनारीपसुपंछीइहिंठांलीलाललितउपासी ॥ फिरतलाडि
लीकैसंगनितिनटनागरकरतखवासी ॥ १०० ॥ दुहुंभांतिनकौमैंफ
लपायो ॥ पापकियेतातैंबिमुखनिसंगदेसदेसभटकायो ॥ मिटिसत
संगभक्तिसुखकोऊहरिउत्सवनदिखायो ॥ तुच्छकामनाहितकुसंग
वसझूठैंलोभलुभायो ॥ कौनपुन्यअबवृंदाबनबरसांनैंसुबसबसायो ।
आनंदनिधिव्रजअनन्यमंडलीउरलगायअपनायो ॥ सुनिबेहूकौंदु
ल्लभसोसबरसबिलासदरसायो ॥ स्यामास्यामदासनागरकोकियो
मनोरथभायो ॥ १०१ ॥ चकसोलीकेचनाचुराये ॥ गारिदैदौरीरप
वारनिग्वारनिसहितगुपालभजाये ॥ हरेबूंटदाबैंबगलनिमैंस्वासभ
रेवनगहवरआये ॥ कहतआतुरेबोलललोलदृगहसतहसतसबबापचढा
ये ॥ रेचबातकोउहोराकरिबनकीलीलालालुभाये ॥ नागरियाबै
ठीछकिहारीछीलछीलनंदलालहिखवाये॥१०२॥ सांचौहितूसुयहीदृ
ढावैं ॥ नितिविहारठौरनितिनिरपैंवहीकथानितिसुनैंसुनावैं ॥ व्रज
वासनिसौंप्रीतिकरैंदृढनिसवासरसुखसमैंबितावैं॥ नागरियाकौंस्वप
नैंहूमैंअबव्रजतजिकैंअनतनलैंजावैं ॥ १०३ ॥ नंदवृषभानुक
भवनराजैं ॥ भईभटनटनिकीभीरवृषभानपुरपौरिअतिमत्तगजराज
गाजैं ॥ दोउकुलदीपकेकुलहिमंगदभनैंजुरेगनगुनीसंगीतसाजैं ॥

समधीसमधींमिलनिगोपगरईसभाप्रभाआनंदकछुऔरआजैं ॥ गारिगावतसकलामिल्योमहरावनौंकियेघूंघटालियेहियेलाजैं ॥ महलमहलनिचहलपहलमंगलमहाद्वारसहनायनीसानबाजैं ॥ बटततहांपानकपूरअरुअरगजागोपकुलकरतसनमानभ्राजैं॥ नागरीदासजहांफिरतउत्सवटहलपरमआनंदछकिचढेछाजैं ॥ १०४॥ हमारीतुमसौंहरिसुधरैंगी ॥ वहुतजनमहमजनमविगारयोअबहूबिगरिपरैंगी ॥ प्रीतिरीतिपूरननहिंकैसैंमायाव्याधिटरैंगी ॥ नागरियाकीसुधरैंगीजोअंखियांइताहिंढरैंगी ॥ १०५ ॥ होहरिसरनतिहारीदेहु ॥ बिरदहैंअसरनसरनतिहारोसोबसांचकरिलेहु ॥ मारतमोहिकलिकालदबायेंभरयोतरुनताछोह ॥ च्यारसत्रुहैंवाकेसंगीकामक्रोधमदमोह ॥ पांचौंइंद्रीमोबसनाहींमनहूपलटिगयो ॥ लेहुबचायनागरीदासहिंतोपदकमलनयो ॥ १०६ ॥ सांचेसंतहमारेसंगी ॥ औरसबैंस्वारथकेलोभीचंचलमतिबहौरंगी॥ मनकायामायासरितामैंबहतैंआनिउछंगी॥ नागरियाराख्योबृंदावनजिहिठांललिततृभंगी ॥ १०७ ॥ हमारीसबहींबातसुधारी ॥ कृपाकरीश्रीकुंजबिहारनिअरुश्रीकुंजबिहारी ॥ राख्योअपनेवृंदावनमैंजिहिठांरूपउजारी ॥ नित्यकेलिआनंदअखंडितरसिकसंगसुखकारी ॥ कलहकलेसनव्यापैंइहिंठांठौरबिस्वतैंन्यारी ॥ नागरीदासहिंजनमजितायोबलिहारीबलिहारी ॥१०८॥ नितिआनंदबृंदावनमहियां॥ नित्यकेलिकउतगरसलीलानिरखिनिरखिद्दगहारतनहियां॥ नित्तहरेद्रुमफूलफलनिजुतजमुनातटअतिसीतलछहियां॥नितिनउतनसबलोगसनेहीप्रीतिरीतियहऔरनकहियां॥नित्तरासनितकथाकीरतनानितिप्रातिगतिमानिरहैंउमहियां॥ नित्तबा

सतहांनागरिदासहिस्यामास्यामदयोगाहिवाहियां १०८ सबमैंवुद्धवा ननरजेहैं ॥ तजिकुसंगसतसंगतकैंहिततीरथबासवसेहैं ॥ अपनेघ राहिंसंवारनिकारनवइयापरमप्रवीन ॥ बिषैंभोगकैंलालचअटके करतपुन्यबलछीन ॥ यहकलिकालसौरिकाजरकीकौंनभयेनहिं कारे ॥ नागरियातिनहींजगजीत्योजिनहरिचरणसह्मारे ॥१०९॥ हमतोवृंदावनरसअटके ॥ जबलगिइहिंरसअटकेनांहींतबलगिवहीं विधिभटके ॥ भयेमगनसुखसिंधुमांझह्यांसबतजिकैंजगखटके ॥ अबबिलासरसरासहिनिरखतनागरिनागरनटके ॥ ११० ॥ हमारी बांहगहीवृंदावन॥राख्योअपनीसीतलछइयांजगदुखघांमतच्योतन ॥ योमैंकछूकृपाबलनांहींहौंजानौंअपनैंमन॥नागरीदासनांवहितसौं कारिकृपाकरायोधनधन ॥ १११ ॥ व्रजमैंहोतसुखकीलूट ॥ परम धनआनंदकेभंडारनितरहेखूट ॥ अतुलद्रव्यसकोलिहीनरतउअघा तनकोय ॥ नंदअरुवृषभानघरपारसप्रगटिभयेदोय ॥ लेहुकिनजा पैंलयोजायपरोरिधिकेढेर । दासनागरकहतटेरैंफिरनऐसीबेर ११२ देहधरैंकोअबफलपायो ॥ बीतेबहुतदिवसअसमंजसमायानाचनचा यो ॥ थोहरवनतैंमोहिकाढिथिरवृंदाविपुनबसायो ॥ कौंनकृपाअ नयासभईहौंनिजमनहेरिहिरायो ॥ निसदिनपहरघरीछिनछिनप लनितिआनंदरहैंसरसायो ॥ नागरिदासदासव्हैंकैंजोयहांनआयो सोपछितायो ॥ ११३ ॥ वृंदावनसुवसतजमुनातीर ॥ सदारूप कीपैंठलगीरहैंकबहुनहोतउछीर ॥ प्रेमनदीसोफिरतरगमगीगलिनि गलिनिविचभीर। नागरियानितमिलेदेखियतसांवरगउरसरीर ११४ अबतोकहिवेकोनरहो ॥ अपनीबांहछांहतरराख्योवृंदाविपुनमहराज ॥

ऐसैंहीकारिकृपामेटियैंकामक्रोधसबही॥ नागरियाकीछूटिजायतुहैं सबहीकहाकही ॥ ११५ ॥ दीजैप्रेमप्रेमनिधिस्याम॥ गदगदकंठ नैंनजलधारागाऊंगुनअभिराम ॥ याछकिसौंसबछूटिजायज्यौंऔ रसवैंकलमषकेकाम ॥ नागरियातुवरंगरंग्योफिरैंइहिंवृंदावनधा म ॥ ११६ ॥ येब्रजबासीहरिकेप्यारे ॥ येहरिमैंहरिइनमैंनितिप्र तिहोतनहींछिनन्यारे ॥ इंद्रआदिसुरअसुरदवानलविषधरतैंजुउबा रे ॥ नागरिदासकितेयाब्रजपरपचिपचिगयेविचारे ॥ ११७ ॥ ब्र जराजाकोबेटाचोर॥ घरघरतैंदधिमाखनचोरेचोरेचीराकिसोर॥जुव तिनकेमनमानिकचोरेहासिचितवनदृगकोर । नागरीदासचुरावैंस बसजोआवैंइहिंओर॥११८॥ब्रजकेलोगसबठगमहा॥ आपठगठगके उपासिकअधिककहियेकहा ॥ कनकबीजसीबचनरचनांदेततन कचखाय॥ बावरोव्हैंरहतसोफिरधामधनबिसराय ॥ छांडिकैंरज लुटतरजमैंदीनदीसतअंग॥ औरजगसुखरंगउडिकैंचढतकारोरंग ॥ भूमिठगद्रुमदेसठगयहांठगेस्यामसुजान ॥ राखैंसयानपसोबडनकैं औरकौनसमान ॥ इहांआवतहीपरतदृढप्रेमकीगरपास ॥ भूलिहां कोउआइयोमतकहतनागरिदास॥११९॥येवेईहरिकेब्रजबासी ॥ सु बलसुबाहुश्रीदामाआदिकतनघनस्यामउपासी ॥ वहीभूमिबनउ पबनवेईवहिगिरिराजछत्रछबिरासी॥नंदीसुरबरसानौगोकुलवईठौर सबबिबिधिबिलासी ॥ वहगिरधरहरिदेबबिहारीबामअंगप्यारी चपलासी ॥ एईगायगोपहैंवेईजुगजुगप्रगटिरहतअनयासी ॥ लीलाकरीवईजेअबलौंसदादेखियतुदृगनिप्रकासो । नागरि समेदइनउनमैंजोजानैंसोनर्कनिवासी ॥ १२० ॥ आयोमहा

तल ॥निर

कलिजुगघोर ॥ धर्मधीरजउडिगयेज्यौंपातपवनझकोर ॥ मिटेमं
गललोकलागेहौंनआयुसुमंद ॥ बढीजितातितकलहककैसनाहिंन
कहूंआनंद ॥ मिटीलक्ष्मीभाग्यसुभसुखमिट्योसबकोभद्र ॥ मिटी
सोभासहजसंपतबढिपरयोदारिद्र ॥ मिटीसजनिसुहृदताईरह्यो
स्वारथएक॥सुखीकोऊदेखियेनाहिंदुखीलोगअनेक॥लेतकलिकलम
षदबायेंजाइयेकहांभागि॥त्रिबिधितापमैंतनतचतलगीदसौंदिसमैंआ
गि॥दासनागरनहींसीतलधामनिर्भयऔर ॥जहांवृंदाविपुनजमुनाव
चैंवाहीठौर ॥१२१॥जयतिगुरुदेवहरिभक्तिदानी ॥ तिनपैंकरिकरु
नांलैकियेतनमनादिव्यहुतेकलिमषनिजेमलिनप्रानी ॥ बिमुखमुखर
सनारसनाहुतीकठिनकटुताहिकरीमिष्टगोविंदगानी॥ नागरीदासअ
नयासजिनकीकृपाभयेमदपानीतैंअमृतपानी॥१२२॥ भक्तबिननर
थोहरकेडंडा ॥ जारिमारिबेबिनऔरकामनाहिंदीसैंअंगप्रचंडा ॥ रौं
मरौंममैंकांटेतिनकैंनीरसखंडबिहंडा ॥ केवलउदरभरनिकौंउपजे
जैसैंअन्नकेहंडा ॥ तिनपररुपेप्रसिद्धदेखियेजमराजाकेझंडा ॥ ना
गरीदाससंगउनकोकरैंसोव्हैंभंडसभंडा ॥ १२३ ॥ भक्तबिनहैंसब
लोगनिखट्टू ॥ आपसमैंलडबेभिडबेकौंजैसेजंगीटट्टू ॥ नितिउन
कीमतिभ्रमतरहतहैंतैसेलोलपलट्टू । नागरियाजगमैंवेउछरतजिंहिं
बिधिनटकेबट्टू ॥१२४॥ घोषमैंमोखहिंकोउनबूझैं ॥ डारडारद्रुमपा
तपातमैंपरेचतुर्भुजसूझैं ॥ घरघरटहलकरतहैलषमीछिनाकितहूंनाहिं
जाय ॥ व्रजबृंदाबनसुखवैभवलषिमुक्तरहींशिरनाय ॥ इहांअधिक
वैकुंठहुतैंराजैंव्रजराजअवास॥ नंदगांवबरसानेकोनितिजगमगरह्यो
प्रकास ॥ हमगोलोकप्रजंतनचाहैंखरिकदेससुखबासी ॥ नागरिया

जहांराधामोहनलीलाललितबिलासी ॥ १२५ ॥ होहरिआछीसमैं सह्मारे ॥ थोरीअवधिजानिजीवनकीअपनेबिरदबिचारे ॥ भवप्र वाहमैंबहेजातहेवहियांपकरिनिकारे ॥ नागरियाराख्योबृंदावन जिहिंठांअपनेप्यारे ॥ १२६ ॥ वृंदाविपुनरसिकरज धानी ॥ राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकबिहारनिरानी ॥ ललितादिकढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमदपांनी । रसिकटहलनी वृंदादेवीरचनारुचिररनिकुंजरवानी ॥ जमुनारसिकरसिकद्रुमबे लीरसिकभूमसुखदानी ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियारसिकाहिरसि कसबैंगुनगानी ॥ १२७ ॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुनप रसकारिसकैंसोसुखइनहिंदृगनिदिखायो ॥ गृहब्यौहारभुरटकोभारा सिरपरसौंउतरायो॥नागरियाकौंश्रीबृंदावनभक्ततक्तबैठायो॥१२८ कितेदिनविनबृंदावनखोये ॥ यौंहींवृथागयेतेअबलौंराजसरंगसमो ये॥ छाडिपुलनिफूलनिकीसज्यासूलसरानिपरसोये ॥ भींजेरसिक अनन्यनदरसेविमुखनिकेमुखजोये ॥ हरिविहारकीठौररहेनहिं अतिअभाग्यबलबोये ॥ कलहसरायबसायभटचारीमायारांड विगोये ॥ इकरसह्यांकेसुखतजिकैंह्वांकभूहंसेकभूरोये ॥ कियोनअपनौंकाजपरायेभारसीसपरढोये ॥ पायोनहींआनंदलेस मैंसबैंदेसटकटोये ॥ नागरिदासबसेकुंजनिमैंजबसबविधिसुखभो ये ॥ १२९ ॥ व्रजकेलोगहैंमहाकठोर ॥ तनकनपीरपराईतिनकौं मैंदेखेटकटोर ॥ अपनैंहींस्वारथकैंकारनडोलतहैंनिसभोर ॥ नागर सुखलैबेमैंलोभीदैबेमैंझकझोर ॥ १३० ॥ यहव्रजनितप्रतिसुबस बसो ॥ नंदसुवनआनंदलीलाधनव्रजवासीविलसो ॥ मंगलमईएक

रसनिबहौअरुबहोविघननसो ॥ नागरीदासदासनिसबासरगावोह रपिहसो ॥ १२१ ॥ मोहनकृपाकटाक्षनिहारैंगे ॥ मेरेओगुनसबै विसरिकैंअपनेंविरदबिचारैंगे ॥ वृंदाविपुनवासदृढदैंकैंअबदुखदूर निवारैंगे ॥ नागरिदासनांवकैंनातैंबिगरीबातसुधारैंगे ॥ १३२ ॥ बिनवृंदाबनयहरितुबुरी ॥ वादरलगतधुवांसेनैंननिचपलाचमकि चुभैंज्योंछुरी ॥ मोरसोरचहुंओरनिव्हैंमनुंरिपुसेनाकेहींसततुरी ॥ नागरियातुलसीवनबाहिरपावकसीपावसझुकिझुरी ॥ १३३ ॥ ह मतोनकलभक्तिकील्याए ॥ कबहुनसांचीभक्तिकरीमनइंद्रिनिहाथ बिकाए ॥ कपटचतुरईबेषदेखिकैंसंतमहंतलुभाए ॥ बांनांधारीब धकनिपैंज्यौंमानसहंसबंधाए ॥ स्वांगधरेंहूंसबफलप्राप्तभक्तिम हातमजातनगाए ॥ नागरियानकलीकौंहरिप्रियवृंदाविपुनबसाए॥ ॥ १३४ ॥ हमतोहैंयारसकेभोगी ॥ जोमाधांतवोषमैंप्रगटतताहिन जानतजोगी ॥ उज्वलरसरसमादिकपीकैंकरतराजाबिस्तार ॥ क्री डाबलबैरागग्यानगनहोतहैंज्यौंघनसार ॥ मासपांचपटयाआसामैं रहतहैंउरझेप्रान ॥ नागरियाहियसोसुखबरसोस्यामास्यामसुजा न ॥ १३५ ॥ जोसुखलेतसदाब्रजाबसी ॥ सोसुखस्वपनेंहूंनहिंपा वतजेबैकुंठनिवासी ॥ ह्यांघरघरव्हैंरह्योखिलौंनांजक्तकहतजाकौंअ बिनासी॥नागरीदासबिश्वतैंन्यारीलगिगइलूटहाथसुखरासी१३६॥ ब्रजहीतैंहैंहरिकीसोभा ॥ बैनअधरछबिभयेनृभंगीसोवहिब्रजकेबांस कोगोभा ॥ ब्रजबनधातविचत्रमनोहरगुंजपुंजअतिसोहैं ॥ ब्रजमो रनिकोपंखसीसपरब्रजजुवतीमनमोहैं ॥ ब्रजरजनीकोलगतअलकपैं ब्रजद्रुमफलउरमाल ॥ ब्रजगउगनकैंपाछैंआछैंआवतमदगजचा

ल ॥ बीजललालब्रजचंदसुहायेचहूंऔरब्रजगोप ॥ नागरियापरमेसुरहूकौंब्रजतैंबाढीओप ॥ १३७ ॥ ब्रजकोस्वादवैकुंठमैंनाहीं॥ हरिगुनकथाभईजबमीठीब्रजरसमिल्योतवैंतामाहीं ॥ ब्रजरसबिनकहारसिकगावतब्रजबिनरसमरिजातो । ब्रजमहिमाकौंवेईजानैंजिनकैंब्रजसौंनातो॥ भवनचतुर्दसमांझधन्यब्रजधन्यधन्यथेब्रजबासी ॥ नागरीदासधन्यहैंसोईजोब्रजरैनउपासी ॥ १३८ ॥

अथ ब्रजसमंधनामपालापद ॥

ब्रजसमऔरकोउनहिधाम॥ याब्रजसौंपरमेसुरहूकेसुधरेसुंदरनाम॥ कृष्णनांवयहसुन्यौंगर्गतैंकान्हकान्हकहिबोलैं ॥ बालकेलिरसमगनभयेसबआनंदसिंधुकलोलैं ॥ जसुदानंदनदामोदरनवनीतप्रियदधचोर । चीरचोरचितचोरचिकनियांचातुरनवलकिसोर ॥ राधाचंदचकोरसांवरोगोकुलचंददधिदानी ॥ श्रीबृंदाबनचंदचतुरचितप्रेमरूपअभिमानी ॥ राधारवनओराधावल्लभराधाकांतरसाल॥बल्लभसुतगोपीजनबल्लभगिरवरधरछबिजाल॥रासबिहारीरसिकबिहारीकुंजबिहारीस्याम ॥ बिपनबिहारीबंकबिहारीअटलबिहारीबिहाराभिराम॥छैलबिहारीलालबिहारीबनवारीरसकंद ॥ गोपीनाथमदनमोहनपुनबंसीधरगोबिंद ॥ब्रजलोचनब्रजरवनमनोहरब्रजउत्सवब्रजनाथ । ब्रजजीवनब्रजबल्लभसबकेब्रजकिसोरशुभगाथ ॥ब्रजभूषनब्रजमोहनसोहनब्रजनायकब्रजचंद॥ ब्रजनागरब्रजछैलछबीलेब्रजवरश्रीनंदनंद ॥ ब्रजआनंदब्रजदूलहनितिहीअतिसुंदरब्रजलाल ॥ ब्रजगउगनकैंपाछैंआछैंसोहतब्रजगोपाल॥ ब्रजसनमंधीनांवलेतए

व्रजकीलीलागावैं । नागरिदासहिमुरलीवारोव्रजकोठाकुरभावैं ॥
॥ १३९ ॥ गिरवैरागसिखरमनचढ्यो ॥ जगतकिचापिचकीचवी
चतैंअतिअमूंझकैंकढ्यो ॥ निर्भयभयोतमासोदेखतलरैंभिरैंनरम
रैं ॥ अहंकारव्यौहारअगनमैंवृथामूढमतिजरैं ॥ धामधूमिमचिरही
रौरअतिसबहिदेखियेदुखी॥ नागरिदासबासवृंदावनभक्तकरतजेसु
खी ॥ १४० ॥ सांचोमित्रगोपालहैंमेरोपरमपियारो ॥ जिहिंदीनौं
व्रजवासलैवैकुंठतैंभारो ॥ निजसाधनकोसंगदयोनीकेतैंनीको॥जा
कैंपटतरक्यौंलगैंसुखस्वर्गकोफीको ॥ राजकलहकेमूलकोविषअ
मलछुटायो ॥ नागरियावृंदाविपुनरसअमृतप्यायो ॥ १४१ ॥
जगतकोवावबंदीव्योहार ॥ उपजतखपतछिनकमैंजैसैंवादरपरस
बयार ॥ अलगथलगआधारबिनासबहरिइच्छाअनुसार ॥ नागरि
याजागतसुपनेंकोहैंझूठोविस्तार ॥ १४२ ॥ दिनदिनसमैंजातहैंबी
तो ॥नरअपनैंगृहकाजकरनसौंकबहुनहोयनचीतो ॥ जोईविवेकी
शुभकारजकोऔसरयौंबविचारैं॥ नागरसूतसुईमैंपोहतज्यौंदामिन
उजियारैं॥ १४३ ॥देहुप्रेमहरिपरमउदार ॥ बिनांप्रेमजेभक्तिहैंनैं
धाभईजातव्यौहर ॥ प्रेमहिकैंबसहोतस्यामतुमप्रेमहिंकोरिझ
वार । प्रेमहाथअपनैंनहिंनागरताकोकहाबिचार ॥ १४४ ॥
हमैंसास्त्रकीसमझनपरिहैं ॥ नहिंसमझेअवहूंनहिंसमझैंजेसमझेतिन
कहाौसुकारिहैं ॥ परमधर्मबेत्ताआचारजच्यारनिहोंकैंमतअनुसरि
हैं ॥ हंसवाहनीहठसलितामैंबूडकलैलैनांहिउछरिहैं ॥ व्रजरसके
लिसुधापियकैंफिरबिद्याबादनिनांहिंझगरिहैं॥ नागरिदासबासवृंदा
बननितिबिहारतैंकबहुनटरिहैं ॥ १४५॥ अन्योक्तदोहाकुंडलिया॥

दांतगयेअरुबलगयोअंगभारनहिंलेत ॥ औसेबूढेबैलकौंकौंनवृथा भुसदेत ॥ कौंनवृथाभुसदेतमरतभूषनिकैंमारैं ॥ यहजीवततउलो गषालकोमोलबिचारैं ॥ सबस्वारथमैंमत्तआधिकअधरमसरसांत ॥ ज्यौंज्यौंदेखतवृषभसजनत्यौंपीसतदांत ॥ १४६ ॥ झूलनाछंद ॥ घूमघुमालीलावनवालीमतवालीसीझुलैंवहां ॥ नागरासिरजूडेखचे अंगूडेमुखरूडेलटछुटीतहां ॥ चटकाचिकनियांअंगरहैंदीरंगमहैंदी लगीनहां ॥ इश्कझंझेटीलाजलपेटीयेमहरेटीचलीकहां॥ १४७ ॥

अथ छूटकदोहालिख्यते ॥

परकारजकरिदुखसहैं, लेतनहरिरसघूंट । भारघसीटतऔरको, आपऊंटकेऊंट ॥ १ ॥ अपनौंभलोनकरतनर, सबमैंबडोकहाय ॥ बिनपरसैंहरिनामकै, ज्यौंसुमेररहिजाय॥२॥अपअपनेसबसुधिकर हीं, भवनभरेउतपात ॥ कबहूकोउनहीकरैं, वृंदावनकीबात ॥३ ॥ नेतिनितिदुखगृहकोसहैं, जहांआमिटउतपात ॥ रोगदुखिततनत्या गेये, घरकीकितीकबात ॥ ४ ॥ करीनजिंहिंहरिभक्तिनाहिं, लये जैकुस्वाद ॥ सोनहिंजिमीअकासको, भयोऊंटकोपाद ॥ ५ ॥ मारबोचाहतऔरको,अपनैंसुखहितकोय॥ तिनकौंअैसीनीतपारै,सु खकाहेकौंहोय ॥६॥ जाकौंकहियेमूढजग, दुखदौंलागीहेर॥जमुना वृंदाबिपुनताजि, धावतबीकानेर ॥७॥ बिबिधिभांतिकेदुखनिजिय, निकसतनहींनिदान ॥ वृंदावनकीआसपरि, उरझरहेयेप्रांन ॥८॥ आपसमैंजुलरायकैं, कियेमुसाफरभांड ॥ मायाजगतसरायमैं, बुरी भठयारीरांड ॥ ९ ॥ नहींअवस्थाधननहीं, औरनकहूंनिवास॥ तऊ

नचाहतमूढमन, वृंदावनकोवास ॥१० ॥ जिहिंविधिवीतीवहुतगइ,
रहीतनकसीआय ॥ मतकवहूसतसंगविन, अवयहआयुविहाय ११
जहांकलहतहांसुखनहीं, कलहसुखनिकोसूल॥ सवैंकलहइकराजमें,
राजकलहकोमूल ॥१२॥ मेरेइहमनमूढतें, डरतरहतहौंहाय ॥ वृंदा
वनकीऔरतें, मतकवहूंफिरिजाय ॥१३॥ अधिकसयांनपन्हैंजहां,
जोईवुधदुखखांन।सर्वोपरआनंदमय, प्रेमवायवौरांन॥१४॥ वृंदाव
नकेवासको, तिनकैंनांहिहुलास॥फूसफासतिनकीभगत, वृद्धभोगसु
खआस ॥ १५ ॥ वहुतभूमिइतउतफिरयो, मायावसझकझोर ॥ अ
वकवन्हैंहैंसफलपग, वृंदावनकीओर ॥ १६ ॥ दिनवितीतदुखद्वंद
मैं, च्यारपहरउतपात॥ विपतीमरिजातेसवैं, जोहोतीनांहिंरात॥१७॥
लेतनसुखहरिभक्तिको, सकलसुखनिकोसार ॥ कहाभयोनृपहूभये,
ढोहतजगबेगार ॥१८॥ रचिचौपरवाजीरची, च्यारनरानिइकसाथ॥
पासापरिकछुवसनहीं, हारजीतहरिहाथ ॥ १९ ॥ होहरिपरमप्रवी
नन्हैं, कहाकरतयेपेल॥पहिलैंअमृतप्यायकैं, अवक्यौंपावततेल२०
वगुलासेमुहपतितपर, कृपाकरोहरिराय॥ इंहंरितुवृंदाविपुनमें, पा
संवैठौंजाय ॥ २१ ॥ मेरीमेरीकरतक्यौं, हैंयहजिमीसराय ॥ क्ये
कडेराकरिगये, कियेकईकनिआय ॥ २२ ॥ औरभवनदेखूंनअव
देखूं वृंदाभौंन॥ हरिसौंसुधरीचाहिये, सवहीविगरोक्यौंन ॥ २३ ॥
द्रुमदौंलागेजात्तखग, आवैंजवफलहोय॥संपतकेसाथीसवैं, विपता
केनहिंकोय ॥ २४ ॥ अधिकभयेतोकहाभयो, वुद्धहीनदुखरास ।
साहिवाढिगनरवहुतज्यौं, कीरेदीपकपास ॥२५॥ वृजमैंन्हैंन्हैंकढत
दिन, कितेदयेलैखोय । अवकैंअबकैंकहतही, वहअवकैंकवहोय२६

तुमऐसीक्योंकरतहो, हरिबरिचतुरकहाय। भलेजिमावतहोहमैं भु
सब्रुखीरमिलाय ॥ २७ ॥ सदाएकरसभक्तिसुख, ज्यौंबत्रमर
बनबेल ॥ गृहकेलाभअलाभसब, जूवाकेसेखेल ॥ २८ ॥
हलतदंतदृगदृष्टिघटि, सिथिलभयोतनचांम ॥ तऊबैठिसमरतनहीं
कामगयेहूंराम॥२९॥ तरुनसमयहरिनहिंभजे, रह्योमगनरसवांम ॥
अबतोरेनरबैठिभजि, कामगयेतोरांम ॥ ३० ॥ पंचरतनरथबैठिकैं,
करिदेख्योकिनगौंन॥ राहछांडिऊबटचलैं, सुखपावैसोकौंन॥३१॥
अगलीसयैंरुइंहिंसमैं, इतनौंअंतरजांन ॥ ज्यौंलसकरतैंउठगये, पी
छैरहैसैंहदान ॥ ३२ ॥ मिटेमोदमंगलमही, जेपहिलैंसुखखांन ॥ अ
वजगकीपिछिलीसमैं, जैसोव्याहबिहांन ॥३३ ॥ नीकोहूलागतबु
रो, बिनऔसरजोहोय। प्रातभयेफीकीलगैं, ज्यूंदीपककीलोय ३४॥
अमृतसरदेख्योनहीं, पारसकोनपहार॥ प्रेमछकेहरिभक्तिमैं, देखेन
हींहजार ३५॥मननूंऊंचीठौरलगि, जहांनपहुंचैऔर।तहांबैठेनीचील
सैं, सबऊंचीऊंचीठौर॥३६॥कोकाकौंदुखदेतहैं, कौनदेतसुखदान।
सबजीवनिकीबुद्धिके, प्रेरकश्रीभगवांन ॥३७॥ लाजिछांडिहरिकौं
भजो, दीजैमनकौंछूट। कम्माऊकीमुहममैं, जैसैंलूटालूट ॥३८॥
लाजकरीजिहिंभजनमैं, जेकोरेरहेसोय। इंहिजगदछिनीसंगमैंलूट
कियैंसुखहोय ॥ ३९॥ मायाप्रबलप्रवाहमैं, मनकोकछुनबसाय ॥
नदीकौसकीमांहिज्यौं, तलासिरऊपरपाय ॥४० ॥ जगतकमाऊक
टकल्यौं, रांमनामभरिनाज॥लाजकियेलाजनरहैं, लाजतजेंरहैलाज
॥४१॥ सत्रुकहतसीतलबचन, मतजानौंअनुकूल ॥ ज्यौंवमासबैसा
खमैं, सीतरोगकोमूल॥४२॥जगकीखातरराखिसुख, भक्तिलहैनाहें

रिद्धि । सांगनिकासैंजक्तसौं, तबभक्तिसांगव्हैंसिद्धि ॥४३॥ सुनि
कैंलेहुपुरांनसब,वूझलेहुसबठौर॥ जक्तरीतकछुऔरहैं,भक्तिरीतकछु
और ॥ ४४ ॥ जक्ततोषतोरैंकोऊ, तबैंताहिसुखहोय॥ खालाकाडर
आसिकी,संगननिबहैंदोय ॥ ४५ ॥ अपनौंभलोनकरिसकैं,कहामो
रकहासांझ ॥ जगकोभलोमनावतैं,बेस्यारहिगइबांझ॥४६॥ बहुतसं
तभयेआजुलौं, ऐसीसुनीनसाखि ॥ दयोभक्तिसुखखोयकैं, जगकी
खातरराखि ॥ ४७ ॥ राऊबडेबडेदेतहरि, दिनमैंलाखकरोर ॥ पैं
काहूकौंनांहिबे, खैंचतअपनीओर ॥ ४८ ॥ कृपालहरनरकूरकी,
सोइजांनियैंहैंफ ॥ जैसैंखावतपानमैं, तम्माखूकींकैफ ॥ ४९ ॥
जांनिकैंजांनिअजांनिव्हैं, तत्रलीजियेछांनि॥ सिष्यहौंनमैंलाभहैं गु
रूहौंनमैंहानि ॥ ५० ॥ वृंदावनजबभजतहैं, बासकरनिकैंचाय॥
वृंदावनतैंभजतअब चतुर्थआश्रमआय ॥ ५१ ॥ दामचामकी
लगनतैं, सुधिआयेनहिंस्यांम ॥ कामकलपतरुनगरवासि, भू
लेवृंदाधाम ॥ ५२॥ पतिकोदुखमैंसंगतजैं, जाकौंवहौतपतिहोय॥
जगतसुहागनिकौंहसैं, औरहिहसैंनकोय ॥ ५३ ॥ कुलपोख
मैंकरतक्यौं, अपनौंजसवेकांम ॥ विश्वंभरभगवांनको, वृ
कहतजगनाम ॥ ५४ ॥ कोकारिहैंजबकुटमके, पोखनकोउप
र ॥ कुसंसैंनीतबसोयहो, लंबेपांवपसार ॥ ५५ ॥ जाकोघ
तैंवडो, सबघरजिहिंआधीन ॥ सोघरपरहारिफिरतक्यौं,
व्हैंकैंदीन ॥ ५६ ॥ वृंदावनसेवतनहौं, करैंनहरिकीबात ॥ सब
दिनबोलतहैंवृथा, डोलतलोगहसात ॥ ५७ ॥ नीकोहूफीकोल
गैं, जोजाकैंनहिकाज ॥ फलआहारीजीवके, कौनकांमकोनाज

॥ ५८ ॥ फिरतरहोतीरथरहो, रहोकोउघरमांहि ॥ नानारंग केसंगमैं, चढतएकरंगनांहि ॥ ५९ ॥ नीकोऊफीकोलगैं, जो जाकैंनहिंकाज ॥ जैसैंसकरखोरकौं, कौंनकामकोनाज ॥ ६० ॥ आवतलोटयाभूमिपर, गयालोटिकैंभूमि ॥ झूठेफइकटबीचके, सेजविछौनाझूमि ॥ ६१ ॥ आपकुंडगोलकपिता, पितृपिताका नीन ॥ लखोसुनागरभक्तिजस, पांडवनित्यनवीन ॥ ६२ ॥ आयपरेइहठोरमें, बुरेकर्मफलहेत ॥ बाहिरवृंदाविपुनसौं, जबलगि जीवतप्रेत ॥ ६३ ॥ भक्तिभोगदोउताजिफिरत, सरलव्हैंसूधीगैल ॥ तेआयेनरजक्तमें, जैसैंवधियाबैल ॥ ६४ ॥ जापैंजैसीवस्तु व्हैं, तैसोहीमनहोय ॥ मालाऔरगिलोलकौं, फरलैंदेखोकोय ॥ ॥ ६५ ॥ मिलैंसजातीदूसरो, जबव्हैंवस्तुप्रकास ॥ कढतनांहिवि नपवनज्यौं, द्रुमफूलनिकोवास ॥ ६६ ॥ पौढेक्षीरसमुद्रमें, एकाकीभगवान ॥ गौरश्यामद्वैमिलतव्रज, वढीकथासुखधाम ॥ ॥ ६७ ॥ जामैंरससोईहरचो, यहजानतसबकोय ॥ गौरस्यामद्वै रंगविन, हरचोरंगनहिहोय ॥ ६८ ॥ काठकाठसबएकसे, सब कानूदरसात॥अनिलमिलैंतबअगरको, जबगुनजान्योजात॥ ६९ ॥ द्वैविनएकनकामको, यहमनलेहुबिचार ॥ तनमाटीबिनप्रानके, विनतनप्राणबयार ॥ ७० ॥ प्रेमजहांहीअधिकव्हैं, तहांजुहोत सराह ॥ ज्यौंबिरदसुनिसमरबिच, वीरानिवढतउछाह ॥ ७१ ॥ निंदकचौकसचतुरनर, नखसिखभरेसयान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायवौरान ॥ ७२ ॥ छिद्रनिहारतफिरतअरु, वातनगढताविधान ॥ तिनआगैंकेसैंरहैं, प्रेमवायवौरान ॥ ७३ ॥ गुनीवैद्यज्यौं

फिरतले, कांखकोथरीगान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायबौरा न ॥७४॥ सतरंजचौपरपोथीखोई, भगवतचर्चागप्पोंनें॥खोयारास भक्तियोंभक्तनि, हरिजसखोयेटप्पोंनें७५इति छूटकदोहासंपूर्णम् ॥

अथ तीरथानंदग्रंथलिख्यते ॥

सुधिकरनिचित्तमनहरनि कबित्त ॥

ज्यौंज्यौंइतदेखियतमूरखविमुखलोगत्यौंत्यौंसुखरासीब्रजवासी जियभावैंहैं ॥खारेजलछीलरदुखारेअंधकूपचितैंकालिंदीकेकाजम हामनललचावैंहैं॥ जैसीअबबीततसुकहतनआवैंबैननागरनचैंनपरैं प्रानअकुलावैंहैं । थोहरफरासदेखिदेखिकैंबंबूरत्रुरेहायहरेहरेवेतमा लसुधिआवैंहैं ॥ १ ॥ इति ॥

अथ साभिलाख सवैया ॥

नांहितुलैंबैकुंठहूकोसुखवोपकीज्योकवहूसमतोलैं ॥जेउहिंठांस बआनंदमैंगिरधारीकेबांहकीछांहकलोलैं॥ नागरटारिदियेजिनकों अबवेभटकैंमनमारिमलोलैं ॥ देसबिदेसअभागीफिरैंवडभागीजोई ब्रजभूमिमैंडोलैं ॥२॥ दोहा ॥ परसायेब्रजआदिदैं, कहूंतीरथानंद॥ जनभिलाषपूरनकरनि, पूरनश्रीब्रजचंद ॥ ३ ॥ छंदपद्धरी ॥ जव चलेसुस्थिततैंदेसआन, बिचकियेदेवजानीसिनांन ॥ हैंप्रासिधक थासंबंधकूप, पुत्रीसुसुतेतीरथसरूप ॥ जलअमलकमलपरिभ्रम तभृंग, तहांन्हातहोतनरदेवअंग ॥ फिरिचलेतहांतैंनायमाथ, प रसेगोविंदगोकुलकेनाथ ॥ पुनगालिवआश्रमपरमरम्य, सोभक्ति बिमुखलोगनिअगम्य ॥ जहांभ्रमतमत्तआतिमधुपझुंड, बहिंतू

विधिपवनजलदिमलकुंड ॥ पर्वतसवृक्षनिर्झरनिघोष, लखिठौर होतगतगर्वमोष ॥ ऐसेस्थानमध्यगवनकीन, जहांहरियाचारजअतिप्रवीन ॥ सुभसुहृदसांतसीतलसुभाय, सुखरासलेतपदरामध्याय ॥ बसीकरानिसनमानदान, दैंकियेबिदारघुनाथध्यान ॥ सुखलूटिचलेसर्वनिसाविहाय, फिरिपहुंचेश्रीव्रजअवनिआय ॥

अथ श्रीव्रजबर्नन ॥

छंदपद्धरी ॥ भयोपरसरेनुतनप्रेमधाम । सबसुनेसकारनग्रामनाम ॥ जलकुंडकितेद्रुमबनविशेष । दृगचकितरहेछबिदेखिदेखि तहांकहूंकहांलगिधामऔर । फिरिरहेआयगिरिराजठौर ॥ इति ॥

अथ गोवर्द्धनबर्नन ॥

सवैया ॥ नांहिहैंसुल्लभजीवनिकौंअतिदुल्लभदेवनिहूंकैंसमाजसो । नैंननिकौंतनकौंधनकौंमनकेपनकोसवहीफलआजसो ॥ नागरमैंदरस्योपरस्योबरस्योदिनसाततहांघनगाजसो । हाथपैलैंसुरराजसमैंव्रजराजकुमारधरयोगिरराजसो ॥ ४ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी॥पायनिप्रदछनांदइजुफेरि । विचरसिकसंगगनगुनिहिघेरि॥ कलगानकीरतनबढ्योसुरंग । बहोजांझझनकबाजतमृदंग ॥ बनग्वारगऊचलेसुनतसाथ । मधुपिवतश्रवनपुटकृष्णगाथ ॥ सबअनन्यमंडलीछकियप्रेम।चितगयेभूलितनमनकेनेम ॥ आयेचलितिंहिंठांरसिकझुंड । जहांराधाकुंडरुकृष्णाकुंड ॥ उततेंसुनिउमगेरसिकवृं

द ॥ उठिचलेसामुहैंबढिअनंद । तहांरुपेसूरसनमुखसह्मारि । ब
हिचलेपरसपरप्रेमवारि ॥ हुंकारशब्दकरिगिरिनिसंक । केउचलत
धरनिधुकिभरतअंक ॥ तहांबंसिदासअरुमुरलिदास । मनुमहार
थीयेप्रेमरास॥ विचस्वेतपरेमुर्छितनिदान।सोयेसरसज्ज्यागानतान॥
सुखप्रेमभक्तिकोभयोसुप्रात । मुखसौंनकछूबरन्यौंहैंजात ॥ दंप
तिरससंपतबराविहार । फिरिगायचलेतनमनसह्मार ॥ परक्रम्मादें
फिरिसिवरआय । मधुपुरीचलेदुखबिरहछाय ॥ पुनिपुरीपुलनि
तटिरहेआंन । कियेप्रातसमैंजमुनासनांन ॥ विश्रांतघाटजलपरस
पाय । तनपापगयेपलमैंपलाय ॥ कियेसांझसमैंनौकाविहार । वि
श्रांतसामुहैंमध्यधार ॥ सुखआरतिकोबरन्यौंनजात । मुखचातग
सबघननहिंसमात ॥ नरनारिवृंदजहांजुरेआन । अतिभीररागगौरी
सुगान ॥ कुलवधूनचतसबपगियप्रेम । गइसकुचसकुचहुत्याग
नेम ॥ सिरकेसपासजूरासुढार । तनभूपनभूषितकनकहार ॥ पहि
रैंतुलसीदलपहुपमाल । झारीकरसूक्षमतिलकभाल ॥ बहौजुरीआ
नितजिकाजधाम । तनदिब्यवेइजग्यपत्निवाम ॥ फबिस्वेतसहज
पटकीलपेट । नहिदुरतसुघटअद्भुतअंगेट ॥ इकदिसऔसीतियनि
कटघाट । इकओरभक्तिपुरजनकेठाट ॥ कलगानकुलाहलकरत
संग । बाजिवहुतझांझझालरमृदंग ॥ जुपिफिरतआरतीसमैंमिष्ठ ॥
जयशब्दहोतअरुपहुपवृष्ठ ॥ इति ॥ अथदोहा ॥ इंहिंविधिजमुना
पूजिकैं,धूपदीपधरिभोग ॥जमुनागुनगावतगये,जमुनातटकेलोग ५
इति॥ अथसवैया ॥ ह्वायताकीनहिंजायकहीजमुनाकहितैंजमुनादि
गआवैं । स्यामाओस्यामकरैंजलकेलिहिंकूलविलासनिरैंनविहावैं ॥

नागरस्यामबसैंहियताकरिस्यामप्रत्यक्षप्रवाहबहावैं ॥ दैंअनपाय निस्यामकीभक्तिहिस्यामनदीघनस्यामांमिलावैं ॥६ ॥इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ मातातपस्वनीतहांजुएक । नरद्वारदरसआसाअनेक ॥ जिंहिंमिश्रिततपस्स्याभक्तिरंग । पयपानकरतअतिछीनअंग॥ करिदंडवत्तुकरुनाकराय । पुनचलेहैंबृंदाविपुनधाय ॥

अथ श्रीबृंदाबनानंद छंद पद्धरी ॥

एकत्रतहांसबसाधमित्र । त्रयलोककरनिएककपवित्र ॥ इति॥ ॥ अथ दोहा ॥ सुनिब्यौंहारकनाममो,ठाढेदूरउदास ॥ दौरिमिलेभरिनैंनसुनि,नामनागरीदास ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ इकमिलतभुजानिभरिदौरिदौरि।इकटेरिबुलावतऔरऔर ॥ केउचलैंजातसहजैंसुभाय । पदगायउठतभोगहिसुनाय ॥ जेपरेधूरिमध्यमत्तचित्त । तेउदौरिमिलततजिरीतानित्त ॥ अतिसैविरक्ततिनकेसुभाव । जेगनतनराजारंकराव ॥ वेसिमटसिमटसबआयआय । फिरिछांडतपदपढवायग्वाय ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ बनिविहारनिरससनी, निकटबिहारीलाल । पानकियोइनदृगनितैं, अनुपमरूपरसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ तहांपद ॥ गाएऔसरसंजोग । बिचरसिकबिहारीहीकोभोग ॥ जबगोधूलकभयोसमयआन । सबचलेपुलिनमिलिमिलिसुजांन॥भइसमैंसौंहनीमिटचोधूप । जहांमिलीज्ञानगुदरीअनूप ॥ लैंखरीमलिनियांपहुपहार । बजिरहेजहांमहुचंगतार ॥ सबकुंडलाकारबैठेसुभाय । रहिमहापरमछबिपुलनिपाय ॥ रचिरसिकरतनमालासंवार । मनुसांझपुलनिकीनौसिंगार ॥ दंपतिबिहारगुनिगानहौंन।

सुनिमुक्तविचारिगनैंकौंन ॥ पदगानसुनतमिलिरसिकभीर । झू किझूमिरहेहगपुलकनीर ॥ भइरैनवहुतचितपगेसुप्रीति । जोनि त्तसमैंसोगइयबीत ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेउहांतैंनीठउठि, अतिअभागकैंजोर ॥ सोदुखबरन्यौंजायक्यौं, समैंभयोअतिघोर॥ ॥ ९ ॥ सहिगईदुर्मतिदुखअसहि,बहिगईबुरीबयार॥ रहिगइव्रजऔ सेरहिय उतरेजमुनापार ॥ १० ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ बृंदाबनसुधिकरतबात । अतिबिरहदुखितचितचलेजात ॥ पुनिकालिंदीकेकरिसनांन । फिरिरहेआयसोरूनिदांन ॥ तहां श्रीगंगाकोपरसनीर । गएपापभयेनिर्मलसरीर ॥ तहांकियोएक अनुचरअधर्म । तटिहत्योअज्यासुतपापकर्म ॥ कछुक्रोधकियोगंगा कृपाल । दइआयअचानकजलउथाल ॥ भुवफाटगिरतअररा तजोर । अतिभयोभयंकरसमयसोर ॥ भजिपटकिपटकिडेरा निकार । भयभीतसकलकौतिकनिहार ॥ जबकरीसुस्तुतिसिर नायपाव । करिछिमांकियोसीतलसुभाव ॥ पुनिदुतियदिवस कियोदीपदांन । मनुकनकमईभयोतटसुथांन ॥ तटउतरिउतरि नभतैंसुहांति । बैठेनक्षत्रजनुपांतिपांति ॥ जबश्रीगंगाछविदेत तीर । जिमकनककिनारीसहितचीर ॥ बिचबहेंदीपधाराउजास । सुरसुरीरतनअभरनिप्रकास ॥ इंहिंभांतिनिरपिसुपरैंनतीर । दिन ह्नायकियेपावनसरीर ॥ सिरनाथकह्योफिरिजोरिहाथ । यहदे हुंगंगमोहिकरिसनाथ ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ कामना सवैया ॥

॥ ब्रह्मकमंडलीब्रह्मसरूपकहांलौंकहौंगुनकेगनभारे । ल्याये

भगीरथजूतुमकौंतबतैंतुमजीवअनेकउधारे ॥ नागरकीकितीबात कृपालकरूंबिनतीपरुंपायतिहारे । जेरहेआडेन्हैंकैंब्रजवासके गंगातेकाटियेपापहमारे ॥ ११ ॥ पुनःसवैया ॥ जननीउहिंपुत्र पुनीतकीहोरनसोयेलगैंवहोतीरथकौं ॥ भुवमांझलैंआयेभगीरथ जूताकेदीजैंबडाइकितीरथकौं ॥ सबनागरपैंकरियेजुकृपामैंकहूंतुम आदिकतीरथकौं ॥ तुलसीवनछांडिभ्रमौंनांकितैंअबहौंजमुनाजल तीरथकौं ॥ १२ ॥ इति ॥

अथ कपिलाश्रम आगमनि छंद पद्धरी ॥

फिरिजायरहेकपिलासुग्राम । तहांरामेश्वरासिवसिद्धधाम॥जगप्र गटितपस्थलकपिलदेव । तहांसदाअमरनरकरतसेव ॥ द्रुमकुं जकुंडजलह्नानकीन । तहांएकतपस्वीदेहछीन ॥ मनुकरततपस्या हौंनसक्र । आकासदृष्टिभइग्रीवबक्र ॥ करमुरेदोउबिचउरनिआन। मुखमौंननित्तपयकरतपान ॥ तपकरतकष्टसंन्यासरूप । बिनभ क्तिवृथान्हैंजक्तभूप ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेउहांहूंतैंपरैं,करि पवित्रनिजअंग ॥ नवकावलिपुलबांधिमिलि, गयेउतरिकैंगंग ॥ ॥१३॥इति॥ अथ छंद पद्धरी॥ इकनदीरामगंगासुऔर।तहांसिंघव्या घ्रअतिविषमठौर॥पुनिचलेतहांहूतैंजुह्नाय । धवलागिरिपहुंचेनिकट आय॥जहांअगमविषमदुर्गमपहार।तहांहोतनहींपंछीसंचार ॥ ढिगन दीकौसिकीकियोसिह्नांन।तीरथपुनीतबरनतपुरांन ॥ रहेबहोतदिवस कौसकिकितीर।करिचलेतहांतेसंधिबीर ॥ आयेकितकादिवसमैंगंगकू ल।ब्रजवासआसहियबढियफूल॥ ह्यांआयगईहोरीकुठौर । जियप

रोवुरीअतिबिरहरौर ॥ जबगयेगंगतहांपुलनिठाम । रचिवरसानौ जहांनंदग्राम्र ॥ परचोखेलिगईउडिरैंनिपूर । ब्रजविनांपेलिसव मांझिधूर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ ऐसैंहोरींपेलिकैं, सनमुख जोरेपांन ॥ बहुरिफागब्रजमैंकरूं, देहुगंगयहदांन ॥ १४ ॥ इति ॥ छंद पद्धरी ॥ वरमांगेमांगिफिरिकियोगौंन । व्रजविरहहियैंमुपलि यैंमौंन ॥ पुनदरसकियोजमुनाकौंआय । निसतीरतीररहेसिवरछाय ॥देष्योश्रीवृंदाविपुनपार । बिचबहतमहागंभीरधार ॥ नहिंनाव नहींकछुऔरदाव । हेदईकहाकोजेउपाव ॥ रहैवारलगनकौलगैं लाज । गयेपारहिंपूरैंसकलकाज ॥ इति ॥ दोहा ॥ प्रेमपंथकौंपी ठदैं, यहजीवोनसुहाय ॥ मंगलदिनहैंआजुको, प्रियसनमुषजिय जाय ॥ १५ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी ॥ यहचित्तमांझिकरिकैंबिचार । परेकूदकूदजलमध्यधार ॥ चलेपैरपैरतररायधाय । तहांभईलगन सबबिधिसहाय ॥ तरिगयेतरनिजादयोपार । गहिहाथलियेब्रजना थवार ॥ इति ॥ दोहा ॥ वाररहेरहेवारते, पारगयेभयेपार ॥ दरसे वृंदाविपिनबिच, राधानंदकुमार ॥ १६ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी ॥ गलिनिगलिनिसुखफिरिफिरिजुलेत । ज्यौंनलिनिनलिनिअलिगन मेत ॥ जहांकथाकीर्तनरूपरास । लैंछकेप्रेममकरंदबास ॥ सुखभयोहइांसोकह्योनजात । मुखचातकसबधनकहांसमात ॥ फिरिबहेनीचराजसप्रवाह । गयेइंद्रप्रस्थाहियबिरहदाह ॥ दिल्ली दिवारकहकाहधाम । लियोफेरतहांतेमोहिस्याम ॥ तजिदयोतहां सबप्रवृतिसंग । भोव्रजसनमुषफीरिबढ्योसुरंग ॥ जबकह्योसुता लडकायभाय । लयोमोंहिबोलवृषभानराय ॥ तबचलेचरनवरसाने

ओर । कियेपैंडपैंडतीरथकरोर ॥ लखेधवलमहलपर्वतउतंग । फहरातधुजाकलसनिसुरंग ॥ तहांबनपर्वतछबिरहियछाय । द्रुमवेलिसघनलपटीसुभाय ॥ वसवासकुसुमअलिकरतरौर । सरभरोविमलजलठौरठौर ॥ रसपगेलोगनांतोसुमांन । तहांकुंवरिललीकीफिरतआन ॥ इति ॥ अथदोहा ॥ ऐसोबरसांनौंनिरषि, गहबरआयोप्रेम ॥ करतदंडवतलुटतरज, छुटिगयेराजसनेंम ॥ १७ ॥ इति ॥ अथ छंदपद्धरी॥वृषभानरायदरबारजाय।श्रीकीरतजुतदोउदरसपाय ॥ फिरिलैप्रसादगयोकुंवरिपास । जहांदंपतसुखसंपतनिवास ॥ करिकृपालडैंतीभरिउसास । मुंहिनिजबरसानैंदयोसुबास ॥ इति ॥

अथ आषाढमासबर्ननं ॥

छंदपद्धरी ॥ आसाढमासब्रजहरितभूम । नभबरसतबदराझूमझूम ॥ जितातितसुनियतहैधुनिमलार । गावतब्रजबासीनितविहार ॥ इति ॥ अथदोहा ॥सांवनमनभांवनसबनि, आयगयोसुभमास॥ निरषनिदंपतिझूलिबो, बाढ्योहियेहुलास ॥ १८ ॥ इति ॥

अथ सावनमासबर्ननं ॥

प्रथम तीजोत्सवलिख्यते ॥ छंद पद्धरी ॥ सबबरसानैंसुघरहोसुछाय । तिथप्रगटीसावनतीजआय ॥ ब्रजनरनारीमिलिठांहिठांहिं । सबचलेराजमंदरहिजांहि ॥ उततेंश्रीलाडिलीछबिनिदांनि । बैठीबाहिरछत्रीसुआंनि॥बाजिप्रणवबीनझालरियसंग । सहनायभेरगोमुखमृदंग ॥ तहांनचतगुनीगनभरेसुमोद । उचरतमलारझूलनिविनोद ॥ तबतिनाहिंमिलेबौहपटप्रसाद । मननैनश्रवनलह्योप

रसस्वाद ॥इति॥ अथ दोहा ॥नागरीदासहिंडोरनैं, सोभाछविअव रेखि॥ प्रेमझुलनिझूल्योकरै, दंपतिझूलनिदेखि॥१९॥इतिद्वितीय॥

अथ श्रीबलदेवजनमोत्सव लिख्यते ॥

छंदपद्धरी॥सुभसांवनपंचमिसुकलपष्ष। मिलिमिलिव्रजवासी चलेलष्ष ॥ जहांगयेगांमऊंचैंसुठाम । तहांजनमघोसअभिराम राम ॥ प्राचीदिसरोहनिउदितचंद । धुनिगानवधाईअतिअमंद ॥ मचिखेलिवह्योदधहरदछीर । व्हैरहींभवननरनारिभीर ॥ विचइ कढाढीअनुकरनबानि । सोपढतभयोविचवंसआनि ॥ उनपायो बहुसनमानदान । पुनिकियोबिदादैंतिलकपान ॥ बलदेवजनमउ त्सवअपार । बाजतनिसानसहनायद्वार ॥ मंदिरसुखसुंदररह्योसु छाय। कविपैंसबबरन्यौंनाहिनजाय॥पुनमनदैंसुखलैंलैंप्रसाद । सब चढेकरतसुधिसमयस्वाद ॥ इति ॥

अथ तृतीय सलौंनों उत्सव लिख्यते ॥

जबभईसलौंनौंतिथसलौंन । कियोप्रेमसरोवरसबनिगौंन ॥ जलअमलकमलपरअतिअलिंद । नवकुंजपुंजवहैंमरुतमंद ॥ ति हिंठामसबैंसरवरकैंतीर । इकओरभईव्रजजुवतिभीर ॥ दंपतजब बैठेकुंजआंनि । रक्षाबंधनभइदुहुनिपांनि ॥ फिरिचढेललितझूलैंक दंब । झुकिझुकितमालरहेनिबअंब ॥ छविदेतमुकटद्रुमलतनिमां झ । झूलतापियप्यारीसमयसांझ ॥ पुनउतररच्योमंडलपैंरास । व्रजप्रेमसरोवरसुखनिवास ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ सांवनगतभा

दौलग्यो । आंवनव्रजसुखसार ॥ जनमोत्सवआगमबढ्यो । घरघरमंगलचार ॥ २० ॥

अथ भादौंमासश्रीकृष्णजन्मोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ बढिनंदग्रामसोभाअभंग । चढिधुजापताका पीतरंग ॥ गोपुरनिवासनौवतनिनाद । सहनायरागरह्योपूरस्वाद ॥ नरआवतगावतनचतनार । भइसिंहपौरिगहमहअपार ॥ कहुंकहामहामंगलअनूप । व्रजरसिकानिहियवहिवसतरूप ॥ गुनतहां गुनीप्रगटतसुभाय । कलगानवधाईरहिसुछाय ॥ बनिढाढीबोलत बंसगोप । अतिनंदभवनआनंदओप ॥ इंहिंभांतिअहर्निसगईबिहाय । दधकादौंनौमीमचीआय ॥ अतिसमैंमनोहरभयोसुभोर । बिचनंदसदनआनंदसोर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ कृष्णाजनमको सुखभयो । नंदगामनिसप्रात ॥ विधिहूंतैंजातनकह्यो । मेरीकितियकबात ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ श्रीललिताजन्मोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ पुनिसबललिताकोजनमजानि । मिलिग्रामकरहैंरहेआनि ॥ जहांगानवधाईश्रवनचैन । अरुभयोरासजागर्नरैंन ॥ झूलेफीरिदंपतिहोतभोर । पुनिबहुरिउतरिबैठेकिसोर ॥ तहां करीभरीहितव्याहरीत । लइभांवरसांवरगउरमीत ॥ तबकीसोभा सुखकहैंजुकौन । बरषैंजलनैनानिमुखहिमौन ॥ यहकारिलीला सिररासिकमौर । फिरिगयेकदमषंडीसुठौर ॥ ऐसीनठौरकोउऔर रम्य । विनकुंवरिकृपासबकौंअगम्य ॥ तहांभईदुहुनिमैंदानकेलि ।

भरिप्रेमरहेसबसुखहिंझेलि ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ रासहिंडोरोंज्याहबिधि । दानकेलिअभिराम ॥ सोसबकबिनाहिंकाहिसकैं । भईकरहरैंग्राम ॥ २२ ॥

अथ श्रीराधाजनमोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ निससप्तमिहींबरसानैंजाय । तहांसुखढाढी देख्योसुआाय ॥ वृषभानुरायकोपढतबंस। जोब्रह्मादिककृतमुखप्रसंस॥जहांबरीसानपर्बतनिवास। तहांधवलनवलउज्जलअवास॥ फहरातधुजाकलसनिउतंग ॥ ठहरातनहींलगिपवनसंग । घहरातहैंतापरघटाआंनि । लहरातइतैंबाजतनिसांनि ॥ जबभयोअष्ठमीद्यौसप्रात । श्रीराधाजनमउछाहगात ॥ अतिमंगलधुनिपुरगइयपूर । बजिउठेभेरसहनायतूर ॥ झंझनतझांझनौबतनिघोष। प्रतिसब्दगयोपुरजहांमोष ॥ सबगावतनाचतभरेहैंरंग । आवतअपअपनीचावसंग ॥ इकउतरतअरुइकचढतप्रात । गिरिगैलभीरनिकस्योनजात ॥ दधकादौंमांचीबढ्योसुपेलि । बहचलीजहांतहांधरनिरेलि ॥ सबहरददहीभीजेलसंत । जनुफूल्योभादौंमैंबसंत ॥ लयोदृगनिश्रवनसुखसबनिभोग । गावतखेलतमिलिचलेहैंलोग ॥ उतरैंगिरतैंछबिदेतझुंड । सबगयेह्लानवृषभानकुंड ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ इहिंबिधिराधाअष्टमी, जिहिंलीनौंसुपसार ॥ ताहिनकछुकरिबोरह्योयहजानौंनिरधार ॥ २३ ॥ इति ॥ अथ छंदपद्धरी ॥ नौमीजुप्रातरविकैंप्रकास । गिरिगढबिलासजहांदेषिरास ॥ पुनिमोरकुटीघनस्यामजात । संगदामिनिभामिनिछबिसुहात ॥ अति

देतरूपसुपबरसबारि। नरएकओरइकओरनारि॥व्रजचंददृदैंगिरि सिषरओर।इतव्रजबासीइकटकचकोर॥ फिरिफैंकतलडुवाहरिसुजा न। मनुदेतकृपाफलभक्तदान॥पुनियहांगानवहांमानलेत।आवतसु गंधहस्तकसमेत॥ अथ दोहा॥इंहिंठांजोकछुसुषभयो,मौपैंकह्योनजा य॥ रसनांकैंतोदृगनहीं, दृगबिनरसनांहाय॥२६॥इति अथ छंदप द्धरी॥ दसमीसबकोकिलवनहिंजांहिं। लपिरासहिंजावकबटहिंछां हिं॥सुपदेषितहांआवैंअटोर। तहांसिलाफिसलनींचढेभोर॥पदव्या हसमैंकेजहांसुहोत॥ बहरसिकनिदृगआनंदसोत। पुननिसबारस गढमानरास। रहैंदंपतिकरिगिरिसिपरवास॥ तिहिंभोरउतरिगिरि तेकिसोर। करिदानकेलिसांकरिहिपोर॥ हसिचहनिझुकनिझ झकनिसुहात। तहांबचनरचनबरनेनजात॥ इकग्वालगह्योगु नसैनसांधि। द्रुमडारातियनिदइचुटियाबांधि॥ व्हैंआतुरटेरचो तबहिग्वाल। सुनिअहोकहूंहैंनंदलाल॥ तूकोहैंहेलाकौंनठौर। यौं कहतस्यामसिररसिकमौर॥ तबकहतग्वारभइयाछुटाय। मोंबां ध्योबरसांनेंकिआय॥ कहिकहाचलीतेरीरेमित्त। इनतोरेबांध्यो हौंहुंनित्त॥ इति॥ अथ दोहा॥ वचनस्यामकेसुनतए, सबहिनि बाढ्योरंग॥ गिरेकईकइसुनिरहे, प्रेमपुलकिकैंअंग॥ २५॥ पुन दोहा॥ बरषागतआगमसरद, अमलअंबुआकास। बनद्रुम पातनिधूरिधुपि, छबिबाढीसुपरास॥ २६॥ पुन दोहा॥ बरस मेघअवपेककरि, वेदमंत्रधुनिगाज। वृंदावनकौंदैंगये, सुंदरताको राज॥ २७॥ इति॥

अथ सांझी उत्सव लिष्यते ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ शुभपष्पस्यामसांझीविलास । सुखसोनकर तरसनाप्रकास ॥ दंपतिछबिअरुझीहीयमांझ । वहिफूलनिवीननि समयसांझ ॥ इंहिंसांझीकीसबकहतबात । बढिजायग्रंथसबकहां समात ॥ पुनराकाआईउहिंसुथांन । जाकौंबरनतबिचबौहपुरांन ॥ वहवृंदावनवहसरदरैंन । तहांलीनौंमनलोचननिचैंन ॥ भयेठौर ठौरमंडलनिरास । व्हैरह्योबिमलनभससिप्रकास ॥ धुनिछायगई पदरासगान । बृंदाबनतनरह्योसुरबितान ॥ छतकुंजकुंजचढिरासि कभूप । जहांपधरायेसेवासरूप ॥ छबिबनीरुपहरीबढियऔर । दंपतिसुखसंपतिठौरठौर ॥ तहांमनलोचनलयेरूपकौर । कहांकहां सुखलीजैंदौरदौर ॥ इति ॥ दोहा ॥ बृंदावनजोसरदसुष, निरष्यो राकारैंन ॥ बडेभाग्यदेपैंबनैं, बरनतबनैंनबैंन ॥ २८ ॥ इति ॥

अथ कार्तिकमास प्रथम श्रीराधाकुंडस्नान जात्रा लिष्यते ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ जबलग्योमासकातिकजुआय । मनबढ्योस बनिचौगुनौंसुचाय ॥ भइकृष्णपक्षसप्तमियरैंन । राधाकुंडआ एसबसुपैंन ॥ दुहुंकुंडतीरदुतिदीपजाल । जगमगतमनहुमनिपांत माल ॥ चहुंओरभीरधुनिहोतनाम । आनंदकुलाहलठामठाम ॥ बिचतिरतबहोतदीपकबिचित्र । मनुह्वातनछत्रहोतहैंपवित्र ॥ जब भयोअर्द्धनिसिससिउद्योत । नरनारिह्वातजलशब्दहोत ॥ ससिच ढ्योगईनिसभयोसुप्रात । कछुकहिनपरतसुषसमयबात ॥ इति ॥

॥ अथ दोहा ॥ गउरस्यामकेनामपैं, गउरस्यामकेधाम । चस्मां देपनिरूपके, दोउकुंडअभिराम ॥ २९ ॥ च्यारजामबितईनिसा, बंसीदासनिकेत ॥ रुपेरासिकरसकीरतन, भयोप्रेमकोषेत ॥ ३० ॥ इहांभयोसुषसोकह्यो, आवतनांहिप्रमान ॥ चरचादंपतिप्रेमकी, कबितागानबिधान ॥३१॥ चलेप्रातसबहीजहां, गोवर्द्धनगिरिराज ॥ उच्छवमनउच्छवकरनि, दीपमालिकाकाज ॥ ३२ ॥ इति ॥

अथ श्रीगोवर्द्धन बर्ननं ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ सबउमगिचलेब्रजजहांजुसैल। चहुंओरधुंधरितभइयगैल ॥ आवतप्रवाहसलितानिरीत । गिरपरसपरसहोवनपुनीत ॥ तनिगएस्वेतचहुंधांबितांन । तिनमांझहोतागिरधरनिगांन ॥ ब्रजकटकसोरमंदोरधूम । छबिछायरहीसबसिवरभूम॥ दीपकप्रकासभयेकूहुसुरैंन । उडिअंधकारचढिगयोहैंगैंन॥रह्योदीपनिह्लजगमगपहार। जनुंकीनौंगिरिरतननिसिंगार॥ गिरद्रुमनिंदिपनिकीचमकिहोत। मनुप्रेमसजीवनिजरीसुजोत॥दुतिदीपमांनसीगंगकूल॥मनुपारजातमालासुफूल॥कईकुंडमांझधसिकैंजुह्लात। कइकरतप्रदछिनांगातजात॥ कइरासदेषिदेषतसुजांन।करिदयोसुषहिसुषमैंबिहांन॥ अथ दोहा ॥ दीवारीकीरातयौं, बितईगिरकेमूल॥बहुरिप्रातअनकूटकी । हियमैंबाढीफूल ॥ ३३ ॥ अथ छंदपद्धरी ॥ गोस्वामिऔरदुजबरअनंत । ब्रजलोगबहुतसंतरुमहंत ॥ एपूजतगिरिगइयांखिलात । अनकूटलुटतभीरनसमात ॥ नरनारिप्रदछनाकरतपाय । मिलिरहेकुंडलाकारआय ॥ तिहिंसमैंकह्योनहिंपरतरूप । ज

नुपहरीगिरमालाअनूप ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेसबैंगिरराजतैं । गोपअष्टमीकाज॥नंदग्रामआयेसकल। भेटेश्रीव्रजराज॥२४॥इति ॥

अथ श्रीगोपाष्टमी उत्सव लिख्यते ॥

छंदपद्धरी ॥ कीनेसिंगारबलदेवस्याम । दोउकुंवरनिहारेअति भिराम ॥ तवनंदभवनतैंकढेलाल । सबदेखछकेनरबृंदबाल ॥ लखिवदनसबनिभूलीनिमेष । लियैंलकुटमुकुटनटवरसुवेष ॥ चलिगानकरतव्रजबधुनिसंग । लियैंबदनअर्धघूंघटसुरंग ॥ बडडेजुगोपचहुंधांसुहात । अतिभीरगलिनिनिकस्योनजात ॥ दधिलूटछाकमगमैंअपार । व्रजनारिखरीसबद्वारद्वार ॥ नंदीश्वरओप्योअतिउछाह । उररातसकलव्रजबढियचाह ॥ चलिआयेजसुदाकुंडकूल । हियबढीदुहुनिबनदेखिफूल ॥ तहांकरिकैंठाढेदोउभ्रात । तबकहनिलगीव्रजबधुनिबात ॥ तुमसुनिहुगोपबडबंसनाम । येहैंबालकबलिरामस्याम ॥ बनव्याघ्रसिंहहैंजंतुऔर । कहुंदूरनजइयोविषमठौर ॥ एपितामातकेनैंनप्रांन । याव्रजकीजीवनिसुखनिदांन ॥ ह्वौंकहौंकहांलौंकछुबढाय । एदयेतिहारीगोदमाय ॥ सुनिसुनिनातेकेमधुरबैंन । सबलोगपुलकिरहेनीरनैंन ॥ पुनिचलेतहांतेगांनहोत । दिनप्रथमगऊचारनउदोत ॥ चलिरहेकदंबखंडीनिहारि । तहांकियोछाकलीलाविहार ॥ फबिरहींकुंडलाकारभीर । बिचकुंवरगउरसांवलसरीर ॥ फिरनंदीश्वरकौंचलतलाल । बाजतमृदंगअरुमृंगताल ॥ बिचबिचबंसीधुनिहोतजात । गोआगमगौरीरागगात ॥ आगैंअतिसोहतगउनिठाट । रहैंठटिकठटिकपुनिचलतबाट ॥

तियमुकटझलकलखिरैंनमांझ । अंगुरीनिवतावतसमयसांझ ॥ सबमं
दिरचढिचाढिकैंअगारि । नंदीसुरेकोराहिनिरखिनारि ॥ पुनसनमुख
आईभरिसुप्रीत । बिचगलिनिगलिनिगावतिसुगीत ॥ सिरमंगलक
लसनिधरतबाल । रुकिगईडगरजुवतिनिकेजाल ॥ चलिनिजमंद
रगयेदोउबीर । तवभईआरतीसमयभीर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ च
लतवारतीपैंउतैं । कमलनयनकोसैंन ॥ रहेकरतछकिआरती । रू
पआरतीनैंन ॥ ३५ ॥ इंहिंबिधिकरिगोपाष्टमी । नंदगोपकेग्राम ॥
लीलासुमरतसबचले । अपनैंअपनैंधाम ॥ ३६ ॥ सतसंगतसुख
रूपसुख । बितयोमगसरमास ॥ ब्रजबासीसुखनिधिसबैं । ब्रजसु
खसदानिवास ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ भयोपोसमैंजोकहा । कह्योसोसमैं
जाय ॥ कमलनयनसुखहोतसुधि । हियैंसुधिनठहरात ॥ ३८ ॥
नामनलीनैंजातहैं । औचकबन्योसंजोग ॥ कैंजियजानैंआपनौं ।
कैबरसानैंकेलोग ॥ ३९ ॥ दंपतिकेलिसमंधसुख । नीकैंबितयोमा
ह ॥ परममुदितआगमहियैं । नवलबसंतउछाह ॥ ४० ॥ कुंवरिला
डलीनिकटतहां, मोहनलाललसंत ॥ बरसानैंअतिसुखबढ्यो, जादि
नभयोवसंत ॥ ४१ ॥ कवित्त ॥ फूलेद्रुमबल्लीबनझूलेअलिगंधबो
लैंमदनसदनमानौंमंगलबधावनौं । जहांतहांआवतधुनिगांनहिंडोर
तैंसोकोकिलांनिकोयलकोसोरमनभावनौं ॥ उमहींसकलबालआ
ईवृषभानजूकैंकिसलैकलससंगसोहैंमहरावनौं । हियेंहुलसंतविकसं
तकंजतियमुखनागरबसंतबरसानेमैंसुहावनौं ॥ ४२ ॥ इति ॥ अथदोहा ॥
माघमासराकाभई, प्रगट्योपूरनचंद ॥ होरीडांडोरुपतही, बाढ्यो
ब्रजआनंद ॥ ४३ ॥ इति ॥ कवित्त ॥ लागहीवसंतैंसरसआसजुवति

निकौंफागरसलागभरयोवहीदिनआजहैं । उमगेसकलव्रजवासी
सुखरासीमहाफिरतसुहाईयैंदुहाईरतिराजहैं ॥ होरीडांडोरोपतहीदुंदु
भिस्हनायभेरनागरसमूहडफउठेवाजवाजहैं । हलचलपरीहैंधूंमधीर
जढहनलागेदहलानेमानगढहहलानीलाजहैं ४४॥इति॥अथछंदपद्ध
री॥जितितिलडफसुनियतविनप्रमान।मनुमदनसदनवाजतनिसांन ॥
जगिउठीलगनाचितचौंकिचाह । व्रजबाढयोघरघरअतिउछाह॥ इत
बरसांनौउतनंदगांव।त्रयलोकप्रगटहैंदोउनांव ॥एचाहताहितमनुहार
जीत । अतिउरझेनातैंप्रीतरीत॥नरनारिरंगीलेदुहूंओर । बढिफागु
उदधिआनंदहिलोर॥उतनंदीसुरतैंहितअवेस । कहिपठयोबरसानैं
संदेस॥हमआवतहोरीखेलिकाज । यहकहियोजहांवृपभानराज॥सु
निबढयोसबनिआनंदअपार । चढिचढिअगारगावतधमार ॥ नरना
रखेलसजिसौंजसांनि । रहेरोकिरोकिकैंगेलआंनि ॥उततैंसबआयो
नंदग्राम । बिचलियेमनोहरकुंवरस्याम॥दुहुंओरउठेबाजत्रबाजि ।
कलकूटनिपठगइलाजभाजि॥अतिउडिगुलालचालिरंगधारि । सब
गायउठीव्रजनारिगारि ॥ उतगोपबतावतनिलजभाव । इतवहतलकु
टचटचोटचाव ॥ कइलगतकईछलबलबचात ।कबिकरतफुरतफिरि
कूदिजात॥घूंघटझुकिझूमकदेतनारि । रहेप्रेमपुलकिभावकनिहार॥
अतिगलिनिमांहिबढिपरयोरंग । फिरचढेसबैंमंदिरउतंग ॥ ढिगकुं
वरिललीकैंभइयभीर । छाईगुलालधुंधरिअबीर ॥ छबिमुकटझलक
राजतरसाल । बिचनंदगांवकेजेगुपाल ॥ व्रजबासिनिलीनौघेरि
ताहि ॥ पटझटकतकटिगाहिचाहिचाहिं । कइनिकटआयदेगारि
वोल ॥ कइआंजतअंजनदृगसलोल । कइगुदगुदायगुलचातगाल॥

मनुललितलत्तालपटीतमाल॥ सबसमधानैंकीनवलनारि। बिफरी गावतजसुदाकौंगारि॥ बरसानैंअतिसुपरह्योसुछाय। बढिपरचोरंग बरन्यौंनजाय॥ दैंकियेबिदावृषभानपान। तबचलेनंदगृहसबसु जान॥ इति॥ अथ दोहा॥ नंदग्रामकेलोगसब, इंहिंबिधिहोरीषेलि।नंदीसुरकौंफिरिचले, सबसुषसागरझेलि॥४५॥ सजीसौंज जेवसतहे,बरसानैंकैंबास॥नंदग्रामकेषेलिकौं,सबकैंबढ्योहुलास ४६

अथ नंदग्रामकीहोरी बर्नन लिख्यते

जबभयेलोगएकत्रआय। मिलिचलेदुंदुभीडफबजाय॥ सब लियेंषेलिकौसौंजसंग। जेव्रजबासीरंगिरहेरंग॥ लटपटीसीस पगियांसुहांति। करलियेंमोरछलनचतजांति॥ तनपीरेपटफैंटनि अबीर। व्हैंरहीरंगीलीडगरभीर॥ उतनंदग्रांमनरनारिठाट। इनकीसबजोवतपरेबाट॥ इतकीजबआवतदेखिभीर। वेआये सौंहैंचालिसधीर॥ जहांसुभगभूमिजसुदासुकुंड। द्वैंजुरेसनम्मुख दोउझुंड॥ किलकारिकारिमिलेदौरिदौरि।उड़िउडिगुलालमचिपरी रौरि॥ सिरनायेघटभरिभरिसुरंग। सबझोरबोरभयेअंगअंग॥ नहिंआपआपपहिचांनेंजात। गिरउठतएकलपटातगात॥ वेलष्ट पुष्टगनगोपपीन। एफागकेलिमैंसबप्रबीन॥ कछुकहिनपरतबढि परचोसुषेलि। बहिचलीधरनिपररंगरेलि॥ बनलालभयोफागुन बिहार। छुटिचलेसवैंमिलिनंदद्वार॥ बिचगांवअटारिनिचढिय बाल। भरिरंगकलसढारतगुलाल॥ दररातनीरभररातभीर। गावतगारीदैंओटचीर॥ उडिउडिगुलालमनुभइयसांझ। व्हैंरह्यो

कुलाहलगलिनिमांझ ॥ रसफागमहासुपासिंधुझेलि । यौंमदरप हुंचेपेलिपेलि । श्रीनंदजसोदाकुंवरदेखि ॥ लागीनतनकनैंननिनिमेष । करिउततेउममनुहारचार ॥ औसरबिचारगाईधमार ॥

बरसांनेंकी गोपी फगुवा मांगन आई ॥

॥ अथ छंदपद्धरी ॥ वेजथासमैंगावतधमारि । वाजत मृदंगडफझांझतार ॥ रसमगनकहीकछुसुनैंकौंन । अतिगाजिरह्यो सबनंदभौंन ॥ इकसमधानौंअरूफागमास । अतिहोतपरसपर वचनहास ॥ केउछिरकतकेसरनीरआय । केउमुखरोरीलप टातजाय ॥ उडतहैंअबीरझोरनिगुलाल । बिचमंदरआंगनम च्योसुख्याल ॥ तहांबहुव्रजबासनिआयआय । वृषभानहिंगा रीदेतगाय ॥ व्हैरह्योकतूहलनंदधाम । मुसिक्यातपरेवलराम स्याम ॥ व्रजथकितभयोकौतुकलुभाय । नंदीसुरअतिसुपरह्यो हैछाय ॥ रंगिरहीछबीलीभवनभूमि । व्रजबासनिझूमकदेतझूमि ॥ अथ दोहा ॥ इतठाढेबरसांनियां, समधीलोगनिहारि ॥ धाईएकहिबेरजुरि, नंदगांवकीनारि ॥ ४७ ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ कहिहोहोहोपिलिपरियवाल । कहांरुकैंप्रेमसलिताउथाल ॥ घिरि गईचहूंघांआयआय । तवगयेकईछलकरिपलाय ॥ उनबरसांनैं कोमोहिमांनि । सबभीरचूरिहौंगह्योजुआंनि ॥ कटिफैंटपकरिझ टकतहैंएक । हौंइकवेंव्रजदेवीअनेक ॥ व्हैगईबहुतपैंचासुपांच । डगमगतपगनिबलमिटयोसांच ॥ इकबरसांनैंकेकोउआंनि । पट गांठिजोरिदइतांनितांनि ॥ इतउठेब्याहकेगीतगाइ । दोउओर

हासिरसरह्योछाइ ॥ मोमुपअनोरतियमांजिमांजि ॥ नैननिमैंअं जनदयोसुआंजि ॥ दोहा ॥ सांठिलगैंव्रजसौंजबैं, व्रजतियमिल वैसांठि ॥ गांठिकुलुधकीजबछूटैं, एपटबांधैंगांठि ॥ ४८ ॥ अप नावैंव्रजवासिनी, तबव्हैंव्रजसौंहेत ॥ व्रजसरूपसूझैंतबैं, व्रजतिय अंजनदेत ॥ ४९ ॥ छंद पद्धरी ॥ इंहिंरीतषेलभयोनंदद्वार । सुपभांतिभांतिबाढ्योअपार ॥ पुनकियोविदाश्रीगोपराज । सनमांन पांनदैंदैंसमाज ॥ सबविधिसुपलैलैंकियेहैंगौन । डफदुंदभिबाज तचलतभौंन ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ बरसांनैंनंदगांवको, षेलिभ योजाभांति ॥ सोबतनकसोहीकह्यो, कह्योसबैंकहांजांति ॥ ५० ॥ मधुमाधवजेठोत्सवहि, यातैंबरन्यौंनांहि ॥ एकफागआगैंजिते, सब फीकेदरसांहि ॥ ५१ ॥ व्रजलीलाउच्छवबहुत, मनलोयनसुषदैंन ॥ वेनकहेमैंतेकहे, जेदेषेंनिजनैंन ॥ ५२ ॥ यहैंरंगीलोधामहैं, औरधामकछुऔर ॥ धन्यधन्यजेकरतहैं, व्रजहोरीइकठौर ॥ ५३ ॥ वैकुंठादिकलोकजे, व्रजपरडारूंवार ॥ उच्छववारूफागपर, जेप्रसि द्धसंसार ॥ ५४ ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्रजकीसोभाफाग ॥ फाग बिनांकहालागहैं, लागबिनांकहाफाग ॥ ५५ ॥ फागलागकेसुषजि ते, तिनकेयेद्वैठांव ॥ गउरस्यामजीवनिजहां, बरसांनौंनंदगाव ॥ ५६ ॥ गउरसांवरेरसिकदोउ, यहदीजेसुषरास ॥ कबहुनागरीदासअब, त जैंनव्रजकोबास ॥ ५७ ॥ माघअष्टदससतशुदस, बिचबृंदाबनबास ॥ ग्रंथ तीरथानंदयह, कियोनागरीदास ॥ ५८ ॥ इतिश्रीग्रंथतीरथानंदसं० ॥

अथ ग्रंथ श्रीरामचरित्रमालालिख्यते ॥

श्रीरामचंद्रायनमः ॥ दोहा ॥ सियारामपदध्यायकैं, कोमलक

मलनवीन ॥ रामचरितमालारचूं,चुनिचुनिपदप्राचीन ॥ १ ॥ अथ श्रीरामजन्मसमयपद॥चलिरीआजुहैमंगलचार॥ राजादसरथकेदर वार ॥ अतिसुंदरश्रीरामस्यामतनप्रगटेराजकुमार ॥ पावतगुनीदा नवहौकंचनअरुमनिमुक्ताहार ॥ नागरिदासअमंगलमिटिभये मंगललोकअपार ॥ पुनपद ॥ अवधिपुरबाजतआजुबधाई ॥ भईन गरपरभीराविमाननिप्रगटिभयेरघुराई॥ वरषतकुसमधुजाकलसनिप रिअतिसोभाउफनाई॥नागरिदासगानमंगलधुनिछायरहीसुषदाई ॥

अथ बाललीला पद ॥

करतलसोहतबानधुनहियां ॥ षेलतफिरतकनकमयआंगनपहि रेलालपनहियां॥ दसरथकौसल्याकेआगैंबसतनैनकीछहियां॥मानौं च्यारहंससरवरतैं वैठेआनिसदहियां ॥ रघुकुलकुमदचंद्रचिंतामणि प्रगटेभूतलमाहियां ॥ यहैंदैनआयेरघुकुलकौंआनंदनिधिसबकाहि यां ॥ यहसुखतीनलोकमैंनांहीसोपइयेप्रभुपाहियां ॥ सूरदासहरिवोल भक्तकोनिवाहतदैवहियां ॥ पुनः पद ॥ छोटीसीधुनहियांपनहि यांपायछोटीछोटीसीकछोटीकटिछोटीसीतरकसी॥ राजतझगुलीझी नीदामिनीकीछविछीनीसुंदरबदनसोहैंपगियांजरकसी ॥ मोमनह रनिविचित्रआभूषनकछूकछूआवतसनेहकीसरकसी॥ सूरतकीमूरत कहीनवनैंतुलसीजोइजनजानैंजाकेंकसिकैंकरकसी ॥ पुनः पद ॥ धनुहींबांनालियैंसंगडोलत ॥ च्यारौंवीरधरिसंगअतिसोभितबचनम नोहरिबोलत ॥ लछमनिभरतसत्रुघनसुंदरराजीवलोचनराम ॥ अ तिसुकुमारपरमपुरषारथअर्थधर्मधनकाम ॥ कटितटपीतापिछौरी वांधेकाकपक्षधरेंसीस ॥सरक्रीडादेखनिदिनआवतस्यौंसुरनारिअनी

स ॥ सिवमनसोचइंद्रमनआनंददुखसुखविधिहिसमान॥दितिदुबेल अतिअदितसुसुखमननिरखिसूरसंधान ॥ इति पद ॥

अथ अश्वगिंदुकलीला पद ॥

रामलच्छइकओरभरतरिपुदमनलालइकओरभये॥ सरजूतीरसमस्तभागकरिगनिगनिगुनियांवांटिलये ॥ गिंदुककेलिकुसलहयचढिचाढिमनासिजसेवानिढोकिपये॥करकमलनिविचित्रचौगानैंखेलनिलगेपेलिरिझये॥व्योमविमाननिविविधिविलोकितखेलनिछांहछये॥भूरभागअनुरागउमगिजलसकुचिसकुचिसिरनैंनिनये॥इकलैंवढतएकधरिफेरतप्रेमप्रमोदविनोदमये ॥ एककहैंभइहालरामकोएककहैंभइयाभरतजये॥प्रभुवकसतगजवाजसाजसौंजैधुनिगगननिसानहये॥तेसेवगजाचिकभरिजीवनिफिरिनदूसरैंद्वारगये ॥ जामअवधिकरिजाचतब्रह्मातृजिगजौंननवठांमठये॥ तुलसीतेसमांनऊपरजेप्रभुकेनिजरंगनिरये॥ पुनः पद ॥ झरौखैंझांकैंदसरथरानी॥कौसल्यादिसुतनिकेसुखकौंदेखतनांहिंअघानी ॥ नैननिनीरपुलकउरआनंदकौतकरहीनिहार॥च्यारूंवीरअश्वगेंदुकमिलिखेलतराजकुमार ॥ ललकारतदुवटतअसितातेआवतदृष्टिनपारिहीं॥विज्जुलतासेपलटपलटहयलैंलैंगेंदनिकारिहीं ॥ वारतमातवसनभूषनमिलिवकसतनृपगजवाज ॥ भईविमाननिभीरअवधिपरिदेखतअमरसमाज॥अर्थधर्मअरुकाममोक्षयेमानहुंरूपधरैं ॥ नागररामचंदसबहीकेदृगनिकोतिमरहरैं॥पुनः पद ॥ खेलतअश्वगेंदुकवीर॥सत्रुघनअरुभरतलछमनरामसरजूतीर॥ सुभगअतिसमभूमिपरहयचपलपदगतिचार॥पत्रचलदलचलत

जनुंथरहरतमुक्ताथार॥ परसपरलैजातगेंदुककरतहथछुटदौर ॥ भ्रम तलोलपनरनिकोमनज्यौंनठहरतठौर ॥ उठतअंगझकोरसौंधेंके लिश्रमचौगांन॥ टूटमोतीमालविथुरतचिकुररजलपटांन ॥ खेलिवि चहसिहसिवहसकेवदतमधुरेबोल॥हियेनागररहोदसरथराजकुमरक लोल ॥ पुनः पद ॥ सोईखेलनिहारे॥उतरिउतरिचुचकारितुरंगनि सादरजायजुहारे ॥ वंधुसखासेवगसमाजसनमानसनेहसुहाये॥दिये वसनगजबाजसाजसुभभूसवभांतिसुहाये॥ मुदितनैंनिफलपायगाय गुनीसरसानंदसिधारे ॥ सहितसमाजराममंदिरकोंश्रीरामरायपांव धारे ॥ नितिनितिमंगलमोदअवधिसवविधिलोगसंवारे॥ तुलसीतेस मानतेऊपरजेप्रभुचरितसुखारे ॥ इति पद ॥

अथ रिषि विस्वामित्र अजोध्याआगमनि जाचंग्या पूरन पद ॥

नृपतिघरविस्वामित्रपधारे॥पदपदार्थव्हैंवैठतहीजाचंग्यावचनउ चारे ॥ देतमहामखमांझनिसाचरअतिदुखदुष्टदुखारे ॥ तनसुंदरघन स्यामरामयेदीजैंसंगहमारे॥ रिखमुखवचननमान्योदसरथभयेमगन सरमोह॥जानीनहिंमानीजाचंग्यादुजमनउपज्योछोह ॥ फरकतअ धरअरुनलखिलोचनरहीसभाभैपाय॥ मानौंविस्वप्रलयकेकारनरुद्र उठेअकुलाय ॥ भुवडगमगतविटपिउडटूटतदिग्गजधृतडिगुलाये जान्यौंअंतहिहोतअवधिपतिजववसिष्टसमुझाये ॥ अतिसुकुमारम नोहरमूरतगउरसांवरेअंग॥नागरिदासकुमरदोउदीनेंकरितपसीकेसं ग ॥ इति पद ॥

अथ विस्वामित्रसंगलीलापद ॥

सानुजभरतभवनउठिधाये॥पितासमीपसमाचारलैंमुदितमातपैं आये॥गदगदसुरतनपुलकअधरफरकतलखिप्रीतिसुहाये॥कौसल्या लयेलायहृदयसौंवलिवालिकहतकछूसुधिपाये ॥ सतानंदप्रौंहितअ पनौतोहितिनातपठाये॥कुशलक्षेमरघुवीरलछिनिकीललितपात्रिका लाये ॥ दलीतारिकामारिनिशाचरमखरापेतियतारी ॥ लैबिरदसु फिरिगयेजनकपुरगुरसंगरहेसुखारी ॥ सजिपिनाकपनसुतास्वयंवर सवनृपकटकवटोरचो ॥ राजसभारघुवरमृनालज्यौंशंभुसरासनतो रचो ॥ यहसुनिसिथलसनेहवंधुदोउअंवुअंकभरिलीनें॥बारबारमुख चूंमिचापिकैंवसनन्यौछावरकीनें ॥ सुनतसवासनिचाहिअवधिघर घरआनंदवधाये॥तुलसीदासरनवासरहीसरससखीनिमंगलगाये ॥ इति पद ॥

अथ यापदकी टीका प्रथमतारिकादि हतनि मखरिष्या पद ॥

असुरसुबाहुतारिकामारी॥सप्तत्रैंसवीरासनरावकरीजज्ञरखवारी॥ स्थापकधर्मअधर्मउथापकनागररामउदार ॥ धनुषवानकरलियेप्रग टिभुवभक्तहेतअवतार ॥ इति पद ॥

अथ अहल्या झींवर समय पद ॥

चरननिकीमहिमामैंजानी॥प्रगटसिलातेंनिकसीसुंदरिपदपरसत गउतमरानी ॥ देखिचिन्हचकतभयोझींवरनावलईगहिरेपानी ॥

चरनप्रछालचढोतुमरघुवरदीनवचनवोलतवानी ॥ तरुनीमेरीता रोजोतुमहोयसकलकुलकीहानी ॥ कृष्णादासकटहरियाकेप्रभुक हाजानैंनरअभिमानी ॥ पुनपद ॥ पावनपदरजरघुवीरकी ॥ जा परसतसिलकोतनपलटयोगतिभईदेवसरीरकी ॥ ल्यावनावपेवटि बोलेप्रभुठाढेतटिनीरकी॥ चलेपलायफेरिनहिंचितवतसंकारामसधी रकी ॥ करतपरमगतिपरमकृपानिधितारिपतितभौभीरकी ॥ जा तनावबैकुंठसघरणीकुटंवसहितकीरकी ॥ सेसमहेसनिगमनारदमु निसेवाब्रह्मउजीरकी॥ परसाशुकसनकादिभजनरतिउरधरिगुनिगं भीरकी ॥ इतिपद ॥

अथ जनकपुर प्रवेस उपवन विहार समय प्रथम दरसन पद ॥

जनकसुताउपवनमैंआई॥ पूजनधनुषपहुपकेकारणसखीवृंदलैं धाई॥वेनावीनमृदंगसंगधुनिहोतमनोहरगान॥ चलवतचंवरसपीउड गनविचासियद्युतिचंदसमान ॥ नूपुरसब्दविपनव्यापकभयोसकल रगमगीआनि॥ झूंमझुंकावतद्रुमनिद्रुमनिछाविकनकलतासीजानि॥ इतरिषपठयेपहुपलैंनकौंअतिसुंदररघुवीर॥ भईअचानकभेटरूपकी परीदृगनिपरभीर ॥ सजलकमलदलसेदृगइतउतरहेनिहारिनिहा रि॥ मनमथसरनिसुमारभयेदोउरहतसह्मारिसह्मारि ॥ कठिनफिरे अपनोमनदैदैंसुधिकारिगुरजनकानि॥ मननैननिलयोस्वादअलौकि कनेहरूपसरसानि॥ प्रीतजहांमजीदरहतनहिंयेमजीदासागर॥इहिं रसकारननंदभवनतबप्रगटभयेनटनागर ॥ इतिपद ॥

अथ स्वयंवर समय पद ॥

स्वयंवरजनकरच्योसीताजूकोव्याह॥ अतिअद्भुतकौतुकदेखत हीमिटतहृगनिकेदाह ॥ देसदेसकेनवनरेससुनिसुनिसववेसवनाये॥ हयगयसजदलदलतमहीथलमिलिसवमिथुलाआये ॥ भूपनिकोरूपदेखिगर्वगयोलोगसुविस्मयपाये॥ एककामसोतोहरजारचोएककोटि कामकिंहिंजाये ॥ तापीछेरघुवीरधीरलघुवीरसहितपावधारे॥ उदित भांनजनुभवनभवनप्रतिदीपकफीकफिकारे ॥ मदगजसेनृपचाहिचकितभयेओजमनोजसिधारे॥वालसिंधसमसुंदरअतिगातिराजतप्रान पियारे॥महामल्लसतअष्ठकष्टकरिधनुषसभामेंआन्यौं॥करिकरिकोउ वलवंतवदनदसताहुकोभुजवलभान्यों ॥ नृपतिसमाजमध्यठाढोव्है यौंकहिदूतवषान्यो॥जौऐंचैसोवरैंजानकीजनकयहैंपनठान्यो ॥ एकचापकोदरसकरतहींमिसहीमिसजुपलानैं॥ एकउठावतगिरतधर निधुकिओरहिआनउठानैं ॥ दसदससहस्रगजानिकोबलनृपतेऊ निपटपिसानैं॥देखिहसेदोउवीरपरसपरलागतपरमसुहानैं ॥ तवरघुवरनवघनमूरतिश्रीसियतनमुरिमुसिक्यानैं॥दामिनिसोपटकटिलपेटछबिसोचालिचापनिरानैं ॥ तिंहिंछिनअंधवृद्धनरनारीसुरमुनिराजारानैं॥भईभीररघुवीरकेकौतुकदेषनिकौउररानैं॥ झटदैंलैंचटदैंचढायतटदैंधनुतोरिगिरायो॥ जनकमुदितजुवतीमुदितसियकोवप्रानघटआयो ॥ जैजैजैसवकहतअमरगनपहुपनिअंवरछायो ॥ नंददासवलिवलितिंहिंऔसरघरघरमंगलगायो ॥ इतिपद ॥

अथ विवाह समय तथा अयोध्या प्रवेस समय पद ॥

च्यारदूलहवनेकुंवरअवधेसकेचलेव्याहनिअलीजनकनृपकेसद

न॥सुहेवागेवनेसरससौंधेसनेथकितव्हैरहिगयोनिराखिसोभामदन ॥
सोहैंसिरसेहरापच्चतनगजगमगतलगतकमनीयअतिविमलविधुसेव
दन ॥पातवीरागरैलसतहीरापदकदमकिमुसक्यानमैंसिपरमानिसेर
दन ॥ विविधिभूपनवसनसजिचतुरंगिनीलगीचकचौंधसीमिलेदि
नमनिकिरन॥ नटीछविजटीसवनचततपतनिचढीवजतनौवतामिली
सकलवाजनिपरन ॥ जनकपुरधरनगरडगरवनवाटकनिपचितम
निकोसकैंताकीसोभावरन॥ सवहीसंपतभरयोव्याहकौदेपिकैंअवाहि
मानौअमरपुरउतरिआयोधरनि ॥ लैकैंजनवासतैवागरचनाभईप
रषगजअश्वकपिऔरकौतकघनें॥ अगनिकेजंत्रतहांछुटानिलागेअग
[illegible]नजोतिमयमनहुतिंहिदिनठनें ॥वाजगजवसनअरुविविधि
भूपनसवैंतनकहुनथाकहींदेतमंगदजनें ॥स्तुतिकरैबंदीजनविरदव
रनैंनये॥ मिलेमांगदसवैंदुहूंवंसनिभनें ॥ वडडेअश्वनचढेकुंवरसंम
दवढेपढेकेकांनअसनचतलियेमानकौ॥उततैंसाजिसेनानिजजनकनृ
पप्रेमतैलैनआयेसह्मैंजानमनिजानकौं ॥ समधीसमधीमिलेप
रसपरअतिपिलेनारिमिलिगारिदैकरानिलगीगानकौं॥ अटानिचढिदु
रवधूवारैंभूपनवसनदेषिकैंविवसभइरघुवंसभानकौं॥ पौरिपहुंचेतहां
चारुतोरनबंधेगजनचढिपडगसोंजायपरसे॥उतरिभीतरगयेगजसुने
गानिलयेसब्दजयजयभयेकुंवरदरसे ॥ रहिसपुरनारिसववारिसरव
सकहैदेहधरेच्यारनृपपुन्यपरसे॥ जनककुलप्रोहितनिआयकरिआर
तीतिहिंसमैंहेमसभमोतीवरसे ॥थारमानिमानिकानिभरयोमंत्रनिस्वरो
तिलककरिदुजवधूअछितलाये॥ चातुरानिपातुरानितिंहिसमैंसोहिले
अधिकमनमोहिलेमधुरगाये॥ सफलकरिलेखनैनैनकरिपेषनेंदेखनें

देवदिगपालआये॥ विविधिअद्भुतवनैंघनैंनभजानसोदिसाविदिसआकाससकलछाये ॥ व्याहमंडपतरैंजायठाढेभयेयथाविधिदुजवरनव्याहठान्यौं॥ च्याररचिमाढयेतिन्हैंतहांलैंगयेकंन्यावरजोग्यतहांआनिवान्यौं ॥ लायपटगांठिपरसायकरदुहनिकेवनावनींपरसपरमोदमान्यौं ॥ फेरालिवायजूअगनकौंसाखिदैंछाडयोनृपकन्यकादानपान्यौं ॥ दुगधओदनतहांपरसपरकौमदैंनवलजुवतीजुवावहुतहरषे॥ उंहीमिसानिराखिमुखसरदउडराजसेअवधिमहाराजसुतचित्तकरषे॥ कुंवरिहूउहीमिससुघरवरवरनलखिअपअपनैंजोग्यनिजनाहपरपे॥ तिहींपुरतिहींदिवसपरममंगलभयोसंकभइलंकघनरुधिरबरपे ॥ दुजनिदइदक्षिनाग्रामगजतुरंगरथरतनपटवरनेवेजानकापैं ॥ षोलिभंडारदयेभूपसबआपनैंलेहुजाचिकजुलयोजायजापैं॥करीज्यौनारअसचतुरविधिभोजननिरुचिसौंजेंवैजदपिवहुरिधापैं॥पूजिकुलदेवकौंपेलिजूवातहांबिछायदयेपलकाजव्थैबैठेंतापैं ॥ बिबिधिदयेदायजेकरीपहिरावनीअवधिभूपालभयेअधिकराजी ॥ इनहूंपुनिजाचकनि देयेअतिमोदसौंअनगनितबसनमनिनागबाजी ॥ चलेलैंदुलहनिकुमरनिजनगरकूंचढीवडीफौजसोअधिकछाजी ॥ चहूंदिसबजिउठेबिबिधबाजेघनैंघनज्यूंगंभीरनौबतजुगाजी ॥ आयपहूंचेकितिकदिनानिअवधिकूंअवधिनवनिधिभरीपटनिछाई ॥ कियोपरवेसंतबकारिकेगंठजोरतहांसुघरवरनवकिसोरचारूंभाई ॥ साजिकैंआरतीजननीतीनूंतबैंजुवतीजनसंगलैंसाम्हैंआई ॥ आरतीकरीजुपुनवारिमनिमानकनिबृंदावनप्रभुनिकिलईबलाई ॥ इतिश्रीदसरथप्रागटिकुंवरसमयचारित्रपद ॥

अथ श्रीदसरथ पश्चात श्रीराममहाराज समय ॥

॥ दोहा ॥ औरकथाकरुनामई, मैंनलिपीहैंजांन ॥ अवैंवीररस धरतपद, रावनहतनिविधान ॥ १ ॥

अथ सिया सुधि लैंन हनूमान समुद्र उल्लंघन समय पद ॥

तवैंइकअंगदवचनकह्यो । तरिकैंसिंधुसुधिलैहैकिहिंवलइतोलह्यो ॥ इतनींबातश्रवनसुनिहरष्यो, हसिवोल्योजामंत ॥ यादलमध्यप्रवल केसरीसुत, जाहिनामहनुमंत ॥ जोमनकरैंएकवासरमैं, छिनआ वैंछिनजाय ॥ स्वर्गपतालआहिताकौंगम, कहियेकहावढाय ॥ यह लैंहैंसीतासुधिपलमैं, अरुऐहैंजुतरंत ॥ इंहिंप्रतापत्रिभुवनकोपायो याकेवलहिनअंत ॥ जवैंवुलायसुचितचितव्हैंकह्यो, वच्छतंवीरहि लेहु ॥ ल्यावहुजायजनककन्यासुधि, रघुपतिकोंसुषदेहु ॥ पौरपौ रप्रतिफिरहुविलोकत, गिरकंदरवनगेहु ॥ लेहुविचारिमुद्रिकादी जहु, सुनिहुमंत्रसुतएहु ॥ धरिअहिपत्रसीसमारतसुत, कह्योचौ गुनोगात ॥ चढिगिरसिखरवचनइकउचरयो, गगनउठ्योआघात ॥ कंपतसिंधुसेसवसुधानभ, रविथंम्योउतपात ॥ मानहुंमेरपच्छहैंलागे, उड्योअकासहिजात ॥ चक्रतभयेपरसपरवनचर, वीचकरीकिल कार ॥ तहांनिसाचरीमिलीजुअद्भुत, करिआतिमुखविस्तार ॥ पवनपूतउरपैठिविदारी, तवहींलगीनवार ॥ सूरदासस्वामीप्रतापतैं उतरयोजलनिधिपार ॥ २ ॥ इतिपद ॥

अथ हनूमान लंका प्रवेस सियासोधन तथा दरसन संभाषन मुद्रिका दैन बिपुन विध्वंसन असुरसेना हतन रावन संभाषन पुरी प्रजारि लांगूलसांतकरी आयपुनजानकी पद परस करनसमय पद॥

हनुमानलंकाजुसिधाये ॥ सूछमतनकरिभीतरआये ॥ पुरगिरसकल कंदराहेरी कहूंदृष्टिनाहिंआई ॥ बिपुनअसोकासिंसपाद्रुमतर जनक सुतातहांपाई ॥ करिप्रनामअरुदईमुद्रिका कहीकथाजोरामकहाई बागबिध्वंसहतेदानवदल सदृढबचनकहिलंकजराई ॥ बहुरआरसी तापदपरसे पहिलेउदधिलांगूलबुझाई ॥ नागरीदासकह्योआग्या व्हैं जायकरौंदरसनरघुराई ॥ ३ ॥ इतिपद ॥

अथ हनूमान प्रति संदेस कहन पद॥

देषैंहोकपिजातसंदेसकहांहोंकहौं ॥ सुनिकपिइनप्राननिकोपहि रोकवलगिदेतरहौं॥ एअतिचपलचल्योईचाहतकरतनकछूबिचार ॥ लैलैंनामजतनकरिराषतरोकिरोकिमुखद्वार॥ वारबारअकुलायकहत हौंडरपतहौंहनुमंत ॥ नांहिनसूरसुनोकाहूको दुषकरुनामयकंत ॥ ॥ पुनपद ॥ मेरीओरतेविनतीकीबी ॥ पहिलेनामसुनायपायपरि मानिरघुनाथहाथलैंदीबी ॥ मंदाकिनितटफटिकसिलापरिसुमरतसुर

तहोतउरअरनी ॥ कहाकहौंकपिकहैंवनैंअव, मुखमुपजोरितिलक कीकरनी ॥ तुमहनुमंतपुनीतपवनसुतकहियोजायजुहैमैवरनी ॥ सूरसुनैननिआनिदिषावहुमूरतदुसहदोषदुषहरनी ॥ इतिपद ॥

अथ हनूमान रघुपति ढिगआय विज्ञप्ति करनि पद॥

रघुपतिवेगजतनअवकीजैं ॥ बांधिहुसिंधुवेगसुभटनिकौं आपुनिआयसुदीजैं ॥ तौलौंवेगतरौंयापौकौं द्रुमपाषाननिछाय ॥ दुतियसिंधसियनैननिकोजल जवलगिमिलैंनआय॥ यातैंबिनतीकरतकृपानिधि वारवारअकुलाय ॥ सूरदासअकालप्रलयप्रभुमेटोदरसदिषाध ॥ इतिपद ॥

अथ श्रीरघुनाथ उदधिउलंघन समय पद ॥

उदधितटउतरतरामउदार ॥ रोषावेषकियेरघुनंदनसबाविपरीतव्यौहार ॥ सागरपरिगिरगिरपरिअंवरकपिघनकैंआकार ॥ गरजाकिलकिआवातउठतमनुदामिनपावकझार ॥ उमडतसललिसमातनसलतनिचलतउलटिकैंधार ॥ मनुरघुपतिभयभीतिसिंधुपरिपतनीपठईप्यौसार ॥ सेनासेतगगनमारगअरुचाढजलचरविचवार ॥ सीयसुगनसुभहोतसूरप्रभुजलनिधिउत्तरेपार ॥ इतिपद ॥

अथ रावनप्रति मंदोदरीबचन पद ॥

सरनपियजाइयेमनक्रमबचनविचारि ॥ ऐसोकोसमरथत्रिभुवनमैंजोअबलेहिउवारि ॥ सुनिसिषिकंतदंततृनधारिकैंसहपरवारसिधारो ॥ परमपुनीतिजानकीसंगलैंकुलकलंकाकिनिटारो ॥

एदससीसचरनतररापोतजिमातिकुटिलअधीर ॥ मेटैंगेअपराध महाप्रभुकृपाकरानरघुवीर ॥ जिहिंतोरिधनुषमुखमोरिनृपतिकौं सियास्वयंवरकीनौं ॥ छिनइकमधिभृगुपतिप्रतापवलकरपिहु दोहरलीनौं ॥ लीलाकपटकनकमृगमारयोवध्योवालअभिमानी ॥ सोईदसरथकुलचंदअमितबलआयेसारंगपानी ॥ जाकोदलसुग्रीवसुमंत्री प्रबलजूथपतिभारी ॥ महासुभटरनजीतिपवनसुत निडरबजरबपुधारी ॥ करिहैंपंकलंकछिनभीतरबजरासिलालैंधाय ॥ कुलकुटंबपरवारसहिततोहिवधतविलंबनलाय ॥ अजहूंबलगिनकरि संकरकौंमांनिवचनसुनिमेरो ॥ जायमिल्योकौसलनरेसकौंबंधुविभीषनतेरो ॥ कटकसोरमंदोदरसोंदिसदेखतकपिदलभीर ॥ सूरस्वामिरघुवंसतिलकदोऊउतरेहैंजलनिधितीर ॥ इतिपद ॥

अथ अंगदसंधिसंदेसार्थरावनढिगआवनवर्णन ॥

पद॥ वालनंदनवलीविकटवनचरमहाद्वाररघुवीरकोवीरआयो॥ पौरतैंदौरिदरवानदसमाथसौंजायसिरनायर्यौंकहिसुनायो ॥ सुनिश्रवणदसवदनसदनअभिमानकैंनैनकीसैनअंगदबुलायो॥ विविधिआयुधधरेसुभटसेवैंखरेछत्रकीछांहनिर्भयदिखायो ॥ देखिहरिवेषलंकेसहरहरहस्योसुनहुभटकटककोपारपायो॥ देखिदानवमहाराजरावनसभाकहनकोमंत्रजबकपिपठायो ॥ रेरंकरावनकहांडंकतेरोइतो दौरिकरजोरिविनतीविथारो ॥ परमअभिरामरघुनाथकेरोमपरवीसभुजसीसदसवारिडारो ॥ कोपिकरिबालगहिकाललंकाधिपतिरेमूढरामकौंसीसनांउं ॥ सिंभुकीसपतकपिकुपथकायासकलस्वास

आकासबनचरउडाउं ॥ फेरिकैंचरनहैंपंचासिरपहुमिदेसबानिदेखत अरेअबसंधारौं ॥ जानकीनाथकेहाथतेरोमरनकहामतिमूढतोहिबीचमारौं ॥ तोहिबनचरअबहीदंडदैहूंदेखिकोपिअनचरनिआज्ञाउच्चारी ॥ तिहींछिनबालसुतज्ञपटपटमुकटलैपटकिभुवअसुरभयोगगनचारी ॥ मारिअसुरनिसभाजीतिपुरकनककीतेजहरिचक्रसमछोहछायो ॥ सूरप्रभुसुभटलंकेसकीलाजलैरामपदकमलसिरआयनायो॥ इतिपद ॥

अथ रघुबीर वीर उच्छाह उच्चारनि पद॥

दूसरेकरबाननलैहौं॥ सुनिसुग्रीवप्रतंग्यामेरीएकहिबानअसुरसबहैहौं ॥ सिवपूजाजिहिंभांतिकरीहैंसोपंकातिसिरसंततजैहौं॥ करतप्रहारपापफलवर्जितसिरमालाकुलसहितचढैहौं ॥ करौंनविलंबकछूजोछिनइकअरिसनमुखह्वैपैहौं ॥ जैसेतूलज्ञुपरतअगनिमुखजारिजडनिजमपंथपठैहौं ॥ यौंबधदुष्टदेवदुजमोचनलंकाविभीषनतोकौंदैहौं ॥ सीतासहितबंधुसूरप्रभुकृतपनपारिअजोध्याऐहौं॥इतिपद॥

अथ जुद्धसमें रावनहतन पद ॥

आजुअतिकोप्योहैंरनराम॥ब्रह्मादिकआरूढविमाननिदेखतसुरसंग्राम॥घनतनकवचवीरवरसाज्यौंकरसाज्यौंसारंग॥ सुचिकरिसकलबानसूधेकरिकटितटिकस्योनिषंग ॥ छुभितसिंधुसेससिरकंपतिपवनभयोगतिपंग ॥ इंद्रहस्योहरहसिविलखानेजानिबचनकोभंग ॥ टूटतध्वजापताखछत्ररथचापचमूअसत्रान॥सोभितसुभटजरतमानौंदौंद्रुमबिनसाखापान॥ घनअंबरदसहूंदिसवाढीसायककिरनसमान

मानौंमहाप्रलयकैंकारनउदितउभयपटभान ॥ श्रोणछिंछउछरतअ
कासलौंगजवाजनिसरलागि ॥ मनहूनगरतृणघरनिधरनितेउपजीहैं
अतिआगि ॥ उठिकमंधभाहिरायभीतव्हैंपरतवजनुजरिजागि॥फिर
तसृंगालसिलौसौंक।दतचलतवासिरलैंभागि ॥ रघुपतिरिसपावकप्र
चंडभइसीतास्वाससमीर॥ रावनजुतकुलसघनवेणुवनऔरुसुभटरन
धीर ॥ होतभस्मकछुवारनलागीज्यौंज्वालापटजीर॥ सूरदासप्रभुवि
पुलबाहवलछिनकमांझकियेकीर ॥ इति पद ॥

अथ श्रीरामविजयसियामिलनि पद ॥

बाढ्योआजुलोकानंद॥ मिलतसियमुखचंद्रिकाचलिअमलरघुप
तिचंद ॥ संषपटहिनिसांनमंगलगानरवऊच्चार ॥ बिभीषणहनुवंत
आगैंभक्तिजनप्रतिहार ॥ धायआयेश्रवनसुनिसुनिसकलहरषितगा
त॥भालकपिअनगनतसेनादरसहितउतरात॥ दारछरीप्रहारआगैंनां
हिपावतजान ॥ कह्योतबसबहिनप्रभूसौंवराजियेहनुमान ॥ तबैंसिवि
काछांडिसीताचलीआग्यापाय ॥ रामदलबादलनिबिचमनुदामिनीं
दरसाय॥ उडीरेनुआकासपूरतकटकभटबहुसाथ ॥ दासनागरमिले
आनंदजानकीरघुनाथ ॥ इतिपद ॥

अथ अयोध्या आगमनि आनंददैनार्थ हनूमानपठावन पद ॥

वेगपवनसुतकूंदसरथसुतआनंददैनपठाये॥ कुसमविमानतैंउतरि
वीरकपिनरवपुधरिकैंधाये॥ गुहिकूंसमाचारकहिकैंफिरिकहैंभरथकूं
जाय॥मारिलंकपतिकौंसीतापतिआयेहैंरघुराय॥सुनिकैंमुदितचक्रत

चितवतहैंमुखतेकढैनवैन ॥ आयेसिमिटितवैंश्रवननिमैंमनत्रतप्रानरु नैंन ॥ मिल्योजायतबकृपासिंधुसौंभरतभक्तिजलसोत ॥ नागरीदा सरामपदसेवततिन्हैंक्यौंनसुखहोत ॥ इतिपद ॥

अथ विमान दरसन निकट आगमनि पद॥

देखोरामराजाव्हैंआवत ॥ दूरहितैंदुतियाकेससिलौंपुरजनव्यो मविमानवतावत ॥ सीयासहितवरवीराविराजतअवलोकतआनंदब ढावत॥ अगैंबंदरभीरमहाभटज्यौंघनगगनपवनवसधावत ॥ निक टनगरजियजानधरयोधरजनमभूमिकीकथाचलावत ॥ यहममज नममयहैंप्रजाजूप्रियजनआपकपिनिकहिकहिसमुझावत ॥ यहव सिष्ठकुलपूजिहमारेपालागिहुसबसखनिसिखावत ॥ यहस्वामीसु ग्रीवविभीषणभरतहुतेमोकूंजियभावत ॥ कोजानतोकहांदशरथसु तवनजुगयेकछुबातनआवत ॥ सबकीरतिकीअवधिइहालौंबरनत अंगजहांहृदोजडावत ॥ रिपुहनिदेवकाजसुखसंपतिसकलसूरइन हीतैंपावत ॥ इतैंमानकरिकृपाकृपानिधिसुरपैंठतजनकौंजसगा वत ॥ इतिपद ॥

अथ अजोध्यापुरीप्रवेसानंद पद ॥

आजसखीअवधिपुरमध्यमंगलमहा ॥ सकलसुरनरनिमनमोदवर नोकहा ॥ कदलीकंचनकलसविमलनौरतनजुतदीपतदीपावलीलस तलाजा ॥ द्वारतोरनिरचितधामधामनिधुजापुरीप्रवसितासियारामरा जा ॥ घटनिसीअटनिदुतिदामिनीकुलवधूगानधुनिकरतमुनिमननि करषै ॥ परमउत्सवभरीअवधिपरअमरगनगगनतैंरसमगनकुसुमवर

पैं ॥संगरघुवीरलघुवीरसेनासहितवजतवादित्रचहुंधासुहाये ॥ नागरी दाससुषरासरघुकुलतिलकदेवकरिकाजनिजराजआये ॥इतिपद ॥

अथ कविबचनफल स्तुति ॥

॥ दोहा ॥ पढैंसुनैंयाग्रंथकूं, घरीएकदिनजाम ॥ जाकेहियनि तप्रतिबसो, सियारामअभिराम ॥ इतिपद ॥

॥ दोहा ॥ संमतअष्टदससतजुषट, हिंडनिसलितातीर ॥ नागर पदचुनिचुनिकियो, ग्रंथचरितरघुवीर ॥ इतिश्रीग्रंथरामचरित्रमाला संपूर्णम् ॥

अथ मनोरथ मंजरी ॥

दोहा ॥ मोनैंननकीठौरकौं, कवलैंहैंवहरूंध ॥ तीनतापसीतल करन, सघनतरुनकीधूंध ॥ १ ॥ कववृंदावनधरनमें, चरनपरैंगे जाय ॥ लोटिधूरिधरिसीसपर, कछुमुखहूमैंपाय ॥ २ ॥ पिककेकी कोकिलकुहुक, वंदरवृंदअपार ॥ ऐसेतरुलखिनिकटतैं, कवमिलि हौंवांहपसार ॥ ३ ॥ कवैंरसीलीकुंजमैं, हौंकरिहौंपरवेस॥ लखिल खिलताजुलहलही ॥ चितव्हैंगोआवेस ॥ ४ ॥ प्रियपरकरकेसुघरज न, विरहीप्रेमनिकेत ॥ देखकबैंलपटायहौं, उनतैंहियकरहेत ॥ ५॥ मोकौंलैंएकंतमैं, मिलिमिलिरासिकबिसाल ॥ कवैंसुरतनवकुंजकी, कहिहैंवातरसाल ॥ ६ ॥ कछुमोहूमैंप्रेमलषि, तबऔरनतैंफाट ॥ कवैंपुलिनलैजाहिंगे, करनमानसीठाट ॥ ७ ॥ जमुनातटनिसिचांद नी, सुभगपुलिनमेंजाय ॥ कबएकाकीहोयहौं, मौनबदनउरचाय ॥ ८ ॥ जुगलरूपआसवछक्यो, परेरीझकेपांन ॥ ऐसेसंतनकीकृ

पा, मोपैंदंपतिजांन ॥९॥ कवैंझुकतमोओरकौं, ऐहैंमदगजचाल॥
गरवांहीदीनेंदोऊ, प्रियानवलनंदलाल ॥१०॥ सिरझलकतमंजु
लमुकुल, कटिलौंलटरहिछूटि ॥ सोभितललितलिलाटकें, उभैंभौं
हकीजूटि ॥११॥ तामधिवैंदीरतनकी, तरमुकताकीहाल ॥ नैंन
छकैंहैंकछुअरुन, सुंदरसरसविसाल ॥१२॥ कुंडलझलककपोल
पर, राजतनानाभांति ॥ कवइननैंननिदेपिहौं, वदनचंदकीकांति
॥१३॥ ऊंचीनासापरसजल, चमकतमुकताचार ॥ करतवुलाकह
लाकमन, रहिहैंनांहिसंभारि ॥१४॥ हायअधरकीअरुनई, मन
लोभीकौंदाम ॥ हैरीवैरीलाजकी, धीरभगावनभाम ॥१५॥ दमक
दसनिईपदहसनि, उपमासमसरहैंन॥ फैलिपरताकिरननिनिकर,क
वदेपौंइननैंन ॥१६॥ गउरबांहसुठिग्रीवपर, चूरीहरीरसाल ॥ इन
नैंननिकवधौंलपौं, चूंमतझुकिझुकिलाल ॥१७॥ वाहुजुगलकवदे
पिहूं, भूपनवलितसलोल ॥ रीझरीझमनविवसव्हैं, छापींतियनित
मोल ॥१८॥ कमलपांनसुंदरीचमक, विमलसौरईवीच ॥ लपटां
नोंनिसादिनरहैं, कुचकुमकुमकैंकीच ॥१९॥ कवैंनवलयाकरकम
ल, मुसकिगहैंगेस्याम ॥ रोमऊठिततनकंपव्हैं, कसकिजगैंगोकाम
॥२०॥ सुभगउरस्थलपरहरैं, मोतीलरैंविसाल॥ स्यामकलेवरपर
किरन, हालकरतवेहाल ॥२१॥ सेलीमुकतावलिविचैं, रोमावलि
कोहाय॥ सुधिआयेमारतमदन, देपीकैंसैंजाय ॥२२॥ महाछी
नकटिकिंकनी, मदपंडततनकाम ॥ सोअवकवहौंदेपिहौं, लाजव
हावनवाम ॥२३॥ अतिसुढारजुगजंघरी, कहावरनौंमतिपंग॥
पटपीरेंझीनेंतरैं, झलकतसांवररंग ॥२४॥ पीरीधोतीकीअहो, प

टुलीअतिछबिदेत ॥ साफफबितबनमालपधि, रसिकजननमनलेत ॥ २५ ॥ चरनलंकछबिपंकमैं, मनगजअरुझतकोट ॥ तापैंनूपरकिरनपर, बंधीरूपकोपोट ॥ २६ ॥ नषनितचंदद्युतिमंदकी, अंगुरिनअनवटपांति ॥ तरीमहावरिसौंभरी, हरीअरुनमनकांति ॥ २७ ॥ वदनविलोकतलालको, अंषियांकहाअघाय ॥ लाजनिगोडीदृष्टिकौं, सगतिपारिहैंपाय ॥ २८ ॥ सिषनषलौंकबदेषिहौं, रूपहासिमृदुमंद ॥ ताकौंचितवतहीलुटत, कामचरननषचंद ॥ २९ ॥ जोमनअरुझ्योरूपहैं, क्यौंहूंकहतवनैंन ॥ रसनाकैंतोमननहीं, मनकैंरसनांहैंन ॥ ३० ॥ अवैंकहाकहिहौंअहो, राधारूपरसाल ॥ ताकीकछुभुवभंगमैं, मोहनमदनविहाल ॥ ३१ ॥ जुगलरूपऐसोचितैं, गिरिरहेतनसुधिभूल ॥ वेनूपरझनकायकैं, जैहैंजमुनांकूल ॥ ३२ ॥ तबद्युषदाईहोयगो, मोकौंविरहअपार ॥ रोयरोयउठिदोरिहौं, कहिकहिकितसुकुंवार ॥ ३३ ॥ ठहरिठहरिउठिहौंअहो, भहरिभहरिअतिरोय ॥ हियेषरकऔसेरकी, सुधिसबदेहैंषोय ॥ ३४ ॥ तादिनहीतैंछूटिहैं, षांनपांनअरुसैंन ॥ छीनदेहजीरनवसन, फिरिहोहियेकुचैंन ॥ ३५ ॥ नैंनद्रवैंजलधारहैं, उपटतलेतउसास ॥ रैंनअंधेरीडोलिहौं, गावतजुगलउसास ॥ ३६ ॥ चरनछिदतकांटेनतैं, स्रवतरुधिरसुधिनांहि ॥ पूछतिहौंफिरिहौंभटू, पगमृगतरुवनमांहि ॥ ३७ ॥ हेरतटेरतडोलिहौं, कहिकहिस्यामसुजान ॥ फिरतगिरतवनसघनमैं, यौंहीछुटिहैंप्रान ॥ ३८ ॥ आनन्दकूटनिसिरासिमैं, अप्राकृतमिलिदेह ॥ मधिपरकरकैंदेषिहौं, सदाजुगलकोनेह ॥ ३९ ॥ कवैंमनोरथसिद्धएं, व्हैहैंमेरेलाल, सतसंगतितैंदूरिनाहें ॥ जांनैंरसिकरसाल

॥ ४० ॥ ताहिदयोसतसंगहारि, जासौंकछुराण्यौंन ॥ प्रगटभागवत कहतहैं, कहतयहैंकथहौंन ॥४१॥ जाहिकुसंगतिलैंदई, तापैंपूरनरोष ॥ जनमजनमनहिंछूटिहैं, तीनतापदुपपोष ॥ ४२ ॥ हरिमलवो मानतनहीं, सतिसंगतिसौंकूर ॥ वासौंजोफिरिहितकरैं, ताकेमुपमैं धूर ॥ ४३ ॥ परममित्रआग्यादई, मेरेहूहितवास ॥ नवलमनोरथ मंजरी, करीनागरीदास ॥ ४४ ॥ संवतसतरासैंअसी, चोदसिमंगल वार ॥ प्रगटमनोरथमंजरी, वदिआसूअवतार ॥ ४५ ॥ जोवांचैंसी पैंसुनैं, रीझिकरैंफिरिप्रष्ण ॥ सोसतसंगतिकीजियो, पहौंचैंजैश्री कृष्ण ॥४६॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीसांवतसिंघजीकृतमनोरथ मंजरीसंपूर्ण ॥

अथ पदप्रबोधमाला ग्रंथ लिख्यते ॥

प्रथम मंगलाचरन हरिसुजस प्रचुरिकीर्तन कर्ताभक्तिजनानि प्रति स्तुति ॥

॥ पद ॥ मेरेयेईबेदव्यास ॥ श्रीहरिबंसरुव्यासगदाधरपर मानंदनंददास ॥ श्रीहरिदासबिहारनिदासबिठ्ठलविपुलसुजान ॥ रामदासनाभादामोदरअलिभगवानसर्षभगवान ॥ दासचतुर्भुज दासमेहापुनश्रीभटचतुरबिहारी ॥ प्रीतमरासिकरासिकवल्लभअरुध्रुव रसरीतउचारी ॥ तुलसीदासमीरांमाधवअरुउभैंनागरीदास ॥ आ सकरननरसीबृंदाबनरुचिमाधुरीसुपरास ॥ कृष्णदासमूरगोविंदअ रुकुंभनछीतस्वांमिअनुरक्ता ॥ श्रुतपुरानमेरैंइनकेपदहौंश्रोताये

वक्ता ॥ तजिइनकेपदअर्थसुनैंकोनानामतबिभचार ॥ मूलसाझसिधक्यौंहेरैंपदछाडिअमृतफलसार ॥ रसनाश्रवननिमैंइनकेपदरहोहियमैंनिर्दूषन ॥ नागरियाइनकीपदरजसोहोहुभालमोभूषन ॥ १ ॥ ॥ इतिस्तुतिपद ॥

अथ हरिविस्मर्न कर्ता नर बाल अवस्थाबर्नन ॥

॥ पद ॥ जनमतजनमतकोदुषभूल्यो ॥ विसरगयोकरुणानिधिकेसवबालकेलिरसझूल्यो ॥ कबहुकरोवतहसतकबहुमिलिसिसुमतिमूढमहा ॥ भलीवुरीहूसमझतनाहींहरिगुनलहैंकहा ॥ बालापनसवयौंहीबीततनांहिस्यामसुधिआवैं ॥ नागरहोयतरुनतरुनीसंगफिरिहरिकूंविसरावैं ॥ २ ॥ इतिबालअवस्था ॥

अथ तरुन अवस्था ॥

॥ पद ॥ तरुनभयोतरुनीसंगराच्यो ॥ धनकैंकारनधनउपजावतबिबिधिभांतिनटकपिज्यौंनाच्यो ॥ मोहमगनबिषियारसलंपटनिसिदिनजातनजानैं ॥ तनकैंजोरमरोरमत्तमनदेहअमरज्यौंमांनैं ॥ स्वारथहेततज्यौपरमारथनिजगृहकाजप्रबीन ॥ अपनौंकियोवृथामानतसबनागरहरिआधीन ॥३॥ इतितरुनअवस्था ॥

अथ वृद्धअवस्था ॥

॥ पद ॥ जीवतमृतकव्हैगयोबृद्ध॥ होतनहींस्वारथपरमारथइहिंजीबेमैंकहासिद्ध ॥ उगलतकफषांसततनकांपतदेहवुद्धबलनास्यो॥ सबइंद्रिनिकीसक्तिघटिगईतनबहोरोगप्रकास्यो ॥ लेटचोरहैंप्रजंकद्वाराबिचउदरअहारनपचहीं ॥ जुराजरतमृत्यागमआयोतऊनहरि

सौरचहीं ॥ पहिलैंसाधनकीनौंनांहीरहिसाधनकेसंग ॥ नागरीदास लगैंअबकैसैंकृष्णभक्तिकोरंग ॥ ४ ॥ इतिवृद्धअवस्या ॥

अथ मरनगति दोष बिस्मर्न दसा ॥

॥ पद ॥ कहांवेसुतनातीहयहाथी ॥ चलेनिसानबजायअकेले तहांकोउसंगनसाथी ॥ रहेदासदासीमुखजोवतकरमींडैंसबलोग ॥ कालगह्योतबसबहिंनछाड्योधरेरहेसबभोग ॥ जहांतहांनिसदिन विक्रमकोभट्टथट्टाविरदत्त ॥ सोसबबिसरिलगेएकैंरटरामनामककहैं सत्त ॥ बैठनदेतहुतेमापीहूचहुंदिसचंवरसचाल ॥ लयैंहाथमैंलट्ठाता कोकूटतमित्रकपाल ॥ सौंधेभीनौंगातजारिकैंकरिआयेबनढेरी ॥ घरआयैंतैंभूलिगयेसबधनमायाहरीतेरी ॥ नागरीदासबिसरियेनां हीं यहगतिअतिअसुहाती ॥ कालव्यालकौंकष्टनिवारनिभजिहरि जनमसंगाती ॥ ५ ॥ इतिमरणदसा ॥

याभांति तीन्यूं अवस्था सतसंग बिन बिषियानं दकी आसाही आसामैं षोई तहां परि पद ॥

नरकोजनमबिगारतआसा ॥ स्वारथदावअठारैंचाहियनुतीनिप रताविचुपासा ॥ यहजगहैंचौपरकीबाजीअपनैंवसनहिंख्याल ॥ ना गरीदासकरोसतसंगतछाडिजगतजंजाल ॥ ६ ॥ पुनःपद ॥ क रियतुवृथामनकीदौर ॥ जियचहतइतऔरहीउतहोतऔरकीऔर ॥ छीनआयुसुहोतनिततनकालव्यालकोकौर ॥ दासनागरव्हैनिवृत बसबासतीरथठौर ॥ ७ ॥

जब आसापूरन होतनांही जबजिय अतिदुषकौं परासहोय तहांपरि सिछ्या ॥

पद ॥ अबजियकाहेकूंदुपभोवैं ॥ कबहुकहरषसोककबहूंव्हैंक बहुहसैंकबहूरोवैं ॥ याजगमैंहैंयहीतमासाऐसैंहींनितहोवैं ॥ नागरीदासभजिहूनंदनंदनजनमवृथामतषोवैं ॥ ८ ॥

भाषा—जद्यपि आसाहू धनादिक करिकैं पूरनहोय अरु सबतैं बडो कहावैं तउसतसंग बिन सुख नांहि ज्यौं अधिक बडो होय त्यौं दुखहू अधिक बडो होत जाय इंद्रपर्यंततहांपरि ॥

पद ॥ सबदुखबडेकहांयैंहोय ॥ इंद्रसबमैंबडोकहियतुरहतनितिदुषभोय ॥ उग्रतपरिषिकरतसुनिकैंलुटतसेजअंगार ॥ असुरडरअमरावतीताजिभजतबारंबार ॥ ब्रह्महत्यातैंपलानैंदुरेकंवलमृनाल ॥ अंगभगमंडितभयोगिरिगयेवृषणबिहाल ॥ बुझ्योदीपकबडोजैसैंबड्डोकहियतुभूल॥मानिलघुहरिसरननागररहैंसोसुपमूल॥९॥

भाषा—यातैं सर्वथा सतसंग करि हरिसरनरहिये तहांपरि

पद ॥ सबसुषस्यामसरनैंगयैं ॥ औरठौरनकहूंआनंदइंद्रहूकैंभयें॥दुखमूलएकप्रवर्तमारगकाहिनमांनतकोय॥सुपपग्योजिहिनिवार्तेकोमनजांनिहैंदुषसोय॥सतसंगअंबुजब्रजसरोवरकीरतनसुषबास॥कीजियेहरिबेगतिनकोभंवरनागरीदास ॥ १० ॥

भाषा—बिनसतसंग मन बस होतनांही यहमन महा चंचल नीचहैं तहांपरि मन निंदा ॥ पद ॥

मनयहनीचसंगीनीच ॥ उच्चपदकौंचढतनांहींजदिपिनियरीमी

च ॥ नवनपापकौंगवनकरिहींज्यौंवनीरउलैंड ॥ प्रवलअतिनाहिं रुकतरोकैंग्यांनधूरिकीमेंड ॥ मिलतजाहीरंगआपुनहोतवाहीरंग ॥ देहुनागरीदासकौंयातैंप्रभूसतसंग ॥ ११ ॥ पुनः पद ॥ विनसतसंगमतिबेढंग ॥ फिरतडांवांडोलमनज्यौंविनलगामतुरंग ॥ कवहुगिरिगिरिउठतअतिश्रमचढतक्रोधिदतंग ॥ कवहुमूरषभ्रमतआतुरउपजअंगअनंग ॥ कहातपव्रतदानसंजमकहान्हायैंगंग ॥ दासनागरबिनासाधनसकलसाधनभंग ॥ १२ ॥

भाषा—यातैं सर्वथा साधनको सतसंग कीजै तहांपरि ॥ पद ॥

सदासुषहरिभक्तिनकेमांहिं ॥ दसरथसुतअरुनंदनंदनकीवातनिसमैंबितांहिं ॥ विविधिकलेसरुकलहकलपनांतिनमैंउपजतनांहिं ॥ नागरियाब्रह्मानंदहूतैंभजनानंदअधिकांहिं॥१३॥ पुनःपद ॥ जिंहिंजनभक्तिसुधारसपीयो ॥ स्वर्गराजसुपगेहकाजफिरिमनकवहुंनदीयो ॥ बेदकलपतरुफलमाधवताजिजगविषफलनाहिंछीयो ॥ नागरऔरसंगनहिंराचैंसाधसंगतिनकीयो ॥ १४ ॥ पुनः पद ॥ जबलगहीजगकौसुषपागैं ॥ तबलगिजियहरिभक्तिसंगकौंरंगनहींकछुलागैं ॥ गृहब्योहारषेलिगुडियनकोजबलगिहीजियभावैं ॥ तबनवजोबनव्हैमदरामयतियपियकंठलगावैं ॥ तिनचाष्यौअतिस्वादिअलौकिकस्यामसधुररसपाक ॥ नागरीदासलगतजाकौंफिरिऔरवस्तुसबआक ॥ १५ ॥ ॥

भाषा—सो जानैं या रसको स्वादपायो ताकौं संसार सुष न भायो तहांपरि ॥ पद ॥

जिनकौंझूठलग्योसंसार ॥ जगसौंनिसप्रहसतसंगतिकारिलेतस

दासुषसार ॥ तेकलेसमैंपरतनकवहूसारअसारविचार ॥ नागरीदासकुसंगतिकरिकैंकौंनभयोनहिंष्वार ॥ १६ ॥

भाषा–कुसंगति करिकैं मनुष्यहोय ष्वारबढैं दुखविस्तारतहांपरि पद ॥

कलिकेजनमविगारतलोग ॥ मूरषमहादोऊवषोवतहरिकीभक्तिविषैसुखभोग ॥ कलहकलेसकरतादिनावितवतविविधिविपतआस्वादी ॥ अैसैंहीसबआयुबितावतटेवतजतनहिवादी ॥ दासीदासकुटंबमित्रसबयाहीदुषरसपगे॥ नागरकोउनांहिसमुझावतसबस्वारथकेसगे ॥ १७ ॥

पुनःकुसंसग फल दसा पद ॥

कलिमैंतेक्यौंभक्तकहावैं ॥ वृद्धहोयजोविमुषसंगफिरिदेसदेसउठिधावैं ॥ होतनिरादरदुषनहिंमानतनौंवदेतअंतिऔंडी ॥ चेततनहींबजतासिरऊपरयहघरियालकालकीडौंडी ॥ विनजमुनापरसैंक्यौंउतरतस्वेतकचनिविचधूर ॥ नागरस्यामवैठिनहिसुमिरतिब्रजकीजीवनमूर ॥ १८ ॥ पुनः

कुसंगीनिकी दसापद ॥

कलिकेलोगकुमंत्रीसिगरे ॥ देतकुमंत्रविगारतमनकौंआपुनमनकेबिगरे ॥ एकपेटकेकाजहिंषोवतदोऊलोकसुपअनुचर ॥ निजस्वामीकौंलियैंफिरतहैंज्यौंगहिघरघरबनचर॥ दुखअपमानकौंन्यापतनाहिंलोभीलोभसुपारे ॥ पापभारसबवाकूंलागतदासरहतहैंन्यारे ॥ चतुरथआश्रमआयदेताफिरलाषबरसकोनींव ॥ नागरीदासजानिउनसबकूंमहापापकीसींव ॥ १९ ॥

भाषा—यातैं नर ऐसी विजाती कुसंगको त्याग करैं तब सुख होय तहांपर पद ॥

कदलीबेरढिगपछितात ॥ पवनपरसतहलतत्यौंत्योंगडतकंटकगात ॥ पीरबिनुवहहरीनितयहनीरावेनकुह्मिलात ॥ संगनागरतजैं ताकोहोयजबकुसरात ॥ २० ॥

भाषा—यातैं सब बेद पुराननिको सार कहतहौं कुसंगतैं टरिये अरू सतसंग करिये तहांपर पद ॥

रेमनत्यागिपरमकुसंग ॥ बेगकरिसतसंगआतुरयहैतनछिनभंग ॥ सकलबेदपुरानकैंविचसारयहउपदेस ॥ गाययेनागरसदाकरिसाधुसंगविसेस ॥ २१ ॥

भाषा—तातैं जनम साधुसंगमैं बितावनौं तहां हरि जनम करम गुन गावनौं तापरि पद ॥

रेमनजनमकरमगुनगाय॥ लोकबेदबिसतारसारबिननीरसकथाबहाय ॥ कैसैंबालकेलिकौतूहलगोकुलमांझकरे ॥ कैसैंढुरिघरघरदधिचोरयोकैसैंचीरहरे ॥ कैसैंब्रजबृंदावनबिहरेकैसैंगायचराई ॥ कैसैंजमुनाकूलकदमतरमोहनबैनबजाई ॥ कैसैंजग्यपतिनानिपैंभोजनमांगिलयोबलबीर ॥ कैसैंढाकनिकीछहियांमिलिछाकखातआभीर ॥ कैसैंसुंदरहस्तकमलपरिसातद्यौसगिरधारचो ॥ कैसैंबारबारब्रजजनकौंबोहोविधिकष्टनिवारचो ॥ कैसैंसरदानिसाबनकीनैंरासकेलिआनंद ॥ कैसैंकामबिजैकरिलीनौंथकितरह्योनभचंद ॥ कैसैंघोषनिवासनिकौंहरिसुखदीनौंबहोभांत ॥ नागरीदासकहोसोनिसदिनजातहैंआयुबिहांत ॥ २२ ॥ यापदकेटीकाविस्तार ॥

अथ हरिबाल लीला पद ॥

नंदसुतनित्यरसबाललीलामगनउदधआनंदगोकुलकलोलैं॥ गउरअरुस्यामअभिरामभइयादोऊललितलरिकानिलियेंसंगडोलैं ॥ भवनप्रतिभवनचलिचोरहींदूधदधरतनभूषनबदनतनउजेरैं ॥ स्वातलपटातढरिकातफिरिहंसिभजतचक्रतव्है भवनींनिजभवनहेरैं ॥ कबहुगाहिगाहिफिरतपूंछबछियांनिकीकिंकिनीकनककटिमधुरबाजैं ॥ गोपगोपीनिमनद्रगनिकोखिलौनांखिलतमुखकमलमुरिहसनिभ्राजैं ॥ बदनदधिछींटछाबिधूरधूसरअंगअबहींतैंमदनगतिपगनिपेलैं॥ कंठबघनांदियेंपायपैंजनझनकदासनागरहियेअंगनाखेलैं॥२३ तिहारोधोटाबरजैंक्योंनाहिंमाई ॥ इनबातनवृजकौंनबसैगौबहौतबहौतनाकिआई ॥ मेरीऔरसासकीचुटियासोवतगांठिधुराई ॥ फिरदधखायजगायभज्योहमभटभेरनिभहराई॥ चतुरचोरछिपिछलसौंनिकसतआवतनांहिगहाई ॥ अबहीतैंनागरछछंदतेरौअरीबडोओटपाई ॥२४॥ खेलतभइयादोउमइयाकेआगैं ॥ गोपीऔरनिरखिरहिकउतकपलकपलकनाहिंलागैं ॥ जसुमतगोदतैंबलिचलिआवतरोहिनीतैंघनस्याम ॥ भेलाव्हैंव्हैंसीसभिरावतगरराजिगरराजिअभिराम ॥ लरिलपटायललामिलिलोटतबालकोलिसुखदानी ॥ नागररितचितैआनंदमैंहसिहसिपरतहैरानी ॥ २५॥ इतिबाललीला ॥

अथ चीर हरन लीला पद ॥

पियजियपीरकछुपहिचान ॥ चीरसबकेहरतकहाचितहरेइहिंमुसक्यान॥ सीतवसहमजलमगनतननगनिबिनतीमान ॥ नांहिंच

हियतुतुह्मैंऐसीदेहुअंबरआंन ॥ हासरसआनंदकीनौंचतुरिठगइठां न ॥ प्रीतबाढीपरसपरवरदयोहरिसुषदान ॥ स्यामकैंमनगउरतन छबिबसीकचलपटान ॥ रहोनागरीदासकेजियबसनचोरसुजान ॥ २६ ॥ इतिचीरहरनलीला ॥

अथ गोचार आवन लीला पद ॥

सुनतधुनिबैंनमधुरागगौरीरुचिरचढियनिजभवनतियरवनहिति अगमगी ॥ जानिघनस्यामआगमनिगोकुलवधूअटानिदुहुदिसनि मनौंदामिनीजगमगी ॥ सांझसुपसमयआनंदगहिमहिठईउडिरैंनधैं नवहोगालिनिविचरगमगी ॥ संगगोपालनटवेपिराहिदेखिसबपलकन हिंलगतमुखअलकरजसगमगी ॥ कइकहसिफूलडारतकइककांकरी कइकमगछाडिरहिसांकरीलगिमगी ॥ नागरीदासहरिमाधुरीपानक रिरहिनकछूठौरिमतिमदनवसडगमगी ॥२७॥ इतिगोचारनलीला ॥

अथ बैनगीत पद ॥

सुनिरीसषीसुषदाई ॥ देषिअमलसरदरितुआई ॥ आईसरदगत पंकभुवभयेसुच्छअंबुअकासहैं ॥ कुंजकाननअतिप्रफुल्लतछईकुसम सुबासहैं ॥ ठौरिठौरिसरोवरीबिचअमलकमलनिपुंजरी ॥ तहांभ्रम तअलिंदमातेकरतआतुरगुंजरी ॥ सुभगवृंदाबनअवनिबहैंत्रिविधि रोचकपवनहैं ॥ दासनागरदेषितिंहिठांकरतमोहनगवनहैं ॥ २८ ॥ उरमंडितबनमाला ॥ डोलैंगायनिसंगगुपाला ॥ संगगायनिकैंगु पालाबेषिनवनटवराकियैं ॥ मोरपच्छिप्रसूनपुंजप्रवालजूरासिरादियैं ॥ कंजकरननिकानिंकातनधातगुंजावलिलसैं ॥ दसनकिरननिजारि

कोउरहारफैलततबहसैं ॥ मदबिघूर्नितनैंनसोहैंबंकभौंहैंमनहरैं ॥ दासनागरस्यामघनलखिमुरलिकाअधरनधरैं ॥ २९ ॥ पसुपंछीचहुं दिसरी ॥ सुनिधुनिगानदेहसुधिबिसरी ॥ बिसरीजुसुधिपगम्रुगच कितचितमुषनकहुंकनितृनाछियैं ॥ धेनुवरपतनीरनैंननिनाहिंबछरा पयापयैं ॥ थक्योमंदसमीरसुनिद्रुमपातहुनपल्लवहलैं ॥ बिथकिज मुनाजलरह्योरथभाननाहिंआगैंचलैं ॥ नभविमाननिगिरतसीतियप तिउछंगनिवारिदी ॥ दासनागरसुनतधुनिसुरबधूदेहबिसारिदी॥३० रीतैंकौंनपुन्यतपकीनौं ॥ पियकोंअधरसुधारसलीनौं ॥ लीनौंअध ररससुधावनमैंअरीबैरनबांसुरी ॥ हमभवनतलफतफिरतइतउतकि योधीरजनांसुरी ॥ उडतअंचरउरजउघरतबैंनधुनिसुधिहारिलई ॥ कबरिछुटिभइसिथिलनींबीमदनपीड़तनिर्दई ॥ कहैंसह्यारिसह्यारि कबहूकबहूआवततांवरो ॥ दासनागरध्याननतनमयभरतअंकनिसां वरो ॥ ३१ ॥ इतिबैनगीतपद ॥

॥ अथ जगपतिनी भोजन लीलापद ॥

पूरनब्रह्मनंदके औनां ॥ सुंदरस्यांमकंवलदलनैंनां ॥ कबदेषैंरू पप्रकास ॥ लगीजग्यपतनीनिमनआस ॥ लगीआसउदासजियमैं रहैंडारिउसासकौं ॥ नैंनभरिवनओरचितवैंज्यौंचकोरप्रकासकौं ॥ कह्योजिंहिंछिनस्यामकौंसंदेसग्वारनिआयकैं ॥ उठीलैंलैंबिबि धिभोजनचलीआनंदछायकैं॥ धरतपगचंचलतऊभयेपंथकोसकरो रके ॥ चंदचाहनिघुटेछूटेवृंदमनहुंचकोरके ॥ एकरोकीगेहसोत जिदेहसबपहिलैंगई ॥ दासनागरलालकरिउरमालतिंहिंबालाहिलई

॥ ३२ ॥ पुनः जग्यपतनीभोजनलीलापद ॥ ढिगआईदुजवाला ॥ रहीइकटकलषिनंदलाला ॥ ठाढेपरमछविपावैं ॥ हरिकरगहिकंवलफिरावैं ॥ कंवलफेरतस्यामठाढेकंवलमुपमुसक्यावहीं ॥ कंवलमालाचरनपरसतकंवलदृगनिढुरावहीं ॥ बामभुजधरिसखाअंसहिधुकेअतिछविपायकैं ॥ तिहींछिनलखिकोटमनमथरहेहैंसिरनायकैं॥ निरखिमोहनमाधुरीदुजवधूप्राननिवारिहीं ॥ देतभोजननेहआतुरदेहकौंनसह्मारिहीं ॥ करतहीनिसत्रौंसभामिनिसोमनोरथसवठये ॥ दासनागरनंदनंदनप्रीतहांकैंवसमये ॥ ३३ ॥ इतिजग्यपतनीभोजनलीला ॥

अथ छाकलीला पद ॥

नवलगोपालमिलिकरनभोजनलगे ॥ तीरजमुनाविपुनभीरवहोबालकनिहृदैंआनंदभरिपेलिरसरगमगे ॥ छाकलीलाललितकूलकोलाहलनिदिवसभयोजानिमनुकोकलागनजगे ॥ चहूंदिसकुंडलाकारग्वालावलीचारुव्रजचंदउडगननिविचजगमगे॥ कइकछीकांनिकइफूलफलसिलनिपरिकइकदधमधुधरानिवकुलकलैंनगे ॥ किसलैंदलकदलिदलजलजदलजघनिपरिधरतव्यंजनाविविधिपरमकौतुकपगे ॥ स्यामकरवामपरिभातधरिपातफिरिनागरीदासहसिजातबातनिपगे ॥ निरषिविधिकहतमनकहांजग्यभोग्ययेझूठपसुपालकनिकीजुतैंनहिंभगे ॥ ३४ ॥ इतिछाकलीला ॥

अथ गोवर्द्धन धारन लीला पद ॥

सजनीनिरषिनंदकुमार ॥ धरैंगिरकरवढीछविलषिमदनवहौ

बलिहार॥ ललितअंगतृभंगकटितटिकनककिंकिनिजाल ॥ बंक भुवदृगअलकपरसतचरनपरसतमाल ॥ उदितब्रिचब्रजचंदपूरन तिमरमेटचोघोर॥ तहांगोपीगनतरइयांभानकुंवरिचकोर ॥ उहां बाहिरइंद्रवरषतप्रलयघनलियेंसंग ॥ दासनागरगोवर्द्धनतरइहांब रषतरंग॥ ३५ ॥ इतिगोवर्द्धनधारनलीला॥

अथ रासलीला ॥

पद ॥ रासरच्योनंदलाला॥ लीनेंसंगसकलब्रजबाला॥ अद्भु तमंडलकीनौं॥ अतिकलगांनसरससुरलीनौं ॥ लीनौंसरससुरराग रंजितबीचमिलिमुरलीकढी ॥ हौंनलाग्योनृत्यबहौविधिनूपुरनिधु निनभचढी ॥ डुलतकुंडलखुलतबैंनीझुलतमोतिनिमाला॥ धरतप गड़गमगबिवसरसरासरच्योनंदलाला॥ चितहावभावनिलूटैं॥ अ भिनयद्रगभौंहनिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुकअंक मालभरिझेलत ॥ झेलतजुभरिभरिअंकनिसंकतमगनप्रेमानंदमैं॥ चारुचुंबनिअरुउगारहिधरततियमुखचंदमैं ॥ उडतअंचरप्रगटिकु चबरग्रंथपटकसछूटैं॥ बढयोरंगसुअंगअंगनिचितहावभावनिलूटैं॥ प गनगतिकउतकमचैं ॥ कटिमुरिमुरिमध्यलचैं ॥ सिथलकिंकनी सोहैं॥ मुकटलटकिमनमोहैं ॥ मोहैंजुमननटमुकटलटकनिमट किगतिपगधरनिकी ॥ भंवरभरहरिचहूंदिसछबिपीतपटफरहरनि की ॥ गिरचोलखिमनमथमुरछलैंभजीरतिमुखमधुअवैं ॥ नचत मनमोहनतृभंगीपगनिगतिकउतकमचैं ॥ वृंदावनसोभाबढयो ॥ तापरिव्योमबिमाननिसौंमढयो ॥ दुंदभिदेवबजावैं ॥ फूलनिअं

जुलिवहोवरपावैं ॥ वरपैंजुफूलनिअंजुलीवहोअमरगनकौतकप गे ॥ बिबिसअंकनिनिजवधूहियनिराखिमनमथसरलगे ॥ व्हैंगयेच रथिरसुथिरचराथिरसरदपूरनसासिचढ्यो ॥ दासनागररासअवसर वृंदाबनसोभाबढ्यो ॥ ३६ ॥ पुनःपद ॥ रह्योरंगखेलतरासरसा ला ॥ तुटिगयेहारछुटिगयेअंचरश्रमडगमगनमराला ॥ जुवतिजु थजुतधसेजमुनाबिचमदनमोहनतिंहिंकाला ॥ क्रीडतजनूंकरनी संगलीनैंमत्तद्विरदनंदलाला ॥ गोरैंअंगमहाछबिपावतभींजेवारबि साला ॥ मनौंसीतलचंदनपुतरीनसौंलगीलपटिअहिमाला ॥ छबि सोछींटनिखेलमचावतप्रेमविवसब्रजबाला ॥ जनूंउच्छवकालंदीग्र हउछरतमुक्तिनिकेजाला ॥ वाहुसुंडअवगाहिनीरवलबीरचलेगज चाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपाला ॥ ३७ ॥ इति रासलीला दोहा ॥ इंद्रप्रस्थजमुनांनिकट । भवनपुलिनढिगचार ॥ तिंहिंठांपदरचनांकरी । मोमतिकेअनुसार ॥ ३८ ॥ अष्टादससत पंचहैं । वरपपोषसुदिमास ॥ पदप्रबोधमालाकियो । ग्रंथनागरीदा स ॥ ३९ ॥ इतिश्री ग्रंथपदप्रबोधमालासंपूर्णम् ॥

श्रीजुगलभक्तबिनोदग्रंथ ॥

दोहा ॥ भक्तनिकौंअतिहरिहिप्रिय । हरिहीप्रियनिजभक्त ॥ सिर नांऊंतिनकेचरन । हरनिदुसहदुखजक्त ॥१॥ कृष्णभक्तवत्सलप्रग टि । भक्तहेतअवतार ॥ तिनकौंतिनकेभक्तको । कहूंसुजसश्रुतसार ॥२॥ चौपाई ॥ मिथुलापुरहैभक्तनिवास । द्विजश्रुतदेवनृपतिवहुलास ॥ तिन केनैंननिवढीपिपासा । नितिप्रतिरहैंहरिदरसनआसा ॥ सुनतसदा

गुनिगानस्यामके । भूलिगयेसबकामधामके ॥ तिनसुभस्वप्नैंनअ
वरेषे । कदलीअंबफलेबहुदेषे ॥ दोउप्रातसोवततैंजगे । अंगदा
हिनैंफरकनिलगे ॥ आंगनबिचपगपंजनडौलैं । उडिकमलनिपरि
करतकलोलैं ॥ सुनतबचनसुभमुखतैंकढे । सहजहीहरपहियेमैंबढे ॥
कृष्णनांहिंभक्तनसौंऊरन । तेआयेकरनमनोरथपूरन ॥ दौरिचले
सुनिकैंअगमने । प्रेमातुरचितदोऊघने ॥ निरपिस्यामजगमोहन
रूप । बिवसव्हैंगयेदुजअरुभूप ॥ संगदेवरिषजगहितकाज । श्री
शुकादिबहुंओरसमाज ॥ दुजनृपभक्तदोऊजेआये । बिनयबोलि
प्रभुगृहपधराये ॥ रिषनिसहितकरिद्वैद्वैदेह । स्यामसिधारेभक्तनि
गेह ॥ चलेजातहरिजनदोउआगैं । पैंडपिछौंहैंपलकनलागैं ॥ बि
थुरतमोतीवारतराजा । दुजदुहुंमुठिउछारतलाजा ॥ भूपतिसज्यारु
चिररचाई । बिप्रचटाईआयबिछाई ॥ उतसुगंधभरेकंचनवेला ।
इतैंछिरकिधरेआगैंढेला ॥ उतहिंबिविधिकुसमावलिधरी । इहिंरापीडु
वोलैंहरी ॥ उतहिंगुनीगुनप्रगटतसांचे । इतहिंमगनमनदुजहीनांचे ॥
उतसंगीतसुघरसरसांही । इतयहकूदतहरतनाहीं ॥ उतछबिजटी
नटीमृगआंपैं । इतपांसूंकढिभौंडीकांपैं ॥ उतनृपचंवरदुरावतहाथ ।
प्रेमविवसनिरषतजदुनाथ ॥ दुजफौरीलैंअंगुछाफेरत । कृष्णकृ
ष्णप्रेमातुरटेरत ॥ मनिमुक्तावलिभरीभारती । रानीनिजकरकरत
आरती ॥ पहरिदुजबधूकांमरिधोती । चूंनदियाकरिकीनीजोती ॥
॥ दोहा ॥ दुहनिआरतीकरिधरी, दुजत्रियअरुनृपनारि ॥ प्रेम
विवसदोऊभई, बदननिहारिनिहारि ॥ ३ ॥ संतसदनपावनकरे, पूरेमन
केकाम ॥ एकप्रेमकैंबसभये, भक्तवत्सलघनस्याम ॥ ४ ॥ चलेदु

हुनिकेभवनतैं, दुहुनिकोभलोमनाय ॥ हरिपीतांवरपौंछदृग, कंठ लगायलगाय ॥ ५ ॥ अंतरकीजानतसबैं, सुंदरपरमप्रवीन ॥ क्यौंबिसरैंऐसोप्रभू, भक्तजननिआधीन ॥ ६ ॥ अष्टादससतअष्ट पुन, संवतमाघसुमास ॥ जुगलभक्तगुनग्रंथयह, कियोनागरीदास॥ ॥ ७ ॥ निकटकमाऊपरवतनि, विकटबिटपकीभीर ॥ तहांग्रंथर चनांभई नदीकौसकीतीर ॥८ ॥ इतिश्रीजुगलभक्तबिनोदसंपूर्णम् श्रीकृष्णचंद्रभक्तिवत्सलौजयति ॥

अथ भक्तिसार ग्रंथ लिख्यते ॥

अथ तप बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुपदरजबंदिकैं, करतग्रंथउच्चार ॥ इंहसं सारअसारमैं, एकभक्तिहैंसार ॥ १ ॥ महाउग्रतपकष्ठकरि, क रतपर्बतनिबास ॥ कृष्णभक्तिबिनुहैंवृथा, राजस्वर्गकीआस ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ पंचानलसाधैंपौनबांधैंनासागाहिगाहिसाहिसाहिसीतदे हतपकौंबढांवहीं ॥ सेवतविषमबनबसनबकुलअंगभोगसौंउदास महाजोगदरसांवहीं ॥ अधोमुखऊर्द्धमुखभसमलगावैंगातपातकंदष निपातकष्ठउपजांवही ॥ ऐसेव्हैप्रसिद्धहोतनागरनासिद्धजौलौंगो कुलअवधिलीलामुखनहिंगांवही ॥ ३ ॥

अथ अष्ठसिद्धवर्ननं ॥

अष्टसिद्धजाकौंकहत, करामातसबजक्त ॥ वादीगरकेखेलसो, बिनाकृष्णकीभक्त ॥ ४ ॥ जथाउदाहरन ॥ कवित ॥ सिंहहोतसर्प

होतगजहोतगैंडाहोतकवहूतनमूक्ष्मन्हैंजहांजहांजांवहीं ॥ इच्छा रूपधरिधरिबिचरतविस्वमांझ कइकसहस्रकोसछिनमैंन्है आवहीं ॥ पूजैंसबसिद्धपायभयेहैंत्रिकालदृष्टिजाकैंआगैंअष्टसिद्धठाढीसिरनांवहीं ॥ ऐसेभयैंनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवाधिलीलामुपनहींगावहीं ॥ ५ ॥

अथ निर्गुनमत बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मूलजानिनिर्गुनभजैं, करतपूरपाछिपाठ ॥ छाडिकृष्णफलअमृतकौं, मूढचचोरतकाठ ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ घटहीमैंब्रह्मकहैंघटहीमैंतीरथघटवटरमैयारामनामसुखलांवहीं । अलषनिरंजनकीजोतिहीकौंजानैंरूपगुनकौंनमानैंसुन्यसांनिलैंबतावहीं ॥ औरकौंनदेपैंएकदेपैंनासाअग्रवोरइंद्रीसबजीतिमनकितहूंनजांवहीं ॥ ऐसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलासुखनांहिंगावहीं ॥ ७ ॥

अथ केवल पांडित्तता बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ वसतसरस्वातिकंठनित, कृष्णभक्तिहियनांहि ॥ जगतअविद्यावहतये, वहेजुविद्यामांहि ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ सामबेदजजुरअथर्वनऔरिगबेदजानैंबिनभेदजाकेजिभ्याअग्रआंवहीं ॥ बांवनउपनिषदसास्त्रन्यायसांष्यओपातांजलमींमांसाआदिपढिकैसुनांवहीं ॥ संमृतअठाराजाग्यवल्कमिताक्षराटीकाअवरपुरानपढिपंडितकहांवहीं ॥ ऐसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलासुखनाहिंगांवहीं ॥ ९ ॥

अथ केवल चातुर्जता बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ बहुगुनगनतन्नमैंबसैं, जोनभक्तिकोलेस ॥ नीकोऊ फनिबसै, बिनानृपतिज्यौंदेस॥१०॥कवित्त ॥ संसकृतबोलैंअरुवो पुन, सभापाकंठबाकबानीबडेचातुरकहांवहीं ॥ गानमैंसुजाननव ॥सकेबपानवानबातनबिधानकहिजगकौंरिझावहीं ॥ रचनारचतका व्यनांनांछंदबंदनसौंसुघरसभाकेमांझवाहवाकहांवहीं ॥ औसेभयेना गरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलामुखनहिंगावहीं॥११॥

अथ हरिभक्ति वहिर्मुख सप्त द्वीपराज्य बैभव बर्नन॥

॥ दोहा ॥ सुरपतितैंबैभवआधिक, उदयअस्तलौंराज ॥ यहप्र भुताईस्वपनसुख, भक्तिबिनाकिहिंकाज ॥ १२ ॥ छंद भुजंगी ॥ जटेस्वर्णकेधामलालंप्रवालं ॥ झरोषांनिझांकीबंधीमुक्तमालं ॥ कढैं रंध्रजालीअगरधूपधूमैं ॥ पुरेचौकमोतीनसौंरत्नभूमैं ॥ करीनांहिभ क्तैंगयोभूलिकर्त्तार ॥ जुषोयोवृथाजन्मानिर्धारनिर्धार ॥ १३ ॥ जुरेजोरिगढद्वारगजवाजमाते ॥ भरेभूपदर्वारनांहींगनाते ॥ सजैंपालकीनालकीरत्थवाजी ॥ लियेंद्वारठाढेदरोगामिजाजी ॥ करीनांहिंभक्तैं० ॥ १४ ॥ समांनेतनेबेलिबूंटाजरीदी ॥ बिछीकालि यांदरविलायतखरीदी॥लगेपीठितकियाजरीदोजनीके॥बनीसूजनी फरसमौरंमनीके ॥ करीनांहिभक्तैंगयो० ॥ १५ ॥ मनौंतेजसिंघा सनंभानभ्राजैं ॥ तहांछत्रछाजैंमहाराजराजैं ॥ दुहुंघांचलैंचौंर चांरुढारं ॥ महातेजभूपंसरूपंअपारं ॥ करीनांहिभक्तैं० ॥ १६ ॥ लियेस्वर्णआसापरद्वारठाढे ॥ बतावैंअदबहौतइतमांमगाढे ॥ बजैं

द्वारनीसानऊंचेसुहाये ॥ सुनैंसब्दजेतेसबैलैरिझाये ॥ करीनांहि भक्तैं० ॥ १७ ॥ सजैंअंगभूषन्‌षरेआंनिआगैं ॥ लियेबीनबीना गुनीरागरागैं ॥ कियेनारिसिंगाररंगीअनंगी ॥ नचैंपातुरीचातुरी सौंसुधंगी ॥ करीनांहिभक्तैं० ॥१८॥ बडीसैंनताकैंजुसन्नाहसाजैं॥ मनौंमेघकारीघटासीबिराजैं ॥ चलैंसासनांदेसदेसंअभंगं ॥ कोऊ भूपभूमैंजुरैंनांहिजंगं ॥ करीनांहिभक्तै० ॥ १९ ॥ पढैजस्सजुद्धं सुसुद्धंप्रसिद्धं ॥ जुरैंभट्टठट्टांतिह्नैदेतरिद्धं ॥ भईहैंविमलजोतिकीरत् जुन्हाई ॥ छईसिंधुकेतीरलौंहैंबडाई॥करीनांहिभक्तैं०॥२०॥दोहा ॥ कहावनंआश्रमकहा, कहारंककहाराय ॥ करीनजिहिंहरिभक्तितिं हिं, दीनौंजनमगमाय ॥ इतिसप्तद्वीपराज्यहरिभक्तिवहिर्मुख ॥

अथ सप्तद्वीप हरिभक्त रिषिराज वर्नन ॥

छंदभुजंगी ॥ महाद्रव्यधारीधराह्वैंनरेसं ॥ विभोदेषिताकोल जैंजीसुरेसं ॥ इतेपैंनफूलैंरुभूलैंनमाधौं ॥ तिह्नैंहोतनांहिकक्रूराज ब्राधौं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुधन्यंसु धन्यं ॥ २१ ॥ रचैंजन्मकर्मादिउत्सवसुहाये ॥ मनौंनंदगोकुल धरैंरूपआये ॥ बजैंसंषझालरजहांहोतअर्चा ॥ कहूंव्हैंकथामेंमहा मिष्ठचर्चा ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुध न्यंसुधन्यं ॥ २२ ॥ सदापरक्रमादंडवत्‌नैंमुलीनैं ॥सुनैंगानगोविंद गाथाप्रवीनैं ॥ अलंकारसिंगारहरिकेवनावैं ॥ रचैंरागभोगंमहाद व्यलावैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २३ ॥ विभौभूपअमरावतीज्यौं विसालं ॥ धरैंकुंभसिरनीरल्यावैंनृपालं ॥ निजंअंगतैंस्यामसेवा

सह्मारैं ॥ निहारैंकंवलनैंनवहोद्रव्यवारैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २४ ॥ वसैंनित्यपुरवागसंतंमहंतं ॥ अवरवृंदगोस्वामिदुजवर अनंतं ॥ चहुंओरहरिनामगुनधुनिछईहैं ॥ सुनैंतैंतिहूंतापतनकीगईहैं करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २५ ॥ लगीहैंटहलहोतवहोविधिरसोई ॥ पकव्वानमेवानकपूरभोई॥ सुआतित्थ्यकररायपायंप्रछालैं॥ पवित्रं करैंभौंनलावंतभालैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं० ॥२६॥ सुपा रायणंब्रह्मजग्यंकहूंव्हैं ॥ तहांभजनआनंदप्रेमांचलैंच्चैं ॥ वितानंतनै अग्रसौंगंधछायो॥मनौंभक्तिउत्सवधरैंरूपआयो ॥ करैंकृष्णकीभ क्तिकौं०॥२७॥प्रथमकृष्णअर्पणकियैंवस्तुभुक्तैं ॥ रचैंहरिसमंधी रुचिरकाव्यजुक्तैं॥ भुजासंखचक्रादितुलसीसकायं ॥सहजसीतसीत लमुद्दद्वैंसुभायं॥करैंकृष्णकीभक्तिकौं०॥२८॥लसैंचंद्रवत्कांतिरिपि राजराजैं ॥ मनौंमांझकलिकालअंब्रोपआजैं ॥ रहैंराज्यकेकाजमैं भक्तिसाधैं ॥ विविधिभोग्यतिनकौंकछूनांहिवाधैं ॥ करैंकृष्णकी भक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुधन्यंसुधन्यं ॥ २९ ॥ दोहा ॥ तनमनधनकरिहरिभगत, करैंनृपतिजोकोय ॥ राजकाज सुखभोगसौं, तनकनबाधाहोय ॥ ३० ॥ करैंभक्तिव्रजरवनकी, भू पभवनकेमांहि ॥ महिमाजाकेभागकी, बरनिसकैंकाबिनांहि॥३१॥ दोहा ॥ कुंडलिया ॥ आपकुंडगोलकपिता, पित्रपिताकानीन॥ ल खोसुनागरभक्तजस, पंडवनित्यनवीन ॥ नित्यनवीनोसुजसकृष्ण मिश्रतहैंजिनको, भयेसभदीपेसवहोलनृपनांवनतिनको ॥ पावन कारीसुजसप्रचुरपांडवजगजापै, पुनिपुनिकरीसहायस्यामसारथि भयेआपै॥३२॥दोहा॥ महाकठिनकलमैंनअव, औरभक्तसरसात ॥

मुरलीधरधनुधरनकी, कीजैनिसदिनबात ॥ ३३ ॥ कवित्त ॥ आ
योकलिकालअतिकलहकलेसछायोतामैंलैंअपनपेकोंकैसैंकैंबचाइ
यैं ॥ जग्यदानतपमांझचहैंदेसकालपात्रपुनिफलतुच्छस्वर्गराजभोग
पाइयैं ॥ कीचहीसौंकीचधोयैंमिटैनमलीनताईकरिकैंबिमलभक्ति
सुखसरसाइयैं ॥ दसरथनंदओनागरनंदनंदनकीवातैंकहिकहिनिसि
दिवसबिहाइयैं. ॥३४॥ मिटीभूमिलषमीनरनिबडीआयुमिटीमिटीहैं
अरोगगतदुखदरसाइयैं ॥ मिट्योधर्मकर्मप्रीतसज्जनसुहृदताईमि
ट्योधीरहियपीरपारनांहींपाइयैं ॥ छायोकलिकालमहापापयनदवा
योदौरयातैंअबवोटबेगसाधनकीजाइयैं ॥ दशरथनंदओनागरनंद
नंदनकीबातैंकहिकहिनिसदिवसाबिहाइयैं ॥ ३५ ॥ कीरतनश्रवण
करेतैंनांहिलगैंधनअरुकायाकष्टहूनतातैंजीडराइयैं ॥ जाकेगुनसु
नैंनिततांहीसौंबढतप्रीतिजासौंप्रीतताकेगुनसुनैंनअघाइयैं ॥ प्रभुज
सरसनापवित्रकीजैंबारबारयतैंअबविस्वावीसयहैंजियलाइयैं॥दसर
थनंदवोनागरनंदनंदनकीबातैंकहिकहिनिसबासराविहाइयैं ॥ ३६॥
कियैंचर्चासात्रकीतोहोतहैंअवस्यबादजहांबादभयोतहांस्वादकहां
पाइयैं ॥ जोपैंस्वादजानिजानिलोककथाकीजियैंतोतामैंपरमार
थनस्वार्थसरसाइयैं ॥ स्वारथपरमारथहूबिनबादस्वादभरीकथोवा
लमीकसुकदेवसोसुहाइयैं ॥ दसरथनंदओनागरनंदनंदनकीबातैंक
हिकहिनिसदिवसविहाइयैं ॥ ३७ ॥ अवधिबिहारऔंबिहारब्रजगो
कुलकोकरतबिचारनितनौतनहींपाइयैं ॥ सरजुकैंतीरअरुतीरजमु
नांकैजेवेकीनीहैंललितलीलाकाहियेकहाइयैं ॥ लघुवीरसंगइतसंग
ग्वारभरेरंगडोलनिकलोलनिकौंसुमिरिसिहाइयैं ॥ दसरथनंदओना

गरनंदनंदनकीवातैंकहिकहिनिसदिवसविहाइयैं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ यहअबनागरिदासपैं, कृपाकरोहरिराय ॥ कहतसुनततिहारीकथा, सबदिनजांहिविहाय ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ कुंडलिया ॥ सुषपायोपूरन भयें, ग्रंथजुभाषाचार ॥ सतरासैंनिनांनवैं, हैजथौसगुरवार॥हैंजथौ सगुरवारमाससावनमनभावन ॥ कृष्णपक्षसुभमंत्रसंतजनश्रवनसु हावन ॥ भक्तिसारउच्चारकियोनिजमनसमझायो॥नागरिदासनकहूं बिमुखकाहूसुखपायो॥४०॥दोहा॥नागरिदासविचारिकहैं, जितेधर्म केअंग ॥ सर्वोपरकलिकीरतन, अरुसाधनकोसंग ॥ ४१ ॥ इति श्रीभक्तिसारग्रंथसंपूर्ण ॥ श्रीराधाकृष्णोजयति ॥

अथ श्रीमद्भागवतपारायनविधि प्रकास ग्रंथ लिष्यते ॥

बचनिका॥प्रथम सुंदर ठौरहोयतहां कदलीषंभ बंदनमालावली भूपदीपकरिकैं जथासाक्ति रचना रुचिर बनाइयैं ताकौंदेखिध्यानउपजैं ऐसीयावस्तुके पात्रहोय तिनकौं आमंत्रनकरि बुलाइये तिनकौं लिखिये यहकवित्त॥ महाकलिकालघोरपावतनओरछोरभोरसांझनितिहीकुसंगमतिछीजिये॥यातैंअबकीरतनब्रह्मजग्यरचनांकोभयोहैंआरभसुखलीजेसुपदीजिये ॥ समयोनचूकनौंहैंसर्वोपरकाजयहैंमनमैं बिचारिकैंहमारोकह्योकीजिये॥दसधाकोसाधनसमागमहैंसाधनिको कृष्णकथाकीरतनकोभागआयलीजिये१॥ बचनिका॥फिरि सुभदिन देखि आरंभकराइये ता आरंभके समैं प्रथम मुष्यश्रोताहोयसो पूजाकरि आरतीकरैं तासमैंगवइया इहआरतीको पदगावैं जथासमैं

राग॥आरतीश्रीभागौतकीकीजै॥ श्रवनसुनतजीवनफललीजै॥गोघृतरचतकपूरकीबातीनिरखतजोतिजोतिभईछाती ॥ जनमजनमकेबंधनजारे ॥ भवसागरमैंबहतउवारे ॥ तीनतापकरिडारेमंदे ॥ नागरीदासफिरतआनंदे ॥ २ ॥

भाषा–फिरितापीछैं सब बैठैं तबगवइया गावैं प्राथनांको यह पद राग प्रभातमैं तथा सारंगमैं तथासमय

पद ॥ अहोमुनिवाहीकोसुजससुनाय ॥ ब्रह्मअगनतैंजरतउवारचोमेरीकरीसहाय ॥ वेजदुनाथसधीरनंदसुतसंतनसदासहाय ॥ उनकीजनमकरमगुनलीलाआदिअंतलौंगाय ॥ वेजगदीसईसगुरुमेरेनांहिनआंनउपाय॥ उनकोश्रवननिपायसुधारसज्यौंचितश्रनतनजाय ॥ ऐसोकोअभिमानीपसुताहिहरिचरचानसुहाय ॥ भवबेदनिकौंवैदवेदविधिश्रोषददईबताय॥ ब्रह्मादिकसनकादिकनारदमुक्तिकियेहरिराय ॥ गोविंदप्रभुकीअमृतकथाहैंसुनतनश्रवनश्रघाय॥२॥भा०॥यह गायचुकैं तापीछैं श्रौतापढैं प्राथनाके कबित॥चढततृविधितापभक्तिछुधामंदभईअंतरजरनचिंतामिटैनामिटाइयैं ॥ निद्रानैंनमींटमननागरउचाटश्रतिरसनाकटुकवैननांहिसरसाइयैं॥करतकुपथपापवढतसंतापत्यौंत्यौंपुन्यवलछीनहोतदुखअधिकाइयैं॥ नरनकैंराजरोगबिमुषतासेटिवेकौंकृष्णकथाश्रमृतधन्वंतरव्हैंप्याइयैं ॥ १ ॥ ॥पुनः॥कैसैंनंदभौंननटनागरप्रगटभये बालकबिनोदकैसैंकीन्हेंसुषदाइयैं ॥ कैसैंगोपगनमांझफिरिकैंचरायगायकैसैंबनढाकनकीछांहछाकपाइयैं ॥ कैसैंगिरधारयोश्ररुमुरलीबजाईकैसैंरचीरासकेलिनिसासरदसुहाइयैं ॥ बृंदाबनजमुनाश्रीनंदगांवगोकुलमैं जहांजहां

कीह्लीहरिलीलासोसुनाइयैं ॥ सवैया ॥ रूपअसूझकलोगनिकोजुद याकरिकैंवहियांगहनींहैं । श्रौननिसींचिसुधासबकैंउरअंतरदाह निकौंदहनीहैं॥होबकताहरिभक्तनिकेयातैं मेरीकहौंचितमैंलहनीहैं॥ प्यारीकथारसकेजुविहारीकीसोवतुमैंगुनिकैंकहनीहैं ॥ अन्यकवि ॥ द्वादसकंधहिहैंहरिकेतनकृष्णकथाजगपावनकारी । जोव्रजकेलिक रीसुकहोआछैंलागतवैष्णवश्रौननिप्यारी॥क्योंकहैंसर्वगोपीजनवल्ल भक्यौंमुरलीधरक्यौंगिरधारी। कैसैंवृंदाबनमैं विहरेअरुनामभयोकै सैंकुंजविहारी ॥ कवित्त ॥ चलीजातआवसोनजांनीजातनावजैसैं लीजियेनिकासिकैंबहतभवधारसौं॥ मनअभिमानीकितेजनमकोबि गरैलसुरझैनमूढमहामायाउरझारसौं ॥ आएहोहमारैंभागबिगरीसु धारोजूअमंगलकौंमिटोमहामंगलउचारसौं ॥ करुनाकेआगरकीभक्त सुपसागरकोकहियेव्रजनागरकीकथाविस्तारसौं ॥ ५ ॥ यहीव्रजभू मियेईगिरग्रामद्रुमजातरहेझूंमिझूंमिभरेफूलफलमौरमैं ॥ वहीव्रजवा सीसंतपरमचतुरश्रोताद्यांईकेउपासीयेपरेहैंप्रेमरोरमैं ॥ मंजुलपुल नियहीयहीजमुनाकेकूलमिलेदेसकालपात्रकहाकहौंओरमैं ॥ यही हैंरसिकबिहारीयेईश्रीवृंदाबनकथायाहीठौरकीसुनावोयाहीठौरमैं ॥ ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ उदतउचारसंनिपावनजगतहोतकिरनिविविधि लीलानंदलाललहियैं ॥ परमपुनीतमनकोकनदप्रफुलितविमुपक मोदसमदेपतहीदहियैं ॥ यहैश्रुतिसारमाधिनागरसुपदरूपनवधाप्र कासरसपीवतउमहियैं ॥ तिमरअग्यांनकलिकालकोमिटायवेकौंप्रग टिप्रभाकरश्रीभागवतकहियैं ॥ ९ ॥ आपकेजोअकुलानिकीवा नितोवानिहमारीकौंनीकैंलहोगे ॥ आपकेचाहकछूकहिवेकीतौचाह

श्रोतांनहींकीकौंचहौगे ॥ आपजोप्रानगहायहौयामैंतौनागरप्रांनप रायेगहौगे ॥ आपकथामनदैकैंकहौगेतौश्रौरनिकेमनलैकैंरहौगे ॥ ॥ १० ॥ आयेशुकरूपमहामंगलवधायेआजुभईयहसुभघरीसब निजियारीकी ॥ पांवनतैंपांवनिकियौगृहश्रांवनिमैंकहालौंकहौंमैं वातकृपायातिहारीकी ॥ कृष्णकेलिकौतिकसुधाकेंप्यासेनागरयेंबै ठेहैंसमूहश्रोताश्रवनतयारीकी ॥ भागवतलोगनिकौभागवतकहिये जूलागतहैप्यारीकथाव्रजकेविहारीकी ॥११॥ कौनैंमैंउपावाकितेनैंक नलग्योहैकोऊतातैंनिसबासरेहीचिंतानितजारिये ॥ आयेतुमप्रेरकप ठायेश्रीकरुनांनिधिबिनतीहमारीसुनिकृपाढारढरिये॥वहुतिकदिनां निकौबढयौहैश्रंधकारहियेंश्रौरनबिचारयहनागरसुधारिये ॥ भक्तिम हारांनींउरभवनपधारिवेकौभागवतदीपकप्रकासबेगकारिये ॥ १२॥ अथ दाहिवा बिजय रामकृत ॥ ॥ कवित्त ॥ कौनपुन्यकी नैंबसुदेवदेवकीजूकहोपुरुषपुरानपुत्रपायोरूपजोतहैं ॥ तृणावर्त अघबकबकीआदिहतेकैसेंकैसेंदीनौंभक्तिनकौंआनंदउदोतहैं ॥ द्वारावतिजायकहोकीनैंकौनराजधर्मविजैरामकेतोकहोबढयोनिज गोतहैं ॥ नारायनकथासबकहिकैंसुनाइयैंजूपारायनसुनेनरपा राइनहोतहैं ॥ १ ॥ पुनः ॥ जरयोतिहुंतापनिसौंजनमश्र नेकनिमैंबचनपियूषउरश्रंतरासिराइयैं ॥ विजैराममोहमदाबिबिधि बिकारनकौंपापकेपहारनकौंतूलसेउडाइयैं ॥ दयाकरिदीनानिश्र सूझनिकीश्रांषिनकौंअंजनदैग्यानभक्तिरूपदरसाइयैं ॥ नृपतिपरी छतसौंकहाशुकदेवसोईकृपाकरिकृष्णकथाहमकौंसुनाइयैं ॥ २ ॥ ॥ पुनः ॥ कल्हापन्नांकृत ॥ कवित्त ॥ मोहजलप्रवलअथाहजामैं

पूररह्योघेरेमायाजालकहोकैसैंकरिजीजियें ॥ चहुंवोरसवैपरवारभ
रेजलजंतुनिकसिनपैयेतामैंदिनप्रतिछीजिये ॥ प्राननाथविनतीकर
तसवश्रोताश्रैसैंशुकरूपश्रवनहमारेंमंत्रदीजियें ॥ वूडेजातसवहीसं
साररूपसागरमैंकृष्णकथानवकाचढायपारकीजियें ॥ ३ ॥ अन्य
सनावढहीरालालकृत ॥ कवित्त ॥ कृष्णव्रजलीलागुनगायवेकोमा
रगश्रोभक्तिउरश्रायवेकीविधिदरसायहैं ॥ आछेसवस्तुपनकोसुपहैप्र
गटभुवयहभवसागरतेंजननितिरायहैं ॥ जानमोक्षफलशुकदीनोंहो
परीक्षतकौंहीरालालकहतउपायजियभायहैं ॥ अंतरजरनिचिंता
प्रजरिरहीहैंकहाभागवतसुनैंविनुहियोनासिरायहैं ॥ ४ ॥ अन्यविनें
चंदवैष्णवीनामचरनदासकृत ॥ कवित्त ॥ श्रुतिरुसमृत्तश्रादिसोधि
सोधिदेपेसोतोसवकोसकामताशुभावसरसावनौं ॥ मारगप्रवर्त्ततामें
तापननिवर्त्तहोतयातेंइनमांझमनवृथाहीभ्रमावनौं ॥ चरनदासम
दिरासौंमदिराहीधोयेंकहाकर्मकियेंकालपैकलेसहीकरावनौं ॥ ता
तेंशुकरूपभागवतहीसुनावोहमैंभागवताविनाभक्तिरूपनहिपावनौं
॥ ५ ॥ पुनःहरिचरनदासकृत ॥ कवित्त ॥ सर्दससिपूरनउजासमैं
रमतरासमाननीमनावैहरिवांसुरीवजायकैं ॥ काननमेंफिरैंसदागौं
हननवेलिनिकेप्यारीमुखचंदचारुरहतचितायकैं ॥ व्रजकौविहारी
मनहारीपटहारीजिनलीनोंवांमकरसैलवरकौंउचायकैं ॥ ऐसीसुधा
सानीनिगमागमवपानीपुनिकहियेकहानीदधिदानीकीसुनायकैं ६॥
॥ वचनिका ॥ येकवित्त पढिचुकैं फिरि कथा होय तामैं पहिलैं
श्रीभागवत महातम होचुकैं तव श्रीभागवत होय सो द्वेवेर कथा
होय एक तो प्रात अरु एक घटिका रात्रिगयें सो पहर पहरही

न्हैं बीच बीच प्रेमानंद उपजत जाय अरु सरीर श्रम करि महा कष्ट पावैं तब आनंद कहा होय तातैं वक्ता श्रोतानिकौं परिश्रम न होय यालिये ऐसैं सुखेन सुनियैं पुनि बीच बीच जथा अवकास जथा समयके विष्णुपद होत जाय यामैं वक्ता हूकौं विश्राम हैं अरु स्वादहू उपजैं ऐसैं कथा होचुकैं तापीछैं वैष्णव पद्धितके विष्णुपद हौंहि फिर नावधुनि सहत प्रदक्षिनां करैं याभांति नित्य सुनत द्वादस स्कंध सर्व पूरन होचुकवेके उत्सवकैं दिवस जथा सक्ति बसन भूषन अलंकृत परकर सहित हूजे फिर श्रीभागवतको बक्ता दंडवत करि पत्रधरि ऊपनैत करि रहैं तब श्रौता पढैं सो यह कवित्त ॥ तीनतापतचेतेजकोरिकतरनिजैसैंजामैंजीवजरेसोनजातकछूवैंकहीं ॥ पारायनसमैंमनभावनकैंसावनसौंमेटीरजहियसियराईकौंतवैंलहीं ॥ नागरउरआनंदभोवाढीहरियारीत्यौंहुतीजीअविद्यासोजवासेलौंसबैंदही ॥ वक्ताआपगाजगाजभागवतझरलायेश्रोतासरसायेप्रेमभक्तिकीनदीवही ॥ १ ॥ पुन ॥ नागरकहायदुखसागरमेंपरेहुतेराजसअपारधारत्रानतनपहरैं ॥ हरिकेसमंधसतसंगकैंनरंगरचेकालतैंनिडरभयेहियेमैंनहहरैं ॥ ऐसेहुतेतिन्हैंकृष्णचरितविचत्रकरिरंगडारेरंगमहामाधुरीमैंगहरैं ॥ भागवतचंद्रमाप्रकासकैंकरतउरसुखकौंसमुद्रबढयोआनंदकीलहरैं ॥ २ ॥ न्यौंतिकैंबुलायेआछैंआयेमनभायेलोगसंतओमहंतआचारजकुलनौगुनी ॥ औरहूसवादीहैंबरनतीनसोप्रवीनजिनकीरहीहैंमिटिगईमतिऔगुनी ॥ नागरउदारवक्ताविविधित्यौंनारानिसौंदईहैंरसोईनोंकीसुधासनहौगुनी ॥ पंगतिनभेदकीनौंपंगतिबैठायजथाफेरचो

कथापारसबढाईभूखसौगुनी ॥ ३ ॥ नागरमनफिरैवह्यौकेतोसम
झायकह्योमायाकैलपेटचैपायपलहूनठहिरैं ॥ हरिसमंधमैंनरहैथि
रचंचलअतिचलतप्रचंडपौंनजैसैंपटफहिरैं ॥ ऐसोहुतोताहिकृ
ष्णचरतिविचित्रकहिबौरिडारयौमनमहामाधुरीमैंगहिरैं ॥ भागव
तराकाससिहोतहीउदतहियैंभक्तिकोसमुद्रवाढयोआनंदकीलहिरैं ॥
॥ ४ ॥ अन्य ॥ कीनौंउचारिजिहींछिनतैंभजनानंदआनिछ
योसुछयोहैं ॥ श्रीरसिकेंद्रविहारिजूकीकथाआसवप्यायदयोसुद
योहैं ॥ जेहेअभावकतेईगयेछकिभावकरंगठयोसुठयोहैं । लोयनभी
जरहेसुरहेमनहाथतैंरीझगयोसुगयोहैं ॥ ५ ॥ गाईसोपुराननमैंपा
ईनिधिअनयासयहभूमिछांडिहमकितहूनजावैंगे । जमुनाजलपान
रुसनानश्रीजमुनाकीरजकौंपरसप्रेमपुलिकसिहावैंगे । वृंदावनमां
हिसदासंतनिकैंबांहवलदंपतिचरित्रचारुसुनैंगेसुनावैंगे । रसिकवि
हारीप्यारीकृष्णकथाआनंदमैंऐसैंहीवितांईसमैंऐसैंहींवितांवैंगे ॥
॥ ६ ॥ अन्य ॥ चाहचितौंनलगीटकलालसौंनेहमईगतिऔरैंभ
योतन । आनंदमैंपवरयोनकछूचितबोरिदयोसुखसागरकेगन ॥
श्रीशुकत्यौंहीकथावागुपालकीमोहनवानीछकायेसबैंजन॥ झूमिझु
केरसमत्तव्हैबावरेभीजरहेदृगरीझगयोमन ॥ ७ ॥ अन्य ॥ भट्टब्र
जनाथकृत ॥ कवित्त ॥ प्रगटयोप्रथमअनुरागहीअरुनतासौं
भयेसबलालरंगरंजितगहगहे ॥ मिटीमायानिसिचलेनवधाभक
तिपंथसूकेपापपौधाकलिकीनेजेलहलहे ॥ छिपेहरिभजनविमुखम
तिउडगनभाजेकामक्रोधचोरचितकेबहबहे ॥ नागरप्रकासभांनभा
गवतहोयकियेहियकेकंवलमहाआनंदडहिडहे॥८॥ अन्यविजैरामदा

हिवांकृत ॥ कवित्त ॥ पोषेहैंपपीहाप्रानतपतमिटायसबनृत्ततमयूर
मनहरपबढायेहैं ॥ हियभूमिमांझभावअंकुरप्रगटभयेप्रीतलताफूली
चारुप्रेमतरुछायेहैं ॥ पूरितप्रवाहभक्तिआपगाबढीहैंउररससिंधुभ
रिकैंदृगनिउझलायेहैं ॥ शुकमुनिरूपसेहैंबकताजूबिजैरामभा
गवतअमृतकोघनबरसायेहैं ॥ ९ ॥ अन्य ॥ कल्हापन्नांकृतक
वित्त ॥ ग्यानकोप्रकासभयोआनंदउरानिछयोसबकेअग्यानदुषग
येलैकैंपापकौं ॥ वृंदावनधामस्यामास्यामअभिरामनकीसुषदल
लितलीलाकरतसुजापकौं ॥ व्यासजूकेबचननिरचनासुनायसुषपा
वनकियेहैंमेटिदियेबहुआपकौं ॥ प्राननाथश्रोतांनकेश्रवनसुधाकौं
सींचिभक्तिसियराईमंदकीनैंतीनतापकौं ॥ १० ॥ अन्य, सनाव
ढहीरालालकृतकवित्त ॥ भक्तिलताअदभुतउलहीजुउरमांझपिय
राईनीरसतामिटीसुनिधुनिकैं ॥ नवअनुरागतेईपल्लवप्रगटभयेसींचे
सुधाबैंनआपरूपशुकमुनिकैं ॥ हीरालालसांवरेतमालसौंवलितअ
तिललितसुमतिआलबालराष्योचुनिकैं ॥ छायरह्योछायासोउछा
हतहांसबनकेफूलेमनभक्तनकेभागवतसुनिकैं ॥ ११ ॥ अन्य ॥
मुनसीकन्हींरामकृतकवित्त॥ सतजुगत्रेताकिधौंद्वापुरप्रगटकियोऔ
रैंमनभयौसोनकहिवेमैंआवनौं ॥ छूटगीमलीनमतितामैंहुतेलीनअ
बप्रगटीनवीनभक्तिहरिगुनगावनौं ॥ कृष्णलीलाकहिवेकीकांननि
रहैंगीधुनिरूपमुनिनैंनाजियलालमनभावनौं ॥ कन्हीरामसुषधाम
ब्रह्मजग्यरचनांकोहियतैंननिकसैंगौसमयसुहावनौं ॥ १२ ॥ अन्य
बिनैचंदवैष्णवीनामचरनदासकृतकबित्त ॥ कारिडारयोछीनतापती
नकोप्रबलदुषआनंदअपारआंनिसबकैंहियैंछयो ॥ श्रोतारसभरेअ

रुपरमउछाहभरेभरेनैंननीरप्रेमपीरठाटहैंठयो ॥ चनदासचित्तक लिकालमांझविस्मययेऔरैंगतिऔरैंमतिऔरैंलोकव्हैंगयो ॥ अहो शुकरूपब्रह्मसंहितासुनाईतातैंसतजुगत्रेताकिधौंद्वापरसमैंभयो ॥ ॥ १३ ॥ महामूढमनताकीकहियेकहानीकैसीजाकोलैंकुसंग च्यारिबेदानिमैंगायोहैं ॥ हियेभरचोकदरजसुयाकेपुनीतकाजव्हैंकैं दयालआपभागवतसुनायोहैं ॥ चरनदासचिरजीज्यौवक्तासुखदरू पतिनयौंविरदभवतारवेकोपायोहैं ॥ होतीनांठौरपरचोजगप्रपंचरौ रताहिगौरकरिदौरभक्तमहलबसायोहै ॥ १४ ॥ श्रवनकरायशुकपु रानअहोवक्ताजूसबउरभौंनकियोभक्तिमहारानीको ॥ कृपादृष्टितैं जुकीन्हींसुधावृष्टिचहूंकोदवनंनकहांलौंकीजेऐसीमृदुबानीको ॥ चर्नदासतुमसेतोतुमहींहोमहाराजभक्तिदांनदैवोकामतुमहीसेदांनी को ॥ समरसक्रादिगर्वमेंटिदियेहरिजैसैंआपमैंटयोहैगर्वकलिसेअभि मांनीकौ॥१५॥बचनिका॥यह कबित्त पढचुकैं ता उपरांइत इत्यादि पद गावैं ॥ पद ॥ मुनिसबलोकपावनकरे ॥ प्रगटिश्रीभागवतकी नौकनासागरढरे॥ ल्यायभागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे॥तुमजुसबउर भवनभवनमैंभक्तिदीपकधरे॥कृष्णचरित्रबिचत्ररसमदप्रेमगहवरभ रे॥सहजश्रीशुकचरननौकादासनागरतरे॥१६॥व०पूजाकरि मुख्य श्रौता आरती करैं तावेर संख दुंदभी भेर प्रणवआदि वाद्यगीत नृत्य करि महामंगल धुनि हौंहि, पुसप और सौगंध चूरन चंदन-की बहुत वृष्टहोय,परसपर तिलककरैं सिरदूबधरैं फूलमाला पहि-रावैं गरैं पायप्रणाम भुजभरि मिलन सर्वकरैं, वैसैंही गद्गद धुनि सहित प्रदक्षिनांलैं साष्टांग दंडवत करि यासुखकौं चिंतवन करत

सब अपअपनें स्थानकजोहि, याकलिकालमैं सर्व जग्य वर्जेतअरु यह केवल ब्रह्मकीरतन जग्य करतव्यहैं सोकरैं, ताके भाग्यको वाण्यांनब्रह्मा आपनी आरबल प्रमानकरैं तऊपूरन न होय,ताकौंम नुष्य तुछ आर्बल कहाबरननकरैं ॥दोहा॥ जपतपसंजमनेमव्रत, जो गजग्यकरिपूर ॥ भक्तिभागवतसंगाबिनु, भक्तिनउपजैंमूर ॥ १ ॥ संमृतवेदपुरानहैं, सबहीहरिकेअंग ॥ रंगनलागैंभक्तिको, बिनांभा गवतसंग ॥ २ ॥ जक्तभक्तिवहुभांतिकहैं, नानामतकेमांहि ॥ शुक मुखकैंविनुफलद्रवैं, ब्रजरसपावैंनांहि ॥ ३ ॥ नागरिदासविचारिजि य, अफलजायनहिंदेह ॥ चाखिभागवतअमृतफल, जनमसफल करिलेह ॥ ४ ॥ लखिइच्छाबहुवैष्णवनि, नागरीहितसरसाय ॥ र चनारुचिरचिग्रंथकी, दयोश्रवनमधुपाय ॥ ५ ॥ सतरैसैंनिनांनवा, संवतसावनमास ॥ पारायनजुप्रकासबिधि, कियोनागरीदास ॥ ६ ॥ इति श्रीमद्भागवतपारायनविधिप्रकासग्रंथ संपूर्णम् ॥ श्रीराधाव ल्लभोजयति ॥

इति

वैराग्यसागर समाप्त ॥

श्रीः

नागरसमुच्चय ।

तत्रादौ

सिंगारसागर प्रारंभः ।

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८
श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरि
संबंध नाम नागरीदासजी कृत,

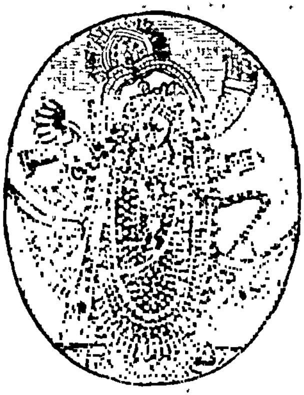
ताकौं

मुंबईमें.

ज्ञानसागर छापखानेमें

छापके प्रसिद्ध किया.

श्रीनृत्यगोपालोजयतितराम्.



श्रीनंदसुतगोपीजनवल्लभोजयति ॥

अथ
सिंगारसागर लिख्यते ॥

ब्रजलीलाग्रंथ ॥

अथ दसमस्कंधके पूर्वार्द्धानुसार श्रीब्रजलीला नंदगृह जनमोत्सव षंड लिख्यते ॥

॥ रागसोरठ ॥

पद ॥ श्रीवल्लभकुलवंदौं ॥ करिध्यानपरमआनंदौं ॥ धनि नंदजसुमतिरानी ॥ लयोकृष्ण जनमजगजानी ॥ कृष्णाजन मतभयोआनंदगृहमहामंगलठयो॥ घोषडच्छवभीरभारीनभबिमान नसौंछयो ॥ दूधदधिघृतमचीकादौंमनौंभादौंबरसहीं ॥ पोहोपवरषा करतसुरअहलादअतिजियसरसहीं ॥ नवनिद्धिघरघरफिरतकंवला गोपकुलगनअलिनमैं ॥ छायरह्योवैकुंठतैंसुखअधिकगोकुलगलिन मैं ॥ तिहींछिनतैंसकलब्रजजनसंपदासुखसौंसजे ॥ दासनागरध न्यसोजिहिंपरमहितकरिहरिभजे ॥ १ ॥

अथ दैत्यबधषंड ॥

झूलतपालनैंहरिराई ॥ भंज्योसकटबकोबनिआई ॥ चकितरही ब्रजबाला ॥ यहकोहैंरूपरसाला ॥ प्रथमरूपरसालधारिकैंलालगहि

लएगोदमैं ॥ कंसरिपुकौंपायपलनांपूतनांभइमोदमैं ॥ करतस्तनपा
नलीनैंप्रानऐंचिसुसोसमैं ॥ कृपानिधिहरिदईगतिकरिगिरितनषट
कोसमैं ॥ जमलाअर्जुनतारिदईमुषमातविस्वदिषायकैं ॥ तृणाव
र्तअरिष्टअघवकहत्योवच्छफिरायकैं ॥ संषचूडप्रलंबकेसीन्यौमधे
नुकवहोहते ॥ दासनागरगोपतनहरिकियेआसुरसदगते ॥ २ ॥

अथ दावानल पांनादिक ब्रजरच्छिक लीलाखंड ॥

करिपांनदावानलल्यो ॥ गहिकाढिकालीअहिदयो ॥ गोपनबै
कुंठदिषायो ॥ हरिव्यालतैंनंदबचायो ॥ लयोनंदबचायबौहौंवि
धिसकलव्रजरछ्याकरी ॥ सप्तदिनकरधारिगिरवरप्रलयजलमेटी
झरी ॥ द्रुमनकेषगनगकेऊपरातिन्हैंकहुंनाहिंजलछियो ॥ परयोपा
यनइंद्रतवसिरअभैकरगिरधरदियो ॥ गोपगोगोपीनकैंमनसप्तदिन
उच्छवरह्यो ॥ कहतजैजैसकलसुरनंदनंदगोविंदपदलह्यो ॥ विविधि
लीलाकरतव्रजमैंनंदसुतअतिसौहने ॥ दासनागरिकृष्णअरुबालि
महामनकेमौंहने ॥ ३ ॥

अथ मांषन चोर लीला षंड ॥

जसुमतिसुतसुषरासी ॥ रसमग्नसकलव्रजवासी ॥ तियधामका
मसबभूली ॥ रहैंवालकेलिरसझूली ॥ करतवालककेलिबौहौंविधि
सवनकेमनकौंहरैं ॥ चोरहींदधिदूधघरघरजदपिलैंकौंनैंधरैं ॥ वृंद
वांदरअरूसषासबतिनहिंसंगषवावहीं ॥ देषिभवनोभवनआवततहां
तैंभजिजावहीं ॥ कहूंबालकचढिअलूषलजाकैंपराफिरसांवरो ॥ रं
ध्रघटकरिमह्योपीवतनंदसुतमनभांवरो ॥ जग्यमैंआवतनकौनैंवेदमं
त्रउपायकैं ॥ दासनागरसोवव्रजमैंदहीपातचुरायकैं ॥ ४ ॥

अथ गोचारन छाक लीला षंड ॥

बनबनगायचरावैं ॥ गावैंअरुबैंनबजावैं ॥ बलिरामकृष्णसुषदाई ॥ वहौलीलाकरतसुहाई ॥ करतलीलाबिबिधिबनमैंसंगबालकमंडली ॥ छाकजैंवतढाकछहियांचितैंचकितकमंडली ॥ चहूंदिसिग्वालावलीब्रजचंदविचअवरोषिहिं॥ ललितलीलाबालकउतकसुरबिमांननिदेषिहौं ॥ परसपरचाषतचषावतहसिहसावतहेतवैं ॥ जग्यभुकक्यौंजूठजैंवतहरेबिधिबछराजवैं॥ सकलजगरह्योहेरिजाकौंसोईहेरनकौंचले ॥ दासनागरकरतभोजनफिरतमोहिलागेभले ॥ ५ ॥

अथ वछराहरन लीला षंड ॥

राजसगुनमदफूलिकैं ॥ हरेग्वालवच्छविधिभूलिकैं ॥ फिरितैसेतिहिंठांचितैं ॥ गिरचोचरनचतुर्मुषहीहितैं ॥ गिरचोचरननिदंडज्यौंब्रह्मांडकर्तास्यामकैं॥वौहौरूपचितवतचतुर्भुजविचअवनिवृंदाधामकैं ॥ डारअरुफलफूलदलद्रुमकृष्णमयसबजानियैं॥अहावृंदावनमहातमकहाकहिजुवषानियैं ॥ कहीहरितरवरनिमहिमांआपुमुषबलबीरकौं ॥ रहोतिनकौंध्यांनरहेजियपरासिजमुनानीरकौं ॥ धन्यवहबनभूमिजिहिंठांलालपदपंकजधरैं ॥ दासनागरधन्यसोनरवासवृंदावनकरैं ॥ ६ ॥

अथ जग्यपत्नी लीला षंड ॥

पूरनब्रह्मनंदकैंअैनां ॥ सुंदरस्यामकमलदलनैंना ॥ कबदेखैंरूपप्रकास ॥ लगीजगपत्नीनमनआस ॥ लगीआसउदासजियमैं

रहैंडारिउसासकौं ॥ नैंनभरिवनओरचितवैंज्यौंचकोरप्रकासकौं ॥ कह्योजिहिछिनस्यामकोसंदेसग्वारनिआयकैं ॥ उठीलैलैंविविधि भोजनचलीआनंदछायकैं ॥ धरतपगचंचलतऊभयेपंथकोसकरोर के ॥ चंदचाहिनघुटेछूटेवृंदमनहुंचकोरके ॥ एकरोकीगेहसोतजिदेहसत्वपहिलैंगई ॥ दासनागरलालकरिउरमालतिंहिबालहिलई ॥७॥

पुन जग्यपत्नी लीला षंड ॥

ढिगआईद्विजबाला ॥ रहीइकटकलपिनंदलाला ॥ ठाढेपरमछबिपावैं ॥ हरिकरगहिकंवलफिरावैं ॥ कंवलफेरतस्यामठाढेकंवलमुषमुसकावहीं ॥ कंवलमालावरनपरसतकंवलदृगनिढुरावहीं ॥ वामभुजधरिसषाअंसहिंधुकेअतिछविछायकैं ॥ तिहींछिनलषिकोटिमनमथरहेहैंसिरनायकैं ॥ निरषिमोहनमाधुरीदुजवधूप्रानानिवारहीं ॥ देतभोजननेहआतुरदेहकौंनसंम्हारहीं ॥ करतहीनिसद्यौसभामिनसोमनोरथसबठये ॥ दासनागरनंदनंदनप्रीतहीकैंबसभए ॥८॥

अथ चीरहरन रास बरदांन वेणुरव आरंभ षंड ॥

गोपीजनजमुनांन्हावैं ॥ देवीपूजिपूजिसिरनावैं ॥ कात्यायनीबरदीजै ॥ हमारेनंदपुत्रपतिकीजै ॥ नंदसुतचितचोरआएलएचीरचुरायकैं ॥ प्रीतिसांचीनिरखिकैंदयेचीरबरमुसकायकैं ॥ आयहैंअवसरदरात्रीरमणमिलिकरिहौंजबैं ॥ सकलपूरनकामव्हैहोंमदनमदमोचततवैं ॥ सरदनिसिआईजुवेबहौमालतीफूलनछई ॥ उदितपूरनचंदकिरनैंसर्ववनव्यापकभई ॥ अतिमनोहरसमैंनिसिमुषवेणुहरिअधरनिरली ॥ दासनागरमहामोहनमंत्रधुनिदूतीचली ॥ ९ ॥

अथ रासारंभ षंड ॥

बंसीस्यामबजाई ॥ सोमधुमयधुनिछाई ॥ परीश्रवनमैंजाकैं ॥ सुधिनांहिंरहीफिरताकैं ॥ रहीनांहिंनसुधीतनकछूजिहिंभनकश्रवन निसुनी ॥ गईछूटिसमाधिसिवकीविवसमनग्रीवाधुनी ॥ द्रुमनिपरि जाकिथकिरहेषगरुक्योजमुनानीरहैं ॥ हलतनांहिद्रुमावलीथकिर ह्योमंदसमीरहैं ॥ चलीसुनिव्रजवालमारगनादअमृतधारकैं ॥ गेह तजिकैंनेहआतुरलोकवेदबिसारकैं ॥ रुकीसोनहिरुकीगृहबिचगई तनताजिभामिनी ॥ दासनागरस्यामघनसौंमिलीचलिज्यौंदामिनी॥

अथ रासरमण लीलाषंड ॥

अलीअवलीसबठाढी ॥ मनुचित्रचितेरैंकाढी ॥ रहीइकटकनैंन बिसाला ॥ मधिनिरषितृभंगीलाला ॥ माद्धिनटनागरतृभंगीकंवल मुषमुरलीधरैं ॥ बंकभुवमनहरनदृगसिरमुकटबनमालागरैं ॥ हरिम नोहरमाधुरीतियपिवतपललागैंनहीं ॥ जिहींतनजाकेपरेदृगथकेपु नितिहींकितहीं ॥ रहेअरबरिस्यामहूइतलषितियानिकीओरहैं ॥ वहो रूपघनमैंपरेदृगभयेभरेकेसेचोरहैं ॥ भीरवहोचंदाननीबनभयोरू पप्रकासहैं ॥ दासनागरसबनिहियमैंरासकरणहुलासहैं ॥ ११ ॥ पुनरासषंड ॥ मनमोहनहितनातैं ॥ हसिकहनलगेकछुबातैं ॥ सुन तबिंगकेबैनां ॥ भरिलीनेतियजननैंनां ॥ लयेभरिकैंनैंनसवरुषरोष जुतभुवभंगकी ॥ जगतविजईहितषिचीहैंमनहुंचापअनंगकी ॥ स तरुहैंहैबंकचितईलगीछबिअभिरामिनी ॥ मंदसहजसुछंदसौंफि रदयेउत्तरभामिनी ॥ तवविहासिरसदृष्टिसौंपियसबनकौंअंकानि

भरी ॥ आरंभगानसुरासहितमिलिमहामोहनधुनिकरी ॥ करनसौं करजोरिहैंद्वैतियभईबिचश्यामकैं ॥ दासनागररच्योमंडलमध्यवृंदाधामकैं ॥ १२ ॥

अथ रास विरहोत्पन्नलीला षंड ॥

बिहरतबनबनवारी ॥ कहुंदुरिगयेढिगलैंप्यारी ॥ विरहबिबस तियहेरैं ॥ संगमधुपगनघेरैं ॥ घेरैंमधुपसुकमोरलषिमुषश्रोररहतच कोरहैं ॥ बिकलभईबूझतलताद्रुमकितैंनंदकिसोरहैं ॥ नीरनैननि पीरहियबिनधीरबिलपतडोलहीं ॥ कितैंहोहरिप्राणनाथयौंसहित आरतिबोलहीं ॥ लालकीलीलाललितमिलतिहिंसमैंसबहिनरची ॥ वढ्योबिरहविषादजियसुकवारिअबलातनतची ॥ पियहिहेरत फिरतटेरतसकलबनमैंरगमगी ॥ दासनागरिचंदसौंत्रिछुरीकिर नजनुजगमगी ॥ १३ ॥

पुनिरास विरहोत्पन्न लीला षंड ॥

प्यारचरनचिन्हपाए ॥ रजसौंद्दगसीसलगाए ॥ पियसुषसौंसु षभीनी ॥ कछुकोपीनाहिप्रवीनी ॥ नहिनकोपीप्रेमवोपीसंगगोपी जानिकैं ॥ बहुरिदेषीवहीठाढीतजीपियसुषसानिकैं ॥ रगमगीअ लकैंसिथलद्दगपुनिचलतधारानीरहैं ॥ तुट्योमोतिनहारउरतैंछु ट्योअंचरचीरहैं ॥ डगमगतपगधुकिधरनिपरनहिंसकतराहिगहिधी रकौं ॥ मनहुंदीपकलोयलहकतपरसमंदसमीरकौं ॥ छुवतसुखद्रुम पातपल्लवसकतनहिंनिरवारिकैं॥ दासनागरिउटतपियकौंकासिका सिपुकारिकैं ॥ १४॥

अथ हरिप्रागट्य व्रजबाला मिलनषंड ॥

महासघनबनआवैं ॥ तहांजीकोलोभनल्यावैं ॥ अपनैंअंगउजेरैं ॥ रूपकोसागरहेरैं ॥ रूपसागरसौंविछरितरफरतबिधिज्यौं मीनकी ॥ देषिकैंदुरिद्रुमानिमैंपिययहैंगतिगोरीनकी॥ लालदृगभरि नीरलीनैंपीरजियव्यापकभई ॥ तबहितिनमैंआयप्रगटेसलजमुष ग्रीवानई ॥ आनंदतवकोकह्योपरतनबहोरिबैठेपुलिनमैं ॥ रंगबाढ्योदुहूंदिसिहितबहसिबातैंपुलिनमैं ॥ रिनीहौंतिहारोकहतवारत अपनपोस्यामहैं ॥ दासनागरव्रजबधुनिलयेमोलहरिबिनदामहैं॥१५

अथ रासलीलाखंड ॥

नितितहैंव्रजबामा । सुंदरछबिअभिरामा ॥ दामिनितनदुतिराजैं । मुखकुंडलथहरनिभ्राजैं ॥ थहरतकुंडलफहरतअंचलनहिंठहरतउरमाला ॥ खूटतबैंनीछूटतफूलसुपियमनलूटतबाला ॥ सरससगीतिनिघटतनउघटततत्तरंगताक्तिटकाटिलौंनी ॥ ततथेईथेईथेईधुमकटतकथोपरननिपरतसुठौंनीं ॥ झंझंझनकतकिंकिंनिनूपरखनकतबलयाकंकन ॥ उरपतिरपनटअलगलागमैंलेतभुजनभरिअंकन ॥ चंचलतनचलदलगतबिलुलितद्युतिअलातसीसोहैं ॥ नागरीदाससुघरनितकसबगुनप्रगटतमनमोहैं ॥ १६ ॥ पुनिरासलीलाखंड ॥अनूपमरासवन्यौहैं ॥ सुरतांनबितांनतन्यौहैं ॥ गिरद्योकामकामकेबाननि ॥ नभमोहेदेवविमाननि ॥ देवबिमाननिकौतिकमोहेफूलनिकौंवरसावैं ॥ प्रेममगनकौतूहलदेखतदुंदुभिपरनमिलावैं ॥ निरखिसुरबधूपीडतमनमथसबसुधबिसरिगईहैं ॥ कबरीछुटताकिसतकुस

मावलिनीवीसिथलभईहैं ॥ मधुमयरागमुरलिकामोहतथिरचरचर थिरकीनैं ॥ उडगनसहितचंद्रमाविथकितपैंडनआगैंदीनैं ॥ मुकट लटकअरुहस्तकभेदनअदभुतरंगबढ्योहैं ॥ नागरिदासरासतैंरस मयनभलौंशब्दचढ्योहैं ॥ १७ ॥ पुनिरासलीलाखंड ॥ श्रमकनसु खव्हैंआये ॥ मनुचंदसुधाप्रगटाये ॥ खिसवैंनांझुकिमोहैं ॥ सिर सिथलचंद्रिकासोहैं ॥ सिथलचंद्रिकामुकटझुकौंहौंश्रमितअंगछवि पाये ॥ उपजतगतिकौतकपायनमनडगमगडगानिडुलाए ॥ स्वेदसु वासअंगप्रगटतभईसंगभौंरभहरावैं ॥ गउरस्यामतननीलपीतपटफै लफैलफहरावैं ॥ गिरिगिरपरताविमलनगभूषनरहोजुतनसुधिनां हीं ॥ रसानंदसागरअतिवाढ्योमगनभयेतिहिमांहीं ॥ मंडलरासवी चदोऊउरझेगरबांहीपियप्यारी ॥ नागरिदासवसौहियराधाअरु श्रीकुंजविहारी ॥ १८ ॥

अथ रासोत्तरजलविहार खंड ॥

रासमैंरंगरह्योहैं ॥ सोनहिजातकह्योहैं ॥ श्रमितअंगसरसाये ॥ तबचलिजमुनांआये ॥ आयेजुजमुनांतटपुलिनतहांकंवलसौरभआ वहीं ॥ धसेजलरसमत्तक्रीडताछिरकितनछिरकावहीं ॥ अंजुलनिज लछुटतछविकबिकहतजुगलविचारिकैं ॥ गृहतरनिजाउछाहमुकता मनुउछारतवारिकैं ॥ चंद्रिकामैंचमकिबूंदैंगिरतयौंछविपावई ॥ जा निबहौउडपतिअवनिउडिउडिगगनतैंआवई ॥ पारजातकेजोत मयजनुफूलखेलतफैलहीं ॥ दासनागरिजलकलोलतछविसौं छिरकतछैलहीं ॥ १९ ॥

पुनःजलविहारखंड ॥

भीजेतनछबिपावैं ॥ पियकेलखिनैंनासिरावैं ॥ प्रेमसनीतियजलसनी ॥ राजतज्यौंकंचनकुमुदनी ॥ मनहुंकंचनकुमुदनीजलबीच दुतिजगमगरही ॥ भईलखिब्रजचंदप्रफुलितपरतनहिंसोभाकही ॥ तनछबीलेवारभीजेलगेअतिछबिपायकैं ॥ ज्यौंबचंदनपूतरिनसौंरहेअहिलपटायकैं ॥ कबहुतनजलमगनबिथुरेकचनिबिचमुखदेखियैं ॥ ज्यौंसिवारनचंदउरझेनिरतजलअवरेखियैं ॥ रूपजगमगरह्योसलिताखिलीराकाजोतिहैं ॥ दासनागरितिहिंसमैंजलकेलिबहौबिधिहोतहैं ॥ २० ॥

अथ जलबिहार उतरगृह आगमन खंड ॥

क्रीडतजुवतिनसंग ॥ हरिक्रीडतकोटिअनंग ॥ कामकेलिरसभीने ॥ निसिविविधिकुतूहलकीने ॥ कीनैंकुतूहलविविधनिसरसमंडलीआनंदछई ॥ रूपसरसनिअंगपरसनिरंगवरसनिअतिभई ॥ नीरबिचबलबीरगजज्यौंसंगकरनिनिसुखलियो ॥ बाहुसुंडादंडसौंअतिअंबुअवगाहनकियो ॥ झीलिसुखसागरचलेनिसनैंनउन्मीलताकियैं॥ रहिमनोहरमंडलीछकिप्रेमरसमदिरापियैं ॥ काव्यआश्रयभईबातैंसुधाश्रवनसुहावहीं ॥ दासनागरधन्यसोब्रजललितलीलागावहीं॥२१
इति श्रीब्रजलीलापदप्रबंधसंपूर्णम् ॥

अथ गोपीप्रेमप्रकासग्रंथलिख्यते ॥

दोहा ॥ गोपीगोपीनाथके, एकप्रानद्वैगात ॥ तिनहींकौंसिरना

यकैं, तिनकीवरनौंबात ॥ १॥ अथ बचानिका ॥ श्रीकृष्ण उद्धवकौं व्रजपठये, ताको जगप्रसिद्ध प्रयोजनतो यह, जो श्रीनंद जसोदा गोपी गोपनको समाधान करनौं, प्रीति लोकरीति अनुसरनौं, इति प्रथम प्रयोजन ॥ अथ दुतीयप्रयोजन ॥ श्रीकृष्ण लीलापुरुषोत्तम अवतारी सो जाकैं अभिमान होय ताको अभिमान रहन न दे, सो देख्यो उद्धव ज्ञानको अवतारहैं, अरुयाकैं अभिमानहैं, जो ग्यानउपरांत औरपदारथ कोऊनांहीं, याकैंलियैं इनकौं व्रजपठये, अरु उद्धवके चितमैं जो मुष्य आसयहो सोई श्रीकृष्ण उन्हकौं यालियैं कहायो, जो इनकैं उनकैं यही चरचाहोइ, जो गोपी प्रेमभक्तिको स्वरूपहैं, उनके मुखकी बात सुनि उनकी दसादेखि इनको वह मत्तअरुअभिमान दूरि होयगो ॥ दोहा ॥ कहाउद्धवकहाइंद्रअरु, मदनमहामदखान ॥ काहूकैंतनतनकहरि, रहनदयोनहिंमान ॥ २ ॥ इति द्वितीयप्रयोजनम् ॥ अथ तृतीयप्रयोजनम् ॥ जो सगुन निर्गुन सास्त्र दोऊगावत हैं सो उद्धवकेतो निर्गुन ब्रह्मकोआसै ॥ अरु गोपीनके प्रेमरूपको आसै, यो ग्यानी वे अनुरागी सो इनदोवनके चरचा करांवनीं सो जामैं जोसरस रहैं अरु आपनौं रंग वाकौं लगायदेवैं सोही मत मुष्य जगमैं प्रसिद्धहोय ॥ दोहा ॥ प्रेमरूपमोहनमई, उमगैंउदधिउलैंड ॥ कौंनसकैंतबरोकिकैं, ग्यानधूरिकीमैंड ॥ ॥ ३ ॥ इतिप्रयोजनतृतीयम् ॥ ॥ अथ चतुर्थ प्रयोजन ॥ जो श्रीकृष्ण तो सिंगारमय परम रसिक मनि, अरु उद्धव निकटवर्ती सषा सो महारूपेग्यानी, सो इन उनके संगमैं सदा रंग

सुष क्योंकरि निबहैं, एकमत प्रकृतबिन तातैं हरि सुजान जानि मनजानि कृपाकरि ब्रजके रंगकी रैंनीमैं रंगाय मंगाये, ॥ दोहा ॥ प्रेमभक्तिनवरंगकी, रैंनीब्रजअभिराम ॥ बिनारंगैंवहिरंगमन, ढिग क्यौंराषैंस्याम ॥४॥ इतिचतुर्थप्रयोजन ॥ अथ पंचम प्रयोजन ॥ जो श्रीकुंजबिहारी तिनको नित्यविहार श्रीवृंदावनमैं, तिन यह बिचारी जोउद्धव निजसषाहैं, ताकौं श्रीवृंदावनमैं राषियैं, सोयाकी बिनउतकंठा कैसैं बास होय सो याहूतैं उहांपठये, जो गोपी सतसंगके रंगको सुषभिदैं तब वाठौरको बास चाहैंगे सो औसैहीं भयो उद्धव परार्थनांबचन ॥ श्लोक ॥ आसामहोचरणरेणु जुषामहंस्यां वृंदाबनेकिमपिगुल्मलतौषधीनां ॥ यादुस्त्यजंस्वज नमार्यपथंचहित्वा ॥ भेजुर्मुकुंदपदवींश्रुतिभिर्विमृग्यां ॥ ५ ॥ अर्थ सो औसी इनकी प्रार्थनां वृथाकैसैंजाय, तातैं श्रीकृष्ण कृपा-करि गोप्यस्वरूप द्रुमलता स्वरूप करि श्रीवृंदावन राषे, सो औरनकौं चर्मदृष्टि करि कैसैं दीसैं, अरु वृजवासी हरिगुन गा-यक वैष्णव उद्धौको एकअंककरिकैंभये, सूरदास सोतो श्रीम-तगोस्वामी बिठ्ठलनाथजी द्वारा यहभेदजान्यौं, तथा उनके पद भ मरगीतके अनुभवीक तिनहूतैं जान्यौंपरचो पदस्तुति ॥ दोहा ॥ किधौंसूरकोसरलग्यो, किधौंसूरकीपीर ॥ किधौंसूरकोपदलग्यो, यातैंविकलसरीर ॥ ६ ॥ सो अब उनहींके पदनि करिकैं प्रसंग वर्नन करियतुहैं ॥

अथ उद्धवप्रति श्रीकृष्ण बचन॥

॥ पद ॥ उद्धवबेगहीव्रजजाहु ॥ श्रुतसंदेससुनायमेटोवल्लबिन

कोदाहु ॥ कामपावकतूलतनमनबिरहस्वाससमीर ॥ भस्मनांहिन होंनपावतलोचनानिकेनीर ॥ आजिलौंइहिंभांतिउद्धवकछूकुसल सरीर ॥ इतेपरबिनसमाधांनहिंजरहिंगीतियधीर॥ बारबारकहाकहौं सुनिसपासाधुप्रवीन॥सूरसुमतिबिचारिजैसैंजियहिजलबिनमीन ॥७

॥ अथ गोपीप्रति गोपीबचन पद ॥

कोऊवैसीहीउनिहारि॥ मधुवनतनतैंआवतहैंरीदेपोनैननिहारि ॥ वैसेहीमुकटमनोहरकुंडलपीतवसनरुचिकारि ॥ वैसैंहीबातकहतसा रथिसौंब्रजतनबांहपसारि ॥ इतनैंहूंअंतरयौंमानतमनौंवीतेजुगच्या रिं । सूरसकलतलफतआतुरह्वैंज्यौंवमीनाविनवारि ॥

अथ कविबचन तथा गोपीप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ देष्योनंदद्वाररथठाढो ॥ बहुरिसपीसुफलकसुतआयो परयोसंदेहउरगाढो ॥ प्राणहमारेतबहीगयोलैंअबकिहिंकारनआ यो ॥ मैंजांनीइहिंबातसत्यकैंक्रियाकरनउठिधायो ॥ इतनैंअंतरल षिसुफलकसुततिहिंछिनदरसनदीनौं । तबपहिचानिसषाहरिजूको परमसुचितमनकीनौं ॥ तबप्रनामकियोअतिरुचिकरिकैंऔरसब निकरजोरे । सुनियतहुतेतैसेहीदेषेपरमसुह्रदअतिभोरे ॥ तुह्मारो दरसनपायआयभोजन्मसुफलकरिजान्यौं । सूरसुउद्धवमिलतभ योसुषज्यौंझषपायोपांन्यौं ॥ ९ ॥

अथ गोपीप्रति उद्धव बचन ॥

॥ पद ॥ सुनहुगोपिहरिकोसंदेस ॥ करिसमादिअंतरगतिध्या वोयहहरिकोउपदेस॥ हौंअबगतिअबिनासीपूरनघटघटरह्योसमाई॥

जोगतत्वविनमुकतनहोईबेदपुराननिगाई ॥ सगुनरूपतजिनिर्गुनध्यवैंइकमनइकचितलाय ॥ यहउपायकरिबिरहतरोतुमामिलैंब्रह्मतवआय ॥ दुसहसंदेससुनतमाधौकोगोपीजनबिलषानी । सूरबिरहकीकहांलगिकहियेनैंननिबरषतपानी ॥ १० ॥

अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौयाब्रजकीदसाबिचारो । तापीछैंयहसिद्धिआपनीयोगकथाबिस्तारो ॥ जाकारनपठयेतुममाधौसोसोचहुमनमाहीं। कितकबीचबिरहपरमारथजांनतहोकिधौंनाहीं ॥ परमचतुरनिजदासस्यामकेसंततनिकटरहतहो । जलबूडतअवलंबफेनुकौंफिरिफिरिकहागहतहो ॥ वहअतिललितमनोहरआननकौंनैंजतनाविसारौं॥ जोगजुगतअरुमुकतिबापुरीवामुरलीपरवारौं ॥ जिंहिंउरवसतस्यामघनसुंदरतहांनिर्गुनक्यौंआवैं॥ सूरदाससोईभजनवहांउंजाहिदूसरोभावैं ॥ ११ ॥ पुनःपद ॥ मधुकरकौंनमनायोमानैं॥ अबिनासीअतिअगमअगोचरकहाप्रीतकीजानैं ॥ सिषवहुजायसमाधिजोगमतजेसबलोगसयानैं । हमअपनैंअैसैंब्रजबासिहैंबिरहबायबौरानैं ॥ जागतसोवतसुप्रओसनिसरहिहैंरूपरवानैं ॥ बालकुमारकिसोरलीलासुषसिंधुसुधासौंसानैं ॥ जिनकैंतनमनप्रानसूरहरिमृदुमुसकानिबिकानैं । परीजुबूंदअलपपयनिधिमैंबहुरिनकोऊपहिचानैं ॥१२॥

अथ गोपीनप्रति उद्धव बचन ॥

॥ पद ॥ ग्यांनबिनांहोयसचुनांही ॥ घटघटव्यापकदारुअग्निज्यौंसदाबसैंउरमांही ॥ सगुनछाडिनिर्गुनकौंघ्यावोयौंजुकरोकिन

नांही ॥ तत्वभजैंऐसीन्हैंजैहोज्यौंतनकीपरछांही ॥ देषोयातैंसबस चुपावतजेअबलौंअवगांहीं ॥ सूरदासनिर्गुनबिनकैसैंउरमैंऔर समांही ॥ १३ ॥

अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौनिर्गुनकैसैंध्यावैं ॥ जोध्यावैंतोकहाकहिध्यावैंरू परेषबिनध्यानन्नआवैं ॥ अगमअगाधिअगोचरकहियतअबिना सीकोपावैं । नागरस्वादनआवैंजोकोऊबहुतउबासीषावैं ॥ १४ ॥ पुनपद ॥ ऊधौजलमांगतजिनदेउसयानी ॥ घटहीमैंगंगाघटहीमैं जमुनांभरिभरिपीवोपांनी॥ स्वादनआवततुसफाकतज्यौंनिर्गुनबात बषानी॥नैननिप्यासमिटैंजबमिलिहैंनागरसुखसागरदधिदानी ५१

अथ गोपीनप्रति ऊधौ बचन ॥

पद ॥ जबलगहृदैंग्याननहिंआवैं ॥ तोलौंकोटिकजतनकरोको ऊबिनबिबेकनहिंपावैं॥बिनविचारसबहैंसुपनौंसोमैंदेष्योसबजोय ॥ नानादारूसूरज्यौंपावकप्रगटमथेतैंहोय ॥ १६ ॥

अथ ऊधौप्रति गोपीनबचन पद ॥

नांहिनरहीमनमैंठौर ॥ नंदनंदबिनऊंचतैंकैसैंआनियेउरऔर ॥ औसजागतचलतचितवतसुपनसोवतराति ॥ हृदैतैंन्हैंमदनमूरति छिननइतउतजात ॥ कहतकथाअनेकउधौलोकलोभादिपाय ॥ क हाकरैंहितप्रेमपूरनवटनिसिंधुसमाय ॥ स्यामगातसरोजआननल लितमधुरसहास । सूरऐसेरूपकौंयेमरतलोचनप्यास ॥ १७॥ पुन

पद ॥ ऊधौचरचाकरीनाहिंजाय ॥ तुमनजानतप्रेमपथहमकहत जियसकुचाय ॥ कथाअकथसनेहकीबिनउरनआवतओर ॥ बेदस मृतउपनिषदकौरहीनाहिनठौर॥ मौनहीमैंकहनताकीसुनतश्रोतानै न । सोवनागरतुमनजानतकहिनआवतबैन ॥ १८ ॥

अथ गोपीप्रति उद्धव बचन पद ॥

मानहुजोगकह्योहैमाधौ ॥ करिबिचारअपनेजियसाधौ ॥ इला पिंगलासुषमननारी ॥ सुन्यधारनाबिनआकारी ॥ ब्रह्मभावकरि सबकौंजानौं ॥ सूरपरमतत्वयहपाहिचानौं ॥ १९ ॥

अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

पद॥ सबपोटेमधुबनकेलोग ॥ जिनकेसंगस्यामसुंदरपियसीषेहैं उपजोग॥भलीकरीऊधौंब्रजआयेदुषतिनकौंलैंजोग॥ आसनध्यान नैंनमूंदेतैंकैसैंजातबिजोग ॥ तुमहिंउनहिंयहभलीबनिआईकुवज्या सौंसंजोग ॥ सूरसुबैदकहालैकीजैकहैंनजांनैरोग ॥ २० ॥ पुनः पद ॥ ब्रजजनसकलस्यामव्रतधारी ॥ बिनांगुपालनहिंआंनउ पासनअनतकहूंबिभचारी ॥ जोगपोटसिरभारबहनकौंकतब्रजमां झउतारी॥इतनिकदूरिजाहुचलिकासीउहांबिकातहैंभारी॥अैसेग्यान हिंकौंनछुवतहैंमंडलीअनन्यहमारी ॥ जोप्रभुवहरसरीतउपदेशीसो क्यौंजातबिसारी॥ इहांमुकतिकोऊनहिंपरसतजदपिपदारथचारी॥ सूरदासप्रभुजुवतिबृंदबरदरसनकीजुभिपारी ॥ २१ ॥

अथ गोपीप्रति ऊधौ बचन पद ॥

गोपीपद्मासनचितलावो ॥ नैंनमूंदिअंतरगतिध्यावो ॥ हृदयक

मलमयजोतिप्रकासी ॥ सोअच्युतअवगतअविनासी ॥ इहिंउपायविरहातनमेटो ॥ सूरजोगजगदीसहिमेटो ॥ २२ ॥

अथ ऊधौप्रति गोपीवचन ॥

पद॥ऊधौमुपहिंआवतगारि । कहाकरौंनंदनंदकीकारिकांनिदेतहौंटारि ॥ वहमनोहरमाधुरीलपिमंदमृदुमुसिक्यात । हलैंफिरिसुधीरहीकैसैंजोबानिर्गुनवात ॥ जानियतहैंयहतिहारैंकहनहींकेनैन ॥ कलपवीतैंपलपरनमैंहोतहांक्यौंचैन ॥ नवलनागररूपनिधिमेंव्हैरह्योजोलीन । मुरस्थलमैंडारियेक्यौंकहेतैंमनमीन ॥ २३ ॥ पुनः पद ॥ ऊधौतुमनजानतप्रेम ॥ वसोमथुराराजधानीतहांव्यापकनेम ॥ कथननिर्गुनग्यानसूकोराजनीतप्रवंघ ॥ प्रीतनैंनानिरूपरीझनिकहाजानैंअंध ॥ इहांब्रजमैंवृथाकींजैंजोगनीरसपाठ ॥ छांडिनटनागरमधुरफलकौंनचावैंकाठ ॥ २४ ॥

अथ गोपीनप्रतिऊधौवचन ॥

पद ॥ तुमअपनैंघटहीमैंदेखो ॥ विलपतिकहाबावरीसीव्हैंवाहिरढूंढतयहकहालेषो॥ सर्वब्रह्मकौंनहींदूसरोयहसवहीचितमैंअवरेपो॥ सूरदासजदुनाथमिलनकोछांडिदेहुहियपरमपरेखो ॥ २५ ॥

अथ ऊधौप्रतिगोपीवचन ॥

पद ॥ परेखोकौंनबातकोकीजैं ॥ नांहरिजातनपांतिहमारीकतहींमांनिदुखलीजैं ॥ बासदेवजादूकुलदीपकवंदीजनब्रह्मावैं ॥ नंदनंदनगोपीजनवल्लभनांहिनकान्हकहावैं ॥ नांहिनमोरचंद्रिकामा

थैंनांहिनउरबनमाल ॥ सोभितहैंभूपनिकेभूपनसुंदरश्यामतमाल॥ बिसरिगयेगृहबनकोनांतोऔरहमारोरंग ॥ सूरदासप्रभुगईसगाई वामुरलीकेसंग ॥ २६ ॥ पुनःपद ॥ हाहाऊधौकहियैंबात ॥ सुरमुरलीसौंमोहीसबहमअबसुरसंखबजात ॥ रंगरसतजिरनरसबसभये कछुमृदुकर्कसलखिजात ॥ सहिनसकेसरनैंनहमारेक्यौंसरसारसुहात ॥ पीतझगाकोलगतभारतबकवचकसतक्यौंगात ॥ मूंठिगुलालगतअबलाकरश्रवनगदाडरपात ॥ सुनिसुनिहमयहसहिनसकतहैंहोतदृगनिजलपात ॥ जगतकहतहमैंभईबावरीप्रीतिरीतिकेनांत ॥ मुरलीमुकटलटकव्हैंछबिकीहियतैंनांहिनजात ॥ राजसिंघप्रभुकरचोकहायहधरीदयानहिंगात ॥ २७ ॥

अथ गोपीप्रतिऊधौबचन ॥

पद ॥ जानिकैंबावरीजिनहोहु ॥ तत्वभजैंऐसीव्हैंजैहोज्यौंपारसपरसैंलोहु ॥ मेरेबचनसत्यकैमांनौंछाडोसबसौंमोहु ॥ तोलौंयहसबनीकीचुपरींजोलौंअस्तुतिद्रोहु ॥ अरेअरेमधुपबातयहऐसीक्यौंकहिआवैंतोहिं ॥ सूरसुबसतीछाडिघरबसेहमहिबतावतखोह ॥ २८ ॥

अथ ऊधवप्रतिगोपीबचन ॥

पद॥ ऊधौअपनौंजतनकरो ॥ हितकीकहैंअहितलागतहैंइहांबेकाजपरो ॥ जायकरोउपचारआपनौंहौंजुदेतासिखजीकी ॥ कछूकहतकछुवैंकहिआवतधुनिदेखतनाहिनीकी॥ साधुहोयताहिऊतरदीजैं तुह्मसौंमानीहारि ॥ यहजियजानिस्यामसुंदरतुमदीनौंढिगतैंटारि ॥ मथुरादौरिगहोइनपायनबाढचोहैतनरोग ॥ सूरसुबैदबेगिकिनहेरोभ

येअरघजलजोग ॥ २९ ॥ पुनःपद ॥ नूह्यांकहतकौनकीबातैं ॥ सुनिऊधौहमसमझतनाहींफिरिबूझतहैंतातैं ॥ कोनृपभयोकंसकिहिंमारयोकोवसुदेवसुकाहि ॥ ह्यांजसुदासुतपरममनोहरजीजतहैंमुखचाहि ॥ दिनप्रतिजातधेनुबनचारनगोपसखनकेसंग॥ बासरगतरजनीमुखआगमकरतहृगनिगतिपंग ॥ कोपूरनव्यापकअविनासीकोविधिवेदअपार ॥ सूरवृथावकबादकरतकतह्यांव्रजनंदकुमार ॥ ३०॥

अथ गोपीप्रति ऊधौबचन पद ॥

॥ पद ॥ अबतुममांनलेहुब्रजबाल । हौंजुकरतउपदेसतत्वकोपचतभयोबहुकाल॥ छाडिहुमायामोहहियेकोविरहाविषमविसाल । सूरदासनिर्गुनकौंध्यावतमिटिहैंहितजंजाल ॥ ३१ ॥

अथ ऊधौप्रति गोपी बचन॥

पद॥ऊधौवृथाकरतबकवादि॥हमजान्यौंतुमजानतनांहीरूपसुधासुषस्वादि ॥ सकलब्रजमोहनमईहैंगोपअरुगोपीगाय ॥ तिनैंतोविनघनस्यामसुंदरकैसैंऔरसुहाय ॥हमारेतनकारिषंडपंडज्यौंदेहुभूमिमैंडारि ॥ न्यारेन्यारेलपटिजांहिलषिनागरनंदकुंवार ॥ ३२ ॥ पुनःपद॥ ऊधौयहतनजोकोऊफेरिबनावैं ॥ तऊनंदनंदनताजिप्यारेकौंऔरुनमनमैंआवैं ॥ जोयातनकीतुचाकाढिकैंलेकरिदुंदभिसजई ॥ मधुरउतंगसब्दसुरनिकसैंलाललालहीबजई ॥ छूटैंप्रानमिलैंतनमाटीद्रुमलागैंतिंहिंठाम ॥ कहअबसूरफूलफलसापालेतउठैं हरिनाम ॥ ३३ ॥

अथ कबिबचन ॥

॥ दोहा ॥ ऊधौमनपलटयोनिरषि, गोपीप्रेमउमंग। बिनलागयोकबहुनसुन्यौ, प्रेमभक्तिकोरंग ॥ ३४ ॥

अथ गोपीप्रति ऊधौबचन ॥

॥ पद ॥ अबअतिपंगभयोमनमेरो ॥ पठयोहोनिर्गुनउपदेसनभयोसगुनकोचेरो॥ जोकछुकह्योग्यानगाथासोतुमहिनपरसतनेरो॥ मैंसठबादकियोसोयौंहींकह्योसुन्यौउनकेरो ॥ मैंजान्यौनहिप्रेमतैंपलभरिह्यांपटमासबसेरो॥ सूरस्यामपैआग्यादीजैबोरयोजोगकोबेरो

अथ कबिबचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौबारबारसिरनावत। गदगदकंठपुलकिबिव्हलमनकरपायनसौंछूवावत॥ धन्यगोपीतुमरंगीस्यामरंगतज्योसकलचितचैन। गुल्मलताव्हैंरहियेइहिंठांतनरंजितब्रजरैन ॥ प्रेमभक्तिरससुधापियोमैंअबचितअनतनजाय॥ तुममेरेगुरुकह्योछिमहुसबपरततह्यारैंपाय॥ यौंकहिऊधौउठेगवनकौंफेरसकतनहिंपीठ॥ नागरमनयहांग़येराषिकैंतनपहुचायोनीठ ॥ ३६ ॥

अथ ऊधौमधुपुरी आगमानि श्रीकृष्णप्राति बचन ॥

॥ पद ॥ माधौजूयहब्रजकोव्यौहार। मेरोकह्योपवनकोभुसभयोगावतनंदकुंवार ॥ एकग्वालगोसुतव्हैंरैंगतएकलकुटिकरलेत॥ एकमंडलीकरिबैठींरातिछाकबांटिकैंदेत ॥ एकग्वालनटवतसबलीलाएककर्मगुनगावत ॥ अनेकभांतिकरिमैंसमुझाईनैंकनउरमैंआ

वत ॥ निसवासरएहीटकब्रजमैंदिनदिननौतनप्रीत ॥ सूरग्यानसब फीकोव्हैंगयोदेषतवहरसरीत ॥ ३७ ॥ पुनःपद ॥ मैंसमुझाईकारि अपनौंसो ॥ तदपिउन्हैंप्रतीतनउपजीलग्योसबैंसुपनौंसो ॥ कहीतु ह्मारीसबैंसुनाईऔरकछूअपनी ॥ सुनतबचनममगयोंध्रितमनऔरउ ठीकपनी ॥ कोऊकहैबनायपचासकउनकैंबातजुएक ॥ धन्यसुब्रज कीनारिजुतिनकैंबिनदरसनकछुऔरनटेक ॥ देषनउनकोप्रेमइहाँ कीधरीरहीसबऊल्यौं ॥ सूरस्यामहौंरह्योठग्योसोज्यौंमृगचोका मूल्यौं ॥ ३८ ॥

अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौइतेदिवसक्यौंलाये ॥ पठयेहुतेजोगकहिआवनतु मषटमासबिताये ॥ तुमबकताव्हैंबिरमिरहेकिधौंउनकछुकहिबिर माये ॥ सूरस्यामउनश्रोताकरिमोहिसबैंग्यानबिसराये ॥ ३९ ॥

अथ श्रीकृष्णप्रति ऊधौ बचन ॥

॥ पद ॥ उनमैंपांचदिवसजोबासिये ॥ नाथतुह्मारीसौंजीउपज तफेरिअपनपौकासिये ॥ वहलीलासबब्रजगोपिनकीदेषतहीबनि आवैं ॥ मोकौंबहुरिकहांवैसोसुषबड़भागीसोपावैं ॥ मनसाबचकर मनाकहियतुनांहिकछूअबराषी ॥ सूरकाढिडारयोब्रजतैंज्यौंदूधमां झतैंमांषी ॥ ४० ॥ पुनःपद ॥ होहरिअहुरिदावदैहारयो ॥ आग्या भंगहोयक्यौंमोपैंबचनतुह्मारोपारयो ॥ हारिमांनिउठिचल्योदीनव्हैं मांनिअपनपोकैद ॥ जांनिलेहुइतनेमैंमाधौकहाकरैंनीमनकोबैद ॥ उत्तरकोउत्तरनहिंआवततबउनहींमिलिजात ॥ मेरीकितकबातब्रह्मा

हूअद्धवचनमैंमात ॥ अपनीबातसमझिमनहीमनचल्योबसीठीतोरि सूरएकहूअंगनकाचीमैंदेषीटकटोरि ॥ ४१ ॥

अथ ऊधौप्राति श्रीकृष्णबचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौतुमसेसषासुजान ॥ क्यौंउपदेसलग्योनाहिउन कौंगाथागूढविधान ॥ तुमजुग्यानऔतारप्रगटजगवेअबलाअन जान ॥ सूरदासवहिरंगरंगेतृह्मदीसतबिसरचोग्यान ॥ ४२ ॥

अथ श्रीकृष्ण प्राति उद्धवबचन ॥

॥ पद ॥ माधौसुनहुब्रजकोप्रेम ॥ वूझिमैंषटमासदेष्योगोपिक निकोनेम॥हृदैतैंनहिंटरतकबहूस्यामकामबिजेत ॥ आंसूसलिलप्रवा हमांनौंअर्घनैंनजुदेत ॥ देहगेहसमेतअर्पनकमललोचनध्यान॥ सूरव हरसभजनदेषतगयोउडिसबग्यान ॥ ४३ ॥ पुनःपद ॥ नीकेंसुन हुस्यामसुजान ॥ कौंनमानैंबातनीरससकलब्रजरसपान ॥ तुमजुहे विधिबेदबक्ताप्रगटश्रीभगवान ॥ उहिमनोहरमंडलीमैंक्यौंनराष्यो ग्यान ॥ कबहुतुमकौलैनचायेजोरिपानानिपान॥ कबहुछ्वायोमुकट चरननिकियोउतजबमान ॥ कबहुवैंनीगूंथिनिजकरपगमहावरसा न । कबहुठाढेजोरिकरकारिदीनाचितसनमान॥ प्रेमआगैंनेमकीकछु चलतनांहिनिदान ॥ रनौंव्हैंछूटेवहांक्यौंनवलनागरप्रान ॥ ४४ ॥

अथ ऊधौप्राति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौअबतुमहमरेलायक ॥ रूषीबातनकहतहोभीजेक हतप्रेमकेबायक ॥ मोअनुरागरंगरैंनीब्रजरांगिआयेमनरंग ॥ सूरस षाप्रियमेरोतेरोअबैंबन्यौंहैसंग ॥ ४५ ॥

अथ कृष्णप्रति ऊधौ बचन ॥

॥ पद ॥ कहांलौंकहियेब्रजकीबात ॥ सुनहुस्यामतुमबिनउनलोगनिजैसैंद्यौसबिहात॥ जाकौंआवतदेषतहैंमिलिबूझतहैंकुसलात॥ चलनदेतप्रेमउरआतुरफिरिफिरिपगलपटात॥ गायग्वालगोपीगोसुतसबबिलषिबदनकृसगात ॥ परमदीनजनुसिसिरहेमहतअंबुजगनबिनपात॥पिकचातिकबनबसननपावतबायसबलहिनषात॥ सूरदाससंदेसनकैंडरिपथकनवहमगजात ॥ ४६ ॥ पुनःपद ॥ ब्रजकीजुवतिअतितनछीन ॥ रहतइकटकचित्तचातकस्यामघनतनलीन ॥ नांहिपलटतबसनभूषनदृगनिदीपकतात॥ बिलषिबदनमलीनतनज्यौंतरुनिबिनजलजात ॥ कहतज्यौंहौंकह्योश्रुतिमतपच्योकरिउपदेस ॥ धरतनलनींबूंदज्यौंजलबचनहियेप्रवेस॥ वहैंमुरलीमोरचंद्रिकापीतपटबनमाल ॥ रहीवहछबिअंगअंगनिलतालपटितमाल ॥ दिवसज्यौंबितवतसकलमिलिकहतगुनिबलवीर ॥ रैंनउडपतिनिराषितलफतमीनज्यौंजलतीर ॥ अहोकरुनासिंधुस्वामीहोहुबेगसहाय ॥ सूरप्रभुअबकैंदरसदैंमरतलेहुजिवाय ॥ ४७ ॥

अथ ऊद्धवप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौसबब्रजभूलतनांहीं ॥ हंससुताकूलनिकीसोभाअरुकुंजनिकीछांहीं ॥ वहसुरभीगउबच्छदोंहनींपरकदुहांवनजांहीं ॥ ग्वालबालमिलिकरतकुलाहलनृत्ततगहिगहिबांहीं॥लीलाबहुतभांतिहमकीनीजसुमतिनंदनिबांही । जवजवसुरतिहोतवासुषकीमनउम

गतिमनमांहीं ॥ यहद्वारिकारचीकनककीमनिमुक्तावलिजांहीं ॥ सूरदासप्रभुसुमरिसुमरिसुषयौंकहिकहिपछितांहीं ॥ ४८ ॥

अथ श्रीकृष्णप्रति उद्धव बचन ॥

॥पद॥ चितदैंसुनौंस्यामप्रवीन ॥ हरितुह्मारेबिरहराधामैंजुदेषी पीन ॥ कहतजबहिसंदेससुंदरगमनमोतनकीन ॥ छूटिछुद्रावलि अरुझिपगधरानिधुकिबलहीन॥ उलटितबहिसंभारिभटलौंपरमसाह सकीन ॥ कहतबैंननबोलआवैंहृदैंपरिअसुभीन ॥ नैंनइकटकसुर तबिनज्यौंग्रस्तआपददीन ॥ सूरप्रभुकरुनाकरोयौंजीवतआसाधी न ॥ ४९ ॥ पुन पद ॥ बातैंबूझतयौंबहरावत॥ सुनहुस्यामवैंसषी सयानीपावसरितुराधेनजनावत ॥ घनगरजतवहकहतकुसलमति गरजतगुहासिंघसमुदावत ॥ नहिंदामिनद्रुमदवासैलपरिबावउलटि तातीझरिआवत ॥ दादुरमोरपपीहाबोलतग्वालमंडलीषगनिपिजा वत ॥ कबहुकप्रगटिपपीहाबोलततबामिलिकरतारीजुबजावत ॥ नहिनभवृष्टिझरतझरनाधरपरिपरिबूंदउछटिइतआवत ॥ सूरदासप्र भुकहौंकहांलगितुह्मारेदरसबिनांदुषपावत ॥ ५० ॥

अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ मोहिगोपीजननहिंबिसरत ॥ उनकीप्रीतिरीतिअंतर कीतनकनपुषतैंनिसरत ॥ सबहिचतुरसबआनंदमूरतिसबतनप्रेम अछेह॥तिनमैंश्रीराधाकेमेरेएकप्रानद्वैदेह ॥ जदपिबिभौह्यांअमराव तिसोरह्योसकलसुषछाय ॥ तद्यपिसुधिआवतब्रजकीतबसुधिहूकी

सुधिजाय॥ऊधौपरमप्रवीनसषाप्रियतुमविनकासौंकहियैं ॥ नागरी
दासदुसहमनहीमनविरहपीरानितसहियैं ॥ ५१ ॥

अथ कवि वचन ॥

॥ पद ॥ जद्यपिपाईहैंरजधानी ॥ बारवारवृंदावनकीहरिकाहि
कहिउठतकहानी ॥ जद्यपिकनकजटितमंदिरमैंरचीरुचिरकमनी ॥
ज्यौंसुपपत्रविछायराधिकासुपसोतेअवनी ॥ जद्यपिभूपनवहुतभां
तियेमर्कतलालमनी ॥ सूरदासवागुंजपुंजकीसोभापैनवनी ॥ ५२॥

अथ कविप्रार्थना कवि बचन ॥

॥ पद ॥ हमारैंमुरलीवारोस्याम ॥ विनमुरलीवनमालचंद्रिका
नहिंपहिचांनतनाम ॥ गोपरूपवृंदावनचारीव्रजजनपूरनकाम ॥
याहीसौंहितचित्तवढोनितदिनदिनपलछिनजाम ॥ नंदगांवगोवर्द्ध
नगोकुलबरसांनौंविश्राम ॥ नागरीदासद्वारिकामथुराइनसौंकैसो
काम ॥ ५३ ॥ पुनःपद ॥ जोकोऊव्रजलीलारसचापैं ॥ ताकोफि
रिकहुंऔरकथामैंकवहुनमनअभिलापैं ॥ षटरसछप्पनभोगनभाव
तजोव्रजगोरसपावैं ॥ हितव्रजरसिकउपासिकसौंकरिआंनसौंमनन
मिलावैं ॥ नागरियाव्रजमहिमारसनातनकहुजातकहीनां ॥ विनरस
रूपाभक्तिजक्तज्यौंमुरधरजेठमहीनां ॥ ५४ ॥ पुनःपद ॥ हमव्र
जसुंषींव्रजकेजीव । प्रानतनमननैंनसबसुराधिकाकोपीव ॥ कहां
आनंदमुक्तिमैंयेकहांकेलिविधान ॥ कहांललितनिकुंजलीलामुर
लिकाकलगान ॥ कहांपूरनसरदरजनीजौंह्नजगमगजोत ॥ कहां
नूपुरबीनधुनिमिलिरासमंडलहोत ॥ कहांपांतिकदंबकीझुकिरही

जमुनाबीच ॥ कहांरंगबिहारफागुनमचतकेसारिकीच ॥ कहां गहबरबिपनमैंतियरोकिबोमिसदान ॥ कहांगोधनमध्यमोहनचिकुर रजलपटानि ॥ कहांलंगरसपासोहनकहांउनकोहास ॥ कहांगोरस छाछिटैंटीछाकबिपनबिलास ॥ औरठौरनकहूंयेसुपबिनांब्रजइहिं धाम ॥ दासनागरघोषतजिचहैंमोपसौंबेकाम ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ प्रभुतासोभास्वादिबिन, मननलगतअभिराम ॥ करनफूलमाणिक नकके, मधुकरकेकिहिंकाम ॥ ५६ ॥ रसलीलाबैकुंठकी, सुनीन नित्यनवेलि ॥ तीनलोकमैंगाइयै, नउतनहींब्रजकेलि ॥ ५७ ॥ मारमापतिसंखकौं, वहुधाकोउबरनैंन ॥ तीनलोकमैंगाइयै ॥ गोपीमोहनबैन ॥ ५८ ॥ लखमीदयोभ्रमायजग, बोरतलषमीभोग ॥ गोपीजनगुनगायकैं, तरतजुकलिकेलोग ॥ ५९ ॥ स्यामहिंसब गोपीप्रिये, गोपिनकौंप्रियस्याम ॥ सोनागरियाहियबसो, निसदिनपलछिनजाम ॥ ६० ॥ संमतअठारैसैंसुकल, पक्षजेठशुभमास ॥ गोपीप्रेमप्रकासयह, कियोनागरीदास ॥ ६१ ॥ इतिश्रीगोपीप्रेम प्रकासग्रंथसंपूर्णम् ॥

अथ पद प्रसंगमाला लिख्यते ॥

श्रीरसिकरायमुरलीधरनजयति ॥ प्रथमपूर्वसाक्षी ॥ श्लोक ॥ नाहंसवामिबैकुंठेयोगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगायंते तत्रतिष्ठामिनारद ॥ १ ॥ अर्थ—श्रीकृष्ण भक्तिवत्सल तिनकौं केवल भक्तिप्रिय, सो भक्तिनवधा, तामैंमुख्य श्रवण अरु कीर्त्तन सो एक कीर्तनमैं है धर्म, श्रवणहू अरु कीर्त-

नहू तातैं कीर्तनसार, कीर्तनहूमें गान सहित कीर्तन सो यह यातैं अधिक जो चित्तकी एकाग्रता करि उद्दीपन करैं हैं, व्रजवधूनके चित्त गानहीसौं आकर्षन करि बुलाई, गानहीसौं आकर्षन करि नारद श्रीकृष्णकौं हृदयमें बुलावतहैं, अरु शिवके गानहीसौं रीझि हरि जलव्है द्रवगये, ऐसे गान प्रिय स्यामसुजान तिनकी लीला पद छंदबंध रचना करिकैं वैष्णव गावत आयेहैं, तिनके कछूक पदप्रसंग लिषौंहौं, श्रीजयदेवजी गीतगोविंदकी अष्टपदी बनावतहुते, तामैं यहधरयो चाहतहेजु ॥ स्मरगरलषंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ॥ फिर चित्तमैं आईजु, भगवान बिषैं यहकैसैं संभवै, याही चिंताकरत जयदेवजी तो देहकृत्यकौंगये, अरु पीछैंतैं ठाकुर आइकैं श्रीहस्तकमलसौं वहीपदलिषगयेजु ॥ स्मरगरलषंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं॥ सोवह यहअष्टपदी ॥ आसावरीरागे ॥ अठताले ॥ वदसियदिकिंचिदपिदंतरुचिकौमुदी हरतिदरतिमरमतिघोरं ॥ स्फुरदधरसीधवेतवबदनचंद्रमा रोचयतिलोचनचकोरं ॥ १ ॥ प्रियेचारुशीले प्रियेचारुशीले मुंचमयिमानमनिदानं ॥ सपदिमदनानलोदहतिममममानसं देहिमुखकमलमधुपानं ॥ सत्यमेवासियदि सुदतिमयिकोपिनी देहिखरनखरशरघातं घटयभुजबंदनं रचयरदसंडनं येनवाभवतिसुखजातं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ २ ॥ त्वमसिममभूषणं त्वमसिममजीवनं त्वमसिममभवजलधिरत्नं ॥ भवतुभवतीहमयि सततमनुरोधिनी तत्रममहृदयमतियत्नं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ३ ॥ नीलनलिनाभमपि तन्वितलोचनं धारयतिकोक-

नदरूपं ॥ कुसमशरबाण भावेनयदिरंजयसि कृष्णमिदमेतदनु-
रूपं। प्रियेचारुशीले ॥४॥ स्फुरतकुचकुंभयो रुपरिमणिमंजरी
रंजयतुतवहृदयदेशं ॥ रसतुरसनापितव वनजघनमंडले घोषय-
तुमनमथदिनेशं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ५ ॥ स्थलकमलगंजनं
ममहृदयरंजनं जनितरतिरंगपरभागं ॥ भणममृणबाणिकर वाणि-
पदपंकजं सरसलसदलक्तकसुरागं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ६ ॥
स्मरगरलखंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ॥ ज्वलतिम-
यिदारुणो मदनकदनानलो हरतुतदुपहितविकारं ॥ प्रियेचारुशी
ले ॥७॥ इतिचटुलचाटुपटुचारुमधुबैरिणो राधिकामधिबचनजातं॥
जयतिजयदेवकविभारतीभूषितं मानिनीजनजनितशातं ॥ प्रिये-
चारुशीले ॥८॥१ ॥ पुन ॥ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीजयदेवजी एक-
समैं एकराजापैंरहे उनकी स्त्री पदमावतीजी सोरानीपैंरहैं सोरानी
निंदक बुद्धिहीन हुती, सो पदमावतीजीकी अरु जयदेवजीकी
प्रीत परिछाके निमत रानी झूठबनाइ कह्यो, पदमावतीजीसूंजु
राजा सिंघकी सिकार गयेहैं, सो जयदेवजीनें सिंघनें मारे,
यहकहि एकपाग आंनि धरी, ताहींछिन सुनत पदमावतीजीनैं
प्रान छाडिदये,रानीको मुह सूकिगयो,इतनेमैं राजा अरु जयदेवजी
आये घरआये, यहबृत्तांत सुनि राजानैंतो बहौत पेदकियो, अरु ज
यदेवजी आप पदमावतीजीके मृतक सरीरकैं ढिग गीतगोविंदकी
अष्टपदी गावतभये, तबताहींछिन पदमावतीजी सरजीवत व्है सं
गगावनलागे, सो वह इत्यादि अष्टपदी ॥ देसीबैराडीरागे ॥ बह-
तिमलयसमीरे मदनमुपनिधाय ॥ स्फुटति कुसमनिकरे बिरहिहृ

दयदलनाय ॥ १ ॥ सखिसीदतितवविरहेवनमाली ॥ दहतिशिशि रमयूखे मरणमनुकरोति ॥ पततिमदनविशिखे विलपतिविकलक रोति ॥२॥ ध्वनितमधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति ॥ मनसिवलितवि रहे निशिनिशिरुजमुपयाति ॥ ३ ॥ वसतिविपिनविताने त्यजति ललितमपितवनाम ॥ लुठतिधरणिशयने वहुविलपतितवनाम ॥४॥ भणतिकविजयदेव इतिविरहविलसतेन ॥ मनसिरभसविभवे हरि रुदयतुसुकृतेन ॥ ५ ॥ इति ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ श्रीजयदेवजी गीतगोविंदवनायो ॥ तामैं अष्टपदी वनावतहे सो जाअष्टपदीमैं येअछर आयेजु ॥ पततिपतत्रेविचलतिपत्रे॥तहां जयदेवजी इनअछरनके अरथपर रीझि प्रेमानंदमैं मगन भये, वाहीछिन इनहीं अछरनि अरु जयदेवजीपर रीझि, श्रीराधामा धौ तवही तहां वनमैं आय दरसन दीनौं, अरु आग्यादई, जो ए अष्टपदी कोऊगावैंगो तवतहां मैं आयसुनौंगो, सो औरकोऊ गावैं ए अष्टपदी गावैं तव कैतो मंदिरमैं गावैं कैएकांत स्थल वैठिगा वैं, अरु एक मालीकी लरकिनी भोरी तानैं यह इतनौंहीं सीपि लियोजु ॥ धीरसमीरे जमुनातीरे वसतवने वनमाली ॥ सो इतनौं वैंगनकीबारीमैं गावत डोलैं, ताके संग संग ठाकुर फिरे, ठाकुरके जामाको दावन वैंगनके कांटेनमैं उरझि टूकटूकभयो, अरु ठाकरहू रीझि टूक टूक भये, सो जहां श्रीमंदिरमैं श्रीजगन्नाथ-देव ठाकुरको विग्रह सरूपहो, तहां जामांको दावन फट्यो देष्यो, अरु वैंगनके कांटा अरुझेदेषे, तव सवनि भीतरिया आदि प्रार्थ-नांकरी जु, महाराज यहकहा व्रतांतहैं, तव ठाकुर सुपनैंमें सवही

कही, सो सुनि वहांको पृथ्वीपतिहो तानैं दुहाईफेरी, जोकोऊ चलत फिरत अष्टपदी न गावैं जोकोऊ गावैं सो मंदिरकी ठौर तथा औरनीकी ठौर गावैं, जा अष्टपदीपर ठाकुर रीझि मालीकी लरकनीके संग संग फिरे, अरु पततिपतत्रे यह अछर धरत रीझि श्रीठाकुर जयदेवजीकौं दरसनदीनौं, जो वह यह अष्टपदी॥ रतिसुषसारे गतिमभिसारे मदनमनोहरबेषं ॥ नकुरुनितंबिनि गवनविलंबन मनुसरतंहृदयेशं॥१॥धीरसमीरे यमुनातीरे वसतबनेबनमाली॥गोपीपीन पयोधर मर्दन चंचलकर युगशाली॥नामसमेतं कृत संकेतं वादयतेमृदुबेणुं॥बहुमनुते तनुते तनुसंगति पवनचलतिमपिरेणुं॥२॥पतितिपतत्रे बिचलतिपत्रे शंकितभवदुपयानं॥रचयतिशयनं सचकितनयनं पश्यतितवपंथानं॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यजमंजीरं रिपुमिवकेलिसुलोलं॥ चलिसखिकुंजं सतिमिरपुंजं शीलयनीलनिचोलं ॥ ४ ॥ उरसिमुरारे रुपहितहारेघनइव तरलवलाके ॥ तडिदिवपीते रतिबिपरीते राजतिसुकृत बिपाके॥ ५ ॥ बिगलित बसनं परिहृतरसनं घटयजघनमपिधानं ॥ किशलयशयने पंकजनयने निधिमिवहर्षनिधानं॥ ६ ॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानी मियमपियातिबिरामम् ॥ कुरुममबचनं सत्वररचनं पूरयमधुरिपु कामं ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयं ॥ प्रमुदितहृदये हरिमतिसदयं नमतसुकृतकमनीयं ॥ ८ ॥ या अष्टपदीमैं जयदेवजीकौं श्रीठाकुर दरसन दियो, सो यह प्रसंग प्राचीन व्यासजी सुनि रीझि एक पद बनायो, सो वह यह पद है ॥ जयदेवसेरसिकनकोईजिनलीलारसगायो ॥ जाकीजुगतिअ

पंडितमंडितसवहीकेमनभायो ॥ १ ॥ विविधविलासकलाकविमं डनजीवनिकेभागनिआयो ॥ पततिपतत्रेमुपनिसरतहीराधामाधव कोदरसनपायो ॥ २ ॥ वृंदावनरसमायावैभवपहिलैंसवैंसुनायो ॥ तापीछैंऔरनकलुपायोसोरससत्वनिचपायो ॥ ३ ॥ पद्मावतिहरिच रननचारीजिहिंगोविंदरिझायो ॥ व्यासनआसकरीकाहूकीकुंज निस्यामवुलायो ॥ ४ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीमद्वल्लभाचार्यजीसौं काहू सेवकनैं कहीजु, राजश्री वृंदाव नमें एक वैरागी नांव परमानंददास कीरतन आछ्यो करैहै, राजि सुनियैं, तव श्रीआचार्य्यजी गोप्यपधारिकैं परमानंददासके कीरतनसुने, तहां बिरहको कीरतन सुनिकैं आवेस स्थित भये, उहां तैं सेवक उठाइ लैंआये, सात आठ दिनलौं प्रसाद लैवेकी देहकी कछु सुधि रही नहीं, अंतरंगरहे, सो वह यह पद ॥ हरितेरीलीलाकीसुधिआवैं ॥ कंवलनैंनमोहनमूरतिकेमनमनाचित्र वनावैं ॥ कवहुकनिविडतिमिरआलिंगत कवहुकपिकसुरगावैं ॥ कवहुकसंभ्रमक्वासिक्वासिकहिसंगहिलिमिलिउठिधावैं ॥ कवहुक नैनमूंदिउरअंतरिमनिमालपहिरावैं ॥ मृदुमुसकानिबंकअविलोक निचालछवीलीभावैं ॥ एकवारजाहिमिलहिकृपाकरिसोकैसैंविस रावैं ॥ परमानंदप्रभुस्यामध्यानधरिऐसैंविरहगमावैं ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ नामदेवजूकी बाल अवस्थासो इनको गृहमैं चितलगैं नांहीं, लरि कांनहूके संग पेलैं नांहीं, जोपेलैं तो काहू बस्तुको एक ठाकुर वनांवैं, कछु वस्तु हाथमैं लैकैं वाकी आरती करैं, सब सेवाको अनुकरन करैं, तथा

ठाकुरके देहुरैं जहां सतसंग अरु दरसन होय तहां बिसेस जांहिं, तब इनकी महितारी देष्यो, कि एकतो घरको कसब न सीषैंगो, फिरि काहू अतीतके साथ उठि जायगो तोहु बुरीबात, यातैं नामदेवजूकौं बहुत पिजकैं बरजत भई कि तुम देहरैं मतिजाहु, ताही दिन नामदेवजूकौं महावैराग्य उपजिकैं कविताशक्ति व्हैंआई, सो एक पद नयो बनाय अपनी माताकौं गाय सुनावत भये, सो ऐसैं प्रथमही बनायो ॥ सो वह यह पद ॥ तूजिनबरजैंमायरीमोहिदेवलजातां ॥ मोहनमेरैंमनबस्योचरणौंचितरातां ॥ करम छाडिकुकरमकरूंतोनूबरजैंमाई ॥ मोहनमेरैंमनबस्योमोपैंरह्योन जाई ॥ बिनदीपकमंदिरकिसोबालकबिनमाता ॥ रामसनेहीनांमदे हरिकेरंगराता ॥१॥ पुनःअन्यपदप्रसंग ॥ दक्षिनमैं ठाकुर श्री पंडुरनाथ जू, तिनको दरसन होतहो आगैं एक नटी नृत्त्यकरतही, संकीरन ठौरमें भीर बहुत भईही तासमय नामदेवजू दरसनकौं आये, तिनकौं लोगनि ठौर न दई जहां बैठे तहां तहां कहूंनीपये निसौं लोग ठेलधकेलिदेवैं तब ये मंदरके पाछैं आय बैठे, दरसनके अंतरको बहुत दुष मानि अकुलानि सहित एक नयो, पद बनाय गावत भये, ताहीसमय पाछली ओर द्वार व्हैंगयो, आगैं बैठेहे तिनकौं पीठको दरसन होतभयो, अरु नांमदेवजूकी और श्रीमुखभयो, सब दौरि नांमदेवजू के पाय निपरे, यह बात जगतमैं बहुत प्रसिद्ध भई, सो नांमदेवजू जासमय पाछैं बैठि पद गायेतैं दरस नपायो, सो वह यह पद ॥ हौंणहोजातमेरीजादूराया ॥ कलिमैंनांमदेयाकाहेकौंपठाया ॥ तालपषावजबाजैंपातरनाचैं ॥ हमा

रीभगतविठ्ठलकाहेकूंराचैं ॥ पंडुरप्रभुजूवचनसुनीजे ॥ नांमदेस्वामीदरसनदीजे ॥ २ ॥ पुनःअन्यप्रसंगपद ॥ एक समय नांमदेवजू आलको गाडा लियैं आवतहे, सो कहूं मारगमैं गाडाको पहिया पोटका व्हैं कैं फसिगयो, बैल दुर्वल तिनसौं निकसैं नांहीं, तव येनिरउद्यमव्हैंकैं एक नयो पद वनाय गायवेकौं वैठिगये, ताही समैं एक वडो बैल दृष्टि परिगयो, नांमदेवजू जानी जोमैं प्रारथना करी सोहीभई, वा बैलकूं गाडा सौं लगाय गाडा निकासि हांक्यो अरु वृषभगवान अंतर्ध्यान भये, सो ज्या प्रार्थनाके पदकौं वनाय गायैं ठाकुर वृषभव्हैं कैं नामदेवजूको गाडा निकासिदियो, सो वह यह पद ॥ पैडोअटक्योहोबाबला ॥ जांकीजीवनतूसांवला ॥ कलिपोटीकुसमलिकलिकाल ॥ भवबंधनमेटोगोपाल ॥ काटिनरायणजमकाफंध ॥ समरथहोयकरिवाडोकंध ॥ नामदेकी नरहरिपूरोसार ॥ होयकरिपहुणउतारोपार ॥ ३१ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ वैष्णव श्री नांमदेवजू सवही जीवमात्रमैं भगवानहींकौं देषैं, काहूसमय वैष्णव तिलोचनजू नांमदेवजूसौं कह्यो, जो हमपर ऐसी कृपाकरो, जो भगवांनको दरसन होय, हमतैं तो यह वस्तु दूरिहैं, अरु तुह्मारी अनुग्रहतैं दूर नांहीं, तव नांमदेवजूनें कही, हमतो नित्य सवनिमैं भगवानहीकौं देषतहैं, ऐसैंही तुमदेषो, यह कुत्ताठाढौहैं याहूमैं भगवानहैं, जो चितकी सचाईतैं याहूसैं प्रभू दरसनदैं, तव तिलोचनजू विवाद चरचातो इनसौं कैसैं करैं, सुनि मुसिक्याय चुप व्हैरहे, तव नांमदेवजू फैंट मैंतैं तार निकास वा कुताके बरननको एक नयो पद वनाय गावत भये, सो

कुतातौं दृष्टि आयबेतैं रहिगयो, अरुवाकी ठौर भगवानको दरसन होत भयो, सो जापद गायबेतैं भगवान दरसन दीनो, सो वह यह पद ॥ एप्रभुअंधारेघरकेमदनराय ॥ चाकीचाटैचूंनपाय॥चूला मांझिप्रभुकीसेज॥ छींकाकांनीअधिकतेज ॥ रुगचुगरुगचुगप्रभुकी चाल॥पूंछहलैंज्यौंजौकीबाल॥छांनछायअबबहोरचांआये॥ आगैंरो टिचुपरिरंजिमाये॥ कातीमैंयाप्रभुकोभोग॥गहिगहिलकुटिघिरावैंलो ग ॥ तीनतापयेमेटैंरोग ॥ नांमदेवस्वामीबण्यासंजोग ॥ ४ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ काहू समय नांमदेवजू सौं कबीरजू कही, जो तुम अकेलेही भगवानके दरसन करि अपनौं स्वारथकरो हो, कबहू हमारोहू परमारथ करो, तब नांमदेवजू कही, तुम सब जानौंहोही हमसौं कहाकहो, दरसनकी कमी नांहीं, जीवके वि-स्वासकी कमीहैं, अैसे दोऊ महापुरुसननैं बातैं कीनी, ताके पश्चात कितेक दिवस पीछैं एक मुगल नांमदेवजूकौं बेगार पकरि मूंडपैं गंठरियादैं आगैं चलायें लियें जातहो, तासमय वा ओरतैं कबीरजू आवतहे, तिनपूछीतुह्मारी ये कहा गति हैं, तब या उत्तरकौं तबही एक नयोपद बनाय चले जात गावन लगे, जबपदके भोगकीतुकि सुनि कबीरजू मुगलके पायन परे, ताही समय मुगल दृष्टि न आवत भयो, अरु वाकी ठौर श्रीरामचंद्रजूको दरसन करत भये, सो जापदगांयैं नांमदेवजू अरु कबीरजूकौं श्रीरामजूको दरसन भयो, सो वह यह पद ॥ हैं यहरामजीकहाजानूंहौंन ॥ भगतिकरतबेठिपकरैंकौंन ॥ पूबप्रभुकी तसबीपूबहैंसुगल ॥ द्वारिकानगरमैंएहीमुगल ॥ कालोधोराजरदप

लान ॥ताजकुलहसोहैंरहमांन॥कहतनांमदेवसुनौंकबीर ॥चरनगहो येईरघुबीर ॥ ५ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ एक समय कबीरजू वनमैं बैठेहे, तहां इनपैं एकांत स्थलमैं द्वै अपसरा स्वर्ग तैं आई, तब कबीरजूनैं बिचारी, इनसौं संभाषन करिनौं भलो नांहीं, ज्यौं इनको अैसो रूप देषिनौंभलो नांहीं त्यौं इनकी बोल निहू सुननी भली नांहीं, यह बिचार नयोपद बनायगावत भये, वापदहीमैं उनकौं उठजावे कोउतरदयो, अपसरा निरासव्हैं जात रही, वासमय गायो सो वह यह पद ॥ तुमघरजावोमेरीबैंनांइहांतु मारोलैनांनदैनां ॥ रामबिनागोविंदबिनाबिषलागैंयेनैनां॥ जगमगा तपटभूषननगमयउरमोतिनकेहार ॥ इंद्रलोकतैंमोहनआईमोहिक रनभरतार ॥ इनबातिनकौंछांडिदेहुरीगोबिंदकोगुनगावो ॥ तुल सीमालाक्योंनहिंपहिरोपारब्रह्मपदपावो ॥ इंद्रलोकमैंटोटभयोक हाहमसोऔरनकोई ॥ तुमतोहमैंडिगांवानिआईजाहुदईकीषोई ॥ बहुतैंतपसीबांधिविगोएकचैंसूतकैंधागैं ॥ जेतुमजतनकरोबहुतेरो जलमैंआगनलागैं ॥ हौंतोकेवलहरिकैंसरनैंतुमहोझूठीमाया ॥ गुरपरतापसाधकीसंगतिसोमैंजुपरमपदपाया ॥ नांवकबीरजातजु लाहागृहबनरहौंउदासी ॥ जोतुममांनमहतकरिआंईतोईकमाई दूजीकमासी ॥ १ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ काहू समैं रैदासजूको उत्ककर्ष बहुत लोकनिकौं करत देषि कित नेक ब्राह्मन आंनधर्म अभिमानीहे, तिनकैं बहुत मत्सरता ऊपजी, तब बहुत सुबुधी सुहृद ब्राह्मन वैष्णव धर्ममैं सावधान हे तिन उनकौं मनैंकीनें, तथा भक्ति महातम कहि सुनायो, तऊ उनके

मनमैं न आई, वैसीही वैसी मंडली मिलि राजापैं जाय पुकार करीजु, यह हीन जात ठाकुर क्यौं सेवैं, धर्मशास्त्रमैं मनैं हैं, याकोदोस तुह्मैं पहुंचैंहैं, तब राजानैं यह कही, जोभक्तिमहातम घटि नहि, अरु शास्त्रहू षंडन न कियोजाय यातैं ठाकुर बीचमैं पधरावो, एक और तुह्म बैठो एक और वे बैठैं, तुमहू आराधन करो वेहू आराधन करो, जासुं ठाकुर प्रसन्नहौंहिगे ताहीकी और सुतहसिद्धि सिंघासन सहित पधारैंगे,तब ऐसैंहीं कियो, एक ओर ब्राह्मन अपरस होय वेद पाठ करत करत द्वै पहर बिताये, कंठ रहिगये, बहुत श्रमतव्है चित्तमैं दुषमानि बैठिरहे, फिरि रैदासजू सौं कह्यो अब तुम आरंभकरो, तब इनकौं और कछुतो आवतहो नहीं, द्वैमंजीरा फैंटमैंतैं निकास एक नयोपद बनाय अकेलेही गदगद कंठ दीनता करुणां सहित गावन लागे, तब भोगकौतुक आयचुकौ, वाही छिन ठाकुर सेवाको सिंघासन सब देषत चल्यो सोरैदासजूकी गोदमैं आय रह्यो, सो यह प्रसंग अरु पद जगतमैं बहुत प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ आयोआयोहोदेवादिदेवतुमसरनआयो॥ परमसुखकोमूलजाकैंनांहिंसमतूलसोचरनमूलपायो ॥ लियोबिबिधिजोंनबासजमकीअगमत्रासतुह्मारेभजनबिनभ्रमताफिरचो ॥ मायामोहविषयरसलंपटयहदुपदुसतरातिरचो ॥ तिहारेनांवबिसवासछाडीआंनकीआससंसारीधरममेरोमनननधीजैं ॥ रैदासदासकीसेवामानहोदेवापततपावननांवप्रगटिकीजैं ॥ १ ॥

॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ ब्राह्मन नरसीमहता गुजरातमैं महावैष्णव महानुभाव भये, तिनकी दोहितीको व्याहतो, तहां

गये, सो एतो वैष्णवनकी टहल कारि भगवत इच्छा तैं द्रव्य कारि हीन हुते, तातैं इनको आदर न कियो, उनके चितमैं माहेराकी चाह, इनकैं माहेरो कहां दैंनकौं, तब इन कीरतन बनाइकैं गायो तब माहेराकी सामग्री सब सिद्ध होय गई, बहौ सुश्रूषा भई, सो वह यह पद ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ नरसीमहता ठाकुर सेवा आगैं अपनी स्त्रीकौं संगलैं नित्य कीरतन नृत्य करते, तब ठाकुर इनकौं फूलनकी माला देते, यह वार्ता उहांके पृथ्वीपति सुनि नरसीजीके ठाकुरके दरसनकौं अचांनक आये परीछाके निमत्त नरसीसौं कहीजु, हम देषत ठाकुर तुमकौं मालादे तो भलेहैं, नांहीतो या पाषंडको फल पावोगे, तब नरसी कही हूंतो कछु जांनौं नहीं, ठाकुरके आगैं कीरतन करौंगो इच्छा उनकी होहिगी तो देहिंगे, यह कहि कीरतन करन लग्यो ठाकुर कृपा कारि मालादई, सो वह यह पद ॥ देवाअमांनैंतोतुमांनानांवनोआसरोकरमचालेषभूंच्यानजाई ॥ राजामंडलीकप्रेरपेरप्राहुवैंछवीलाबिनादुषकैंनकहाई ॥ कोईकहैलंपटकोईकहैंलोभियोकोईकहैंतालकूटियोरेषोटो ॥ दीनजांणेंनैंदयाकरेदामोदरमालाआपैंतोनूंनाथमोटो ॥ विहूपाससुंदरीकंठबाहोधरीकेसवाकीरतनएमहोई ॥ अजांणलोगतेअजांणबांणीवदैंपुन्यवंतपुरुषतेप्रेमजोई ॥ आगवैंविवाहिएघणूंविगोयोउण्णजलमोलिनैहासकीधो ॥ द्वादसमेघमोकल्याश्रीपतिआपणूंभक्तिनैंमांनदीधो ॥ सोरठमांहिसहूसाचोकह्योपुत्रीनोमाहेरोएमकीधो ॥ नागरीन्यातिनैंईडोचढाइयोनरसीयानैंअभैंदानदीधो ॥ देवाअमचीवे

रकांईबिधहोयलाआपणूंभक्तिरखैविसारिगईला ॥ मलेछमांहितुमे कबीरिनैंऊधरचोनामैंनाछापरागयोछावी ॥ जयदेवनैंपदमावती आपीनागरैंमाटरषेभूलिजावी ॥ अमेपलभलतांतुमेपलभलस्योसुषैं वैकुंठमैंकेमरहस्यो ॥ वृंदावनमैंराधिकानैंसंगअमानैंएकलोछाडि तुमेविनोदकरस्यो ॥ आगैंमोनैंरावमंडलीकमारसीमुठडेकधूलिहो यजायथासे ॥ भगतकरतांनरसीयोमारियोभगतबछलतांहरोविर दजासे ॥ श्रीकृष्णसांवलामूंकिमनआंवलाऊठिगोपालजीअसुरथा से ॥ नरसीयांनैंएकहारडोआपतांतांहराबापरोस्यौंजासे ॥२॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ वचनिका॥मेडतैं मीरांबाई तिनकौं रानाके छोटे भाईसौं व्याही, यह जग प्रसिद्धहैंही सो कितनेक दिन उपरांत काहूसमैं रानाके वा भाईको देहांत भयो, अरु रानाहुतेसो मीरां-बाईसौं दुषपायरहेहींहे, ये बैष्णवनिको सतसंग करितेयातैं, वासमैं रानानैं कहाई, जो यह औसरहैं तुम भरताके संग सतीहोहु, तब मीरांबाई भगवत रंगआगैं लगेहे, त्यौंहीं लगेरहे यासमैं कछू पेदमानी नाहीं, अरु याबातके उत्तरकौं एक विष्णुपद नयोव नाय रानाकौं लिपि पठयो, पद बहुत प्रसिद्ध भयो ॥ सो वह यह पद ॥ मींरांकेरंगलग्योहरीकोऔररंगसबअटकपरी॥ गिरधर गास्यांसतीनहोस्यांमनमोह्योघननामी॥ जेठबहूकोनातोनहींराणा जीथेसेवगम्हेस्यामी॥ चूडोदोवडोतिलकज़ुमालासीलवर्तसिंगार ॥ औरसिंगारभावैंनहींराणाजीयौंगुरग्यानहमारा॥कोईनिंदोकोईबिंदो गुणगोबिंदरागास्यां॥ जिणमारगवैंसंतपहूंतातिणमारगम्हेजास्यां॥ जोरीकरांनजीवसंतावांकांईकरसीम्हांरोकोई ॥ हसतीचढिगधैंन

हींचढांयातोबातनहोई ॥ राजकरंतानरकपडेसीभोगीडाजमकैली या ॥ भगतकरंतामुक्तपहूंताजोगकरंताजीया ॥ गिरधरधणीकटूंबो गिरधरमातापितासुतभाई॥ थेथांहरैंम्हेह्मांहांरैंहोराणाजीयौंकहैंमीरां वाई ॥ १ ॥ पुन ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ मीरांवाईसौं राना वहोत दुषपायैंरहैं, रानाके घरकी रीततैं इनके भिन्य रीत, यह भगवत संवंध सत्यसंग विसेसकरैं, देह संबंधको नातो व्यौहार कछु न मांनैं, राना बहुत समुझाय रह्यो, निदांन एक बिषको प्याला उनकों पठियो, कह्यो चरनामृतको नामलेकैं दीजियो, उनकैं प्रणहैं, चरणामृतके नामतैं पीहीजांयगे, सो औसैंहीभयो, जांनि बूझ पीयो, रानातो इनके मरिबेकी राहदेषतरह्यो, अरु यह झांझ मृदंग संगलैंकैं परम रंगसौं एक नयो पद बनाय ठाकुर आगैं गावतभये, पद बहुत प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ रानैंजूबि षदीनौंहमजानी ॥ जानबूझिचरनामृतसुनिपियोनहींबौरीभोरा नी ॥ कंचनकसतकसोटीजैसैंतनरह्योबारहबानी ॥ आपुनगिरधर न्यावकियोयहछांन्यौदूधरुपानी ॥ रानाकोटकवारौंजिहिंपरहौंतिं हिंहाथबिकानी ॥ मीरांप्रभुगिरधरनागरकैंचरनकमललपटानी॥२ पुन ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ रानाको छोटोभाई मीरांको देहसंबं-धको भर्ताहो, सो ताको परलोक भयो, तापीछैं मीरांबाई ... क तीरथ करिकैं अरु श्रीवृंदावनहू आये, तहां जीऊगुसांईजूको प्रण स्त्रीके न देषिवेको छुटाय सबसौं गुरुगोविंदवत सनमान सत्यसंगकरि द्वारिकाकौं चले, ऊहां वास करिवेकैं लियैं तहां एक मारगमैं नयोपद बनायो, बहुत प्रसिद्ध भयो, सोवह यह

पद, रायश्रीरनछोडदीज्योद्वारिकाकोबास ॥ संखचक्रगदापद्मद
रसैंमिटैजमकीत्रास ॥ सकलतीरथगोमतीकेरहतानित्तनिवास॥ संष
झालरझांझबाजैंसदासुषकीरास ॥ तज्योदेसरुबेसहूतजितज्योरा
नाराज ॥ दासमीरांसरनआवततुह्मैंअबसबलाज ॥ ३ ॥ पुनःप्रसं
ग ॥ सो याभांति मनोरथ करत यह पद गावत द्वारिका पहुंचे,
तहां कोईदिनरहे तापीछैं मीरांबाईके संग प्रौहितादिक जे रा-
नाकेलो कहे, तिनकह्यो अब वहुत दिन भयेहैं अब देसकौं चलो,
रानाकी आग्याहैं, ऐसैं है तीन दिन तो कह्यो, फिरि मीरांबाई
परि धरनांकियो, तब मीरांबाई ठाकुर श्रीरनछोडजूसौं बिदा
व्हैंबेको नांवलैं मंदरिमैं अकेलेही जाय महाआरति सहित
एक नयो पद वनाय गायो, सो वह यह पद ॥ हरिकरिहो
जनकीभीर ॥ द्रोपदाकीलाजराषीतुमवढायोचीर ॥ भक्ति
कारनरूपनरसिंघधरयोआपसरीर ॥ हरिनकस्यपमारिलीनौंध
रयोनांहिनधीर ॥ बूडतैंगजग्राहतारयोंकियोबाहिरनीर ॥ दासमी
रांलालगिधरदुषजहांतहांपीर॥४॥सोयहपद गायेंहू उततैंन टरे,तब
महाआरति प्रेमावेस सहित एक औरपद वनायगायो, तवही ठाकुर
आपमैं उनकौं याही सरीरतैं लीन करिलीनें देहहूनरही, सो जापद
केगायें लीनभये, सो वहयहपद ॥ सजनसुधिज्यौंजांनैंज्यौंलीजैं ॥
तुमबिनमेरैंऔरनकोईक्रुपारावरीकीजैं ॥ द्यौसनभूषरैंननाहिंनिद्राय
हतनपलपलछीजैं ॥ मीरांप्रभुगिरधरनागरअबमिलिबिछुरानिनाहिं
कीजैं॥५॥सो येदोऊ पद निकट द्वारकैं इनकी पर्मचतुर वैष्णवसषी
न कंठकरिलीनैं, तथा लिपिलीने तेप्रसिद्ध भये ॥ ५ ॥ पुनःअन्य

पदप्रसंग ॥ मीरांबाईकी कई भांतिकी चरचा निंदकजन राना-आगैं बहुत करन लागे, तब एकसमैं रानानैं अपनैं अंतहपुरकी एक स्त्रीकौं पठाई कह्यो कि आधीराति उपरांत जहां वेहोय तहां चलीजाई जाइये काहूकी हटकी मतरहिये सो वानैं अैसैंही कियो, मीरांबाई अटारीपर सोई सोई जागतही सौंहैं, चंद्रमाकौं देषि देषि हरि प्रीतमके अंतरायको बिरह सह सहतहीं उनकी भांवनां करि करि परी उसास लेतही,इतनेंहीं येजाय ठाढी भई,ताकूं मीरां बाई कह्यो, तनकेक बैठिकैं हमारो दुष सुनौं, यासमैं हमकूं तुम बडे श्रोता मिले, सो जद्यपि वह बिजातीही, परंतु ज्यो कोऊ अति अधीर अनुरागी होय, ताकूं बिजाती सजातीको ग्यान नांहीरहैं, वहि अपने चित्तकी कहैं सो कहैं ही कहैं, यातैं वाके आगैं वाही बेर एक पद बनाय बनायकैं गांवनलगी, सो पद सुनि इनकी अवस्था देषि वह आई हुती सो परम अनुरागमैं मूरछित व्हैंगई, इनकीही निकटवर्ती परम बैष्णव भई, फिरि रानाके अंतहपुरमैं न गई, फिरि राना और काहू स्त्रीनिकौं इनपैं पठावैं सोई नटजाइ, अरु कहैं ज्यो उनपैं ज्यो जायहैं, सो बावरीव्हैं जातहैं, तातैं हम नजांहिगी, यह बात इनकैं बहुत प्रसिद्ध भई, सो पिछली रातके समैं जापदकै सुनैंतैं रानाकी सहचरीकी उनमत्तदसा व्हैंगई,सो वह यह पद ॥ सषीमेरीनींदनसांनीहो ॥ पियकोपंथनिहारतां सबरैंनबिहांनी ॥ सषीयनिमिलिसीषदईमनएकनमांनी ॥ बिनदेषैं कलनापरैजियअैसीठांनी॥अंगछीनव्याकुलभईमुषपियापियबांनी॥ अंतरबेदनविरहकीवाहिपीरनजांनी ॥ ज्यौंचातकघनकौंरटैमछरी

विनपांनो॥ मीरांव्याकुलबिरहिनीसुधिबुधिबिसरांनो॥८॥ अन्यपद प्रसंग॥ मारवारमैं गांव एक पालरी तामैं वैष्णव, एक रामा-नुजी चतुरदासजू नाम रहैं, तिनको षोजी नाम प्रसिद्ध भयो, सो ज्याभांति षोजीजू नाम भयो सो ताको प्रसंग भक्तमालके टीकामैंहैं, बिस्तारव्हैंबेकौं यामैं धरयो नांहीं, ये सापीमैं तो षोजी नांव धरते, अरु विष्णुपदमैं चतुरदास नांवधरते, सो यह चतुरदासजू एकसमैं श्रीमतभागवत पाठ करतहे, औरहू श्रो ता बहुत बैठेहे, तहां एक कांजर घूंस ताकौं कोल कहतहैं, ताको फंदालयें आय निकस्यो, सरीरकी मलीनदसाहैं, मूंडके ऊपर झेवार आंपिनिपरि आय रहेहैं, सिरपरि छावडी तामैं रोटींनके टूक तथा नाजहैं, अरु मुष तैं यह पुकारतहैं, कोई कुडमंडाडैहो कोईकुड, याभांति कांजरकौं देषि सब श्रोताहसे, अरु चतुर दासजू आसन छांडिकैं दौरे सो वाके पायनमैं मूंड जायदियो, तब सबनि मिलिकही स्वामीजू बावरे व्हैंगये, वा कांजरकौं च हूंऔर सब श्रोता ठाढेहैं, अरु स्वामी दंडवतकरतहैं, इतेहीमैं वाकांजरके सरूप भगवानहे सो अंतर ध्यान व्हैंगये, तब चतु रदासजूको प्रभाव सबनि ज़ान्यौं, अरु बिस्मय रहे, अरु सब ठौर यह बात बहुत प्रसिद्ध भई, यासमयको तबही एकप द बनायो सो वह यह पद॥ कांजरनहोयबाबोकमलाकंत॥ तीनलोकजाकेमुषभीतरअंतरजांमीसबजीवजंत॥ पांणीमैंपाषां णतिरायेसोतुमल्योहाबिचारी॥ मच्छकच्छवाराहरुनरसिंघवां वनहैंफरसधारी॥ पंडूमपकरुणामयकाजैंजिनकेपावपपारे॥ कां

धैंकूडधारिकलिजुगमैंजनकैंद्वारपधारे ॥ मांडीपातपलकमैंपालक आपणरह्योछिपाई॥चतुरदासदिसपूरणदेषीमारतकोलाबिलाई ॥१॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ मुरधरदेसमैं एक गांव बलौंदा तहां मुरारिदास बैष्णव रहैं, तिंनकैं बरसवैंदिन गुरको महोच्छव होत हो, ता महोच्छवमैं ए उठि नृत्य कीरतन करतहे, सो एक महोच्छवमैं नृत्य करतहे अभिनय बतावतहे, पद गावतहे, ता पदमैं यह तुक आईजु ॥ जातनावबैकुंठसघरणीकुटंबसहितचलीकीरकी ॥ तब प्रेमबिबस व्हैंगये, अरु देह छूटिगई, सो वह यह पद ॥ प॥वनपदरजरघुबीरकी ॥ जापरसतासिलकोतनपलटयोगतिभइदेवसरीरकी ॥ ल्यावनावषेवटकहिबोलेप्रभुठाढेतटनीरकी ॥ चलेपलायफेरनहिचितवतसंकारामसधीरकी॥ करतपरमगतिपरमकृपानिधितारिपतितभोभीरकी ॥ जातनावबैकुंठसधरणीकुटंबसहितचलीकीरकी ॥ सेसमहेसनिगमनारदमुनिसेवाब्रह्मउजीरकी ॥ परसाशुकसनकादिभजनरातिउरधारिगुनगंभीरकी ॥१॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं बैष्णव राघोदासजी धमारि बनावतहे, सो कितेक तुकैं तो बनाई, अरु जहां ए तुकआई, मनुअवनीपरमेघकौघेरिरहेबहोचंद॥सो यह तुक लिषतही प्रेम बिबस व्हैंकैं देह छोडि दई तब तहां राघोदासजूकी स्त्री बैठीहुती तानैं उनकी देहक्रिया तो पाछैंकीनी, पहिलैं उनको भोगदैं धमारि पूरीकरी, सोवह यहधमारि ॥ चलिजांहिजहांहरिषेलतगोपिनसंगा ॥ आंनकबहुबाजेतालमुरजमुषचंगा ॥ गावतसुनिभावतमंदमधुरमुषबानी ॥ जनौंहरषिपरसपरमनहूंमदनगतिबानी ॥ ॥ टेक ॥

चलिजांहिजहांक्रीडतनंदनंदनझांझप्रणवडफभारी ॥ बीनउपंग मृदंगचंगबहोदेतपरसपरगारी ॥ करपीचकवीकचमुपकटिपट्ट वेषबनायो ॥ जनुगुदरदैनकौंबानिवसंतब्रजआयो ॥ हाटिक मनिगनषचितबिविधकरजेरीसाजैं ॥ रुंजमुंजसहनाईढोलढो लकडफबाजैं ॥ आवजअतिआतुरबजैंब्रजजनषेलैंफाग ॥ तां नतरंगनिबायबध्योछायरह्योअनुराग ॥ धुनिसुनितपियारनुकु मकुमभूषनकीनैं ॥ बहौरंगबसनतनजावकचरननिदीनैं ॥ कंव रीकव्रजसवारिनिरषिउपमांकौंहारी ॥ मानौंहाटकलतारहीषगिप न्नगनारी ॥ श्रवनतारउरहारछबिअरुमुकतासरससुढार ॥ जनुजु गगिरबिचदेपियेधसीसुरसुरीधार ॥ रचितिलकभालभालपरमृगम दरेपसंवारी ॥ जनुयुगलजीभधरिपन्नगपीवतसुधारी ॥ षंजनमीन अधीनदेषिदृगसा:गलाजैं ॥ बदनचंदभुवचापस्वातिसुतनासासा जैं ॥ उपमांकौंअविलोककवियासमनांहीऔर॥ मनौंकीरउडिगन गहैंचुगतनहींसुनिऔर॥अतिअधरअरुनछबिअरुदसननिदुतिपाई॥ जनुबिज्जुलबीजनिबिद्रुमबारिबनाई॥ कंठकपोतलजातिकरनअंग दजगमगियो ॥ मानौंजलजमृनालसरदससिबालकलजियो ॥ पौं हचनिअतिपुंहचीसिघनसुंदरस्यामसुपास ॥ मनौंकंजकेकंठलागि भृंगरहेमधुहास ॥ बनिचलीसकलतियपगनूपुरसुरमारी ॥ मानौं बिबिधकामकलहंसकरतकिलकारी ॥ सांषिजवादिसुगंधकुमकुमा केसरिघोरी ॥ भाजनिभरिलैंचलीसकलतियगावतहोरी ॥ नषसिष तैंअविलोकिछबिनागरिमोहैंगान ॥ मानौंसंगीतसालापढीघटिबढि परतनतान ॥ छबिसिंधुललनतनदेषतलोचनभूले ॥ स्यामास्या

मरमैंअतिरंगसौंकेसनिपूले ॥ बरनबरनसिरपागश्रवनकुंडलमनिम यअति ॥ मनौंस्यामनगसिषरतरनिजुगरमतितरलगति ॥ उरबन मालबिसालछबिबिविधिसुमनबहौबेष ॥ मनौंजलदमैंप्रगटआतिस तमषसारंगरेष ॥ रचितिलकमलैकोपियकरपौरवनाई ॥ मनौंजुग लअहिनिसासिंधनिपरदईदिपाई ॥ घनतनदेषिलजातकंजहगक्यौं समपावैं ॥ मुषससिस्यामभुजांनिदेषिअहिवपुहिलजावें ॥ नषसि पतैंअबिलोकिछविकटिपटुपीतसुदेस ॥ मनौंजलदधुरबासषीदामि निरहीप्रवेस ॥ छबिश्रीमोहनतनलघुमतिबरनीनजाई ॥ चितवति चितचोरतमनमथरह्योहैलजाई ॥ तियनिपरसपरहरषिहरितकराडि गेनबाजे ॥ उठेगोपकिलकारलागिदुहुंदिसतेबाजे ॥ एकनिकुमकु मालियोएकनिघोरिगुलाल ॥ चलीसकलब्रजसुंदरीपकरिनमदन गोपाल ॥ सैंननहीमोहनहलधरदियेहैंबताइ ॥ गहिनीलवसनतनदै बिंदुदियेछिटकाइ॥सबनिमिलिपकरेस्यामसुमुरलीतवलईछिनाई ॥ तबहितरुनिमुसकाइसाषिभाजनलैंधाई ॥ छींटनिछिरकतभरतब होप्रेमछकीनंदनंद ॥ मनुश्रवनीपरमेघकौंघेरिरहेबहौचंद्र ॥ निर षतविथकतनभजहांजहांअमरबिमान ॥ बरषतसुरसुमननिऔब जाइनिसान ॥ रह्योपरसपररंगसकलतियभवननिआंई ॥ तबहि तिनाहिंब्रजराजबिविधपटदईमठाई ॥ आयतरनितनयासलिलमंज नकियोबलवीर ॥ पहरिवसनआयेभवनसंगसकलआभीर ॥ दुति यामोहनतनराजतपीतसुबास ॥ बैठेसिंगासनवनिबलिबलिराघो दास ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समै तुलसीदासजू कासीनगर रहैं, तहां सहजही एक ओर

बहिर भूमिकौं गयो करते, अवसेष जल रहतो सो नित्यही एक वृच्छके मूलमें डारयो करते, तामें एक प्रेत रहतो, सो जलकरि तृप्तहोतो, वह एकसमें उनकौं प्रतच्छ भयो, अरु कह्यो कि मैं प्रेतहूं, तुम मोकौं जल करि तृपति करतहो सो बडो गुन करतहौ, मैंहूं तुमसौं गुन करूंगौ, याओरकौं रामायणकी कथा होयहैं, तहां हनूमान जू आवैं हैं, यह उनकीपरीछाहैं, षोरे दुबल वृद्ध ब्राह्मनके स्वरूप, सब श्रोतानिके पहिलैं तो आवैं हैं, अरु पाछैं जायहैं, सो तुलसीदासजू यह सुनि अरु वेकथा सुनि जातहे, तहां उनके पांवनि सीस दैकैं पांव गहि रहे, हनूमानजू बहुत नटे कह्योमैं वृद्ध ब्राह्मनहूं, मोपूं कहा कहैं हैं, इननि पाव नाहीं छाडे तब हनूमानजूनैं कह्यो, तू चाहतहैं सो मांगि, अरु मेरो पैंडो छोंडि, तब तुलसीदासजू कही, मोकूं श्रीराम लक्ष्मणजूको दरसन करावो, तब हनूमानजू कही बहुत चिंताकरि कह्यो, तैं बहुत दुर्लभ बस्तु मांगी भला कहा कीजे, इच्छा उनहींकी, तब बाहिर एक बनमें टीबाबतायो, तू यापरि जाय बैठि, इहां तोकूं दरसन होयगो. तहां तुलसी दासजी बैठे, सहित आरत देषत रहे, इतेहीमें श्रीराम लक्ष्मणजू मनुष्यको स्वरूप याभांति कियें आगैं आय निकसे, मलीन तो वस्त्रहैं, हाथमैं धनुहीं अरु तीरहैं, एक मृग मारयोहैं, ताकौं उलटायैं लियें जायहैं, लोही गिरत जाय हैं, तब तुलसीदासजू उनतैं निजर टारि भूमिकी ओर देषि रहे, चित्तमैं कह्यो ऐसे निर्दईन मनुष्यौंकौं मैं कहा देषूं, अब वेग निकस जांहिंगे, सो याभांति श्रीरामजी तो निकसि गये, अरु ए तिनके

पाछैं बहुत बेरलौं वैठे, श्रीरामजूके आयवेको मारग देख्यो करे, फेर तहां हनूमानजूको दरसन वाही भांति होत भयो, तिनसौं इन कही मोकूं श्रीरामजूको दरसन कबहोइगो, मैं बहुतवेरको बैठ्यौ हौं, तब हनूमानजूनैं कही, वेमृगिया द्वारेनिको स्वरूप कियें श्रीराम लक्ष्मणहीहे, तब तुलसीदासजू रोवनलगे, बहुत पश्चात्ताप कियो, अरु वाहीसमयको तबहीं एक पदबनायो ॥ सो वहयहपद ॥ लोचनरहेबैरीहोय ॥ जानिपूछअकाजकीनौंदयेभुवमैंगोय ॥ अवगतिजूतेरीगतिनजानूरह्योजागतसोय ॥ सबैरूपकेअवधिमेरेनिकसगयेढिगहोय ॥ कर्महीनहिंपायहीरादयो पलमैंपोय ॥ तुलसीदासश्रीरामबिछुरैंकहोकैसीहोय ॥ १ ॥ पुनःअन्यपदप्रसंग ॥ वैष्णव श्रीतुलसीदासजी श्रीराम उपासिकरहैं, तहां कोई एक स्त्री हुती सो सतीहौंनकौं जातही, तानैं मारगमैं तुलसीदासजूसौं दंडौतकरी, तब इनकह्यो सौभाग्यवतीहोहु, यह कहतही वाको पति जीय उठ्यो, यह बातसुनि पातिसाह जाहांगीर तुलसीदासजूसौं बुलायकही, कछु करामात दिषावो, तब इन कही, हम करामाततो कछू जानैंनहीं, तब इनकौं कैदकरि राषे, तासमैं राजा अनीराय बडगूजर तुलसीदासजूके पास आये, बीनतीकीनीजु महाराज ऐसोकीजियें हिंदवनके मारगकी घटती न दीसैं, अरु आगैंतैं कोई वैष्णवनकौं संतावैंनहीं, तापर इननि एक नयो पद बनाय वाकौं गांवनलगे, ताहीसमैं अगनित बादर उपद्रव करत पातिसाहकी दृष्टिपरे, तब पातिसाह भयमानि इनिके पाइनि आंनिपरिकैं छमाकरवाइ सीपदई, चलतीवेर तुलसीदासजी

नैं यह आग्याकीनी कि यहां श्रीरामजीके सेवक हनुमानको पर करआयो सो यहठौर उनकीभई, तुम औरठौर जायरहो, यहां तुम्हारेही कुटंबके बंदीवांन व्हैंरहैंगे, यह सुनि पातिसाहनैं सलेम गढ छोडिदयो, सो अबतकभी पातिसाहके कुटंबके उहां कैद रहतुहैं सो जापदकौं बनाय गायेतैं यहलीलाभई सो वह यहपद ॥ तुमहिंनऐसीचाहियेहनुमानहठीले॥ साहीबसीतारामसेतुमसेजुवसीले ॥ तुमरेदेखतसिंघकेसिसुमैंडुकलीले ॥ जानतिहूंकलितेरेऊमनु गुनगनकीले ॥ हाकसुनतदसकंधकेभयेबंधनढीले॥ सोबलगयोकि धौंभयेअबगरबगहीले ॥ सेवककोपरदाफटैंतुमसमरथसीले ॥ सास तितुलसीदासकीसुनिसुजसतुहीले ॥ तिहूंकालतिनकोभलोजेरामरं गीले ॥ २ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ बैष्णव तुलसीदासजू सो श्रीरामचंद्रजूके उपासिक महाअनन्य, ऐसेजू औरु अवतारी अवतारनिके गुन बर्नन न करैं, न औरनिके गुन सुनैं, स्वइछासौं न औरनिके स्वरूपको जाय दरसन करैं, अरु औरु महानुभाव बडे जो प्रीतकरि दरसननकूं लेजांहिं, तो उनको अनादरहु कैसैं करैं, यातैं जांहिं परंतु बिनां श्रीरामचंद्रजूके स्वरूप औरनिकौं दंडवत नाहीं करैं, एक समय श्रीगोवर्धन आय निकसे तहां श्रीगुसांईजू तुलसीदासजूकौं, श्रीगोवर्द्धननाथजूके दरसनकौं लैंगये तहां दरसन करि तुलसीदासजू, यह दोहा कह्यो ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजुकी, भलेबनेहौ नाथ ॥ तुलसीमस्तकजबनमैं, धनुषबांनल्योहाथ ॥ १ ॥ सो श्री ठाकुरतो भक्तिआधीन वाही समय धनुषबांन हाथलियैं सब-

निकी दृष्टिपरे, तब तुलसीदासजूनैं दंडवत करी, अरु सबनिके मनमैं इनकी ओरको बडो उत्कर्ष आयो, अरु सबनि कही, जो भक्तिनिके बिषैं आश्चर्य कहा, आगैं तो ठाकुर अपनी प्रतग्याहू मेटि भक्त भीषमजूकी प्रतग्या राषीही, सो ऐसी औट-पाई अनन्यताता इनहीतैं बनि आवैं, अरु या वारतापरि जो कोऊ संदेह उठावैंजु अवतारनिके बिषैं भेदाभेद क्यौंचहियैं, तथा चतुर्व्यूहके बिषैं भेदाभेद क्यौंचहिये तथा ब्रह्मा विष्णु महेश इन तीन्यूं देवतांनिबिषैं भेदाभेद क्यौं चहिये, सो याकी यह बार्त्ताहैंजु सास्त्रही कीतो आग्याहैं, अरु अनन्यताकी अरु सास्त्रहीको आग्याहैं, भेदाभेद न राषिबेकी, सो दोऊही सत्य हैं, ऐश्वर्ज बुद्धिमैं तो भेदनहीं अरु आसक्ति उपासना भेद बिन क्यौं बनैं, ताको दृष्टांत जो जा राजाके नगरके लोग तथा देसके लोगहौंहिं तिनकौं तो राजाके बिषैं तथा राजाके पुत्रके बिषैं तथा मंत्रीस्वरनिकैं बिषैं एक राजाहीके सरीर तुल्य जांनिबेकी बुद्धि चाहियैं, यहजांनैंजु यह सब राजाहीको स्वरूप हैं, अरु राजाकी स्त्रीनिकौं यह बुद्धिनचाहिये, वे यह बुद्धिराषैं तो दोषलगैं, यातैं सास्त्रकही सो जथापात्र दोऊही सत्य हैं, सो तुलसीदासजू ऐसे महाअनन्यहे तिन सौं काहू बैष्णव मित्रनैं बहुत कही, जो महाराज तुह्मारी ऐसी कविता अरु तुम श्रीकृष्णचंद्रको कोऊ एक हू पद बनायो नांही, सो ऐसैं कहत कई दिनतो निकासे, फिरि उनकौं बहुत आग्रह जानि, एक पद वनायो, तामैं हूं श्रीरामचंद्रजूकी मिश्रतता छाडी

नाहीं, सो यह पद सुनि कितेक रसिकानिकौं बहुत चाहभयो, पद बहुत प्रसिद्धता पाई, सो वह यह पद ॥ बरनौंअवधिगोकुलग्राम ॥ उतबिराजतज्यानकीबरइतहिस्यामास्याम ॥ उहांसरजूबहतअद्भुत इहांजमुनानीर ॥ हरतकलिमलदोऊमूरतसकलजनकीपीर ॥ मनि जटतासिरक्रीटराजतसंगलक्ष्मनिबाल ॥ मोरमुकटरुवैनकरह्यांनिक टहलधरिग्वाल ॥ उहांपेवटसपातारेबिहसिकैंरघुनाथ ॥ इहांनृग जदुनाथतारयोकूपगहिनिजहाथ॥ उहांसिवरीस्वर्गदीनौंसीलसागर राम ॥ इहांकुबजाल्यायचंदनकियेपूरनकाम ॥ भक्तिहितश्रीरामकृ ष्णसुधरयोनरअवतार॥दासतुलसीदोऊआसाकोऊउतारोपार॥३॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥एक समय गोस्वामी श्रीबिठलनाथजू किते कजीव कृतारथ करिबेकौं इंद्रप्रस्थ पधारे, सो एक सेवगकें पधारे, ताकें परोस एक सरावगी महाजन मानकचंद नामरहैं, सो वेहू तमा सो देषिबेकूं आय ठाढो भयो, अरु वाके चित्तमें आयगई सो कह्यो, महाराज सवारें मेरी रसोई अंगीकार कीजें, तब श्रीगुसांईजू आग्याकरी, आंनधर्मीकी रसोई लैबेकी हमारे पद्धिति नहीहैं कैसें लेवें, तब दूसरें दिवस फिरि आयो, तासमें श्रीगुसांईजू श्रीमंतभागौतको पाठ सारथक नित्यनेम को करतहे, बहुत जग्यासी श्रोता हू बैठेहे, सो गुसांईजूके मुषके वचन सुनतही वाको चित्त बहुत फिरिगयो, दौरि पांवन परयो, कह्यो मोकौं सिष्यकरो, मैं सरावगीनको धर्म छोडयो, बहुत हठ कियो तब श्रीगुसांईजू भगवत इछया जांनि सिष्य कियो, सो मंत्र सुनाय कंठी बांधतहीं याके प्रेम व्हैं आयो, अरु सुतह सिद्धि कबिता

सक्ति व्है आई, श्री गुसांईजूकौं श्रीठाकुरको स्वरूप मान वाही समैं पद बनाय गाय उठ्यो, पद बहुत प्रसिद्ध भयो सो वह यह ॥ पद ॥ प्रगटेश्रीबिठ्ठलनाथहमारेद्वापुरवसुधाभारहरयो ॥ अबकलजुगजीव उधारेजबबसुदेवगृहप्रगटहोयकैंकंसादिकारिपु मारे ॥ अबबल्लभगृहप्रगटहोयकैंमायावादनिवारे ॥ ऐसोको कविहैंकलमहियांगुनबरनतजुतिहारे ॥ मानकचंदप्रभुकौंषोजत गावतबेदपुकारे ॥ १ ॥ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ छीतु स्वामी सो स्वामी तो पीछैं कहाये, पहिलैं छीतू मुथरिया कहावतहे, चितमैं वहौत रिंद कुटीचर रहैं, शैवहुते, श्रीगुसांईजूकी कोऊ स्तुति करैं अरु कहैं जोए श्रीगोवर्द्धननाथ को स्वरूपहैं, तब ए चित्तमैं बहुत उद्वेगकौं प्राप्त व्हैं, ईरषा मांनैं, एक दिवस एक नारियरमैं राष भरिकैं श्रीगुसांईजूकौं जाय दरसन करि वह नारियर भेट कियो, तब श्रीगुसांईजू आग्याकरी वाहीकौं, जो तू या नारियरकी गिरी काढि सबनिकौं बांटि दैं, तब यह चित्तमैं सकुच्योजू, इनके इते सिष्य शाषा बैठेहैं सो राषदेषिकैं मोकौं लात मूकीनतैं मारिडारैंगे, यह जांनि वाको ससोक मुष व्हैंगयो, तब गुसांईजू फेर आग्याकरीजू तू चिंता करतिहैं सुमति करि, अरु गिरी बांटिदेहु तब वानैं जटा दूरिकरी बांटिवेकौं, तब राषकी ठौर गिरी सुंदर निकसी, सो सबकौं बरताइ दई, छीतू मुथरियाके चित्तमैं बडो चमत्कार भयो, दंडवत करि शिष्य भयो, तब वाही ठौर एक बिष्णु पद बनायो, सो वह यह पद ॥ जेबसुदेवकियेपूरनतपतेईफलफलितश्री

वल्लभदेव ॥ जेगोपालहुतेगोकुलमैंतेईअबआंनिबसेकरगेह ॥ तेवेगोपबधूहुतीव्रजमैंजेअबबेदरिचाभईयेह ॥ छीतस्वामिगिरधरनश्रीबिठ्ठलबेईयेईयेईबेईकछुनसंदेह ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीगुसांई हरिबंस, श्रीवृंदाबन बास करैं, रसिक बैष्णवनकौं सबभांति ऐसें सुषदेंहि, भजनानंदमैंजु राति दिन जात जान्यौं न परैं, सो याही बीच एकसमैं श्रीहरिबंसजू श्रीवृंदाबन पायो, नित्य सिधपरकरमैं प्रवेस करयो, पाछैं सब रसिक वैष्णवनकौं महा बिरह भयो, राग रंग सुष समाज भजनानंद मिटगयो, ब्यासजी एक कोटरीमैं बैठि रहे, भीतरकी सांकरी लगाय विरह दुषतैं बाहिर न निकसैं, प्रसाद कछु न लेह, एक समैं सब बैष्णवनि मिलि बाहिर निकासे, सो बाहिर आय बैष्णवनके समाजमैं एक नयो पद बनाय सुनायो, सो सुनतही सबनिकौं हरिबंसजीको बिरह आवेस भयो, कितेक मूर्छित भये, सो वह यह पद ॥ हुतोसुषरसिकनकोआधार ॥ बिनहरिबंसजुरसरीतिनिकोकापैंचलिहैंभार ॥ कोराधादुलरावैंगावैंबचनसुनावैंचार ॥ वृंदावनकीसहजमाधुरीकहिहैंकौंनउदार ॥ बडोअभाग्यअनन्यसभाकोउठिगयोठाटसिंगार ॥ व्यासएककुलकुमदचंदबिनुउडगनझूठेथार १॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ बुंदेलषंडके एक प्रोहित व्यासजी महा पंडित दिगबिजैकौं फिरतहे, सो श्री वृंदावनहू आइ निकसे, पूछ्यो इहां कोऊ पंडितभीहैं, तब काहूनैं कह्यो हरिबंसजीहैं, तब बाद करिबेकौं हरिबंसजी

पास आये, कह्यो मोसौं विद्याकी चरचाकरो, तासमैं हरिवंसजी ठाकुरकैं रसोई करतहे, तब व्यासजी बोले भलैं, विद्याकी चरचा रसोई करि चुकैं पीछैं करियैंगी, इतनें कछूसुलपसंभाषनतोकियेंजाइये, तबश्रीहरिवंसजू टोकनीउतारि चूलाजलतैं बुझाइदयो, तबव्यासजूबोले, इतनौंक्यौंकियो, दोऊ बात करत जाते, तबश्रीहरिवंसजू वाहीसमैं नयोपद बनाइ सुनायो, सो पद सुनतही व्यासजू,सर्व पुस्तक संग्रह ऊंटनपैं लदेउतारि श्रीजमुनामैंडारिदिये, विवाद उदवेगछोडि वृंदावनबासकियो, याभांति व्यासजूकैं उपदेसलग्यो॥सो वहयहपद॥ यहजुएकमनबहौतठौरकरिकहिकौंनैंसचुपायो॥ जहांतहांविपतिजारजुवतीलौंप्रगटीपिंगलागायो॥ द्वैतुरंगपरिजोरचढतहठिपरतकौंनपैंधायो॥ कहिधौंकौंनअंकपरराख्योजोगनिकासुतजायो॥ जैश्रीहितहरिवंसप्रपंचबंचिसबकालव्यालकोखायो॥ यह जियजानिस्यामस्यामापदकमलसंगीसिरनायो॥ पुनः अन्य पद प्रसंग॥ श्रीगुसांईहरिवंसजूके दरसन परसन संभाषन उपदेश विष्णुपद तुक॥ यहजुएकमनबहुतठौरकरिकहिकौंनैंसचुपायो॥ इत्यादि सुनि व्यासजू श्रीवृंदावन आय निकसेहे, सोचित्तकौं संसारतैं निबर्तकरि बैठि रहे, बास करिबेकैं अर्थ वाही दिन श्रीगुरुगोविंदकृपातैं कबिता शक्ति व्है आई, प्रथमही एक विष्णु पद बनायो॥ सो वह यह पद॥ कहाकहानहिंसह्योसरीर॥ स्यामसरनबिनकामसहायनजनममरनकीपीर॥ करुनांवंतसाधुसंगतबिनुमनहिंदौहिंकोधीर॥ भक्तिभागवतबिनकोमेटैंसुखदैं

दुखकीभीर ॥ बिनअपराधचहूंदिसबरषतपिसुनबचनअतितीर ॥ कृष्णकृपाकवचऊबरैंडरपचढीउरपीर ॥ नामासेनधनारैदासदीन ताकरीकबीर ॥ तिनकीबातसुनतश्रवननिसुखबरषतनैननिनीर ॥ चेतहुअबैंबेगकलिबाढीकामनदीगंभीर ॥ व्यासबचनबृंदाबनबासि सेवहुकुंजिकुटीर ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग॥ श्रीव्यासजू बृंदावन आय बासकियो तिनकौं लेजायबेके वासतैं बुंदेलाराजा श्रीवृंदावन आयो, बोहोत हठ कीनो, राजाकह्यो तुम न चालोगेतोमैंहूं यहांतैं न जाऊंगो, तब व्यासजूकूं येबातैं सुनि सुनि बोहोत दुख भयो, बृंदावन छोड्यो न भायो, ता समय एक नयो पद बनाय गावत रोवत फिरनलगे, जाबृच्छसौं जायमिलैं तावृच्छकूं छोडैंनहीं, वृंदावनमैं तो वृच्छ बहोत इनके चित्तमैं अनुराग बहोत, अरये अकेले कहांलग मिलैं, है तीन दिन बिना प्रसाद जल ऐसैं ब्रितीत कीने, सो जापदकौं गाय गाय रोय रोय वृच्छनसौं मिले, सोवह यह पद ॥ बृंदावनकेरूंषहमारे मातपितासुतबंधु ॥ गुरुगोविंदसाधुगतिमतिसुपफलफूलनिकोगंधु॥ इनहिंपीठिदैंदीठअनतकरैंसोअंधनमैंअंधु ॥ व्यासइनहिंछोडैंरुछुडावैंताकोपरियोकंधु ॥ ॥ ३ ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं श्रीबृंदावन रासहोतहो तहांसबगुसाईं महंतु वैष्णव गृहस्थ दरसनकरत, तहांनृत्यकरतश्रीठकुरानीजुको नूपुरटूटिगयो, सो व्यासजूहू उहांबैठेहे, इन अपनी जनेऊ तोरि पाइके अंगूठामैं पकरि बटदैं नूपुर पोय चरनकैं बांधिदियो, यहदेषि कितेकतो रीझिगये,बहोत लोगनि निंदाकरी, तबव्यासजूनैं यहकही, इतनें दिन यहडोरा टोयो हो, सो

आजहीकामआयो, फिरि यापर एक पदवनायो ॥ सोवहयहप द ॥ रसिक अनन्यहमारी जाति ॥ कुलदेवीराधाबरसांनौ पेरोव्र जवासिनसौंपांति ॥ गोत गोपालजनेऊमालासिपासिपंडीहरिमंदि रभाल ॥ हरिगुनगानवेदधुनिसुनियतमुंजपषावजकुसकरताल ॥ सापाजमुनापटकर्मप्रसादप्रानधनरास ॥ सेवाविधिनिषेदजडसं गतिव्रत्तसदावृंदावनवास ॥ संमृतभागवतसंध्यातर्पनअरुगायत्री जाप ॥ वंसीरिपजजमानकलपतरु व्यासनदेतअसीससराप ॥ ॥ ४ ॥ पुनः अन्यपपप्रसंग ॥ व्यासजूवैष्णवनिको सीतप्रसा द प्रसिद्धलैनलगे, तबकितेक यात्रातकी चरचाकरनलगेजु, तुम कुटंब रापतहो, तुमारे कौंन व्याहनकौं आवैंगो, अरुतुम्हारेपुत्र कौंनकेव्याहोगे, कुटंबीनकौं ये जोगनाहीं, तवयाकहिवेपरि व्या सजूनैं एकपद वनाय सबनिकौं सुनायदियो ॥ सोवहयहपद ॥ इ तनैहैंसबकुंटब्रहमारो ॥ सेनधनानामांपीपाकवीररैदासचमारो ॥ रूपसनातनकोसेवकगंगजलभट्टसुपारो ॥ सूरदासपरमानंदमे हामीरांभक्तिबिचारो ॥ बांभनराजपुत्रकुलउत्तमकरतजातकौंगा रो ॥ आदिअंतभक्तनकोसवसराधावल्लभप्यारो ॥ आसूकोहरि दासरसिकहरिबंसनमोहिबिसारो ॥ इहिंबिविचलतस्यामस्यामा कैव्यासहिबोरोभावैतारो ॥ ५ ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ एकसमै व्यासजू कितक वैष्णूनौतेहे, तिनकौं अपनेघर प्रसाद लिवावतहे, उनकीपंकतिमैं आपहूबैठेहे, तहां व्यासजूकी स्त्री परोसतही, सोदूधप्रसादी सबवैसनवौंकौं परोसतआई, व्यासजूबैठेहे, तहां सबमलाई व्यासजूकौंपरोसदई, यावातसौं व्यासजू बहोतदुष पाय

लरनलगे, जो न कहिवेके वचनहेसो कहे, अरु वाठौरकौं छोडि औरठौरि बैष्णवनकैं जायरहे, केतेकादिन बीते, तब बईसनवनि ब्यासजूसौं हठिकरि घरिकूं ले गये ॥ उनकी स्त्रीको अपराध छिमा करायो, तब स्त्रीकूं सिछया देवेकूं एक नयो पद बनाय सुनायो, सो वह यह पद ॥ बिनतीसुनियोराधादासी॥ जासरीरमैंबसतनिरंतरनरकबातपितपासी ॥ ताहिभुलायहरिहिंट्ठगहियोहसतसंगसुषरासी ॥ बढैंसुहागताहिमनदीनैंऔरुबराकविसासी ॥ ताहिछांडिहितकरैंऔरुसौंगरैंपरैंजमफासी ॥ दीपकहाथपरैंकूवामैंजगतकरैंसबहांसी ॥ सर्बोपरिराधापतिसौंहितकरतअनन्याबिलासी ॥ तिनकीपदरजसरनव्यासजूकौंगतिवृंदावनबासी६॥ ॥ पुनः ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ ब्यासजू श्रीवृंदावन रहैं, सो एक समैं कोइक दिन निर्तक, वैष्णूं रसिकानिको सतिसंग रंग सुष समाज सब मिटि गयो, भले भले वैष्णूं अंतर ध्यान भये, यातैं बाह्य सुष भगवत सनबंधी सब जात रह्यो, केवल भावनामैं अंतरंग चितरहैं, तब लौंही सुष, फिर बाहिर चित आयो, अरु महा दुष ब्यापैं तब ब्यासजू, एक नयो पद बनाय बैष्णवनके बिरहमैं गावत रोवत फिरन लागे, जहां तहां कुंजगलीनमैं, ऐसैं कितेक दिन बिरह दुषमैं बिताये, पद प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ बिहारहिंस्वामीबिनकोगावै ॥ बिनहरिवंसहिराधावरकौंकोरसरीतिसुनावैं ॥ रूपसनातनबिनकोवृंदाबिपुनमाधुरीपावैं ॥ कृष्णदासबिनगिरधरजूकौंकोअवलाडलडावैं ॥ मीरांबाईबिनकोभक्तनिपिताजानिउरलावैं ॥ स्वारथपरमारथजे

मलविनुकोसकबंधकहावैं ॥ परमानंददासबिनअबकोलीलागाय सुनावैं ॥ सूरदासबिनपदरचनाकौंकौनकबहिकहिआवैं ॥ औरसकलसाधनविनकोअबकलिकालकटावैं ॥ व्यासदासइनबिनुकोअबतनकीतपतिबुझावैं ॥७॥ पुनः॥ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्यासजूके देहांतको समैं आयो, तब इनके बहन बेटादिक कुटंबके निकट आय बैठे, व्यासजूकौं कहन लागे, जो तुम अब हमकूं कौनकूं सौंपोहो अरु कहा कहोहो, हम कहा करैं, तब व्यासजू और कछु बोलेनांहीं अरु एक नयो पद बनाय उनकूं सुनाय दयो, सो वह यह पद ॥ बहिनीबेटाहरिकौंभजियो ॥ जासंगतितैंपतिगतिनासैंसोसंगतितैंलजियो ॥ मातपिताभइयाभामिनिकुलसभीसपासुषतजियो ॥ साधनिकेपंथचलियेऊबटचलैंसुवेगवरजियो ॥ गुरुहिंनआवैंगारिबातकीसोसांगरीसंजियो॥ व्यासाबिमुषदुजहूपरिहरिकैंसुपचभक्तिकीओटउबरियो ॥ ८ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ दोऊ नेत्र करि हीन एक ब्रजवासीको लरिका ब्रजमें सूरदास, सो होरीके भंडउवा बनावैं हतुकिया, ताके वासतैं श्रीगुसांईजूसौं जाइ लोगनिनैं कही, तापर श्रीगुसांईजू वा लरिकाकौं बुलाय वाके भंडउवा सुनें एसे, श्रीमुषतैं कह्योजु लरिका तू भगवत जस बनाय, श्रीभागौतके अनुसार प्रथम जनमहीकी लीला गाय, तब वानैं कही राजहूं कहा जांनौं, तब आग्या करी भगवत इच्छाहै, तू बनावैगो, ऐसैं श्रीगुसांईजूकी आग्यातैं भगवतलीला भ्यासी, सरस्वती जिव्हाग्र भई, प्रथमही प्रथमं श्रीसूरदासजू, जनमलीलाकी वधाई बनाय अरु श्रीगुसांईजू

कौं सुनवाई, तब वहोत प्रसन्न भये, कंठी दुपटा महाप्रसाद दयो, अरु सबनसौं आग्या करीजु श्रीठाकुरजूकी आग्यातैं हम कहतहैं, बरसवैं दिन जनमाष्टमींकी जनम लीलाकी जनमाष्टमीकौं श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगैं प्रथम एही बधाई गावैंगे सो अब लौं एही बधाई गावत हैं, सो वह यह पद ॥ राग आसावरी॥ ब्रजभयोमहरकैंपूतजबयहबातसुनी ॥ सुनिआनंदेसबलोकगोकुल गानिकगुनी॥ग्रहलगननछतबलसोधिकीनीबेदधुनी ॥ अतिपूरबपूरेपुन्यरुपीकुलअचलथुनी ॥ सुनिधाईसबब्रजनारिसहजासिंगार कियैं ॥ तनपहरैंनवतनचीरकाजरनैंनदियैं ॥ कसिकंचुकीतिलक लिलाटसोभितहारहियैं ॥ करकंकनकंचनथारमंगलसाजलियैं ॥ अपअपनैंघरतैंनिकसीभांतिभली ॥ मनौंलालमुनिनकीपांतिपिंजरनिचूरिचली ॥ गावैंमंगलगीतमिलिदसपांचअली ॥ मनौंभोरभयैंरबिदेषिफूलीकमलकली ॥ मनिश्रवनानितरलतरवनीबैंनी सिथलगुही ॥ सिरबरषतसुमनसुदेसमानौंमेघफुही ॥ मुषमांडैंरोरिरंगसैंदुरमांगछुही ॥ उरअंचरउडतनजानैंसारीसुरंगसुही ॥ पियपहिंचलैंपहुंचीजायअतिआनंदभरी ॥ लईभीतरिभवनबुलाइसबसिसुपाइपरी ॥ इकबदनउघारिनिहारिदेतअसीसषरी ॥ चिरजीवोजसोदानंदपूरनकामकरी ॥ धनिदिनधनियहरातिधनियहपहरघरी ॥ धनिधनिमहरिकीकूषिभागसुहागभरी ॥ जिंहिंजायोऐसोपूतसबसुषफरनिफरी ॥ थिरथाप्योसबपरवारमनकीसूलहरी ॥ सुनिग्वालनिगाइबहोरिबालकबोलिलियैं ॥ गुहिगुंजाबासिबनधानआंगनचित्रकियैं ॥ सिरदधिमा

षनकेमाटगावतगीतनये॥ मिलिझांझमृदंगबजातसत्रनंदभवनगये॥ इकनाचतकरतकनूलछिरकतहरददही ॥ मानौंवरषतभादौंमासन दीघृतदूधबही ॥ जहांजहांचलिजांहिकौतकतहींतहीं ॥ अतिआनंदमगनगुवालकाहूबदतनहीं ॥ इकधाइनंदपैंजाइपुनपुनपाइप रैं ॥ इकआपआपहीमांहिहसिहसिअंकभरैं ॥ इकअंबरसबैंउतार देतनसंककरैं ॥ इकदधिरोचनअरुदूबसबनिकेसीसधरैं ॥ तबनंद न्हाइभयेठाढेअरुकुसहाथधरैं॥ नंदीमुखपितरपुजाइअंतरसोकहरैं॥ घसिचंदनचारुमगाइबिप्रनितिलककरैं ॥ वरगुरुजनद्विजपहिराइ सबनिकेपायपरैं ॥ गइयागनीनजांहितरुनसुबछबढी ॥ चरैंजमुन कैंकाछदूनैंदूधचढी ॥ पुररूपैंतांबैंपीठसोवनसींगमढी ॥ दीनींद्वि जनिअनेकहरषिअसीसपढी ॥ वंदीजनमागधसुतआगनभवनभरे॥ सबबोलैंलैंलैंनामहितकोऊनांबिसरे ॥ अतिदानमानपरधांनपूरन कामकरे ॥ जोजिंहिंजाच्योसोइदीनौंरसनंदरायढरे ॥ अपनेमित्र सबंधहसिहसिबोलिलियैं ॥ मथिमृगमदमलयकफूरमाथैंतिलककिं यैं ॥ मनिमालापहिरायबस्त्रबिचित्रदियैं ॥ मानौंवरषतमासअसा ढदादुरमोरजियैं ॥ तवरोहिनीअंबरमंगायसारीसुरंगधनी ॥ दीनी बधूनिबुलाइजैसीजांहिबनी ॥ सबनिकसीदेतअसीसरुचिअपनी अपनी॥ अतिआनंदसौंबहुरींनिजगृहगोपधनी॥ घरघरभेरमृदंगप टहनिसांनबजे ॥ बांधीबंदनवारधुजाकलकलससजे ॥ तादिन तेएलोकसुखसंपतिनतजे ॥ सुनिसूरसबानिकीयहगतिजिनह रिचरनभजे ॥ १ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ एकसमैंश्रीसूरदा सजू, बाहिर एकांत स्थानबैठेहे, तहांहरि कृपा शद्बाहट सुन्यौं

तब नेत्रनिकौं चितमैं दुख करिकैं पद बनायो॥सो वह यह पद॥कहावतत्रैसेत्यागीदान ॥च्यारपदारथदयेसुदामांगुरकेसुतदयेआन॥ वभीषनकौंलंकदीनींप्रेमप्रीतपहिचान॥ रावनकेदसमस्तकछेदेद्दगहिसारंगपान॥प्रल्हादकौंनिजकृपाकीन्हीसुरपतिकियेनिदान॥ सूरदासपरबहुतनिठुरतानैंननहूकीहान॥२॥सो वह यह पद॥बनाय गायो, तबनेत्रव्हैंआये, अरु हरिदरसन भयो, तासमैं आग्याभई, तूकछुमांगि तबसूरदास यहमांगीजु मेरेनेत्र वैसेही मुदिजाय, यह रूप नैननिमैंलैकैं, अबऔरकहादेखौं, तबफिर वैसेही नेत्रहीन व्हैं गये, सो याभांति दरसनकरिकैं वाहीसमैं बनायो यहपद, सो वह यह पद॥सनमुषत्र्आवतबोलतबैंन॥नांजांनूंलिंहिंसमैंजुमेरैंसबतनश्रवनकिनैंन॥ रौंमरौंममैंसुरतिसद्दकीनषसिषलोचनत्र्ऐंन॥इतेमांझबांनी चंचलतासुनीनसमझीसैंन॥ तबजाकिथकिचकिठईमौंनसुषत्र्श्रवनपरैं चितचैंन॥ सुनहुसूरयहसत्यकिसंभ्रमकिधौंसुपनौंदिनरैंन॥ २॥ पुनः अन्य पद प्रसंग॥ वैष्णूं सूरदासजू तिनके बहोत पद हैं, अरु प्रसिद्ध हैं तिन सूरदासजूकी, स्तुति पातिसाह अकबर सुनि अरु सूरदासजू सौं मिलि, अरुउनकी परिछालैंनकौं यह कहीजु, तुम्हारी कविताकी बहोत बडाई सुनीहैं, तातैं कछुहमारोहू बर्नन करो तापर सूरदासजू, या बातके उतरकौं, एकपदही पढि सुनायो, सो सुनि पातसाह सहित सब सभा रीझिगई, सो वह यह पद॥ मनमैंरहीनाहिनठौर॥ नंदनंदनत्र्अच्युतकैसैंत्र्आंनियेउरत्र्औरं॥ द्यौंसजागतचलतचितवतिसपनसोवतराति॥ हृदैतैंवहमदनमूरतिछिनिनइतउतजाति॥कहतकथाअनेकऊधौलोकलोभदिषाइ॥

कहाकरहिहितप्रेमपूरनघटनासिंधुसमाइ ॥ स्यामगातसरोजआनन ललितमधुरसहास ॥ सूरऐसेरूपकौंयहमरतलोचनप्यास ॥ ३ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं अकबर पातसाह तांनसैंनसौं बूझीजु, तैं कौंनसौं गाइबोसीप्यो कोऊ तोहूतैं अधिक गावैं हैं, तब यानैं कहीजु मैं कौंनगनतीमैंहूं, श्रीवृंदाबन मैं, हरिदास जी नांमैं वैष्णव हैं, तिनके गायबेको हूं सिष्यहूं यह सुनि पातसाह तांनसैंनके संग जलधरीलैं श्रीवृंदावन स्वामीजूपैं आयो, पहि लैं तांनसैंन गायो बिनती करी महाराज कछु बोलिये तब श्री हरिदासजू, आलाप चारीकरी मलार रागकी, चैत्र बैसापको महीनौं हुतो, तब ताही बेर घटा घुमडि आई, मोर बोलनि लगे तब नयो बनाई बिष्णु पद गायो, तब ताही बेर बरपा हौंन लगी सो वह यह पद ॥ ऐसीरितुसदासरबदाजोरहैंबोलतिमोरनि ॥ आछेबादरआछेधनुषचहूंदिसआछीनोकीमेघनिकीघोरनि ॥ आ छीभूमिहरीहरीतापैंबूंदनिकीरैंगनिकामकरोरनि ॥ हरिदासकेस्वा मीस्यामाकुंजाबिहारीकैंगावतरागमलारजम्पोकिसोरकिसोरनि १॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं सूरदासजू कृष्णदासजूसौं मि ले, अरु पद चरचा करत भये, तासमैं गोधूलि कबरियां जांनि सूरदासजू कृष्णदासजूसौं कह्यो, यासमैं को एक पद अब हमहू बनावत हैं अरु तुम हू अब बनावो, सो सूरदासजूने तो दोय च्यार बनायलये, कृष्णदासजू बनाइबेकौं लगे, सो तत- काल बन्यौं नाहीं, यातैं संकोच भयो, तब ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ आप पद बनाय पत्रमैं लिपि कृष्णदासजूकी गोदमैं डारि दियो,

तव कृष्णदासजू आसश्चर्य मानि पत्रलैं पढिउठे, सो सुनि सूरदासजू रीझे बडे महानुभाव हैं, जानि गये कह्यो, यह तो तुमारी हिमायत वडी ठौरतैं भई, सो श्रीठाकुरजूनैं बनायो, सो वह यह पद ॥ रागगोरी॥आवतबनैंकांन्हगोपबालकनिसंगनईचुकीपुररैंनछुरतअलिकावली ॥ भौंहमनमथचापवंकलोचनबांनसीससोभतमत्तमोरचंद्रावली ॥ उदितउडराजसुंदरासिरोमनवदनानिरोषिफूलीनवलजुवतिकुमदावली ॥ अरुनसकुचितअधरबिंबफलउपहसतकछुकप्रगटितहोतकुंददसनावली ॥ श्रवनकुंडलभालतिलकबेसारिनाककंठकउस्तभमनीसुभगत्रिबलावली ॥ रतनहाटकषचितउरसिपदकनिपांतिबीचराजतसुभ्रझलकमुक्तावली ॥ बलयकंकनबाजूबंधआजांनुभुजमुद्रिकाकरतलबिराजतनपावली ॥ कुणितकरमुरलिकामोहतसकलबिश्वगोपिकाजनमनसुग्रथितप्रेमावली ॥ कटिछुद्रघंटिकाजटितहीरामईनाभअंबुजबलितभृंगरोमावली ॥ धाइकबहुकचलतभक्तिहितजानिपियगंडमंडलरचितश्रमजलकनावली॥ पीतकोसेयपरधानसुंदरअंगचरननूपरबजितगीतसब्दावली ॥ हृदयकृष्णदासबालिगिरधरनलालकीचरननषचंद्रिकाहरतातिमरावली ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं अधिकारी श्रीकृष्णदासजू श्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजूकें कछु बसन भूषनादिक सामग्री लैबेकौं श्रीगोवर्द्धनतैं दिल्ली आये, तहां रात्रिके समैं काहूकी अटारी पर एक रामजनी गायबेमैं महा प्रबीन ही सो गावत नाचत हुती, ताको गान सुनि मारगमैं रीझि थकित व्हैरहे, जान्यौंजु याको राग श्रीगोवर्द्धननाथ रिझवारके

सुनायबे जोग्य हैं, फिर वहैं उहां सौं अपनें घरकौं चली, तब ए वाकौं भगवत इछातैं बहोत द्रव्य दैकैं लैं आये, वासौं कह्योजु ह मारैं सरदारहैं सो बडे रिझवारहैं उदार सुंदर अपार चायकहैं, तुह्मारैं सब भांतको परम लाभ होयगो, ऐसैं मारगमैं उपदेस देत आये, वाहूकैं पराचीन सुध करिकैं श्रवनानुराग बढत गयो, ए श्रीगोवर्द्धन पहुंचे अरु वाकौं मंदिरमैंलैंआये, तहां लौं वानैं भेद भगवत सेवा सरूपको न जान्यौं हो, कीरतन आरंभ कियो कृष्णदासजू एक अपनौं बनायो एक पद कंठ करायो हो,सो गावत भई, इतनैंहीमैं टेरा षैंच्यो, तब महा सुंदर माधुरी देषि, सजल नैननि इक टक रीझि छकि रहि गई ॥ दोहा ॥ सषियांकषियां हाथदैं, तनराष्योठहराय ॥ मनहरिमंदिराछबिछक्यो, दईनारिल रिकाय ॥ १ ॥ ऐसैंकृष्णदासजूकीभेटठाकुरकैंअंगीकारभई ॥ वाकीमति आकर्षन करिलई, फिरि याभांति अश्रुधाराचलत महा प्रेमावेस सहितअभिनय बनावत गावत जबभोगकौतुकआई, तब वाकोसरीर छुटिगयो, सबनि बिस्मय व्हैं धनि धनि कर्यो, बडेबडे मर्यादाछाडि वाकीदेहक्रिया करन संगगये, सोजापदगावतमैंश्रीकृष्णदासजूकीकृपासतिसंगतैं रामजनीभी सरीरछाडि भगवतप्राप्ति भई ॥ सो वह यह पद ॥ मोमनगिरधरछबिपरअटक्यो ॥ ललितत्रिभंगानिपरचलिगयो तहांहिंठटक्यो ॥ सजलश्यामघनबरनलीनव्है फिरचितअनततनभटक्यो ॥ कृष्णदासकियेप्राननौछावरयह तनजगासिरपटक्यो ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ काहू समैं श्रीगोस्वामि विठ्ठलनाथजू, भगवत इच्छा आधीन व्हैकैं श्रीगोवर्द्ध-

नतैं फेर बिदेसकौं गवन कीनौं, कलिके जीवनिकौं ब्रह्म संबंध करिबेकौं, तहां अपनौं सेवक कुंभनदास हुतो, ताहूकौं संगलीनो सो गुर आग्यातैं नांही न करिसक्यो, जहां पहिलेई दिवस जाइ उतरे, तहां सब बृछनितैं ऊंचो एक बृच्छ देषि ताबृच्छकी टिगुसी-पर कुंभनदास चढे, श्रीमंदिरको दरसन करिबेकौं, एक पहरहीकी अंतरायमैं, जहां एक पद नयो बनायकैं गायो, सो वा पदको भोग आयो, तब टिगुसीतैं भूमिपर गिरयो, श्रीठाकुरकी कृपातैं जीवसौं बच्यो, यह देषि, महाआसक्तवानजानि श्रीगुसांईजू कुंभनदासकौं श्रीजी पासिही छोडिगये, सो वह यह पद ॥ कितेकदिनव्हैंगयेबिनदेषैं ॥ तरुनाकिसोररसिकनंदनंदनकछुकउठतमुखरेषैं॥ वहचितवनिवहचालमनोहरवहबांनिकनटभेषैं ॥ वहसोभावहकांतिवदनछबिकोटिकचंदबिसेषैं ॥ मदनगोपालसंगखेलनकीआवतहियैंउमेषैं ॥ कुंभनदासलालगिरधरबिनजीवनजनजनमअलेखैं ॥ १ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीगोवर्द्धनपर श्रीगोवर्द्धननाथजूको मंदिर,तामंदिरके सामुहैंगांव जमुनावतो, तहां गौरवाकुंभनदासनांव, श्रीगुसांईजूको सेवगर हैं, सोदिनकौंतो जथाजोग्य भजन व्यबहार जथाजोग्य समैंहोयसो सबकरैं,अरु राति बहोतजाय तबसोइबेकौं अपनी ऊंची मैरी तहांजाय, सो व्हांजातही प्रेमावेस व्हैंजाय,यहदसाहोते कितेक दिनभये, एकसमैं पूरनप्रेम अवस्था न भई, कछुथोरीभई तबतहांदूरतैं, श्रीगोवर्द्धननाथके मंदिरके दीपगकौं देखिदेखि, अश्रुपुलकिप्रेमसहित एकपद बनाय बनायगायो, सोवहपदसुन्यौंसबानियहभेद

जान्यौं ॥ जोयेमंदिरकेदीपगकौंदेखिनित्यआवेसास्थिततहोतहैं ॥ सोवहयहपद॥ वेदेखोवरतझरोखनिदीपकहरिपौढेऊंचीचित्रसारी॥ सुंदरबदननिहारनकारनरापेहैंबहोतजतनकरिप्यारी ॥ कंठलगाय भुजदैंसिरहांनैंअधरअमृतपीवतापियप्यारी ॥ तनमनमिलीप्रानप्यारेसौंनउतमरसबाढ्योअतिभारी ॥ कुंभनदासप्रभुसौंभगसीवांजोरी भलीबनीइकसारी ॥ नवनागरीमनोहरराधेनवललालगोवर्द्धनधारी ॥ २ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीमद्गोस्वामिबिठ्ठलनाथजीभगवतइच्छाआधीनव्हैंकैं बिदेसपधारे, कलिकेजीवनिकौं ब्रह्मसंबंध करिबेकौं, तहां अपनौं सेवकचतुर्भुजदास तिनहूकौं संगलीनौं, तहांबिदेसमैं, श्रीगोवर्द्धननाथके बिरहतैं, एकपदचतुर्भुजदासजीनैं बनायो, तापदपर रीझिकैं ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ दरसन दीनौं अरु यह अग्यादईजुयापदकौं कोऊ जो बरसादिनतक नित्यप्रति गावैंगो, जो मेरो दरसन पावैगो, सो आगैं गायो तिहिं श्रीगोवर्द्धन बिषैं॥ श्रीगोवर्द्धननाथ बिराजते॥ तहां तिनको दरसन पायो, अब गावति हैं सो मेवारमैं सिहारगांव तहां वेही ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ बिराजत हैं तहां जाय दरसन पावत हैं, सो वह यह पद ॥ गोवर्द्धनबासीसांवरेतुमाबिनरह्योहिन जायहो ॥ बंकचितैंमुसकायकैंसुंदरबदनादिखायहो ॥ लोचन तरफैंमीनज्यौंजुगभारिघरीविहायहो ॥ सप्तकसुरबंधानसौंमोहनवैं नवजाय ॥ सुरतिसुहाईबांधिकैंमधुरैंमधुरैंगाय ॥ रसिकरसीलीबोलनीगिरचढिगायबुलाय ॥ गायबुलाईधूमरीऊंचैंटेरिसुनाय ॥ दृष्टिपरेजाद्यौसतैंतबतैंरुचैंनआंन ॥ रजनीनींदनआवहींबिसरेभोजन

पान ॥ दरसनकौंनैंनातपैंबचनसुननकौंकान ॥ मिलबेकौंहियरातपैंजियकेजीवनप्रान ॥ मनअभिलाषायहरहैंलागैंननैंनानिमेष ॥ इकटकदेषौंभांवतोनागरनटवरभेष ॥ पूरनससिमुषदेषिकैंचितचिहुट्योवाहिंओर ॥ रूपसुधारसपानकौंजैसैंकुमदचकोर ॥ लोकलाजबिधबेदकेमैंछाडेसबैंबिबेष॥कमलकलीरबिज्यौंबढैंछिनुछिनुप्रीतबिसेष॥ मनमथकोटिकवारनैंदेषिडगमगीचाल ॥ जुवतीजनमनफंदनाअंबुजनैंनबिसाल ॥ कुंजभवनक्रिडाकरोसुषनिधिमदनगोपाल ॥ हमबृंदाबनमालतीतुमभोगीभंवरभुवाल॥ यहरटलागीलाडिलेजैसैंचातकमोर ॥ प्रेमनीरबरषायहैंनवघननंदकिसोर ॥ जुगजुगअबिचलराषियैंइहिंसुषसैलानिवास ॥ श्रीगोवर्द्धनधररूपपरबलिजायचतुर्भुजदास॥ २॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ और भट श्रीगदाधरजी महापंडित विष्णुपद बोहोत सुंदर बनावैं सो सुनि सुनि बृंदाबनमैं वैष्णव बहोतरीझे, एक समैं एक बिष्णु पद बनायो, तामैं ऐसी तुक बनाई (हूंतोस्यामरंगरंगी,) सो यह पद सब वैष्णवननैं पत्री लिपि अरु लिष्योजु, दूर बैठेहीं तुमारो चितरंग्यो गयो सो यहऊआसचर्य, अरु हरि कृपाकी परा अवधिताहैं, परंतु स्याम रंगकीरैंनीतो श्रीवृंदावन हैं, यहां आयें औरभी वहोत गहरौ रंगचढैंगो, यह पत्री लै एक बैष्णव गयो, सो भट गदाधरजी नगरके बाहिर एक कूपपर बैठे दांतन करत हुते, भटजी वैष्णवकौं देषि पूछ्यो तुम कहां रहो हो, तब वैष्णव कह्यो श्रीबृंदावन रहौंहौं, भट गदाधरजीपैं आयोहुं, सब वैष्णूंनै पठयो हैं, यह सुनि भाग्य मानि आनंद मैं मूर्छित भये,

तब वैष्णूनै और लोगनिसौं पूछी, एकौंनहैं, तब सबनैं कही भट गदाधरजी एई हैं, तब भटजीकी बाह्यदसा भई, तब वहैं पत्री उहांहीं पढि उहांहींतैं, श्रीवृंदावनकौं उठि चले, घरां न गये, श्रीवृंदावन आये, बहोत रंगसौं श्रीवृंदावन वास कीनौं, इनकौं इनहींके पदकी वार्त्ता चातुर्य्यतासौं लिषि वृंदावन बुलाये, सो वह यह पद ॥ हूंतोस्यामरंगरंगी ॥ देषिविकायगईवहमूरतिसू रतिमांझपगी ॥ पौढीहुतीअपनैंस्वपनैंसषीसोयगईरंगभोय ॥ जागेतैंआगैंदृष्टिपरैंवहिनैंकनन्यारोहोय ॥ एकजुकन्हैयामेरेनैंननिमैं निसत्र्योसरह्योकरिभौंन ॥ गायचरावनजातसुन्यौंसषीसोधौंकन्हैयाकौंन ॥ कासोंकहूंकोपातियायमेरैंकौंनकरैंवकवाद ॥ कैसैंकैंकह्योजातगदाधरगूंगेपैंगुरस्वाद ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक सूरधज ब्राह्मण गृहस्थ उनकैं नेत्र तो आछेहे, परंतु नाम सूरदासजी, पातसाही एक परगनांके दिवांनहे, सो हरिगुर वैष्णवन कीटहल तन मन धन प्रेमकारिकैं करते, अपने घरके रुपीयातो वैष्णावनकौं षुवावतेही, परंतु कछु पातसाही षजानेकेभी रुपीया वैष्णावनकौं षुवाइ देते, एक समैं असो भयोजुपरगनांके सब रुपीया वैष्णवनकौं षुवाइदये, कछु बाकीन राषी, थेलीनमैं पथर भरिभरि बीजककी ठौर एक विष्णुपद लिषि सब थेलीनमैं, वह कागज डारि दियो, सो उनथेलीके संदूक तो पातिसाहकी वोर चलवायो, अरु आप गृहस्थकौं त्यागकारि आधीराति भागि आइ वृंदावन आइ बैठे, जो बीजककी ठौर पद लिषि थेलीनमैं धरयोहो सो वह यह पद ॥ तेरालापसंडेलैंउपजे ॥ सबसाधनमि

लिगटके ॥ सूरदासमदनमोहनमिलि । आधीरातिसटके ॥ १ ॥
अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं ठाकुर श्रीमदनमोहनजीकैं उत्सवपर गुसांई महंत वैसनव एकठे भये, एक काहू बैष्णूंके मनमैं आईजुसूरदास मदन मोहन यह पद बनायो हैं, ताकी भोगकी तुकमैं यह धरचो हैं, ॥ सूरदासमदनमोहनजनमजनम गांऊं, ॥ संतनकीपांनहीकोरच्छिकाकहांऊं, ताकी आज परिच्छा लीजैं सो सूरदास वाही समैं दरसनकौं आवति हुते, तब वा बैष्णूंनैं द्वारपैं ठाढैं सूरदास सौं यह कहीजु, मेरी पांनही धरीहैं, तुम देषत रहियो, मैं दरसनकौं जातहौं, सो यह कहि बैष्णूं तो मंदिरमैं आयो, अरु सूरदास उनकी पांनही हाथ लियें ठाढे रहे, और बैष्णनवकी पांनहींही, सोऊ बनाय बनाय धरी, ठाढेरषवारीकरी, भीतरि सौं गुसांई महंत बुलावैं, ये न जाय, कहैं महाराज मेरो तो मनोरथ आजही पूरन भयो हैं, बैष्णवनकी पांनहीकी सेवा करतहूं, तब सब प्रसन्न भये, जो बैष्णाव परीच्छा लेतहुतो सो रीझिपाइनपरचो इततैं एऊगिरे, सो जा पदपर ऐसी भांति परीच्छा लई, सो वह यह पद ॥ मेरैंगतितुमहीअनेकतोषपांऊं चरनकमलनषमनिपरबिपैंसुषवहांऊं ॥ घरघरजोडोलौंहरितोतुम्हैं लजांऊं ॥ तुह्मारोकहायकैंअबकहोकौनकोकहांऊं ॥ तुमसेप्रभूछाडिकहादीननिकौंधांऊं ॥ सीसतुह्मैंनायकैंअबकौनकौंनवांऊं ॥ कंचनउरहारछाडिकाचक्यौंबनाऊं ॥ सोभासुभहांनिकरौंजगतसब हंसांऊं ॥ हाथीतैंउतारिकहागदहाचढिधाऊं ॥ कुंमकुंमकोलेपछाडिकाजरमुंहलांऊं ॥ कामधेनुघरमैंताजिअजाक्यौंदुहांऊं ॥ कनक महलछाडिक्यौंअबतृनमंडईछांऊं ॥ पाइनजोपेलोप्रभूतोनअनत

जांऊं ॥ सूरदासमदनमोहनगुनजनमजनमगांऊं ॥ भक्तनकीपांन हीकौरच्छिकाकहांऊं ॥ २ ॥ पुनअन्यपदप्रसंग ॥ एई सूरधजसूर दास गृहस्थको त्यागकारि श्रीवृंदावन आयवैठे ठाकुर श्रीमदनमो हनजीके सेवक आसक्त वांनहे, केवल सिंगार रसहिके पदवनाव ते, जहां अपनौं भोग पदमैं धरते, तहां सूरदासमदनमोहन या भांति धरते, तातैंसूरदासमदनमोहन यहइनके नामकी छाप परी, एपद बनावते सो वेगप्रसिद्ध वहोत होतो, एकसमैं एक पद सरद की पूरनवासीके दिवसबनायो, सोपद जादिन वन्यो वाहींदिन च्यारसैं कोसपर भगवत कृपातैं काहूठौर सरदकी पूरनवासीकौ हो बैष्णवनमैं प्रगटभयो, वोहोत बैष्णवननैं कंठकियो, जव बै- ष्णवश्रीवृंदावन आये, अरु वह पद उन वैष्णवनगायो, तव औरलोगननैं पूछी. जोतुम यहपद कहांसुनिकंठकियो, तव उन बैष्णवन कहीकि यहांतैं च्यारसैकोस (अमकेदेसमैं) सरद की पूरन वासी कौंसुनि कंठकियोहौ॥ तवयहपरच्यो जान्यौं ॥सो वह यह पद ॥ उरझीकुंडललटबेसरिसौंपीतपटबनमालाबीचआ यउरझेहैंदोऊजन ॥ नैननिसौंनैनबैनबैंनानिउरझिरहेचटकीलीछ बिदेषेलपटातस्यामघन ॥ होडाहोडीनृत्यकरैंरीझरीझअंकभरैंतता थेईथेईथेईकहतमगनमन ॥ सूरदासमदनमोहनरासमंडलमैंप्यारी कोअंचरलैंलैंपौंछतिहैंश्रमकन ॥ ३ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक सूरधज ब्राह्मन तिनकेनेत्रतोहुते, परंतु ठाकुरके बिष्णुपद वना वते, तामैंभोगसूरदास मदनमोहन औसोधरते, यातैं इनकी सू रदासमदन मोहन छापभई, ठाकुर श्रीमदनमोहनजूके वडे आ-

सक्तवान बैष्णवभये, तिनको हृदै केवलसिंगार रसमईही व्हैगयो, ब्रजभूमिमैं जोलीलादेषैं सोइनकौं सिंगाररसमईही भासैं, काहूसमय मथुरा श्रीकेसौरायजूकैं मंदर चोरीभई ठाकुरके आभरनादिक द्रव्यगयो, ताकी जहां तहां बातैं हौंनलगी बहोत, सो सुनिकैं सूरदासमदनमोहनजूकौं यहभासी, ठाकुरसुसरारिपधारेहैं, तहांके लोकरीत अनुसारि सुसरारिके अंतहपुरके लोकनिनैं हासके लियैं भूषनादिक चुरायधरेहैं, तबयाही भावको नयो एक बिष्णुपदबनायगायो, तासमै बहुत प्रसिद्धभयो, सो वह यह पद ॥ गहनौचुरायोमाईकाहूकेसोरायको ॥ माथेकोमुकटलीनौंकंगनांजरायको ॥ मुषकीमुरलीलीनीजोरालीनौंपायको ॥ गांवबरसांनौंसबसुषदायको ॥ स्यामजूकीसुसरारिराधेजूकोमायको॥ चोरहूकेभागजागेसबसुषदायबो ॥ सूरदासमदनमोहनबहुरिघबरायबो ॥ ४ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक गृहस्थकायथ महाबैष्णव, षरगसैंननाम, सो बिष्णुपद बहोत बनायो कैरं, अरुताकी रास दरसनसौं बहोतअधिक रुचि, सोबहोत द्रव्य लगाय लगाय रास उत्सव कियोकरैं, सो एकसमैं सरदकी पूरनवासीकौं रासमंलके चौतरापर रासमैं, एक पदबनावत हुते, सो जब भोगदै चुके, तब अपनैंई पदपैं रीझिप्रेम बिबसव्हैं देहछोडिदई, सो वह यह पद ॥ ह्वैगोपिनाबिचाबिचनंदलाला ॥ स्याममेघकैदुहूंओरराजत नवदामिनबाला ॥ करतनृत्यसंगीतभेदगतिगंजतगर्वमराला ॥ फहरतअंचलचंचलकुंडलथहरतहैंउरमाला ॥ मध्यरलीमुरलीमोहन धुनिगानवितानछयोतिहिंकाला ॥ चलियझमाकिझंकारबलयामि

लिनूपूरकिंकनिजाला ॥ देवविमाननिकौतकमोहेलपिभयोमदन विहाला ॥ षर्गसैंनप्रभुरैनसरदकीवाढयोरंगरसाला ॥ १ ॥ अथअ न्यपदप्रसंग ॥ श्री व्रजमैं एक नरवांहननाम जमींदाररहैं, सौदौ डिकारि काफला मारयोकरैं, एकसमैं एक काफलापरदौरे, गृहस्थ एकलाषनिको द्रव्यालियैं जातहो, ताकोद्रव्यालियो सहित पकरि ल्याये, अपनैघर वंदीपानैंमैंदियो, सो वहगृहस्थ श्रीहरिवंसजी को शिष्यहुतो, अरुयह नरबाहनहू शिष्य हरिवंसजी कोही हुतो, सो इन दोऊनकौं षवरि नही, जो हम एक गुरके शिष्यहैं, सो वह गृहस्थ एक समैं भुरहरीकी वेर वंदीपां- नांमें पद पाठ करन लग्यो, हरि वंसजीकी चौरासीके, वाके नित्य नेमहो, सो सुनि नरवाहन दोरि जाय पूछ्यो, तुम कौंनके शिष्यहो, तव वानैं हरिवंसजीको नाम लियो, सो सुनिवाको द्रव्य वाकौंदैं दंडोत करि सीष दई, यह वात श्रीहरिवंसजी सुनि आ- ग्या करीजु, या कलिकालमैं लाषनिको द्रव्यदैं डारिवो गुरके नाम पर, महा कठिनहैं, वहोत प्रसन्न भये, सो द्वै पद बनाये, तामैं अपनैं शिष्य नरवांहनको भोग दीनौं, सो अजहूं वेपद चोरासी केपदनिमैं उनको पाठ, उनके शिष्य साषा पाठ करतहैं, सो वह यह पद ॥ मंजुलकलकुंजदेसराधाहरिविसदवेस राकानभकुमदव धूसरदजामिनी ॥ सांवलदुतिकनकअंगविहरतामिलिएकसंग नीरद मनिनीलमधिलसतिदामिनी ॥ अरुनपीतनवदुकूल अनुपमअनुरा गमूल सौरभजुतसीतअमितमंदगामिनी ॥ किसलयदलरचितसैंन बोलतपियचारुबैंनमांनसहितप्रतिपदप्रतिकूलकामिनी ॥ मोहनम

नमथतमार परसतकुचनीवीहार वेपथजुतनेतिनोतिवदतिभामिनी॥ नरबाहनप्रभुकेलिबहुबिधभरेभरतझेलि सौरभरसरूपनदीजगतपावनी ॥ १ ॥ चलहिराधिकेसुजानतेरेहितसुषनिधान रासरच्यो स्यामतटकलिंदनंदिनी ॥ नृतितजुवतीसमूहरागरंगअतिकतूहलबाजतिरसमौलिमुरलिकाअनंदिनी ॥ बंसीबटानिकटजहां परमरचन भूमितहां सकलसुषदमलयबहैं वायुमंदिनी ॥ जातीइषदविकास काननअतिसैंसुबासराकानिससरदमासबिमलचांदिनी ॥ नरबाहनप्रभुबिहारिलोचनभरिघोषनारिनषसिषसौंदर्यकामदुषनिकंदिनी ॥ २ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ जिन बुंदेलांनके राजगुरप्रोहित व्यासजी हुते, सो बुंदेलाको नाम मधुकर साह राजा, परम भक्तिवांन भये कंठी तिलक धारी बैष्णव मात्र आवैं, तिन सबकी सेवा प्रीत करि रीतपूर्बक भली भांति करैं, अरु सतसंग जाको करैं ताको समझिकैं करैं, सो वा मधुकर साहके भाई बंधु कितनेंक इनकी बहोत निंदाकरैं, दुष मानैं कहैं कि देषो कितेक बैष्णव प्रतच्छ औगुन भरे आवैं, तऊ ए सेवाकरैं, एकंठी तिलक ही देष लेवैं हैं,इनकौं और कछु षबर नहीं, तब उन सबन मिलिमतो करि, एक गधाके बहोतसी कंठी बांधि गहगहे तिलक छापे करि आगले दोऊ षुरनिमैं सुमिरणा पहिराई। कारे डोरांनकी गूदडी उढाई। जहां मधुकरसाह भीतर बैठे हे। तहां वा गधाकौं छोडि आगैं उनपैं चलाय दियो, तब मधुकरसाह देखि उठि साम्हैं आये और दंडोत करी, परकरमां करी, उनकैं गनेसदे नांव रानी हुती, सो झारीलैं आई, कह्यो इनको चरनामृत लेहु,

तव चरनामृत ले पियो, घर छिरक्यो, पवित्र करणके लियें, सो यह वार्ता व्यासजी सुनि वहोत राजी प्रसन्न भये, अरु एक पद बनायो, तामैं मधुकरसाहकोहू नांव दियो, सो वह यह पद ॥ भक्तिबिनकिनअपमानसह्यो ॥ कहाकहानअसाधनकीनौंह रिबलधर्मरह्यो ॥ अधमराजमदमातैंलैरथसौंजडभरथनह्यो ॥ पठझ टकतद्रौपदीनमटकीहरिकोसरनचह्यो ॥ मत्तसभाकैरवनिबिदुरसौं कहाकहानकह्यो ॥ सरनागतिआरतिगजपतिकौंआपुनचक्रगह्यो ॥ हाहरिनाथपुकारतआरतकौंनऔरनिबह्यो ॥ व्यासवचनसुनिमधुक रसाहैंभक्तिपनसदालह्यो ॥ २ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ एक बैष्णव बिरक्त नाम नागरीदास, अति महानुभाव, पूरन कृपा पात्र तदाकार, श्री स्वामिनीजीको उपासिक, सो बरसांनैं बासकरैं, एक कुटीमैं रहत हे, सो वाकुटीको दरसन प्रदछिनाजात्री जायहैं सो अब लौंकरैंहैं, असे नागरीदासजी भये तिनकौं श्रीस्वामिनीजी रहस्यसमैं दरसन दीनौं, वासमैं तो बिवस व्हैंगये, फिर वहोत बेर पाछैं बाह्य दसा भई, तब एक पद बनायो, जाभांति दरसन भयो हो, वाही भांतिको, सो वह पद गावत रोवत फिरन लगे, तब यह प्रसिद्ध भयो, सोवह यह पद श्रीराग ॥ गहवरगिरसाकरीगली ॥ रहीनसंभारदेहसुधिबिसरीमिलीऔचकवृषभानलली ॥ दच्छिनकरगैंदुककुसमनकीबांमअंसभुजसुहृदअली ॥ अंचरडारैंआधैंसिरछबिमत्तदुरदगतिआवतचली ॥ गुनप्रयोगसहचारिसंभरावतहृदैरूपमूछीसुचली ॥ नागरीदासमिटायललकरातिमिलतउरजउरगतिबदली ॥ ३ ॥

अथ अन्यपद प्रसंग ॥ वैष्णव एक भगवानदासजी महानुभाव मिंहीं उपासिक, सो एक समैं उनकों देहांत हौंन लग्यो, ता समैं सावधान होय उठि बैठे, तब लैगनिनैं पूच्छो, महाराज तुम्हारो अब चित्त कौंन ठौर हैं, तब कह्योकि मोकौं, तंमूरा आंनिदेहु जहां मेरो चित्त हैं, सो बताऊं, तब तमूरा लेकैं एक पद गायो, सो वापदके भोगकी तुक यह आईजु, ॥ सुमिरन मांझ समांनीरी ॥ वाही समैं तमूरा तो हाथमैं रह्यो अरु इनकी देह छुटि गई ॥ सो वह यह पद ॥ मैंचलीरीतहांजहांमोहनमुरलीमधुरमधुर सुरबाजैंरी ॥ जमुनापुलिनसुभगवृंदाबनमदनगोपालबिराजैंरी ॥ सजलनीलघनस्यामबरनतनबसनदामिनीछाजैंरी ॥ मोरमुकटकी सोभाबरनौंइंद्रधनुपद्युतिलाजैंरी॥ घूघरवारीअलकैंझलकैंचंदनतिल कलिलाटैंरी ॥ अमलकमलदलमंजुलनैंनाजोवतदैंममवाटैंरी॥ कुंडलकिरनकंठकउस्तभमानिआनंदपुण्यप्रकासीरी ॥ देषैंबनैंवह चरनधरनगतिकौतककुंजनिवासीरी॥ जाकोमनमिलिरह्योकृष्णा सौंताकीअकथकहानीरी ॥ कहैंभगवानहितरामरायप्रभुसुमिरनमांझसमानीरी॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक समैं छीतस्वामी राजा वीरबलकों दरसन दैंन आगरैं आये, सो छीतस्वामीहू श्री गुसांईजूके सेवक हुते, अरु बीरबलहू श्रीगुसांईजूको सेवक वैष्णव जान्यौं हुतो, यानातैं कोई दिवस बीरबल ढिग रहे, फिर इनकी बिदाकीनी सौ बिदा कियैं उपरांति एक दिवस । भगवत चर्चा करतमैं छीतस्वामी विष्णु पद पढ्यो, ताकौं सुनि राजा वीरबल कह्यो, इतनांभी तो बढिकैं कहनां क्या लाजम, सो सुनि

छीतस्वामी दुप पाइ आइ रुपइया बीरबलनैं भेट किये हुते, सो मालजादीनके मंडलमैं, ठाढे होय उनकौं बांटिकैं चले आये व्रजकौं, कह्यो कि तिह्नकैं गुरु नेष्टा नहीं। उनके रुपइया, भगवत सनमंध न लगैं, ये मालजादीन लायकही हुते, सो या बिष्णु पद पर इतनौं भयो॥ सो वह यह पद॥ जे वसुदेव किये पूरनतपतेईफलफलितश्रीवल्लभदेव ॥ जेगोपालहुतेगोकलमैंतेईअ बआंनिवसेकरगेह ॥ तेवेगोपबधूहुतीव्रजमैंजेअबबेदारिचाभईएह ॥ छीतस्वामिगिरधरनश्रीविठ्ठलवेईयेईयेईवेईकछुनसंदेह॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्यासजीके छोटे बेटा किसोरीदासजी श्री बृंदावनमैं रहैं, पद बहोत आछे बनावैं, एक समैं एक पद रासको बनायो, सो वा पदको गांन बहोत बन बीच नित्त सिद्ध पर करमैं सुन्यौं, महानुभावहे, तिन किसोरीदासजी सहित दरसन तो काहूकौं न भयो, अरु वह पद गावतही सुनि सब बिबस भये, सो वह पद वैष्णव तथा रासधारी मात्र तिन सबमैं अबलौं बहोत प्रसिद्धहैं। सर्व रासधारी गावतहैं ॥ सो वह यह पद ॥ एदोउनृत्ततिरासमैंरसिकप्यारीदेषतिसबनिकोमनहरैं ॥नष सिषकुंवरिसिंगारीछबिउपजतभारीतत्तथेई बोलतलालनबिहारी ॥ ॥ १ ॥ मृदंगबजावतललितारीसुधंगदेसीन्यारीएकबजावततारी॥ मिलवतगतिन्यारी तिनमैंराधिकाप्यारीलेतउरपतिरपारीलालनरी झिकैंवारतकंठकीमुकतामालारी॥२॥ सुपदबृंदाबनसघनफूलेपुहपा रीत्रिबिधिपवनसुपकारी ॥ जमुनापुलिननिसारीतैंसियसुभगराका री ॥ प्राचीदिसभयोउडिराजारीकहतनबनैसुच्छसरदकीउजिया

री॥३॥ किंकिनीनूपुरबाजारीधुनिसुनिदेहबिसारीदोऊरासमैंमगन्नर हतसदाव्यैहारी॥च्यारचरनरजाकिसोरीदाससिरधारीवृषभानकीदु लारीतिनपरकरैंतनम नवलिहारी॥४॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक कोई गृहस्थ महापंडित सो शास्त्रकी चरचा बिवाद करिकरि बहोत पंडितन कौं हरायो करैं, ताकौं भगवत इछातैं अरु पराचीन सुधितैं, बैष्णवको सतसंग भयो, तासौं रसरूपा भक्ति उत्पन्नभई, सा-स्त्रकी बिबाद चरचा सब छाडिदई, जगत सौं बैराग उपज्यो, तब वह पंडित देशांतर सौं श्रीबृंदाबन आयो, ताके चित्तमैं यहैंजु इहांके बैष्णावनसौं सब भांतिकी चरचा बिबाद करि झग-रौंगो, जो कोऊ या बृंदाबनके सांचे रंगमैं रंग रह्यो होयगो, सो मोसौं बिबाद चरचा न करैंगो, ताहीको शिष्यव्है बैठि रहूंगो, सोवानैं वहोतन सौं बिवाद चरचा कीनी,करत करत पहर पहर द्वै द्वै पहर बिताई, बिबादमैं कितेकनकौं बिरोधहू उपजायो, अपनैं मनतैं कोऊहारयो नहीं, अैसै कितेक दिन बीते,तब उन भगवान सषीनाम वैष्णव तिनपैं आय कह्यो, हमसौं चरचा करो, सो तासमैं भगवान सषी कीरतन करतहे, इनकौं उतरहू न दियो, केवल दंडौतही कीनी अैसैं द्वै तीन बेरभई, निधान वा पंडितनैं, भगवान सषी सौं कही कि केवल कीरतनही करि जानतिहो कि कछु समझोबीहो हमकौं तो तुम असमझसे दीसो हो कछु समझो होतो बोलो, तब वैष्णव भगवान सषीजी एकनयो पद बनाय वाके समझाय बेकौं गायो सो सुनिकैं वाके प्रेमके अश्रु पुलकि व्है आये, दौरि पायनि परयो, अरु उनको बरजोरी

शिष्य व्हैकैं, गृहस्थ त्याग बृंदावन बास कीनौं, वह पद तब व्रजमैं बहोत प्रसिद्ध भयो, अब लौंभी प्रसिद्ध हैं, सोवहयह पद ॥ ओरकोऊसमझ्झोसोसमझ्झोइतनीहमकौंसमझिभली ॥ ठाकुर नंदकिसोरहमारैंठकुरायनिवृषभानलली ॥ सुबलआदिसबसखा स्यामसंगस्यामासंगललितादिअली ॥ व्रजसुखबाससैलबनविहरन कुंजनकुंजनरंगरली॥ तिनकोलाडचावसेवासुखभाववेलिबढिसुफल फली ॥ कहैंभगवानहितरामरायप्रभुसबतैंउनकीकृपाबली ॥ ३ ॥

॥ अथअन्यपदप्रसंग, ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथजीको कीरतनियां नाम स्यामदास बहोत भावक बैष्णु तानैं एक धमारि बनाई, जापर श्रीगोवर्द्धननाथ रीझि श्रीगुसांई विठ्ठलनाथजीसौं आग्याकीनी, जो होरिके दिननिमैं यह धमारि नित्य हमकौंसु नायोकरैं, यह कीरतनियां हमारोहैं, यह तथा याकेवंसको कैसो हीहोहु, मेरेयांहीं कीरतन कियोकरैं, जाधमारिपर याभांति स्या मदासकौं अपनायबो प्रसिद्धभयो, सो वह यहधमारि ॥ होरीषेल तमदनगोपालफागसुहांवनौं ॥ व्रजजीवनिनंदलालअनंगलजांव नौं ॥ सुबलसुबाहुश्रीदामासषासंगराजहीं ॥ बौहआवजरुंजमुरज मुरलीडफबाजहीं ॥ करनिकनकपिचकारीफैंटअबीरकी ॥ भरि भांवरिसौंकावरिकेसरिनीरकी ॥ इहिंबिधिसाजसमाजचलेवृषभा नकैं ॥ मुनिमनसागइभूलिसुनतधुनिकानकैं ॥ उततैंझुंड़निचलि आईव्रजबासिनी ॥ तिनमैंकुंवरिकिसोरीनिकुंजविलासिनी ॥ संग रंगीलोसाजलियैंनवनागरी ॥ इकबरनबरनालियेराजतफूलनकीछ री ॥ आयजुरेदोऊटोलपौरिव्रजरायकी ॥ उतहिचैतइतगारीदैंहि

बहुभायकी ॥ जेकबहूनबहूदरसिरबिनैंकहू ॥ तेगुरजनकीलाजक रतिनहिंनैंकहू ॥ षेलनिकौंहरिपैंहुलसीसबआंवहीं ॥ भरिकुमकुम कनककटोरनिओटदुरांवहीं ॥ छिरकतभरतषरसपरमोहनभामिनी उडतगुलालअबीरकियोदिनजामिनी ॥ संगसषानहिंसूझैंकहौंधौं कहांगये ॥ सबसषियनमिलिस्यामअचानकगहिलये ॥ घिरआईस बबामठौरदसबीसतैं ॥ दियोहैंअरगजाढारिमनोहरसीसतैं ॥ लैंल लितादइगांठिनीलपटपीतसौं ॥ घनदामिनराजतमोहनमीतसौं ॥ फगुवामांगतरंगरह्योनकह्योपरैं ॥ यहसुषनिरषतकौंनअबधीरजकौं धरैं ॥ षेलिफागनरनारिभरेअनुरागसौं॥ व्रजबासिनकैंसंगस्यामब डभागसौं ॥ ४ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक नराइनदास नाम न टवा, महाबैष्णवप्रेमी, सो वह जहां भलोबैष्णव श्रोतासुनैं, जहां जाइ निर्लोभ कीरतनकरैं, सो एकसमैं काहू नबाबनैं, हंडियासरा यमैं, बडेहठनिसौं नचायो, वहिमाला तुलछीकी आगैंधरिवा आगैंनाच्यो, नबाबहू देषतरह्यो, बहोतरीझ्यो पदगावतिहो, ता मैंयहतुकआईजु ॥ मदनमोहनरंगरातो ॥ ताको भाव तृभंगीन्हैं दिषावतहो, सोतृभंगीही रहिगयो, महाप्रेम आवेसमैं देहछूटिगई सो वहयहपद ॥ सांचोप्रीतहीकोनांतो ॥ कैंजानैंवृषभाननंदिनी कैंमदनमोहनरंगरातो ॥ यहैंसंपलाअतिबलवंतीबंध्योप्रेमगजमा तो ॥ मीरांप्रभुगिधरनागरकुंजमहलबसातो ॥ ५ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ परम भागवत श्रीकृष्णके अनन्यउपासि क, महाराजा रूपसिंघजू, भगवतइच्छा आधीन दिल्लीसकी आग्यातैं बलषकौं गयेहे, तहां बहोतादिनबीते, बिन सतसंग रंग

चितभंगरहैं, तब एकदिवस अकुलाय एकविष्णुपद प्रार्थनाको बनाय लिपिरूपनगर, श्रीगोवर्द्धननाथ उनके सीस बिराजतहे तहां पठयो, भींतरियांनकौं लिष्यो कि, यह बिनती पत्र ठाकुरके चरनन आगैंधरियो, सो अैसैंहींकीनौं, वाहीवेर वाहीराति परम भगवदीय भींतरिया हुतो ताकौं स्वप्नमैं ठाकुर आग्याकीनी, जो हम उनकी प्रार्थनांमानी, आजुही उनकौं उहांतैं बुलायेहैं, सो या दिन यहआग्याभई, ताही दिन रूपनगरतैं कासीदचलाये, सो जा मिती आग्याभईही कि आजुहमबुलाये, सो वह मिती अरु जादिवस वहांतैं कूचकियो, सो वह मिती एकही मिलिगई, सो सुनि सबनिकौं बडो आश्चर्यभयो, महाराज प्रेमानंदतैं बिबसभये फेर बेगआय आपनैं राज्यस्थानमैं, श्रीगोवर्द्धननाथको दरसन कीनौं सो जापदकौं ठाकुर अंगीकार करि बलषसौं बुलाये, सो वह यह पद ॥ प्रभुजुइहांरहैकछुनांई ॥ करियेगवनभवनादिसआप नैंसुनियैंअरजगुसांईं ॥ देषिबलषबरफहूदेषीअधमअसुरअवलोके॥ मध्यमदेसबेसहूमध्यमइहांकहांलैंरोके ॥ भक्तवछलकरुणामयसुष निधिकृपाकरोगिरधारी ॥ रूपसिंघप्रभुबिरदलजतहैं व्रजलैंबसो बिहारी॥१॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक विष्णुपद फागकोसुफाग के दिन आवैं तब वा पदमाफिकही श्रीगोवर्द्धननाथकै सिंगारहोय, रूपनगर मध्य वादिन बडो फागको ठाटहोय, सब उपासिक-लोग वादिन दरसनकौं वहोत आवैं, अरु यह कहि कहि अपनैं घरसौं दौरैंजु आजु वापदको ठाटहैं, बेगिचलो, सो वहपद सुनि सुनि सरूप दरसन करि करि भावकलोग वादिन प्रेमावेस व्है व्है

वहोतगिरैं, सब जानीजु यहपद ठाकुर रीझिकैं अंगीकार कियोहैं, सो एकबरस असो जोग बन्यौ जु फागुनमैं यहपद न गायो नां वह सिंगारभयो, यह सवैं ठाटही नांभयो तव श्रीगोवर्द्धननाथ परमरसिक सुजान सुपनमैं द्वैवेर आग्याकीजु यहपदगवावो, सो वह यह पद ॥ रूपबावरोनंदमहरकोबोहोरिबन्यैंहोरीकोछैल ॥ रोकतटोकतघूंघटपोलतभरिपिचकारीतकतउरोजानिगोकुलरीमाई चलतनगैल॥छलसौंमसरिगुलालकपोलनिचितैंरहतपलभूलिनिलज व्हैंहियैंभरतजोबनकेफैल ॥ छुटीबैसंधिबैससहचारिसुखमदनमवास रहतनताकैंअंगअंगरीझिकटीलीसैल॥१॥अथअन्यपदप्रसंग ॥ रूप नगरश्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजी जनमाष्टमीकैं दिवस एकब्रजबासी गुनी, नाम तुलाराम ताकी प्रसिद्ध छाप बावरीसखी, सो नृत्य गान प्रेम सहित ठाकुर आगैं करतभयो, अरु बहोतरंगपरयो अरु पद गावतहो, तामैं यह तुक आई ॥ बडभागीनंदबैठादैंदासुंहमांगी ठकुराईयां ॥ तहां ठाकुर रीझे, फूलनकी माला ठाकुरके गरेमैंही सो टूटि दूरि जाय रही एकभींतरिया वृद्ध अपरस वोट बैठोहो, सो स्वतैं सिद्ध वह उठिआय मालाउठाय जो गुनीब्रजबासी नृत्य करत गावतहो, ताकौं पहराइदई, औरहू वडे वडे सेवगठाढेहे, परंतु ठाकुर माला वाहीकौं दिवाई, सो जापदपर ठाकुर रीझि मालादई ॥ सोवहयहपद ॥ जसोदेबधाइयां ॥ नंदरानीदे लालउपनांससीनिहियांसबैंजिवाइयां ॥ सोंहनीयांसबगोपियांतोघरआइयां ॥ पुत्रजायाजगजीवनरीतैंपैंरुलगीवडाइयां ॥ तैंडाभाग सुलछननींसइयेंसभैंबोलिघुमाइयां ॥ अमृतसारजुलध्यानीसइयेपू

रियांकितीकमाइयां ॥ साजनचंदारवकीताऐसीफूलियांअंगनमाइ
यां ॥ षुसीहुयेसुरनरमुनिजनजनुरंकानिधपाइयां ॥ दूधदहीसिरपां
वदेनाचंदेग्वालाखेडमचाइयां ॥ बडभागीनंदवहठादैंदामुंहमांगीठ-
कुराइयां ॥ रामरायप्रभुप्रगटियाभगवानगलांमनभाइयां ॥ २ ॥
॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ रूपनगर श्रीगोवर्द्धननाथजी हिंडोरेके
दिननिमैं हिंडोरैंझूलैं, तहां आगैं मुरलीदासादिक कीरतनियां
कीरतन करैं, तहां एक बिष्णुपद ठाकुररीझकियो यह बिष्णुपद
गावैं तब बरिषा झूलत बेर वहोतव्है परैं, औरपदगावैं तब रहि-
जांहि, यहगावैं तब बहोतहोय, सेवग भीतरिया सब जानिगये,
सो यहपद गवावैं हिंडोरेमैं, तब नौछावरि भोगआदिक बहोतउच्छव
होय, बरिषाको लवलेसहू कहूं आकास बिषैंनहीं होय तऊ घटा-
निको संघठ व्है बहोत मेह बरसैं, ठाकुरभीजैं, फैंटा चंद्रिका झुकि-
जाय मोतिनकी मालाउघरिआवैं श्रीअंग बहोत सोभादेवैं, सब
बिमोहित व्है जाय, सो श्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजीकी रीझिकैं पद
याभांति प्रसिद्धभयो ॥ सोवहयहपद ॥ रमकिरमकिझूलनिमैंझम
किमेहआयोनहिंसुरझतिबातनितैं ॥ नवपल्लवसंकुलितफूलफलब
रनबरनद्रुमलतातरैंझुलवतभयोबचावपातनितैं ॥ मंदमंदझुलावत
लागीथंभनिसौंओढैंअंबरजलघातनितैं ॥ कृष्णदासगिरधारीतऊभी
ज्योबागोसारीभौंरनकीभीरभारीटरतनटारीक्योंहूंउपजीछबीलीघ
टांनिजगातनितैं ॥ ३ ॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ एक रजपूत बडे-
उमरावनमैं रूपनगरको चाकरहुतौ, परम अनन्य बैष्णव वृंदा-
वनको उपासिकरहैं, सो वह श्रीबृंदावन जात्राकौं आवतो. तब

भद्रभेषव्हैं तूंबी हाथले विरक्तनमैं मिलि ब्रज बृंदावन माधुरी अ-
वलोकन करतो, सो एक समैं असैंहीं आयो हुतो, श्रीगोवर्द्धन-
कीपरिक्रमा देतहो, रात्रिके समैं चैत्र बैसाखकी चांदिनी खुलिरही
वैसेही रंगीले भावक संग च्यार पांचक वैष्णव अर वह आपमिलि
एक पदगावत जात हे, प्रेम आवेसजुत सोवहीपद, गोवर्द्धनकी
ओरहू गावत सुननलगे, तब इननि जान्यौं जो हमगावतहैं ताही
की झांई परबततैं आवतहैं, तब ये चुपव्हैंरहे, तऊ वह धुनि वैं-
सैंही आई, तब ए वाही धुनिकी वोर चले सो ज्यौंज्यौंएचले जांहि
त्यौंत्यौं वह धुनि नजीक न आवत जाय, उतनीहीं दूर सुनी
जात, सो पहिलैं यहजानीही, काहू स्थलमैं वैरागीनके बालक
तथा व्रजवासीनके बालक सुनि वेहू गांवनलगे हैं, सो परबतके
अधफरैं आय स्थलमनुष्य हेरिरहे, सो कहूंही न पाये, तहां इ-
नकौं बोहोत प्रेमआवेस भयो मूर्छित व्हैं परे, हुतीसोजानी जो
नित्यबिहारके परकरमैं यहपदगायो, फिर बाहीभांति प्रेममैं गावत
गावत परिक्रमां बडेरंगसौं पूरीकीनी भौर व्हैं आयो, अद्भुत समैं
सुखभयो. सो जोपद गोवर्द्धनकी वोरतैं बालकनकेसे पतरेगरे-
नतैं नित्य सिद्धसमाजमैं श्रीमुखगावतसुन्यौं, फिरपदप्रसिद्धभ-
यो ॥ सोवहयहपद ॥ रागबिहागरो तालचपक ॥ मोरबोलहींविम
लचंदउजियारी ॥ पुनिप्रतिसब्दहोतवृंदावनगरजतगिरकंदिरासा
री ॥ अतिआनंदभयोकोलाहलरहीपाछलीपहरानिसारी ॥ नागरी
दासस्यामस्यामारातिसमैंअनूपमऊंचीअटारी ॥ ४ ॥ अथअन्यपद
प्रसंग ॥ रूपनगर मांधि एक हवेली दुखंडी, तहां कीरतनियां

कीरतन करतहुते, सो एकपद बहुतबन्यौं जो भावक होय ताकौं तो सुनिकैं भावउपजैं, परंतु विजाती एक फकीर वापदपैं रीझि प्रेमावेस होय ऊपरतैंगिरचो सो ठौरतो ऐसी ऊंचीहीजु, भूमि तक आवतैं पहलीही बीचहींमैं प्रान निकसिजाय, परंतु यह वहांतैं गिरचो सो जीयो, वाही पदकौं गावत भयो, ॥ सो वह यह पद ॥ अरींहूंबाटनजानूंरीकोईबतावैंवाकोधाम ॥ यावनमांझअचांनकहूउरलाइलईअभिराम ॥ मनलैंगयोनामनहिं जांनौंहोसुंदरतनस्याम ॥ नागरीदासठगीहूंअबलाअबनकछूबस वाम ॥ मनभयोसिथलचरनकांपतसरमारतनिर्दईकाम ॥ ५ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ वैष्णव एक नाममुरलीदास गौडिया, स्यामनदी वृंदावन वासी, वडे महानुभाव, सो रूपनगर आये हुते, सो एकसमैं, अपनी ठौरतैं उठि आये, बहोत प्रेम आवेस संयुक्त, तहां एक पद ताहीबेर बन्यौंहो, काहू सुन्यौं नांहीहो, वह पद लिषतही ताही छिन मुरलीदास आवत पहिलैं पीसामैं राष्यो हो, दुवात कलम ढिगही धरीही, सो वापदकी यह तुकगावतही आये ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ गावत गावत याही तुकमैं अंतरंग दसा व्हैं गई, कछू सरीर सुधि न रही, बहोत बेरतक यह दसा रही, सो पद सुनैं बिनहीं वाकी तुक प्रेम आवेस युत गावत आये, अति आश्चर्य भयो ॥ सो वह यह पद ॥ आवैंआवैंहो बांसुरीधुनिआवैं॥अबमोहिगृहअंगनांनसुहावैं ॥ मेरोमिलनप्रानअकुलावैं ॥ मनमथलहरिघुमावैं ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ नागरीदासचल्योनहिंजावैं । उठिउठिफिरमुरछावैं ॥ अथ पद प्रसंग ॥

बल्लभ रासिकजू महाबांके उपासिक आसक्तवान मिहीन सो उनकी रीत उनकी बांनीतैं जानी परतहीहैं सो एक समय श्रीवृंदा-बनमैं सरीरकी व्यथा करिकैं असाक्ति भये देहांत होत जांनिकैं ढिग लोग नामकीरतन करनलगे तासमय इनकौं सुधि व्हैं आई, तब पिजकैं कह्यो जो हमसौं अरु या महातमसौं लेषो कहा, तब एक पद भगवान सषीजूकोहो सो बतायो जो यह गावो सो अबहू गावो अरु देहांत भये पश्चात बाहिर लेचलो, तबहू यहही गावत जाइयो सो सबनि मिलि वैसैंहीं कीनौं सो जापदसौं या समय लौं रीझनि बाही अरु यह वार्ता प्रसिद्ध भई ॥ सो वह यह पद ॥ मनहरनिछैलनंदरायकोछबिसौंइतनिकस्योआय ॥ देष तहींदृगछकिरहेमेरोजियरह्योललचाय ॥ चंपकलीधरैंकुटिलअलकपरिऐंडौंऐंडभरयोऐंडाय ॥ सूंघतकमलकमलदललोचनचितैं चितैंमुसिकाय॥ एरी अंगअंगछविकहाकहौंतनसांवलरंगचुचाय ॥ मोहिदेषिठाढोरह्योप्यारोपगियापेचबनाय ॥ रौमरौमनपसिपरस्यौंमनरमिलईरमाय ॥ कहैंभगवानहितरामरायापियसबाविधिरहे समाय ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्रजभूमि महिमा प्रगट करन हेत श्रीकृष्णचंद्रकी इच्छातैं कोई एक वासमैंके जूथकी सषी, श्रीव्रजमैं जन्म प्रगट कियो गूजरीभई, ताको नाम गौरी, परमसुंदरी ऐसीजो काहूसौं भरिदृष्टि वाकोरूप सहारयो न जाय, सो वह नित्य भोजनसामग्री, अपनै घरतैं बनाय, गोप्यलेजाय,बन कौं गोवर्द्धनकी तलहटी तहांसाछयात व्हैं, श्रीठाकुर भोजन करैं ऐसैं कितेक दिनबीतैं, एक समैं वाके भर्तानैं जानीजु ए काहू

पुरसपास लेजायहैं, तब वह तरवारलेकैं, पीछैं दूर दूर वाके संग चल्यो, सो सघन वृछहे तिनकी ओट पीछैं जाय ठाढो रह्यो, तब ठाकुर भोजन करतही उठिभाजे, तब याके श्रवननिमैं नूपरकीतो झनकपरी, अरु महा सौंगंध आई, पीतांबरकी फहरानिदेषी, और अधिक दरसन न भयो, यह मूर्छित व्हैं गिरयो, फिर सचेतव्हैं प्रेमावेस सहित, गौरी गूजरीके पाइन परयो, तादिनतैं यह बात बहोत प्रसिद्ध भई, ऐसीजु यह घरतैं जब बाहिर निकसैं तब गांवके लरिका याके चहूं ओर संग हौंहि षिजाइवेकौं, यह कहति जांहिजु अरी वेदेषि गोपाल आये तब यह फिरि घूंघट उघारिदेषैं तब लरिका तारिदैंदैं हंसिपरैं याके पदहू व्रज में बोहोत लोगननैं वनाये हुते, परंतु एक सिरोमनिनैं बनायो सो ठाकुर बोहोत अंगीकार कीनौं तातैं अधिक प्रसिद्ध भयो, ॥ सो वह यह पद ॥ गौरीगूजरीमनमोहनकीयारी ॥ सबव्रजकेटो कतरहैंतातैंनिकसैंघूंघटमारि ॥ जबकोऊझूंटैंकहैंवेआयेमदनमुरारि ॥ रहिनसकैंइतउततकैंदुरिदेषैंबदनउघारि ॥ तनसुषकीसारी लसैंकंचनसोतनपाइ ॥ मनुदामिनकीदेहसौंरहीजौंन्हलपटाइ ॥ घरतपगनिलालीफिरैंभरैंढरैंरतिजाइ ॥ काचकरौतीजलरंग्योकछु यहजुगतिठहराइ ॥ गुरनितंबमधिपातरोउरजभारअधिकाइ ॥ लग्योलंकमनलालकोवाकीलचकनिलचक्योजाइ ॥ वरनबरनपट पलटहींनूतननूतनरंग ॥ जबहितबाहिनिकसैंफिरैंवहहरिहिदिपावैं अंग ॥ छूटीअलकनैंनाबडेओप्योसोमुषचंद ॥ अरुनअधरमुस कातसेदियेंभालसिंदूरकोबिंद॥ लगानिलगीनंदलालसौंकरैंनिबाहन

काज ॥ चढयोचाकांचितचतुरिकोवाकेप्रेमहिंआयोराज ॥ लाललपैंलालचबढ्योउतसासंत्रासापियराइ ॥ यहसंजोगनिबिरहनीतातैंअरझीबीचसुभाइ ॥ नरनारीएकतभयेमिलिमिलिकरतचवाव ॥ सिरोमनप्रभुदोऊसुनैंतातैंबढैंचौगुनौंचाव ॥ १ ॥ अथ पद स्तुति पद ॥ जिंहिंजिंहिंहरिपदसौंरतिठानी ॥ तिंहिंतिंहिंकीपदसाषिप्रगटजगसुनौंपुरातमबानी ॥ कलिमैंसारकीरतनकहियतुभक्तनमनसुषदानी ॥ नागरीदासधन्यजोरसनाहरिजसरसउरझानी ॥ २ ॥ पुनःपद॥हरिपदरचनांरुचिरबनइये ॥ आपुनपढिपढिवइयेऔरैंहरिपदसुनिरुसुनइये ॥ हरिपदगावतहरिपदपावतहरिपदरतिउरझइये ॥ नागरियापदपरमपदारथहरिपदरससरसइये ॥ २ ॥ इतिश्रीपदप्रसंगमालासंपूर्ण ॥

अथ ब्रजवैकुंठतुला लिष्यते ॥

॥ व्रजचंद्रोजयति ॥ मंगलाचरन दोहा ॥भजनप्रेमआनंदमय, बंदौंब्रजजनवृंद ॥ सुषहूकोसुषसारतिन, पायोहैंनंदनंद ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीभागवतआदिपुरान । तामैंसुनीकथासुषदान॥ कहूंताहिब्रबभाषाकरिकैं । सुनहरसिकरसआनंदभरिकैं ॥ २ ॥ सबलोकनिपरबइकुंठलोक । गुनातीतपदहर्षनसोक ॥ यातैंबडोनकोऊपदारथ । तामैंसबजीवनकोस्वारथ ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सुरनरमुनिजनअहरनिस, मनबचक्रमकरिहोय ॥ ब्रह्मानंदबइकुंठकौं, ध्यावतहैंसबकोय ॥ ४ ॥ ब्रह्मानंदबईकुंठमैं, ब्रजमैंप्रेमानंद ॥ कौंनअधिकइनमैंबसो, सुनिलीजेरसकंद ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥

करैशास्त्रस्तुतिजाकीताकी।ताकीकछुराषतनहिंवाकी॥ असैकेसेंवदै प्रतीत । जाकेव्याहताहीकेगीत ॥ ६ ॥ औरैविधिकाहिमननाहिं आंनैं ॥ जिंहिदेषीताहीकीमांनैं ॥ पैंकोऊवैकुंठहिजावैं । सोतो वहोरिकहननहिंआवैं ॥ ७ ॥ जोवहमध्यपुराननिकह्यो । सोमैंयह सोधौंकरिलह्यो ॥ व्रजगोपनप्रेमानंदपायो । तिनहींकौंवइकुंठदि पायो ॥ ८ ॥ तेफिरिआयेलषिजगदीस । यातैंग्वालनकहीसुवि स्वावीस ॥ ९ ॥

अथ गोपबइकुंठ दरसन समय कवि बचन ॥

॥ दोहा ॥ गुनातीतबइकुंठकौं, गोपवृंदसबहेर ॥ रहेआंगुरीघ रिदसन, भैचकलगितिंहिंवेर॥ ९ ॥ अथ व्रज गोपबाक्य॥ श्लोक॥ सोयंहरिस्तत्रसखाप्रतीतःक्ष्वेलीचयैः सर्वशएवनित्यं ॥ एतेनसंक्री डनमद्भुतंनोतेवैसमाराम्नियतंस्थितास्म ॥१० ॥ पितानपुत्रंपरिला लयेदसौमातायसोदानसुतं प्रयाति ॥ गावश्चनैवाग्रतएवनिसृतास स्त्वीन्नकृष्णः सहगछतीह ॥ ११ ॥ गोप्यःकिलानेनविहारमुग्रता नवैवनंततकुसमाकरंच ॥ नचात्रभानो स्तनयातटानि नमर्कटा स्तेहरिबल्लभावे ॥ १२ ॥ अयंप्रभुर्दूरतएवसेव्यो वयंतुभृत्याइव दूरतःस्थिता ॥ कथंवसामोत्रविकुंठबासेपुनर्व्रजंदेहि जगन्निवास ॥ ॥ १३ ॥ पुन कवि बचन ॥दोहा ॥ प्रीतिजहांऐस्वर्जनाहिं, ऐस्व र्जजहांनप्रीति ॥ प्रीतिबिनाआनंदनाहिं, मेरैयहप्रतीति ॥ १४ ॥ पुनिकविबचन, दृष्टांत ॥दोहा॥ प्रभुतासोभास्वादिबिन, मननलग तअभिराम ॥ करनफूलमनिकनकके, मधुकरकोकिंहिकाम ॥१५॥

चांवररूपेकेजदपि, दारिकनककीहोय॥ रोटीरतनजरायकी, तद पिनषावैंकोय ॥१६॥ अथ गोप बचन ॥ दोहा ॥ बइकुंठबइकुंठना थतें, प्यारेव्रजव्रजचंद॥धिगजोव्रजआनंदविसरि, चाहैंब्रह्मानंद ॥ जथा उदाहरन ॥ कबित्त ॥ महातेजतनमैंप्रकासमानजैसैंभानबाढै चकचौंधआंपैं आंषिनिसौंजुरीमैं॥ देषौंबइकुंठनाथसंषचक्रगदाहाथ लागैंभयभारीनकहतबातदुरीमैं ॥ डोलतकलोलतनबोलतननागर ह्यांरहैचुपचापयहदेषीबातबुरीमैं ॥ ऐसीनसहैंगेव्रजमारगगहैंगे यहांछिनदूरहैंगेनांहिटगटगापुरीमैं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ इहांरातिदिन होतनहिं, नहींसांझनहिंभोर ॥ जथासमयलीलाकरत, उंहिव्रजनंद किसोर ॥ १९ ॥ जथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ हमतोनभै याकोऊसंषहिबजायजांनैंयेतोलीनैंमहासंपसबानिनिहाररे ॥ व्रजब तरानिहसिगारीदैंनलगैंमीठीकैसैंकारिआवैंदेववानीकोउचाररे॥ चि त्रकेसेकाढेकौनठाढेरहैं नागरह्यांकहांवहवृंदावनबीथनिबिहाररे॥कै सैंकैं कन्हैयासंगपेलनकोसुषपावैंढो.वैंकौनइहांच्यारहाथनकोभाररे॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥ व्रजवृंदावनबिहारिबो, मोहनमदनप्रताप ॥ सो तजिकैंह्यांकोबसैं, लैनविप्रकोश्राप ॥ २१॥ जथा उदाहरन ॥ क- बित्त ॥ भैयाभैयामधुरकन्हैयाकीकहनअरुअमृतचहनिकोयेकांन निसौंच्छैरहैं॥ जोलौंचरैंगैयांतोलौंद्रुमछैयांसोवैंस्यामकाहूगोदसीस काहूगोदपायदैरहैं ॥ आपुचढिकांधैंकभूऔरानिचढायचलैं नागरन करतरौरि पेलिरसच्वैरहैं॥ऐसोसषाप्रीतनांतोछाडिवागुपालकोरेकौं नह्यांवैकुंठग्वालद्वारपालव्हैरहैं ॥ २२ ॥ पुन कवित्त ॥ कहांवह वृंदाबनकहांजमुनाकेकूलगुंजनकेहारफूलगहनौंबनायबो ॥ बह

विधिषेलिनंदलालसंगसंगसदा आनंदमगनव्है कैंमुरलीवजायबो॥घ
ननकीघोरापिकमोरनिकोसोरकहांबंसीवटततटिगायहोरिंदैंबुलायबो॥
व्रजसुखछायोचलिनागरलुभायोमनहमकौंनभायोइहांबैंकुंठकोआ
यबो ॥२३॥ दोहा ॥ व्रजमैंअरुबैकुंठमैं, जोजोकछुदरसात ॥ तुला
धारिकरिचित्तकों, तौलौंसबहीबात ॥ २४ ॥ जथा उदाहरन ॥
कबित्त ॥ ऊहांमनमोहनकुंवर नामरसभींनेंइहांनामजीरननारायन
कहांवहीं ॥ उहांकरकमलफिरावैंअलिबेलिभांतिइहांगदाचक्रलये
सबकौंडरांवहीं ॥ उहांगोपवधूवृंदमांझगरबांहींदियेंइहांएकरमांता
पैंपायपलुटांवहीं॥ पसुपंछीजमुनाथाकितहोतनागरयौंउहांबाजैंबंसी
इहांसंषहींधुधांवहीं ॥ २५ ॥

अथ बैनगांनबर्ननं॥

॥ दोहा ॥ मुरलीअधरनिधरतहीं, छबिलषिलज्जितमैंन ॥ चर
थिरथिरचरहोतसुनि, कमलनैंनकीबैंन ॥ २६ ॥ जथा उदाहरन
॥ कवित्त ॥ ललितकदंबतरैंमुरलीअधरधरैंठाढेव्हतृभंगछबिछाजैंब
नमालकी ॥ धैंनुनचरततृणबछरानपीवैंछीरमृगानिकैंनीरदृगभीर
तिहिंकालकी ॥ उडतपंखेरूनभबीचठहरायरहैंनागरबिवसगतिजु
वतिनिजालकी ॥ जमुनागवनथकिथकिकैंपवनरहैंबाजैंजबवृंदाब
नबंसीनंदलालकी ॥ २७ ॥ दोहा ॥ कहिकैसैंकैसैंकहैं, जैसेंकिये
बिहार ॥ छिनवहिबिसरतनांहिव्रज, मांखनचाखनहार ॥ २८ ॥

अथ माखन चोरलीला समर्ण ॥

सवैया ॥ रातहितैंव्रजगोपनकेलरकालियैंसंगफिरैंअंधियारैं ॥

भौंननिकौंननिमांझदुरचोदधिलेतनिकारिकैंअंगउजारैं ॥ नागरखायखवावतहैंहंसिजाछिनकोसुखकौंनउचारैं ॥ रेबसिकैंबइकुंठहुमैंधिगजोवहमाखनचोरबिसारैं ॥ २९ ॥

अथ बनभोजन लीलासमर्ण ॥

दोहा ॥ बनभोजनलीलाललित, किंहिंविधिबिसरीजांहिं ॥ बिन गुपालबइकुंठबासि, कहो कौनसंगखांहिं ॥३० ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ इहांकहांनंदओजसोदामैयाकरुनांमैंऔरहूनकोऊकरइयापुंजपाककी ॥ गोवर्द्धनकहांकहांखेलिनिकीठौरिआछीब्रजसोभाकहानिनसकतहोतबाककी ॥ नागरहंसिभोजनकरैंनंदलालप्यारेपीतपटवारेछबिछाजैंछांहढाककी ॥ मुक्तलोकवारूंहौंतोजबजबानिहारूंहैंगोपमध्यमंडलघमंडलीलाछाककी ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ भोजनकरिबनबिहरिब्रज, आवतमदगजचाल ॥ सोधनदृगासियरातलपि, गोधनसंगनंदलाल ॥ ३२ ॥

अथ गोधनसंग ब्रजआगमन लीला समर्ण ॥

कवित्त ॥ नीलघनराजतअरनतनसोभादेतरंगरंगआभानगअभरनजालकी ॥ कंचनदुकूलछोरदुहूंओरफहराततैंसीझुकिझूलनिललितबनमालकी ॥ संगसुरभीतअंगरंजितपहुपरैंननागरलटाकिगतिगंजतमरालकी ॥ कमलफिरांवनिऔआवनिअनूपलसीबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ ३३ ॥ पुन कवित्त ॥ बेरगऊभूलकसुनतातियगोरीगांनदामिनीनिकरसीनिकरगृहतैंघिरैं ॥ गोधनकैंपाछैंआछैंनटवेपकाछैंस्यामचलतकटाछैंतियनैंननैंनसौंभिरैं ॥ गोरवनि

झरोषनिओबारिनिअटारिनतैंनागरियाफूलपातीगैलछैलपैंगिरैं ॥ हो तजबसांझउहिंगोकुलगलीनमांझकोटिबइकुंठसुखसहजबहेफिरैं ॥

अथ दधि दानलीला समर्ण ॥

दोहा ॥ ब्रजझगरोदधिदानको, राधानंदकुंवार ॥ झगरतहैंबइ कुंठमैं, द्वारपालदुजच्यार ॥ ३५ ॥

अथ दधि दानलीला समर्ण ॥

कवित्त गोरसकैलेतजहांजोरसप्रगटहोतसोरसबैकुंठनाथहून जानैंभारियेइतैंनंदलालअरुकीरतिकुंवरिउतैंरूपकीघटासीदुहुंओ रनिनिहारिये ॥ बातैंअनपीलीकहैंनैंनसनमानलहैं नागरगहत पटझुकिझिझकारिये ॥ मुक्तलोकबसिबेमैंसबहीबिचारिदेषोदानके लिकौतुककोंकैंसैंकैबिसारिये ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ दानकेलिदैंआ दिब्रज, लीलाबहुसुषदाय ॥ पैंसुधिआवतफागजब, सुधिहूकी सुधिजाय ॥ ३७ ॥

अथ फाग बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ फागमासरितुउठतबहु, द्रुमनवपल्लवलाग ॥ जडहूकैंरो मांचव्हैं, बिथामदनतनजाग ॥ ३८ ॥ बरसानैंनंदगांवअति, उम डैंदलदोउवोर ॥ समरषेतसंकेतमैं, होतफागजुधजोर ॥ ३९ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जोपैंमहासर्वोपरराजतबैकुंठधामतोपैं कौंनकामअइस्वर्जतेजसौंडरैं ॥ नंदीसुरबरसानौंनांहिइहांसमधांनौं फागबिनलागबिनऐसैंदिनक्योंभरैं ॥ कौंनगावैंगारनिधमारनिम चावैंभूमिनागरकुंवरबिनकौंनमनकौंहरैं ॥इतस्यामउतगोरीब्रजरीति

रंगबोरीहोरीबिनकोरीठकुराईलैंकहाकरैं ॥ ४० ॥ दोहा ॥ सुर नरमुनिजनबिबसलषि, ब्रजहोरीअभिराम॥आनंदकैंआनंदउलहि, बढतकामकैंकाम ॥ ४१ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ब्रह्म लोकआनंदब्रजआनंदसमकहैलैकैंवहिनीरसकीरसनादहायद्यूं॥ ज बहिरहसरसबाढतबहसपेलिनागरजियजांनैंऔरकौंनपैकहायद्यूं ॥ दोऊवोरघुमंडिघटाज्यौंब्ररसतरंगातिंहिंसमैंकोध्यानमोहियतैंनहाय द्यूं ॥ स्यामअरुगौरिपरिएकब्रजहोरीपरिकोटिकबैकुंठनिकसुषहिं बहायद्यूं ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ होतरंगीलेफागमैं, हियेरंगीलेऐंन ॥ महारंगीलेदिनसबैं; महारंगीलीरैंन॥४३॥ जथा उदाहरन ॥कवित्त॥ ठौरिठौरिचाचरचहुलमचैंचंगनकीअंगनिकीऔरैंदसाऔरैंरूपछांव हीं ॥ आनंदउरनिअतिअमितअपंडबाढैंनागरमिलनिदिनदावस रसांवहीं ॥ लाजओरुषाईतियसंगलैविबेकपातिभाजैंब्रजमैंतैंमारवा ननिदबांवहीं ॥ पौढिप्रीतजागानिनवलनेहलागांनिं ह्वांफागनसनेह निकेभागनिसौंआंवहीं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ छैलछलीब्रजरसिकजहां चोषचतुरईदाव ॥ नितहोरीकेषेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ ४५ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ रचिकैंकपटवेषडोलैंब्रजबाप्ररांन छलिआवैंछैलजेछबीलीनवबामहैं ॥ कबहुसिमिटिगहिलेतगोपवधू बृंदआंखिआंजिमांडमुषछाडैंगहिदामहैं ॥ उतदेतगारीइतभंडकुट होतभारीनागरकतूहलबढतधामधामहैं ॥ आनंदनिवासनित्यफाग कोहुलासऐसैंहोरीबिनहासमुक्तबासकौंनकामहैं ॥ ४६ ॥ दोहा॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजनअभिराम॥ रंगधारबरसततहां, गउरघटाअरुस्याम ॥ ४७ ॥ जथाउदाहरनकवित्त ॥ खेलतबिहा

रीझरीजवकुंजकुंजनिमैंबूडैमनआनंदमैंहेरैंनहिरतहैं ॥ नागरगुलालधूमिधूंधरिगगनचढैंछूटैंपिचकारीधारधारसौंभिरतहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरहतपूरिवृंदावनधावतभरतनगभूपनगिरतहैं ॥ लागैंमुखरोरीउरतोरीमालबोरींरंगहोरीमांझगोरीझकझोरीसींफिरतहैं ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ पटछूटतछूटतनहीं, रहैंखेलिरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमांनतकोय ॥ ४९ ॥ अथ कविवचन ॥ दोहा ॥ नागरियागतिरीझकी, क्यौंहौंजातकहीन ॥ दंपतिफागविहाररसर, भयोलीनमनमीन ॥ ५० ॥ जाकोहोरीपेलसौं, तनकहूहुवोनहेत ॥ पालओढसोमनुषकी, भयोमुलम्माप्रेत ॥ ५१ ॥ मुक्तादिकजेलोकसब, व्रजपरिडारूंवार॥उच्छवचारौंफागपरि, जेप्रसिद्धसंसार॥५२॥ धनव्रजधनव्रंजबासिया, धनव्रजपरमउपास ॥ धन्यफागरसरीतिव्रज, नागरहियैंनिवास, ॥ ५३ ॥ समतअठारासैंजुइक, दिनवसंतसुभमास ॥ व्रजबैकुंठतुलाकियो, ग्रंथनागरीदास ॥ ५४ ॥ इति श्रीव्रजबैकुंठतुलाग्रंथसंपूर्ण ॥

अथ व्रजसार ग्रंथ लिख्यते ॥

श्रीव्रजरवनजयति ॥ दोहा—व्रजमोहनमोहनाप्रिया, अरुव्रजविपुनबिहार ॥ जनव्रजभुवबर्ननकरौं, मोमतिकैंअनुसार ॥ १ ॥

अथ व्रजभूमिमहिमाबर्ननं ॥

दोहा—विचरतचढिवहुवांहननि, भूमनपरसतऔर ॥ व्रजमैंफिरतउवाहिनैं, स्यामरसिकसिरमोर ॥२॥ अथउदाहरन ॥ कवित्त ॥ कहूंकबिमानानिपैंकहूंखगपतिपीठहोतहैंअरोहधरपरसतनांहिनैं ॥ कहूं

गजराजहयसाजरथकंचनकेजापैंजदुबंसभांनसैंनबांयेदाहिनें ॥ जहांअतिप्रीतितहांदेतनऐस्वर्जसोभानागरभयेहैंगोपलीलाअवगाहिनें॥ प्रभुताईनांहिनैंनआंनैंमनमांहिनैंह्यांत्यागाबांहिनैंकौंब्रजडोलतउवाहिनें ॥ ३ ॥

अथ ब्रजभूमि अंगराग बर्नन ॥

दोहा ॥ औरैंतीरथभूमिजे, इहिंबिधिनाहिंदरसात ॥ ब्रजभुवहरिपदकवलरंग, रंगीरहतदिनरात ॥ ४ ॥ जथाउदाहरनकवित्त ॥ कोऊभूमितीरथकीश्रोणितसौंसनिरहीमहारथीबीरनकीसैंनजांलरीहैं ॥ कोऊभूमितीरथकीभस्मकुंडमंडितहैधूमजग्यधूंधरीतिबिप्रमिलिकरीहैं ॥ मथुराश्रीजमुनानिकटसुपरासीभूमिकौसचौरासीजिहिंनागरमतिहरीहैं ॥ गोपीकुचकुंकुमलग्योहैंलालपायनसौंब्रजभूमिहरीउहिंकुंकुमसौंभरीहैं ॥ ५ ॥

अथ ब्रजरज महिमा बर्नन ॥

दोहा ॥ जद्यपिन्हातनउर्द्धगति, जातिच्यारहैंपांनि ॥ तदपिनतीरथजलकोऊ, ब्रजकीधूरिसमांनि ॥ ६ ॥ अथ उदाहरन कवित्त ॥ चाहैंगुल्मलताभयोऊधौब्रजधूरिकाजदंडवतबिधिइंद्रपरसतथलहैं ॥ लुटतअक्रूरब्रजधूरिमांझभूरभागपरसतरागबाढ्योउरमैंअमलहैं ॥ बालकबिनोदलीलानागरगुपालकरैंब्रजधूरिचापैंसापैंसपाजेसकलहैं ॥ ब्रजधूरिधूसरतस्यामअंगरापैंब्रजधूरिकैंनसमऔरतीरथकोजलहैं ॥ ७ ॥

अथ ब्रजभूमि कृष्णमुख कमलस्परस बर्नन ॥

दोहा ॥ अतिप्यारीसबअवनितैं, ब्रजअवनीअभिराम ॥ व्हैंस रूपबछरानिकैं, चांपतचूंमतस्याम ॥ ८ ॥ यथाउदाहरनकबित्त॥ तीरथमहीहैंजेपुराननिकहीहैंसबतामैंयहसबौंपरधारालेहुजानिकैं ॥ कोसचवरासीसुपरासीबनकोससबताकीयेअभासीनैंकधामच्यारपानिकैं ॥ नागरकमलपदअंकितकरतपुनयाहूतैंअधिककीसोसुनिजियआंनिकैं ॥ भईजगधूमैंकहामहिमांकहूंमैंदेषोब्रजभूमिचूमैंहरिरूपबछरानिकैं ॥ ९ ॥

अथ ब्रजाथिरचर कृष्णमय बर्नन ॥

दोहा ॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, अबमहिमासरसांनि ॥ थिर चरजुतब्रजभूमिसब, कृष्णमईहैंजांनि ॥ १० ॥ जथाउदाहरनकवित्त॥कृष्णरूपगोपीगोपगायसबकृष्णरूपजमुनागोवर्द्धनयेकृष्णरूपमांनिलैं॥कृष्णरूपद्रुमजातफूलफलपातपातबिधिकौंदिपायेकृष्णरूपउरआंनिलैं ॥ कृष्णरूपनागरकपोतशुकसारकादिकृष्णलीलागावैंमनप्रेमसरसांनिलैं॥ कृष्णकेलिकौतिककोआलयआनंदरूपजेतोब्रजमंडलसोकृष्णमईजांनिलैं॥११॥तदनांतर नंद जसोमति गोपी गोपनि प्रति गोपाल प्रीति बर्नन॥दोहा॥ब्रजमहिमाकहिअब कहूं,जोब्रजजनसौंप्रीत॥राषीनागरनेहकी, जगसौंउलटीरीत॥१२॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकेपदपरसनिकौंतरसतविश्वजिंहिंब्रजग्वालपेलिमांझपयेनचढायेहैं ॥ जाकौंदेवजग्यमैंबुलावैंनावैंसोयौ ब्रजनंदएकथारमांझजैंयकैंसिहायेहैं ॥ जाकीमायाबांधिराखे

सुरनरमुनिगननागरसोजसुधापैऊषरबंधायेहैं ॥ जांनैलैनचायेऔ रदारमईपूतरीज्यौंप्रेमबसताकौंब्रजबालनिनचायेहैं ॥ १३ ॥

अथ ब्रजजन प्रत्य हरि आधीनता बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ हरिजलब्रजजनमीनहैं, ब्रजजनजलहरिमीन ॥ ब्रजजनहरिआधीनहैं, हरिब्रजजनआधीन ॥ १४ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ आवतबुलायेंदौरिगावतगवायेस्यामनाचतनचायेंनित्यकरैंकह्योकह्योहैं ॥ जैंवतजिवायैंजलपीवतपिवायेंहठमांगैं तरसायैंमधुमईवहमह्योहैं ॥ नागरचरावैंगायटहलमेंसावधानबनरषवारैंप्यारैंवामसिरसह्योहैं ॥ बिश्वकेचराचरसकलबसऔरजाकैंसो ह्यांब्रजदेबिनकैंबसपरिरह्योहैं॥१५॥तदनंतर मोहनमुष केवल श्रीवृषभाननंदनी नाम रटन बर्ननं ॥ दोहा ॥ मुरलीकीमालाकरी, नंदलालाबसहेत ॥ राधेराधेरटतनित, गूढमंत्रसंकेत ॥ १६ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकोनामसेसरटैंसिवआदिसुररटैंमुनिगन नरनारिरटतनहटहीं ॥ देवओअदेवबधूनागबधूनृपबधूरटतहैं नांव छांडिवटकेकपटहीं ॥ कमलाकमलमुषअमलरटननामसेवासावधानरहैंपायननिकटहीं ॥ जाकौंसवरटैंसोनागरतटजमुनाकैंमुरलीमैं राधेराधेनामनित्यरटहीं ॥ १७ ॥

अथ प्रियाप्रति प्रियलालसा बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मनमोहनकोलालसा, सबजगउरसरसात ॥ मोहनकौंप्रियलालसा, मिटतनहींदिनरात ॥ १८ ॥ यथा उदाहरन ॥ ॥ कवित्त ॥ औरजाकोबंसीसुनिबेकौंतरसंतसोबराधाबैनसुनिबेकौं

हियैंसरसतहैं ॥ ताकीसवक्रपाचहैंचहैंकृपाराधाकीसोइकटकरहैं नैननांहिग्रगसतहैं ॥ जाकेपायपंकजनिरापैंकुचबीचकितीनागारियापायनसौंनैंनपरसतहैं ॥ जाकेदेषिबेकौंसवतरसतसोईहरिराधामुषदेषिबेकौंनित्यतरसतहैं ॥ १९ ॥

पुन लालसा बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मोहनमतिबौरीभई, ढौरीलागीचित्त॥ राधादरसनकारनैं,रहतअटातरनित्त ॥२०॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त॥सांवरेविहारीजूकैंगौरीएकचितचुभीताकेअटाछांहमैंअथांईप्रेमफंदकी॥ लोचनचकोररहैचौंकतसेवाहीऔरबाढीअतिआसामुषचंद्रिकाअमंदकी॥ षरकैंकिंवारजबषिरकीकेनागारियाटकझकलागिउठैंप्यारेनंदनंदकी ॥ झांकतहीरूपकोउजारोव्हैंदरीचैंमांझनैननिकौंसौंचैवेमरीचैंमुषचंदकी ॥ २१ ॥

तदनांतर प्रियापद महावर टहल बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ जगलषमीसेवतजुवह, सेवतहरिकेपाय ॥ सोहरिराधापगनिनित, जावकदेतबनाय ॥ २२ ॥ यथा उदाहरन॥कवित्त॥ जाकेलियेंसिंधुमथ्योकरिकैंजुश्रमभारीताकीछटाजगमैंभईप्रकासमानहैं ॥ तनसुषत्यागैंनरताकैंकाजतपकरैंदेवओअदेवचहैंकृपासरसानहैं ॥ ब्रह्मविश्वजानीवइकुंठरानीसर्वोपरनागरकहांलौंकरौंप्रभुताबषानहैं ॥ ऐसीयेरमासोताकेपायनपलौटैंसोतोराधापदजावककोसेवामैंसुजानहैं ॥ २३ ॥

अथ प्रियापद कमल महावर भरन बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ राधापदपंकजनिरषि, इकटकलाललुभाय ॥ लियैं महावरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजाय ॥ २४ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ पीतपठपौंछपायदेतहैंमहावरपीतरवनिरूपरीझनैंनानि षगायबो ॥ रंगहिभरतहियदोऊरंगरंगेजांहिदोऊवोरबाढयोप्रेमप गिवोपगायबो॥ कंपरोमस्वेदअंगलगतअनंगतंद्रातबबनमालगहिला लहिंजगायबो ॥ लियैंपायगोदरहैंनागरवेभूलिभूलिघरोपावपावक लौंजावकलगायबो ॥ २५ ॥

अथ महावर सिंगारांतर बैंनीगूंथन बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ सेवाअंगसिंगारमैं, परमचतुरघनस्याम ॥ गोरीकी बैंनीगुहत, पुरवैंमनकेकाम ॥ २६ ॥ यथा उदाहरन ॥ कबित्त ॥ ह्लायकैंगुलाबजलबारबगरायब्रडेबैठीआयबनीजहांफूलनिकोसैंनी जू ॥ आगैंधरिदर्पननिहारैंमुषमोहनकोताहीमांझचलतकटाच्छल च्छपैनीजू ॥ पीतजुहीफूलनकौंनागररचतसीसबैठेजुगजानुकाटि चापसुपदैनीजू ॥ ल्यायभुजबीचअरसायअंगमुरिहुरिरीझबैंनीगूंथ नकोदेतमृगनैंनीजू ॥ २७ ॥

अथ बैंनी गूंथनांतर सिंगाररचन बर्ननं॥

दोहा ॥ परसतहीव्हैंबिबसापिय,राधेतनसुकुंवार॥ सुघररायकहि यततऊ, करिनहिंसकतसिंगार ॥ २८ ॥ यथा उदाहरणकवित्त ॥ षंजनसेनैंनस्यामअंजनसकैंनभरिउतैंकंपइतैंप्रेमजलसरसातहैं ॥

हारपहिनातपियहाथजातकहूंतबटेढोकरिभौंहैंसौंहैंस्यामासतरातहैं॥ सीरोतनस्वेदअंगपिस्योपटपीत्तरंगउपजअनंगसुरभंगवतरातहैं॥ सपीसह्मरावैंसबधीरजबंधावैंतऊनागरसिंगारमैंसह्मारभूलेजातहैं २९॥

अथ सिंगारांतरप्रियामुखकवल बीरीदैंन बर्नन ॥

दोहा—तियासिंगारापियपांनदैं, चितईकरिभुवभंग ॥ बीरींनीरीहूनगइ, भईनैननिगतिपंग ॥ ३० ॥ यथाउदाहरनकवित्त ॥ नागरीनवलगुनआगरीरंगीलीजाकोबाढ्योहैप्रकासमुखचंदकुंजभौंनमैं ॥ बांकीभौंहैबडेनैनकहतबनैंनछबिरह्योहैसरसरंगवरसाचितौंनमैं ॥ चहैंसुखदैंनमुपदैंनबीरीप्यारीजूकैपैंनचलैंकरउतरूपसरसौंनमैं ॥ सकिजातचकिजातछकिछकिजातलालसिथलव्है जातगातभौंहभंगहौंनमैं ॥ ३१ ॥

बीरीदैनांतरप्रियाबदनइकटकरीझाचितैंबौ बर्नन ॥

दोहा—मोहनकेदृगमत्तअलि, इतउतकहूंनजाय ॥ राधाआननकमलमैं, इकटकरहैलुभाय ॥ ३२ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ सारीकोकिनारीगिर्दकंचनदिवारमांझदृगद्वैसभासरप्रफुल्लकौलसौंभरे ॥ भौंहैंमधुपावलिसिंगारलताअलकानिफबेकनफूलफूलफूलेछविसौंभरे ॥ नासिकासिरूकैढिगलालागुलक्यारीबालानागरिअधररंगाचितवितकौंहरे ॥ राधामुखबागबीचखंजनगुपालनैनभूलेभ्राजचंचलताइकटकव्हैपरे ॥ ३३ ॥

तदनांतरप्रियाअंगसुगंधलगावानि बर्नन ॥

दोहा—इततैंइकटकलखिकुंवर, अतरलगावतअंग ॥ उततैंअद्भु

तन्हैपरत, भौंहभंगमैंरंग ॥ ३४ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ रचि कैसिंगारचारस्यामाअभिरामाबैठीढिगस्यामसुंदरकैंसोभासरसात ही ॥ दोऊओरमोरछलहलतचलतभौंरभूषनबसनउठीजोतिउफना तही ॥ करलैंसुगंधस्यामहेरयोमुषनागरिकोचितईढुराइनैंनकछूमु सक्यातही ॥ तबलालल्लागेअंगरागाहिलगावनिएसतरव्हैंजातगात अतरलगातही ॥ ३५ ॥

अथ सबगंधादिसिंगारांतरप्रियापिय गांन बर्ननं ॥

दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गानतांन अबरहसिको, बहसिबढीदुहुंओर ॥ ३६ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठौर ॥ लहलहातनीकोउठैं, तांननिरंगहिलोर ॥ ॥ ३७ ॥ पियधीरजठहरैंनहीं, गाहिरैंसुरगुनगांन ॥ रागरसासवसिं धुकी, लहिरैंउपजततांन ॥ ३८ ॥ रूपअगाधाचतुरमनि, राधा रागउचारि ॥ कियेमूरछितस्यामकौं, बंसीबैंरसभारि ॥ ३९ ॥ य थाउदाहरनकवित्त ॥ दुहूंसीसजूरासोहैंहाथनितंमूराबीनपरमप्रवी नगोरीगांनलैंउचारयोहैं ॥ छायोसुरकाननिछकायेपियप्राननिओ छूटिगिरयोअंसजंत्रस्यामनसझारयोहैं ॥ रीझिमुरछावैंमुरछाय ठहिरावैंअंगनागरितरंगतांनमनवोरिडारयोहैं ॥ ताहिकियोबिबस घुमायगतिमतिडारीजाकींबांसुरीनैंब्रजबडोसोरपारयोहैं ॥ ४० ॥

अथ गानांतरप्रियामुखचितैंभंवर निवारन बर्ननं ॥

दोहा ॥ मोहनराधामुषलपैं, अमलउजारीमांह ॥ बहुरिचंदको डीठडरि, करतमुकटकीछांह ॥ ४१ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥

नवलनिकुंजमंजुकालंदीकेकूलजहांरहीझुकिझूलिलताफूलनिकेभा रहीं ॥ स्यामासुखदाईतहांअमलजुन्हाईआईऔरैछबिछाईछितसे व्यकोटिमारहीं॥ नागररसिकलालप्रेममतवारेप्यारेराधारूपदेषिदे षितोरितृणडारहीं॥चंद्रमाकोडीठडरिकरतमुकुटछांहपीतांबरगाहिठा ढेभंवरनिवारहीं ॥ ४२ ॥

तदनांतरबिहार बर्ननं॥

दोहा॥ नवनिकुंजनिभृतसुतहां, रहीछिपाछबिपाय ॥ बिचगो रीअरुसांवरैं, रह्योरंगसरसाय ॥ ४३ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ लहकिलहकिजातलगिकैंपवनलतामहकिमहकिऊठैमालतीसुबास हैं ॥ गहकिगहकिगावैंकोकिलातरनचढीकुंजछबिपुंजकामसेवतनि वासहैं॥ नागरियास्यामास्यामसौंहैंसुषसैंनीपरदेषैद्रुमरंध्रनिनकोऊ सपपासहैं ॥ दोऊमनहरैंदोऊरीझिरीझिअंकभरैंअंगनिअनंगबा ढ्योरंगमैंबिलासहैं ॥४४॥ दोहा ॥ बाढीछबिरतिसुखसमैं, काढीत नककढैंन ॥ जुगलकेलिमनरसरंग्यो, ओरैरंगचढैंन ॥४५॥ यथा उदाहरन ॥ कवित ॥ राधामनमोहनअगाधारूपरंगभरेभुजभररि झलिकामकेलिसरसायदी ॥ पगशुकसारिकादिजकिथाकिकारिडा रेनूपुरऔकिंकिनींकीझनकसुनायदी ॥ दूरहीहटकरापीकुंजद्वारअ लिसैंनीस्वेदअंगमिलीलैंसुबासपहुंचायदी ॥ हुतीललितादिजेलता नवोटनागरितेदेपनसकतप्रेमछकनिछकायदी ॥ ४६ ॥ अथसुरतां त सरूप बर्ननं ॥दोहा॥ प्यारीछबिन्यारीबढी, तनआलसबसमैंन॥ मुषलषिपियविस्मयरहे, नैंननिपललगैंन ॥ ४७ ॥ यथा उदाह

रनकवित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआननपैंआधैसीससीसफूलबैंनांझुकिगोमहा ॥ टेढ़ीभईबेंदीहारसरकेसिंगारलपिमोहूसौंहैं न्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ बदनगुराईमांझअरुनाईपियराईनागारियाकैसैंनैनसिथलढुरैंमहा ॥ रूपहैंकिढैरीहौंकिनैंनानिठगौरीहैंकिस्वपनौंकिसंभ्रमकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ४८ ॥

अथ सुरतात्त आरसनैंननि सरूप बिलोक बर्ननं ॥

यथाउदाहरन ॥ दोहा ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहि ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहरैंनांहि ॥४९॥ अरसांनैंघूमतझुकत, सरसांनैंछबिझैंन ॥ बिहसिढुरांनैंपीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥ ५० ॥ जबपलआवैंझुकतपिय, दर्पनदेतादिषाय ॥ तबअपनीअंषियांनपर, अंषियांरहतलुभाय ॥ ५१ ॥ नींदझुकीपलनिरषिपिय, देतहैंपानबनाय ॥ उतनैंनानिकेषुलतही, इतबीरीछुटिजाय ॥ ५२ ॥ भौंरनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगावतलालतब, पुलैंनैंनमुसिक्यात ॥ ५३ ॥ सषीलषैंदुरिद्रुमनिमैं, ह्वैंगइचित्रसरीर ॥ निसउनदौंहैंद्दगनिपैं, भईद्दगनिकीभीर ५४ अरसांनीनिरषतप्रिया, जातबिहानीरैंन ॥ नैननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ५५ ॥ धरैंचिबुकतरहाथद्दग, देषतनींदघुमार ॥ लगेरूपकैंरहचटैं, नाहिंपौढतरिझवार ॥ ५६ ॥ लषिउरझेसुरझैंनहीं, सबनिसगईबिहाय॥आरसउरझेद्दगनिमैं, पीयरहेउरझाय॥५७॥ क्यौंसुरझैंआरसभरे, नैननिउरझेनैंन ॥ नागरियाकेहियबसो, यहरूपारससैंन ॥ ५८ ॥ यारूपारसरैंनिकौं, जबहीसकैंनिहारि ॥

तनकेनैनानिमूंदिदैं, मनकेनैनउघारि ॥ ५९ ॥ नागरिनैननिजिहिं लप्यो, यहरूपारसरैन ॥ तिनकेनैनसुनैनहैं, औरनैननहिनैन ६० सारसदृगआरसभरे, चितवनिकरतविलास ॥ यारसकेवारसस रस, व्रजजननागरिदास ॥ ६१ ॥ परमतत्वकोतत्त्वव्रज, नागर विपनविहार ॥ जान्यौंचाहैंसारयह, तोतूपढिव्रजसार ॥ ६२ ॥ स त्रहसौनिंन्यानवैं, पोसजुसुदिरविवार ॥ नोमीनागरिदासयह, कि योग्रंथव्रजसार ॥ ६३ ॥ इति श्रीव्रजसारग्रंथसंपूर्ण ॥

अथ बिहार चंद्रिका लिप्यते ॥

दोहा ॥ कुंडलिया ॥ नवलजुगलसहचरिनवल, श्रीगुरुवनन वकुंज ॥ इनकीकृपामनाइकहौं, नवलकेलिरसपुंज ॥ १ ॥ नवल केलिरसपुंजकहौं गिरबनजमुनांकी ॥ नागरकृपामनांउमुरलिहरि दुपदमनांकी ॥ अरुवंदौंअनुराग दुहुनिकौंअमितअमलकल ॥ नवकासरितबिहारचंद्रिकाकहौंकछुनवल ॥ नवलजुगलसहचरिन वलश्रीगुरुवननवकुंज ॥ इनकीकृपामनाइकहौंनवलकेलिरसपुंज ॥ ॥ १ ॥ कवित्त ॥ वृंदावनकुंजनकेरहसिउपासकजेनिसदिनस्या मास्यामहीकोगुनगांवनौं ॥ सज्जनसनेहीसुपदाइकरसिकमहासुनि लीलालोचननिनीरढरकांवनौं ॥ नागरियादासहौंहितिहैंसंतप्यारे यहैंचंद्रिकाबिहारग्रंथताहीकौंसुनांवनौं ॥ बादीआंनधरमीताकैंबि द्याअभिमानहोइजासौंयहजाहीताहीभांतिकैंदुरांवनौं ॥ २ ॥ दोहा ॥ नित्यबिहारीलालसंग, परमप्रियासुकमार ॥ भूमिरैनतारेनतैं, इन केअधिकबिहार ॥ ३ ॥ ॥ छप्पय ॥ नितिराधानंदलालरूपर

सरासससनेही ॥ नित्यलगनरसमगनकरतकलकोलिअछेही ॥ नित्य दुहुनिचितचाहचटपटीचौपनवेली ॥ नित्यसुषदसंकेतरचावतरुचि रसहेली ॥ तैसोकुसमितबनमनौंमनमथसरपंजरकियो ॥ नागरनि त्तबिहारकौंलषिदंपतिहुलसतहियो ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ उज्जल पक्षिकीरैंनिचैंनउज्जलरसदैंनी ॥ उदितभयोउडिराजअरुनदुतिम नहरलैंनी ॥ ५ ॥ महाकुपितव्है कामब्रह्मअस्त्रहिंछोडयोमनौं ॥ प्राचीदिसतैंप्रजुरतिआवतिअगनिउठीजनौं ॥ ६ ॥ दहनमानपुर भयेमिलनकौंमनहुलसावत ॥ छावतछिपाअमंदचंदज्यौंज्यौंनभ आवत ॥ ७ ॥ जगमगातबनजोतिसोतसुअमृतधारासे ॥ नवद्रुम किसलयदलनिचारुचमकततारासे ॥ ८ ॥ स्वेतरजतकीरैंनचैंनचि तमैनउमहनी ॥ तैसीमंदसुगंधपौंनदिनमनिदुपदहनी ॥ ९ ॥ म धिनायकगिरराजपदिकबृंदाबनभूपन ॥ फटिकसिलामणिश्रृंगज गमगतदुतिनिर्दूपन ॥ १० ॥ सिलसिलाप्रतिचंदचमकिकिरननि छबिछाई ॥ बिचबिचअंबकदंबझंबझुकिपायनिआई ॥ ११ ॥ ठौरठौरचहुंफेरढेरफूलनकेसोहत ॥ आवतसुषदसुगंधअंधमदभंवर बिमोहत ॥ १२ ॥ बिमलनीरनिर्झरतिकहौंझरनासुपकरना ॥ महा सुगंधितसहजबासकुंकुममदहरनां॥१३॥ कहौंकहौंहीरनपचितराचि तमंडलसुरासके ॥ जटितनगनकहौंजुगलषंभझूलनविलासके ॥ ॥ १४ ॥ ठौरठौरलपिठौररहतमनमथसोभारी ॥ बिहरतबिबिधिबि हारतहांगिरपरगिरधारी ॥ दोहा ॥ कहतिकहतिकहांलगिकहैं, अ बकबिछबिअभिराम ॥ प्रियाकमलपदपरसहित, धरयोरूपगिर स्याम ॥ १६ ॥ छिपातीयबनमित्रसौं, मिलतभईबसरूप ॥ निर

षिभयेआतुरअतन, रसिककुंवरव्रजभूप ॥ ॥ चौपाई ॥ चलेल
टकिगिरवोरलालचितचोरबिहारी ॥ मिलनमनोरथकरतबसीउर
प्रानपियारी ॥ १८ ॥ चढिगिररसिककिसोर मुरलिकाअधरधरीहैं
अतिआकर्षनमंत्रमधुमईधुनिउचरीहैं॥१९॥ कुहकिउठेबनमोरकंदि
रागरजतझांई॥चितचक्रतमृगबृंदबिथामनमथसरसांई॥२०॥ पहुंची
महलनिजायकछुकधुनिथोरीथोरी॥राधेराधेसुनतनांमानिजचलीकि
सोरि॥२१॥कवित्त॥भीतरितैंबाहिरनिकासिपायधारचोतबअंधकारि
फारीभूमिपैठ्योढिगसेसकैं॥ परीहैंअवाईचंद्रचंद्रिकाओदामिनीपैंउ
तसुभसुगनव्हैंकुंवरव्रजेसकैं॥भोरकैसोजानिकैंप्रकासपंछीबोलिउठे
घिरिगईभौंरभीरनागरिसुदेसकैं ॥ देषीतबचलतअचलतेऊचलभये
हलचलपरीधूमधीरजनरेसकैं ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ धोषैंपरेचकोर
मोरअलिशुकसंगधाए ॥ चित्तचाकितव्हैरहतअरबरतअतिअकुला
ए ॥ २३ ॥ झुनकिझुनकिनूपुरानिछईधुनिबनसुषसाधा ॥ कुंजनि
कुंजप्रकासहोतआवतश्रीराधा ॥ २४ ॥ दोहा ॥ आवतदेषीभांव
ती,रूपरासिसुकवार ॥ मुरलीकटिअटकाइकैं,उतरतनंदकुंवार
॥ २५ ॥ सवैयो ॥ मानहरैंहरैंपायधरैंउतरैंगिरश्रृंगतैंबांहझुलाए ॥
छोरपीतांबरमोरगहैंछविसौंमगहीमगल्यावतलाए ॥ बाहुलतानिल
तानिरवारिकहौंझुकिकैंनिकसैंअकुलाए ॥ छाकचढीगिरकेजुउत
रकीनागरिदेषतदेहभुलाए ॥ २६ ॥ दोहा ॥ किधौंचंदप्रतिचंद्रि
का,किधौंदामिनिघनघोर ॥ योंमिलिगरबहियांचले, जमुनावोर
किसोर ॥ २७ ॥ कवित्त ॥ चलेगिरवोरतैंमरालचालप्रियापीवगा
वैंगांनमंदधुनिआवैंतटिजलकैं ॥ चहौंओरभौंरमृगवृंदघेरैंहरैंसुप

ललितन्लुनाईरूपआननपैंललकैं ॥ नागरिकुंवरिसुपश्रमकनवारि ताहिपौंछिपीतपटसौंनिपटहरिहलकैं ॥ दोऊगरबांहींधरैंदोऊदेतपैं डहरैंदोऊमुरिदेषबेमैंलागतनपलकैं ॥ २८ ॥ दोहा ॥ तिमरकुंज आवततऊ, मगपावततिहिंबेर ॥ दंपतिअंगउजासकौ, भौमंडल चहैंफेर ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ अतिनिर्जनएकांतमदनतसकरसेवतब न ॥ द्रुमपातनकीछांहछिपाछबिछाइरहीघन ॥ जहांजहांसुंदरटो रलहतआनंदरसबाढे ॥ ठठकितहांगहिलताळूंबिफिररहतहैंठाढे ॥ ॥ ३० ॥ तांनलेतपियसगमिलीऊचैंसुरस्यामा ॥ गावतकरतकलो ललोललोचनबहोभामा ॥ ३१ ॥ इहिंबिधिरागसमाजसाजलैंजमु नाआए ॥ मत्तद्विरदमनौंअगडतोडिगहगडसौंधाए ॥ ३२ ॥ नाव चावसौंचतुरसपिनजमुनातटिलाई ॥ बरनबिमानबिमानकरतसो भाउफनाई ॥ ३३ ॥ हाटिकहीरनजटितस्वेतअगनितछबिबाढी ॥ ससिकिरननिमिलिझलमलातअतिद्युतिभईगाढी ॥ ३४ ॥ बंगला चारसुढारमंजुमोतिनकीझालरि ॥ जगमगातनवजोतिकरतिचकचौं धिहालरि ॥ ३५ ॥ जारीजरीजराइकटहराजगमगजोति ॥ ठौरठौ रफबिलगेअमलमनिगनबहोमोती ॥ ३६ ॥ कनककमलमनिज टितअग्रअतिसैंछबिसोहत ॥ ताबिचआएभंवरस्यामसमनमथमनमो हत ॥ ३७ ॥ छबिसौंनिहुरिचढावतिप्रियहिभुजनभरिप्यारे ॥ दु हुंदिसिइकटकरहेरूपचितवतद्दगतारे ॥ ३८ ॥ सोभासंपतिजीति मीतमिलिबैठेदंपति ॥ चढैंललितललितादिनवलनवकाकछुकंपति ॥ ३९ ॥ परसिअमलपदकमलमनौंसात्विकभयेभारी ॥ कंपनीर डगमगनिलगनियातेंसुषकारी ॥ ४० ॥ दोहा ॥ लपटिरहीपतिवा

रइक, नवलसपीसुकुमार ॥ मानौंकदलीपंभप्रति, मुक्ताबेलिविहार ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ नवलमलाहैंदेपिद्दगनकोछुटितसलाहैं ॥ चलवतिचंपाचारुकरनजगमगतछलाहैं ॥ ४२ ॥ सोहतस्वेतलिबासतासकेललितलपेटा ॥ सिरकलगोकीहलनिचलनिमनौंमैंनचपेटा ॥ ४३ ॥ हलतनवीनैंहारुचारुझीनैंतनजामां ॥ अतिसुदेसनरबेसबनीनवसुंदरबामां ॥ ४४॥ चमकिचपलताटंकबंकअलकैंझुकिझूलत ॥ मुषगावतगुनस्यामकामधुनिसुनिसुधिभूलत ॥ ४५ ॥ चंपावलिदुहुंओरचलतऔसीछबिलागैं ॥ मनौंबहोपाइनिपाइधाइकढिसोभाआगैं॥४६॥यौंजमुनांबिचिनावधारहीधारचलाई ॥ पूरनचंदप्रकासछाइराहिबिमलजुन्हाई ॥४७ ॥दोहा॥ हीरनकेभूषनमुकट, रजतबसनसिंगार॥ उभैंअंगबांनिकभई,जौंन्हछांहतिंहिंबार४८॥चौपाई॥बैठीदंपतिनिकटिललितललितादिकगावैं ॥ रसगोलकढोलकबाजिबोंननिपरनमिलावैं॥४९॥ रागतरंगनिरंगहासरससरासबढ्योहैं॥ चितछाजैंआनंदमहलकैंउमगिचढ्योहैं ॥ ५० ॥ प्रियागांनरसमत्तभयेतनमनसववारत ॥ रीझकोऊसिरनावतकोउमुषभंवरनिवारत ॥ ५१ ॥ काननितांननिकेबितांनसेतानिदयेहैं ॥ पसुपंछीहूसुनतगांनधुनिबिबिसभयेहैं ॥ ५२ ॥ धुनतसीससिरबधूसुनताविचमुरलीमोहन ॥ नभबिमानसंकुलितफूलबरषातिथकिगोहन ॥ ५३ ॥ कुसमितमईप्रवाहभईकालिंद्रीगोरी ॥ जितततिनवकाचलतअमरतितबरपतझोरी ॥ ५४ ॥ दुहूंतीरतरुभीरुनीरसाषाझुकिपरसत ॥ बिचिबिचिवृंदाटहलमहलफूलनकेसरसत ॥ ५५ ॥ कहौंनलिनकेदलिनरुचिररुचिरापीसैंनी ॥ सीतलपवनपरागलियेंआवतसुपदैंनी ।

॥ ५६ ॥ सुंदरपुलिनपुनीतकहूंकहूंबिचनिकरीहैं ॥ समरषेतकिधौं सेतजरीकीफ़रसिकरीहैं ॥५७॥ दोहा ॥ सलिलबीचसुथरीपुलिन, तहांलेसनहिंपंक ॥ मानौंमोहनहितलियैं, जमुनांअंकपरजंक ॥५८॥ चौपाई॥दुहुंदिसितहांगंभीरतीरनिरमलगतिहरई ॥ चलतनावचित चावचमकिजलमीनउछरई ॥५९॥ मनहुरजतदुतिपत्रतत्रचमकंत सुहाई ॥पूरनचंदप्रकासनीरझिलमिलिछबिछाई ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ जमुनांकेबीचफैलेझिलिमिलिछिपाकरकीपावतनपार तिहिंसोभा केबषानको ॥ चलीजातमध्यधारनवकाबिहारचारकैधौंप्रतिबिंबय हताकेरतनानिको ॥ किधौंदीपमालकाकोउच्छववरुनगृहनागरप्र कासयहजोतिसरसानिको ॥ किधौंकोरिकोरिकअह्लातचंदचारुकि धौंचमकैंचपलभयोचूरचपलानिको ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ झिलिमि लिहींझिलमिलिचले, हिलमिलिकरतबिनोद ॥ फिरेदूरतैंपूररस, पेलतहसतप्रमोद ॥ ६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ रहीपाछलीरातिरसम सीनवलरंगीली ॥ निरषिप्रियेंआलसबसअंपियांपरमरसीली ॥ ॥ ६३ ॥ पायचैंनरसऐनसैंनहितचलेभांवते ॥ महामधुरधुनिगांन तांनवहभांतिगांवते ॥ ६४ ॥ पुनतलहटीतीरनीरसोभाजुभली हैं ॥ पातनकीपरछैंयांआवतनावचलीहैं ॥ ६५ ॥ चितवति चलतिनिकुंजकुंजरहबोनिसजामैं ॥ यामैंयामैंकहतयामैंनहिवामैंवा मैं ॥ ६६ ॥ मदनजुन्हैयाकुंजसदनसरसींदरसींइक ॥ परमप्रभा कीरासिनिरषिउपजतदृगकौतिक ॥ ६७ ॥ तहांकुंजकेमूलनावच लिलगीकिनारैं ॥ पहिलैंप्रीतमउतरिपानिगहिप्रियाउतारैं ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥ मदगयंदगतिमिलिचले, ॥ आलसअमलरसाल ॥ होत

चालमैंचालचित, मालमहालमैंहाल ॥६९॥ चलतजातसुमिरनक रत, नवलजावकीकेलि ॥ कीनोंकुंजप्रवेसमिलि, सवसुपसागरझे लि ॥ ७० ॥ प्रियारहीपलटनिवसनि, गएअटापरश्याम ॥ कोटि कामसेवतसदा, सोसुंदरसुपधाम ॥७१॥ कवित्त ॥ सोएसुपसैंनी परछविसौंरसाललालउरतरउसीसादियैंप्यारीमगहेरहैं ॥ धाइधुनि नूपुरनिआईहैबधाईदैंननागरउमंगअंगआनंदउरेरहैं ॥ ललितसहे लिनमैंललिताबलितकरलटपटीडगपगपरतअवेरहैं ॥ मंदगतिआ वतिठटकिहासिहेरिहेरिपियमनहोतमहाआनंदकेढेरहैं ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ बिछरीघनज्यौंदामिनी, उतरीसखीमिलाइ ॥ दईरंकनि धिबहुतजिम, लईलालउरलाइ ॥ ७३ ॥ कवित ॥ उज्जलमहलउ च्चसुच्छचंद्रिकाप्रकासमंदगतिसीतलवयारसुषकारीजू ॥ कसितसुडो रीसेजचोसरचवेलीबेलीफूलिरहीफूलनिकीवासमनुहारीजू ॥ चौकी चारुअतरगुलाबसीसेचमकतससिकीमयूषैंमिलिकौतकउजारीजू ॥ पूरनसरदरैंनीबिलसतसुषसैंनीकोककलानागरबिहारानिबिहारीजू ॥ ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ सींचतनीरगुलाबसौं, पियतियउरजसुढार ॥ कंजमनौंमकरंदकी, ढौरतशिवपरधार ॥ ७५ ॥ कवित्त ॥ तननकत नकबाजैंझनकचुरीनकीओगरैंहरवाईवातभनकसुहावती ॥ तूटेहार फूलनकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटप टाइमूरतिगुलाबजलभीजरहीविगलितबारवासमदनबढांवती॥ रूप बसनागररसिकहसिहेरिहेरिफेरिफेरिभेटतभुजांनभरिभांवती॥७६॥ ॥ दोहा ॥ प्यारीमोहनलालप्रति, हिलनिमिलनिइहिंभाइ ॥ मां नौंतरसिंगाररहि, पीतलतालपटाइ ॥ ७७ ॥ कवित्त ॥ रतिरसबा

तनिकरतमुसक्यातजाततत्यौंत्यौंहोतआनंदकोअंगअंगभीररहैं ॥ परसतहाथनाथलेटिलपटातगातकोइलसीकुहाकिहरतउरपीरहैं ॥ घुरतद्रुरतहसिजुरततिरीछीदीठसराकिसरकिढिगढरतसधीरहैं ॥ उघरेउरोजनभरतअंकनागरसुकसिगसिजातमनौंएकहीसरीरहैं ॥७८॥

॥ दोहा ॥ दोउकोककलानिमैं, पंडितपरमप्रवीन ॥ सोवसनांकेसैंकहौं, रसनांनैंननिहींन ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ मरगजीसुबासबसआसपासभंवरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांदिनिमैंसोएमिलिसुरतश्रमितअंगआनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झीनोंपटफारिफैंलीबाहिरबदनकांतमांनौंजौंह्नजीतबेकौंचलीहैंउमाहिकैं ॥ नागरियाअरुझांनेग्रीवनिमृनालभुजपुलिजातआंषैंजबराहिजातचाहिकैं ॥ ८० ॥ दोहा ॥ चनकमूंदिजहांतहांभई, निद्रावसिविश्राम ॥ दंपतिपाइपलोटहीं, नवलसषीमनभाम ॥ ८१ ॥ सवैयो ॥ भौंरव्हैंआयोनभायोदुहूंनकौंबोलेविहंगमबानीसुहांते ॥ बीनांनिमांझप्रबीननिरागबिभाससुनाइजगाएजहांते ॥ बैठेतबैंउठिआरसअंगव्हैंनागररूपमहाउफनाते ॥ नींदभरेलगिआवतलोचनरूपकेलोभपुलैंरसमाते ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेटगनिकीहेर ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजभुरहरीबेर ॥ ८३ ॥ जमुनांवृंदाबिपुनकी, बरनीकेलिअनूप ॥ करैभांवनांनित्तजो, होइभांवनांरूप॥८४॥सतरैसैंअठ्यासिया, संवतसांवनमास॥नवविहारयहचंद्रिका, करीनागरीदास॥८५॥इतिश्रीविहारचंद्रिकासंपूर्ण॥

अथ भोरलीला लिष्यते ॥

दोहा ॥ प्रेमानंदसरूपश्री, गुरपदपंकजवंद॥दंपतिलीलाभोर

की, कछुवरनैंरसकंद ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरिहितमूरतिप्रियारमतर जनीविहोंभतियां ॥ रह्योरंगनहिंपरतकह्योरहिपहरिकरतियां ॥ नैं ननिबैंननिअंगअंगआलसजबछायो ॥ सोयेसौंधीसेझमिहींपटदुहुं नउढायो ॥ २ ॥ चनकमूंदिबिश्रामकुंजपोढेपियप्यारी ॥ छ बिसौंबाहुमृनालनकीअरुझनहोंन्यारी ॥ नींदउचटिपुलिजातजब हिजाकेढिगजेरत ॥ जोइरीझछकिरहतनिकटइकटकमुपहेरत ॥ ॥ ३ ॥ इंहबिधिकरिसुपसैंनचैनजुतबितईरजनी ॥ भईमुरहरीबे रजानिझुरिआईसजनी ॥ लैकैंबीनप्रबीनललितललिताजुबजायो॥ अद्भुतरागबिभासकुंजमंदिरविचछायो ॥ ४ ॥ चहचहाटपंछीन कियोसुषसमैंसुहावन ॥ सीतलपवनपरागकंवलजलपरसतआवन सियरोलग्योसमीरभनकपरिकाननमहियां ॥ उठेलटपटेलालबा लदीनैंगरबहियां ॥ ५ ॥ घूंमतझूंमतझुकतरुकतअंगनिअलसावैं ॥ सुनिसुनितांनसुजांनमुंदीआंषनिमुसक्यावैं ॥ अंगमरगजीबास महकिभौंरनिबिचआई ॥ व्हैंगयोरूपउजासकुंजऔरैंछबिछाई ॥ ॥ ६ ॥ रंगभरेमुसक्यातिलतामंदिरतैंनिकसे ॥ सहचरिआईझूं मिमुदितदृगबारिजबिकसे ॥ एकढुरावतपवनएकमुषबीरीदेंहीं ॥ एकदुहुंनिपैंरीझिबलइयाफिरिफिरिलैंहीं ॥ ७ ॥ अस्तबिस्तअव तसएकगहितिह्वैंसंवारत ॥ इकतोरतत्रिनएकवारिमोतिनलरडारत पीककपोलनिलीकनिरषिअंजनधरनीपर ॥ मनहींमनमुसक्यातस पीआनंदहियेभर ॥ ८ ॥ दर्पनकुंजकीओरचोरचितकेपधराये ॥ चहूंओरतियवृंदमत्तगजगतिचलिआये ॥ दांतनमंजनकरतलगीनैं सुकहीवरियां ॥ फिरबैठेनियराइसौंजासिंगारसुधरियां ॥ ९ ॥

गउरस्यामअभिरामअंगमिलिदर्पनदेषैं ॥ भ्रूलतसबैंसिंगारदृगनन हिंलगतनिमेषैं ॥ सबैंसषीसंभरावतजावतभंवरउडावत ॥ रचिरचिरुचिरसंवारसुघरासिंगारबनावत ॥ १० ॥ गउरपी ठअभिरामस्यामगहिगूंथतबैंनी ॥ तियफिरअंजनदेतकमलनैंननि मृगनैंनी ॥ बनीकरनकवनीयबनीउतलटधुघरारी ॥ करनफूल परफूलधरतइतफूलबिहारी ॥ ११ ॥ परमहंसौंहैंइंदुबिंदुरचिहींमुष गौरैं ॥ धरैंचिबुकतरहाथनाथदृगसौंदृगजोरैं ॥ भयेजातउरहारहा रपहनांवतमोहन ॥ बढतरंगभुवभंगकछुकप्यारींहैंसोहन ॥ १२ ॥ नथबेसरिकैंदेतदुहुंदिसरंगबढयोहैं ॥ नासाचढनिसरूपस्यामके चितजुचढयोहै ॥ बैनांभालबनायबहोरिमुषकमलनिहारत ॥ उत फैंटासिरपीतझुकतिकछुप्रियासंवारत ॥ १३ ॥ पेचनकीचहुंवोरमैंड अैंडानिलचिढौंहीं ॥ सुंदरकरनबनायचंद्रिकाधरीटिढौंही ॥ रतन पेचरचिबांध्योहारिकैंअतिरंगभीनौं ॥ छुटींकिरनिचहुंफेरघेरछबि मंडलकीनौं ॥ १४ ॥ पटभूषनसबसाजश्यामपहराईसारी ॥ बनि ठनिठाढेसरसपरसपरप्रीतमप्यारी ॥ तबराधापदगोदमोदजुतलैंअ नुरागी ॥ चरनकंजमंजीरबैठिबांधतबडभागी ॥ १५ ॥ चलिबैठे सैनायसषीदर्पनलैंठाढी ॥ अंगअतरलपटावनिदावनिबहोबिधबा ढी ॥ प्रीतमकेसुषसुषीकरतपियसोईभावत ॥ दंपतिमनकीलग निकहोकौनैंपैंआवत ॥ १६ ॥ दोहा ॥ कैसैंहूजातनकहो, सुषब रष्योतिहिंकाल ॥ लालसिंगारतबालकौं, बालसिंगारतलाल॥१७॥ चौपाई ॥ षटरसभोजनसौंजात्रिबिधभांतनकरिआंनी ॥ सुंदरसी तलबिमलसुबासतभरिधरपानी ॥ करपल्लवछ्वैंजातअधरअधरनि

मुसक्याते ॥ देतपरसपरग्रसाकछूइहिंलोभलुमाते ॥ १८ ॥ नैंन निनैंननिपगेपगेरसरूपरंगीले ॥ जैंवतवेरअवेरकरतअनहितरंग बोले ॥ कौनैंलौनैंरूपकोरनैंनानिकौंभावत ॥ घरीपलकछिनजा मजुगलइंहिकामवितावत ॥ १९ ॥ दोहा ॥ मिलिजैंवतदोउदरस रसरसनारसबिसराय ॥ गईक्षुधासबउदरकीरहीदृगनिमैंआय॥२०॥ चौपाई ॥ सषिनलयोअवसेपरह्योआनंदहियैंभर॥अचवनकरिकैंदई दुहुंनबीरीसुपह्मुंदर ॥ परदादयेउठायअगरबरिधूमसुवासत ॥ चली आरतीसाजजोतजगमगतप्रभासत ॥ २१ ॥ मोतिनझूमतझवाझ लकिरहिदीपकबतियां ॥ वरतकदालिकपूरआरतीआवनअतियां ॥ गावततोडीरागतांनमधुरैंसुरसांची ॥ नियरैंआईझूंमिरूपगहमहसी मांची ॥ २२ ॥ दोहा ॥ चलतवारतीपैंउतैं, कवलनैंनकीसैंन ॥ र हेकरतछकिआरती, रूपआरतीनैंन ॥ २३ चौपाई ॥ दर्पनमंदिर मांझआरतीकरिकैंबहोरी ॥ बदनमाधुरीपानकरतअंषियांनअहो री ॥ सुमनसेझउठिसोयेभोयेरतिरसघातन ॥ अरुझेतनमननैंनक रतहितउरझीबातन ॥ २४ ॥ बैठीबाहिरठौरसषीललितादिसुघर मुनि ठीकदुपहरीबिरबजतबीनांसारंगधुनि ॥ इहिंबिधिलीलानित्त प्रातकीकछुकसुनाई ॥ दिनदिनकोसुषसषीकह्यौंकौनैंपैंजाई॥२५॥ दोहा ॥ हरिगुरसंतनिकरिकृपा, दीनौंप्रेरहुलास ॥ लीलाभोरसुहां वनी, कहीनागरीदास ॥ २६ ॥ दंपतिलीलाभोरकी, पढैंसुनैंजो भोर ॥ जाकेहियनिसदिनरहैं, झलकतजुगलकिसोर ॥ २७ ॥ इतिश्रीभोरलीलासंपूर्ण ॥

अथ प्रातरसमंजरी लिष्यते ॥

दोहा ॥ सषीभोरलषिछकिरही, स्यामास्यामसुजान ॥ मुंदी पलकअलकैंषुली, अधरथकितमुसक्यान ॥ १ ॥ लताभवनललितादिसषि, बजवतबीनविधान ॥ मुदेनैंनमुसकांवही, सुनिसुनितांनसुजान ॥ २ ॥ पहपियरीपियरीसमैं, लषिदंपतिसुकुमार ॥ रंगभरीलपटानितन, अरुझेहारसिंगार ॥ ३ ॥ बहियांसीसअदाहसौं, धरिपैंढेमिलिमित्त ॥ सोवनकीसोवनमही, जगैंलगौंहौंचित्त ॥ ४॥ भईभुरहरीकरनदैं, कुंजछांहसुषसैंन ॥ केलिपगेसबनिसजगे, अर्म्हिलगेहैंनैंन ॥ ५ ॥ कैसैंनींदनिवारियैं, अरुअंगनिउरझांनि ॥ भोरभयोदिनकरकिरनि, आईरंध्रलतांनि ॥ ६ ॥ छुटतनआरसरसपगे, जानतभयोजुप्रात ॥ ओढैंपियरौपटदोऊ, फेरफेरलपटात ॥ ७ ॥ निसबीतीसबरंगमैं, उठेभोरसुकुमार ॥ आयसंवारतसहचरी, भूषनबसनसिंगार ॥ ८ ॥ लगेलगेदृगआंवहीं, बैठेपगेकिसोर ॥ नीलपीतपटपलटगे जगेरगमगेभोर ॥ ९ ॥ अलसौंहैंनिसकेजगे, सरबरसौंहैंनैंन ॥ इकटकसौंहैंअधषुले, सहजहसौंहैंनैंन ॥ १० ॥ आननसौंआननछियैं, पाननरचेकपोल ॥ लषिरीझछबिआरसी, बिहसैंलोयनलोल ॥ ११ ॥ आरससौंअरुझीपलंक, अलकजुबेसरिमांहि ॥ अरुझ्योबैंनादेषिकैं, पियमनसुरझ्योनांहि ॥ १२ ॥ लसतभोरढीलेदृगनि, ढीलीमृदुमुसकानि॥ पियमनगाढैंबंधिगयो, सुनिढीलीबतरानि ॥ १३ ॥ उनदौंहांअंषियांनकी, पलकैंझलकिअनंग ॥ पियगहरैंरंगमैंरंग्यो, अधरनिफी

केरंग ॥ १४ ॥ छबिझलकैंअलकैंसिथल, सबतनसिथलसिंगार ॥ सूचततियतनसिथलता, निसदृढलगनबिहार ॥ १५ ॥ रसउरझी निसस्यामसौं, आरसउरझेबैन ॥ तेरीउरझीअलकमैं, मेरेउरझे नैन ॥ १६ ॥ नीदभरेतनलटपटे, छकेदृगनिकोहेर ॥ नागरिया केउरबसो, कुंजभुरहरीबेर ॥ १७ ॥ इतिप्रातरसमंजरीसंपूर्ण ॥

अथ भोजनानंद अष्टक लिख्यते ॥

दोहा ॥ स्यामास्यामसिंगारसजि, जैंवतदृगसुखदैंन ॥ कोजन कबिबरननकरैं, वहमिलिभोजनलैंन ॥ १ ॥ नवलकिसोरीलैंगसा दसनखंडकरिदेत ॥ रसिकसांवरोतिहिंफलहिं, भागसफलकरिले त ॥ २ ॥ मिलिजैंवतदोउदरसरस, रसनांरसबिसराय ॥ गईछुधा सबउदरकी, रहीदृगनिमैंआय ॥ ३ ॥ देतगसामुपतीयकैं, चित ईकरिभुवभंग॥रह्योकौंरहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग॥४॥ सरसपरस कौंतरसिजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितवलाडिली, अधर छुवननहिंदेत ॥ ५ ॥ कौंरलेतकरकंपव्है, देतबीचछुटिजात ॥ स्वे दसिथिलसियरायतन, छुवतअधरमुसक्यात ॥ ६ ॥ देतकौंरहासि परसपर, नैननिनैनमिलाय ॥ भूलिजातभोजनदोऊ, दीठरहतठह राय ॥ ७ ॥ अचवनिमैंरचवनिभई, हसिहासिबीरीदैंन ॥ नीरीनाग रियासखी, लपिसियरावतनैंन॥८॥इति भोजनानंदअष्टकसंपूर्णम् ॥

अथ जुगलरस माधुरी लिख्यते ॥

दोहा ॥ हरिराधावृंदाबिपुन, नितबिहाररसएक ॥ बिछुरतनां हींपलकहू, बीततकलपअनेक ॥ १ ॥ नवनिकुंजमनकौंअगम, से

वतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअखंडितरंग ॥ २ ॥ नैननैनसियरांवहीं, बैनसजीवनमंत्र ॥ मुहाचहींजीयज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतंत्र ॥ ३ ॥ दंपतिढिगनवकुंजसषि, करतगांनसारंग ॥ बीनतंमूराखंजरी, बजिदायरमुहचंग ॥ ४ ॥ रससंपतिमिलिबिलसहीं, दंपतिदैंगरबांह ॥ ढिगबीनांबीनांसषी, बजवतिद्रुमकीछांह ॥ ५ ॥ बडेबारछबिसौंछुटे, अंसर्षानकटिछीन ॥ सबरिझवारनिकेमनौं, मनभरिकावारिलीन ॥ ६ ॥ ललिततमूराबालढिग, सोहतहैंइहिंभाय ॥ समरजीतिट्टगसरानिसौं, तरगसलियोछिनाय ॥ ७ ॥ सषीरूपकीमंजरी, खंजरीटसेनैन ॥ बजेंकरनिमैं षंजरी, लजैंपरेवाबैन ॥ ८ ॥ चलतदायरेपैंचपल, चारअंगुरियनरूप ॥ अछियांमाछियांसीनचैं, मनौंअमृतकैंकूप ॥ ९ ॥ चंगेमुंहमुंहचंगातिय, बजवतिहैंगतिकार॥ बैठयोकमलदराराबिच, मनौंअलिकरतगुंजार ॥ १० ॥ गहगडरागसमाजजुत, राजतबिचनवकुंज ॥ प्रेमरूपगहबरभरे, गौरस्यामरसपुंज ॥ ११ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचबृंदाबनबाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यामास्यामसुहाग ॥ १२ ॥ इति जुगलरसमाधुरीसंपूर्णम् ॥

अथ फूलबिलास लिख्यते ॥

दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेताबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ हरिहितवृंदाबिपुनमनौं, धारेअगनितनैंन ॥ १ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिराम, सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगोरीस्याम ॥ २ ॥ रंगरंगभूषनफूलके, रहेफूलितनझूल ॥ अंतरकोबाहिरमनौं, प्रगटी

अंगअंगफूल ॥ ३ ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाडोदुहुंनितन, फूलनिबीनतफूल ॥ ४ ॥ झूमिझुकावतद्रुम लता, उघरतउरउरमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौंबा ल ॥ ५ ॥ धरताप्रियाकेश्रवनपर, लालकुसमकवनीय ॥ वहौरिबलै यालेतप्रिय, निरषिबदनरमनीय ॥ ६ ॥ छ्वैंकपोलछबिसौंरह्यो, न हिंउपमांकोउतूल ॥ हालहालकरैंहालदिल, करनफूलपरफूल ॥७॥ फूलनिसौंबैंनीगुहत, रचतफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोउ, भुज भरिदृढअंकवार ॥ ८ ॥ कौतगलागेबालकैं, संगडोलतनंदलाल ॥ छुवतजुहीकेफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥ ९ ॥ दुरिदुरिभेटतद्रुमनि मैं, फूलभरीसुकुंवार ॥ लंपटमधुपनवांवहीं, पीतजुहीकीडार१०॥ दोउमिलिफूलनिबीनहीं, जमुनाकूलनिसांझ ॥ रंगरलीअतिव्है र रहीं, कुंजगलीकेमांझ ॥ ११ ॥ फूलनिमिसतियसौंमिलत, सषीरू पराचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजरंगीलीसैल ॥ १२ ॥ इति फूलबिलाससंपूर्णं ॥

अथ गोधन आगम लिख्यते ॥

दोहा ॥ सृंगतालदलवांसुरी, आईधुनिमनलैंन ॥ फिरेकन्हाई विपुनतैं, गौरजछाईगैंन ॥ १ ॥ नटानटीलूकरतहीं, अबलषिरूप रसाल ॥ समैंभईनटरागकी, आवतनटवरलाल ॥ २ ॥ गोधूलिक वरियांभई, मिट्योबिरहदुषदंद ॥ प्रफुलिततियकुमदावली, आव तलषिव्रजचंद ॥ ३ ॥ आछैंकाछैंबेषनट, गायनिपाछैंलाल ॥ च लैंकटाछैंफूलसर, भूलतसुधिव्रजबाल ॥ ४ ॥ चहुंओरगडदारसे,

करतकनूहलग्वाल ॥ आवतमनमथदलमलत, मत्तद्विरदनंदलाल ॥ ॥ ५ ॥ आवतलषिनंदलालकौं, झूंमिझरोपनिझांक ॥ कलीफूलडारतअली, लिषलिषहितकेआंक ॥ ६ ॥ नटनागरकलगांवहीं, बीचरागनटबैन ॥ सुंदरतननटवरचलत, नटचेटकसेनैंन ॥ ७ ॥ नटनागरलषिकैंउतैं, वेऊगुनसरसात ॥ घूंघटहीमैंनैंननट, उलटपुलटकारिजात ॥ ८ ॥ कमलमालहियकरकमल, कमलनैंनसंगधैंन ॥ प्रफुलितकमलपरागजुत, यौंमुषमंडितरैंन ॥ ९ ॥ घटकीसटकीलाजसब, गोधनसंगलषिलाल ॥ अटकीनटकीदृगनिमैं ॥ वहलटकीलीचाल ॥ १० ॥ नागरिमोहीललनलषि, कीनैंनटवरबेस ॥ सबकोमनलैधेनुसंग, कीनौंभवनप्रवेस॥११॥इति श्रीगोधनआगमसंपूर्ण ॥

अथ दोहनानंद अष्टक लिख्यते ॥

दोहा ॥ गोरंभनगहमहषरिक, सांझदुहारीबेर ॥ पलकनिपौंछतरजतहां, पियापीयमुषहेर ॥ १ ॥ देतसौंहनीदौंहनीं, लेतलालमुसकाय ॥ भूलिहाथउतहीरहे, डीठडीठठहराय ॥ २ ॥ परीषारिकगोपालकैं, निजगौंहैंतजिभौंन ॥ भौंहैंलषिसौंहैंरहे, दौंहैंगइयांकौंन ॥ ॥ ३ ॥ घेनुदुहतमोहनठगे, राधारूपनिहार ॥ परतदौंहनीतैंनिकसि, अैंडीबैंडीधार ॥ ४ ॥ मुषचितवतगइयांदुहत, परतधरानिपयसोत ॥ मानौंमंगलदृगनिमनौं, दूधनिबरषाहोत ॥ ५ ॥ गोदोहतगोपालतिय, चितचोरयोमुसकाय ॥ वैसैंहींकरचलतरहे, गईसरकिकैंगाय ॥ ६ ॥ घेनुदुहतस्यामहिठगे, रूपसौंहनीदीस ॥ गिरीगोदतैंदोहनी, परीमोहनीसीस ॥ ७ ॥ लालगिरतग्वालनिगहे, प्रि

यलइतियानिसंभारि ॥ इतउतदोउसरभररहे, व्हैंदृगसरानिसुमार ॥ ॥८॥ धेनुदुहतजानीसबनि, गउरस्यामकीप्रीति ॥ नागरियाकेहिय बसो, परिकटहलकीरीति ॥ ९ ॥ इति श्रीदोहनानंदअष्टकसंपूर्णम् ॥

अथ लग्नाष्टक लिष्यते ॥

दोहा॥ जबतैंचितयेनैनभरि, तबतैंछिननहिचैंन ॥ मनमोहनगोह नाफिरत, जागतस्वप्नैंसैंन ॥ १॥ मोहनलपिमोहनभई, कहालग्योयह हौंन ॥ सबसूझतमोहनमई, दईभईगतिकौंन ॥ ६ ॥ लगीलगनिह रिमुखनिरषि, डारचोसबसुखरूंद ॥ जोहूंश्रैसोजानती, रहतीनैंन निमूंद ॥ ३ ॥ कौंनघरीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिट तनांहिदिनरातिजिय, स्यामरूपउतपात ॥ ४ ॥ घरबनकहुंनहिंल गतमन, रहतस्यामतनलीन ॥ अरीढटोनांनंदकैं, कछुटौंनापढिदी न ॥ ५ ॥ नैंननिदुषनैंनानिलगैं, तनमनदुषदुपगेह ॥ एदइयाकौंनैं दयो, दुषकोनांमसनेह ॥ ६ ॥ हरिसौंलगनलगायकैं, भरीरहतनि तनीर ॥ रिझवारनिअंषियांनसौं, हौंहारीरीबीर ॥ ७ ॥ नागरसैंन निसैंनमिलि, बनिजुनैननिनैन ॥ बनतबनतऐसीबनी, कहतब नैंनहिंबैन ॥ ८ ॥ इतिश्रीलगनाष्टकसंपूर्ण ॥

अथ फागबिलास लिष्यते ॥

दोहा ॥ फागबिनांकहालागसुष, लागबिनांकहाफाग ॥ फाग लागकीठौरब्रज, निरषैंसोबडभाग ॥ १ ॥ ब्रजतैंसोभाफागकी, ब्र जकीसोभाग ॥ सबजगमैंब्रजफागको, गावतहैंअनुराग ॥ २ ॥ग्या रेनहिंप्यारेलगैं, सोफीसदाउदास ॥ इस्कऐसमादिरापियैं, कैफी

फागुनमास ॥ ३ ॥ कियेरंगीलेफागमैं, हियेरंगीलेअँन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगीलीरैंन ॥ ४ ॥ फागजुरसिकनहितभयो, रसिकफागकेहेत ॥ चंदाबिनानिससांवरी, निसबिनचंदासेत ॥ ५ ॥ जाकौंहोरीषेलसौं, तनकहुहुवोनहेत ॥ षालवोढिसोमनुषकी, कियोमुलम्मांप्रेत ॥ ६ ॥ फागमासारितुउठतबहो, द्रुमनवपल्लवलागि ॥ जडहूकैरोमांचव्है. बिथामदनतनजागि ॥ ७ ॥ इहिंरितुऔसरफागकैं, होतलगनकोराज ॥ डफमोहनमुरलीसुनत, छुटतबधुनकीलाज ॥ ८ ॥ सुनिरीडफबाजनलगे, सिरपरआयोफाग ॥ अबकैसैंदबिहैंदई, अंतरकोअनुराग ॥ ९ ॥ सुलगीलगनहियेनमैं, जुलगीहोरीआय ॥ पुलिगीग्रंथबिचारकी, ॥ मीतमिलनदरसाय ॥ १० ॥ छिनदेषैंबिनदेतदुष, लोयनपरेजुगैल ॥ फागवावरेदिनानिमैं, रूपबावरोछैल ॥ ११ ॥ गृहकौंनैंजातनरह्यो, परतअगौंनैंपाव ॥ नितहोरीकेपेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ १२ ॥ बरसांनैंनंदगांवअति, उमगेदलदुहुंओर ॥ समरषेतसंकेतमैं, आजफागजुधजोर ॥ १३ ॥ ढोलकढोलमृदंगबजि, मुरलीडफसहनाय ॥ गहगडगांनधमारिधुनि, रह्योकुलाहलछाय ॥ १४ ॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजानिअभिराम ॥ रंगधारबरसनलगी, गउरघटाअरुस्याम ॥ १५ ॥ मचीदुहुंनिमैं फागइत, राधेउतनंदलाल ॥ जमुनांधरागिरतरुलता, पगमृगभरेगुलाल ॥ १६ ॥ लालमईसबदेषियत, घुमंडचोगगनगुलाल ॥ मनुदंपतिअनुरागको, डारचोब्रजपरजाल ॥ १७ ॥ राजतिधूंधिगुलालमैं, भरिभरिभाजतबाल ॥ मानौंफूलीसांझबिच, चमकतच

पलाजाल ॥ १८ ॥ दृगनहिंचहतगुलालकौं, तनचहैंउड्योगुला
ल ॥ घूंघरिमैंदुरिऔचकां, भुजभरिलीजैंबाल ॥ १९ ॥ सकैंन
दृगभरिदेषिकैं, तिनकोबदनमयंक ॥ जिनकौंहोरीपेलमिस, अंक
निभरतनिसंक ॥ २० ॥ कौंधिउठतज्यौंदामिनी, भरतभामिनी
आय ॥ पियमनलैंकैंपलटिफिरि, मिलैंझुंडमैंजाय ॥ २१ ॥ आ
वतमुठीगुलालकी, छबिसौंछैलबचात ॥ पैंअचूकदृगलगिहियैं,
वारपारभयेजात ॥ २२ ॥ रोकतघूंघटओटसौं, मुरितियापिचकी
धार ॥ यहैंबचावनिदेपिउत, बचतनहींरिझवार ॥ २३ ॥ अजूक
हांआंषैंभरो, कौंनरीतिकोपेल ॥ इनबातनिरहिहैंनहीं, हमसौंतुम
सौंमेल ॥ २४ ॥ लगैंसुफिरनिकसैंनहीं, करीनभावतओट ॥ होरी
मैंअंषियानकी, आंषिनहीपैंचोट ॥ २५ ॥ आंषैंभरतगुलालसौं,
यहधौंकौंनसुभाय ॥ वदनमाधुरीपानमैं, अंतरपारतहाय ॥ २६ ॥
चतुराईकरिकैंदयो, पौंछनिदृगनिगुलाल ॥ कहतचलावतउतग
यो, भोरैंछूटिरुमाल ॥ २७ ॥ चलतगुलालनिझोरियां, माची
धूमधमारि॥ फागपेलझकझोरियां, फिरतगोरियांग्वारि॥२८॥पटछू
टतछूटतनहीं, रहेपेलरसभोय॥हारटूटिपाइनपरत, हारनमानतको
य ॥२९॥ नागरियागतिरीझकी, क्यौंहूजातकहीन॥दंपतिफागबि
हारसर, भयोलीनमनमीन ॥ ३० ॥ इतिश्रीफागबिहारसंपूर्ण ॥

अथ ग्रीषम बिहार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ जेठमासकीदुपहरी, आधीरातिसमान ॥ दुरिमिलि
सुषबहोविधिकरैं, स्यामास्यामसुजान ॥ १ ॥ ग्रीषममैंगतिसिसर

वन, निबिडवौसअंधियार ॥ मुषउजियारैंकरततहां, दंपतिवितन
बिहार ॥ २ ॥ सैंनीकदलीदलनकी, रचीकमलदलनैंन ॥ कुंज
छांहदंपतिकरत, ग्रीषमरितुसुषसैंन ॥ तनसांनैंसउगंधसौं, मनठा
नैंहितढेर ॥ कबहूतहपांनैंमिलैं, ठीकदुपहरीबेर ॥ ४ ॥ चंदनअं
गलगांवहीं, आपलगेसेजात ॥ दंपतिमनसियरांवहीं, सषीनैंनसि
यरात ॥ ५ ॥ रितुगरमीगरमीजुहित, तनगरमीनहिंलाल ॥ ढांपी
ढोरिगुलाबपैं, चितसरमीक्यौंबाल ॥ ६ ॥ अमितफुंहारेकौंझुकी,
नीरफुंहारैंलेत ॥ गाढीजोबनमदछकी, ठाढीरापतपेत ॥ ७ ॥
मुववरुनीअलकानिरही, फबिजलजंत्रफुंहार ॥ सरदकमलपरओ
सज्यौं, लषिरीझैंरिझवार ॥ ८ ॥ आईतियजलहोजबिच, चिंहुटे
भीजीनिचोल ॥ पियदृगसीतलकरिकरैं, ग्रीषमकुंजकलोल ॥ ९ ॥
षेलतछींटनिजलमगन, तियनसंगनंदलाल ॥ मानौंउत्सववरुनगृ
ह, उछरतमुक्ताजाल ॥ १० ॥ तिरततियाजलहोजबिच, रही
जोतितनजागि ॥ पांनीऊपरफिरतहैं, मनौंफिरंगकीआगि ॥११॥
चुभकीलैंतियपरसहीं, अंगसरसईकाम ॥ रंगबरसहींदृगनिमैं, हो
जमोजअभिराम ॥ १२ ॥ मुषबाहिरजलकेलिमैं, ताहिनचाहत
जीव ॥ बहैंबूडिबोईभलो, तामैंपरसतपीव ॥ १३ ॥ भीजेमुषबा
हिरलसैं, तियगनहोजअहांहि ॥ अमलकमलसेजोतिके, जगमगा
तजलमांहि ॥ १४ ॥ आसपासमुषतियनकैं, फैलतजलबिचवार॥
डोलतहैंमनौंउदधिबिच, उरझेचंदसिंवार ॥ १५ ॥ निकसीकरि
जलकेलिसब, चितवातिनंदकिसोर ॥ दुरेअंगलषिप्रगटदृग, भये
भरेकेचोर ॥ १६ ॥ जलभीजेनवतियनके, चुवैंवसनतनहेम ॥ अं

तरतेंउमडयोमनौं, लोपिनेमकौंप्रेम ॥ १७ ॥ सुंदरगौरैंतनलगे, भी जेवारविसाल ॥ सीतलचंदनपूतरिनु, मनुपलटेअहिजाल ॥ १८ ॥ दिनगतिनिसआगमठयो, कीनैतियनसिंगार ॥ स्यामसजीवनिग ननिमनु, दमकेदीपगजार ॥ १९ ॥ सजिमुकेसकेवेसतिय, म नहुमैंनकीफोज ॥ फूलझरीछोडतकरानि, अजवहोजपरमोज २०॥ दिनग्रीपमसुपमुपकहा, कहैंनागरीदास ॥ फिरसजनींदंपतिकरत, रजनीरुचिराविलास ॥ २१ ॥ इति श्रीग्रीपमाविहारसंपूर्ण ॥

अथ पावसपचीसी लिख्यते ॥

दोहा ॥ जडअवनीरितुवंतव्हैं, रसमैंनीरसठौर ॥ भीजीपावसरि तुरची, रूपीरितुसवऔर ॥ १ ॥ आवैंवदराकामदल, मोरनकी वअवाज ॥ फिरैंदुहाईसवसदन, होतमदनकोराज ॥ २ ॥ वरिपा घनघहराइतव, धीरनहींटहराय ॥ उठैंजुहियहहरायमुनि, तपता रीछुटिजाय ॥३॥ कीनौमैंनिरधारसुनि, पावसघनघहरांन ॥सवके मनजतिमदन, बाजतसदननिसांन ॥ ४ ॥ घुंमडिमेघचुंवितधर नि, अंधकारबढिगैंन ॥ बिछुरिगयेचकवाचमकि, समझिऔसकौं रैंन ॥ ५ ॥ कनकमालदामिनिहलैं, श्रमजलकनिवरषान ॥ काम मेघरतिभूमिकौं, देतमनौंरातिदांन ॥ ६ ॥ घनधाराझरहरिकरत, अवनीफारिप्रबेस ॥ चलेवहोसररसमरमनौं करनमूरछितसेस ॥७॥ इतझरलाग्योमेहको, इतसैंनानिझरनेह ॥ गउरस्यामचढिचढिअटा, भीजतरीझविदेह ॥ ८ घटाबतावैंभांवती, छटाबतावैंस्याम ॥ रस भीजेसैंनानिकरैं, जलभीजेचढिधाम ॥ ९ ॥ सुवधनुकेचधुरवालुटे,

दसनदामिनीवृंद ॥ रूपघटाराधेअटा, गानगरजिधुनिमंद ॥१०॥
घनतनदामिनपीतपट, बगमु ़ अभिराम ॥ मुरलीगरजनिरंगझ
र, बरसतहैंघनस्याम ॥ ११ ॥ हरिमलारपूरितअटा, घुमडीघटा
अछेह ॥ ज्यौंज्यौंबाजैंमुरलिया, त्यौंत्यौंबरसैंमेह ॥ १२ ॥ बरि
पारितुद्रुमगहबरे, बहोफलफूलनिझूंमि ॥ रचेकदंबहिंडोरनां, हरि
तभईव्रजभूमि ॥ १३ ॥ उतरिझमकिझूलैंचढैं, रंगरंगपहरिनिचो
ल ॥ लालमुनीयनकेमनौं, झुंडनिमचीकिलोल ॥ १४ ॥ कारी
सारीगोरमुष, झूलतातियरसकंद ॥ आवतजातविमानज्यौं, घटाल
पेटैंचंद ॥ १५ ॥ झूलतछबिउमचीअधिक, मचकतदुंमचीबाम ॥
उचटैंचोटीपीठमनुं, लगैंचमौंठीकाम ॥ १६ ॥ रमकतप्रियाहिंडो
रनैं, छबिदुरिदेषतपीय ॥ वेझूलतवेश्रमितकटि, लचकनिलचक
तजीय ॥ १७ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिंलषि, रहेलालसुधिभूल ॥ फह
रतअंचलचंद्रिका, बेंनीबरसतफूल ॥ १८ ॥ दुरेलालगहिलतनिमैं
प्रियसंगदयेझुलाय ॥ कंपितरौंमकटयातकर, डोरीगहीनजाय ॥१९॥
दांवनिलांवनिदुहुंनिके, वाजतआवतजोर ॥ बैंनीहारहिलोरहीं,
बढिझौटाझकझोर ॥ २० ॥ झूलतझोटाचढिगगन, मुरलीगरजनि
तूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरषतहारनिफूल ॥ २१ ॥ दिनझूल
निसंकेतमिस, मिलतमीतकरितोत ॥ फिरपावसकारीनिसा, अति
सुषकारीहोत ॥ २२ ॥ निसबरषाभिजईमिलत, तियारिझईनंद
लाल ॥ पंथअंध्यारोवनविषम, चपलातहांमसाल ॥ २३ ॥ मिलि
एकैंछतनांतरैं, रहैंकदमकेमूल ॥ अतिरसभीजतभीजहीं, पीरोनीलदु
कूल ॥२४ स्यामघटाव्रजस्यामघन, गउरघटासुकुंवारि ॥ नागरियाहि

यभूमिबिच,नितवरसोरसवारि॥२५॥इतिश्रीपावसपचीसीसंपूर्ण१०

अथ गोपीबैंन बिलास लिष्यते ॥

दोहा ॥ वरषागतआगमसरद, अमलअंबुआकास॥बनद्रुमपात निधूरिधुपि, छबिबाढीसुषरास ॥ १ ॥ वरसमेघअवपेककारि, बेद मंत्रधुनिगाज ॥ वृंदावनकौंदैंगये, सुंदरताकोराज ॥ २ ॥ सुच्छि सुहाईसरदरितु, भूमिबिहाईपंक ॥ प्रफुलितकमलनिपरभ्रमैं, माते मधुपनिसंक ॥ ३ ॥ घनबूंदैंरहिठहरिकैं, कंजदलनिआधार ॥ ह रिहितलियैंसरोवरी, मनुमोतिनभरिथार ॥ ४ ॥ सषीदेषिनट बेषहरि, मत्तद्विरदकीचाल ॥ मुदितबजावतबैंनबन, गोचारतगो पाल॥५॥लषिसषिधातसुरंगरंग, अंगत्रिभंगीलाल॥सीसपिच्छमुषबैं णउर, गुंजापुंजप्रवाल ॥ ६ ॥ जमुनानरसमीरगति, षगमृगव छराधैंन ॥ रहेथकितव्हैंएसषी, सुनिसुनिरीधुनिबैंन ॥ ७॥ हलैंन अवलिकदंबकी, थक्योपंथरथभान ॥ मोहनमुरलीसुनिभये, नभ संकुलितबिमान ॥ ८ ॥ सुनिबंसीनीवीसिथल, षिसिप्रसूनषुलिबा र ॥ भईबिमाननसुरबधू, मनमथसरनिसुमार ॥ १० ॥ सबकोम नमोहनकरत, मनमोहनसुपलाग ॥ न्यारीहोतनबंसुरिया, प्यारी तुवबडभाग ॥ ११ ॥ वंसवंसमैंप्रगटभइ, सबजगकरतप्रसंस ॥ बं सीहरिमुषसौंलगी, धन्यवंसकोबंस ॥ १२ ॥ अलकचंदरचांपत करन, अधरउसीसालाल ॥ कौंनपुन्यकियेबांसुरी, यहसुषलहत रसाल ॥ १३ ॥ अहेबांसकीबंसुरिया, तैंतपकीनैंकौंन ॥ अधरसु धापियकोपियैं, हमतरसतबिचभौंन ॥ १४ ॥ देहुश्रवनसुषसवनि

कौं, करअधरनिरसपांन ॥ जिनडारैंधुनिमुरलिया, अरीहमारैं कांन ॥ १५ ॥ अरीछिमाकरमुरलिया, परततिहारेपाय ॥ और सुर्षीसुनिहोतसब, महादुर्षीहमहाय ॥ १६ ॥ कियोनकरिहैंकौंन नहिं, पियसुहागकोराज ॥ अहेबावरीबंसुरिया, मुषलागीमति गाज ॥ १७ ॥ तोकारनगृहसुषतजे, सह्योजगतकोघैर ॥ हमसौं तोसौंमुरलिया, कौंनजनमकोबैर ॥ १८ ॥ एअभिमानीमुरलिया, करीसुहागनिस्याम ॥ अरीचलायेसबनिपैं, भलेचांमकेदांम ॥ ॥१९॥मुषमूंदैंरहुमुरलिया; कहाकरतउतपात ॥ तेरैंहांसीघरबसी, औरनकेघरजात ॥ २० ॥ हरिचितलियोचुरायकैं, रह्योपरतनहिं भौंन॥ तापरबंसीबाजमति, देतकटेपरलौंन ॥ २१ ॥ तूहूब्रजकी मुरलिया, हमहूब्रजकीनारि ॥ एकबासकीकांनकरि, पाढेप ढिमंत्रनमारि ॥ २२ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नांतोइतोबिचा रि ॥ तीनलोकसंगगाइये, बंसीअरुब्रजनारि ॥ २३ ॥ सब- कोमनलैंहाथमैं, पकरिनचाईहाथ ॥ एकहाथकीमुरलिया, ल- गिपियअधरनिसाथ ॥ २४ ॥ पीयहमारेकोलियो, अधरसुधातेंछी न ॥ हमतलफतसुनिबांसुरी, ज्यौंबिनजलकीमीन ॥ २५ ॥ बो लचलावतमुरलिया, कहासुहागकोतोत ॥ तोसौंपियटेढेरहैं, हमसौं सूधेहोत ॥२६॥ हमहीकीतूदूतिका, मुरलीसबजगसाषि ॥ हमहीं परगाजतभली, जूठहमारीचाषि ॥ २७ ॥ बाजैंमतिमतिबांसुरी, म तिपियअधरनिलागि॥अरीघरबसीदेतक्यौं, रौंमरौंममैंआगि ॥२८॥ फूंकनिकेचलितीरतन, लगैंपरतनहिचैंन ॥ अंगअंगआपबिंधाइकैं, हमहूबेधतबैंन ॥ २९ ॥ धीरतजैंनहिरनसुभट, ज्यौंतनसहैंप्रहार॥

त्यौंवंसीसुरसरलगैं, रहैंसम्हारिसम्हारि ॥ ३० ॥ हाहाअवरहि मौंनगाहि, मुरलीकरतअधीर ॥ मोसीव्हैंजोतूसुनैं, तवकछुपावैंपी र ॥ ३१ ॥ सवदसुनावतहमहिनू, देतनहींछिनचैंन ॥ अनवोली रहुतनकतो, एवककवादीवैंन ॥ ३२ ॥ थिरकीनैंचरचरसुथिर, हरि मुषमुरलीवाजि ॥ गरवसुकीयेसवनिके, महागरवसौंगाजि ॥ ३३॥ अमलचलायोआपुनौं, मुरलीगरजिगुमांन, हियसूनैंकरितियनके, प्रानवसायेकांन ॥ ३४ ॥ वैठिअधरमैंमुरलिया, अधरमनैंकानिवा रि ॥ कहाजगतजसलेहुगी, तूअवलनिकौंमारि ॥ ३५ ॥ घूमैंभूमैं धुकिउठैं, तुववंसीसुरलागि ॥ कहरजहरलहरैंचढी, डसीभुवंगम राग ॥ ३६ ॥ जिंहिंमोहीसवव्रजवधू, मोहनमृदुमुसकाय ॥ सो मोहातैंमुरलिया, वनघनमैंलेजाय ॥ ३७ ॥ अहेमुरलियामोहनी, तोसौंकहावसाय॥ अधरसुधारसप्याइकैं, प्रीतमलियोछिनाय॥३८॥ पीयलियोपियमनलियो, लियोअधररसझूंम ॥ इतोलयोतैंकहाद यो, वैरनिवंसीसूंम ॥ ३९ ॥ वंसीवंसीनामयह, काहूधरयोप्रवीन॥ तांनतांनकीडोरिसौं, पैंचतहैंमनमीन ॥ ४० ॥ वडेकढेगुनवांसुरी, वांवनसीलघुवेस ॥ भलीनचाइनाचहम, तोकौंहैंआदेस ॥ ४१ ॥ आपषुदीतूकरतरी, भईमुसद्दीमैंन ॥ गुद्दीपरक्यौंचढतहैं, मुद्दीव्हैं करिवैंन ॥ ४२ ॥ कहाजानैंतूवांसुरी, भीजेमनकीपीर ॥ कोरीसू केहीयकी, अनवोलीरहुवीर ॥ ४३ ॥ गांठिगंठीलेवंसकी, महा द्रोहकीषांनि ॥ मतिमारैंरीमुरलिया, तांनानिविषकेवांन ॥ ४४ ॥ हमहारीगारीजुदैं, जंडसौंकहावसाय ॥ मौंनगहतनहिंमुरलिया, हायहायफिरिहाय ॥ ४५ ॥ मुरलीसुनितनमैंभई, आंसूदृगानिवि

साल ॥ मुषआवैंसेईकहैं, प्रेमबिवसब्रजबाल ॥ ४६ ॥ नागरिहिय हरिहिलगकी, दारूधरीदबाय ॥ आगिरागबंसीलपट, पुंहचउठी भभकाय ॥ ४७ ॥ इतिश्रीगोपीबैंनबिलाससंपूर्ण ॥ १२ ॥

अथ रासरसलता लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ निससदोत्फुल्लमल्लिका, ककुंभकांतराकेसि ॥ गहीबैंणुहरिनिरषिवन, रासरमणआवेस ॥ १ ॥ पूरनससिनिसिस रदकी, चलिबनमलयसमीर ॥ होतबैणरवरासहित, तरुनतनइया तीर ॥ २ ॥ बंसीधुनिदूतीपठैं, वोलीहैंब्रजबाल ॥ समरबिजेआरं भरस, रासकरननंदलाल ॥ ३ ॥ परमप्रेमआरूढरथ, बिषमपंथधु निबैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहित, चलीमदनगढलैंन ॥ ४ ॥ बिमलजु न्हइयाजगमगी, रहीबैंनधुनिछाय ॥ प्रेमनदीतियरगमगी, बृंदा काननआय ॥ ५ ॥ रुकीनकापैंतियगई, छाडिकाजगृहचाह ॥ मिल्योस्यामरससिंधुमन, सलिताप्रेमप्रवाह ॥ ६ ॥ जुरेकरनिकर कमलबिच, अमलजुन्हइयाजोति ॥ हावभावबहोगांनगति, रास रंगअतिहोत ॥ ७ ॥ नूपुरकंकनकिंकिनी, मिल्योझमाकिझंकार ॥ कोटिकामदलदलमलति, पायनिमतिबिसतार ॥ ८ ॥ अतिदरसी सरसीजुछबि, द्वैंतियमधिनंदलरल ॥ कंचनमणिबिचस्याममणि, मनौंमैंनकीमाल ॥ ९ ॥ पदंन्यासउठिरासमैं, कुसमसुगंधितधूर ॥ रह्योनूपुरनिनादसौं, नववृंदाबनपूर ॥ १० ॥ लगेहौंनरसरासमैं, बहोसंगीतप्रकार ॥ गांनतांनअतिगतिनके, कहिनसकतबिस्तार ॥ ॥ ११ ॥ रासकरतनंदलालतिय, संगसरदकीरात ॥ लाघवतातन

फिरनकी, मनौंमैनश्रालात ॥ १२ ॥ फुरतहरवईपगानिकी, नचत
मांझदरसाय ॥ बालालालाफूलपर, उरपातिरपलैंजाय ॥ १३ ॥ ल
षिउपजतचपलांनिचित, सीषनकीललचांन ॥ लगेलंकललनांनि
की, अलगलागलैंजांन ॥ १४ ॥ निकसिनिकसिमंडलनितैं, लेत
ललितगतिलाल॥ देषिदेषिअंकनिभरत॥ रीझिरीझिबसबाल॥१५॥
मुकटलटकपटफरहरानि, भृंगभरहरानिसंग ॥ मुषमुरलीधुनिघरहर
नि, नृत्ततस्यामसुधंग ॥ १६ ॥ ग्रीवढौरिगतिलैंचलनि, हलनिअ
लकउरहार ॥ पायनिमनमथदलमलनि. नचतललनिछबिसार ॥
॥ १७ ॥ कबहूप्रियमंडलकढत, अतिगतिबढतसुधंग ॥ हरिकेमन
लोचनफिरत, उरझेपायनिसंग ॥ १८ ॥ वैंनीचलानितंबपर,
छनकछलाअंगुरीन ॥ नचैंचंचलासीकला,कोबिदप्रियाप्रवीन ॥
॥ १९ ॥ लालल‌ईउरलाइलषि, रीझेगतिसरसांनि ॥ मंडलमैंसुरझैं
नहीं, अंकमालउरझांनि ॥ २० ॥ उतअरझीकुंडलअलक, इतवे
सरिबनमाल ॥ गउरस्यामअरुझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ २१ ॥
गरवहियांगतिलेतमिलि, श्रमबससिथिलतपाय ॥ डारेमनलैसब
निके, डगमगडगातिडुलाय ॥२२॥ लेतबलइयारीझदोऊ, दोऊपौं
छतश्रमवारि ॥ नचतसनीअतिरंगसौं, बनीमदनमनुहारि ॥ २३ ॥
उतैंझुकौंहौंनवमुकट, इतैचंद्रिकाचार ॥ भयेरासरसमगनतन, सर
केसकलसिंगार ॥ २४ ॥ पूटिपूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेबार ॥
अमितरासरससरंगमैं ॥ टूटिटूटिगयेहार ॥२५॥ कहतकहतकहांलगि
कहैं, कविमतिमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहबिलासमैं. कोरिकोरिव्है
रास ॥ २६ ॥ नागरियादयरासमैं, अगनितकलपवितायं ॥ मन

मथहूकोमनमथ्यो, कथ्योकौंनपैंजाय ॥२७॥इतिश्रीरासलतासंपूर्णं

अथ रैंनरूपारस लिष्यते ॥

दोहा ॥ सरसाईबृंदाबिपुन, अमलजुन्हाईरैंन ॥ लगतसुहाईदृगनिकौं, कुंजनछबिसुखदैंन ॥ १ ॥ स्वेतफूलफूलेलतनि, बिलुलितहीराहार ॥ ज्यौंन्हओढिपटरूपहरी, कुंजनिकरेसिंगार ॥ २ ॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रविपुनइहिंभाय ॥ ससिकारीगररुपहरी, अफसांकियोबनाय ॥३॥ चितैंबदनब्रजचंदको, रीझिचंदभयोचूर ॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमैं, कुंजनिबिषरयोनूर ॥ ४ ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बिचानिकुंजबनबाग ॥ कतरिस्वेतमुक्केसमनु, रतिपतिषेल्योफाग ॥५॥ कुंजसर्बव्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेषनसगुनमनु, निगुनब्रह्मकीजोति ॥६॥ नवनिकुंजराकारुचिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटकफानूसनभ ॥ बिचससिदीपप्रकास ॥ ॥ ७ ॥ चंदचंद्रिकामंदकी, दंपतिअंगउजास ॥ लताकुंजरंध्रनिकढ्यो, किरननिनिकरप्रकास ॥ ८ ॥ मैनरंगरसरगमगे, जगेउजारीरैंन ॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसोंहैंनैंन ॥ ९ ॥ अंपियनआरसछबिलषैं, अमलउजारीमांहि ॥ ब्हुरिचंदकीडीठडरि, करतमुकटकीछांहि ॥ १० ॥ पलकैंपाननपीकसौं, रंगीजुरंगनववाल ॥ रीझिरहेसोईनिरषि, निसनीदभरेदृगलाल ॥ ११ ॥ सहजछकेसेरसछके, छकेनीदअरसांन ॥ छकेछकावैंपीयकौं, नैंनरूपमदपांन ॥ १२ ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहि ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहरैंनांहि ॥ १३ ॥ श्रवननिछ्वैं

छविसौंफिरैं, लोयनवंकविसाल ॥ फुलैंनआरसअधफुले, करत लालपरहाल ॥ १४ ॥ अरसांनैंघूंमतझुकत, सरसांनैंछविऐंन ॥ विहंसिढुरानैंपीयपर, नींदघुरांनेनैंन ॥ १५ ॥ रैंनघटैंत्यौंत्यौंव ढैं, आरसरूपझकोर ॥ नींदभरैंपियउरअरैं, नैंननिपैंनींकोर ॥ ॥ १६ ॥ जवपलआवैंझुकतपिय, दरपनदेतदिखाय ॥ तवअप नीअंपियांनपर, अंपियांरहतलुभाय ॥ १७ ॥ नींदझुकीपलनिरपि पिय, देतहैंपांनवनाय ॥ उतनैंननिकेफुलतहीं, इतवीरीछुटिजाय ॥ ॥ १८ ॥ भौंरनिवारतवदनलपि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगा वतलालजव, फुलेनैंनमुसक्यात ॥ १९ ॥ सपीलखैंदुरिद्रुमनिमैं, व्हैंगइचित्रसरीर ॥ निसउनदोहैंद्दगनिमैं, भईद्दगनिकीभीर ॥ २० ॥ अरसांनींनिरपतप्रिया, जातविहानीरैंन ॥ नैंननिलखिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ २१ ॥ धरैंचित्रुकतरहाथद्दग, देषतनींदखुमार ॥ लगेरूपकेरहचटैं, पौढतनाहिंरिझवार ॥ २२ ॥ लपिउरझेसुरझैंन हीं, सवनिसगईविहाय ॥ आरसउरझेद्दगनिमैं, पीयरहेठहराय ॥ ॥ २३ ॥ क्यौंसुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाहियमैं वसो, यहरूपारसरैंन ॥ २४ ॥ नागरिनैंननिरूपव्हैं, दोहापढिनै नानि, अछरनिहूकैंनैंनभये ॥ कहिनसकैंवैनानि ॥ २५ ॥ इति श्रीरैंनरूपारससंपूर्ण ॥

अथ सीतसार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ सीतनिसासंकेतहित, रचिवरचौपरितोत, हितपक्वे नांहिनउठैं, फिरिफिरिकछेहोत ॥ १ ॥ समझिदावपियचूकिकैं,

चलतसारिसुपसारि ॥ पकरिपिछौंहौंदेतकरि, नवलडकीलीनारि ॥ २ ॥ फंटकसारगहिलटकसौं, देतछबीलीवाल ॥ परतझगरई पेलविच, होतस्वेततैंलाल ॥ ३ ॥ पीतसारघनस्यामकैं, स्यामसारसुकंवारि ॥ खेलसारललितादिलषि, मनधनडारतवारि ॥ ४ ॥ प्रियजीतैंतियसलजदृग, चितईजुतअंगरानि, बाजीबाजीलषिउठी, बाजीठहरीजानि ॥ ५ ॥ समैंदानदुपदानभो, पांनिहुसकैंन जोर ॥ गुलहाथनिगुलगीरलैं, गुलकीनौंगुलमोर ॥ ६ ॥ सिषरीधरिनियरैंकरत, इकटकडीठमिलाप, मीतसीतमैंदृगनिकी, तापिबुझावतताप ॥ ७ ॥ दोऊसनमुषबैठिकैं, तपैंअंगीठीमीत ॥ अंगुरीअंगुरीपरसतैं, अधिकअधिकव्हैसीत ॥ ८ ॥ लोयकदैंमुषलोयनन, बुझैंहोतसुषअंग ॥ सीतरैंनदोउमीतकैं, तापनहीमैंरंग ॥ ९ ॥ सीतकियोबससीतकैं, मीतकियोवसबाल, सालसालकरिदृगनिकौं ढांप्योअंगरसाल ॥ १० ॥ अबररंगकीसालबिच, हसिफेरचोमुषचंद ॥ अतनातसमैंरीझिकैं, पियमनभोइसफंद ॥ ११ ॥ थरहराततनबचनचल, चंचललोयनवंक ॥ भईभीतबससीतकैं, सरकतआवतअंक ॥ १२ ॥ अनदेषैंदृगतरफरत, बिनांमिलैंबेहाल ॥ एकनिहालीसौंभये, दोऊनिपटनिहाल ॥ १३ ॥ नेहपगेरहियेलगे, नागरहिमरितुधाम, सुंदरपांनिपसहितहैं, तियउरगरमहमाम॥१४॥ इतिश्रीसीतसारसंपूर्ण ॥

अथ इस्क चिमन लिष्यते ॥

दोहा ॥ इस्क उसीकीझलकहैं, ज्यौंसूरजकोधूप ॥ जहांइस्कत

हांआपहैं, कादरनादररूप ॥ १ ॥ कहूंकियानहिंइस्कका, इस्तैंमालसंवार ॥ सोसाहिबसौंइस्कवह, करिक्यासकैंगंवार ॥ २ ॥ सरमिंदाहोइइस्कसौं, सोदेवैंसवपोइ ॥ निंदासहदांनेबजैं, सोईचुनिंदाहोइ ॥ ३ ॥ दुनियांदारफकीरक्या, हैंसबजितनींजात ॥ बिगरइस्कमस्तीअरे, सबकीकिस्तीबात ॥ ४ ॥ सादेजेप्यादेसवैं, जद्यपिधनअनपार ॥ इस्कअमलमस्तीलियैं, सोहस्तीअसवार ॥ ५ ॥ सबमहजबसबइल्मअरु, सबैंऐसकेस्वाद ॥ अरेइस्ककेअसरविन, एसवहीबरवाद ॥ ६ ॥ आयाइस्कलपेटमैं, लागीचस्मचपेट॥ सोईआयाषलकमैं, औरभरइयापेट ॥ ७ ॥ जरबाजीबिनखलकके, कामनसंवरैंकोइ ॥ एकइस्कबाजीअरे, ज्यांबाजीसौंहोइ ॥ ८ ॥ सीसकांटिकरभूधरैं, ऊपररप्पैंपाव ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, ऐसाहैंतोआव ॥ ९ ॥ जिनपांवौंसौंषलकमैं, चलैंसुधरिमतिपाव ॥ सिरकेपांऊंसौंचला, इस्कचिमनमैंआव ॥ १०॥ कोइनपहुंचाउहांतलक, आसिकनामअनेक ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, आयामजनूंएक॥११ इस्कचिमनमहबूबका, जहांनजावैंकोइ ॥ जावैंसोजीवैंनहीं, जीवैंसुबौराहोइ ॥ १२ ॥ अरेइस्ककेचिमनमैं, सम्हलिकैंपगधरिआव ॥ बीचराहकेबूडनां, ऊबटमांहिबचाव ॥ १३ ॥ मारेफिरिफिरिमारिये, चस्मतीरसोंपूब ॥ कियेंअदालतजुलमकी, जहांबैठामहबूब ॥१४॥ आसिकपीरहमेसदिल, लगैंचस्मकेतीर ॥ कियाषुदामहबूबकौं, सदासखतबेपीर ॥ १५ ॥ आसिकासिरअपनाअरे, धरिदेपैंरूल्याय ॥ बेनिसाफमहबूबकैं, करैंदूरिअनपाय ॥ १६ ॥ पूंनकरैंलडबावरे, महबूबौंकेनैंन ॥ आसिकासिरकीगैंदसौं, खेलैंतवहिचैं

न ॥ १७५ ॥ सुरपचस्ममहबूबनैं, पंजरकियेसंवार ॥ निकलैलो
हूसौंरंगे, आसिकपंजरपार ॥ १८ ॥ इस्कखेतसौंनहिटलैं, आवैंबे
उसवास ॥ चस्मचोटसौंसिरउडैं, धडबोलैंस्यावास ॥ १९ ॥ पल
ककियाषालिकअरे, हसनेंहींकौंषूब ॥ सहनैंकौंआसिककिया,
मारनकौंमहबूब ॥ २० ॥ चस्मौंसौंजष्मीकरैं, रसगस्मौंबिचषेत ॥
लटतस्मौंसौंबांधिकैं, दिलबस्मौंकरिलेत ॥ २१ ॥ पंडितपूजापाक
दिल, एदिमागमतिल्याय ॥ लगैंजरवअंषियांनकी, सबैंगरवउडि
जाय ॥ २२ ॥ पावसकैंनहिठहरिकैं, छुरीचस्मकीपीर ॥ जोजानैं
जिसकेलगैं, कहरजहरकेतीर ॥ २३ ॥ तीरनिगाहौंकेलगैं, दरद
मुकरराहाय ॥ जरराहभीजरराहसौं, मिलैंनउरकेघाय ॥ २४ ॥
एतबीबउठिजाहुघर, अबसछुवैंक्याहाथ॥ चढीइस्ककीकैफयह, उत
रैंसिरकेसाथ ॥ २५ ॥ कस्मौंतुम्हैंकरीमकी, सुनियोसवैंजिहान ॥
चस्मौंकीलागीगिरह, छूटैंछूटैंज्यान ॥ २६ ॥ क्याराजाक्यापात
सा, क्यागरीबकंगाल ॥ लागैंतैंछूटैंनहीं, नैननिबडोजंजाल॥२७॥
लगातीरजमधरछिपैं, छिपैंछिपाईसैफ ॥ नहिंउतरैंनांहींछिपैं, हैं
फइस्ककीकैफ ॥ २८ ॥ अरेपियारेक्याकरौं, जाहिरहोहैंलाग ॥
क्यौंकरिदिलबारूदमैं, छिपैंइस्ककीआग ॥ २९ ॥ आतसलपटैं
रागकी, पहुंचैंदिलबिचजाय ॥ दबीइस्कबारूदकी, भभकानिला
गीलाय ॥ ३० ॥ उठैंआगिउरइस्ककी, जलैंऐसआराम ॥ चलैंन
कैफीचस्मबिच, घुटैंधुयेंकेधाम ॥ ३१ ॥ गिरेरहैंभिजेरहैं, मुतल
कभीसम्हलैंन ॥ हुस्नपियालापीयकैं, हुयेहैंमदवेनैंन ॥ ३२ ॥ गिरे
तहांहीगिररहे, पलभीपलउघरैंन ॥ पूरेमदवेहुस्नके, मजनूंहीकेनैं

न ॥ ३३ ॥ चलीकहानीषलककमैं, इस्ककमायाखूब ॥ मजनूंसेआसिकनहीं, लैलीसीमहबूब ॥ ३४ ॥ मजनूंकौंकहैंसबअसल, औरनकलकेभाय ॥ कछुहोदिलमैंअसलतब, सकैंनकलभीलाय ॥ ३५ ॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनैंदिलदस्त ॥ हरीदासकेहालमैं, दरदिवालभीमस्त ॥ ३६ ॥ इस्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय, हरीदाससबकौंगया, चेटकरूपदिखाय ॥ ३७ ॥ इस्कहुस्नकीबातक्यौं, सकैंसुपनमैंआय ॥ दिलचस्मौंकेजुबांहोय, तबकछुकहैंसुनाय ॥ ३८ ॥ कहीजायकहांइस्ककी, कहैंनमानैंकोय ॥ जानैंसोजानैंअरे, जिससिरबीतीहोय ॥ ३९ ॥ पलकनमानैंएकभीअबसकियेंबकबाद ॥षूबकमावैंइस्ककौं, तवकछुपावैंस्वाद ॥ ४० ॥ मजाअजायबहुस्नका, चष्षैंचस्मजुबान ॥ इस्कचिमनरष्षैंसोई, आबादानसुजान ॥ ४१ ॥ चस्मौंकेचस्मांझरैं, झरनांआबफिराक ॥ इस्कचिमनतबसब्बरहैं, दिलजिमीनहोयपाक ॥ ४२ ॥ इस्कचिमनआबादकरि, इस्कचिमनकौंगाव ॥ नागरघरमहबूबकैं, इस्कचिमनमैंआव ॥ ४३ ॥ जिगरजष्मजारीजहां, नितलोहूकाकीच ॥ नागरआसिकलुटिरहे, इस्कचिमनकेबीच ॥ ४४ ॥ चलैंतेगनागरहरफ,इस्कतेजकीधार ॥ औरकटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवार ॥ ४५ ॥ इति श्रीइस्कचिमनसंपूर्ण ॥

अथ छूटक दोहा मजलस मंडन लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ मोरपखउवाबांसुरी, बेसरिगुंजाहार ॥ ब्रजमोहन हियमैंबसौ, जाकोयहैंसिंगार ॥ १ ॥ नीलांबरासिरचंद्रिका, गउर

अंगअभिराम ॥ सोमेरेहियमैंबसो, मोहनमोहनभाम ॥ २ ॥ जसब्रजभूषनबिनअवन, नहिंसोभाकेत्रैन ॥ बिनांलालरसनाकहा स्यामबरनबिननैंन ॥ ३ ॥ सुभरेवाकेकुचनिपर, डीठिपरीहैं पैठि ॥ मनौंपरेवासिसतरू, रहेबराबरबैठि ॥ ४ ॥ अदभुतगतिक हितनवनैं, भईजुमोमतिबांझ ॥ चितयेतोमुषचंदमैं, घटादामि नीसांझ ॥ ५ ॥ बोलनिडोलनिहसनिमैं, रहैंसदाहैंसंग ॥ देषिफि दाहैनैंनये, अजबअदाहैंअंग ॥ ६ ॥ प्रेमगलीबिचरूपकी, पंवा षसीव्हैंपूर ॥ लोचनदुब्रलवापुरे, भयेंजातहैंचूर ॥ ७ ॥ न्याजत्रैं डसौंपैंडदें, निजरिनिजरिसौंजोरि ॥ अजबअदबसौंनिजरकरि, लीनैंप्रानमरोरि ॥ ८ ॥ उडिनजायनाजकनिपट, उरजउटेंहैं पीन ॥ बनकबनेमनौंकनकके, मीरफरसधरिदीन ॥ ९ ॥ चलत नचतसीहसतसी, पलटतसीलैंतांन ॥ चातुरपातुरसीभई, तेरीभौं हसुजांन ॥ १० ॥ भीनैंबिमलकपोलपर, लगीछूटिलटसाफ ॥ घुसनवीसमुनसीमदन, लिष्योकाचपरकाफ ॥ ११ ॥ कुचकुरसी बिचउरबसी, ऊंचीलसीसुतोर ॥ पियमनपातिसाहीकरन, रचीअदा लतठौर ॥ १२ ॥ गउरसरीरादेषिछबि, भएअधीरालाल ॥ बीरा सीकटिलपटिरही, हीरावंदनमाल ॥ १३ ॥ आननभूपनआन कैं, ऐसीसोभादूर ॥ आइजेवजैसीजगी, पायजेबपयपूर ॥ १४ ॥ तनऊंचैंअंगियांतनी, सुंदरसाफतरास ॥ पियदृगबिहरनकोंकरी, मनमथफरसफरास ॥ १५ ॥ अंगनाअंगआंगीतनी, ओपीलालसुरंग ॥ मनौंमैंनपतिसाहके, पेमापरेउतंग ॥ १६ ॥ चरनहरनमनिनहनिमैं, दीमेंहदीसुपदान ॥ बैठेपंकजदलनिमनौं, मंगलमंगलमान ॥ १७ ॥

रुचिररूपकोमलबिमल, सहजअरुनईपाइ ॥ मनुअनुरागीदृगनि को, रंगरह्योलपटाई ॥ १८ ॥ पाइनफूलीसांझसी, चित्रतजावक कीन ॥ मलिनभयेलपिनलिनमुष, सोतिनकेछविछीन ॥ १९ ॥ तनविवेकबगतरकस्यो, धरमढाललइवोट ॥ तऊलागिनिकसी परें, चषचितवनिकीचोट ॥ २० ॥ घावअवैनाहिंनैंकहूं जायरुधिर तनसूकि ॥ जबजूटैंफूटैंपरैं, नैंनाअनीअचूक ॥ २१ ॥ चाहभरी चितवनिचतुर, चितवतभामिनअंग ॥ उततैंअदभुतव्हैपरत, भौंह भंगमैंरंग ॥ २२ ॥ चितवनिमैंझुकिझांकतैं, तियदृगदुतिदरसाय ॥ मनौंजालअनुरागके, पंजनअरुझेआय ॥ २३ ॥ अंतरहितवृतप कमहा, ऊपररूपेमीत ॥ सोइनलोइनमैंलही, मोइनकीसीरीत ॥ ॥ २४ ॥ कांनींकीनोंकीलगैं, कांनीकीउनिहारि ॥ तुपकचलावत सैंनकी, एकनैंनकीनारि ॥ २५ ॥ चटकमटककरिटहरिया, ओ ढिलहिरियाचीर ॥ गईसहरियाकरिदृगनि, मारिमहरियातीर ॥२६॥ नैंनकथकवांचतकथा, मोहनसैंनासिलोक ॥ पीवतश्रोतानागरी, इहरसइकटकओक ॥ २७ ॥ टाटीऔझिलपारधी, करनहरनकौं लोट ॥ ज्यौंपांपियनकीओटसौं, अंपियनकरहीचोट ॥ २८ ॥ अच्छीआंपियांदच्छिनी, कच्छीमनमथस्वार ॥ नेजाफेरिकटा च्छिके, गईकरेजाफार ॥ २९ ॥ कबहुउठैंअधविचरहैं, निपटमु कैंबसलाज ॥ मनुमुरीदव्हैमैंनके, नैनयेकरतानिवाज ॥ ३० ॥ ढि गभौंहैंमहराबकैं, झुकिकरनैंननिवाज ॥ वरुनीहाथउठाइकैं, मांग तहैंकहाआज ॥३१॥ मुषमूंदैंहींहंसतअति, करैंनदसनउद्योत ॥ बा हिरजाहिरहोयतो, दबैंजंवाहरजोत ॥ ३२ ॥ तनकनसौंहींहोतहैं,

नवलनेहदृगकोर ॥ घूंघटहीमैंरंगभरी, मुसकतिलजातिलजोर॥३३॥
बलगनभुवमदतरुनई, रुचिररूपअभिमान ॥ मचकनिमेंरमजे
जकी, मगजभरीमुसक्यान ॥ ३४ ॥ सिलमुदाजसेदृगनिसब,
स्याममोरझलकाय ॥ देषैंस्याममयूरतव, द्रवीभूतव्हैजाय ॥३५॥
पहिलैंएआंपैंमिलत, तनमनअंपियनसंग ॥ हिलनामिलनकीचाह
को, झलकतअंपियनरंग ॥ ३६ ॥ मिलेसजातीनैंनहासि, सैंनउर
निउरजोर ॥ करतसलौंनैंरूपकी, मिझमांनीदुहुंओर ॥ ३७ ॥
काचैंहितचितनवलतिय, सकैंनइकटकहेर ॥ भजैंलजैंदृगदबि
उठैं, कबहुकरैंभटभेर ॥ ३८ ॥ इकटकरहिरहिजाहिदृग, दियैंदीठ
मैंदीठ ॥ नेहपूररनसूरज्यौं, चलैंनदैकैंपीठ ॥ ३९ ॥ मोहिकहततू
स्यामसौं, मिलीनतनमनबैन ॥ कहारह्योमिलिबोतबैं, मिलेनैंनसौं
नैन ॥ ४० ॥ अरुननैंनपूंनीषरे, करतमैंनउतपात ॥ धुकिधुकिमो
हीपैंचलैं, रुधिरलपेटेगात ॥ ४१ ॥ दृगपायकसेकरनगहि, हाव
भावकिरपान ॥ घावजातकरिदावसौं, पावफुरतसोठान ॥ ४२ ॥
मनहरिमेरौलैंगयौ, तबनभयोचितचेत ॥ ज्यौंदिल्लीबाजारठग, जे
बकतरधनलेत ॥ ४३ ॥ नावनासिकाबदनसर, बंसीगुंजघुमाव ॥
मोदृगउरझेमीनज्यौं, नहिंछुटिबेकौदाव ॥ ४४ ॥ अकलबिकलभ
इप्रीतसौं, सकलसपिनकेमांझ ॥ नकलपरैंयातैंकरैं, नकलभोरअरु
सांझ ॥ ४५ ॥ इतपैंचतमनकीलगन, उतपैंचतकुलकान ॥ पैंचापैं
चीजातहैं, तूटेप्रानसुजान ॥ ४६ ॥ नेहअनलबहुदिनानिको, कछु
केरह्योहियजागि ॥ पांतीदैफूंकैंकहा, दबीदबाईआगि ॥ ४७ ॥
रहतगगननहिंठहरिसासि, डोलनिहींकीबांनि ॥ फिरैंचकोरनिहेर

तो, दरसउपासिकजांनि ॥ ४८ ॥ प्रेमप्रबलसबतैंबडो, यातैंकौंन
बिसाल ॥ जाहिनचायोजगतसब, त हिनचायोबाल ॥ ४९ ॥
जापैंचितचिकनायनहिं, ताकीरूपीवान ॥ कटीलगावतचटपटी,
नकटीनकटीजांन ॥ ५० ॥ कजरौंहीअंषियानमैं, बस्योरहैंदिनरा
त ॥ प्रीतमप्यारोहेसपी, यातैंसांवलगात ॥ ५१ ॥ दीठहाथलीनैं
रहत, नहिंछाडतदिनजाम ॥ मेरेभोरेद्दगनकौं, रसिकपिलौना
स्याम ॥ ५२ ॥ जबडरतैंचाहतकह्यो, तबमुषआवतमौन ॥ ने
हरूपनेहींनकौं, बरनिसकैंकहिकौंन ॥ ५३ ॥ सपीलपीनंदलालजू,
कहतबालहासिगाथ ॥ तुमजोयाकेरिपुभये, यातैंमींडतहाथ ॥ ५४॥
ताजिदवातधरिअतराढिग, छाडिमानचलिसाथ ॥ अजबइलमलीनौं
सपी, रहैंकलमनितहाथ ॥ ५५ ॥ गहगहाटभोवदनपर, मदनकं
पायोगात ॥ रसनादसनानिदाबिकैं, तिरछैंतकिराहिजात ॥ ५६ ॥
चमकिचौंपमुखहसनिमैं, नैंनाझमाकिलजाय ॥ तमकिमैंनतनकंपि
न्हैं, यौंचितईअलसाय ॥ ५७ ॥ ओटतओठहिंभ्रमितमुख, चिहुं
टिलगीलटभीजि ॥ सुभेनैंननैंनानिमहीं, मुसकावतिहैंरीझि ॥ ५८॥
यहस्यौंलीनैंजातअब, मानदानदयोभाम ॥ आनदांनफिरिमदन
की, पांनदांनकिंहिंकाम ॥ ५९ ॥ मिलेमीतदोउजीतचित, भरि
भुजद्दढअंकवारि ॥ बैंनीकीदिसबीचितैं, हारगयोहैंहारि ॥ ६० ॥
पियदेषततियहारको, फूलगिरचोकहाभेव ॥ छातीछातीमिलनकी,
देतहैंपातीदेव ॥ ६१ ॥ चौंपचतुरईचाहचित, लगैंनैंनतनमैंन ॥
इनगुनगनबिनतनबसैं, मजलसरंगबनैंन ॥ ६२ ॥ आलसनींदउ
चाटचित, क्रोधईरषालाज ॥ दबकानिहियमैंधकधकी, मेटतरंगस

माज ॥ ६३ ॥ महलआयनैंबिचषरी, समाझिमांयनैंसांच ॥ हसिमु
षअंचरदैंरही, छातिलग्योलपिकाच ॥ ६४ ॥ मसनंदक्यारीकाम
की, प्यारीगुलरंगीन ॥ संकमानतसुपलेतमैं, प्रीतमभंवरप्रवीन ॥
॥ ६५ ॥ अरीजोरछलपियकियो, लियोमोरछलबोल ॥ भौंरउ
डावनमिसछुवत, दूरहितैंजुकपोल ॥ ६६ तिलकछरीगहिकनक
की, स्यौंरीतेजजसोल ॥ करतअनषइतमांमकौं, पियनहिंसकैंसको
ल ॥ ६७ ॥ पीकदांनबीनांबनी, मीनांरंगसुढार ॥ याहूकौंलखिसुं
दरी, प्रीतमदेतउगार ॥ ६८ बनिबैठीजगमगतदुति, पातुरचतुर
सुहांति ॥ जोयधरीमनमथमनौं, सिभैंदानकीपांति ६९ ॥ गईताब
महताबकी, मुखदुतिउदितमनोज ॥ तनसुगंधउठिकैंदबैं, किस्त
सोजकीओज ॥ ७० ॥ सबचौगांनचलाकसी, उमडीतांननिऔ
र ॥ आपआपकोलेतहैं, मनगैंदकबरजोर ॥ ७१ ॥ पैंच्योआवतनां
हिनैं, मनमत्तंगबलवान ॥ ताहिमिंहीनप्रबीनकी, तानलेतहैंतान॥
॥ ७२ ॥ ढीलेअंगआलसबलित, कछुकनवायैंनारि ॥ देतबुलावन
सैंनसी, चातुरऊंघानिहारि ॥ ७३ ॥ तनकबातअनमिललगैं, रस
मजलसकौंसाल ॥ देतमुंड़हूदुषअमिल, मुषमृदंगकीषाल ॥ ७४ ॥
घूमैंसीसनमनघुमैं, सुनतउठैंहिंतांन ॥ ताकेतननांहिनविंवैं, अर्जु
नहूकैबांन ॥ ७५ ॥ सिरअंचरपिसवाजके, छुटेबंधउरहार ॥ ढिग
भौंहैंमहरावकैं, मुखनैंचाकजदार ॥ ७६ ॥ पीवतहुक्काहोजपर, पि
यासाहितरसझूम ॥ बिरहअनलमनौंबरिबुझी, कढतधुवांकीधूम ॥
॥ ७७ ॥ अललअंगभौंहैंचढी, नैंनछकौंहैंलाल ॥ अतिगतिलेतग
मांनकी, नवगरबीलीबाल ॥ ७८ ॥ औरहुतियबीनानिकुसम, ज

तहैंवनकीओर ॥ पैंमेरेहीपैंडैपरे, शुकपिकमोरचकोर ॥ ७९ ॥ आंगनगुलबाजीरची, पियसंगरंगरसाल ॥ बाजीज्यांबाजीकरैं, दृगवाजीमैंबाल ॥ ८० ॥ बुरेकहावैंआपतैं, बुरेकियेतैंकाम ॥ औरनकौं आंधेकरैं, यातैंआंधीनाम ॥ ८१ ॥ भलोबुरोनांहिनलखैं, सवही सौंभटभेर ॥ यातैंआंधीकहतहैं, हियमैंबडोअंधेर ॥ ८२ ॥ मोती मूंगापाटके, फूंदाफाबिनप्रकास ॥ हरिराखीअंखियांनकौं, कारिराषीवसिपास ॥ ८३ ॥ पाईचितकीचातुरी, सुनौंकुंवरब्रजनाथ ॥ नीलपीतरंगपाटकी, राषीराषीहाथ ॥ ८४ ॥ हरिकरराषीलालरंग, धूंमकरतबडभाग ॥ झूंमिरहेमनौंकमलढिग, भंवरभरेअनुराग ॥ ॥ ८५ ॥ रंगरंगराषीरुचिर, रहीप्रियाकरझूल ॥ रूपलतालागेमनौं, बरनबरनकेफूल ॥ ८६ ॥ लैंरहिपांनापांनिमैं, लगैंननैंनानिमेष ॥ चित्रलिखीसीव्हैंरही, मित्रचित्रकोदेष ॥ ८७ ॥ पूरेजेबादनकरैं, करैंअधूरेबाद ॥ बादजहांतोस्वादनाहिं, स्वादजहांनाहिंबाद ॥ ८८ ॥ कविकैंअरुतियनवलकैं, दोहाछविसरसात ॥ दोहासिरबैंदीदई, सुनिचतुरनियहबात ॥ ८९ ॥ बहोगुनगनतनमैंभरे, जोननेहकोलेस ॥ नीकोऊफीकोलगैं, बिनांनृपतिज्यौंदेस ॥ ९० ॥ मनतनकौंकाटैंजबैं, कविताअरुकरवार ॥ जबगुनतिनमैंतीनव्हैं, सारधारअरुभार ॥ ९१ ॥ जिरमआंनरससरंगबिन, तजिकुडोलछंदभंग ॥ लीजैंकवितारतनमैं, संगढंगअरुरंग ॥ ९२ ॥ जद्यपिनीकीवस्तुहू, बिनओसरनसुहाय ॥ पोसमाहमैंचांदनी, कोऊनदेषैंजाय ॥ ९३ ॥ जोप्रभुफिरमानुषरचैं, तोबिनतीसुनिकांन ॥ वहोरिमोहिमतिदीजिये, रीझबावरीबान ॥ ९४ ॥ गुनहीतैंएकामके, गु

नहींतैंसनमान ॥ बिनगुनकाहूकामनहिं, मानुषगुडीकमान ॥९५॥ धनजोबनअरुरूपये, दिनांच्यारहीजांन ॥ जनमसंगातीहैंसदा, कृष्णकीरतनगांन ॥ ९६ ॥ तांनानिसौंमनतांनिकैं, प्राननिकरतअधीर ॥ बाजैंबनबंसीअरी, सुनिरीसुनिवहबीर ॥ ९७ ॥ यामुरलीतैंमोहनी, दीनीब्रजबगराय ॥ कौनऔटदीजेदई, कीजैंकहाउपाय ॥ ॥ ९८ ॥ बहोंतरहींसमझायहौं, समझतनाहिंइहिबेर ॥ बैंनसुनतचितरहतनांहिं, किहिंबिधिराषौंघेर ॥ ९९ ॥ दसनअंगुरियादैंरहैं, कबहुचलैंललचाय ॥ नागरसुनिसुनिमुरलिया, उठिउठिफिरिसुरछाय ॥ १०० ॥ लोकबडाईहैंजहां, लगैंभक्तिकौरंग ॥ तिनकैंमनबसकीजिये, तजिअधमनिकोसंग ॥ १०१ ॥ मनतूऊंचीठौरलगि, तहांनपहुंचैंऔर॥जहांबैठैंनीचिलगैं, सबऊंचीऊंचीठौर॥१०२॥किहिंकीनौंफिरिआयकैं, जगदुषमांझनिबाह॥ जोझांक्योउततनैंकहू, चढिदिवालकहकाह॥१०३॥नागरन्यारीरीतजहां,नेहनृपतिकोराज ॥ लाजकियेंलाजनरहैं,लाजतजैंरहलाज॥१०४॥रागरूपअच्छरलगैं, जांनिपरैंरिझवारि॥सूरातबहीजांनिये, जबनिकसैंतरवार॥१०५॥मनगजरोकैंनाहिंरुक्यो, गुरजनबचनानितीर॥लोकबेदकुलकांनिकी, तोरिचल्योजंजीर ॥ १०६ ॥ जिहिंमनमोहनरूपको, कीनौंमदरापांन ॥ भयोअयांनौंछिनकमैं, उडिगौसबैंसयांन ॥१०७॥ ज्यौंज्यौंदृगनिकटाच्छिके, मनकैंलागतघाव ॥ त्यौंत्यौंरनछकसूरज्यौं, धरतअगौंहैंपाव ॥ १०८ ॥ बिषरिपरचोमननिराषिकैं, नवनागरनंदनंद ॥ ज्यौंबालकलडबावरो, चहतांषिलौंनांचंद १०९॥ घूमैंसीसनमनघुमैं, रूपसहितलगितांन ॥ ताकेतननांहींबिधैं, अ

जुंनहूकेबांन ॥ ११० ॥ नागरियानिततततवैं, लपिलागतमुषमौंन॥
भईजातमनकीकुगति, गतिबरनैंसोकौंन ॥ १११॥ कहूंरहतकहूंवै
चलत, डोलतकाहूओर॥ प्यारीजूकैंहाथहैं, लालगुडीकीडोर११२
रूपभारनहिंसहिसकत, बीततमहाअचैंन ॥ रीझरोगदुपदूबरे,द
वेजातहैंनैंन ॥ ११३ ॥ ज्यौंबंदूकदारूदवैं, सहसगुनोव्हैंगौंन ॥
त्यौंहगलाजदबेनकी, चोटसहारैंकौंन ॥ ११४ ॥ दोहा ॥ भगी
कबिनकीचतुरई, लगीरूपकीलाय ॥ रसनाकोवसनाचलैं, नैंनपु
कारैंहाय ॥ ११५ ॥ अंगअंगरूपअनूपमैं, लपटीआनिअदाय ॥
रसनाकोबसनाचलैंनैंनपुकारैंहाय ॥ ११६ ॥ समझिसराहकसुघर
मनि, चाहककाव्यसुठौंन ॥ हरिगुनगाहकआपाविन, प्रीतनिबाह
ककौंन ॥ ११७ ॥ ईश्वरचाहैंसोकरैं, काढिसकैंकोव्यंग ॥ महादे
वसबजगतपैं, प्रगटपुजावतलिंग ॥११८॥ छोटीचंचलरंगसरस, रहैं
चितौंनाचितचाह ॥ दर्शीउत्तमलालमुनि, वाहवाहफिरवाह॥११९॥
सर्वोपरव्रजचंदव्रज, व्रजगोपीव्रजगोप॥ जहांतहांजगमगरही,व्रजा
नंदकीओप॥१२०॥ मंगलवपुव्रजलोगनिति, नितिव्रजमंगलचार॥
नितिदलहमंगलमई,श्रीव्रजइंद्रकुंवार॥१२१॥औरठौरकीआसतें,हो
यजगतमेंहास॥आसनरापूंऔरकी, व्रजबासनिकीआस॥१२२॥व्रज
मेंसुखकोलूटनर, लूटतभरिअनुराग॥यहलूटलूटनसकैं, ताकेवडेअ
भाग ॥ १२३ ॥ (रासअनुक्रमके दोहा)॥ नागरन्यारीरीतजहां,
नेहनृपतिकोराज ॥ लाजकियैंलाजनरहैं, लाजतजैंरहैंलाज ॥
॥ १ ॥ नागरियागतिलेततव, प्यारीसुलपसुधंग ॥ पियकेमन
लोचनाफिरैं, अरुझेपायनिसंग ॥ २ ॥ नागरियाप्यारीनचत, पि

यमनउपजतसंक ॥ लचकेजातहैंप्रानउत, जवइतलचकतलंक॥३॥ नागरियादीसतदोऊ, वनैंबंधअपार ॥ सूरेंरनमेंजानियैं, रासमांहिरिझवार ॥ ४ ॥ नागरियानिर्तततवैं, लषिलागतपुपमौंन ॥ भईजातमनकीकुगति, गतिवरनैंसोकौंन ॥ ५ नागरसैंननिसैनमिलि, वनीजुनैंननिनैंन ॥ वनतवनतऐसीवनी, कहतवनैंनहिवैंन ॥ ६ ॥

अथ अरिल्लाष्टक लिष्यते ॥

टौंनासोपढिदीनठटौंनानंदकैं ॥ रह्योपरतनहिंदियेंहगानिआनंदकैं ॥ जोकछुत्रोतैंमोहिसुकहातिबनैंनहैं ॥ इतघरघेरोहोइलगेउतनैंनहैं ॥ १ ॥ घरीघरीघुटिप्रानउसासनिजातहैं ॥ अरीजरीयहप्रीतिभरीनहिंजातहैं ॥ घरबनपरतनचैंनगईभजिनींदहैं ॥ सासछुटावतबासवीरवहनींदहैं ॥ २ ॥ कन्हूंनिकसिनहिंसकतगेहकेकौंनतैं॥ नेहआपदासहौंकहौंदुषकौंनतैं॥ उरअंतरकेमांझनिरंतरपीरहैं॥आचिरजकीयहबातनपावतपीरहैं॥३॥मिलीछैलकौंबालगैलजहांसांकरी॥ घूंघटलाजकपाटलगीकरसांकरी ॥ बलनिउघारतबदनरंगदुहूंधांरह्यो॥ व्हैगयोरूपउजासस्यामइकटकरह्यो ॥ ४ ॥ दूरिरहोजिनछुवोत्रबैंइतनायहौं ॥ लियोचहतरसबराहिंबाहगाहिनायहौं ॥ भूलिनेहनहिंकरूंयहैंजियआंवहीं ॥ तुमलैंजानतचित्तनदेबोआंवहीं ५॥ तुमसौंलागेनैंननमूझतत्रौरहैं ॥ तुमस्त्रारथरसमगनलगनकछुऔरहैं ॥ तुमछिनदेषैंविनांहगानिअंसुवापरैं ॥ तुमसौंत्र्प्रटकैंलाललतिन्हैंकलक्यौंपरैं ॥ ६ ॥ सुधिनलेतहोलालसुक्यौंफिरमोहियै ॥ यहैंअंदेसोसदारहतहैंमोहियैं ॥ छिनहूत्रिसरतनाहिंहमैंनिसमोरई ॥ कहर

करतहैंहायतिहारीभोरई ॥ ७ ॥ लपिसुधिभूलतभूलतज्ररउपरैंनियां ॥ अजूस्यामहमहरीरंगकीरैंनियां ॥ लालबिहारीआपमोहितन पीतकी ॥ नागरीदासनजायकहीगतिपीतकी ॥ ८ ॥

अथ सदाकीमांझैं लिष्यते ॥

इस्कछकीअंषियांअलसौंहींव्हैंइकटकमुसक्यावैं । धीरजधरम सरमकोकैसोसुधिकोसुधिबिसरावैं ॥ भायभरीभौंहैंमदमातीइतरातीं फिरजावैं । नागरीदासरौंमरौंमतबहायहायरटलावैं ॥ १ ॥ छरीछबीली गहैंहाथमैंअरीछैलइतआयो । गौंहनिमैंकाहूमिसिफिरिकैंकछुमोह नमुसकायो ॥ नैंननिसौंउरझायनैंनउंहिंमनसौंमनउरझायो । अ बनागरिसुरझावतिहौंचितसुरझतनाहिंसुरझायो ॥ २ ॥ सबमैंग्वाल सांवलाअच्छाभायगयामुझकौंभी । दोइचस्मौंकोइऐसादेखाकस्मौं हैंतुझकौंभी ॥ करीनिगाहैंअजबइस्कसौंतबहिइधरमुहफेरा । नाग रीदासखडेसबदेखैंचोरिलियादिलमेरा ॥ ३ ॥ सौंहनामुपसिरसुरप लपेटाधरैंमोरकीपांपैं । गरबभरीमदरूपअमानीअजबजरबकीआं पैं ॥ हसनैंमैंघाइलकरिडारीदरदहमेसांसहिये । नागरीदाससरमकी वातैंअबक्याआगैंकाहिये ॥ ४ ॥ निधरकप्रानइस्करनसूरेमुतलक नांहिडराहैं । वारकरैंमहबूबषूबजबहोयसुमारगिराहैं ॥ मुसकनचित वनसौंघायलव्हैंमायलपरेकराहैं । नागरीदासवाहवाहकहिलगीचो टसराहैं ॥ ५ ॥ जिसकौंबढीफिराकफिकरतिसऐसनहींदिनआनी । नागरियालगिचस्मचोटफिरऔरनचोटसुहानी ॥ सरईबांननलगी लगौंहींसुनिकैंइस्ककहानी । फहमिंदाईजतनाहिंपाईमजलसतहां

दिवानी ॥ ६ ॥ सेतडोरियेकादुपटासिरखुलेबारबिथरैंहैं । सूंघत फूलगुलाबसहजदृगझुकिझुकिजातछकौंहैं ॥ नेहसनौंचितवनचित वतहैंमोहनसोहनसौंहैं । नागरिदासछुवावतछविसौंफूलतैंअधरहसौं हैं ॥ ७ ॥ जेदिवारकहकाहकेबासीआयपरेहैंवाहिर । मुषमैंमौननी रनैंननैंमैंकुछनकरिसकैंजाहिर ॥ जकिथकिरहैंजरदतनजडज्यौंबूझि बूझिसबहारे । नागरिदासऔरलोगौंकेवेकिसकामविचारे ॥ ८ ॥ गायरोयजेसकैंनकबहीदुपउसासकैंसंग । आयगयेहैंजगकुपेचमैंप रिगयेकैदफरंग ॥ भईजग्यपसुदसादुहेलीकहनिमात्ररह्योअंग । ना गरियाकहिबेकौंमनकीमनकीगतिभइपंग ॥ ९ ॥ गांवनिरोवनिमौं नाहिमैंहैंमौंनाहिंमांझसराहनि । रोकतउर्धउसासमौनमैंयहदुषकठि ननिबाहनि ॥ बुरेबिजातीनिकटकाठसेलगेरहैंहियदाहनि । नागर सुखसागरकिनमेटोयहअबदुषअवगाहनि ॥ १० ॥

अथ बरषा रितुकी मांझ लिष्यते ॥

ठाढेदोउअटाअपअपनीघटाजुरीचहुंघांतैं ॥ गावतरागमलारप रसपरआवतश्रवनसुहांतैं ॥ चिहुंटेपटपानपतनउघरेनेहमेहसरसां तैं ॥ नागरियानागरलषिउरझेदृगनहिंटरततहांतैं ॥ भीजतदोऊए कछतनांतरलगिलपटायरहेहैं ॥ मधुकरमत्तबासरसभूलेलगिलपटा यरहेहैं ॥ गउरस्यामतननीलपीतपटलगिलपटायरहेहैं ॥ नागरिया तबतैंइननैंननिलगिलपटायरहेहैं ॥ २ ॥ रमकतरंगहिंडोरैंमोहनमु रलीमधुरबजावैं ॥ सुरमलारसुनिसुनिचहुंघांतैंबदराघिरिघिरिआं वैं ॥ मुकटझलकबनमालहिलोरतपीतांबरफहरावैं ॥ नागरियातिं

हिंछिनब्रजबालाअंकभरानिललचावैं ॥ ३ ॥ रसघातनिद्रुमपातानि कैंतरबातनिमैंउरिझेहैं ॥ बरसतमेहनेहरसदंपततउनतहांसुरिझेहैं ॥ भीजेकचकपोलचहुंटेलषिरातिपतिमनमुरिझेहैं ॥ नागरियानागरचि तयेंयौंमनलोयनजुरिझेहैं ॥ ४ ॥ स्यामाजूझूलतझूलेपरमोहनकर तषवासी ॥ लियेंमोरछलषरेजमींपरटहलचतुरसुषरासी ॥ बूंदपरें तांनतपीतांबरसोभितब्याहसभासी ॥ नागरसषीनिरषरहिइकटक कोतककुंजाविलासी ॥ ५ ॥ जरीजवाहिरजुगजेहराढिगलांवनलगी किनारी ॥ निकसीहुतीअबहिइतव्हैंकैंपहरिकसूंभीसारी ॥ फिरी बहुरिवनवनतैंभीजतओढैंकामरिकारी ॥ मैंनागरिजांन्यौंजान्यौंज हांव्हैंआईयहप्यारी ॥ ६ ॥

अथ होरीकी मांझैं लिष्यते ॥

केसरिरंगरंगीपगियांमुषजोबनजोतिषुलीहैं ॥ तैंसियभालगुला ललालअलकैंझुकिझूंमिझुलीहैं ॥ भौंहकसीमृदुहसीउरबसीमैंननिसैं नतुलीहैं ॥ नागरिदासनवलजुवतिनकीमनसादेषिडुलीहैं ॥ १ ॥ चलतललितगतिलैंलैंदंपतिअद्भुतनृत्यरचीहैं ॥ बीननवीनपगानिनू पुरधुनिसुलफसुधंगसचीहैं ॥ आयआयभरभरपलटतछविसौंआति धूंममचीहैं ॥ नागरियालपिमोजहोजपरमनमथफोजलचीहैं ॥ २ ॥ छविसौंछैलछोरतपिचकारीप्यारीओटबचावें ॥ दुहुंदिसचतुरषेलर सनायकचाचरिचहोलमचावैं ॥ हावभावअरुदुरनिमुरनिकोरंगक होक्यौंजावैं ॥ नागरियानैंननिकोदेषीबैंनानिमैंनहिंआवैं॥३॥छुटी अलकभुवबंकजुटीउरमोतिनमालतुटीहैं ॥ चलिअंचलचंचलनैंनानि

गतिपियमतिदेषिलुटीहैं ॥ भलीगुलालबालषुलिपेलतआंगनकुंज कुटीहैं ॥ नागरिनवलकेलिअलबेलीरतिजियदेषिघुटीहैं ॥ ४ ॥ दिट्ठाग्वारगारिसुरमिट्ठागावतइस्कलपेटा ॥ मदअलसौंहींनैंनसैंनदैं मारतमैंनचपेटा ॥ पियगोरीदाछैलहोरीदासुंदरअंगअंगेटा॥ नागरि दासदिवानीहुइयांदेषिअजबमहरेटा ॥५॥ इतिहोरीकीमांझैंसंपूर्ण ॥

अथ सरदकी मांझ ॥

ठढेदोउदर्पनमंडलपराबिमलकलपतरुछहियां ॥ झुकिझुकिकै प्रतिबिंबनिहारतछबिसौंदैगरबाहियां॥निरषिरूपनिजसंपतिदंपतिरी झतहैंमनमाहियां।रासरसिकनागरनागरितहांचमकिचंद्रिकारहियां१

श्रीठाकुरके जन्म उछवके कवित्त ॥

हरीभईभूमिद्रुमफूलिफलझूमिआयेफरहरमौरनचैंआनंदभोभारो हैं ॥ नानामणिधाततेगिरिंदनिप्रगटकीनीगायद्रवैंदूधतनभारबढ्यो न्यारोहैं ॥ गोपीगोपनागरयेकुमदसेफूलेफिरैंगोकुलकोचंद्रमांसब नलग्योप्यारोहैं ॥ सांचेहैंमरीचैंसुपसंपदाअमंदआजनंदकैंदुलारो भयोब्रजउजियारोहैं ॥ १ ॥ सुतहोतजसुधाकैंआनंदउदोतभयो नंदहूकैंआनंदउठ्यौहैंउफनायकैं ॥ नागरसुगोपगोपीआनंदभरीहैं गावैंबनमोरमृगरहेआनंदलुभायकैं ॥ ब्रजभूमिजमुनांगोवर्द्धनश्रीवृं दाबनसोभादेतआनंदमैंआनंदसमायकैं ॥ स्यामसुषधामअभिराम कामहरैंमनरूपधरैंआनंदप्रगटभयोआयकैं ॥ २ ॥ सुंदरसांवरो बालकहोतनचेसबनागररंगरचाये ॥ जेजनजाचकतेउठिनाचतदे तवेलेतनवेललचाये ॥ नाचतगोपिकागोपभरेहरदीदधिदूधतैंपेलम

चाये ॥ ग्वायेबधायेजसोमतिपैंमिलिआंगनमैंगहिनंदनचाये ॥ ३ ॥
गरबीलेडोलैंगोपओपअतिआनंदकीव्रजपतिजूकैंबेलिसुकृतकीफ
लीहैं॥ पुत्रउदैंहेतहेमरतनअनेकलच्छिभिच्छुकनदेतदेहदारिदकीद
लीहैं॥ नागरकुसमदामराजतसदनसोभातोरनपताकाद्वारसोहैंभांति
भलीहैं ॥ नंदघरआवतहैंगावतबधाईअलीगोकुलकीगलीगलीआ
जरंगरलीहैं ॥४॥ जसुदाकैंसुतभयोसुनिसुनिगोपिनिकीबाढीहैंचह
लचहूओरनिकलीनकी॥ टूटीमोतीमालउरअंचरउसरगयेछूटेकेसपा
ससोभाकुसमकलीनकी ॥ आननअमितभालकुंकुमतिलकफैलेछबि
बरनीनजातचंचलचलीनकी ॥ नागरमगनमनतनकीसह्मारभूलीगो
कुलगलीगलीनभीरयौंअलीनकी ॥ ५ ॥ नंदगोपराजसुनऔरैव्र
जओपआजतेरैंपुत्रभयोभैयापुंन्यफलजापको ॥ ब्रह्मरिषद्वारबहोदे
वताविमाननिपैंछायोसुरबेदगांनभेदकेअलापको ॥ घरघरसंपदा
अपारबढीदेषियतहमपैंनकींनौंजातबर्ननप्रतापको ॥ नागरयौंव्रेरबे
रग्वारकहैंटेरटेरतेरोघरमांनौंपरमेसुरकेबापको ॥ ६ ॥ एहोव्रजराज
एकभेषधारीकोऊआजपुत्रकोजनमसुनिआयोतेरैंभौंनहैं ॥ मोती
मणिमालपटकंचननचाहैंरंचहयगयभूमिग्रामलेतहमसौंनहैं ॥ नाग
रअहोटैनांहिंव्रजरजलोटैंवहिअलषलष्योहैंयौंउचारैंतजिमौंनहैं ॥
बालककेपायलैंलैंजटासौंछुवायनाचैंजोगीतीनआंषिकोकहांतैंआ
योकौनहैं ॥ ७ ॥ सवैया ॥ नंदकैंपुत्रभयोयौंआनंदकीआंनिअचां
नकबातसुनाई ॥ फूलउठेरसझूलसबैंसुउमंगनिअंगसह्मारिभुलाई ॥
नागरमंगलमादिककीनरनारिनकेमनमैंछकिछाई ॥ लायचलेरटए
कहीएकबधाईबधाईबधाईबधाई ॥ ८ ॥

श्रीठकुरानीजीके जनमउछ्वके कवित्त ॥

राधाकैंजनमआजरावरअगाधाओपहोतग निमंगलमृदंगतारपं
जरी॥औरैंछबिबढरेनरनारीडोलैंमोदभरेभानुसुत सुनिकैंप्रफूलेमुषकं
जरी ॥ कीरतिकीकीरतिकिकाढीचंदचीरतज्य ौंउपमांश्रमलकीलैं
डारीगतिगंजरी ॥ सोभाव्रजनागरीप्रकटभई रूपगोभाकेधौंनंदनं
दनकेश्रानंदकीमंजरी ॥ १ ॥ कीरतिकैकन्या होतमाचीदधिकादौं
अतिमानौंलोपितीरकौंचल्योसमुद्रछीरको ॥ बेदधुनिगांनधुनिना
गरनिसांनधुनिब्रह्मलोकगईपुरभेदिसुनांसीरको ॥ मोतिनकैंभारभ
रीमोतिनकेहारदेतजुरीहैंरमासीगोपीपारहैंनभी रको ॥ देवताबिमा
ननबिलोकिकहैंबारबारधन्यआजअवनिमैंभव नअहीरको ॥ २ ॥
काननकुंजसबैंउमगेउमगीजमुनांसुनिकैंसलत ारी ॥ यौंउमगीश्रव
नीब्रनकीराचिहैंमिलिरासानिसाउजियारी ॥ न ागरिगोपीसबैंउमगी
फिरैंआनंदआननवोपसंवारी ॥ कीरतिकैंभइ कन्याअनूपममोहन
कोमनमोहनहारी ॥ ३ ॥ उठिनागरनंदजसो मतिमोदसौंधायेबधा
येलैंगोकुलसैं ॥ श्रतिआनंदअंगनिवोपचढीच बलिगोपनदीजियेका
तुलसैं ॥ ब्रजमैंनरनारिउछाहछकेछबिनाचत गावतमंजुलसैं ॥ बृ
षभानकेकन्याभईसुनिकैंललनांपलनांमैंहसैंहु लसैं ॥ ४ ॥ चौगुनौ
चावबढ्योब्रजमैंयहकीरतकन्याअनूपमजाई ॥ चौगुनेदानबिधान
औगांनचहूंदिसचौगुनीयेधुनिछाई ॥ नागरप त्रभयेहुतेंचौगुनीमोद
भरीहैंजसोमतमाई ॥ चौगुनीनाचतगोपीश्राव नंदसौंचौगुनिनंदकैंवा
जैंबधाई ॥ ५ ॥ भईवृषभानजूकैरूपकीनिद ानसुतावाजतनिसांन

धुनिछाईचहूंकोदमें ॥ देवताअकासबृष्टिफूलनिकीकरैंठाढेभूमिब्र
जबासीजुरेभरेमहामोदमैं ॥ आयेनंदरायलैबधायेसंगरनवासनाग
रियामिलिरानीरानीयौंबिनोदमैं ॥ कीरतनैललीलैदईहैगोदजसुधा
कैंजसुधानैंलालदयोकीरतकीगोदमैं ॥ ६ ॥ ललीकेंजन्मदिनबर
सांनैंसोभाभलीमहलनिउतंगधुजाज्यौंमपरसतहैं ॥ दामिनीघटांनि
मैंअटांनिमैंज्यौंभामनीहैंइनकीसुदेहद्युतिदूनीदरसतहैं ॥ भादौंघन
घोरनितैंपौरिवृषभानजूकीनागरानिसांनानिकोघोपसरसतहैं ॥ इंद्र
अमरावतीकोनीरबरसतह्यांभयानेकौंमहिंद्रहीरचीरबरसतहैं ॥ ७ ॥
कवित्त ॥ कीरतकेंकन्याभईसुनिसुनिब्रजबधूलैलैभेटधाईसबआनं
दबहवही ॥ थारउरहारनिकेंभारब्रेसह्मारपगधरैंडिगुलातलगेलंक
निलहलही ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैपूररनवासनागरसुबासअंगअत
रमहमही ॥ रूपकीघटासीकरिगानकीगरजउठीबाजिपरीसिंघद्वार
नौबतगहगही ॥ ८ ॥ राधाकोजनमसुनिआनंदअगाधारानीजसुम
तआईवेगदौरिदरबरहैं ॥ कीरतकेआंगनभवनभीरलछमीसीलछन
जुरीहैंगोपीउछवकौभरहैं ॥ फूलनिकेहारओसुगंधनिकेउदगारवट
तकपूरपाननागरअतरहैं ॥ नितगांनतांनकेबिधानसनमांनहोतआ
जसपीरावरिमैंलाग्योरंगझरहैं ॥ ९ ॥ लषिकैंवृषभानसुताकौंजसो
मतिलायलईहियमोदमहा ॥ मुषचूंमकैंचांपिसुवायदईभईमोहमई
अबकैसीअहा ॥ जियमैंइकआवैंअचंभोयहैकहिनागरीयाबलिमो
सौंहहा ॥ अरीउंचैनिहारिकैंझारीपसारिनजांनियेरानीजूमांग्योक
हा ॥ १० ॥ कीरतदारानीवृषभानआदिगोपगोपीकैसैंधन्यधन्य
व्हैकैंजगजसपावते ॥ कौनतपकरतोयाब्रजबासकरिबेकौंकौनबः

कुंठहूकेसुपविसरावते ॥ नागरियाराधेजूप्रगटजोनहौंतीतोबस्याम परकामहीकेविपतीकहावते ॥ छायजातीजडताबिलायजातेकवि सबजरिजातोरसओरसिककहागावते ॥ ११ ॥ राधेकैंजनमसमैंगो पिकासमूहमिलिबैठीवृषभांनभौंनबातेंवतरावेंहैं ॥ कौंनहैंचतुमुषसो भिछुकनिमांहिंठाढोकौंनजटाधारीयहवीनाहिंबजावैंहैं ॥ कौंनतीन आंषनिकोबाघंबरओढिआयोकौंनच्यारबालकरीनागरसुहावैंहैं ॥ कौंनबदरांनिमैंवेदुंदुभीबजावैंगावैंकौंनएकहांतेंदैयाफूलबरसावैंहैं॥ ॥ कबित्त ॥ जनमसुताकैंहोतताकैंमणिमोतिनिकीभिछुकनिदैंनल च्छलागीतकसतहैं ॥ बिसमैंबरूथहौंहिंदेवादिगपालनिकेऐसीमौज फौंबकोऊकटिनकसतहैं ॥ राजानिकेराजामहाराजावृषभानजूके दानकीउमंडनिकुमेरअकसतहैं ॥ रथमारतंडगहैंसुंडबलबंडऐसेना गरवितुंडनिकेझुंडबकसतहैं ॥ १३ ॥ ॥ सवैयो ॥ कैसीअलोकि कभानजूकैंप्रगटीनिधिसुकृतपुंजाकियाकी ॥ देवताओनरनागनिकी सबकन्याश्रीराधापैंवारिछियाकी ॥ कीरतअंकमेंअंचरओटदिपैंदुति नागरिठौराहियाकी ॥ जैसैंबयारमैंढांपिलईझलकैंमनुनिर्मललोय दियाकी ॥ १४ ॥ ॥ कवित्त ॥ कीरतिकेकीरतप्रगटभईराधेश्रा जजिततितछाईहैंबधाईसुपदाइयै ॥ जगमागेउठयोब्रजबढीओप आनंदकीबरनीनजातसोभाअतिसरसाइयै ॥ भामिनीजुरीहैंभौंन आंगनमैंगोपगनभीरवृषभांनजूकैंनागरसुहाइयै ॥ द्वारैंदेवरिपि ठाढेकहैंपायछीवनिकौंजीवनिकेजीवनिकीजीवनिदिषाइयैं ॥ १५॥ ॥ सवईयौ ॥ कन्याभईवृषभानजूकैंउरअमृतधारिकरूपविसे षा ॥ फूलेकमोदनिज्यौंकुलदेषिसुलागतहैंनाहिंनैंननिमेषा ॥ कीर

तकूपदिसातैंउदैंजाकोसीतलतेजलसैंलघुवेषा ॥ नागरियाजगवंदनकौंप्रगटीमनुहैंजकेचंदकीरेषा ॥ १६ ॥ कवित्त ॥ मांचीदधकादौंवृषभानजूकैंसुताहोतभयेनरनारिअंगआनंदअगमगे ॥ नैकनसह्वारतनबसनरसनछूटैंछूटैंनांहिपेलतमैंरंगनिरगमगे ॥ बीरनिकेबृंदअरुहीरनिकेहारनगनागरागिरेहैंवेप्रस्वेदानिसगमगे ॥ जैसैंनभमंडलमैंतरइनकीसोभाअैसैंपरेव्रजमंडलमैंभूपनजगमगे ॥ १७ ॥

अथ सांझीके कवित्त ॥

रंगसरसांनैंबरसांनैंबनवागस्यामापेलैंसांझीसांझबहोसाथनिसिंगारकैं ॥ नूपरनिनादपूररह्योहैंद्रुमनिमांझजहांतहांलेतकलीकुसमउतारिकैं ॥ सांवरीनवेलीवालनीलमनिवेलीसीअकेलीफिरैंवांहांजोरीसंगसुकुवांरिकैं ॥ डारिहिनवावैंमिलिबीनैंफूलपावैंफलनागरियावारैंमनकोतिकनिहारिकैं ॥ १ ॥ सोहैंमुषकमलपैंभौंहैंलटभृंगपांतिनैंनलमछौंहैंकलगाकीजनुपषियां ॥ नासिकासरूंसीक्यारीअधरदुपहरियाकीमुसकनिमंदमकरंदसीमैंलाषियां ॥ प्रीतसांझीकाजकीनीकामकाछिछबिआछीऔरसाछीकोहैंताकीसाछीसबसाषियां ॥ फूलीबयसंधिसांझराधारूपबागमांझडोलैंआजफूलभरीनागरकीअंषियां ॥ २ ॥ फूलनकेउरहारहमेललियेंकरपंकजफूलफिरावैं ॥ फूलनकीनवलासनिसौंकईफूलनकीगुहिगेंदचलावैं ॥ फूलहियैंबिचपीयलियेंअलिनागररंगअलेलसौंगावैं ॥ मेलिकैंअंसभुजासुपझेलयौंपेलकैंसांझीयैंस्यांमाजूआवैं ॥ ३ ॥ सांझीफूललैंनसुषदैंनमननैननिकौंश्यामाजूसाथजूथजुवतिनकेधाएहैं ॥ चलतअधिकछबि

छाजतछबीलनिरंगीलनिकेरंगरंगपटफहराएहैं ॥ नागरिनिसांनना दनूपुरसमूहबाजैंअंगकीसुबासनिभ्रमरछूटआएहैं ॥ वृंदाबनवीच धायधरतउठीयौंगायमानौंधनस्यामैंजानिमोरकुहकाएहैं ॥ ४ ॥

अथ सांझीफूलबीनानिसमैं संवाद अनुक्रम लिष्यते॥

॥ सांझीकेकवित्त ॥ अथ सषीनिप्रति नंदकुमार बचन कवित्त ॥

ऐसेयासघनबनानिर्जनकेमांहिंमैंतोआवतीयजानीनांहिंजानीज बगाईहो ॥ औरहैंनसंगकोऊएकजातजुवतीहोविनहींबिचारैंजोर जोवनकैंधाईहो ॥ अबफिरजाहुआपआपकैंभवनसबठौरसुङ्को सीफिरेमदनदुहाईहो ॥ कैंधौंतुमनागरिहोहमैंसमझायकहौकौंनकी पठाईइहांकौंनकाजआईहो ॥ १ ॥ उत्तर ॥ सषी बचन कवित्त ॥ फूलनिकेबींनवेकौंआईइहिंबनमिलिबूझिबेकोहियैंऐसीधरनिबक्यौं धरी ॥ टेढीयेचितौंनदीसैंटेढाटेढीवातैंकहोटेढेहैंकैंठाढेछलीछैलरो पिकैंछरी ॥ उचितनहींह्यांअकेलेरहोजुवतिनिमैंनागरनिकासिजाहु याहीसांकरीगरी ॥ नांतोअनबोलेरहोछाडिमगमेरहमआवैंगीहजा रवेरतुमकौंकहापरी ॥ २ ॥ उत्तर नंदकुमार वचन कवित्त ॥ ह महींकौंचिंताइहिंबनकीरहतनितिनितिरषवारेरहैंलाग्योचितचेतुहैं ॥ हमआठौंजांमसेवैंकामनृपधामयहसहैंवनघामअतितातैंहियहेतुहैं ॥ हमहीतैंगहबरहरचोहैंरह्योहैंमहानागरियाप्यारोमीनकेतरसषेतुहैं ॥ हमहीकौंदैकैंकछुलैंनौंहैंसुलेहुयौंपरायेफलफूलनिकौंकौंनलैंनदेतु हैं॥उत्तर सषी वचन कवित्त ॥ कहाहैंपरायोसबदीसतसोराधेहीको विनहीबिचारैंझूठेबचनउच्चारेजू ॥ राधेहीकीभूमियहराधेहीकेपगस्नू

गराधेहीकोनांवरटैंसांझग्रौसंवारेजू॥ राधेहीकेसरवरयेतरवरहैंराधेके राधेकेफूलफलनागरानिहारेजू॥ राधेकीदुहाईफिरैंराधेहीकोवृंदावन तुमकौंनलालाबीचहटकनिहारेजू ॥४॥ उत्तर नंद कुमारबचन कबित्त॥ राधेजूकेहमहीहैंहमैंअपनायलेहुज्यौंबमुषसुधाधरदेपिदेषि जीजियैं ॥ निकटबुलायमोहिपायनिलगायरापोसपीहोकुंवरिजूकी पुनसिनपीजियैं ॥ हारेतुमआगैंबनद्रुमएतिहारेअबनागरियादुहूं औररसघनभीजियैं ॥ नीकैंसनमानकछूकरिरपवारनकोपाछैंबहो फूलनिसौंफूलनिकौंलीजियैं॥ ५॥ उत्तर सषीबचन कवित्वं ॥ फूलहैंहमारेहमलैंहगींबतुम्हैंकहाग्रैपैंऐसैंटोकिबोनकजिैंबालिहारी जू ॥ दीनताकरतव्रजराजकेकुंवरअबपहिलैंजेबातैंकहीवेसब बिसारीजू ॥ नीकेहीहोनागरहोबिमनेनहोहुतातैंव्हैंकारिनिसं कदिसआइयेहमारीजू ॥ बनकेबिहारीवारीलीजैंद्रुमरखवारी लालयेतिहारीमनुहारनिसौंहारीजू ॥ ६ ॥ कबिबचन ॥ ॥ साहससम्हारिस्यामग्रागैंआयेप्यारीजूकैंरूपकोअतुलभारपरत नसह्योहैं ॥ बीचनीलअंबरकैंबदनमयंकलषिचकतचितौंनगैं चकोरव्रतलह्योहैं ॥ पायडिगुलातजातपीतपटछूटगयोनागरपरत हियेधीरजनगह्योहैं ॥ पगेरूपचैंनानिमैंबैंननफुरतमनालियोचहैंहाथ मनहाथमैंनरह्योहैं ॥ ७ ॥ फूलनिकौंगईउतसषीमिलिजहांत हांइतकौंरंगीलेकछुऔरैंढारमैंढरे ॥ रसिकरसालबालदयोचाहैंउर मालजबनंदलालहसिआगैंहाथलैंकरे ॥ उरझीचितौंनकंपस्वेदसुर भंगभयेनागरियानागरअनंगरंगसौंभरे ॥ राधेजूदयोहैंहारमोति नकोमोहनकूंमोहनजूहोरहोयराधेकेगरैंपरे ॥ ८ ॥ राधमनमोहन

अगाधारूपरंगभरेभुजभरिझोलिकामकेलिसरसायदी ॥ षगशु कसारिकादिजाकिथकिकरिडारेनूपुरओकिंकिनीकीझनकसुनाय दी ॥ दूरहीहटकराषिकुंजद्वारअलिसैनीस्वेदअंगमिलीलैंसुबासपहु चायदी ॥ हुतीललितादिजेलतानवोटनागरितेदेषनसकतप्रेमछक निछकायदी ॥ ९ ॥ जेतेद्रुमकुंजनिकलपवृच्छएप्रतच्छदुहुनकोंवां छितदईहैंनिधिभलियां ॥ स्यामास्यामकरैंकेलिआनंदअलेलमत्तबे लनयेनेहकीअछेहफूलफलियां ॥ दंपतिकोसुषसोईसंपतिहैंनैंनानि कीनागरियादेषिदेपिजीवतहैंअलियां ॥ नैंकादिनरातकेबिहातकी नजानीजातवृंदाबनहोतीनितिनईरंगरलियां ॥ १० ॥ वृंदाबनआ नंदबिहारचारुदंपतिकेताकीदिनरातबातसोसुनिजियोकरो॥ललित हिंडोरासांझीरासरंगदीपमालाफूलनिकीकुंजरुचिरचनाकियोकरो॥ नितिहीबसंतइहांहोरीचितचोरीचावनागरियाकेलियेसकेलिकेलियो करो ॥ दियोकरोयेईअरुयेईसुषलियोकरोयेईदिनरैंनरससरसिक पियोकरो ॥ ११ ॥

अथ रासके कबित्त ॥

राधानंदलालरासमंडलरसालनचैंएकतनव्हैंकैंएकफूलनकेहार मैं ॥ एकजारीदारसेतओढनीकोंओढिदोऊनृत्ततिसुधंगगतिमिलि ततकारमैं ॥ मुषनैंनभूषनचिकुरकरकांतिषुलीचांदिनीसरदसुच्छसा गरकेबारमैं ॥ नागरमयंकमीनमानौंमनिगनसिवारकंजकामधींवर गहेहैंरूपजारमैं ॥ १ ॥ सरदसुहाईनिसप्रफुलितबल्लीबनबहोछबि छाईचारुचंद्रिकापुलिनिमैं ॥ गानकेबिधानतहांनृत्तभेदहावभावर

चयोहैंबिलासरासमंजुलपुलनिमैं ॥ लेतगतिनागरियानागरसुमंडल मैंकोरिकमदननांहिआवततुलनिमैं ॥ बेरबेरझूलैंमोतीमालाकीझु लनिमनदेषिदेषिडुल्योजातकुंडलडुलनिमैं ॥ २ ॥ एकरातहीमैंक ईकलपअलपजानैंऐसीकेलिकवनीयइनहीसौंहोसकैं ॥ एकबांसुरी कीधुनिथिरचरमोहिडारेत्रिभुवनकौंनसुनिधीरगहिजोसकैं ॥ एकन टनागरकीमुकटलटकमांझअटकिपरयोहैंमनछूटिनांहिसोसकैं ॥ ए कभुवभंगमैंअनंगमानभंगहोततताकेरासरंगकोबषांनकरिकोसकैं॥३॥ उदितसरदचंदचंद्रिकाकिरनकढीदिनमनितापतनमेटतकहलहैं ॥ ऐसेसमैंअ.ईब्रजबालानंदलालढिगतिन्हैंदेषिकोटिरतिलागतिसह लहैं ॥ गांवैंगीतमीतमिलिनागरिसंगीतनचैंचंचलताचितैंरहीमो मतिहहलहैं ॥ मिलीघनस्यामैंमानौंधाईनभमंडलसौंबीचिरास मंडलकैंदामनीलहलहैं ॥ ४ ॥

अथ चांदनीके कवित्त ॥

पूरनसरदससिउदितप्रकासमानकैसीछबिछाईदेपोबिमलजुन्हा ईहैं ॥ अवनिअकासगिरकाननओजलथलव्यापकभईसोजियला गतसुहाईहैं ॥ मुकताकपूरचूरपारदरजतआदिउपमायेउज्जलकी नागरनभाईहैं ॥ वृंदाबनचंदचारुसगुनबिलोकबेकौंनिरगुनकीजो तिजनूकुंजनमैंआईहैं ॥ १ ॥ छाईजुन्हाईनिकाईचितचितैंनागरकैं सुषबाढयोनवीनौं ॥ जोतिजगीरुपहैरीजहांतहांदैंकबियौंउपमाजु प्रवीनौं ॥ चंदमरीचनिकीबरकैंभरिकैंभुवओनभहूमंढिदीनौं ॥ मा नहुकामकारीगरनैंबसमैंकारिकैंबसमैंमनकीनौं ॥ २ ॥ आईनिसस

रदसुहाईलगैवृंदावनजगमगजोतजगीअमलअपारहैं ॥ नवललतां निबीचस्वेतफूलफूलेसोईललितहलिताहियैंहीरानिकेहारहैं ॥ चांदनी बिमलवोढेंतासकेरूपैरीपटनागरसुगंधअंगअतरबयारहैं ॥ भरीरू पसंपतिसौंदंपतिकेसुषकाजकीनैंसषीआजनवकुंजनिसिंगारहैं ॥३ कढतनिसाकरदिवाकरसोदीठपरिडरिअंधकारएकपलमैंपलायोहैं ॥ भोरभयोजानिकैंबिहंगनिमैंसोरमच्योअवनिअकासमैंप्रकाससरसा योहैं ॥ परीचलचालबालचमूंचतुरंगनीमैंनागरतपततेजव्रजपरआ योहैं ॥ चांदनीनहोययहमाननीकेजीतबेकौंमैनमहारथीब्रह्मअस्त्र हिचलायोहैं ॥ ४ ॥ छाईछिपादिनज्यौंदरसीमिलिकैंचकवानिबि योगविसारचो ॥ सौंगुनौंबाढ्योप्रकासदिसानिमैंचौगुनौंचावनजा तउचारचो ॥ कैसीपिलीहैंअलोकिकचांदनीनागरताकोंबिचारबि चारचो ॥ राधेजूऊंचीअटाचढिकैंकहुंआजनीलांबरघूंघटटारचो ५

अथ दिवारीके कवित्त ॥

कुहुकचचूंनरीसितारेदारसोईनभसहजअंगआभाप्रकासपुंजधा रीहैं ॥ मनिगनभूषनसुदीपकजगीहैंजोतिमोतिनिकीआवमहताबउ नहारीहैं ॥ फूलझरीहासमैंनिवासमहामोहनीकोकुंजनकैंपुंजचपचौं धिबिसतारीहैं ॥ औरठौरदीपनकीदुतिसौंदिवारीहोतनागरबिहारी कैंदिवारीनितप्यारीहैं॥ १ ॥ जसुदाकैंफिरैंमुकतांनकीबेलीसीना गरिराधेसिंगारकरैं ॥ बरबैंनीकेभारऔहारनिकेडगपाइनकीडिगुला तधरैं ॥ अतिआननजोतिमईअंगनांभयोरूपकथाकहिकोउचरैं ॥ जितजायसंवारतबातीबिधूतितदीपनकीदुतिफीकीपरैं ॥ २ ॥ जहां

तहांदीपनिकीदीप्रतदिपतद्रूनीज्यौंजरीसजीवानिकेपौधालैलगाए हैं ॥ कैधौंदेषिदंपतिकीसंपतिविहारचारइंद्रपारजातकेपहुपवरषाए हैं ॥ कैधौंपुषरागनिकेनागरपरेहैंश्रोलाकैधौंश्रंगअवनिसुनैंनसरसा येहैं ॥ कैधौंनभमंडलतैंबृंदावनचंदजूपैंव्हैकैपांतिपांतिनिनछत्रजुरि आएहैं ॥ ३ ॥ नवकुंजकैंचौकदिवारीकीरातिसुप्यारीजहांअतिसो भासची ॥ जरतारीकीसारीओअंगजवाहिरसीसमुकेसकीपौररची॥ इहिंबांनकनागरिसंगसषीलखिलालनिकीमनसाललची ॥ सबपांति व्हैछोडतफूलझरीतहांहोजपैंरूपकीमोजमची ॥ ४ ॥

अथ गोरधनधारनका कबित्त ॥

कुंवरिकिसोरीकहूंदरसीकुंवरकान्हजाछिनतैंमिलिबेकीरीतियह ठांनीहैं॥ गोपनकीमतिफेरिमघवाकीबलमेटीबरष्योपुरंद्रतबप्रलैपौंन पानीहैं॥ छूटिगईसहजैंबिपतिमांझलोकलाजरापीगिरधारीनी रैंराधा रससानीहैं ॥ नागरविषमबिषसींचीहितबेलीऐसैंलगनलगेकीहेली अकहकहानीहैं ॥ १ ॥ जांनैंरीबलैयाकितबरषैप्रबलपांनीकितपरैं ओलाकितमेघमालाश्रनीकी ॥ पायोप्रानपीतमनिहारैंछबिगिरधरैं चंदहिचकोरीजिमनेहचितवनीकी ॥ नीरीसुपबीरीदेतलेतरूपनैंन सुधापगिरहेबातनिपरमाहितसनीकी ॥ नागरदिनसातरैंनचैंनमैंन जानीजातघनीघनबर्षामैंबनीबनांबनीकी ॥ २ ॥ मत्तमोरचंद्रिका रतनपेचपगियांपैंसुंदरसुमनगुच्छसोभानवभालकी ॥ घूर्नितनयन बंकभुवमुषमंदहासपरसतपौंनजुगश्रलकसचालकी ॥ ठाढोव्हैत्रिभं गनिसौंगिरिराजकरधरैंनागरझुलनिझुकिसोभाबनमालकी ॥ होत

मदभंगमनमथराजसुरराजदेषसर्पीदेषिआजछबिनंदलालकी ॥ ३ ॥
गोवर्द्धनकरधरैंबीचठाढेनंदलालचहूंओरबालसुषसमैंसरसतहैं ॥ रा
धेजूचितौंनमैंभरतअंकमोहनकौंमोहनचितौंनअंगअंगपरसतहैं ॥ दू
रहीतैंदुहुनकेस्वेदरौंमकंपहोतनागरनिहारिनेहदसादरसतहैं ॥ उतइं
द्रकोपिकोपिवरसतमेहअतिइतगिरधारीप्यारीरंगवरसतहैं ॥ ४ ॥
वारीहौंतोआजब्रजराजकेकुंवरजूपैंनीकैकैनिहारिकैसैंठाढेहैंसुढार
सौं ॥ एककरगिरधारैंएककरकटितटनाचतज्यौंनितकारीनागरस
ह्मारसौं ॥ गोवर्द्धनतरैंचंदमुषकैंउजारैंबंधीरूपरिझवारिनिकीदीठ
इकतारसौं ॥ आयआयसबकीभईहैंइकठौरीआंखैंयाहीतैंत्रिभंगअंग
व्हैंरहेहैंभारसौं ॥ ५ ॥ सुरओअसुरनरनागजेवलीतैंबलीतिनकीनच
लीमनीमनकीबिसारीहैं ॥ रावअमरावतीकोधूरिमैंलुटतइंद्रऐसीरज
धानीघोपमोषहूतैंभारीहैं ॥ भारीहैंगोवर्द्धनआतपत्रफेरयौसबऊप
रलैंनागरअटलराजदीनौंसुभकारीहैं ॥ औरछत्रधारनिकेकईछत्रभं
गहोतएकरससदाब्रजबासीछत्रधारीहैं ॥ ६ ॥

अथ होरीके कवित्त ॥

ठौरठौरचाचरचहुलमचीचंगनकीअंगनकीऔरैंदसाऔरैंरूपछायोहैं
॥ आनंदउरनिआतिअमितअखंडबाढ्योनागरमिलनिदिनदावदर
सायोहैं ॥ लाजओरुघाईतियसंगलैंबिबेकपतिभाज्योब्रजमैं तैंमार
बाननिदबायोहैं ॥ पौढीप्रीतजागानिनवलनेहलागानियौंफागुनसने
हिनकेभागनिसौंआयोहैं ॥ १ ॥ आईबरसांनैंतैंअकेलीकोऊजसु
दापैंग्वारनिभिजोइडारीपेलबीजबैंगयो ॥ सुनिपुरभानतैंदुलारी

चलीकीरतिकीधूममचिपरीभारीगारीघोषछवैंगयो ॥ नागरीचमकि
रहीचहूंवोरचपलासीघेरेघनस्यामसन्दहोहोलोकहैंगयो ॥ धरलाल
तरलालकेकीसुकपिकलालघुमड्योगुलालव्रजलालमईव्हैंगयो ॥२॥
षेलताबिहारीजूसौंप्यारीआजुकुंजनिमैंबूड्योमनआनंदमैंहेरेचोनाहि
रतुहैं ॥ नागरगुलालधूमधूंधरिगगनचढीछूटैंपिचकारीधारधारसौं
भिरतहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूरिवृंदाबनधावतधरनिनगभूषन
गिरतहैं ॥ लागीमुखरोरीउरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझकझो
रीसीफिरतहैं ॥ ३ ॥ षेलैंमनमोहनसौंहोरीव्रजगोरीआजमैंनसैंनरैं
नधूमधूंधरसीउठीहैं ॥ केसरिसौंभीजेपटानिपटमिहीनतामैंहीरनके
हारचारचमकैंअंगूठीहैं ॥ दुहूंवोरचतुरसमाजअतिरंगरह्योउपमां
बिलोकिहावभावभईझूठीहैं ॥ लैलैंओटघूंघटकीनागरिगुलालभरैंउ
तउठैंमूठीइतमुरतिअनूंठीहैं ॥ ४ ॥ नागरिषिलारऔटपाइकौंअके
लीमिलीडारिपिचकारीगहिराषीकरकामिनी ॥ केसरिदुकूलभेदभू
षनकिरनकढीथहरानित्यागिथिरठाढीमनौंदामनी ॥ षेलबोबिसरि
मनमोहनविबसभयेहैंहूंछकिरहेलषिसोभाअभिरामनी ॥ मौंहन
कसौंहैंठाढीबदनहसौंहैंदेंतसौंहैंअलसौंहैंगातसौंहैंभीजीभामिनी॥५॥
केसरिकेहोजनिपैंमोजमचीआनंदकीनागरियाषेलैंसबसंगसुकवारी
की ॥ धायकैंचलावनिबचावनिअदायनिसौंदुरनिमुरनिओटभीजी
तनसारीकी ॥ रसियाकुंवरजूकेहाथनकीलाघवताकहांलौंसराहौंउ
तषेलनषिलारीकी ॥ सघनजघनकटिकुचनिकपोलनिपैंमनकीपर
नितहांभरनिपिचकारीकी ॥ ६ ॥ मनहीमैंरीझरीझरीझतिहूंरीझ
हीपैंगतिनकहतबनैंमेरीहेलीहालकी ॥ हीयोभरिगरोभरिनैंनभरिढ

रैंपैंनटरैंहैंननैंनहूतैंसोभातिंहिंकालकी ॥ होरीमैंनागरिमातिचारीोचि
तैंचातुरीसौंआतुरीसौंआंवनिझमकिपगबालकी ॥ बांएपांनघूंघट
कीगहानिचहानिहसिदांहिनैं तैंटेढैंताकिभरनगुलालकी ॥ ७ ॥ होरी
मैंरूपठगोरीसीडारतवारतप्रानललामतभावन ॥ षेलिकैंरंगअलेल
चढीछबिकैंसीलगैंगहिघूंघटआवन ॥ दामिनसीदबिअंबरमैंमुरि
जातउतैंताकिमूंठिउठावन ॥ धीररहैंनहिंनागरकौंलषिचीरकोओट
अबीरबचावन ॥ ८ ॥ थोरीसीबैसमैंनागरिगोरीकरैंचित्तचोरीरुहो
रीमचावैं ॥ कुंडमैंतारीबजाइउठैंकाहिहोहोजबैंउतकौंयहधावैं ॥ जां
हिसबैंअवसांनजकोलगिनागरकैंकरकंपउपावैं॥ नांहिअवाईसह्यारि
सकैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥९॥ षेलषेलचायनचतुरचौंकिचा
चरिमैंठाढैथकिइतउतैंभीरसषियांनकी॥ मंदमंदपवनडुलावतनवेलि
यांजुहीकीपीतफूलनगुहीलैंपषियांनकी ॥ चाहैंनवनागरबदनराधा
रंगभरचोदोऊनेहनददोऊगतिझषियांनकी ॥ बिनहींगुलालरंगर
सियाउठावैंमूंठदेखनकौंझझकिरंगीलीअंषियांनकी ॥ १० ॥ देव
नकेरुरमापतिकेदोऊधामकीबेदनकीनीबडाई ॥ संषओचक्रगदाअ
रुपद्मसरूपचतुर्भुजकीअधिकाई ॥ अमृतपानबिमाननिबैठिबोना
गरकेतीकहीयैंनभाई ॥ स्वर्गबैकुंठमैंहोरीजोनांहितोकोरीकहालैंक
रैंठकुराई ॥ ११ ॥ आईहोरीषेलिमैंनवेलीकोऊनंदगेहस्यामैंरहीदे
षिरूपकौतकलुभायकैं ॥ गोरैंअंगरंगभरीग्रीवाहिनिहारैंठाढीजोरैंहि
गनागरसौंथोरैंमुसिकायकैं ॥ चाहतगुलालडारचोलालपैंनडा
रैंसांकिरसनांदसनदाबिरहैंसकुचायकैं ॥ लाजकीलपेटमैंअंगेट
हिलपेटैंपटनिपटमसुसैंमरैंरीझिअकुलायकैं ॥ १२ ॥ लालगुलाल

कोधूमभचायकैंधूंधरधामअंध्यारोकरोहो ॥ तामधिधावतहोछिपकैं छलिसौंकछुऔरहीढारढरोहो ॥ नैंकतोलोककीलाजधरोजियनां हिंडरोवरजोरीअरोहो ॥ हारगरैंपहनावतनागरआयपरायेगरैंहीप रोहो ॥ १३ ॥ षेलिकैंवाढीरहीसबनागरिअंगउमंगनिआंनिअरी जे ॥ गोरीनकीश्रमसौंछबिबाढीगुलालनिवालसनीसिगरीजे ॥ अं चरषूटिसिंगारषसेमनूमैंनकीलूटिकेमांझपरीजे ॥ केसछुटेउरमाला टुटीनंदलालानिसंकनिअंकभरीजे ॥ १४ ॥ आवतहेनंदगांवतेंगा वतेसंगसषाडफलीनैंनवीनैं ॥ रंगनिसौंभरिडारेसबैंहमहाथमरोरकैं चंगहैंछीनैं ॥ आपुनकेकरबांधिकैंहारसौंप्यारीकेपायनिपारेअधीनैं॥ काल्हिकीबातैंयेभूलिकैंनागरआजहुवेईभलेढंगलीनैं ॥ १५ ॥ सिर तैंसरकढीलेपेचढिगझूलैंबैंनांअंचरउतरगयाकौंनहालल़ाजका ॥आं षौंमैंगुलालडालल्यायेहोरूमालअबकहांलौंबयांनकरौंतुह्यारीरिवा जका ॥ ऐसीबरजोरीकितवदीहोरीषेलबीचटुकभीनतुह्मैंसकसुघर समाजका ॥ दीजेंमुझेंजांवनपरौंहौंप्यारेपावनमैंछोडोमनभावन जीदावनापिसवाजका ॥ १६ ॥ कीनीअंध्यारीगुलालउडायकैंमो मतिताछिनतैंभरमीहैं ॥ कैसैंदुरैंतिनसौंछलसांवरेरावरेजेमनकेमर मीहैं ॥ फीकोभयोअधरांनिकोरंगअनंगकीआननपैंगरमीहैं ॥ ना गरदेषोजूप्यारीतिहारीकौंवेअबहीअबक्यौंसरमीहैं ॥ १७ ॥ औंच कांहींआयप्यारीसौंधौंवगरायजातदुपटामुकेसीसीसअंचलसुभाय सौं ॥जरीदरदावनमैंपायदरसायजातरहींजेबपायपन्नापायजेबपाय सौं॥ तनकौंनछवायजातआपकौंबचायजातधीठचोदैंधिरायजातना गरसुचायसौं ॥ नैंननिमिलायजातकछुमुसकायजातगैंदलैंचलाय

जातअजबश्रदायसौं॥१८॥गांसगसीलींयेबातैंछिपाइयेइस्कनगाइये गाइयेहोलियां॥ गैंदबहांनैंनबीराचलाइयसूधैंगुलालचलाइयेझोलि यां॥ लोगबुरेचतुरेलपिपांवैंगेदाबैंरहोदिलप्रीतकलोलियां॥ पायप रूंजडिरोटुकनागरहायकरोमतबोलियांठोलियां॥१९॥ वसंतब नैनं॥ कवित्त॥ फूलेद्रुमबल्लीबनझूलेअलिगंधबोलैंमदनसदनमां नौंमंगलबधांवनौं॥ जहांतहांश्रावतधुनिगानहिंडोलतैसोकोकिलां निकोयलकोसोरमनभांवनौं॥ उमहींसकलबालआईवृषभानजूकैं किसलैकलससंगसोहैंमहरांवनौं॥ हियेहुलसंतविकसंतकंजातिय मुपनागरबसंतबरसानैंमैंसुहांवनौं॥२०॥ सवैया॥ काननकेसू पिलेसुभलेद्रुममंजरीमौंरानिदींहींदिपाई॥ झौंरनिझौंरनिभौंरनिको रवश्रातुरकोयलकूकमचाई॥ क्यौंनामिलैंप्यारेनागरसौंउठिकामउ देगभरीरितुश्राई॥ रूपकोगर्वरहैंगोनहींरीबसंतकीश्रांनिपरीहैंअ वाई॥२१॥ द्वैघटकंचनकेपैंमनौंनवपल्लवलाललसैंअधरारी॥ना सिकारूपकीमंजरीसीमृदुस्वाससमीरसुगंधमहारी॥ मौंररुमाव लिकोकिलबानिहरयानीलतातुवनागरियारी। रीझिरहेरसवंतालि कंतबसंतसीबैसहैंप्यारीतिहारी॥२२॥

अथ फागषेलसमैं अनुक्रम॥

सखांनि प्रति नंदकुमार वचन॥ कवित्त॥ आवो सबासिमाटिरचावोमिलिफूलफागसुबलसुबाहुश्रीदामाआंनिअरो रे॥ गावोगारिधूंमाहिंमचावोलैबजावोडफअैसीफिरिपावोकबबा तमनधरोरे॥ दरबरदौरिदौरिहोहोकहिरौरिकरिव्हैंकैंइकठौर

होरीहासिअनुसरोरे ॥ कोऊबरसानैंकीहैपोलिसरसानैंकीहैआंषिनमैं देगुलालरंगा[illegible]सौंभरोरे ॥ १ ॥ सपी प्रति सपी बचन कवित्त ॥ ज्यौंरन[illegible]जामिलैंसमसूरापिलैंरंगआननपैंरतनारे ॥ यौंबनेंगोकुल के[illegible]रकानपतैंसिपलैंअंगअंगसंवारे ॥ आजुबचोगीनजेहोसपीसु धैरापीहैंमूंदिकैंदैकारितारे॥ बाजतहैंडफहेलीमनौंमनमत्थहिकेमतवा रेनगारे ॥ २ ॥ सपीनिप्रतिसपावचन ॥ सवैया ॥ तुमठाढीरहोकि नगाढीऽहैंफागमैंएदिननांहिंनिहोरनिके ॥ सुपलीजिएजूबहोभांत निसौंरसफागुनिसिंधुहिलोरनिके ॥ इतआएहैंकामकेपायकनायक नागरचंदचकोरिनिके ॥ मदमोकलहैंगजगोकुलकेयेतोदूलहगोप किसोरिनिके ॥ ३ ॥ सवैया ॥ बाजरहींरसषेतमैंदुंदभीहोरीमची अबकैसैंटरैंगे ॥ राजभयोमहाराजमनोजकेवाहीकीआग्याकेंढारढ रैंगे ॥ आजुनचूकिहैंफागकेऔसरनागरियौंमनभायोकरैंगे ॥ अंग निकौंभरिरंगनिसौंहमआयनिसंकऽहैंअंकभरैंगैं ॥ ३ ॥ सवैया ॥ फागुनकेदिनबावरेयेइनमैंनसयांनपतानिबहैं हैं ॥ कामदुहाईरही फिरिकैंअबकोउनकाहूकीकूकिलहैंहैं ॥ आयकैरंगनिसौंभरिहैंटरिहैं नाहिंनागरिसांचीकहैंहैं ॥ चोरीनहींबरजोरीनहींइहिंहोरीमैंकौनधौं कोरीरहैं हैं ॥४॥ फागमैंप्रेमहिंकोइकराजहैंकाहबेकाजकरोहोचराव र ॥ रूपउपासीतिहारेहैंजूहमगोकुलबासीकरैंनसराबर ॥ नागरि नैंकछुयैंतैंकहाजोगिरचोछुटिकैंछितमांझछराबर ॥ क्यौंसतरांतहो गोरीकिसोरीजूहोरीमैंराजारुरंकबराबर ॥ ५ ॥

अथ प्रीतमप्रति ब्रजबल्लवीन बचन ॥

कवित्त ॥ मानसबिलोकिटोकिमगरोकियतहैंजूरावरेबिदतगुन

बाटघाटचोरीके ॥ लैंगुलालमूठमेरीआंषनिमैंडारिलालष्यालऐसे होतहैंयेहालबराजोरीके ॥ लाजहिलजायढोटालोचनअंजायआये टौंडकभयेहोपिलारनएहोरीके ॥ घेरेहेगलीमैंजबनाचवहुतेरेनचेचे रेव्हैंछुटेहेकाल्हिनवलकिसोरीके ॥ १ ॥ आवतहेनंदगांवतेगावतेसं गसषाडफलीनैंनवीने ॥ रंगनिसौंभरिडारेसबैंहमहाथमरोरिकैंचंग हिंछीने ॥ आपनकेकरबांधिकैंहारसौंप्यारीकेपायनिपारेअधीने ॥ काल्हिकीबातैंयेभूलिकैंनागरआजुहूवेईभलेढंगलीने ॥ २ ॥ होरीमैं चोरीकरोहोकितीबरजोरीहूकेतुमढारढुरेहो ॥ रोकनटोकनकौंजुव तीगनजैसेहैंतैसेकहूंनदुरेहो ॥ नागरहोलंगराइकेआगरचारचवांय नतैंनमुरेहो ॥ फागमैंव्हैंरहेजूमदमोकलगोकुलमैंढंगसीपेलुरेहो ॥ ॥३॥ कबित्त ॥ फागमैंफेरहूफूलेफिरोहोकछूजियजानतलाजको आयबो ॥ हाहाषवायनचायकैंछाडेहेधन्यतिहारीएबातैंभुलायबो ॥ गावतगारींठठोलीचलावतनागरक्यौंजुवतिनिदबायबो ॥ रावरेपे लिकीजानीकलासबएतीललानहिंजीभचलायबो ॥ ४ ॥ कान्हनये भयेछैलपिलारयौंजोसुनैंनन्दतोहीपछतैहो ॥ रोकतहोमगमैंरसषांन चलावतहाथम[illegible]पहो॥टूटैंछराबछरादिकगोधनजोधनहैंगृहसोध नदैहो॥जैहैंजुभूषनकाहूतियाकेतोमोलछलाकेललानबिकैहो॥५॥अ थ सवैया ॥ फागकैंऔसरलागभरीकोउसोजसुधागृहपाहुनीआई ॥ घूंघटआधेमैंआधीचितौंनसौंचाहिलएदृगकौनैंकह्नाई ॥ नागररूप कीभीरपरीजियप्रेमकीपीरदबैनदबाई ॥ भूलिगईगुरुलोगनितापि नआंषिनहींबिचहोरीमचाई ॥ १ ॥ कबित्त ॥ होरीमधिनैंननिकी चोरीलषिपाईसासतादिनतैंगोरीकौंझुकतहैंझरझरात ॥ मारिकैंकिं

वारनिकौंसोवतननंदनोरैंचौकसरहताचितचौंकियेभरभरात॥नागरइ तेपैंउपरारैंव्हैंअंध्यारैंछैलअछनअछनआयोप्राननिफरफरात।बंधेभु जपासनिवेस्वासनिकौंरोकैंतउलगिकैंहियेसौंहियेसुनियैंधरधरात २

अथ फागबिहार ग्रंथ लिष्यते ॥

॥ श्रीव्रजछैलजू ॥ मंगलाचरनप्रार्थना ॥ दोहा ॥ फागबावरे दिननिके, रूपबावरेछैल ॥ रंगभरेरसबरसिये, मोरसनांकीगैल ॥ ॥ १ ॥ नवमैंमुष्यसिंगाररस, रसिकनिहियेंसुहात ॥ सोमतवारो फागमैं, ताकीबरनौंबात ॥ २ ॥

अथ फागुनमास समय ॥

॥ दोहा ॥ प्यारेनहिप्यारेलगैं, सादेसहजउदास ॥ प्रेममत्तम दरापियें, कैफीफागुनमास ॥३॥ फागमासरितुउठतबहो, नवद्रुम पल्लवलागि ॥ जडहूकैरोमांचव्हे, बिथामदनतनजागि ॥ ४ ॥ हियेरंगीलेफागमैं, कियेरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसवैं, महारंगी लीरैंन ॥ ५ ॥ गृहकोनैंजातनरह्यो, परतअगौनैंपाव ॥ इंहिंहोरी केषेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ ६ ॥ बैकुंठादिकलोकजेव्रजपरिडा रूवार ॥ उत्सववारूफागपरि, जेप्रसिद्धसंसार ॥ ७ ॥ अथ सवै या ॥ देवनिकेरुरमापतिकेदोऊधामकीवेदनिकीनीवडाई ॥ संष ओचक्रगदाअरुपद्मसरूपचतुर्भुजकीअधिकाई ॥ अमृतपानवि माननिवैठिवोनागरकेतीकहींपेंनभाई ॥ स्वर्गवैकुंठमैंहोरीजोनांहि तोकोरीकहालैंकरैंठकुराई ॥ दोहा ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्रजकी सोभाफाग ॥ दवेदुहूंदिसप्रगटिहीं, अंतरकेअनुराग ॥ ९ ॥

अथ ब्रजफागआगमानि ॥

॥ दोहा ॥ इंहिंरितुऔसरफागकैं, भयोलगनकोराज ॥ डफ मोहनमुरलीसुनैं, बधुनिडगमगीलाज॥१०॥ जथा कबित्त ॥ लागी हींबसंतैंसरसआसजुवतिनिकोंफागरसलागभरयोवहिदिनआजहैं ॥ उमगेसकलव्रजवासीसुपरासीमहाफिरतसुहाईयैंदुहाईरीतिराजहैं ॥ होरीडांडोरोपतहीदुंदुभिस्हैनायभेरनागरसमूहडफउठेबाजबाजहैं ॥ हल्चलपरीहैंधूंमिधीरजढहनलागेदहलांनेमानगढहहलांनीलाजहैं ॥ ॥ पुन कबित्त ॥ ठौरठौरचाचरचहुलमचीचंगनिकीअंगनिकीऔरैंद साऔरैंरूपछायोहैं॥ आंनंदउरनिअतिअमितअपंडबाढयोनागरमि लिनिदिनदावदरसायोहैं ॥ लाजओरुपाईतियसंगलैंबिबेकपतिभा ज्योब्रजमैंतैंमारबांनानिदबायोहैं ॥ पौढीप्रीतजागनिनवलनेहलाग निकौंफागुनसनेहिनिकेभागनिसौंआयोहैं ॥ १२ ॥

अथ नित्य सहजषेलि आरंभ ॥

॥ दोहा ॥ सबैंफागरसरगमगे, व्रजओप्योअभिराम ॥ होरी चितचोरीकरत, घरघरषेलतस्याम ॥ १३ ॥ जथा कबित्त ॥ रचि कैंकपटबेषडोलैंव्रजबाषरनिछलिआवैंछैलजेछबीलीनवबामहैं ॥ क वहूसिमटिगहिलेतगोपबधूवृंदआंषिआंजिमांडमुषछांडैंगहिदामहैं॥ उतदेतगारीइतभंडकुटहोतभारीनागरकतूहलवढतधामधामहैं ॥ आनंदनिवासनित्यफागकोहुलासऐसैंहोरीबिनहासमुक्तवासकौंन कामहैं ॥ १४ ॥

अथ अनायासवहौपेलिव्हैं परनि ॥

दोहा॥ कढीअथांईनिआयकोउ, बरसांनैंकीबाल॥गागरिसिरढरकायदी, फागमत्तसबग्वाल॥१५॥जथा कबित्त॥ आईबरसांनैंतैंअकेलीकोउजसुदापैंग्वारनिभिजोयडारीपेलिबीजबैंगयो॥ सुनिपुरभानतैंदुलारीचलीकीरतकीधूममचिपरीभारीगारीघोषछ्वैंगयो॥ नागरचमकरहीचहूंओरचपलासीघेरेंघनस्यामसब्दहोहोलोकद्वैंगयो॥धरलालतरलालकेकीसुकपिकलालघुमडयोगुलालव्रजलालमईव्हैंगयो॥ १६ ॥ पुन कबित्त ॥ पेलतबिहारीप्यारीआजकुंजपुंजनिमैंबूडयोमनआनंदमैंहेरयोनहिरतुहैं ॥ नागरगुलालधूमधूंधरिगगनचढीछूटैंपिचकारीधारधारसौंभिरतुहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूरिबृंदावनधावतचपलनगभूषनषिरतुहैं ॥ लागीमुषरोरीउरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझकझोरीसीफिरतुहैं ॥ १७ ॥ पुन कबित्त ॥ पेलैंमनमोहनसौंहोरीव्रजगोरीआजुमैंनसैंनरैंनधूंमधूंधरिसीउठीहैं ॥ केसरिसौंभीजेपटनिपटमिंहिंनतामैंहीरानिकेहारचारुचमकिअंगूठीहैं ॥ दुहूंओरचतुरसमाजअतिरंगरह्योउपमाविलोकिहावभावभईझूठीहैं ॥ लैंलैंओटघूंघटकीनागरगुलालभरैंउतउठैंमूठीइतमुरानिअनूठीहैं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ बरसांनैंनंदगांवके, सुरतनदलदुहुंओर ॥ समरषेतसंकेतमैं, मच्योफागजुधजोर ॥ १९ ॥ पटछूटतछूटतनहीं, रहेषेलरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमानतकोय ॥ २० ॥

अथ बिबिधिषेलि बर्नन कबिबचन ॥

॥ दोहा ॥ करतषेलिमैंषेलिबहौ, आंनंदप्रेमअलेलि ॥ सोबर

नौंबिचषेलकैं, न्यारेन्यारेषेलि ॥ २१ ॥ इकइककाढिकाढिझुंडतैं, आवतमूठउठाय ॥ बिसरिषेलिछबिनिरषिपिय, इकटकरहतलुभाय ॥ २२ ॥ सवैया ॥ होरीमैंरूपठगोरीसीडारतवारतप्रानललाम नभावन ॥ षेलिकैंरंगअलेलचढीछबिकैंसीलगैंगहिघूंघटआवन ॥ दामिनसीदबअंबरमैंमुरिजातउतैंतकिमूंठिउठावन ॥ धीररहैंनाहिं नागरकौंसापिचीरकीओटअबीरबचावन ॥ २३ ॥ पुन सवैया ॥ थोरीसीबैसमैंगोरीकिसोरीकरैंचितचोरीरुहोरीमचावैं ॥ झुंडमैंतारी बजायउठैंकहिहोहोतवैंउतकौंयहधावैं ॥ जाहिसबैंअवसांनजकी लगिनागरकेकरकंपउपावैं ॥ नांहिंअवाईसह्मारिसकैंजलरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ कबहूदुरिइतधुंधमैं, परसजात पियबाल ॥ जबअनषौंहेवैंनकहि, हुयेलषौंहैंलाल ॥२५॥ सवैया ॥ लालगुलालकीधूंमिमचायकैंधूंधरधामअंध्यारोकरोहो ॥ तामधिधावतहोछिपकैंछलसौंकछूऔरहीढारढरोहो ॥ नैंकतोलोककीलाजधरोजियनांहिंडरोबरजोरीअरोहो ॥ हारगरैंपहिनावतनागरआयपरायेगरैंहींपरोहो २६ ॥ पुन सवैया ॥ कीनींअंध्यारीगुलालउडाय कैंमोमतितातिनतैंभरमीहैं ॥ कैसैंदुरैंतिनसौंछलसांवरेरावरेजेम नकेमरमीहैं ॥ फीकोभयोअधरांनिकोरंगअनंगकीआननपैंगरमीहैं नागरदेषोजूप्यारीतिहारीकौंवेअबहीअबक्यौंसरमीहैं ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ केतेषेलिगुलालबिच, षेलेरसिकरसाल ॥ फिरिपिच कारीकरलई, रूपलालचीलाल ॥२८॥ कवित्त ॥ केसरिकेहौज निपैंमोजमचीआनंदकीनागरियाषेलैंसबसंगसुकुंवारीकी ॥ धायकैं चलांवनिबचांवनिअदायनिसौंदुरनिमुरनिओटभीजीतनसारीकी ॥

रसियाकुंवरजूकेहाथानिकीलाघवताकहांलौंसरांहौंउतपेलनिपिला रीकी ॥ सघनजघनकटिकुचनिकपोलनिपैंमनकीपरानितहांभरनि पिचकारीकी ॥ २९ ॥ नागरपिलारिऔटपाईलैंछबीलीभांतिडारी पिचकारिगहिरापीकरकामिनी ॥ केसरिदुकूलभेदभूषनकिरनक ढीथहरनित्यागिथिरगढीमनौंदामिनी ॥ पेलिबोबिसारिमनमोहन बिबसभयेहौंहूंछकिरहीदेपिसोभाअभिरामिनी ॥ भौंहनिकसौंहैंठा ढीबदनहसौंहैंदेतसौंहैंअलसौंहैंगातसौंहैंभीजिभामिनी ॥ ३० ॥ इ तिपेलि ॥ अथ दोहा ॥ फागमांझव्रजमैंवढी, हरियारीसुपसा रि ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरसथैंभीरसबारि ॥ ३१ ॥ कवित्त ॥ पेलिपेलिचांयनिचतुरचौंकिचाचरिमैंठाढेथाकिइतउतैंभरिसापियांनि की ॥ मंदमंदपवनडुलावतनवेलियांजुहीकीपीतफूलनिगुहीलैंपपि यांनिकी ॥ चाहैंनवनागरबदनराधारंगभरयोदोऊनेहनददोऊगति झपियांनिकी ॥ बिनहींगुलाललालरसियाउठावैंमूठिदेषानिकौंझझ करंगीलीअंपियांनिकी ॥ ३२ ॥

अथ षेलांतव्रजवल्लवी समूह सरूप बर्नन ॥

सवैया ॥ षेलिकैंठाढीरहीसवनागरअंगउमंगनिआंनिअरीजे ॥ गोरिनिकीश्रमसौंछबिबाढी (औकेसरिनीर) गुलालनिवालसनीं सिगरीजे ॥ अंचरषूटिसिंगारषिसेमनुंमैनकीलूटिकेमांझपरीजे ॥ केसछुटेउरमालातुटीनंदलालनिसंकनिअंकभरीजे ॥ ३३ ॥ इति ॥

अथ षेलांत स्यामसरूप वर्नन ॥

सवैया ॥ सुंदरफैटारह्योझुकिकैंव्रजबल्लवीरंगनिकेघटढोरे ॥

भीजकपोललगीअलकैंरंगकेसरिसौंभयेस्यामतैंगोरे ॥ छूटिगिरचो पियरोपटनागरटूटिकैंहाररहेउरथोरे ॥ रूपकोराजाभिषेकसोपाय कैंठाढेललासुपसिंधुझकोरे ॥ ३४ ॥ इति ॥

अथ षेलांत स्यामासरूप बर्ननं ॥

सवैया ॥ केसरिरंगरंग्योचहुंटयोपटटूटिरहीमुकतांनकीमाला ॥ ग्रीवपैंबैंनांरह्योझुकिझूलिषयोंनिपरेपुलिबारबिसाला ॥ बेसरिसौंउर झीअलकावलिनागरिसोछबिबाढीरसाला ॥ षेलिकैस्यामाभरीश्रम सोहतव्हैंरहेतापैंलटूनंदलाला ॥ ३५ ॥ इति ॥

अथ दंपति प्रीतरीत प्रगटि हौंन ॥

कवित्त ॥ होरीषेलिठाढेदोऊकेसरिकीकीचबीचमोतींबिसुमारप रेहारनिरलकमैं ॥ रंगनिवसनभीजेअंगनिलपटिरहेसरकोसिंगारदे षिबिसरीपलकमैं ॥ स्यामाकेसह्यारतहैंनागरियाभूषनकौंत्यौंहीस पीस्यामकीसुआनंदललकमैं ॥ लालनकबेसरिसुपाईप्यारीबेसरिमैं प्यारीकर्नफूलपायोलालकीअलकमैं ॥ ३६ ॥

अथ षेलांत कुंजप्रवेस बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ दंपतिअंसनिमेलिभुज, षेलिलटपटैंबेस ॥ समरषेतसं केतमिलि, कीनौंकुंजप्रवेस ॥ ३७ ॥ गउरस्यामअभिरामतैं, चहत औरकछुनांहि ॥ फागषेलिगहगडसहित, बसोनित्यहियमांहि ॥ ॥ ३८ ॥ फागलागकीएकहू, बातकहीनहिंजाय ॥ जैसैंचातगचौंच पुट, सबघनकहांसमाय ॥ ३९ ॥ जोशुकतैंनकहीगई, ब्रजहोरीकी

वात ॥ सोमोपैंनदवीरही, ओछैंघटउफनात ॥ ४० ॥ कृष्णकेलि सिंगाररस, ताकीकथाअनेक ॥ पैंप्राचीनधमारिकैं, होतनसमकोउ एक ॥ ४१ ॥ कह्योधमारनिमैंकछू, रसिकनिजोरससार ॥ सिलो कियोउनकोजुयह, मोमतिकैंअनुसार ॥ ४२ ॥ नागरियागतिरीझ की, क्यौंहूंजातकहीन ॥ दंपतिफागबिहारसर, भयोलीनमनमीन ॥ ॥ ४३ ॥ जाकौंइंहिरसफागसौं, तनकहुहृवोनहेत ॥ पालओढसोम नुपकी, भयोसुलम्माप्रेत ॥४४॥ धन्यव्रजधन्यव्रजवासिया, धन्यव्र जपरमउपास ॥ धन्यफागरसरीतव्रज, नागरहियेंनिवास ॥ ४५ ॥ नागरबैष्णवजोग्ययह, ग्रंथजुफागबिहार ॥ रहसिउपासिकरसभरे, समझवाररिझवार ॥ ४६ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्मलोकआनंदव्रजआनं दसमकहैंलैंकैंवहिनीरसकीरसनांदहायघूं ॥ जबहीरहसिरसवादतब हसपेलिनागरहीजांनैंऔरकौंनपैंकहायघूं ॥ दोऊओरघुंमडिघटा ज्यौंबरसतरंगतासमैंकौध्यानमेरेहियतैंनहायघूं ॥ स्यामअरुगोरीपरि एकव्रजहोरीपरिकोटिकबैकुंठनिकेसुपाहिंबहायघूं ॥ ४७ ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ समतअष्टदससतजुपुनअष्टवर्षमधुमास ॥ ग्रंथगंगतट कृष्णपक्षकियोनागरीदास ॥४८॥ इतिश्रीग्रंथफागबिहारसंपूर्ण॥१॥

अथफागगोकुलाष्टकलिष्यते ॥

सवैया ॥ जाउंकहांजितहींनिकसौंतितहींलपियेअतिऊधमभा रो ॥ गावतगारीठठोलठगीसुतनंदकोछंधभरयोहैंधुतारो ॥ रंगनि सौंभरिदेतहैंअंगनिनागरियाबसनांहिहमारो ॥ औरहुगांवसपीव हुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहिन्यारो ॥ छैलछछंदीछलीअटक्योहट

क्योनपरैंमगमैंबटपारो ॥ आयोकहींतैंजुफागदईनितलाजकोहैरी एबैरीहमारो॥ होरीकेडोलैंहुरचावयेनागरकैंसैंबचैंतुमहीधौंबिचारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोईन्यारो ॥ २ ॥ डोलत ग्वारियाफागभरेमनमैंधनजोबनकोअतिगारो ॥ नागरसांवरोहैंति नकैंमधिसोऊमहाठगियाबटपारो ॥ कैसैंरहैंदुरिभौंनकेकौंनउडाइ गुलालधकेलतद्वारो ॥ औरहुगांवसषीबहुतैंपरगोकुलगांदकोपैंडो हिन्यारो ॥ ३ ॥ ठाढेहींदेषियेरीठगसेमगमैंनटरैंकरतेजुबिगारो ॥ षे लिबधूनकेघूंघटकौंलपटावतिहैंमुपकुंकुमगारौ ॥ नागरिकापैंपुका रियेहोसबकोमनप्रानहैंनंददुलारो ॥ ओरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुल गांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ४ ॥ लायरहैंटकघूंवटकौदिसलोभकीआं पिननंददुलारो ॥ जातछलीमुपसौंमुपछ्वाग्रउडायगुलालकैंकैंआंधि यारो ॥ हारनसौंउरझायदैहाररीहोतहैनागरन्यारोअंवारो ॥ औ रहुगांवसषीव्रहुतैंपरगोकुलगांवकौपैंडोहीन्यारो ॥ ५ ॥ आयअचां नकमींडतहैंमुषरौरीकहाअबलानिकोचारो ॥ पोलतहैंअंगियाकीत नीउरलावतकेसरकौकारिगारो ॥ नागरऐसोभयोनंदरायकैंआहाव डेनकोपुन्यनिहारो ॥ औरहुगांवसषीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोही न्यारो ॥ ६ ॥ आंषिनमांझगुलालदैनागरहेररहैंहियहारढरारो ॥ लाजकीवातकहीनपरैंमुषकैसैंकहूंवहनांमउघारो ॥ बाटतैंबैरीटरैं नकहूंवितयामगऐबोरुजैवोहमारो ॥ औरहुगांवसषीवहूतैंपरगोकु लगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ७ ॥ गावतऔरधमारिघमारिरुग्वारनकैं मुषधुंधधमारो ॥ लेतहैंनामवुरेउघरेव्रजमाच्योहैफागउदंगलभारो ॥

धूरऔछारकीमारबढीनहिंसूझतनागरिव्है अंधियारो ॥ औरहुगांवस
षीबहुतैंपरगोकुलगांवकोंपैंडोहीन्यारो ॥ ८ ॥

॥ अथहिंडोराकेकवित्त ॥

जमुनाकैंतीरभीरभईहैहिंडोरनपैंदूरहीतैंगहगड़कीगतिदरसतुहैं
गानधुनिमंदमंदआवतिहैंकाननिमैंबीचबीचवंसीप्रानपैंठिपरसतुहैं ॥
देषिकारेद्रुमकीलतानिमांझिदामनीसोपटफहरातपीतसोभासरसतु
हैं ॥ हाहाचलिनागरपैंहीयौतरसतहेलीआजवाकदंवतररंगबरसतहैं
सषीसांवरीगोरीयेझूलतकौंनहैंझूलनिदेषिहियोहहरैं ॥ ढरक्योअ
तिस्वेदरोमांचभयेंलषिनैननिलाजछटाछहरैं ॥ थहरैंतनफूलदुकूल
पिसैंनसंभारैंदोऊअंचराफहरैं ॥ करकंपतडोरीनजाईगहीनहिंनाग
रपापटुलीठहरैं ॥ २ ॥ स्वेतबहूफूलनिसौंफूलिरह्योवृंदाबनठौरठौ
रसरसोकहीनकछुवैपरैं ॥ एकओरघटाकारीएकओरउजियारीसो
भाभईभारीप्रतिविंबनिसव्हैपरैं ॥ ऐसेसमैंस्यामास्यामहरषिहिंडोरैं
झूलैंगानधुनिजीलकीतरंगरंगच्वैंपरैं ॥ बढैंझोटात्यौंहींतहांनागरअ
धरधरैंइतबाजैंबंसीउतमोरसोरव्हैंपरैं ॥ ३ ॥ हरेहरेद्रुमपरेसुमननि
भारभरेझुकिकैंकदंबअंबजमुनांपरसहीं ॥ झूलैंजहांस्यामअभिराम
कोटिकामहूतैंदेषिव्रजबालाअंकमालाकौंतरसहीं ॥ बासरसभूलेभौं
रहारकीहिलोरनिमैंलपटतआवैंसोभासिंधुसौंसरसहीं ॥ पीतपटना
गरअरझिरह्योपातनिमैंलगिकैंमुकटलताफूलनिबरसहीं ॥ ४ ॥ र
तनजटितकलकंचनकेराजैंषंभतैसीबरबांनिकमयूरंमरवांनकी ॥ झू
लतनवेलीअलबेलीराधारंगभरीपन्नापटुलीपैंछबिछाजैंतरवांनकी ॥

चलैंदुहूंवोरमेरछलनिसौंभौंरभीरहलैंछोरबादलेकेगतिगरवांनकी॥ नागरचितलीनैंचौरझोटाकीझकोरमैंक्रूटचोउरछोरझकझोरहरवांन की ॥ ५ ॥ बैठीहैंहिडोरैंबीचतषतमुरसैंकारीजेबसरदारीकीमजेज नभुलांवहीं ॥ दुहूंओरचंवरचलांवैंसषीचौंरदारआयेवांनसंगसोझुका यैंहीजुलांवहीं ॥ फुलेवारहारनिजवाहिरजगमगातदेषिसौंहैंलालठा ढेदीठनडुलांवहीं ॥ नागरिअतरकीसुगंधउठैंझोटासंगझूलैंस्यामा साहिबमुसाहिबझुलांवहीं ॥ ६ ॥ झूलतरंगाहिंडोरनैंस्यामाजूसंगसु देससषीवहुभांयनि ॥ भूमहरीउनईबरषासुरऊंचैंछकीछबिगांवैंगुसां यनि ॥ रापतनांहिनिहोरैंहूतैंसुबढीरमकैंतरुनाईकेचांयनि ॥ किंक निनागरिकोरनकैंझनकैंबिछियांनकीपंकतपांयनि ॥ ७ ॥

॥ बरषाकेकवित्त ॥

लगिकैंप्रचंडपौंनद्रुमलतालहरातझूमिझहरातनीरकारीअतिजामि नी ॥ सोरनदीजलजोरघोरघहरातघननांहिंठहराताछिनदमकतदा मिनी ॥ अैसेसमैंप्यारीमिल्योचाहैंविहारीजूसौंद्वारलगिजायरुकै नागरिअभिरामिनी ॥ कबहूअनंगअंगथहरायआगैंचलैंकबूहहराय रहैंभीतबसभामिनी ॥ १ ॥ घनभीजतहीबनओरचलीतियकामत हांचटसारपढैं ॥ चहुंटेपटपानिपसौंउघरेतनलालचितैंचितचाहबढैं॥ दइनागरचूंनरीलैंकमरीसुपकोकबिकुंजकुटीकोरढैं ॥ उतसारीनि चोवतरंगचुवैंइतनेहनयोत्यौंत्यौंरंगचढैं ॥ २ ॥ आवतनांहिकहीघ नस्यामकीमाधुरीमोमनकौंवहरूदैं ॥ भीज्योपीतांवरश्रोतनमैंबनमैं परेमालतीमालहिगूंदैं ॥ फैंटासुढारझुकयोजलभारसौंपेन्चपुलेचुवैं

गनिकूंदैं ॥ भौंहनिकुंतलपैंवरुनीनपैंनागरनीकीलसैंजलबूंदैं ॥
॥ ३ ॥ पावसनिकुंजराधामोहनबिहारचारुआनंदअपाररसढारनि
ढरतुहैं ॥ जागैंनिससांवनमैंलगैंमनभावनसोबाजैंद्रुमपातनिपैंबूंदैंजे
परतुहैं ॥ श्रमकीसुवासतनमहकतमालतीहूनागरभंवरभरिधीरनध
रतुहैं ॥ दामिनीउज्यारैंरूपमाधुरीनिहारैंरीझिभीजेअंगअंगदोऊअं
कनिभरतुहैं॥४॥राजतकिसोरदोऊघोरघनजोरआयोपरतसजोरधर
नीपैंधूमकरकर ॥ च्वैचलेपनारेओकिनारेतटनीकेपरैंतूटतबिटपड़ा
रसब्दहोततरतर ॥ मोरसोरचहूंओरव्हैरह्योकुनूलभारीतररितदामि
नीउठतधरपरपर ॥ ऐसेसमैंनागरबिहारीसंगभायभरीलपटतलाडि
लीभुजांनिबीचिडरडर ॥ ५ ॥ बरसनलाग्योमेहमदनदुहाईफिरी
आईधाइब्रजपरछाईघटाकारीहैं ॥ तामैंचलीप्यारीउतआवतबिहा
रीइतदुहुनिकेमिलिबेकीचाहचितभारीहैं ॥ सूझतनपंथद्रुमलतारही
झूंमझूंमसबजलमईभूमिझुकीअंधियारीहैं ॥ दामिनीदमाकिगईतामैं
भटभेरभईनागरदुहुनिहंसिभरीअंकवारीहैं ॥ ६ ॥ भादौंकीकारीअं
ध्यारीनिसाझुकीबादरमंदफुहींबरसावैं ॥ स्यामाजूआपनीउंचीअ
टापैंछकीरसमीतमलारहिंगावैं ॥ तासमैंनागरकेदृगदूरितैंआतुररू
पकीभीषयोंपावैं ॥ पौंनमयाकरिघूंघटटारैंदयाकरिदांमिनिदीपदि
षावैं ॥ ७ ॥ दसौंदिसघोरिघोरिकीनौंहैंघटानिघेरोकुहकतमोरमहा
आनंदअछेहसौं ॥ झुकिगिललितलतारुकिगीडगरसबभईजलमई
भूमिबरसतमेहसौं ॥ ऐसेसमैंठाढेदोउलगिकैंकदंबमूलनागरियाना
गरहैंबिबसबिदेहसौं ॥ रसभीजेबैंनतहांनैंनरूपरीझिभीजैंतनभीजे
बूंदनसौंमनभीजेनेहसौं ॥ ८ ॥ तरनितनूजातीरतरवरतठाढीबिरह

वसायवीरवुंदनवढैंलगी ॥ वदरनवृंदवढिधुकिधरआनधायेकुंजन कदंवकेकीकूकनकढैंलगी ॥ चौंकिचौंकिचातकचहूंतैंचितचोरैंलेत लहरलहरनदनैरनचढैंलगी ॥ छल्यनविलोकोवलिवृच्छनिमढैंलगी सुकोककारिकानिकारीकोकिलपढैंलगी ॥ ९ ॥

अथ छूटक कवित्त लिष्यते ॥

व्हैंगयोअचानकउजासवनगहवरघिरिआयेपंछीमृगभूलेगौंनगे हरी ॥ छायगईसौरभओघायचलीअलिसैंनानाचिउठेमोरमहाआ नंदअछेहरी ॥ आगमकैंहोतहीलतानिमैंनिहारीकोऊनागरिवरासि गईरूपकोवमेहरी ॥ कहाजांनूंकौंनहीकहांतैंआईकितैंगईघनसेवस नतामैंदामिनीसीदेहरी ॥ १ ॥ देष्योमैंसुपनाकिधौंसांप्रतिहीहुती आलीभोरकीहूंठाढीवनबासराबितैंगयो ॥ नूपुरझनकअजौंकांननतैं कढैंनांहिकहाजानौंकौंनमेरोमनलैंकितैंगयो ॥ एकबेरलतानैंकहा लिकैंउठिहींफिरनागरिसपीनजांनूंचित्तलैंतितैंगयो ॥ हायमेरीवी रमनव्याकुलअधीरअतिसांवरासोकोउमंदहसानिचितैंगयो ॥ २ ॥ स्यामरूपसागरमैंनैंनपैरवारथकेजोबनतरंगअंगअंगरगमगीहैं ॥ गा जतगहरधुनिबाजतललितबैंनराजतसिंवारलटसौंधैसगमगीहैं ॥ भं वरात्रिभंगताईपांनिपलुनाईजामैंमोतीमनिजालनकीजोतिजगमगी हैं।प्रेमयौंनप्रबलझकोरनिसौंनागरियाआजराधेलाजकीजिहाजडग मगीहैं ॥ ३ ॥ देषिसषीआनंदअगाधापलबाधामेटिराधारूपउद धिअपारकौंनपारहैं ॥ चितवनिभौंरमैंभ्रमतमनप्रीतमकोलहरिअ दायनितैंनांहिननिकारहैं ॥ एतेपरनागरिफिरावैंकरकंजसोईकाम

कीझकोरजोरबहतबयारहैं ॥ धीरजउपावनिकीनावकोनदावतहां आजब्रजराजकोकुमारवेसम्हारहैं ॥ ४ ॥ एकतोतिहारोहेलीरूप हीहरतमनतामैंएछकेसेंनैंनमुसकिमिलाइहैं ॥ हारनकेभारलंकलच कतनागरीसुगागरीलियेतैंसीसतनथहराइहैं ॥ ल्यायबोरीनीरतूनि वारितीरजमुनाकोउतहींमैंऔटपाइनंदकोजोआइहैं ॥ वनिजैहैंऔर फिरिपरिजैहैंझोरब्रजपनघटजायजाकोपनघटिजाइहैं॥४॥ चाहतदु रायोतोसौंकोलगिदुरांउदैंयासाचहीकहूंरीबीरसुनिसवकानदैं॥ सांव रोसुनागरनिकटतीरजमुनांकैंमोतननिहारिनीरभरिअंपियानदैं ॥ता छिनतैंमेरीहूदसाकौंकछुपूछैंमतिचाहैंतोजिवायोमोहिवहरूपदानदैं। हाहाकरौंपायपरिरह्योहूनजायघरपनघटजांनदैंरीपनघनजानदैं॥५ घूंघटझीनैंदुकूलकोझूलैंझुकेदृगवांकितकाननछ्वैं ॥ जुगभौंहनिवीच थक्योमनगौंहनहोठनलालरह्योरंगच्वै ॥ मंदहसैंसुषनागरकौंमुषचौं पनकौउपमातवल्है ॥ तिमरावलिसांवरेदंतनिकैंहितमैंनधरेमनौंदी पकल्हैं ॥ ६ ॥ हसिहेरीरहीपूयप्रीतमकौंलपिचौंपनिचौंपकेपुंजव ढे॥ उपमादसनांनिकीसोंधितनागरऔरनपांवैंविचारमढे॥ मुषमंजु लकंजसुबासितयौंमधुपावलिबातनिठाटगढे ॥ सुनिआएहैंकीरति काननसौंमनौंजोगिनुभौंरनिपीठिचढे ॥ ७ ॥ धीरतोहमारोहरिलीनौं वाचितौनचारुधीराबिनबीरहमैंबौरीलाषिरोकीभौंन ॥ बाहिराविम लचंदचांदनीचमकिरहीजैसीकूलकुंजनिकीसीतलसुगंधपौंन ॥ सु धिआयैंस्यामसुधिनागरिरहतनांहिपांइपरिराषीहाइअबसोकरतगौं न ॥ तूहीकहिरैंनिकौंनिहारिकैंविचारिअबएतेपरबंसीबनवाजैंतोउ पायकौंन ॥ ८ ॥ जाहीछिनधुनिआंनिकांननमैंपरैंबीरछुटिजाय

धीरअरुरुकिजायसांसुरी॥ मोहमईहोतमतिवारीमतिमैंनपागिजागि
जागीउठैंकछुन्यारीहीरपांसुरी॥ लेतहैंहमारोलगिनागरअधररसला
जग्रहकाजसुषसाजकीनैंनांसुरी ॥ मंत्रहैंकिजंत्रहैंकिमोहनीकिमा
दिकहैंसोतिहैंकिसालहैंकिबैरानिहैंबांसुरी॥१०॥ आईधुनिआवनदैंव
जैंहैंबजावनदैंनूतोउतपावनदैंद्दढकैंसुभावरी ॥ मुरलीकौंसुनैंमतिसु
रभेदचुनैंमतिसीसहूकौंधुनैंमतिरीझकौंरुकावरी॥ नागरियाघूमैंमति
झुकिझुकिझूमैंमतिधुकिगिरैंभूमैंमतिधीरठहरावरी॥ अबसबसहनौंहैं
पाइरोपिरहनौंहैंफिरिवासौंकहनौंहैंबाजैंमतिबावरी॥११॥ केउनिहा
रिसुमारभईलगिनैनप्रहाराहियेसुधिमोचन॥ केउहियेलगिढोरीरहीके
उवौरीव्हैताघरकीपरसोचन ॥ केउभईमननैनमईतजिलाजदईत
उरंचसंकोचन॥मोहिपरेरेहियेउरझेरेसुनागरतेरेअनोषेएलोचन १२
पोइकैंकोइनसौंमनडारचोसुलाजकीबैरनिबावरीपेषी ॥ रूषीभईअ
बभूषीएप्रानकीआंनकीऐसीअनीतनलेषी॥नागररूपहिकैंअभिमा
नपरीलडबावरीबांनिबिसेषी ॥ मारैंघरीकघरीकउबारैंएआंषैंअनौं
पीतिहारैंहीदेषी ॥ १३ ॥ तरफैंछबिसांवरीदेषैंबिनाजुक्रुटीजलज्यौं
थलमैंझाषियां ॥ पलचैंननदेतपरीबिपरीओकछूमृदुहासचषीचाषि
यां ॥ अरबीलीअनोषीउचाटभरीअरीनागरिनांहिंरहैंराषियां ॥ दुष
चायनिसौंअररानीपरैंअतिबैरनिबावरीएआंषियं ॥ १४ ॥ एरेलो
भीमनसुनिदौरिदौरिजातहुतोरूपकोलुभायोसमुझायोहोदरदमैं ॥
इतहोनचैनबसकीनैंआपनैंनपरचोअधिकबाधिकपांनिआंनिमैंनमद
मैं॥ पायोफलनागरफसायोमुसकांनभौंहकसनिकसायोलैंमिलायो
गरदमैं॥ काटिकैंकटाछिनसौंबेधितीपेकोयनसौंचूरकरिलोयनसौं

डारचोनेहनदमैं ॥ १५ ॥ पावकप्रजारिलगोअंगकैंनिसंकवीरछूटत
नधीरपीरपावतनदेहरी ॥ मारोबांनतांनतनतरलगरलभारितऊमा
नैंसुषघटहोतसमसेहरी ॥ यहैंदुषदारुननकाहूपैंसहारचोजायहाय
हायरटिरटिकीजैंद्योसछेहरी ॥ नागरनिहोरिकरजोरिमांगौंबि
धनासौंलागोसेलसरपैंनलागोजिननेहरी ॥ १६ ॥ लोचनकटाछि
बांनहसनिकृपानतेरीहूलअंगरानिसूलसाल्योईकरतहैं ॥ लागैंसेलस
रअसिपागैंसुषमनऐंपैंतनकरुषाईज्वालमालासौंजरतहैं ॥ वारपार
बरछीदुसारतीरतनकईसीसकाटिलटक्यपैंनैंकनटरतहैं ॥ नेहरनछ
क्योसूरघावनसौंपूरचूरतऊदेषिअरीपैंडआगैंहीपरतहैं ॥ १७ ॥ भ
रौंजोउसाससुनिघूरिरहैंसासननदीकेत्रासभईगतिपंगहैंपगनकी ॥
चलूंउठिपौरओरकरझकझोरधरैंभौंनदुरिबैठौंपौंनलहूंनगगनकी ॥ लि
षूंजोपतउवापैंपातीआंसूंअंजनसौंफिरिपहुचांउकैसैंपंषदैंषगनकी ॥
कापैंकरूंरीसयहीलिषीबिस्वावीसमेरैंएरीआईसीसऐसीआपदाल
गनकी ॥ १८ ॥ गोरीगनैंगनपैंडधरैंगतिमैंगजमत्तकेमानकौंमो
रत ॥ पायनमांझअदायनकेवहौभेदभरेमनरंगमैंबोरत ॥ छींनमहा
लचकीकटिजातनिघातसौंहोतहैंश्रीवकेढोरत ॥ नागरकेदृगतीषेन
कीतबडोठगडैंजबपीठमरोरत ॥ १९ ॥ राजतरानीजसोमतिपैंदुलही
पियछैलछिलैंहितजोटैं ॥ कैसैंनिसंकानिहारैंछकेछाबिबीचपरीकुल
कांनिकीपोटैं ॥ लाजझुकेदृगनागरिकेतिरछैंचलिचूरैंदुकूलकीओ
टैं ॥ दोऊमैंहोतनकोऊलषैंवेसनेहसौंभीजीचितौंनकीचोटैं ॥ २०॥
चंचलताज्यौंलतालहकैंगुनकीसलितारसरंगाभिजावत ॥ हारनिबा
रछुटेनकेभारनिलंकलग्योलचिकैंबीचजावत ॥ अंसतमूराफन्यो

छबिसौंचटकीलीअंगेटअदाहैंदिषावत ॥ कांननिभावतनैंनछकावत नागरिसुंदरस्यामैंरिझावत ॥ २१ ॥ आईगांवगौंनैंतनसौंनैंसेसलौं नैंनैंनभीररूपकौंतिगकीन्हैंरहीसुन्हैंरही॥ दिनकंजमालसीहैंरैंनिकौं मसालसीहैंफूलीद्रुमडालसीहैंनैंरहीसुनैंरही॥ जौंन्हजोतिजामिनीसी नागरियादामिनीसीदेषिघनस्यामैंमनदैंरहीसुदैंरही ॥ षोलैंमनमूं दैंमुषनीचीरुषभीनीसुषहरिहूकोहरिमनलैंरहीसुलैंरही ॥ २२ ॥ तेरे नैंनमेरेनैंनमेरेनैंनतेरेनैंनऔरठौरचलिबेकौंदीठकैंनपगहैं ॥ तेरीप्रीति मेरीप्रीतिमेरीप्रीतितेरीप्रीतिप्रीतकीप्रतीतदोऊवोरबैठीलगहैं ॥ तेरेप्रा नमेरेप्रानमेरेप्रानतेरेप्राननागरियाएकप्रानजानैंसबजगहैं ॥ तेरोमन मेरोमनमेरोमनतेरोमनमेरोमनठगिबेकौंतेरोमनठगहैं॥२३॥नैंणसौंनैं णामिलायाजद्यांहीकोकालिजोसोक्यौंहीकाढिलियोहैं ॥ एकघडी भीघरांनहींआलगैंआवैंभरयोभरयोझांरोहियोहैं ॥ सावलीसूरति देषैंबिनांबाईहायछिणेकनजायजियोहैं ॥ हौंसांमरांमिलवाकीक रांकांईकांन्हजीकांमणमैंनैंकियोहैं ॥ २४ ॥ फैंटासीसकेसरीसुदे सरीत्रनायबांध्योतापररतनपेचसोभानवभालकी ॥ वदनमयंकवं कभौंहैंबिचबैंदीलालकरतबिहालसैंननैंननिबिसालकी ॥ लटघुघ रारीनिटनागरकपोलनिमैंरंजितकिरनबीचकुंडलकेहालकी ॥ ऊंची नासाबेसरिसुअधरानिमंदहासबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी २५ कालिंदीकेतीरलतापरसतनीरतहांठाढेपरछैयांस्यामललिततमाल की ॥ लकुटीलपेटपायछबिसौंलटकिरहेछुटेवंधहियसोभामोतिनके जालकी ॥ उठीभौंहैंझुकेनैंनप्रियाध्यानआसवसौंरलकैंअलकजुग पवनसचालकी ॥ मुषसोभालसीप्रेमगसीजियनागरकैंबसीउरऐ

सीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ २६ ॥ नीलघनराजतबरनतनसोभादेत रंगरंगआभानगअभरनजालकी ॥ कंचनदुकूलछोरदुहूंओरफहरा ततैसीझुकिझूलनिललितबनमालकी ॥ संगसुरभीनअंगरंजितपौ होपरैंननागरलटकिगतिगंजतमरालकी ॥ कंवलफिरावनिओआंव निअनूपलसीबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ २७ ॥ आवैंघरी ज्यौंभरीहीघरीघरीदेषतरूपरहैउघरीहैं ॥ मूंदीमुंदैंनहींरूंदैंहीमार तबावरीरीझकैरंगभरीहैं ॥ टारीटरैंनडरैंनागरएपरैंउररांनीअमांनी परीहैं ॥ जातनहींरपियांसपियांअंषियांरिझवारनपैंडैंपरीहैं ॥ २८॥ देषतहीअटकीअतिहीहठकीनटनागरसौंनटरीहैं ॥ जोहूघरीकनदेषैं हरीतोपरीअंसुवांनकीहोतझरीहैं ॥ मोहूकोंव्हैकारिमोसौंसपीनरहैरी रपीअरिव्हैकैंअरीहैं ॥ जातनहींरपियांसपियांअंपियांरिझवारनपैं डैंपरीहैं ॥ २९ ॥ रूपकीरीझमैंभीजिगईअतिरीझहीरीझमैंरीझभ री,हैं ॥ रीझनदीउमडीरहैंदीठमैंलाजहूरीझिगरीसगरीहैं ॥ आपुन रिझिरिझाइहैंमोहूकौंनागरमोमतिरीझढरीहैं ॥ जातनहींरपियां सपियांअंषियांरिझवारनपैंडैंपरीहैं ॥ ३० ॥ भांतिकितोसमझायर हीपैंनमांनतयेउनमादभरीहैं ॥ नांहींरहैंउररैंउतजअपिलाजजंजीर नसौंजकरीहैं ॥ नागररूपकीरीझकैंचावरीव्हैलडबावरीसीबिषरी हैं ॥ जातनहींरपियांसपियांअंषियांरिझवारनपैंडैंपरीहैं ॥३१॥ कैसे घरीकहौंरूसरहौंएतोनैंननिमेषकीओटसहैंनां ॥ नागररूपकेआग रसौंचितनैंकहूअंतरधीरलहैंनां ॥ देषतहींसुसक्यायपरौंरूपमेरीरूपा इकीटेवगहैंनां ॥ जाछिनव्हैभटभेरचितौंनकीताछिनमाननकोमानर हैंनां ॥ ३२ ॥ भालमहावरओठनिअंजनसौंहैंहसौंहौंसोआनन

आंनैं ॥ आवैंझुकीपलपीकभरीरिसमाननभौंहकीतांननतांनैं ॥
रैंनकेजागेतैंरूपजग्योमुकरैंकपटीहठठांननठांनैं ॥ नागरस्याम
सौंमानकरौंपैंअमानीएलोयनमांननमांनैं ॥ ३२ ॥ तेरेनैनबानउर
मोहनकैंलगेआनतबतैंनवाकेंवीरधीरठहरायहैं ॥ पलकानिमूंदिमूंदि
गहरेउसासलेतहोतनसचेतमुषरटैंहायहायहैं ॥ जमुनांकोकूलकुंज
सीतलकुसमपुंजलगैंतनतातेतेजविषमबलायहैं ॥ एरीचलिनागरी
तूसींचिसुधाचाहानिसौंआंपिनिकेघायनकौंआंखैंहीउपायहैं ॥ ३३ ॥
बिछुरेहैंमोहनहमारेफिरवादिनतैंअंषियांपियूषिमुषपांनहूनकीनौंरी।
रौंमरौंमरोवैंकाहिसोवैंकौंनकैंसीभांतिछूटचोरंककरतैंरतनरंगभीनौंरी
॥ एकबेरआयतैंहूंदीनौंहोसुपनाफिरिफूंकिनेहआगिसुदुषतमनसीनौं
री ॥ अहेबजमारीबहुबैरानिनिगोडीनींदनागरामिलायतैंउघरदुपदी
नौंरी ॥ ३४ ॥ मनहीकीथिरतासौंसूरतागंभीरताईमनहीकीथिरता
ईसबैदुखकौंदहैं ॥ मनहीकीथिरताइचहियतुधर्ममांझमनहीकीथिर
तासौंकाजसबहीलहैं ॥ मनहीलगायथिरकीजैंहरिभक्तिमांझनागर
चरनचितजबथिरव्हैंगहैं ॥ कलिकालपवनझकोरजोरझिकुरातइहम
नदीपककीलोयथिरक्यौंरहैं ॥ ३५ ॥ (अथ अष्टक) बोलतहैंतुत
रातहरैंमनचंदकौंमांगतहैंकरिआरो॥ कंदुककौंघुटरूंमनिआंगनधा
दैंजग्गोमतिप्रानअधारो ॥ केसरिचित्रकपोलनिमैंहगकंजनअंजन
दैंआनियारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंददुलारो॥
॥ ३६ लालकेकौतिकमांझपगीललनामिलिआवतहोतसंवारो ॥ दैं
चुटकीचुचकारतहैंबिहसैंहुलसैंतनसांवरोबारो ॥ कंठलसैंबघनांमनि
भूषनचंदसोआननकोउजियारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंननिमांझबसो

नितनागरनंददुलारो ॥ ३७ ॥ छत्रकियोगिरकौंकरबामधरयोछि
गुनीब्रजकोरषवारो ॥ मोदमईसबगोपबधूमघवाजलढारिमहापाचि
हारो ॥ चंद्रिकाचारुबनीबनमालबिलोकतआवतमैंनतवारो ॥ याछ
बिसौंमेरेनैननिमांझबसोनितनागरनंददुलारो ॥ ३८ ॥ जैंवतछाक
कतूहलसौंहरिलेतहसैंकरकोपनवारो ॥ आयोहूतोअभिमानधरैंबि
सरयोसबग्यानबिरंचिबिचारो ॥ मंडलगोपकुमारनकैंमधिसोहतहैं
वनसेघटवारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंददुला
रो ॥ ३९ ॥ चित्रतिहैंतनधातबिचित्रधरैंसिरमोराकिरीटसुढारो ॥
गौरजसौंमुषमंडितयौंअरबिंदपरागभरयोजनुभारो ॥ भावतगोपकु
मारनमैंवहआवतलालजसोमतिवारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझब
सोनितनागरनंददुलारो ॥ ४० ॥ लाललसैंपगियांनवलालकैंपीतझ
गातनघूंमघुमारो ॥ मालमनोहरमोतिनकीउरकैंउरकैंमधिआनंद
भारो ॥ गोरीचकोरनिकेचितकौंमुसकायहरैंब्रजचंदपियारो ॥ या
छबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंददुलारो ॥ ४१ ॥ मोतिन
कीसुथरीदुलरीगरसोहतसुंदरसीसटिपारो ॥ आननपाननरंगरच्यो
निरखैंचखचंचललोचनतारो ॥ गोकुलगांवगलीबिहरैलियेंकंजक
लीकररूपउजारो ॥ याछबिसौंमेरेनैननिमांझवसोनितनागरनंददु
लारो ॥ ४२ ॥ ठाढोत्रिभंगानिसौंमुरलीमुषसुंदरताहरैंकामकोगारो ॥
सांवरेअंसनिपैंपियरोपटुवेसरिकेसरिषोरिनिहारो ॥ गुच्छनकेअवतं
समनोहरगुंजनकोहियहारढरारो ॥ याछाविसौंमेरेनैंनानिमांझवसो
नितनागरनंददुलारो ॥ ४३ ॥ सबैंदेवदानवप्रकोपैंमिलिएकओर
सातसिंधुहूज्यौंदयोचाहतवहायहैं ॥ आवतपहारचलिचूरकरिबेकौं

कायधावतदिसानितेजेदिग्गजकहायहैं ॥ नागरमहारथीनिकेवरू थचहूंघांतैंबीरतावलगिब्रह्मअस्त्रनिदहायहैं ॥ एतेपचहारिरहैंतऊन पिसतबारज्याकैंएकअर्जुनकोसारथीसहायहैं ॥ ४४ सषीफूलतोसू लसेसेझकेलागतजागतवासुररैंनगई ॥ सुषपांनओपानहलाहलसे लगैंबैरीसबैंगृहभामभई ॥ हितनागरकैंनिकरैंजियराफिरआवतआ सतैंरीतिनई ॥ चितचाहिसरैंनगरैंपरीरूपसुनोजलगोयहनेहदई ॥ ॥ ४५ ॥ एरेमनमेरेतोहिचंचलहीसंगदेकैंनीकैंबहरांडरैंबहरिबह रांनिमैं ॥ चंचलहीचंद्रिकारुचंचलहीनूहैंतहांरहिकैंछबीलीवाफ हरिफहरांनिमैं ॥ कंपतहैंकुंडलदृगंचलकटाछिनतैंउनिहीमैंनूहुव्हैंह हरिहहरांनिमैं ॥ नागरमुपारबिंदमांझनकबेसरिकेमोतीमतवारेकीथ हरिथहरांनिमैं ॥ ४६ ॥ बदनहसौंहैंबैठीसौंहैंप्यारीप्रीतमकैंउरज उठौंहैंसोभाहारनसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंश्रौंनाकि धौंमंत्रधुनिमीनकेतकैंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौकाकीचमकहोत अछिनअलच्छनकटाच्छसरदेतहैं॥नागरियावोटदैंतंबूराहासिहेरिहेरि फेरिफेरितानानिफिरांयैंमनलेतहैं ॥ ४७॥ सीतलसुगंधपौंनमनकौंह रनलाग्योचंद्रमाढरनिलाग्योसूचिंतबिहानकौं ॥ रहीरैंनथोरीरंगबो रीकौंननींदपरीउठीअकुलायकैंरिझांवनसुजानकौं ॥ चातुरपरम प्रीतआतुरयानागरिकैंकंटकैसैंदाजैंकहोकोकिलासमानकौं ॥ आ यगीअटारीपरछायगीसुगंधतबगायगईतांनानिरिझायगईप्रानकौं ॥ ॥ ४८ ॥ जावनकौंसबलोकरटैंहरिकेलिविधानपुरांनपुकारैं ॥ कुं जगलीनिगलीअजहूंजहांगावतानित्तनवानिविहारैं ॥ नागरतापनसैं मनकेतुलसीबनकेद्रुमपुंजनिहारैं ॥ यागृहमैंजोबनैंनबनैंकहियोहम

कौंवावनैंनविसारैं ॥ ४९ ॥ सीपेकुलछनव्है लडवावरेमैंसमुझायझु
केझिझकारे ॥ मूंददयेपलबीचकिंवारानितोऊरहेनाकितोपचिहारे ॥
सुंदरताईकौंजीततजूपमैंहारतहैंमनसेधनभारे ॥ नागरपेलैंबिनांनर
हैंभयेएट्टगरूपजुवारिहमारे ॥ ५० ॥ आगैंकह्योसमुझायकितोजि
यनावेरषूंनकरैंइनिआगैं ॥ आगैंनमानीअमानीमहारनसूरज्यौंपाय
दैंआगैंहीआगैं ॥ आगैंविध्योसररूपकटाच्छनिताछिनतैंचितचैंनन
आगैं॥आगैंलगेसोतोसालतहैंअवलागतनागरसालिहैंआगैं ॥५१॥ मं
दहोतचंद्रिकाचिराकैंलपिफीकीलगैंमुपपटटारकैंअगौंहींजवबढहीं॥
सोरपरैंसुघरानिकेजोरपरैंजीवनपैंकबिनकैंमोंनहोतउपमानपढहीं ॥
तबरंगदेवीसीसुगायगतिलैंकैंचलैंनागरजकीसीलगिमादकसौंचढहीं
नैंननतैंनीरकढैंधीरकढैंहियतैंसुवाहवाहहायहायमुपमैंतैंकढहीं ।५२।
रूपनिकाईमहासुधराईदुहूंनतैंलैंसवकेमनलूटे ॥ जानैंलपीछबिरास
सपीतबताहियेंप्रेमकपाटसेपूटे ॥ वाकीसवीहुलिपीनगईगुनिनांहिं
सकेकहिहारीअहूटे ॥ चित्रलिषैयाकितेकबिनागरकाननहाथलगा
यकैंछूटे ॥ ५३ ॥ गुनिसलितासीरासरंगनिविलासीचारुचंपकलता
सीचपलासीस्यामघनकी ॥ ग्रीवकीढुरांवनिडुलांवनिसुबाहुनकीमं
दधुनिगांवनिभुलाईसुधितनकी ॥ पारदज्यौंथारथहरातनृत्तअवनी
मैंदेषीरवनीमैंकछूबातनकहनकी ॥ ठोकरनिठेलिठेलिपायतररूंद
रूंदगतिमैंकुगतिकरीनागरयामनकी ॥ ५४ ॥ एबिधनांयहकी
नौंकहाअरेमोमतप्रेमउमंगभरीक्यौं ॥ प्रेमउमंगभरीतोभरीहुती
सुंदररूपकरचोतैंहरीक्यौं ॥ सुंदररूपकरचोतोकरचोतामैंनागर
एतीअदायेंधरीक्यौं ॥ जोपैंअदायेंधरीतोधरीपरयेअंषियांरिझवार

करीक्यों॥५५॥गानकियोवहैंपाननिपातछुटीलटआननरंगभरचोई॥ मौनहीमैंझलकीसुघराईहियेगुनकोसनसोउघरचोई ॥ पीचितचंच लकौंप्यारीनागरिघेरिअदायनिमैंपकरचोई ॥ लैंनितमूराहीकोमैल यौमनगायत्रोधौंरह्योआगैंधरचोई ॥ ५६ ॥ दीठकीलाजजंजीरानि तोरिषरेविपरेपकरेऊरहैंनां ॥ धीरबिनांभहरायउठैंठहरैंनकहूंजक जीवपरैंनां ॥ नागररूपहिरूपलगीरटनांहिकछूकहिजातहैंवैंनां॥ला गैंनऔंषदग्यानकहूंभयेरीझकीबायसैंबावरेनैंनां ॥ ५७॥ दासकी छापदइतुमहीतुमहींसतसंगतैंदेतक्यौंटारैं ॥ जांनिकैंआपनिवारत मोहिसुकौंनपैंरावरीचूकपुकारैं ॥ हौंतोसदाहरिचाहतयौंअरपौंचि तपंकजपायतिहारैं ॥ नागरऔरहिंसौंपतवेबिगरेमनकेमनमेंरोबि गारैं ॥ ५८ ॥ ज्यौंज्यौंइतदेपियतमूरपविमुपलोगत्यौंत्यौंसुपरासी ब्रजवासीजियभावैंहैं ॥ षारेजलछीलरदुषारेअंधकूपाचितैंकालंदीकैं काजमहामनललचावैंहैं ॥ जैसीअबबीततसुकहतनआवैंवैंननागर नचैंनपरैंप्रानअकुलावैंहैं ॥ थोहरफरासदेषिदेषिकैंबंबूलबुरेहाय हरेहरेवेतमालसुधिआवैंहैं ॥५९॥ भूमिहरीद्रुमझूंमिरहेलषिठौररहैं दृगठौरसुहांतैं ॥ न्यारेसेलोगरंगीलेतहांकेमिलैंहसिप्रेमहियेसरसातैं नांवनआवैंरूआवैंगरोंभरिनागरनांवहिलेतहैंयातैं ॥ सांवरीएकन दीपैंवसैंहैंकहोकिनकोऊवागांवकीबातैं ॥६०॥ नांहितुलैंवइकुंठहू कोसुषघोषकीजोकबहूसमतोलैं ॥ जेउंहिंठांसबआनंदमैंगिरधारी केवांहकीछांहकलोलैं ॥ नागरटारिदयेजिनकौंअबवेभटकैंमनमा रिमलोलैं ॥ देसबिदेसअभागीफिरैंवडभागीजोईब्रजभूमिमैंडोलैं ॥ ॥ ६१ ॥ ब्रह्मकमंडलीब्रह्मसरूपकहांलौंकहौंगुनकेगनभारे ॥ ला

येभगीरथजूतुमकौंतबतैंतुमजीवअनेकउधारे ॥ नागरकीसुकितीकहैंवातकरूंविनतीपरूंपायतिहारे ॥ जेरहेआडेंहैंकैंब्रजबासकैंगंगातेकाटियेपापहमारे ॥ ६२ ॥ जननीउंहिंपुत्रपुनीतकीहोरनसोएलगैंबहोतीरथकौं ॥ भुवमांझलैंआयेभगीरथजूताकैंदीजैंबडाईकितीरथकौं ॥ करियेलैंकृपाअवनागरपैंसुकहूंतुमआदिकतीरथकौं ॥ तुलसीवनछाडिभ्रमौंनकितैंअबहौंजमुनाजलतीरथकौं ॥ ६३ ॥ आईतूषरिकतैंवसांझवीतैंऔरैंदसामोसूंकाहिसांचीजिनरापैंमनअरस्यो॥ पाननिकोरंगमिटिआननपैंरंगचढ्योनूटीमोतीमालउरआनंदहूसरस्यो ॥ स्वेदहैंकिनीरतनचहूंटतचीरतेरैंनागरियाआजकहूंमेहहूनवरस्यो ॥ तोकुलकीसौंहकहिश्राजुमदमोकलयागोकुलकीजीवनिगुपालकहूंपरस्यो ॥ ६४ ॥ सवैयो ॥ इतआवतहैंवहरंगभरीनितऔरतियांनकैंसंगरली ॥ पटअंगलपेटैंतऊवेअंगेटैंदुरैंनाहिंसांचैंढरीज्यौंभली ॥ लषिनागरकौंमगआगरमैंवदलैंगतिनारिनवायअली ॥ दबिलाजमैंआंषैंछिपायबडीमुरिदूरसौंदेषिकैंजायचली ॥ ६५ ॥

॥ अथनीतकेकवित्त ॥

हीराहीकेफूटेतैंबिकांनीकनीहाटहाटजांनताजिहांनगुनफूटैंतैंसवैगयो ॥ फूटभईलंकामैंविभीषनमिल्योहैरामैंरावनसहतकुलनासप्रानकोठयो ॥ कहैंकबिसंतजेदुजोधनसेमहाबलीफूटकेपरेतैंअभिमानमनकोनयो ॥ नरदकेफूटैंउठजायबाजीचौपरिकीआपसकेफूटैंकहोकौंनकोभलोभयो ॥ ६६ ॥ ॥ कवित्त ॥ केकईकेकहेतैंउदंगलअमंगलभोदसरथप्रानदैकैंउर्द्धलोककौंगयो ॥ मुंथरीकेकहेतैंजुसर्व

सगमायोरानीताकोअपबादसदालोकनमैंहैनयो ॥ जांनकीकेकहेत्तैं गएहैंऊठदेवरजूभएबिनभाभीदसकंधहरिलैंगयो ॥ नागरानिपटक थाजगमेंउजागरहैंनारिनकेकहैंकहोकौंनकोभलोभयो ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ ज्ञातकेहैंहमतोब्रजबासीसुनांहिरहिऔरजातकीबाधा ॥ देसहैंवोषनचाहतमोपकौंतीरथश्रीजमुनासुषसाधा ॥ संतनिकोसतसंगआजीवकाकुंजविहारअहारअगाधा ॥ नागरकेकुलदेवगोवर्द्धनमोहनमंत्ररुइष्टहैंराधा ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ ऊग्योउडराजकेसोसमयोहैंआजप्यारेसुनियैंजूकहतसुजांननिकेनाथमैं ॥ लालमुरलीसौंसुधाअधररलीसौंकछुपूरतकरोलैंरागरंगभरीगाथमैं ॥ तबहैंतृभंगअंगनागरबजाईबैंनगायउठीप्यारीतहांप्रीतमकेसाथमैं ॥ पायडिगुलांनेस्यामरहेससवांनेंसेपैंहाथमैंरह्योनमनबंसीरहीहाथमैं ॥ ६९ ॥ आवतहीलपेजेहरिकौंमनजेहरिलैंगएहेलगिगोहन ॥ घूंघटमोहनलैसकीजासमैंमोहनकेमनकीयहमोहन ॥ नागरनागरिभेंटकैंकौतिकनागारिऔरहूठाढीहैंजोहन ॥ देषिरहीनाहिंदेषिरहीमुरिसौंहींहसौंहींकसौंहींसीभौंहन ॥ ७० ॥ कवित्त ॥ औरबंगलाजोकुम्हिलातधरचोधूपमांझयहबंगलासुमेहहीमैंकुम्हिलांवैं हैं ॥ औरुबंगलापैंभंवैंवापुरेभंवरअरुइहिंबंगलापैंवृद्धबालकभ्रमावैंहैं ॥ औरुबंगलाकेहितमालनिसुषीव्हैंजातइहिंबंगलातैंहलवाईसुषपावैंहैं ॥ औरुबंगलापैंअतिआपैंललचावैंसंतसीतलकेबंगलापैंजिभ्यालल चावैंहैं ॥७१॥ सवैया ॥ अंषियानिकेधर्मानिवाहकभोरामिलेजमुनाजगजोरानिसौं ॥ तहांन्हायगुपालओबालहूघाटमैंबैठबंधेहितडोरानिसौं ॥ मुषमौंनव्हैनागरमालालियैंतिरछेचितवैंदृकोरानिसौं ॥ परसेसुरकेज

पकोफलसोजपक्यौंनिबैरंदोउऔरनिसौं ॥ ७२ ॥ मंजनपंजनने नीकियेतनमोतीसेधोतीफबीहैंतियाकी ॥ मोहनगोहनमैंललचेल लनालहकातिज्यौंलोयदियाकी ॥ नागरिजूरादियैंगडुवाकरपंकति पायनिमैंबिछियाकी ॥ न्हायचलीजमुनांजलमैंकिलगायचलीसंग आंषैंपियाकी ॥ ७३ ॥ त्यागिसबैंपानिहारनिकोसंगआवतजातअ केलीभईक्यौं ॥ काहेउदासउसासभरैंचितचक्रतसीतनमांहितईं क्यौं ॥ नागरकारेबिस्यारेसौंपायबचायनदीनौंतैंहायदईक्यौं ॥ दी सतहैंअबऔरहीघाटसुघाटकौंछोडिकुघाटगईक्यौं ॥ ७४ ॥ पाछैं गुपालआगैंगुरुलोगरहीअतिलाजनिसौंदबिनीठमैं ॥ ग्रीवफिरायन चाहिसकीमुरिसौंहैंनआएवेमेरीयेदीठमैं ॥ नागरप्यारेकेदेषनिकौं सषिवासमैंआंनीयहैंउरईठमैं ॥ आंपैंभईमुषपैंकिहिंकाजयावेरक्यौं आंषैंभईनाहिंपीठमैं ॥ ७५ ॥ गोकुलगांवगलीमैंमिलीगोरीऊजरीसा रीउठीतनमैंलसि ॥ आवतदेषिकैंमोहनकौंरहिगोहनसौंहनजौंन्हज नूंबसि ॥ नागरनारिकैंढचोनटरीव्हैंनिसंकतबंकजुटीभ्रुकुटीकसि ॥ पातरेलंककीलंगरिग्वारिसुआंगुरीगालगडायगईहसि॥७६॥कवित्त॥ सुनीहीकहावतसोसांचीकीनीमाछरनिछोटेइतेषोटेमहादसनकराल हैं ॥ सूइनिकीसज्ज्याहैंकिबिषकीफुंहारैंपरैंकिधौंलेपकैंवचकोकरैं तनलालहैं ॥ सुरनरनागरयेसबैंनाकआयेतनकाटिकाटिषायेभ येनिपटबिहालहैं ॥ बिष्णुदुरेजलमांझब्रह्माकंजनालमधिमहादेवहा रमानिओढीगजषालहैं ॥७७॥ सवैया ॥ वेबनवासकुठोरकरैंइनवा समुषांबुजकोपनपारचो ॥ वेषासिआगिबढावतहैंइनकांननमैंरसअ मृतडारचो ॥ नागरवेनहिंआनंददाइनआनंदलैब्रजमैंबिसतारचो ॥

देषोअरीहारिकोव्रंसुरीइनकैंसेकुवंसकोनांवसुधारयो ॥ ७८ ॥ व्रन बेलनिमांझअकेलीगईआजुबीननिकौंनवकुंदकली ॥ तहांमोहनमो हेभरैंअंसुवांनिरहीलषिहौंदुमछाडिगली ॥ पटपीतगिरयोसुधिभूले हैंनागरअंतररूपसमाधिरली ॥ कदलीकौंरहेपररंभनदैंअलीजांनि कैंवेव्रषभानलली ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ आगैंहुतीऔरअबऔरसौंभईतू औरठौरनरहताछिनछाडीसंगसषियां ॥ मोहनकोनांवसुनिरूषीन्हैंल जौंहींहोतजाततिरछौंहींठाढीरहतनराषियां ॥ ऊंचीभौंहैंनीचीदीठदी ठनमिलातसौंहैंनागरनवलनेहचापीरसचषियां ॥ भौंडीभलीजांनि वेकौंडौंडीतोनफेरैंकोऊऔंड़ीबातकहतकनौंडीतेरीअंषियां ॥ ८०॥ ललितापठाईपातीद्वारकाकन्हाईजूपैंइतैंकुसरातबातचाहैंसुमधुरकी दूसरोबिवाहकीनौंमोमनउछाहभीनौंलीनौंसुषसारनारिडारिरूपसु रकी ॥ बिवरसुसरारिमैंपधारिकैंबिहारकैंल्यायेव्ररवधूजसभयोसौं हगुरकी ॥ कामदुतिचूरतकीअबैंमृदुमूरतकीनागरपठैहोलिषिसूरत ससुरकी ॥ ८१ ॥ कहतबिसाषावदिबडीआंपैंप्यारीजूकीजैसीपासिं धुकेझकोरनिकोंझपियां ॥ ललितानमानैंहठठानैंयौंबषानैंआंपैंला लकीबडीहैंजनुपंकजकीपषियां ॥ नागरवहंसिसुनिनैंननैंनजोरिवे कौंसरकेहैंनोरैंझूमिआईसबसषियां ॥ रीझिप्रानवारेनसम्हारेअंगरं गभरीजागमैंमपीहैंलगिआपियांसौंअषियां ॥ ८२ ॥ मोहनीलतातैं मधुमंजरीश्रवतकैंधौंकाननमैंरीझकीदुहाईसीफिरतरे ॥ मादिकसौं भरीषरीकोमलमिहींनमहालहलहातहरईसुकंठमांझअतरे ॥ सांच भरीसौंहनोंचटकंदारचिकनौंहींबीनहूकौलगतकठोरसंगगतरे ॥ ना गरमैंजानिकैंकहींहोफिरजांनिलेहुतांनयासुजांनकीसुजांनसुनौंमत

रे ॥ ८३ ॥ ग्रीषमविहारभौनसांवरेकैढिगगोरीक्रीडतसभासरसहे लीलियैंसंगकी ॥ होतजलकेलनिकेबिबिधिबिधानतहांबादीहैंलल कउरआनंदउमंगकी ॥ जासमैंभईजोसोभावरनीनजातमोपैंदमांकि उठीहैंदुतिदूनीअंगअंगकी ॥ नागरिवेकैसीलगैंतिरततरंगनिमैंपानी परपावकज्यौंफिरतफरंगकी ॥ ८४ ॥ राधामनमोहनकरतजलके लिजहांछींटनिकौंखेलिसुषझेलिबिसतारैंहैं ॥ कैधौंब्रजचंदकौंकमो दनिकेमंडलमैंआवैंलषितारागनतननसम्हारैंहैं ॥ कैधौंसुरवृंदवैठेअ लछबिमाननितैंनागरवेपारजातफूलनिकौंडारैंहैं ॥ कैधौंकिकालिंदी जूकैंदंमतिपधारेतातैंउच्छवमगनमनसुकताउछारैंहैं ॥ ८५ ॥ तीरथ सनांनीअरुबडेबडेमहादांनीजिनकीकहांनीजगजौंन्हजिमछैरही ॥ जपियांनिजपलीनंभोजनअलपकीनेंकोनेंतपतपसीनिबुद्धिब्रह्ममैंर ही ॥ सुरओअसुरनरनागपुनदेवरिषजिनकीचलावैंकौंनरमाहूरितैं रही ॥ नागरवताएतत्वतिनहूंकोतत्वचारुसुषनिकोसारव्रजनारिलू टिलैंरही ॥ ८६ ॥ सेजसुषसिंधुकेझकोरनितैंझिकुरातकमलकली सीरसबिलसीअलिंदकी ॥ दुहूंओरदीनैंकरकापियांसषीओस्यामबी चअभिरामप्यारीमूरतआनंदकी ॥ टूटेहारछूटेबारअंचरहूवेसह्मार नागरिचलनिनीकीलागैंमंदमंदकी ॥ बासवसभौंरभीरआवतहैंपाछैं पाछैंआगैंआगैंफैलतउजारीमुषचंदकी ॥ ८७ ॥ सुंदरसुघर स्यामराधाठकुरायनजूजोरीजगभूपनसुआनंदअगमगी ॥ तारकसी बसनजवाहिरकीजेबलसोबैठेकुरसीपैंप्रीतनौतनसगमगी ॥ जरब फ्तीसमियांनेंसमैंदांनकिस्तसोजनागरअगरधूमिधूंधरिरगमगी ॥ दिपैंदीपमालछबिछूटैंअगनजंत्रजालअजबजलूसजोतिजीनतजगमग

गी ॥ ८८ ॥ सवैया ब्रह्मपुरीसिवजूकीपुरीअरुइंद्रपुरीहूकहाजिय धारौं ॥ देवअदेवनिकीजेपुरीपुनिनागपुरीसुखतैंननिकारौं ॥ औरु पुरीभुवमंडलकीतिनकेबकितेकहौंनांवउचारौं ॥ नागरयेजुकहीसो पुरीसबगोकुलरावरऊपरवारौं ॥ ८९ ॥ मांगौनमोषभयोबासघोष मैंऔरअबैंनकछूजियधारौं ॥ यारजकैंबिनजोजगमैंसबसोसुषलो भहितुच्छबिचारौं ॥ लछनछत्रपतीनकीलच्छमिनागरनैंननिछूनानि हारौं ॥ राजसबैंभुवमंडलकेव्रजमंडलऊपरवारिकैंडारौं ॥ ९० ॥ कवित ॥ हासीहैंतिहारैंभायेऔरनकेघरजातनाहकपरायोमनलैंन क्यौंउमहियैं॥ तुमहीकैंवडीव्रडीलालएअनोषीआंषैंवरजोजूकैसैंलो कलाजलैंनिवाहियैं ॥ दोऊकरजोरजोराबिनतीकरतहहानागरहोनैंसु कदयाकीरीतगहियें ॥ डारतहैंमारैंपरीगोहनहमारैंइंहिंरावरीचितौंन कौंसह्यारैंनैंकरहियैं॥९१॥सवैया॥घूंघटओटकियैंहूरहेनहिंहैंउतपाती मोछातीकेदाहक ॥ न्यायकियेबिधनामुषकारेमहासठयेहठकेजुनि बाहक ॥ चारविचारनजानैंकछूअतिआतुरनागररूपकेगाहक ॥ मे रेइनैंननिगोडेबुरेमनदीनौंफसायबिचारोअनाहक ॥ ९२ ॥ कवित॥ सुंदरअंगेटहिंलपेटैंपटलाजभरीआधैंमुषघूंघटकीसोभासरसातहैं ॥ ग्रीवकौंझुकायैंओझुलायैंबांहलियैंमौनसंगसंगनागरिकैंभौंरभहरात हैं ॥ मोहनमैंमोहनजूनिकसेहैंआयकरितिरछीचितौंनचोटचलीमस क्यातहैं ॥जैसैंभलेभटहथछूटककेहाथकीसुओछपैंअलछिदकहत्थी बहिजातहैं ॥ ९३ ॥ सवैया ॥ नागरमैंनसरोवरमीनकिपंकजकोपं षियांअनियारी ॥ स्यांनैंमांटौहिरणांनींबतावियैंजूवोतमेसहूसोचि बिचारी ॥ गोयाममोलेयाखंजनपासेतारीफकरैंक्याजुबांनहमारी ॥

बीजीनमौंढलागैंकाइ ओपमांकान्हजीरीआंप्यांकांमणगारी ॥ ९४ ॥ कालिंदीकेतटहाटकवेलिसीन्हायकछूकढिठाढीयेहोती ॥ भीजिकैं बारलगेसटकारेओतामैंदिपैंदुतिज्यौंतनमोती ॥ देखिगुपालहिंवेर लगावतनागरऐसीप्रवीनहैंकोती ॥ जोरतनैंनमरोरतभौंहनिचोरत चित्तनिचोरतधोती ॥ ९५ ॥ लैंचुबकीजमुनांतैंकढीतहांअंगनकीदु तिदूनीयेंवाढी ॥ भीजेमिंहीपटकीझुलपेटमैंआछीअंगेटरहीफबिगा ढी ॥ औरलईतनधारिकैंधोवतीवारानिचोवतचित्रज्यौंकाढी ॥ दे षिकैंनागरईठफिरीवहिपीठदैंअंगअंगोछतठाढी ॥ ९६ ॥ कवित ॥ न्हायबडैंभोरवहअपसेरसोईकौंहैंसौंहैंमोहिगोधनकीचोरिचितलैंग ई ॥ चटकीलीधोवतीमैंजूराकीउचनिआछीपावरीपहरिपगपायल बजैंगई ॥ पातुरीअंगेटभलीभरतभरीसीगोरीपिंडुरीदुरीनमतिमेरी ललचैंगई ॥ नागरियाकौंनकैंसेगोपकीबधूटीहायआईआगिलैंनकौं पैंदूनौंआगिदैंगई ॥ ९७ ॥ सवैया ॥ हैंयहनायकदछनछैलसुतैंअ नकूलकियोचितचोरहैं ॥ हैंअभिमानीसुआपनैंरूपकोदीनव्हैंतसौं रह्योनिसभोरहैं ॥ हैंतनसांवरोगौररंगयोमनतेरेईप्रेमपरचोझकझोर हैं ॥ हैंसुखदायकनैंननिनागरहैंब्रजचंदपैंतेरोचकोरहैं ॥ ९८ ॥ चं चलनातजिषंजननैंनभयेथिररावरेरूपकीओरहैं ॥ लायरहैंटकघूंघ टकीदिसबांधतप्रेमचितौंनकीडोरहैं ॥ तोमुषअमृतपांनछक्योछिन जाननतनांहिकितैंनिसभोरहैं ॥ नेहअमंदप्रकासितनागरहैंब्रजचंदपैं तेरोचकोरहैं ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥ प्रातपुन्यकाललालकालिंदीकेकू लआपपरमपुनीतनीतऐसीधारियतुहैं ॥ अबलाअकेलीएकगोपबधू न्हायबेकौंआईअनजांनैंसोबयौंनिहारियतुहैं ॥ तीषेनैंनबांनानिकेघा

यनिसौंघूंमैंपरीतापैंधौंअनेकधनधामवारियतुहैं ॥ नागरनिपुनबडे
कामकेहोवीरऐपैंतोरथकैंतीरकहूंतीरमारियतुहैं ॥१००॥ सवैया ॥
सषिआवतआजअकेलीहरैंहरैंपायनिगाढीगडैकंकरी ॥ तहांमोहन
सौंभटभेरभईउहिंगोहनबीचगईनंकरी ॥ गहिमोहिलईइंहिंभांतिभटू
निधिपाईहैंनागरज्यौंरंकरी ॥ सुनिसोईकहावतसांचीहुईइतमारनौं
बैलगरीसंकरी ॥ १०१ ॥ कवित ॥ आसनजटितनगबैठेरीजुग
ललगिजगमगभूपननिजोतिफैलीचारती ॥ दर्पनकेमंदरमैंचहूंओ
रजानीपरैंछांहधरैंवांहगरैंझुकतकुंवारती ॥कहीनपरतमोपैंआरतीकी
प्रभाभटूहौंतोभईलटूलखिसोभाउहिंबारती ॥ नवलसखीसरूपल
हलहीछबिवारीकीनीलाजघूंघटसौंनेहभीनीआरती ॥ १०२ ॥ कव
बइकुंठमांहिगायनचरायआएकौंनरिझवारिउहांबंधीप्रेमपासतैं ॥ क
बबइकुंठमांहिमोहनींबजीहैंबैनप्यारिनकैंहेतरासरंगकेबिलासतैं॥ क
बबइकुंठमांहिकेलिकीनीइहांजैसीकहूंकैसीकैसीजियनागरहूलासतैं
ब्रजहीसमंधीरूपलीलासबजगगाईपाईपरमेसुरहूसोभाब्रजबासतैं ॥
॥ १०३ ॥ ब्रजहींमैंमोरनकेपच्छकोमुकटधारयोब्रजहीमैंरासकेलि
करनहूलासतैं ॥ ब्रजहीमैंजूरादैंबनायोनटवतरूपब्रजहीकेलोगन
कौंवांधेप्रेमपासतैं ॥ ब्रजहीकेफूलनिसिंगारेरहौंनिसद्योसब्रजहीके
नागरकहांवैंगुनरासतैं ॥ ब्रजहीसमंधीरूपलीलासबजगगाईपाईप
रमेसुरहूसोभाब्रजबासतैं ॥ १०४ ॥ छप्पय ॥ जहांवेणुवनसघ
नतहांकहाअनलनब्रजरैं ॥ जहांमिलतमंजारिकहाककसनहिंउच
रैं ॥ जहांलुहारघरतहांकहाचिनगैंनहिछूटैं ॥ जहांहलैंमिलिकाच
पात्रतहांकहानफूटैं ॥ कलहकलपतरुसीसवैंबहुतबसैंजुवतीजहां ॥

नागरियाउहांकलहविनकहोचैंनानिवहैंकहां ॥ १०५ ॥ मत्तवारु
नीपानमदविघूर्नितदृगघूमैं ॥ नीलांवरतनगौरश्रवनकुंडलइकझूमैं॥
दुविदप्रलंवादिकजुदुष्टगतप्रानकरनकर ॥ कैरवक्रूरमदंधनम्रअति
कियेकरपिहर ॥ जादवेंद्रकुलकमलरविवकतृनवनपावकप्रलय ॥
प्रणवतनागरिदासनितिजयजयजयबलदेवजय ॥ १०६ ॥ जक्त
भक्तिहैंबैरसुनीयहप्रकटकहावत ॥ जक्तकहतकछुऔरभक्तकछुऔ
रहिगावत ॥ जक्तभक्तिमेंवडोभेदलैंप्रभूकियासो ॥ जक्तकह्योजिं
हिंकियोछियोनहिंभक्तिहियोसो ॥ कृष्णभक्तिसुपछाडिकैंजगकोभ
लोमनाइयैं ॥ नागरियाइंहिंभांतिसौंकहोक्यौंनदुषपाइयैं ॥ १०७ ॥

अथ बनबिनोद ग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीनंदलालगोपालबालजयति ॥ चौपई ॥ ब्रजबासनिकीपद
रजध्यांऊं ॥ नंदकुंवारकतूहलगांऊं ॥ बनकीलीलाललुभाये ॥
लागतगायनसंगसुहाये ॥ १ ॥ कटिमुरलीलकुटीलियैंहाथ ॥ ब्रज
बासनिकेलरिकासाथ ॥ पेलतपेलतगयेअटोर ॥ हरेचनांचितयेउ
हिओर ॥ २ ॥ पेतपेतसौंलागिरहेषेत ॥ डहरभरेलहिरैंसीलेत ॥ दे
षिदेपिकतरायेग्वाल ॥ वातबताईनंदकैंलाल ॥ ३ ॥ बालकएक
बारतरदूक्यो ॥ ताहिदेषिरषवारोकूक्यो ॥ सुनतसषासबगयेपला
य ॥ बिचहरिपीतांबरफहराय ॥ ४ ॥ बरसांनैंकेग्वैरयैंआये ॥ दे
षिचनाकेषेतलुभाये ॥ पैठेंअछनधरतपगआछैं ॥ बूंटउषारतचित
वतपाछैं ॥ ५ ॥ तहांरषवारनिलपिललकारे ॥ गारींदैंदैंसबानिनि
कारे ॥ भाजेलरिकालैंलैंबूंट ॥ न्यारेन्यारेअपनीजूंट ॥ ६ ॥ गव

दाग्वालभजननिनहिंपायो ॥ मिलिब्रजवासनिपकरिमुकायो ॥ सहितगुपालहसैंफिरिफिरिसब ॥ गारिदेतहैंगवदरायतब ॥ ७ ॥ इनकाहूनाहिंवाहिछुटायो ॥ हाहापायपगनिपरिआयो ॥ फिरिमिलिभाजेदिससंकेत ॥ पीतांबररहिगोउहिंपेत ॥ ८ ॥ उपरेचनांउहांपटबांधैं ॥ चलीपुकारनिधरिकैंकांधैं ॥ जहांबैठेकीरतबृषभान ॥ बकीतहांरपवारनिआन ॥ ९ ॥ पेतउजारिकैंगयेपलाय ॥ नंदगांवकेलरकाआय ॥ पटपहिचांनिहियेअतिहुलसे ॥ महरमहरिदोऊदेषिकैंहसे ॥ १० ॥ बहोतवात्सलभावसौंभरे ॥ पुलंकितअंगकंठगहबरे ॥ पीतांबरकीओढनीकीनी ॥ सोलैकैंराधाकौंदीनी ॥ ११ ॥ अंगसुवासरौंमांचितभई ॥ कुंवरिकीसलजव्हैंअंपियांनई ॥ कितेकबेरपीछैंउठस्यामा ॥ पेलनिचलीसहजअभिरामा ॥ १२ ॥ आईजबसंकेतसघनमैं ॥ जहांछैलाछिपपातहेबनमैं ॥ सुनिआहटजान्यौंसबग्वारनि ॥ आईवहीपेतरषवारनि ॥ १३ ॥ भाजेदिसनंदीसुरग्वाल ॥ रहिगयेइकलेनंदकेलाल ॥ मिलबैठेदोउमीतमनोहर ॥ बातैंकहतभईहीजोघर ॥ १४ ॥ नावलैंलैंबतरानिसुहाई ॥ कछूसयांनपकछुभुराई ॥ राजतलालललीकैंसाथ ॥ मनलियेंहाथहाथलियेंहाथ ॥ १५ ॥ मोहनलालनेहसौंसने ॥ छीलछीलअपनेंकरचनें ॥ रापतप्रियाअधरनिबिचहरे ॥ मनौंबिद्रुमपरपन्नांधरे ॥ १६ ॥ पातपवावतहसतहसावत ॥ फूलनकेभूषनिपहनावत ॥ गउरस्यांमबातनिरसघुरे ॥ बैठेसघनद्रुमनिमैंदुरे ॥ १७ ॥ कबहुकमोरओचकउडभागैं ॥ कुंवरिचौंकिडरिउरसौंलागैं ॥ गावतडोलतदैंगरवांहीं ॥ दोऊबसोनागरमननांहीं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ दहीचपटिया

चोरिकैं, चोरेचंरािकिसोर ॥ लालमननकेचोरअब, भयेचननिके चोर ॥ १॥ मथुरालीलाद्वारका, डारीमनपगपेलि ॥ वसीनागरीदा सहियएव्रजग्वैईकेलि ॥ २ ॥ समतअठारासैंजुनव, कृष्णपक्षमधु मास ॥ बनबिनोदकलग्रंथयह, कियोनागरीदास ॥ १ ॥ इतिश्रीव नविनोदग्रंथसमाप्तं ॥

श्रीनंदकुंवारजयति अथ बालविनोद ग्रंथ लिष्यते॥

दोहा ॥ सोरठा ॥ हियधरिनंदकुंवार, बरनौंबालबिनोदइक ॥ नंदमहरकेद्वारचहलपहलनितपेलिकी ॥ १ ॥ अथ अरिल्ल ॥ बैठेमोहनलालअथांयनिआयकैं ॥ चहुंदिसबालकबृंदरहेछबिपायकैं ॥ पढततहांमधुमंगलसुपदसुभायको ॥ हसिहसिपरतगुपालकुंवरनंदरायको ॥ २ ॥

अथ नायकामुष वर्ननं ॥

मधुमंगलवाक्य दोहा ॥ बैंनीआईउलटिकैं रहीभालपरिझूलि ॥ मनौंजतीकेसीसपैं, बैठेबगुलापांति ॥ ३ ॥ फटकरंगकीभौंहहैं, धूंमधौरहरनैंनि ॥ मनमांनकचहलैंपरयो, देषतचंचलकांन ॥ ४ ॥ पटकीलीसीनासिका, अधरावलिरहिझूल ॥ दसनजीभरहिलट किकैं, लषिअटक्योमनमोर ॥ ५ ॥ ऊगेचिबुककपोलपरि, पीतरंगकेकेस ॥ मानौंकलीअनारपरि, भंवररहेलपटाय ॥ ६ ॥ अरिल्ल ॥ मुषबरन्यौंमधुमंगलसोकहियेकहा ॥ अबतनबरनतसुबलजुन्हैकैंकत्रिमहा ॥ बाढयोकउतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिहसि० ॥ ७ ॥

अथ नायकातन बर्ननं ॥

सुबलवाक्य ॥ दोहा ॥ रानिशृंगासीग्रीवपरि, ऊगेहाथअनूप ॥ ज्यौंमुरगाबीछांनिपरि, बैठीपांषिपसारि ॥ ८ ॥ कुचसोहतल हिंगातरैं, ज्यौंवृच्छनिकेमीन ॥ नाभमनौंमुपासिंघको, कटहलसीक टिजांनि ॥ ९ ॥ गुप्तअंगझूलतरहैं, अनंनासकेरूप ॥ कंचुकिछी ननितंबविच, दियैंदमामोजाय ॥ १० ॥ चरनांनिकीसोभाकछूब रननकरीनजाय ॥ चोवाकैंचहलैंपरेमनौंकाछवादोय ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ अरिल्ल ॥ भूषनबरनतयाकेअबैंसुबाहुजू ॥ सुनियेंसुंदर स्यामबढैंचितजाहुजू ॥ वाढचोकउतकचावसुबालसुभायको॥ हसि हसि० ॥ १२ ॥

अथ याकेभूषन बर्ननं ॥

सुबाहुवाक्य॥ दोहा ॥ सीसफूलसोभानिरषि, इकटकरहिगये दांत ॥ मानौंकांमरिगंठरिया, धरैंमूंडपरिदोय ॥ १३ ॥ नथमोती जगमगरहे, रसटपकततिहिंसंग ॥ ज्यौंहाथीकेसींगपरि, करततप स्याऊंठ ॥ १४ ॥ करनफूलदादुरमनौं, करतहैंसोरअकास ॥ सबदांतनिकीचौंपतरि, घंटावलिछबिदेत ॥ १५ ॥ सोहतकंकनकं ठको,तामैंघूघरनाद ॥ कारेधुरवाकुचनिबिच,बाजूबंधविसाल१६॥ पौंचीमुद्रावलिललित, कांपनिमैंफहरात ॥ बजितकिंकनीपीठप रि गुफासिंघघुररांन ॥ १७ ॥ नूपरजेहरबीछिया, जंघनिपरिछबि देत ॥ मानौंषंभषिजूरकैं, लपटिरहेहैंनाग ॥१८॥ इति ॥ अथ अ रिल्ल ॥ श्रीदामालच्छनकहत, सुनौंइहिंनारिके ॥ परमाबिचच्छनश्रो

तामोहनयारके ॥ बाढचोकउतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिह सिपरत० ॥ १९ ॥

अथ या नायकाके लच्छन बर्ननं ॥

श्रीदामावाक्यं दोहा ॥ रंगभरीचितवनिचलत, मनौंदवानल आहि ॥ मुसकिफिगगफूफूपवन, लहिंगाकीकरिओट ॥ २० ॥ मृदुबोलनिसंगश्रवतजल, हियहहलतसबकोय ॥ सुघरसहजमैंरसभरे, घुरकतजनौंबाराह ॥ २१ ॥ चतुरचलतराहदारडग, पगपगछिरकतगैल ॥ मनौंसलीताडारिकैं, कोयलकूदतजात ॥ २२ ॥ सिर लहिंगालाबनउलटि, ठनगनठनकअलोल ॥ ऊंचेल्पायनितंबझुकि, भजीकटाछैंमारि ॥ २३ ॥ इति अथ अरिल्ल ॥ गबदरायसुनि बोल्योमोहिदिषाइये ॥ वहैंनायकाबेगतहांचलिजाइये ॥ बाढचोक उतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिहासिपरत० ॥ २४ ॥

अथ गबदराय वाक्य ॥

दोहा ॥ गबदरायभोरोसपा, चकितरह्योनिहारि ॥ फिरिबोल्योहठिसबनिसौं, मोहिदिषावोनारि ॥ २५ ॥ रेभइयाचलिनंदकेतोकौंमेरीसौंहु ॥ अतिसुंदरवहिनायका, देषूंगोरेहौंहु ॥ २६ ॥ तब गुपालहासिउठिचले, सपालियैंसबसंग ॥ गबदरायआगैंतहां, आतुरअदबदअंग ॥ २७ ॥ गब्रदाकौंसबारिंदमिलि, लैगयेब्रनत्रहिकाय ॥ कीचबीचइकलोटती, दीनीभैंसदिषाय ॥ २८ ॥ स्यामसहित भागेसपा, किलकीदैंकरिपेलि ॥ गारीकाढतगबदवा, लियैंहाथमैंडेलि ॥ २९ ॥ गबदरायपाछैंलग्यो, डेलिचलावतजात ॥ स्वासस

मातनअतिहियें, अमितासिथलभयोगात ॥ ३० ॥ करीपुकारहिजायजहां, बैठेहेब्रजराज ॥ बाबाजूइनसबनिमिलि, हौंबहिकायोआज ॥ ३१ ॥ तबहसिनंदमंगायदये, बहौपकवानप्रकार ॥ सुषीभयेकारिगवदवा, भोजनभीमअहार ॥ ३२ ॥ वालकेलिकहांलगिकहौं, जेजेकरतगुपाल॥ब्रह्मादिपछितावही, हमनभयेब्रजग्वाल ३३॥ नंदगांवब्रजवालकनि, देषतबढ्योहुलास ॥ कीनौंबालबिनोदयह, ग्रंथनागरीदास ॥ ३४ ॥ समतअष्टदससतजुनव, मासअश्विनभृगुवार ॥ तिथषष्ठीअरुशुकलपष, रच्योग्रंथबिस्तार ॥ ३५ ॥ इतिश्रीबालविनोदग्रंससंपूर्ण ॥ १ ॥

अथ सुजनानंद ग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीनंदनंदनवृषभाननंदिनीजयतां ॥ मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ बंदौंब्रजकेचंदद्वै, गौरस्यामसुपरास॥ सिगरोब्रजजगमगरह्यो, जिनकेंरूपउजास ॥ १ ॥ इनहीकोपरकरसवैं, एब्रजवासीजानि ॥ तिनकीइच्छातैंकहूं, ग्रंथश्रवनसुपदानि ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ ब्रजवासिनिकीपदरजध्याऊं ॥ ब्रजहीकीकछुलीलागाऊं॥ जोदेषीमैंअपनेनैंना ॥ सोबजथामतिबरनौंबैंना ॥ ब्रजसबअतिआनंदनिझिल्यो ॥ मूरजसमैंकमलज्यौंषिल्यो ॥ सुषीदेषियतसबहीलोग ॥ तिनकैंधनगोधनकेभोग ॥ वहीसमैंजोनंदराइकी ॥ प्रगटीकिरिसुभदिनसुभाइकी ॥ उतनंदीसुरनंदसुथान ॥ इतवरसांनैंश्रीवृषभानएदोऊयाब्रजकेभूप ॥ तिनकेगृहद्वैरतनअनूप ॥ इनअपनेपरकरकौंहेरि ॥ रूपरामकोमनदियोपेरि ॥ नंदराइबोलेवरसांनैं ॥ दुहं

दिसिघरघरमंगलठांनैं ॥ सनमुपलेनचलेव्रजबासी ॥ हयगयरथसें नांछबिरासी ॥ उततैंनंदमहरिचलिआए ॥ बजनलगेबाजित्रसुहाए ॥ छप्पै ॥ व्रजबासीथटनिकटबीरवरछनिगहिआगैं ॥ ठहकिढालढिगढालघटाकारीजिंमिलागैं ॥ घमसिघटनिघटपूरधूरिउडिलगीअकासैं ॥ गरजिनौबतनिघोषसक्तिदलदामिनीभासैं ॥ मचिभीरसोरनागरमहापरीसुनततनहिंकानसौं ॥ श्रीनंदगोपमहाराजजबचलेमिलनवृषभानसौं ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ आगैंनंदऔपाछैंजसुधा ॥ तिनकीयहसबव्रजकीबसुधा ॥ तापीछैंदोऊभैयाचले ॥ गौरस्यामआनंदरसरले ॥ चंवरछत्रछबिअतिसरसात ॥ नरनारीमगमेंनसमात ॥ घहरतगजफहरतपटवांने ॥ दरसनहितनरबहुउररांनें ॥ इतमगजोवतहोबरसांनौं ॥ लष्योदूरितैंनंदकोआंनों ॥ ब्रजजुवतीआनंदसरसाई ॥ लैलैकलससनमुषीआंई ॥ गहमहभीरभईमिलिभारी ॥ कईद्वारतियकईअटारी ॥ फूलभरीफूलनिबरसांवैं ॥ समधानेंकीगारीगांवैं ॥ पाछेंतहांकुंवरदोउसंग ॥ तिनमें छोटेसांवरअंग ॥ सोआंनंदिततननसंभारैं ॥ इकटकमहलनिऔरनिहारैं ॥ यौंब्रजराजगांवविचआए ॥ घरघरमंगलकलससबंदाए॥ चहलपहलअतिआनंदरली ॥ भरिगइफूलनिसौंसबगली ॥ बरसांनेंसोभाउफनात ॥ महाभीरानिकस्योनहिंजात ॥ हरैंहरैंआएनिजठौर ॥ श्रीनंदरायगोपसिरमौर ॥ दोहा ॥ जोमगमेंसमयोभयो, रह्योहियैंमंडराइ ॥ मनमेंनांजानैंदोऊ, कह्योकौंनपैंजाइ ॥

अथ भवन प्रवेस ॥

॥ चौपाई ॥ नंदभवनजबकियोप्रवेस ॥ जरीपांवडेपरेसुदेस ॥

बरषेफूलरजतकंचनके ॥ लुटतभिछुकनिगनबहुधनके ॥ श्रीवृष भांननंदमहाराज॥ निकटकुंवरमनहरनसमाज॥पढतबंसबंदीजनह रषैं ॥ भानओरतैंबहुधनबरषैं॥ नाचतगुनीगवैयागावैं ॥ बीनमृदं गसुधंगबजावैं ॥ सुरधुनिप्रेमानंदछकाए॥ इंहिंसमयेमेंएपदगाए॥ ॥ १ ॥ रागपंभावची ॥ नंदवृषभानइकभवनराजैं ॥ भईभटनट निकीभीरवृषभानपुरपौरअतिमत्तगजराजगाजैं ॥ दुहूंकुलदीपकेकु लहिंमंगदभनैंजुरेगनगुनीसंगीतसाजैं ॥ समधीसमधीमिलनिगोप गरईसभाप्रभाआनंदकछुऔरआजैं ॥ गारिगावनसकलमिल्योमह रावनौंकियेंघूंघटलियेंहियैंलाजैं ॥ महलमहलनिचहलपहलमंगल महाद्वारसहनाइनीसांनबाजैं ॥ बटततहांपानकपूरअरुअरगजागो पकुलकरतसनमांनभ्राजैं ॥ नागरीदासतहांफिरतउच्छवटहलपरम आनंदछकचढेछाजैं ॥ ॥ चौपाई ॥ कीरतिजसुधाएइकठौर ॥ सबव्रजकीदोऊसिरमौर ॥ जहांभीरब्रजजुवतिनिकरी ॥ सनमुष गारीगावतिषरी॥ नंदहूगौरगौरतुमरानी ॥ कुंवररस्यामयहहमसब जानी ॥ आजकोदिनधनिधनिसुषदाई॥ तूवृषभानकेघरमेंआई ॥ योंकहिकरतकुतूहूलनारी ॥ गावतहंसतदेतकरतारी ॥ भावकजन यहसमयनिहारे ॥ बहतप्रेमकीद्दगजलधारैं ॥ जेविरक्तवनबासी संत ॥ पगनितियनिकेलुटतअनंत ॥ ब्रजबासिनिआंगननहिंमावत लैलैभेटगांवतीआवत ॥ कांनपरीसुनियतनहिंकही ॥ गहमहरावर मैंव्हैरही॥ समधनिमिलीउच्छवसरसांनौं॥जगमगरह्योरूपबरसांनौं यहउच्छवबढिपरयोअपार॥ कुंवरिलाडिलीकैप्योसार ॥ इंहिंसुषब हुदिनपलभरिजानैं ॥ श्रवननैंनमननांहिअघानैं ॥ बहुमनुहारैंबहु

ज्यौंनारैं ॥ दानमानदएबहुतप्रकारैं ॥ मांगतनंदविदाकरजोरि ॥ राषतश्रीवृषभाननिहोरि ॥ यौंवृषभानरापिदिनघनें ॥ कियेबिदाव्है कैंअनमनें ॥ छप्पैं ॥ करिकरिलोचनसजलवचनहितअम्रतभाषे॥ पांनसुगंधबिधानआंनिमुषआगैंराषे ॥ पहराएनरनारिबहुतकंचन धनबरसे ॥ नेगिनिदीनेनेगसबैंआनंदहियसरसे ॥ गजराजबाजि पटरतनबहुनागरहठकरिसंगदिये ॥ श्रीमहेंद्रवृषभाननैंपुनिऐसैं नंदबिदाकिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ नंदासिधाएनिजभवन, रहिगएजकिसबहेरि ॥ जगतकहानीरहिगई, रहिगईसुषऔ सेर ॥ १ ॥ यहउच्छवअद्भुतरच्यो, धन्यधन्यअनुराग ॥ भली करीसंपतिसफल, रूपरामबडभाग ॥ २ ॥ सबबिधिनांहींकहिस क्यो, बहुतरहीअवसेष ॥ कहीजथामतिरीझवस ॥ नागरउत्सव देषि ॥ ३ ॥ संमतअष्टदससतजुदस, बरसानेकेबास॥ग्रंथसुजना नंदयह, कियोनागरीदास ॥४॥ इतिश्रीग्रंथसुजनानंदमाहाराजना गरीदासजीकृतसंपूर्ण ॥

अथ रासअनुक्रमके कबित्त ॥

ठौरठौरबृंदाबनमुकलितमालतीयौंउलहेकदंबकेलिनउतननूति का ॥ चंद्रमाकिरनद्रुमरंध्रनिव्हैंआंईसोबमांनौंछबिदेतछरीकामक लधूतिका ॥ ऐसेसमैंमोहनलगेहैंमुरलीकैंकांनदईलैपठायमंत्रपढि कैंअभूतिका ॥ नागरियाजहांतहांश्रवननिरलीआयबोलितियलैंच लीसुबंसीब्रजदूतिका ॥ १ ॥ उदितसरदचंदचंद्रिकाकिरनकढीदि नमनितापतनमेंटतकहलहैं ॥ ऐसेसमैंआईब्रजबालानंदलालाढिग

तिन्हैंदेषिकोटिरतिलागतसहलहैं ॥ गावैंगीतमीतमिलिनागरिसंगी तनचैंचंचलताचितैंरहीमोमतिहहलहैं ॥ मिलीघनस्यामैंमानौंधाई नभमंडलसौंबीचरासमंडलकैंदामिनीलहलहैं ॥ २ ॥ वृंदाबनकान नपैंभीरहैविमाननिकीदेवबधूदेपिदेषिभईहैंमनंचला ॥ बंसीकलगा नकैंवितानधुनिबायवंध्योरमालोकलोभितव्हैंभूलीउरअंचला ॥ द्वै द्वैबिचगोपिनिकैंललिततृभंगीलालनागरियापदन्यासबाजैछनछंछ ला ॥ रासरंगमंडलअषंडनितैहौंनलाग्योसंगव्हैंभ्रमतमानौंमेघचक्र चंचला ॥ ३ ॥ सरदसुहाईनिसप्रफुलितबल्लीबनबहोछबिछाईचारु चंद्रिकापुलनिमैं ॥ गानकेबिधानतहांनितंभेदहावभावरच्योहैंबिला सरासमंजुलपुलनिमैं ॥ लेतगतिनागरियानागरसुमंडलमैंकोरिकम दननांहिंआवततुलनिमैं ॥ बेरबेरझूलैंमोतीमालाकीझुलनिमनदेषि देषिडुल्योजातकुंडलडुलनिमैं ॥ राधानंदलालरासमंडलरसालन चैंएकतनव्हैंकैंएकफूलनिकेहारमैं ॥ एकजारीदारसेतओढनीकौं ओढिदोऊनितंतसुधंगगतिमिलिततकारमैं ॥ मुपनैंनभूषनचिकुरक रकांतिपुलीचांदनीसरदसुच्छसागरकेवारमैं ॥ नागरमयंकमीनमा नौंमनिगनसिंवारकंजकामधींवरगहेरूपजारमैं ॥ ५ ॥ एकराति हीमैंकईकलपत्रलपजानैंऐसीकेलिकंवनीयइनहींसौंहोसकैं ॥ एक बांसुरीकीधुनिथिरचरमोहिडारेतृभुवनकौंनसुनिधीरगहिजोसकैं ॥ एकनटनागरकीमुकटलटकमांझअटकिपरचोहैमनछूटिनांहिंसोसकैं एकभुवभंगमैंअनंगमानभंगहोतताकेरासरंगकोबपानकरिकोसकैं ॥ ॥ ६ ॥ ठाढीअभिरामास्यामाबीचरासमंडलकैंआगैंस्यामनितंतहैं सुलपसुधंगमैं ॥ नूपुरमृदंगबीनतारसुरसांचलीनपैरतप्रबीनगुनसा

गरतरंगमैं ॥ नागरियाराधेरीझिभृकुटीनचायतवदईमनमानीमौज
आनंदउमंगमैं ॥ प्रीतमकैअंगनिअनंगचलचालपरीभएतालभंगला
लबालभौंहभंगमैं ॥ ७ ॥ थेईतात्थेईथुंगधमकटतत्ताधलांगउघट
सुघटघाटठटक्योसुठटक्यो॥ देषिनवरंगीकीललितकटिभंगीतहांक
टयोहैंनिकटभूलिभटक्योसुभटक्यो ॥ नागरनवलनटनिर्तकारीकौं
निहारिलोकविधिवेदवादपटक्योसुपटक्यो ॥ पीतपटचटकरु
लटमैंलपटिमनमुकटलटकिमांझअटक्योसुअटक्यौ ॥ ८ ॥
निर्तनवेलीअलबेलीप्यारी मंडलमैंसारी जरतारीरहीझींनींझलम
लिकैं ॥ सषियांनिहारैंप्रानवारैंरिझवारैंरीझिउटतआनंदउरप्रे
प्रेमकलमलिकैं ॥ नागरियास्वामिनीकीउरपतिरपदेषिदामिनीवि
चारिरहैहाथमलमलिकैं ॥ प्रीतमकेलोयनलगायलयेपायनसौं
मनतरवायनसौंडारयोदलमलिकैं ॥ ९ ॥ नटराजभेषधरैंर
तिराजरंगभरयोनिर्ततसुघरस्यामतालनिअटपटी ॥ ठाढेचहूंओरजू
थचतुरचकोरिनिकेचितैंब्रजचंदपरीमदनसटपटी ॥ किंकिनींक्कुणि
तकलनूपुररुणितपायनागरछुटयोहैंपटभांतानिलटपटी ॥ गतिलेत
ललितसलोलमालाकुंडलहैंललनिलगायराषीलोयनचटपटी ॥१०॥
प्यारीजूकीसुलफसुधंगदेषिरंगभरीकैसीनीकीलागतहैंगुनगरवांनि
की ॥ चंचलसमीरबसचंद्रकारुअंचलहैं छूटेकेसपासनिकुसमझरवां
निकी ॥ नागरियापन्ननिकीपायजेबसोहैंपायप्रीतमकोमनलाग्यो
छबितरुवांनिकी ॥ बेसरिकोमोतीझूलिझूलतहैझूमकहैंतैंसीगातिलैं
निमैंहलनिहरवांनिकी ॥ ११ ॥ रासकेश्रमितआवैंकुंजकैनिवासदो
ऊललितबिछावैंआगैंपंकजकीपाषियां ॥ स्यामदुहूंहाथनिपैंधरैंहाथ

स्यामाजूकोतहांभईसबहीकीआंखैंमधुमषियां ॥ नागरियांनागरब नकबनींसैंनींपरबैठेहासिचतुरचितौंनचपैचपियां ॥ प्यारीमुषस्वेद हिंसुखावैंपियफूंकदैंदैंत्यौंत्यौंउतभीजीजातसुषमांहिंसषियां ॥१२॥
नवलनिकुंजमंजुकालिंदीकेकूलजहांरहींझुकिझूलिलताफूलनिके भारहीं ॥ स्यामासुपदाईतहांअमलजुन्हाईआईऔरैंछबिछाईछित सेव्यकोटमारहीं॥ नागररसिकलालप्रेममतवारेप्यारेराधारूपदेषिदे पितोरितृणडारहीं ॥ चंद्रमांकीडीठडरिकरतमुकटछांहपीतांबरगहि ठाढेभंवरनिवारहीं ॥१३॥ लहकिलहकिजातलगिकैंपवनलतामहकि महकिउठैंमालतीसुबासहैं ॥ गहकिगहकिगावैंकोकिलातरनिचढी कुंजछबिपुंजकामसेवतनिवासहैं ॥ नागरियास्यामास्यामसोहैंसुख सैंनीपरदेषैंद्रुमरंध्रनिनकोऊसषीपासहैं ॥ दोऊमनहरैंदोऊरीझिरी झिअंकभरैंअंगनिअनंगबाढ्योरंगमैंबिलासहैं ॥ १४ ॥ तनकतन कबाजैंझनकचुरीनिकीओगरैंहरवाईबातभनकसुहांवती ॥ टूटेहार फूलनिकेछूटेउरबंधानिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटप टायमूरतगुलाबजलभीजिरहीबिगलतिबारबासमदनबढांवती ॥ रू पबसनागररसिकहासिहेरिहेरिफेरफेरभेटतभुजानिभरिभांवती ॥१५ छीनकटिछूटेबारआएफैलिआननपैंआधेंसीससीसफूलवैनांझुकिगो महा ॥ टेढीभईबैंदीहारसरकेसिंगारलषिमोहूसौंन्हैंन्यारेमेरेलोयन करैंहहा ॥ बदनगुराईमांझअरुनाईपियराईनागरियाकैसैंनैंनसिथल ढुरैंअहा ॥ रूपहैंकिढौरीहैंकिनैंनानिठगौरीहैंकिस्वपनौंकिसंभ्रमकि सांचहैंकिहैंकहा ॥ १६ ॥ मर्गजीसुबासबसआसपासभौंरभीरभ्रम तअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांदनीमैंसोएमिलिसुरतिश्रमितअंग

आनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झीनौंपटफारिफैलीबाहिरबद नकांतमानौंजोन्हजीतिबेकौंचलीहैंउमाहिकैं ॥ नागरियाअरझानैं ग्रीवनिमृनालभुजपुलिजातिआंखैंजबरहिजातिचाहिकैं ॥ १७ ॥

अथ निकुंजबिलासग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीविहारनिबिहारीजूजयति ॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनेहसरूपससि, हियमैंकरोप्रकास ॥ अष्टप्रहरकीकेलिको, जानिपरैंआभास ॥ १ ॥ श्रीस्यामाअरुस्यामके, अमलकमलपदचार ॥ तिनकौंवंदनकरि कहूं, तिनकोकछूबिहार ॥ २ ॥ गउरस्यामनितिएकरस, नउतनने हअछेह ॥ एकबयक्रमएकमन, एकप्रानद्वैदेह ॥ ३ ॥ पियप्या रीवृंदाबिपुन, नितिबिहाररसएक ॥ बिछुरतनांहींपलकहू, बीतत कलपअनेक ॥ ४ ॥ नवनिकुंजमनकौंअगम, सेवतकोटअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअखंडितरंग ॥ ५ ॥ नैननैंनासियरांव हीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुंहांचहींजियज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतं त्र ॥ ६ ॥ लालकैंसर्बसबालहैं, बालकैंसर्बसलाल ॥ दुहुनिकैंवृंदा विपुनके, सर्बसतालतमाल ॥ ७ ॥

अथ श्रीवृंदाबन सोभा बर्ननं ॥

दोहा ॥ सोभासंपतविपुनकी, वरनतबनैंजबैंन ॥ दंपतिहूछकि रहतलषि, बढतमैंनकैंमैंन ॥ ८ ॥ लताफूलफलसंकुलित, कामकु टीअनयास ॥ कदलीअंबकदंबमिलि, बनिबानिरहेअवास ॥ ९ ॥ तालतमालनिजालविच, सुभगसरोवरनीर ॥ अमलकमलप्रफुलि ततहां, रोचकत्रीबिधिसमीर ॥ १० ॥ जलबूंदैंरहिठहरिकैं, कंजदल

निश्राधार ॥ दंपतिकैंहितसरलियें, मनुमोतानिकेथार ॥ ११ ॥ सुकसारिकअरुकोकिला, मत्तमधुपकलहंस ॥ नितिअपनीबानीनिसौं, करतहैंकेलिप्रसंस ॥ १२ ॥ हरितकूलजमुनांसरित, कहूंपुलनिमृदुठौर ॥ ठौररहतलपिठौरमति, होतऔरकीऔर ॥ १३ ॥ बृंदाबनभुवअंकुरित, सबैंहरितनवरंग ॥ जुगलकमलपदपरसकैं, भईरोमांचितअंग ॥ १४ ॥ हरितभूमिपररतनकी, वारौंअवनिकठोर ॥ द्रुमसोभासमलगतनहिं, महल्लजरावकरोर ॥ १५ ॥ प्रभुताकर्कसक्रांतहू, मननलगतअभिराम ॥ कर्नफूलमनिकनकके, मधुकरकैंकिहिंकाम ॥ १६ ॥ हरितअंकुरितभूमिबन, कनकमईहूनित्त ॥ जाहीकोबरननकरैं, जोभावैंजिहिंचित्त ॥ १७ ॥ हरितभूमिनवअंकुरित, निकरसरनिजलजात ॥ बनद्रुमनीकेलगतमोहि, भरेफूलफलपात ॥ १७ ॥ विपुनकुसमरजधुंधरित, ज्यौंसरपंजरकाम ॥ तहांबिछौनांफूलके, परेरहैंअभिराम ॥ १९ ॥ सदाएकरसबनअवनि, हरितद्रुमानिकीभीर ॥ कुंवरिकमलदलदृगनिकी, चितवनिसींच्योनीर ॥ २० ॥ ऐसेवृंदाविपुनमैं, नितिविहाररसएक॥ कहूंजथामतितनकही, कौतुककेलिअनेक ॥ २१ ॥

अथ प्रातसमैं बर्नन ॥

चौपाई ॥ कछुकभुरहरीसषियांआई ॥ बीनबजायमधुरसुरगाई ॥ कोउकोउहसिडारतहैंफूल ॥ दोउपौढैइकओढिदुकूल ॥ लटपटायसोवततैंजगे ॥ अरसौंहैंदृगदृगनिमैंपगे ॥ बैठैलपटिलटकिफिरिसोवैं ॥ यहसुषसषीद्रुमनिमैंजोवैं ॥ बहुरिपरसपरदर्पनदेखैं ॥ नि

जमुषलषिंनहिंलगतनिमेषैं ॥ पौंछतपियप्यारीकीपलकैं ॥ प्यारी सुघरसंवारतअलकैं ॥ हारबारअरझेसुरझात ॥ तामैंअरझेआपही जात ॥ प्रेमरूपकैंचहलैंफसे ॥ नीठिनीठिनिकसेलजिहसे ॥ आंग नमैंभईठाढीबाल ॥ पवनढुरावतरसिकरसाल ॥ पियरैंपटपौंछतपि यश्रमकन ॥ प्यारीहसततवैंमनहींमन ॥ स्यामकरनिकंचुकीकसि बांधैं ॥ स्यामाचितवनिफिरिफिरिसांधैं ॥ पुनगरबहियांमिलिकैंच ले ॥ आयतवैंसषियनिमैंरले ॥ स्नानकुंजमैंआयेदोऊ ॥ तहांज लठौरऔरनहिंकोऊ ॥

अथ स्नानकेलि ॥

दोहा ॥ नीरसदनलषिमदनकी, उमगिउठीफिरिफौज ॥ लाजगईतहांतजिमनी, बनीहौजपरमौज ॥ २२ ॥ प्यारीन्हातन्हवातपियरसलंपटरिझवार॥ भीजेतनलपटांनिको, लेतदोऊसुषसार२३ मंजनकुंजमैंहोतसुख, बरनतबनैंनबैंन॥मौंनहींमैंताकोकहनि, जांनतमनकेनैंन ॥ २४ ॥ भयेजुठाढेन्हायदोऊ, चुवैंछबीलेबार ॥ मनौंस्याममपतूलतैं, मुक्तागिरैंसुढार ॥ २५ ॥ चौपई ॥ भीजेबारबडेछबिदेहीं ॥ दुहूंदिसछुटेबांधिमनलेंहीं ॥ बिमलस्वेतपटतनहिंलपेटैं ॥ तामैंछिपतनसुछबिअंगेटैं ॥

अथ सिंगार ॥

चौपाई ॥ आयेकुंजसिंगारमैंजबैं ॥ जिहिंठांसौंजधरीहैंसबैं ॥ पहिलैंल्याईसषीमहाउर ॥ पियकैंआंनंदबढचोमहाउर ॥ मुदितलालजबलगेलगावनि ॥ पौंछपौंछपीतांबरपावनि ॥ कंपतकररंगभ

रंचोनजाय ॥ रहोरहोकहतकुंवारिमुसक्याय ॥ प्यारीकरतापिछौंहीं पांवहिं ॥ तबपियनैननिहाहाषांवहिं ॥ पियझुकिनैननिछ्वावनिला गैं ॥ ढांपतप्रियपगधरतनआगैं ॥ सतरव्है स्यामभौंहचढावत ॥ त- बप्रीतमइतसीसहिनावत ॥ रंगभरनिमैंबाढ्योरंग ॥ लषिव्हैसाषिय निकेदृगपंग ॥ पुनदंपतिमिलिदर्पनदेषैं ॥ करतसिंगारनलगतनिमे षैं ॥ तनप्रतिबिंबैंज्यौंदर्पनमैं ॥ ज्यौंदर्पनप्रतिबिंबततनमैं ॥ दर्प नसेतनतनमैंझलकैं ॥ लषिझलकैंलागतनाहिंपलकैं ॥ सषीसुघरभूष नपहिनावैं ॥ बिचबिचकछुकहिहसैंहसावैं ॥ प्यारीकीबैनीपियगु हैं ॥ सौंहैंदेषतदर्पनमुहैं ॥ जान्हुदबततबसतरतभामिन ॥ मनुमु रिमिल्योचहतघनदामिन ॥ बैनीगुहीदिषावैंअंसनि ॥ तवस्यामा हसिकरैंप्रसंसनि ॥ पुनघुरिढुरिअरसायाकिसोरी ॥ भुजनिबीचमुष लैकैंगोरी ॥ स्यामहिप्यावैंअधरसुधारस ॥ अतिसुषबिबसहोयदोउ रसबस ॥ फिरदोउदेतपरसपरअंजन ॥ कंपतकरानियरेदृगषंजन॥ बैंदीदेताचिबुककरतलयौं ॥ नीलकमलपरअरुनकमलज्यौं ॥ प्या रीनिकटनैंनसकुचाय ॥ होयपिछौंहीमुरिहसिजाय ॥ पुनमुषजोरैं देषिआरसी ॥ सषीलिषीराहिचित्रकारसी ॥ लालमालपहिनावतबा लहि॥ बिचबिचकरतचपलकरचालहि ॥ जबैंहोतलोयनअनषैंहैं ॥ करतकुंवरिभौंहैंसतरौंहैं ॥ कहतकिसोरीकहाकरतहो ॥ कौनलोभ कैंढारढरतहो ॥ बचनरचनयौंचितवनिसरसनि ॥ करतसिंगार होततनपरसनि ॥ पंदरहबिधिकोहोयसिंगार ॥ सोसबबरनतव्हैं विस्तार ॥ गउरस्यामछबिरहैंनिहारिकैं ॥ सषीदेतमनवारिवारि कैं ॥ गउरचरननूपरसुषकारी ॥ बांधतबैठिकैंरसिकबिहारी ॥

दोहा ॥ ऊंचैंस्यामनिहारिहीं, जैसैंचंदचकोर ॥ नूपरडोरजुरीनहीं जुरीदृगनिकीडोर ॥ २६ ॥ जोसुषवढ्योसिंगारमैं, वरन्योजातनबैन ॥ रिझवारानिसपियांनिके, जांनतहैवेनैंन ॥ २७ ॥ इतिसिंगार ॥

अथ भोजन समैं ॥

दोहा ॥ पुनभोजनल्याईसषी, दईजवनकाढारि ॥ कोजनकबिरसनांइकैं, वहिसुपसकैंउचारि ॥ २८ ॥ मिलिजैंवतदोउदरसरस,रसनांरसबिसराय ॥ गईक्षुधासवउदरकी, रहैंदृगनिमैंआय २९ अचवनकरिबीरीजुलैं, सोतोकहतबनैंन॥ पंडपंडमनकेकरैं, पंडपंड करिलैंन ॥ ३० ॥ इतिभोजन ॥

अथ आरती समय ॥

चौपाई ॥ सषीझूमिसबानियरैंआई ॥ दंपतिछबिअं.पियांसियराई ॥ दीठलगनकैंकाजैंडरी ॥ तबातिहिंसमैंआरतीकरी ॥ दोहा ॥ रूपआरतीसषिकरैं, लियेंआरतीसाथ ॥ आवैंमनुसउदामिनीलैंसउदामिनीहाथ ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ रूपरतनदीपकमिलिपुंज ॥ जगमगायरहैंदर्पनकूंज ॥ बीनमृदंगगानधुनिभोय ॥ मंगलघरीमनोहरहोय ॥ इति आरती ॥

अथ दुपहरी समय द्वुतियकुंज प्रवेस ॥

चौपाई ॥ पुनिकियोगवनतहांतैंप्यारैं ॥ प्यारीकेअंसनिभुजधारैं ॥ जलतटसघनकुंजसुषकारी ॥ चहुंदिसफूलरहीफुलवारी॥ बैठेतहांआयदोऊसंग ॥ गावतसषीरागसारंग ॥ पियदृगावैंमनहिंलु

भांवैं ॥ प्यारीजूकीरुचिउपजांवैं ॥ बैठीसरकिकुंवारितिहिंबेरी ॥ कछुकतमूरातनहसिहेरी ॥ जथासवैया ॥ गानकियोचहैपाननिषातछुटीलटआननरंगभरयोई ॥ मौंनहींमैंझलकीसुघराईहियेंगुनकोसनसोउधरयोई ॥ पीचितचंचलकौंप्यारीनागरिघेरिअदायनिमैंपकरयोई ॥ लैंनतमूराहीकीमैंलयोमनगायबौधौंरह्योआगेंधरयोई॥३२॥ दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गानतानरसरहसकी, बहसबढीदोउओर ॥ ३३ ॥ होतरागसारंगधुनि, दंपतिकुंजनवीन॥ बिचबिचगायबजांवहीं, बीननिपरनप्रवीन ॥ ३४॥ धीरजपगठहिरैंनहीं,सुरगहिरैंगुनगान॥रागरसासवासिंधुकी, लहिरैंउपजततान ॥ ३५ ॥ कहाबीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर॥ लहलहातनीकीउठैंतांननिरंगहिलोर ॥ ३६ ॥ अथ कवित्त ॥ नागरिहसौंहैंमुषसौंहैंबिथरौंहैंबारउरजउठौंहैंसोभाहारानिसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंस्यामैंकिधौंमंत्रधुनिमोनकेतकौंनिकेतहैं ॥ अधरानिरंगभरेचौंकाकीचमकिहोतअच्छनितिरीछेतैंकटाछसरदेतहैं ॥ बेरबेरओटदैंतमूराहसिहेरिहेरिफेरिफेरितानानिफिरायेंमनलेतहैं ॥ ३७॥ दोहा ॥ जदपिकहावतहेबहुत, प्यारेस्यामसुजान ॥ पैंइनतैंअतिबढिपरयो, प्यारीजूकोगान ॥ ३८ ॥ कबहुचेतिबलिहारिकहि,कबहूहोतबिचेत॥प्यारीतांनतरंगमैं, पियमनबूडकलेत ॥ ३९ ॥ धुकेधरनिकौंसांवरे,ललिताग्रहेसम्हारि ॥ रागरूपकीचोटसौं, गिरैंक्यौंनरिझवारि ॥ ४० ॥ जीतीमेरीस्वामिनी, गुननिधिराधानाम ॥ मीनकेतरसपेतमैं, पौढेमूर्छितस्याम ॥ ४१ ॥

अथ रहसकेलि ॥

चौपई ॥ कहैंसषीतबसुनियैंप्यारी ॥ हमसबओटहोतहैंन्यारी॥ यौंकहिउठिललितादिकसषियां ॥ द्रुमनिलगिरहीज्यौंमधुमषियां॥ भुजभरिपियकौंकंठलगाये ॥ अधरसुधारसप्यायजगाये ॥ मग्नभयेदोउरतिरसगहिरैं ॥ कामउदधिकीबाढीलहिरैं ॥ टूटेहारबारबरछूटे ॥ कटितटग्रंथिबसनघुलिषूटे ॥ लटपटायलपटायकैंरहे ॥ रसमसेरूपनआवतकहे ॥ मिलेअधरमिलिबाहियांबहियां ॥ सुरतिश्रमानिपौंछैंद्रुमछहियां ॥ कोकिलसुकसारिकमृदुबानी ॥ तिहिंछिनकामकोकिहतकहानी ॥ ठीकदुपहरीसुषबिश्राम ॥ पौढेरसनिधिस्यामास्याम॥बहुरिपहरदिनपिछलोरह्यो॥दोऊचलेउठिकरकरगह्यो

अथ जमुनाकूलकुंजबिहरानि ॥

चौपई ॥ सीतलसमयेजमुनाकूल ॥तहांद्रुमलताझुकीफलफूल॥ सीतलमंदसुगंधपवनतहां ॥ सषियनिजुतदोऊकियोगवनजहां ॥ हसैंहसावैंमिलिमिलिगावैं ॥ फूलनिगहनैंगैंदबनावैं ॥ द्रुमपूरितमधुपनिकीगुंजनि ॥ तहांदंपतिफिरैंकुंजनिकुंजनि ॥ चहुंदिसडोलैंसषीउमहियां ॥ दुहुनिकीबिचिछुटतनगरबाहियां ॥ दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ दंपतिहितवृंदाबिपुन, धारेअगनितनैंन ॥ ४२ ॥ बनफूलेफूलेजुमन, फूलबेसअभिराम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिमिलिगोरीस्याम ॥ ४३ ॥ रंगरंगभूषनफूलके,रहेफूलतनझूल॥ अंतरकीबाहिरमनौं, प्रगटीअंगअंगफूल॥४४॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहुनिमन,

फूलनिबीनतफूल ॥ ४५ ॥ झूंमिझुकावतद्रुमलता, उघरतउरउरमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौंबाल ॥ ४६ ॥ धरतप्रियाकेश्रवनपर, लालकुसमकवनीय ॥ बहुरिबलइयालेतपिय, निरषिवदनरमनीय ॥ ४७ ॥ छ्वैंकपोलछबिसौंरहे, नाहिंउपमाकोउतूल ॥ हालहालकरैंहालमन, करनफूलपरफूल ॥ ४८ ॥ फूलनिसौंवैंनीगुही, रचेफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोऊ, भुजभरिद्दढअंकवार ॥४९॥ लालचलागेबालकैं, संगडोलतहैंलाल॥छुवतजुहीकेफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥५०॥ दोउलटकिकलहंसगति, निसआगमगतसांझ ॥ आयेबिपुनबिहारकारि, कुंजजुन्हइयामांझ॥५१॥

अथ कुंजजुन्हइया बर्ननं ॥

दोहा ॥ स्वेतफूलफूलेद्रुमनि, फटकमननिकीठौर ॥ बिमलचंद्रिकाजगमगत, तहांमदनकीरौर ॥ ५२ ॥ कुंजसर्बब्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेषानिसगुनमनु, निर्गुनब्रह्मकिजोत॥५३॥ नवनिकुंजराकारुचिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटकफानूसनभ, बिचससिदीपप्रकास ॥ ५४ ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बिचनिकुंजबनबाग ॥ कतारिस्वेतमुक्केसमनु, रतिपतिषेल्योफाग॥५५॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रबिपुनइहिंभाय ॥ ससिकारीगररुपहरी, अफसांकियोबनाय ॥ ५६ ॥ स्वेतफूलफूलेलतनि, बिलुलितहीराहार ॥ जौंन्हओढिपटरुपहरी, कुंजनिकरेसिंगार ॥ ५७ ॥ इति अथ दोहा ॥ तहांभोजनकरिमिलिदोऊ, राकारैंनानिहारि ॥ वसनरुपहरीअरुमुकट, साजेबहुरिसिंगारि ॥ ५८ ॥ निकासिकुंजठाढे

रहे, आंगनभरेहुलास॥ दंपतिचंदमयूषमिलि, जगमगरहेप्रकास५९
प्यारीसुपपियनिरषिहीं, अमलउज्यारीमांह ॥ तहांचंदकीदीठडारि,
करतमुकटकीछांह ॥६०॥ चितैंचंददंपतिबदन, रीझिचंदभयोचूर ॥
छिपाकिधौंवहिजोतिमय, कुंजनिविषरचोनूर ॥ ६१ ॥ स्वेतफूल
रहेफूलिकैं, उडगनमनौंअमंद ॥ उभयचंदकिरनावली, चहुंदिसजु
वर्तावृंद ॥ ६२ ॥ ललितादिकसबसहचरी, दंपतिकीपरछांह ॥
रूपचंद्रिकासीषरी,बिमलचंद्रिकामांह ॥ ६३ ॥

अथ नृतगान सुषसमैं वर्ननं ॥

दोहा॥ तहांपियप्यारीमनकियो, निराषिउजारीरैंन॥ नितेगान
आरंभमिलि, कीजैंसबसुषदैंन ॥ ६४ ॥ रसबिलासनवकुंजसुप,
रासकरनिकैंकाज ॥ कितिकसहचरीकरानिलये, अपनेअपनेसा
ज ॥ ६५ ॥ बीनतमूरापंजरी, बाजनिलगेसुधंग ॥ एकतालसुर
सांचमिलि, मिलिमृदंगमहुचंग ॥ ६६ ॥ बडेवारछबिसौंछुटे, अं
सबीनकटिछीन॥ सबरिझवारिनिकेमनौं, मनभरिकावारिलीन ६७
ललिततमूराबालढिग,सोहतहैंइहिंभाय॥समरजीतिदृगसरानिसौं, तर
कसलियोछिनाय ॥ ६८ ॥ सषीरूपकीमंजरी, पंजरीटसेनैन ॥
बजैंकरनिमैंपंजरी, लजैंपरेवाबैंन ॥ ६९ ॥ सुषमृदंगउपमाकछू,
यहआवतमनमांहि ॥ दृगपुतरीकैंबैंनभये, रोकेरुकैंजुनांहि ॥७०॥
कटितटिसुंदरबालकैं, हैंमृदंगयहिंभाय ॥ मनौंलयोरतिमूरछित,
दुहुंकरकामउठाय ॥ ७१ ॥ चंगैंमुंहमुंहचंगतिय, बजवतहैंगतिका
र ॥ बैठयोकमलदरारिबिच, मनुअलिकरतगुंजार ॥ ७२ ॥ चौप

अथ निज मन प्रति प्रीतमउक्ति सुरतांत समय ॥

कबित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआननपैंआधेंसीससीस फूलबैंनांझुकिगोमहा ॥ टेढीभईबैंदीहारसरकोसिंगारलषिमोहूसोंव्हैं न्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ नागरियास्वेदमुषअरुनाईपियराईआई अबकैसेनैंनसिथलहुरैंअहा ॥ रूपहैंकिढोरीहौंकिनैंननिठगौरीहौंकि सुपनौंकिसंभ्रमकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ जुरैंजुरैंफिरि हसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहिं ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहिरैंनां हिं ॥८९॥ अरसांनैंघूंमतझूकत, सरसांनैंछबिअैंन ॥ बिहसिढुरांनैं पीयपैं, नीदघुरांनैंनैंन ॥९०॥ जबपलआवैंझुकतपिय, दर्पनदेतदि षाय ॥ तबअपनीअंषियांनिपैं, अंषियांरहतलुभाय ॥ ९१ ॥ नीद भरीपललिरषिपिय, देतहैंपानबनाय॥ उतनैंननिकैंपुलतहीं, इतबीरी छुटिजाय ॥९२॥ भौंरनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूं किजगावतलालतव, षुलैंनैंनमुसक्यात ॥९३ ॥ सषीलषैंढुरेद्रुमानि मैं, व्हैंरहिचित्रसरीर॥निसउनदौंहैंदृगनिपैं, भईदृगनिकीभीर॥९४ अरसांनीनिरषतप्रिया, जातबिहांनीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ९५ ॥ धरैंचिबुकतरहाथदृग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकेरहचटैं, नाहिंपौढतरिझवार ॥ ९६ ॥ लषिउरझेसुरझैंन हीं, सबनिसगईबिहाय ॥ आरसउरझेदृगनिमैं, पीयरहेउरझाय९७

अथ सैनसमैं ॥

दोहा ॥ रहीरैंनथोरीजबैं, सोयेगोरीस्याम ॥ नागरिसाषिसहरां वहीं, चरनकमलअभिराम ॥९८॥ एकैंस्वेतदुकूलबिच, पौढेलागि

बलइयारीझिदोऊ, दोऊपौंछतश्रमबारि ॥ नचतसनोंश्रतिरंग सौं, बनीमदनमनुहारि ॥ ८३ ॥ उतैंझुकौंहैंनवमुकट, इतैंचंद्रिकाचार ॥ भयेरासरसमग्नतन, सरकेसकलसिंगार ॥ ८४ ॥ पूटिपूटिअंचररहे, छूटिछूटिरहेबार ॥ श्रमितरासरससरंगमैं, टूटिटूटिरहे हार ॥ ८५ ॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, कबिमतिमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहविलासमैं, कोरिकोरिव्हैंरास ॥ ८६ ॥ इति नृत्तगांन ॥

अथ निभ्रतनिकुंजरहसि बिहार सैंन समय ॥

चौपई ॥ निर्त्तषेदतनव्हैंरसमसे ॥ गउरस्यामगरबहियांलसे ॥ उरझेतनमनप्यारीपीयहि॥आयेनिस्भृतकुंजसयनीयहि ॥ सेवतकोरिककामनिवास॥महाकिरहीजहांफूलनिबास॥रससंपतिदंपतितहांलूटी॥ लाजगढीदृढतिहिंछिनटूटी तनउरझेउरझेहैंनैंनानि ॥ गउरस्यामउरझेरसबैंननि ॥ अधरउचयसैंननिदैंआछैं ॥ अधपुलिअंषियनिकरतकटाछैं ॥ छुटैकेसश्रमकनिमुपझलकैं ॥ लोयनमांझकामरसललकैं॥ गरवहियांमुषमुषपरझुकैं ॥ प्रेमाविवसरसमननाहिंरुकैं॥ आधेआधेनिकसतबैंन ॥ चढयोमहामादिकमनमैंन ॥ कंपतअंग होतसुरभंग ॥ छिनछिनवाढतरंगअनंग ॥ दुहुंदिसबाहुकसानिसौं कसे ॥ अधरबिंबअधरानिविच्चबसे ॥ अतिरसबससुपतंद्रालगी ॥ अधपुलिदीठदीठमैंपगी ॥ कछुसीकरैंकरैंभुवभंग ॥ अंषियानिलगि अंषियांव्हैंपंग ॥ चनकमूंदद्रुमकुंजउछीर ॥ सोरकरतांकिंकिनिमंजीर ॥ सबरातिसुषकाहिसकतनवैंना ॥ पंगहोतलाषिमनकेनैंना ॥ दोहा ॥ उरझेहारसिंगारमैं, लषिअंषियांउरझाहिं ॥ सुरझैंतनसुषसुरतसौं, पैंमनसुरझैंनांहिं ॥ ८७ ॥

पाछगोबिंदआगेंस्याम ॥ पैठयोगोबिंदमंदरिमांझ ॥ जहांआरती समयोसांझ ॥ दौरिदईगिल्लीकीजाय ॥ काढयोलोगानिपकरिमुक्याय ॥ परनिलगेझापटकेझुंड ॥ गयोगोबिंदागोबिंदकुंड ॥ बैठयोरूसिअकेलोजाय ॥ इतगिरिधरभोजननाहिंपाय ॥ कह्योगुसांईसौं लाडिलैलाल ॥ लैंआवोगोबिंदाग्वाल ॥ नींठमनायलैंआयेताहि ॥ मंदरिमांहिंमूंदिदयोजाहिं ॥ नागरमिलिभोजनकियोमीत ॥ प्रीतकैंआगैंरहतनरीत ॥ २ ॥ इकदिनभोरसमैकीबार ॥ जायभींतरियनकरीपुकार ॥ श्रीगोस्वामिसुनौंकरिचेत ॥ यहगोबिंदाजीवतप्रेत॥हैंअपराधीपठवोगंग ॥ आजुकरीमर्जोदाभंग ॥ छलसौंछिपमंदरमैंआय ॥ गलीबीचदुरिबैठयोजाय ॥ आवतलीनौंभोगउतार ॥ वीचअमानियांषायोथार ॥ ताडनिकोमान्यौंनहिंत्रास ॥ बिनचाबहोंनिगलेग्रास ॥ पूछ्योवाकौंपकरिमंगाय ॥ जबवहिकहिदइसबानिसुनाय ॥ भोरसमैंगिरिधरबनजात ॥ हौंफिरौंसंगभूषोबिललात ॥ यहसुनिकैंहियलयोलगाय ॥ कृपासिंधुश्रीबिठ्ठलराय ॥ नागरीदासप्रीतहियमांहिं ॥ रहनिदेतमर्जोदानांहिं ॥ ३ ॥ इकदिनआयोगोबिंदग्वाल ॥ मंदरमैंजहांगिरधरलाल ॥ टेरादूरकियौंजिहिंबेर ॥ रह्योमाधुरीइकटहेर ॥ देषीपागयांसूधीसीस ॥ उपजिपरीमनमैंअतिरीस ॥ चारबिचाररह्योचितनांहिं ॥ दौरिकैंपैठयोमंदरिमांहिं ॥ पगियांमोरिदईलैंगारि ॥ परिगइझटपटझापटमारि ॥ रूपलपेटमांहिंजोपरयो ॥ सोकबहूनकाहूतैंडरयो ॥ मानतसुषजारिबेकोअंग ॥ दीपकपरज्यौंपरैंपतंग ॥ जायनगह्योनआवतकह्यो ॥ रूपअमलजाकौंचढिरह्यो ॥ इंहिंतनसषादुतियतनसषी ॥ नितिदेषतलीलामधुमषी ॥ नागरीदासभएइंहिंभाय ॥ जेअपनायेश्रीबिठ्ठलराय ॥ ॥ ४ ॥ इतिश्रीगोविंदपरचईसंपूर्ण ॥

लपटाय ॥ मुषझाँनैंबदरातरैं, हैंससिसेदरसाय ॥ ९९ ॥ चनकमूं दभइनोदबस, कुंजज़ुन्हइयामांहिं ॥ बाललालतनपरलसो, पातनि कीपरछांहिं ॥ १०० ॥ कियोदोऊसुपसैंनजहां, छूटीछिपातहां आनि ॥ ढरानिलग्योजबचंद्रमा, सूचतसमैंबिहानि॥१॥ इतिसैन॥

अथ कविबचन ॥

दोहा ॥ यहवृंदाबनयहसमैं, यहदंपतिकीप्रीत ॥ नागरियाकैं हियबसो, नितिबिहाररसरीत ॥ २ ॥ उचितनहींकहनींइती, रह सकेलिरसकाम ॥ नागरियाकौंदोसकहा, प्रेरकस्यामास्याम ॥ ३॥ श्रीराधेकीजैंकृपा, चहतनागरीदास ॥ अपनैंवृंदाबिपुनको, देहु बाससुपरास ॥ ४ ॥ सतरासैंचौरानवां, पून्यौंअगहनमास ॥ ग्रंथ निकुंजबिलासयह,कियोनागरीदास॥५॥इतिग्रंथनिकुंजबिलाससं०

॥ अथ गोविंद परचईलिष्यते ॥

रागकालहरो॥तिताल॥श्रीवल्लभसुतबिठलराय॥जिनकोसुजसजग तरह्योछाय॥गोबिंदस्वामीतिनकोदास॥गिरगोवर्द्धनवाकौवास॥गुरु विठ्ठलबलकृपाअछेह॥गिरधरसंगषेलनइंहिंदेह॥कृपाकछूआवतनहिं कही ॥ मुक्तसमीपइहींतनलही ॥ एकदिवसगोबिंदबनमांह ॥गयो दिसाआकानिकीछांह ॥ जग्यभूमिहारिआवतनहीं ॥ बहिर्भूमिचलि आएतहीं ॥ उतगोबिंदइतनंदकुमार॥ अकडोडिनिकीमांचीमार॥ गोबिंदहूसौंहैंकरैंचोट ॥ लगैंस्यामकैंतनाविनओट ॥(जहां)॥ नाग रीदासषेलीहितहोय ॥ लघुदीरघतागनैंनकोय ॥ १ ॥ एकदिवस गोबिंदगोपाल ॥ गिल्लीडंडाषेलतष्याल॥ दावमारिभाजेदिसधाम॥

श्रीः

नागरसमुच्चय।

तत्रादौ

पदसागर प्रारंभः।

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८
श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरि
संबंध नाम नागरीदासजी कृत,

ताकों

मुंबईमें.

ज्ञानसागर छापखानेमें

छापके प्रसिद्ध किया.

इति
सिंगारसागर समाप्त ॥

श्रीः ।

अथ पदसागर प्रारंभः ।

बनजन प्रसंसग्रंथ पदप्रबंध लिष्यते ।

प्रथम श्रीबृंदाबन स्तुति बर्ननं ॥

॥ श्रीराधाकृष्णौजयति ॥ चर्चरी ॥ जयतिवृंदाविपनविस्वबंदनमहीमहिमाअद्भुतनिगमगाजगाजैं ॥ बननिबनराजव्रजराजसुतप्रियतहांसहजसुपनित्तरितुराजराजैं ॥ कथतश्रीमुपकथाकृष्णबलप्रतिजथाफूलफलझूमिछबिछाजछाजैं ॥ कोसदसदोयअनुरागरैंनीरचींपरसिमनबिरंगताभाजिभाजैं ॥ दासनागररंगबागराधासदानिरपिदृगकामरतिलाजलाजैं ॥ १ ॥ तथा पद ॥ धनधनश्रीगुरुदेवगुसांईं ॥ वृंदाबनरसमगदरसायोऊबटबाटछुटाईं ॥ भूलेहेबहुतेजनमनकेफिरतअंधकीनांईं ॥ नागरीदासबसायेकुंजनिसबैंछुडायदांहिनीबांईं ॥ २ ॥ धन्यधन्यहैंजोइपुरान ॥ ताकैंमध्यश्रीवृंदाबनकीकथापरमसुपदान ॥ बिनवृंदाबनबानीमेरैंकबहुपरोजिनकान ॥ नागरव्रजवृंदाबनबिनकोनहींभावतभगवान ॥ ३ ॥ धनधनवृंदाबनयहनांउं ॥ सबतत्तनिकोसाररसारसुषपरमपियारोठांउं॥ सोवतसुपनैंनितिनिसबासुरयाहीकौंनितिगांउं ॥ नागरियाजाकैंमुषप्रगटैतामुपकीबलिजाउं ॥ ४ ॥

श्रीराधाकृष्ण प्रसन्न.



धनधनबृंदाबनकेकबिजन ॥ बृंदाबनकीलीलाबरनतवाहीमैंनितर हैलग्योमन ॥ रचतरुचिरअतिअच्छररचनांजथारूपदरसावैं ॥ देव बांनीतैंब्रजबांनीकरिश्रवनसुधासोप्यावैं ॥ हरिलीलासास्त्रभाजन केद्रवीहैंसबलोग ॥ इनहींतैंनवरसबिंजनकेकरतरासिकजनभोग ॥ इ नबिनसबहीकोरेरहतेगतरससूषीछाती ॥ इनबिनदंपतिरससंपतिकी नहिंप्रवीनताआती ॥ एतुलसीबनबसिकुंजनिमैंकुजकेलिबिस्तारैं ॥ नागरीदासभागइनकेकौंकहांलगिकोऊउचारैं ॥ १२ ॥ धनधन बृंदाबिपुनगवइया ॥ तांनतालबंधांनगांनमैंजुगलरूपदिषवइया ॥ मनलैंनीबांनीपैंनीकेसरअमोघचलवइया ॥ भजनकरनचितहरन चतुरअतिहियैंभावभरवइया॥ नागरीदासप्रकासिकउच्छवनैंनानिनी रढरवइया ॥ १३ ॥ धनधनबृंदाबनकेदुजबर ॥ एकसंषअरुषीर भरेपुनिरांषेयारजमैंधर ॥ सबैंपूजिबासीतीरथमैंपावनकरताघरघर॥ जमुनांतटजमुनांकेजाचिगनागरीदाससुघरनर ॥ १४ ॥ धनधनबृं दावनकेलिषिया ॥ जिनउत्तमलेषकव्रतधारीसुंदरअक्षरानिसिषिया॥ सहजसिमटिकैंरहैंनैंनमनचंचलताछुटिजाय ॥ हरिगुनकथालिष तहींतिनकौंसबदिनजातबिहाय ॥ सिद्धिकरनपरमारथस्वारथबसि तुलसीबनमांहीं ॥ नागरीदासभागइनकोकोउबरनसकतहैंनांहीं ॥ ॥ १५ ॥ धनधनबृंदाबनकेतिलकिया ॥ भक्तिचिह्नमुषछापरचित करपरमपुनीतासिलकिया ॥ बैठतघाटघाटपरसहजहींचितवतरूप चिलकिया ॥ नागरियाजजमांनश्रीजमुनांलैंहरिनामाकिलकिया ॥ ॥ १६ ॥ धनधनबृंदावनकेभाट ॥ राधाकृष्णजनमउच्छवमैंपढतबं सकेठाट ॥ ब्रजबासनिकेजसकौंबरनतनहिबरनतबैराट ॥ नागरी

अथ समस्त वृंदाबनबासी प्रसंस ॥

पद॥ धनधनबृंदाबिपुनगुसांईजेते ॥ जिनदछ्यासिछयाकरकैंनर हरिसनमुषकियेकेते ॥ परमपुनीतपूज्यकुलसबकैंकृपाभक्तिफलदे ते ॥ नागरभएरुहैंअबहौंनैंसबजगबंदिततेते ॥ ५ ॥ धनधनबृंदाब नकेसंत ॥ कहाबिरक्तकहाकुंजनिवासीबडेमहामहंत ॥ जिनसुदे सउपदेसनितैंबनबसिरहैंलोगअनंत ॥ जहांतहांऊसरतैंसरकीनैंना गरियारसवंत ॥ ६ ॥ धनधनबृंदाबिपुनबिरक्त ॥ संग्रहभजनकि योतजिसंग्रहछांडिबांतज्यौंजक्त ॥ कृष्णकथामकरंदकेमधुकरबृ त्तिआसक्त ॥ नागरफिरतछौंनतनकुंजनिभयेपुष्टहरिभक्त ॥ ७ ॥ धनधनबृंदावनकेकुंजनिवासीसाध ॥ हरिगुरुसनिसेवानिसंग्रहउच्छ वकरतअगाध ॥ सबनिदेतबिश्रांमधामबनमेटततनमनव्याध ॥ नागरीदासलेतएसबसुषहरिराधाआराध ॥ ८ ॥ धनधनबृंदाबनके महामहंत ॥ बृंदावनअधिकारभारभरभक्तिकृपाउलहंत ॥ बृंदाबासि प्रतापतेजअनमींनरनिकरनवावैं ॥ उपदेसकनृपसिंघमदंधनिबृं दाबनदरसावैं ॥ सर्बोपरबृंदावनदिग्गजमहंतसभासमुदाय ॥ ना गरीदासबासबृंदाबनरहेनिसांनबजाय ॥ ९ ॥ धनधनबृंदाबनके पंडित ॥ बिद्यावंतबोधदानतीरथमैंदेतपरमगुनमंडित ॥ परमारथ स्वारथकीसंपतसंचितहियेअषंडित ॥ नागरभयेकितेनरइनतैंदोऊ लोगअषंडित ॥ १० ॥ धनधनबृंदावनकेबक्ता ॥ उपदेसकहरिबि मलभक्तिकेपरमप्रेमअनुरक्ता ॥ तुलसीबनअमृतरसलीलाश्रवनद्वा रलैप्यावैं ॥ नागरीदासरसिकश्रोताजेअलिमकरंदलुभावैं ॥ ११ ॥

नागरीदासदासअतिरुचिहिंउंहिंप्रसादकौंपांवैं ॥ २२ ॥ धनधनवृं
दावित्रपुनकसेरा ॥ बडेपात्रपात्रनकौंदैंहींकरकरअमलउजेरा ॥ स
बकोधर्मचलतइनहींतैंझांझनिरवझनकेरा ॥ नागरीदाससौंजसेवा
कीबरनतसांझसवेरा ॥ २३ ॥ धनधनवृंदाविपुनपसारी ॥ तिन
कीसौंजमंदिरनिपहुंचैंसहवासनिसुषकारी ॥ केसरअगरओचंदनवं
दनहरितनलेपलगावैं ॥ मिरचलवंगमसालेनांनांभोगनिमांझमिला
वैं ॥ अंगरागअरुरसनापोषकसबरोगनकेहंता ॥ नागरीदासबसत
बडभागीजहांराधिकाकंता ॥ २४ ॥ धनधनवृंदावनकेबैद ॥ सा
धसंतकोतनदुषमेटतमेटपाटकीकैद ॥ स्वारथमैंपरमारथकरहींभेष
जकैंउपचार ॥ नागरीदासनहींसमइनकैंस्वर्गअश्वनीकार ॥ २५ ॥
धनधनवृंदाविपुनश्वांनचावारे ॥ हरिउच्छवमेलामंगलमैंलगतसब
निकौंप्यारे ॥ पःटीमीठीटूंगसलौनीथैलानिभरिभरिलेत ॥ नागरी
दाससाधसंतनकीरसनाकौंसुषदेत ॥ २६ ॥ धनधनवृंदाबनकेचतु
रतमोरी ॥ तिनकीबीरीभोगलगततहांगउरस्यांमकीजोरी ॥ सबकैं
रंगरचतइनसौंजहांउच्छवमंगलगान ॥ तहांप्रसादीपावतहैंबडभा
गीनागरपान ॥ २७ ॥ धनधनवृंदाबनकेमालीमालनि ॥ उच्छवभ
वनद्वारसोभितएकरफूलनिकीडालनि ॥ इनहींतैंरचनाफूलनिकी
फूलनहरषउछालनि ॥ मंगलरूपाबृंदाबासीनागरभागविसालनि ॥
॥ २८ ॥ धनधनवृंदाबनकेबारी ॥ इनकौंकलपवृच्छपत्रनकीदेतजी
वकाभारी ॥ रुचिररचतपनवारेदौनासाधनकौंसुषकारी ॥ नागरी
दाससुफलकरकीयेवडेभागव्रतधारी ॥ २९ ॥ धनधनवृंदाबनके
रांज ॥ करनीबलकुंजनिकीरचनांकरतपरमसुभकाज ॥ विसकर

दासबडेघरकेएकौंनकरसकैंनाट ॥ १७ ॥ धनधनवृंदाबनमहाडुकरि, या ॥ निर्विकारनिर्दूसततनहैंअतिकुसकूबसुकरिया ॥ पूसमासमैं जमुनांन्हावैंडरतनहींमरवेसौं ॥ कालहुकोबसचलतनतिनपैंपरमभ क्तिकरवेसौं ॥ लैलठियाकरकटिनवायकैंबडेभोरहीधावैं ॥ च्यारको सपरकर्मादैंकेंनितिनागरघरआवैं ॥ १८ ॥ धनधनजेवृंदाबनबाई॥ तिनकौंश्रीराधाकरुणाकरअपनैंबागबसाई ॥ दंपतिगावैंजमुनांह्ना वैंतनलोईलपटाई ॥ कथाकीरतनदरसनकैंहितरहनितनागरमंडरा ई ॥ १९ ॥ धनधनवृंदाबनकेबजाज ॥ मोटेमिहींपटनघटढांपत राषतसबकीलाज ॥ बिग्रहरूपजुगलकैंतनमैंसृदुतनजेबिसाज ॥ नागरीदासबासकुंजनिकरकरतआपनौंकाज ॥ २० ॥ धनधनवृं दाबनकेमोदी ॥ जिनआसाजात्रीआवैंलेतजिनसभरिगोदी ॥ इन तैंसहबासीसुषपावैंसबकौंअनधनदेत ॥ छुधितनरहनदेतहैंकाहूदया, मयाहियहेत ॥ इनहोंतैंहैंचहलपहलह्यांइनहींतैंआनंद ॥ नागरीदा सबसायेइनकौंश्रीवृंदाबनचंद ॥ २१ ॥ धनधनवृंदाबनकेमधुमयत ईचढनियां ॥ बिबिधिभांतिकेमधुरपाकवेरचतहैंभोगअमनियां ॥ गूंझागूंदीमोदिकमठरीषाजाबुरमापासे ॥ रसदुरकीसुरकीरुजलेबी पूवापुरीपतासे ॥ सक्करपारेपेरेमिश्रीमावामोहनभोग ॥ षांड़पिलौं नांषांडसंठेलीबालबिनौदीजोग ॥ फैंनीमधुरतृकौंनसुहारीसेतगुला बीघेवर ॥ षिलौषिजूरपूरिघृतपावैंरेवंतीकोदेवर ॥ मौंजीपाकचि रौंजीपाकपेठापाकनये ॥ तिनगनीतेजइलाचीदांनैंपरसुगंधितठये ॥ फुलीफुलोरीसेवसलौंनीगरमागरमकचोरी ॥ वरनौंकहानिकाईतिन केदरसनमांझठगोरी ॥ इत्यादिकसुंदरसामग्रीसबमंदरनिपठावैं ॥

गोरजगंगान्हातन्हातपुनजमुनांजातहैंपार ॥ विपुनबासदइटहलगउ
नकीनागरपरमउदार ॥ ३८ ॥ धनधनवृंदावनकेकोली ॥ सबही
मैंअतिआनंदकरताइनमृदंगचित्रतजोली ॥ लेतबजायनौछावरिहरि
कीअरुप्रसादभरिझोली ॥ नागरियाइहैंमिलकदईकोरिजनमोत्सव
अरुहोली ॥ ३९ ॥ धनधनवृंदावनकेनाई ॥ संतजननिकेभद्रहेतए
बसतयहांसुषदाई ॥ सैंनबंसपावनकियोबनबसिबरनौंकहानिकाई॥
नागरीदासदासदासनिकेभलीटहलइनपाई॥४०॥धनधनवृंदावनके
बढई ॥ हरिसिंघासनसंतपावरीतिनकौंनितिप्रतिगढई ॥ रचतकपाट
कुंजकीरिच्छाबडेद्रुमनिकेनाई ॥ नागरीदासकहांलौंकहियैंइनकी
भागबडाई ॥ ४१ ॥ धनधनवृंदावनकेकुम्हार ॥ वृंदावनरजजीव
नजिन्हकेवृंदावनरजसार ॥ वृंदावनरजतनमंडितरहैंमनरजलगत
सुप्यार ॥ वृंदावनरजभाजनलैंसुषनागरलहतअपार ॥ ४२ ॥ धन
धनवृंदावनकेचुहरा ॥ तिनकीसमताआदिसापमैंकहतहैंलोकसमूह
रा ॥ बेचतसूपधूरधूसरतनगालियांझारतभले ॥ नागरीदासबसतया
भूमैंसंतसीतसौंपले ॥ ४३ ॥ धनधनवृंदावनजेबसैं ॥ न्यारेन्यारे
कहाबरनौंसबस्वर्गमुक्तकौंहसैं ॥ कहाआयककहाजायकहांकेअति
वडभागीलसैं ॥ नागरएदेषतऔरनकैंपापसकलतननसैं ॥ ४४ ॥
धनधनवृंदावनजेआवैं ॥ सुंदरकरतप्रीतसंतनसौंनितिप्रतिनौंताजि
मावैं ॥ मनवचक्रमसौंसेवतसाधनचरननिलगिलपटावैं ॥ नागरीदा
सभागतिनकोकोऊकहांलगिवरनसुनावैं ॥ ४५ ॥ धनधनवृंदावन
जिनकोमन ॥ वृंदावनहिततरफतब्याकुलपरबसदूरघरघोतन ॥ वृं
दावनकोध्यानहियेमैंवृंदावनकोगावैं ॥ वृंदावनबासिनसौंनागरप्रे
मपुलकिलपटावैं ॥ ४६ ॥

मांहरिमंदिरकेबांधतश्रीजमुनांपाज ॥ नागरीदासलियैंगजवाजीनि
तरहैंजुरेसमाज ॥ ३० ॥ धनधनवृंदावनकेसुनार ॥ जुगलरूपसे
वाकेंभूषनदेतहैंसदासंवार ॥ काजइहांकोबडभागनतैंदयोतिहैंकर
तार ॥ नागरीदासबसततहांतिनकीमहिमाकोनहिपार ॥ ३१ ॥
धनधनवृंदावनकेतेली ॥ तिनकोनेहप्रकासतघरघरदिनगतजोति
नवेली ॥ हरिमंदिरनितीरजमुनांकेंदीपगपुन्यबढावें ॥ नागरीदास
महातमइनकोकोऊकहांलगिगांवैं ॥ ३२ ॥ धनधनवृंदावनकेगंधी
कुंजगलिनकौंकरतसुवासतसंगअलिफिरतमदंधी ॥ सेवास्यामास्या
मसेजसुषसदासुगंधसुबासे ॥ नागरइहैंबसायेदंपतिवृंदाबिपुननिवा
से ॥ ३३ ॥ धनधनवृंदावनकेदरजी ॥ सिसरहेमरितुकारनअपनें
बिपनबसायेहरिजी ॥ होततनसुषीतीरथबासीइनकेहाथनिकरजी ॥
नागरनिपुनफारकैंजोरत ॥ पटरचनाकेघरजी ॥ ३४ ॥ धनधनवृं
दावनकेजोटेरटेरफलदेहीं ॥ अंबअनारजंबूनींबूषिरनीरसअमृतमें
हीं ॥ आडूसफतालूरुफालसेकेलापुनिअंजीर ॥ कुंजगलिनमेंटेरत
डोलतसुनिसिसुहोतअधीर ॥ स्यामास्यामप्रेरमनजनकोफलनिपिया
रेपावैं ॥ नागरीदासभागइनकोकोऊसुकबिकहांलगिगावैं ॥ ३५ ॥
धनधनवृंदावनकेपटुवा ॥ रसिकजननिकेपोवतमालाकंठीबटुवा ॥
पाटस्यामअरुपीतकनकरंगरचनांरुचिरसंवारे ॥ ब्रजभूषनकेभूषन
साजतनागरभागअपारे ॥ ३६ ॥ धनधनवृंदावनकेरंगिया ॥ मनमो
हनकोफैंरंगहींउतकोसारीआंगिया ॥ बरषाब्याहगृहस्थतरुनजनपट
घटरंगेसुरंग ॥ यावनकोरंगसबोपरलिचनागरबिबिधिप्रसंग ॥ ३७ ॥
धनधनवृंदावनकेग्वार ॥ गऊचरावतजहांचराईमोहननंदकुंवार ॥

धनधनबृंदाबनकेगदहा ॥ चूंनामाटीईंटकेढोहकसाधनकेसुषसध
हा॥ हरिमंदिरअरुकुंजघाटसबइनाहिंपीठनिबनें॥ नागरएपरमार
थीपूरेयादुर्ल्लभरजसनें॥ ५३॥ धनधनबृंदावनकेकाग॥ मापनचो
रकेकरतैंरोटीलैंभाजैंबडभाग॥ कुंजनिमांझबसेरोकरहींकुंजनिसौं
अनुराग॥ नागरषेसुभबोलतहैंनितिसंतसौंतसौंलाग॥५४॥ धन
धनबृंदावनकेपच्छी॥ कोयलकीरकपोतकोकिलामोरचकोरानिल
च्छी॥ बोलतकलबांनीकुंजनिमैंदंपतिकेमनभाए॥ नागरानित्तबि
हारजुगलकैंकबिरसिकनिएगाए॥ ५५॥ धनधनबृंदाबनकेजंत॥
छोटेमोटेकहांलगिवरनौंतिनकीजातअनंत॥ उपजतषपतइहांएई
सबअधिकारीहांनेंहेंअंत॥ नागरीदाससकलबडभागीजेइहरेणबसं
त॥ ५६॥ कितेदिनबिनबृंदाबनषोये॥ यौंहींवृथागएतेअबलौंरा
जसरंगसमोये॥ छाडिपुलिनिफूलनिकीसज्यासूलसरनिपरसोये॥
भीजेरसिकअनन्यनदरसेंबिमुषनिकेमुषजोये॥हरिबिहारकीठौररहे
नाहिंअतिअभाग्यबलवोये॥ कलहसरायबसायभिठारीमायारांड
बिगोये॥इकरसह्यांकेसुपतजिकैंव्हांकभूहसेकभूरोये॥ कियोनअप
नौंकाजपरायेभारसीसपरढोये॥ पायोनहींआनंदलसमैंसबैंदेसटक
टोये॥ नागरीदासबसेकुंजनिमैंजबसबबिधिसुपभोये॥ ५७॥
कृष्णकृपागुनजातनगायो॥ मनहुंनपरसकरिसकैंसोसुपइनहींदग
निदिषायो॥ गृहब्यौहारभुरटकोभारोसिरपरसौंउतरायो॥ नाग
रियाकौंश्रीबृंदावनभक्तितष्तबैठायो॥ ५८॥ हमारीबांहगहीबृंदा
बन॥ राष्योअपनीसीतलछांहियांजगदुषघामतच्योतन॥ मोमैंक
छूकृपाबलनांहींहौंजानूंअपनेंमन॥ नागरीदासनांदहितसौंकारिक

अथ इनबृंदाबनबासीनिके ब्यौहारसहायक बर्ननं॥

धनधनबृंदाबनब्यौहारकेरच्छक ॥ राजाहाकिमधर्मसहायकब नबासिनिकेपच्छक॥ बृंदाबनकीनांवछापसिरपूरबपुन्यप्रतच्छक ॥ नागरीदाससबनिसौंसूधैंदुष्टनिकौंनाहरसेमच्छक ॥ ४७ ॥ धनध नबृंदाबनकेभूमियांलोग॥जैसैंवारबनीकांटनकीरचेस्यामत्यौंरछ्या जोग॥ ह्यांहींउपजषपतहैंह्यांहींअनत जायनहिंकरैंबियोग ॥ नागरी दाससुधीयारजमैंतिनकैंदूधदहीकेभोग ॥ ४८ ॥

अथ पसुपच्छी जंतु बर्ननं ॥

धनधनबृंदाबनकीगइयां॥ बृंदाबनमैंचरतहरेतृणबृंदाबनकीछइ यां ॥ बृंदावनगोपालफिरेसंगजिनकीजगतप्रसंस ॥एसुरभीबृंदाबन कीसोहैंउनहींकोअंस ॥ बृंदावनमैंबसतनिरंतरबृंदाबनजनछीवैं ॥ नागरबडभागीसोइनकोदूधप्रसादीपीवैं॥४९॥ धनधनबृंदाबनकेबां दर ॥ अपनैंभुजबलभोजनकरहींमांगतनहींपायनपर ॥ गोपिनके घरबालकेलमैंलियैंफिरेगोपाल ॥ माषनचोरषवायोमांषनअरुपक्क बानरसाल ॥ तिनकौंबंसबसतएकुंजनकुंजकलपद्रुमध्यावैं ॥ नाग रियानितअनायासहीमनबंछितफलपावैं ॥ ५० ॥ धनधनबृंदाबन केस्वान ॥ संतसीतकीकरैंजीवकाजमुनांजलकोपान ॥ कुंजद्वारचौ कोमैंचौकसइहिंरजकरतसनान ॥ नागरियाजेबिमुषमनुषहैंतेइनके नसमान ॥ ५१ ॥ धनधनबृंदाविपुनबिलइया ॥ महाप्रसादछलसौं छिपिलेहींघरघरकीजुहिलइया ॥ ह्यांउपजतअरुलीनहोतह्यांबाहि रनाहिंनिकलइया॥ नागरियाजेजंतहहांकेसबतनरेणमिलइया ॥५२॥

तननितिप्रतिगतिमतिरहतउमहियां ॥ नित्तवासतहांनागरीदासहिं स्यामास्यामदयोगहिबांहियां॥६५॥वृंदाबनसुबसतजमुनातीर॥ सदा रूपकीपैठलगीरहैंकबहुनहोतउछीर ॥ प्रेमनदीसीफिरतरगमगीग लिनिगलिनिबिचभीर ॥ नागरियानितिमिलेदेषियतसांवलगउरस रीर॥६६॥हमारीअबसबबनीभलीहैं ॥ कुंजमहलकीटहलदईमोहिज हांनितिरंगरलीहैं॥साहिबस्यामास्यामउसीलीललितालतिअलीहैं। नागरियापैंकृपाकरीअतिश्रीवृषभानललीहैं ॥ ६७ ॥ वृंदाबिपुनर सिकरजधानी॥राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकाबिहारनिरानी॥ ललितादिकाढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमदपानी ॥ रसिकटहल नीवृंदादेवीरचनारुचिरानिकुंजरवानी ॥ जमुनारसिकरसिकद्रुमबे लीरसिकभूमिसुपदानी ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियारसिकहीरसि कहीरसिकसबैंगुनगानी ॥ ६८ ॥ रायगिरधरननवकुजरजधानिबि चसंगश्रीराधिकारानिराजैं ॥ मोरचहुंऔरहयहींसहलचलचमृगहर जलघोषनिसानबाजैं ॥ कोकिलाकीरकलहंसबंदीबहुतवडेनितिके लिकेबिरंदगाजैं ॥ प्रेमपरधांनमतिमदनमंत्रीमहादेतरसमंत्रसत्रसु षनिसाजैं ॥ मत्तमधुमाधौंकुतवालकेदूतअलिफिरतकुसमसौरंभके काजैं ॥ सुफलफलदेततरुदेवबडभांतिअरुनगरकुलदेवीवृंदाबि राजैं ॥ रूपउत्सवसदासहजमंगलदृगनिउभैंआसक्तलषिलाजला जैं ॥ दासनागरनिकटललितललितादितहांराजआनंदछाकिचढि यछाजैं ॥ ६९ ॥ कुंजछविपुंजबहोवितनसेवतसदाजुगलआसक्त रसएकआनंद ॥ लिबढिरहिद्रुमलतामत्तअलिकुसमप्रतिपलहुनाहिं घामरविबिरहदुषदंद ॥ मधुरकलकंठललितादिपूरितमहारंगमय

पाकरायौंधनधन ॥ ५९ ॥ देहधरैंकोअन्नफलपायो ॥ वीतेबहुतव
बरसअसमंजसमायानाचनचायो ॥ थोहरवनतैंमोहिकाढिथिरवृं
दाविपुनबसायो ॥ कौंनकृपाअनियासभईहौंनिजमनहेरिहिरायो ॥
निसदिनपहरघरीछिनछिननितिआनंदरहैंसरसायो ॥ नागरीदास
दासन्हैकैंजोइहांनआयोसोपछतायो ॥ ६० ॥ अवतोयहीवातमन
मानी ॥ छाडौंनहींस्यामस्यामाकीवृंदावनरजधानी ॥ भ्रम्योवहुत
लघुधामविलोकतछिनभंगुरदुषदानी ॥ सर्वोपरआनंदअपंडितसो
जियठौरसुहानी ॥ हरिभक्तनिमैंरक्तति‌न्हैहौंनिंदामुषअभिमानी ॥
नागरियानागरकरगहिहैंरहिहैंजक्तकहानी ॥ ६१ ॥ हमारीसवही
वातसुधारी ॥ कृपाकरीश्रीकुंजबिहारनिअरुश्रीकुंजविहारी ॥ रा
ष्योअपनैंवृंदावनमैंजिहिंठांरूपउजारी ॥ नित्तकेलिआनंदअपंडि
तरसिकसंगसुषकारी ॥ कलहकलेसनव्यापैइहिंठांठौराविश्वतैंन्या
री ॥ नागरीदासइहिंजनमजितायोवलिहारीवलिहारी ॥ ६२ ॥ हम
तोवृंदावनरसअटके ॥ जवलगिइहिंरसअटकेनाहींतवलगिवहोवि
धिभटके ॥ भयेमगनसुषसिंधुमांझह्यांसबतजिकैंजगपटके ॥ अव
बिलासरसरासाहिनिरषतनागरिनागरनटके ॥ ६३ ॥ भयेहमवृंदा
वनरसभोगी ॥ ज्यारसभोगहिंकरनसकततजेजगतबिपतकेरोगी ॥
रासबिलासरुकथाकीरतनहरिउच्छवआनंद ॥ निसदिनमंगलमई
समयतहांनटनागरव्रजचंद ॥ ६४ ॥ नितिआनंदवृंदावनमांहियां ॥
नित्तकेलिकउतकरसलीलानिरषिनिरषिदृगहारतनाहिंयां ॥ नित्तह
रेद्रुमफूलफलनिजुतजमुनातटअतिसीतलछहियां ॥ नितिनउतनस
वलोगसनेहीप्रीतरीतयहऔरनकहियां ॥ नित्तिरासनितिकथाकीर

छिबरनैं ॥ रंगभरीभांमिनसबसंगसुघरसुघसमाज ॥ कमलासीकरन लियैंअपनौंअपनौंसाज ॥ काहूपैंअतरबरगुलाबजुतसुगंधसीसी ॥ काहूपैंबिमलदर्पनकलकांतचंद्रकीसी ॥ काहूपैंसुठिसुगंधसहितपां नदांनबीरा ॥ काहूपैंहारधरेउतारझलमलातहीरा ॥ काहूपैं चंवरचारुचपलभँवरनिनिरवारैं ॥ काहूपैंकुसमकलितबिजनां मंदमंदढारैं ॥ काहूपैंमालमरगजीहैंसुरतसेजटूटी ॥ घा वतिसुधिसमैंबासमदनपुरियलूटी ॥ काहूपैंबनकबनीथठनियक नकपीकदांनी ॥ काहुपैंधूपदांनबरतबहोसुगंधसांनी ॥ काहूपैंसूर जमुषियसुच्छमोरपिच्छवारी॥मुकटभावउदैंहेतनहिंनकरतन्यारी॥ काहूपैंसुघरसारमूवामधुरबचनबोलैं ॥ काहूपैंअंसबीनसोनबीनबर अमोलैं ॥ आवतधुंनिजंत्रमैंनमंत्रसेबजावैं ॥ रैंनिकेबिहारगायमादि कसौंप्यावैं॥रंगरागनवसुहागआनंदरसबोरी॥ नागरियाहृदैंबसोभां नकीकिसोरी ॥३॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैनेए दोहा ॥ निसिबीतीसबरंगमैं, उठेभोरसुकंवार॥ आयसँवारतसहचरी, भूषन बसनसिंगार ॥ १ ॥ लगेलगेट्टगआवहीं, बैठेपगेकिसोर ॥ नीलपी तपटपलटगे, जगेरगमगेभोर॥२॥अलसौंहींअंषियांनकी, चितवनि बलगवनैंन ॥ नागरियादोउभोरलषि, भुरयेमेरेनैंन ॥ ३ ॥ पद

रागबिभास॥ तालचर्चरी ॥आलसरसरंजितरमनीयरूपरासिमिथुन लटपटातप्रातजगेविथुरितबरबैंनीं ॥ चंचरीकचहूंओरबिचरतिसुप गतिमदंधमहकतसुगंधअंगछलकतरंगरैंनी ॥ प्रबलपव[illegible]वनकेलि बिलुलितपियकनकबेलिबिव्हलदृगसिथलसुलसतस[illegible]नीं॥ बिस्मैं व्हैरहतकुंवरानिराषिबदनछबिअभूतपौंछतपलपीक[illegible]ओतमसृगनैं

रागसारंगधुनिमंद ॥ दासिनागरितहांस्यामस्यामा।निकटठाढोइक टकज्ञुरहीनिरषिमुषचंद ॥७० ॥ दोहा ॥ अष्टादससतदसज्ञुनव, संवतमाघसुमास॥बनजनप्रसंसकलग्रंथयह, कियोनागरीदास॥७१॥ इतिश्रीबनजनप्रसंसपदप्रबंधग्रंथसंपूर्ण ॥

अथ पदमुक्तावली लिष्यते॥

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैनेंए दोहा ॥ सपीभोरलषिछकिरही, स्यांमास्यांमसुजांन ॥ मुंदीपलकअलकैंपुली, अधरथाकितमुसक्यांन ॥ १ ॥ पोहापियरीसियरी समैं, लषिदंपतिसुकंवार, ॥ रंगभरीलपटांनितन, अरुझेहारसिंगार ॥ २ ॥ लताभवनललितादिसषि, बजवतबीनविधांन ॥ मुंदेनैंनमुसकांवहीं, सुंनिसुंनितांनसुजांन ॥ ३ ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेदृगनकीहेर ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजमुरहरीवेर॥४॥ पदरागभैरूं ॥ इकतालचर्चरी ॥ देषिसषीदंपतिपौढेहैंरंगभीनैं ॥ पीयप्रियारीप्यारीजीवनिभुजनबीचलीनैं ॥ बोलतदोहोचिरियां चतुरभोरभयोजांनैं ॥ त्योंत्योंचंदवदनदेषिफिरिफिरिरतितांनैं ॥ बाजतकटिकिंकनीकलनूंपुरधुनिआवैं॥ पाईहैंपियरंकसुनिधिछोडी क्यौंभावैं॥नागरीदासउरझेतनसुरतिसुरझिछूटे ॥ चलेहैंउठिसनांन कुंजमदनसैंनलूटे ॥ २ ॥ इकताल ॥ भोरहीनिकुंजतैंउठिचलीहैं कुंवरिराधा॥अरुननैंनासिथलबसनरूपछबिअगाधा ॥ बिथरेबारहार अरुझिआलसबसगोरी॥मनहुमधुपकनकलतानिधरकझकझोरी ॥ सारदासचीसीलुठतिसहचरीनचरनैं ॥ तिनकीचारुचूडामणिकैं

अनुरागरंगभरेजागतरैंनबिहाय ॥ बारबारसपनैंहूसूचतसूरतरंगके
भाय ॥ यहछबिनिरषिसषीजनप्रमुदितनागरीदासबलिजाय ॥ १॥
तिताल ॥ आंवनिमैंउरझ्योमनमेरोसोधौंबहुरिनआयो ॥ रसिक
कुंवरकीसोभासंपतिलोभीदेषिलुभायो ॥ सीसलटपटीपागियांअल
कैंचिहुंटिकपोलनिलागी ॥ अलसौंहींअलबेलीअंषियांझपकतपल
निसजागी ॥ छुटेबंधउरमालमरगजीभंवरभीरचहुंओरैं ॥ मनोंग
जराजमत्तगतिआवतमेंनमवासहितोरैं ॥ गहवरकुंजकुटीतैंनिकसे
सुरतसमरछिततनमें ॥ नागरियालियैंरैंनचैनकीवहैंभावनांमनमें ४
तिताल ॥ अरिइनअंषियानिकैंसैंसमझाऊं ॥ एउतजायमिलतबर
जोरिहौंगाहिगहिलैंआऊं ॥ तुमजुकहतयहनिडरभईहौंबिनदेषैंअ
कुलांऊं ॥ नागरीस्यामगईहूंदेषनिवादिनकौंपछितांऊं ॥ ५ ॥ ति
ताल ॥ पलकपरनिहींगनतकलपसी ॥ भोरहिबिछुरनिभईअलप
सी ॥ आयमिलेदोऊदेंगरबांहियां ॥ जमुनांकूलकदमकीछहियां ॥
अस्तविस्तसिंगारलसौंहैं ॥ निसजागेनैंनांअलसौंहैं ॥ ललितादिक
सहचरिजुरिआई ॥ गांनरंगबरपावरपाई ॥ बिहरतमादिकप्रेमपि
यें ॥ संगनागरिनागरियाहिलियें ॥ ६ ॥ रागरामकली ॥ तिता
ल ॥ अबदेषोदेषोरीदोऊप्रातरंगीले ॥ दृगउनमीलेबसनरसनढी
लेढीले ॥ गउरस्यांमरसीलेसोहतलटपटीले ॥ छुटिरहेचिकुरछबी
ले ॥ लताभवनतैंनिकसतनहींसकुजीले ॥ तनमनउरझीले नाग
रिसषीसुसीले ॥ सौंहैंठाढीआरसीले ॥ लषिमुषलजतलजीले
॥७॥ इकताल ॥ रीदोउउठेभोरलषिलताभवनमेंआरसअरुझेअंग॥
रैंनरसमसेआननराजतपांननिकेफीकेरंग ॥ स्यांमांसोहैंनैंनलजोहैं

नी ॥ घुरतढुरतजुरतमुरतनैंनमींनासिंधुसुरतिथकिछकिचाकिचलत चारुचितवानिमनलैंनी ॥ नागरियानेहउरझिबिवससकतनहिंनसु रझिउठिउठिचलिमिलितमगनमुरिमुरिढुरिचैंनी ॥ ३ ॥ तालचर चरी ॥ चलेहैंभोरनवकिसोरसंगलगेललचिताहिरसबसअधपुलिय पलकचितवतमुषमोरिमोरि ॥ मंदमंदचलतचारुचरननमंजीरसब्द डगनिडगनिकउतगलपिमदनलुटतकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभू मिझूमिझूमिललितादिकलतनिओटदेषतढुरिडारतत्रिनतोरितोरि ॥ नागरियासंगमसुषस्वेदषेदचिंहुटिचीरसुषवतपियछबीलीपीठबिज नांपौंनढोरिढोरि ॥४॥ तालचर्चरी ॥ पियकेसुषसंगतैंचलीभोरकुं जआवतप्रियामरगजेउरहारहियेबारपीठछूटे ॥ सिथलरसनबसन हसनमंदमंदअधरनिमनौंचंचलदृगरंजनपियषंजनजुगजूटे ॥ अस्त बिस्तअभरनबरबाजूबंदढुरनतैंसेलगिलगिरहेकरनिनिकरबलयषं डफूटे ॥ नागरीचहूंओरभीरभँवरानिटारतअधीरकीरओचकोरमोर निरषिपरतटूटे ॥५॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैनेएदोहा॥ बहियांसीसअदाहसौं, धरिपौढेमिलिमित्त ॥ सोवनकीसोवनमहीं, जगैलगोंहोंचित्त ॥ १ ॥ भईभुरहरीकरनदैं, कुंजछांहसुषसैंन ॥ के लिपगेसबनिसजगे, अवहिलगेहैंनैंन ॥ २ ॥ कैसैंनींदनिवारिये, अरुअंगनिउरझांनि॥ भोरभयोदिनकरकिरन, आईरंध्रलतानि॥३॥ छुटतनआरसरसपगे, जांनतभयोजुप्रात ॥ ओढैंपियरोपटदोऊ, फेरिफेरिलपटाति ॥ ४ ॥ चहतनिवारयोसैंनसुष, लोकलाजडर चित्त ॥ नागरियादोउक्यौंऊठैं, तनमनअरुझेमित्त ॥ ५ ॥ पदरा गरामकली ॥ इकताल ॥ अबहींनैंकसोयेहैंअलसाय ॥ कांमकोले

ल्यावतहौंगौहिजातहैंनासिनासि ॥ नागरियाईसौंकोहिहाहाजिन चितवोजूबासिबसि ॥ ५ ॥ इकताल ॥ रेमोहनांमोततैंतोमन हरिलीनौं ॥ हौंनांजांनौंलैंनाप्यारेतैंटौनांकहाकीनौंदुरिहैंनां हिप्रीतनागरअबइनसोचनितनभयोछीनौं ॥ करिहैंचारचवाव अथांइनिइहगोकुलमतिहीनौं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ जीनैंणांनीं दघुलैंछैं ॥ आयरहीछैंथोडीरात ॥ कांइकेडैंलग्याछोनंदलाल ॥ अतिअलसायोम्हांरोगात ॥ घरघरचारचवावचलैंलोनिपटबुरीछैंया वात ॥ रसिकबिहारीथेरसलुब्धाव्हैंआसीपरभात ॥७॥ तिताल॥ हो कांन्हजीरातराउणींदारंगराता ॥ निसरैंध्यांनएमुंदीपलकआवैं ललकमदनमदमाता ॥ अलकमांहिअणवटप्यारीरोल्यायाथेउ लझाता ॥ रसिकबिहारीलागोछोप्यारामुसक्याताअलसाता ॥ ॥ ८ ॥ तिताल ॥ तिहारीहसिचितवनिघरघालनि ॥ तैंसियमेरीए जुनिगोडीअंषियांरूपजंजालनि ॥ दिननाहिंचैंनरैंननींदनआवैं हियेमैंनचलचालनिनागरनवलरूपअभिमांनीक्यौंकरीहमैंइनहाल नि ॥ ९ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेंनेंएदोहा ॥ आव तभावतलालछबि, छैलअदाहैंअंग ॥ कंवलफिरावतफिरतमन, य हकछुहुंनराफिरंग ॥१॥ अरीछैलइहिगैलव्हैं, अबहींनिकस्योआय॥ नैंननिनैंनमिलायकैं, लैगयोमनबहराय ॥ २ ॥ भौंहतननिमैंतनत मन, मोहनरूपरसाल ॥ होतचालमैंचालचित, मालहालमैंहाल ॥ ॥ ३ ॥ छुटेवंधअलकैंछुटी, जुटीभौंहमुसकाय ॥ आयछकौंहैंनैंन मन, डारयोछैलछकाय ॥ ४ ॥ पीतफूलदियैंअलकपर, लियैंहाथ चकडोर ॥ गयोछैलकैंहाथमन, हाथरह्योनाहिंमोर ॥ ५ ॥ नागरि

भौंहैंचापअनंग ॥ चिबुकउठायनिरापिरहेनागरभईदीठगतिपंग ८॥ तिताल ॥ प्रफुलितकमलतरुनजातीरे ॥ विचरतअलिमकरंदअधीरे ॥ कूजतहंसबंसकलकीरे ॥ कुसमितद्रुमतटिधीरसमीरे ॥ क्षणक्षणक्षीणतिमरगंभीरे ॥ सूचतप्रातप्रभानभपीरे ॥ हरिराधास्थितकुंजकुटीरे ॥ गतनिद्रारसवलितसरीरे ॥ रतिरणछितछबिमंडितवीरे ॥ तंद्रितलोचनबिगलितचीरे ॥ पश्यतअलछततजिमंजीरे ॥ नागरिसपेपुलकटगनीरे ॥ १२॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमेंदूने एदोहा ॥ अलसौंहैंनिसिकेजगे, सरबरसौंहैंमैंन ॥ इकटकसौंहैंअधषुले ॥ सहजहसौंहैंजैंन ॥ १ ॥ आननसौंआननछियैं ॥ पांननरचेकपोल ॥ लषिरीझेछबिआरसीबिहसैंलोयनलोल ॥ २ ॥ आरससौंअरुझीपलक ॥ अलकजुबेसारिमांहि ॥ अरुझ्योबैंनांदेषिकैंपियमनसुरझ्योनांहि ॥ ३ ॥ पग्पैंछतपटपीतसौं ॥ प्रियाकपोलनिपीक ॥ नागरिपौंछतलालके, अधरनिअंजनलीक ॥ ४ ॥ पदरागललित ॥ तिताल ॥ नींदभरीअंषियाजुबडीबडी ॥ लाललालडोरेकजरौंहींकोरैंपियहियमांझअरीयेगडीगडी ॥ सूचतरैंनिचैंनकीबातैंरंगपीकछबिछायमंडीमंडी ॥ नागरिदासमदनमोहनकैंवहोभांतिनिनिसलाडलडीलडी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ राधेतेरेनैंनमहामतवारे ॥ मोहनरूपबारुनीपीकैंमत्तभयेछबिभारे ॥ घूमतझुकतधुकतउघटतसेरुकिरुकिचलतअवारे ॥ देषिछकनिछाकिगयेछबीलेपियनागरनटवारे ॥ ४ ॥ रागललितकाप्याल ॥ तिताल ॥ अबतोबांधिडारचोमेरोमनहसिहसिहसिहसि ॥ मोहनइतअविलोकितरसवसकहाकरौंभौंहैंकासिकासि ॥ लोकलाजअरुधीरजअंतर

चरगहिहसिचाहिरहैंमुषहूंजियमैंसकुचांउरी ॥ नागरीदासउतैं उरझेरोइतैंचवइयागांउरी ॥ २ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमें दैंनें ए ॥ दोहा ॥ हरिमूरतिचितमैंचुभी, नैंनविपुलकतनीर ॥ सीसगगरियागिरतसी, जकिरहीजमुनांतीर॥२॥घैरुहोतजांन्यौंनउर, उडतनजान्यौंचीर ॥ गिरतनजांनीगगरिया, रहतनछांनीपीर ॥ ३ ॥ हरीहरीकहिलेहुरी, बिसरीदधिकोनांव ॥ कृष्णमईग्वारनिभई, कौतुगलाग्योगांव ॥ ४ ॥ महारूपमदिराछकी, चलतडगमगतपाय॥ जोदेषतग्वारनिछकी, तिन्हैंछकनिचढिजाय ॥ ५ ॥ गिरैंनग्वारनिधुकिउठैं, घायलमनरिझवार ॥ नागरियारनसुभटज्यौं, रहतसह्मारिसह्मारि ॥ ६ ॥ पद रागदेवगंधार ॥चौताल ॥ मोहनमुषलषिमोहिरह्योनपरतघरीहूनघरमांई ॥ बीथनिमैंफेरीकरैंहरैंहरैं पैंडभरैंसीसपैंदहेरीधरैंप्रेमरसछकनिछकाई ॥ संगभौंरभीरचलैंनैंननिमैंनीरबीरपीराहियैंनेहविषलहरिदबाई ॥ नागरियाकृष्णरूपभईभूलीदेहदधिनांमभूलीकहैंटेरलेहुरीकन्हाई ॥ २ ॥ तिताल ॥ हरिसौंअटकीग्वारनिगोरीलगिरहीरूपसुरतचितडोरी ॥ मदमोकलगजज्यौंगोकुलमैंकुलसंकुलगहितोरी ॥ विनदीधहीदधिबेचतबीथनिकछुसुधिरहीनथोरी ॥ विरहबिवसजांनीनगईकहूंसिरतैंगिरतकमोरी ॥ नागरियाकौतिकसवलागीबालकबैसाकिसोरी ॥ षुलिगयेबारसुधिनअंचरकोफिरतप्रेमझकझोरी ॥ ३ ॥ या पदके अनुक्रमकीअलापचारीमें दैंने ए दोहा ॥ अंसुवनिजलतैंबुझतनहिं, हियेस्यांमघनगेह ॥ यहकौनैंकीवेदवा, लगीदवानलदेह ॥ १ ॥ तुमविनतनग्रीषमतपत, कलनपरतादिनरैंन ॥ उर

यानंदलालललषि, रहीहियेंहहराय ॥ छलीछैलईहिगैलव्हैं, अलीलि
येंमनजाय ॥ ६ ॥ पदरागबिलावल ॥ इकताल ॥ हूंहरिहेरानिमां
झठगी ॥ सौंहींमदअलसौंहीं अंषियांहियमेंआंनिषगी ॥ नांहींकछू
ग्रहकाजवनतजियदौरीरहतलगी ॥ नागरियामोहनमिलिवेकीचिं
ताज्वालजगी ॥ ७ ॥ इकताल ॥ अरीवहिसुंदरछैलछली ॥ कब
हूठाढोपनघटकबहूंघटघटबीचअली ॥ काहूकीडोरीगहितोरतचोर
तइंढुरियाजुभली ॥ नागरियाबहोछंदबंदकरिकरतहैंरंगरली ॥ ८ ॥
इकताल ॥ इंढुरियालैंगयोकोऊकस्यांमसरीर ॥ कैसैंसीसधरौंरीग
गरीजकिरहिजमुनातीर ॥ तवतोमैंकछुजान्यौंनाहींत्तनकतउठीहि
पीर ॥ नागरियाअववाधोटाविननांहिरहतहैंधीर ॥९ ॥ इनदानली
लाकेअनुक्रमकी अलापचारीमैं दैनें ए दोहा ॥ दांनकेलिजोमनवसैं,
ताहिनकछूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनततनकबहूजाय ॥ १ ॥
मेरेनितचितमैंवसौ, दंपतिदानबिहार ॥ मुषपरझूठीझगरई, नैननि
करतजुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहूंनिकी, दांनकेलिबतरांनि ॥ नैं
ननिहाहाषांनिइत, उतसौंहैंसतरांनि ॥ ३ ॥ गऊरघटाअरुसांवरी,
उनईनीरसनेह ॥ पौरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरस
मांगतकरतदोऊ, नैनसैनसनमांन ॥ नागरियाकेहियवसो, दांनरं
गवतरांन ॥ ५ ॥ पदरागबिलावलकाण्याल ॥ तिताल ॥ मांगैंघन
स्यांमदांनदई ॥ गोरसदांनसुन्यौंनाहिंकबहूंयहअबकैसीभई ॥ दि
योनहिलेतहायहसिहेरतनैंकनकरतगई ॥ नागरीदासकौंनाविधिब
निहैंयहब्रजरीतिनई ॥ १ ॥ तिताल ॥ नितदांनमांगैंगहबरगैलमैं
कितजांउरी ॥ सांवरोसोधोटाअरबोलोहैंमनमोहननांउरी ॥ अं

ताल ॥ कहियेकौंनसौंकोमांनैं ॥ जोहैंबिथाहियेमैंहेलीसोमनकीम नजांनैं ॥ सबवेपीरपीरनाहिंसमुझैंदेतअनपिमोहितांनैं ॥ नागरिया मोहनबिनदेषैंमनलोचनउररानैं ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मनकीमुपतैंक हाजातबपांनीं ॥ कौंनैंकहीकहैंगोकोअबलगीलगनिकीअकथकहां नी ॥ मौंनिहूसौंनहिरह्योपरतरीनिकसतहैंहियतैंउररांनी ॥ वारूमु ठीअनऊबिचदारूनागरीदासरहैंकहांछांनी ॥ ६ ॥ तिताल ॥ मन मोहनहूकींनींकनौंड़ी ॥ दोसयहैंमोहीकौंयेरीमेरींबैरानिअषियांभौं डी ॥ प्रीतिवेलिफैलीउरअंतरअबलागीदुखवौंडी ॥ नागरियाब्रज बगरबगरमैंबजीनेहकीडौंड़ी ॥ ७ ॥ तिताल ॥ जोगनिरूपसुधाकी प्यासी ॥ अंगबिभूतरच्योमुषपांननिआंननचंदकलासी ॥ अ टकीनवलजोगियासौंसुषपूरनप्रीतिप्रकासी ॥ नागरदोऊनेहनगर केमनमथनाथउपासी ॥ ८ ॥ तिताल ॥ कोइयकजोगीरूपकियैं॥ भौंहैंबंकछकौंहैंलोयनचलिचलिकोयनिकांनछियैं ॥ देषिस्यामतन बेश्मनोहरबारबारजलवारिपियैं ॥ नागरमनमथअलषजगावतगा वतकांधैंबीनलियैं ॥ ९ ॥ तिताल ॥ प्यारेयेइनिगलियांआव ॥ नैंननिजलसौंधोयसंवारीअछनअछनधरिपाव ॥ व्याकुलतृषतच कोरदृगनिकौंवदनचंददरसाव ॥ रसिकबिहारीलालसलौंनेंजिनक रिनिठुरसुभाव ॥ १० ॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेनेंएदो हा ॥ जूराबांधतदेषिकैं, भएमजूरानैंन ॥ रहैंहजुराहीपरे, दरसअ जूरालैंन ॥ १ ॥ बैठीन्हायसुगंधजल, दुरिदेखतनंदनंद ॥ इकट कदृगपंजनफसे, जूराबांधनिफंद ॥ २ ॥ मंजनकरिषंजननयन, बैठीव्यौंरतिबार ॥ कचअंगुरिनबिचदीठदैं, निरषतनंदकुवार ॥३॥

निवासपियरावरो, छिरकतभिस्तीनैंन ॥ २ ॥ बिरहबांनबेधीगई, नांछिनलगतउपाव ॥ स्यामसुघरजरराहविन, मिलैंनउरकेघाव ॥ ॥ ३ ॥ तनकादिषाईदैंगये, पीतांबरफहराय ॥ सरसौंसीफूल्योक रैं, तबतैंनैंनानिभ्राय ॥ ४ ॥ तिरतसेतघरनावज्यौं, नैंननिकेजल मांहिं ॥ इंहींनीरमैंबूडिवो, जोपियमिलिहैंनांहि ॥ ५ ॥ बिनदेपैंन हिंकलपरैं, धीरकौंनठहराय ॥ जोजानैंजाकैंलगैं, दृगविसहारेघा व ॥ ६ ॥ नैंनलगेलागैंनहीं, बकैंमौंनिमैंहाय ॥ नागरपियढिगनां हितऊ, नितआगैंदरसाय ॥ ७ ॥ पदरागआसावरी ॥ तिताल ॥ पीयपीतकरीहमैंबोरी ॥ सुनतनादमुरलीश्रवननिमैंताजितजिलाज हिआवतदोरी ॥ जोघरसांझरहैंतोइकटकठाढीजोवतपोरी ॥ नाग रिया॥छिनकलनपरतहैंडारीकहाठगोरी ॥ १ ॥ तिताल ॥ लगनि कीपीरनजातभरी ॥ रातिद्यौसतलफतहीवीतैं ॥ चैंननहींजियएक घरी ॥ बिनांमिलैंघनस्यामवरनतनतपतिबुझैंनांजातजरी ॥ ना गरिया॥व्याकुलबनबीथनिटेरतडोलतहरीहरी॥२॥इकताल ॥मैंकोजां णूंकमलीपैरणांवोइस्ककहरदारियाव ॥ मुजधीरजदीबिचुपईझकझो कापांदोनांव ॥ बेपरवाईयारदीचलैंबुरापवनपरवाव ॥ नागरएकम लाहबिहूंणांसवहीदावकुदाव॥३॥ तिताल ॥ पनघटमोहनरीमेरैंकि नदयोगोहनलगाय॥ जबझुकिजमुनांजलभरौंएरीमोहिछींटानिदैचौं काय॥चाहौंसिरगागरिधरघोएरीमेरीइंडुरियालेतचुराय ॥ जबमेरोअं चराछुटैंएरीवहिबिनकहैंउरसतआय॥घूंघटदिसटकबांधिकैंएरीरहैंइ कटकनैंनामिलाय ॥ नहिंमानैंसैंननिषिज्योएरीवहिढ्योपरतअकु लाय ॥ नागरियाकहिकहाकरूंएरीमनमेरोहूललचाय ॥ ४ ॥ ति

सीनकरिहैंजैसीतुमकीनों ॥ पहलैंप्रीतकरीवैसैंअवअैसोआंनांकां नोंदीनों ॥ तुमतोकपटअधीननंदसुतहमनैंननिआधीनीं॥ नागरिया देषीनसुंनीकहूंयहहितिरीतनवीनों ॥ ४ ॥ तिताल ॥ कहाकरौंहेअं षियाअमांनी ॥ हठकनमांनतरूपललर्चीढहीपरतअकुलांनी ॥ गो कुलचंदचकोरिद्दगनकीघरघरचलतकहांनीं ॥ नागरीदासनेहकीउ रझनिक्यौंहूंरहतनछांनी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मैंड़ादरदनजानैंहोआ पवेदरदीं ॥ सोफीनूंकीपबरअसाढेगाढेइस्कअसरदी ॥ मैंनहिनेह कियापहिलैंवहचलिआयादिसघरदी ॥ नागरीदासनंददेनागरमन लीतामरदौंमरदी ॥ ६ ॥ इकताल ॥ नितदानमांगैंगहबरगैलमैं कितजांवरी ॥ सांवरोधोटाअरबीलोहैंमनमोहननांवरी ॥ अंचरग हिहसिकहिरहैंमुषहूंजियमैंसकुचांवरी ॥ नागरीदासउतैंउरझैरोइतै चवईयागांवरी ॥ ७ ॥ याजुगलभोजनकेपदनकेअनुक्रमकी अला पचारीमैंदैंने ए ॥ दोहा ॥ मिलिजैंवतदोऊदरसरस, रसनांरसबिस राय ॥ गईछुधासबउदरकी, रहीद्दगनिमेंआय ॥ १ ॥ जोव्यंजन करपल्लवनि, छुवतछबीलीबाल ॥ ताकौंरुचिसौंलेतहैं ॥ नवलरंगी लेलाल ॥ २ ॥ दंतगसामुषतीयकैं, चितईकरिभुवभंग ॥ रह्योकौं रहीहाथमैं, मईद्दगनिगतिपंग ॥ ३ ॥ सरसपरसकौंतरसजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितबलोढिलीं, अधरछुवननांहिंदेत ॥ ॥ ४ ॥ कौंरलेतकरकंपव्हैं, देतबीचछुटिजात ॥ स्वेदसिथलसिय रायतन छुवतअधरमुसकात ॥ ५ ॥ जैंवतस्यांमास्यांमदोऊ, नाग रियासुखदैंन ॥ कोजनकाविबरननकरैं, वहमिलिभोजनलैंन ॥९॥ पदराग सारंग चौताल ॥ जैंवतरासिकरासिकनीसंग, पियहठिकौंर

नोंठसंभारतसांवरो, नागरचितवतईठ ॥ जूराबांधतपीठदे, लईबा धिपियदीठ ॥ ४ ॥ पद्रागतोडीचौताल ॥ मुरलीवजाईस्यांमसघ नविपुनजायतासमैंवैठीहीबालकारिकैंजुमंजन ॥ सुधिबुधिभूलीअ लीहियैंवनमालीवस्योहाथरह्योकजरासकीनभरिअंजन ॥ कहतअ धीरबैंनभरिआयेनैंनमांनौंप्रेमजलभीजितरफतजुगखंजन ॥ नागरि यासपीढिगथांमैंओसंवारैंवारपुलिगयेतारजेसिंवारछविगंजन ॥ १॥ तिताल ॥ देखोरीजायनटवररूपकीयैं ॥ प्रेममदमादिकसौंपीयैं ॥ ठाढोरीकदंबतरैंमुरलीअधरधरैंश्रवननिकुंडलजगमगातबांमवरभुज छीयैं ॥ फूलफलमंजरीप्रवालनकेगुच्छास्वच्छवोचचारुचंद्रिका योंजूरासीसदीयैं ॥ नटकाछकाछैंआछैंचलतकटाछैंजाकीगुंजमाल लहलहाताहियैं ॥ धुववंकनैंनलटमंडितपहुपरैंनवेसरिसुदेसपौरिकेस रिकीकियैं ॥ नागरीदासअैसोमोहनत्रिभंगीलालचलिसपीवनवोगि देषिदेषिजीयैं ॥ २ ॥ रागतोड़ीकाष्याल ॥ इकताल ॥ मोकौंग योरीठागिग्वार ॥ कटितटीपीतपिछौरीबांधैंसांवरेअंगसुढार ॥ मद नमंत्रसेवैंनबोलिकछुनैंनाबंकनिहार ॥ नागरीदासमिलैंफिरिमोहन करिराखोंउरहार ॥ १ ॥ इकताल ॥ जरदद्दुपटेवालानींसांवला ॥ कैफभरीसीभौंहैंचढियांसिरकलगीउरमाला ॥ बिनदेषैंदुषदेतअमां नीमोहनसौंहनग्वाला ॥ नागरीदासदिवानीआंषियांफिरिपीयाइस्क पियाला ॥ २ ॥ इकताल ॥ हौंकहांजाऊंरीकौंनघाटकौंनबाट कितपाऊंनंदनंदन ॥ हरिगयोरीमनमांनिकमेरोकरिगयोधीरनिकं दन ॥ मंदहासिहसिकैंकसिभौंहैंबांसिकीनीरसफंदन ॥ नागरीदास बचैंकोऊकैसैंवाठगकेछंदबंदन ॥ ३ ॥ इकताल ॥ पीयाकोऊअैं

दाविपुनरसिकरजधांनी ॥ राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकवि
हारनिरांनीं ॥ ललितादिकढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमधुपांनीं ॥
रसिकटहलनीवृंदादेवीरचनारुचिरनिकुंजरवांनी ॥ जमुनांरसिक
रसिकद्रुमबेलीरसिकभूमिसुषदांनि ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियार
सिकहीरसिकसबैंगुनगांनी ॥२॥ तालचर्चरी ॥ कुंजछबिपुंजबहो
बित्तनसेवतसदाजुगलआशक्तरसएकआनंद ॥ लिबढिरहीद्रुमलता
मत्तअलिकुसमप्रतिपलहुनहिंधांमरबिबिरहदुपदंद ॥ मधुरकलकं
ठललितादिपूरितमहारंगमयरागसारंगधुनिमंद ॥ दासनागरतहां
स्यांमस्यांमानिकटठाढीइकटकजुरहीनिराषिमुषचंद ॥ ३ ॥ ताल
चर्चरी ॥ करतसुपसंगनवरंगललनाललन ॥ स्यांमजुगभुजनिबि
चगउरतनभांमिनीसजलघनमांझमनौंदांमिनीझलमलन ॥ छुटत
वरबारअरुतुटतहारावलीषोलिहीबिमलबिधुवदनघूंघटबलन ॥ नैंन
हसिहसिमिलत्तरसछकीदृष्टसौंतैसीयेछबिभरीबंकभृकुटीचलन॥ म
हकिरहीमालतीकुंजकुसमितमहलटहलललितादितहांभूलिलागतप
लन ॥ नागरीदाससुषरासलीलाललितकोरकोरकनिमदमदनदल
दलन ॥ ४ ॥ तालचर्चरी ॥ कुंजरसकेलिकबनीयदंपतिकरत ॥
परसपरहितबिवसरूपमादिकछकेदूरिककरिबसनउरदृढअंकानिभ
रत ॥ पियतमधुअधरसुपासिंधुमैंमगनमननिकटतिहिंसमैंचषच्यारषं
जनलरत ॥ कबहुभुवभंगजुतसीकरतरंगसौंअंगप्रतिअंगपियपरस
दैंमनहरत ॥ बिथुरेबिचकचनमुषगउरनिकसतश्रमितचंदतैंसघनम
नुंस्यांमबादरटरत ॥ सुरतसुषस्वेदतैंमहकिकेसरिचलीबासलहिना
गरीदासधीरनधरत ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैंने ए ॥ दोहा ॥

देतप्यारीमुषपरसतअधरहोतभुवभंग ॥ वीचिवीचिनतरानिमधुरई अतिरसभोजनबाढयोरंग ॥ नागरिसपीसौंजलियैंठाढीइकटकभई दृगनिगतिपंग ॥ १ ॥ चौताल ॥ अरीएजैंवतहूंनहिंपाये ॥ इकटक रहेवदनचितवतहीअंपियनहाथबिकाये ॥ जबकछुकौंरपरसपरदी नैंतवतबमैंसम्हराये ॥ अतिआसक्तस्यांमस्यांमाकीनागरियालषि नैंनसिराये ॥ २ ॥ या अनुक्रमकी अलाप चारीमैं दैंने ए दोहा ॥ हरिराधाबृंदाबिपुन, नितबिहाररसएक ॥ बिछुरतनांहींपलकहू, बी ततकलपअनेक ॥ १ ॥ प्रेमरासिदोऊरासिकवर, बिलसतानित्यबि हार ॥ ललितादिकानितलेतहैं, तिंहिंसुपकोरससार ॥ २॥ नवनिकुं जमनकौंअगम, सेवतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअ षंडितरंग ॥ ३ ॥ नैंननिंनैंनासिरांवहीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुहांच हींजियज्यांवहीं, स्यांमास्यांमसुतंत्र ॥ ४ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचबृंदावनबाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यांमास्यांमसुहाग ॥ ॥ ५ ॥ पद रागसारंग ॥ तालचर्चरी ॥ रायगिरधरननवकुंजर जथानिबिचसंगश्रीराधिकारानीराजें ॥ मोरचहुंओरहयहींसहल चलचमूंगहरजलघोषनीसांनबाजें ॥ कोकिलाकीरकलहंसबंदी बहोत बडेनितकेलिकेबिरदगाजैं ॥ प्रेमपरधानमतिमदनमं त्रीमहादेतरसमंत्रसबसुषानिसाजैं ॥ मत्तमधुमाधोकुतवालके दूतअलिफिरतकरकुसमसौरंभकैंकाजैं ॥ सुफलफलदेततरुदेव बहोभांतिअरुनगरकुलदेविबृंदाविराजैं ॥ रूपउतसवसदासहजमं गलदृगनिउभयआशक्तलषिलाजलाजैं ॥ दासनागरनिकटललि तललितादितहांराजआनंदछकचाढियछाजैं ॥ १ ॥ चौताल ॥ बृं

भोजनलगे॥ तीरजमुनांविपुनभीरवहोबालकानिहदैंआनंदभरिपेल रसरगमगे॥ छाकलीलाललितकूलकोलाहलनिदिवसभयोजांनिम नुकोकिलागनजगे॥ चहूंदिसिकुंडलाकारग्वालावलीचारुब्रजचंद उडगनानिबिचजगमगे॥ कईकछींकांनकईफूलफलसिलनिपरकई कदधिमधुधरनवकुलकललैंनगे॥ किसलैदलकदलिदलजलजद लजघनिपरधरतब्यंजनाविविधिपरमकौतिकपगे॥ स्यांमकरबांमपर भातधरिपातफिरनागरीदासहसिजातबातनिपगे॥ निरषिबिधिकहत मनकहांजगिभोगयेजूठपसुपालकनकीजुतैंनहिंभगे॥ १॥ तालच र्चरी॥ आजुबरविपुनमैंछाकलीलारची॥ गोपबडडेनकेकंवरउड गनलसतबीचब्रजचंदअतिसरससोभासची॥उरसिबनकैंकिधौंचारु चमकतभईइंद्रमणिनीलकलकनककुंदनगची॥ परसपरकरतमि लिमोदजुतचपलताबदनलपटातदधिमारमोदकमची॥लेतझुकिझप टिकरकौंरहारिसबनितैंदेतगंडूकतकितकअंपियांनची॥ नागरीदा सभयेबहुतबिस्मैंनिरषिचित्रलौंपांतिसुरगगनमंडलषची॥ २॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा॥ ठाढोहरिगिरकीसिपर चरनलकुटिलपटाय॥ पीतांबरफहरातलषि, त्यौंत्यौंमनफहराय ॥ १॥ करगहैंडारकदंबकी, ठाढेअतिछबिऐंन॥ प्रियाध्यांनमा दिकछके, रहेलालझुकिनैंन॥ २॥ व्हैंठाढेछबिसौंरहे, चढिगिरसि परकिसोर॥ जबहीमुरलीधुनिकरत, कुहकोउठतबनमोर॥ ३॥ लषिऊंचैंब्रजचंदकौं, तियअंगुरीनिबतांहि॥ नागरियामनगिरसि षर, चढयोसुउतरतनांहि॥ ४॥ पद॥ रागसारंग॥ इकताल॥ठा ढोनंदकोगोपाल॥ बांमभुजतरलकुटिदीयैंचरनपरसतमाल॥ रूप

नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गांनतांनरसरहसिकी, वहसिवदीदुहूंओर ॥ १ ॥ होतरागसारंगधुनि, ॥ दंपतिकुंजनवीन ॥ बिचबिचगायबजांवहीं, बीनानिपरानिप्रवीन ॥२॥ धीरजपगठहरैंनहीं ॥ सुरगहरैंगुनगांन, रागरसासवसिंधुकी ॥ लहरैंउपजततांन ॥ ३ ॥ संगमृदंगसुधंगगति, रागरंगअभिराम ॥ स्यामैंरिझई नागरी, नागररिझयेस्यांम ॥ ४ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ बनेमाधुरीकेमहल ॥ कूलजमुनांफूलफलभारिभँवरचहलापहल ॥ सघननवसंकुलितडारैंमिटतदिनमनिकहल ॥ विछयेजलछौंटनिछिरकिबिच कदलीदलकेपहल ॥ तहांबिहरतिप्रियाहरिसंगतजिसुरतरनदहल॥ दासनागरसषीफूलीफिरतआनंदटहल ॥ १ ॥ इनछाकलीलाकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ तजिरतननिकेथारकौं, करधरिजैंवतछाक ॥ हरिकौंभावैंभवनतैं, याब्रजकेबनढाक ॥ १ ॥ लकरीधोवैंभैंषनैं, बिधिसौंकरैंजुपाक ॥ जाकारनपटपटकरैं, ताकोभावतछाक ॥ २ ॥ आवैंनहिंसुरमुनिनकैं, कीयैंजग्यजंजाल ॥ सोग्वारनकेबीचमैं, जैंवतछाकगुपाल ॥ ३ ॥ जैंवतहरिलरिकांनिमैं, द्रुमछहिंयांजलकूल ॥ देषिमंडलीछाककी, रह्योकमंडलीभूल ॥ ॥ ४ ॥ हरिबनभोजनकेलिलषि, बिथकीबांनीबाक ॥ नागरियानितचितरहैं, चहीछाककीछाक ॥ ५ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ ॥ चौताल ॥ छोटेछोटेग्वालनिमैंछोटेनंदछइया ॥ राजतदोऊ कुंवरअतिसुंदरगिरधरस्यांमगउरबलभइया ॥ लयेवनायढाककेदौंनाएकबैससबग्वारपिलइया ॥ नागरीदासतहांमधुमंगलमाथिमाथिदेतदूधकोघइया ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ नवलगोपालमिलिकरन

कौनघरीउतगईहुतहीजमुनाकरनसनांन ॥ नागरियाविनचाहेमेरे
वनिगईवातअजांन ॥ २ ॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेनेए
दोहा ॥ अरेपरेचितवतवदन, कहासरीजियआस ॥ गाइगईवछ
रासहित, मोहनदुहतअकास ॥ १ ॥ परीपरिकगोपालकैं, निजगौ
हनतजिभौंन ॥ सौहैंलषिभौहैंरहे, दोहैंगइयांकौन ॥ २ ॥ इकटक
रहिरहिजांहिहग, दयेंदीठमैंदीठ ॥ नेहपूररनसूरज्यौं, चलैंनदेकेंपी
ठ ॥ ३ ॥ लालगिरतग्वालनगहे, पियलइतियनसंभार ॥ इतउत
दोऊसरभररहे, व्हैंहगसरानिसुमार ॥४ ॥ धेनुदुहतमोहनठगे, राधा
रूपनिहारि ॥परतदौहनीतेंनिकसि, अैंडीबैंडीधार ॥ ५ ॥ मुषचि
तवतगइयांदुहत, परतधरनिपयसोत ॥ मांनौमंगलहगानिमनौं, दु
धनिवरषाहोत ॥ ६ ॥ धेनुदुहतस्यांमहिठगे, रूपसौंहनीदीस ॥
गिरिगोदतैंदोहनी, परीमोहनीसीस ॥ ७ ॥ देतसौंहनीदौंहनो,
लेतलालमुसकाय ॥ भूलिहाथउतहीरहे, दीठदीठठहराय ॥ ८ ॥
धेनुदुहतजांनिसबनि, गउरस्यांमकीप्रीत ॥ नागरियाकेहियवसो,
परिकटहलकीरीत ॥ ९ ॥ पदरागसारंग ॥ तालचपक ॥ देपतब
दनदसाभईऔर ॥ दौहनीलेतरह्योकरउतहीचितवतचाकितरसिक
सिरमौर ॥ डगमगायपगधुकेधरनिकौंभुजभरिलयेग्वारबिचदौर ॥
आयगयोश्रमजलआंननपरकंपिततनमनमथकीरौर ॥ मदनमो
हनकोमनताहीछिनव्हैंगयोरूपअसनिकोकोर ॥ नागरीदास
स्यामकरिघायलपलटिचलीनागरिनिजठोर ॥ १ ॥ चर्चरीइक
ताल ॥ ॥ चलीहैंकुंवारिराधिकानिकुंजभवनरवनपाससजि
सुबामत्तभंवरसंगसंगसंग ॥ आयरसिकरायनिकटलईहैंभुजनि

अद्भुतजोतिकोचहुंओरमंडलजाल ॥ दासनागरहगरहेझुकिप्रिया ध्यांनरसाल ॥ १ ॥ इकताल ॥ गईहूंआजदुपहरीवरियां ॥ सुंदर स्यांमगहैंकरठाढोजमुनांकूलकदंवकीडरियां ॥ पीतांबरवनमालअ लकजुगमंदपवनकेंवसफरहरियां ॥ नागरियालपिजकिरहिगईफि रनहिंसपीपिंडीथरहरियां ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैं दैने ए ॥ दोहा ॥ जवतैंचितयेनैंनभरि, तवतैंछिननहिंचैन ॥ मनमोहनगोहनपरचो, जागतसुपनैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनलपिमोह नभई, कहालग्योयहहौंन ॥ सवसूझतमोहनमई, दईभईगतिकौंन॥ ॥ २ ॥ सुधिवुधिसवहीहरिलई, मनमोहनमुसकाय ॥ येदइयाकै सीवनी, लागीविरहवलाय ॥ ३ ॥ लगिलगानिहरिमुपानिरषि, डा रचोसवसुपरूंद॥ जोहूंअैसोजानती, रहतीनैंननिमूंद॥ ४ ॥ कौंनघ रीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिटतनांहिदिनरातिजिय, स्यांमरूपउतपात ॥ ५ ॥ घरवनहूनहिंलगतमन, रहतस्यामतन लीन॥अरीढटौंनांनंदकैं, कछुटौंनापढिदीन ॥ ६ ॥ नैंननिदुपनें ननिलगैं, तनमनदुपदुपगेह ॥ एदइयाकौंनैंदयो, दुषकोनामसनेह ॥७ ॥ हरिसौंलगनिलगायकैं, भरीरहतनितनीर, रिझवारनअंपियां निसौं, हौंहारीरीवीर ॥ ८ ॥ नागरसैंननिसैंनमिलि, वनीजुनैंनानि नैंन ॥ वनतवनतअैसीवनी, कहतवनैंनहिवैंन ॥ ९ ॥ पद रागसारं ग ॥ इकताल ॥ नैंननिसैंनतैंहूथकी ॥ देपिपंकजहगनिकीदिशह गनिलागीजकी ॥ टरतनहिंछिनचुभीचितवनिप्रेमगहवरछकी ॥ दासनागरिरूपहरिकीमिटतनाहिंधकधकी ॥ १ ॥ इकताल ॥ भई रीस्यांमसौंपहिचांन ॥ ताहिदिनतैंसुपासिगरोविदाभयोलैंपांन ॥

ह्वैंमंडलचहुंफेर ॥ ३ ॥ पुलिवैंनोसुभवासबस, लईअलिसैंनीघेर॥ सारंगनैंनोफिरतबन, सारंगहीकोबेर ॥ ४ ॥ नागरियाद्रुमलत निमैं, दमकतगऊरसरीर ॥ मनुहेरतघनस्यांमकौं, दामिनिफिरत अधीर ॥ ५ ॥ पदरागसारंग ॥ इकताल ॥ तरवरछांहतीरजमु नांकी, कीरपढावतडोलैं ॥ रूपरासिकोऊनवलकिसोरी, मोहन कहिकहिबोलैं ॥ झमकिझुकावतिडारकुंजकीबैंनोपीठभवंगकलो लैं॥ नागरीदासध्यांनरसमातीमूंदिमूंदिद्दगपोलैं ॥ १ ॥ इकताल ॥ भूलीसघनबनफिरतअकेली ॥ स्यांमस्यांमकहिटेरतहेरतदेषिद सारोवतद्रुमबेली ॥ ह्वैंगयोबदनकंवलकुमिलौंहौंठीकदुपहरीसंग नसहेली ॥ नागरियाअकुलायमनोहरआयअचांनकभुजभरि झेली ॥ २ ॥ तिताल ॥ चलेजातगहबरबनकौंमिलिगरबांहींदी नेंदोऊजन, ठीकदुपहरीश्रमितजांनिमनमुरलीसौंलपटायपीतवसन छांहकरतमुष घरस्यांमघन॥ झलकतस्वेदअरुनईतियमुषफूंकदेत पियसुंदरअधरनिप्यारीजूहसततवैंमनहीमन ॥ नागरियामृगवृंद मनोहरनिरषतरूपफिरतसंगवनबनइकटकह्वैंमनौंचित्रलिखेतन ॥ ॥ ३ ॥ चौताल ॥ बैठेआयकुंजकीछहियां ॥ ढुरवतपवनपीत पटसौंपियप्रियागहतहसिबहियां ॥ तनमनसिथलकरतस्यांमघनछ बिबाढीतिहिठहियां ॥ नागरीदासद्रुमनिदुरिदेषतरीझतहैंमनमांहियां ॥ ४ ॥ रागसारंग ॥ इकताल ॥ चलत ॥ रीकिपटकीप्रीतिसौंड रियैं॥मनऔरसुषऔररूपछिनऔरऔरलषिहियमांहिहहरियैं॥ नाग रियागुनसमझिस्यांमकेअबपरबसक्यौंपरियैं ॥ अरीजानदैंवहो नायकसौंभूलिनेहनहिकरियैं ॥ ५ ॥ इकताल ॥ ब्रजकेलोगहैं

झोलिमेलिकरतकेलिपरसतसुपअंगअंगअंग ॥ जुरतनैंनतूटततहार अंचलउरछुटतबारचालिकटाछिभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ ताघरिया देपिदुहनिनागीरयालतनिओटतनमनगतिश्रवननैंनपंगपंगपंग॥२॥ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमैंदैने एदोहा ॥ दांनकेलिजो मनवसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकब-हूजाय ॥ १ ॥ मेरेनिताचितमैंबसो, दंपतिदांनविहार ॥ सुपपर झूठीझगरई, नैंननिकरतजुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनकी, दांन केलिबतरांनि ॥ नैंननिहाहापांनइत, उतभौंहैंसतरानि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह ॥ पौरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरसमांगतकरतदोउ, नैंनसैंनसनमांन ॥ नागरियाकेहियबसो, दांनरंगबतरांन ॥ ५ ॥ पदरागसारंग ॥ ॥ तिताल ॥ तजिदीजैंगोहनसोहनमनमोहनगुमांनी ॥ परीछुरिय हटेवानिडरअतिअंचरछुवतनयेदाधिदांनी ॥ झूटैंझगरतडगरतजतन हिंअहाकहालंगराईठांनी ॥ नागरकुंवरतिहारेमनकीमैंअबसब जानीजूजानी ॥ १ ॥ तिताल ॥ जोतोअबइनाहिंछुवोगेदाधिदांनी॥ तोएगोपकुंवारिहमहूतैंनांहींरहैंगीसतरांनी ॥ ज्यौंतुमनंदनंदनत्यौं एऊअपनेकुलअभिमांनी ॥ जाहुचलेनागरगुणआगरसूधैंगैलगु मांनी ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने एदोहा ॥ तियअ धीरछुमभीरतहां, डोलतजमुनांतीर ॥ कीरपढावतनीरद्दग, स्यांम मिलनहियपीर ॥ १ ॥ छुटेवारडगमगतपग, श्रमबससिथलअं गेट ॥ फिरतदुपहरीद्रुमानिमैं, मोहनमिलनसहेट ॥ २ ॥ सघन कुंजअतितिमरतउ, मगपावततिहिंबेर ॥ राधारूपउजासको,

सिरबिधनांलिपदोनौं ॥ १२ ॥ तिताल ॥ बीरारेषेवटियाल्याव
ल्यावनावरियापाररेउतार ॥ देहूंतोहिकंकनाहाथकोस्यामबिनव्या
कुलभइहौंनकरिरेअवार ॥ वहिधुनिसुनिबंसीबनबाजतकहाकरौंद
इयाबिचगहरीधार ॥ जैहौंपारचलिभेटिहौंभांवतोअबहौंरहौंगीनां
हिनागरियावार ॥ १३ ॥ तिताल ॥ मनमोहनाहोलगीछूटतनां
हिं ॥ तुमतोनषसिषकपटभरेपैंनैंननिसौंनवसांहि ॥ जितितितचारच
वावचलतजबसुनिसुनिमनपछितांहिं ॥ नागरइनअंखियनकीघाली
तुमहिकहोकितजांहि ॥ १४ ॥ तिताल ॥ कँवलकेपातमैंलैआयेप्री
तमपांनी॥ अंजुरानिपीवतहैंप्यारी ॥ गईप्यासअाईनैंननिमैंदोऊदीठ
टरतनहिंटारी ॥ ठीकदुपहरीनिरजनबनजलकूलछांहसुषकारी ॥
नागरियाश्रममेटतमोहनमहामदनमनुहारी ॥१५॥ इकताल ॥ अ
रीपियचंदनलगावैंतबप्यारीसतरावैं ॥ मिसहीमिसरंसफंदडारिकैंमं
दमंदबतरावैं ॥ पुनगुलाबसींसीकरलैंलैंतनछिरकैंछिरकावै ॥ नाग
रियादंपतिग्रीषमरितुसपीनिकेनैंनसिरावैं ॥ १६ ॥ चौताल ॥ दंप
तितनचंदनपटपहिरैं ॥ चंदनपौरऔरलेपचंदनकोउरचंदननहिंठ
हिरैं ॥ दोउमुषचंदनमैंछिरक्योगुलाबमांनौंसोहतसुधाकीबूंदैंअति
छबिछहरैं ॥ नागरियानागरबिहारचारुचंदनकैंचहलैंपरयोहैमेरो
निकसैंनमनगजगहिरैं ॥ १७ ॥ तिताल ॥ महलटसीरदोऊबैठे
मोजमैंहोजमैंपायझुलायैं ॥ गरबाहियांझुकिलेतफुंहारानिमुषढिगमु
षहिंजुलायैं ॥ स्वेतमिहीपरैंनानिमैंछबिसोहतबारपुलायैं ॥ नागरि
यादंपतिग्रीषमरितुसषियननैंनासिरायैं ॥ १८ ॥ इकताल ॥ स
पिसुंदरमंदिरसीरोबिछौनांसमीरसुबासनहीहरषैं ॥ तहांदंपतिरंग

कपटी॥ चलेजानदेंबातकरैंमतिकहापरतरपटी॥

॥ ६ ॥ इकताल ॥

मरमबिनजांनैंहौंजुरहौंगहिमौंनां॥

हसिटौंनां ॥

इकताल ॥

नी॥ सैंननिहींदैंउत्तरतूलषिचितवनिचाहसनी॥

बावरीसीषमांनिइतनी ॥ नागर

अनीं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ होसांवरेग्वारमेरीसौंइत

याउठतिनमोपैंताहितूदेहुउठाय ॥

यैंतूजाय ॥

तिताल ॥ चलत ॥

कदुपहरीघामघनेरीघरीकरहोनैंमृगनैंनी ॥

छबिसौंबलिबैठीहैंचलिगजगैंनीं ॥

षोलिपीतउपरैंनीं ॥ १० ॥ इकताल

तमालतीगहिरंगभरीअलबेली ॥

तहैंफूलचंबेली ॥

वतमधुरकंठसारंगधुनिगहवरकुंजअकेली ॥

निस्यांमांआयभुजनभरिझेली ॥ ११ ॥

मैंअपनौंमनभावनलीनौं ॥

भयोसबकैंमुखमोरैंमैंपायोपीयप्रवीनौं ॥

दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउत वाढीदुहुंनिमन, फूलनिबीनतफूल ॥ १ ॥ झूंमिझूकावतद्रुमलता, उघरतउरउरमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौंवाल ॥ २ ॥ दोऊमिलिफूलनिबीनहीं, जमुंनाकूलनिसांझ ॥ रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलिनकेमांझ ॥ ३ ॥ फूलनिसौंबैनींगुहत, रचतफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोउ, भुजभरिदृढअंकवारि ॥ ४ ॥ कौतिकलागेबालके, संगडोलतनंदलाल ॥ छुवतज्जुहीकेफूलकौं, होतज्जुहीकीमाल ॥ ५ ॥ दुरिदुरिभेटतद्रुमनिमें, फूलभरीसुकँवार ॥ लंपटमधुपनवांवहीं, पीतज्जुहीकीडार ॥ ५ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिरांम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगौरीस्यांम ॥ ७ ॥ फूलनिमिसुतियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, फूलरंगीलीसैल ॥ ८ ॥ पद राग फूरबी ॥ इकताल ॥ आईहैंगेहस्यांमांउपबनतैंलियैंभांवतोसंग ॥ डोलनिकोश्रमदूरिकरनहितमंजनकाजचलाकुंजकौंएरीविगरायेहैं बारासिंवारपीठपरकारेसचिक्कनरंग ॥ न्हावतअहाकहाछबिपावतगोरीढिगनईबालसांवरीटहलकरतश्रीअंग ॥ नागरिसषीओटलीयैं ठाढीकंवलचरनकीचंदनपावरीएरीदुरिदेषतवावरीसीरहीजकिभई नैंननिगतिपंग ॥ १ ॥ अरीयहकौंनजमुनांकूल ॥ जुवतिमंडलमध्यमांडित ॥ द्रुमनिबींनतफूल ॥ १ ॥ ललितभालबिसालबैंनीगुहीसिथलसंवारि ॥ ज्यौंबचंदनलताप्रतिरहिअरुझिपन्नगनारि ॥ २ ॥ हावभावकेभवनभ्रूद्दिगदुरिमुरतलजात ॥ जालघूंघटमैंपरेजुगमीनज्यौंअकुलात ॥ ३ ॥ उच्चनासापरिसुबेसरिबिमलमुक्ता

विनोदकरैंललितादिप्रमोदनिसौंपरपैं ॥ छविसौंजहांछूटतहैंजल जंत्रसुयौंमनकौंउपमांकरपैं ॥ यहनागरबादरकैंवदलैंअवनोमनौं ऊरधकौंवरपैं ॥ १९ ॥ इकताल ॥ अरीघूंघटमैंतेरेमनमोहनमंडरा वैंरी ॥ मुपमैंमौंनिनोरनैंननिमैंपीरनकाहूजनावैंरी ॥ नवतननेहसुगं घकीचोरीकोकिहिंभांतिदुरावैंरी ॥ नागरियातरवनितैंलागीलगन आगिदरसावैंरी ॥ २० ॥ इकताल ॥ रेरेपैरइयातनकराहिभारिदेमे रीगगरी ॥ रहिगईओघटघाटअकेलीगईऔरसगरी ॥ भूलीमग आवनद्रुमनिजलपूरितविषमगरी ॥ नागरपीयभीजेतनभेटी भुजभरिरूपअगरी ॥ २१ ॥ चौताल ॥ सोहतरंगभरेदोऊम हलउसीरमधिभीजेहैंफूहारनिगुलाबनीर ॥ वरुनींअलकभौंहवूंदैं फवीहैंमांनौंसरदकंमलपरओसजैसैंगोरस्यांमअंगनिलपटेचीर ॥ गावैंतहांदंपतिवजावैंहैंबिसाषावीनबैठीहैंप्रवीनसषीसभासरतीरती र॥नागरीदाससुषनिवासग्रीषमविहारचारुसांवनसोलगिरह्योरसझर पुंजकुंजधीरसमीर ॥ २२ ॥ इकताल ॥ ढौरीलागीरहैंइनअंषियन कौंनपरीयहबांन॥ नीरभरीतऊप्यासीचहैंछविसागरस्यांमसुजांन ॥ वासरगतरजनीआगमरहैंआसाअरुझेप्रांन ॥ नागरमुषससिसुधा लोभलगिछुवतनहींकछुआंन ॥ २३ ॥ तालचौताल ॥ हमदेपिआ वतक्यौंआएकतराइतैंठाढेअबरोकिकैंकदंबनिकीछांहींहो ॥ क हांधौंभयोज्योव्रजराजकेकुंवरतुमसुनौंजूकाहुकेपरमेसुरतोनांहीं हो ॥ हमतुमएकजातिपांतिकेहैंवृजबासीकौंनकैंभरोसैंलालाभूले मनमांहीहौ ॥ नागरमांगतदानराषतहैंमांनयांतैंबावाव्रपभानह्यां वसायेदेकैंवांहीहो ॥ २४ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारोमैंदैने ए

जूराचूरापीतपट, लसतिकाछकटिलाल ॥ नागरियाकेहियबसो, नटवररूपरसाल ॥ ४ ॥ पदरागनट ॥ तालचरचरी ॥ सपीदेषिन घनटभेषधरैंगुपाला ॥ गावतनटरागमुपकंवलधरिमुरलिकापरसिचर ननिकँवलकँवलमाला ॥ नटनअरीचालिसुफलकराहिकिंनद्दगानिकों नवलनटनागरअतिरूपजाला ॥ नागरीदासछबिदेषिइकटकरहीव हुरिलगीनटहिनटरटरसाला ॥ १ ॥ इकताल ॥ एअंषियांकाहूकी नभई ॥ हैंप्रसिद्धसंसारकहांनीकहतहौंनांहिंनई ॥ कहियेकहामहा अरबीलीबरजीतितहीगई ॥ नागरीदासलालगिरधरकरमोकौंबांधि दई ॥ २ ॥ इकताल ॥ गईहुतीब्रेचनगोरसकैंरोकीआंनिदांनमिस मोहनवाकीचितवनिमेरेहियमांझकसकैं ॥ अंचरागहिफिरिबहियां गहीरीकरमेरोमसक्योसुअबलौंचसकैं ॥ नागरीदासकठिनमोहिबी तंतउंहितोमनलीनौंहसिहसिकैं ॥ ३ ॥ या अनुक्रमकीअलापचा रीमैं दैंने ए दोहा ॥ सांझभोरचितचोरको, तहांदुरिमिलन बिहार ॥ पौरिसांकरीसुपदगिर, गहबरबनअंधियार ॥ १ ॥ मिलतछैलभुजभरिप्रिया, पौरिसांकरीसैल ॥ कबहूनछाडतानि तपरैं, उहींगैलकीगैल ॥ २ ॥ फिरतगउश्रीरागकी, होतबंसु रियनिटेर ॥ गहबरगिरदुरिमिलतदोऊ, सांझसमैंतिंहिबेर ॥ ३ ॥ अंकमालहृढद्दुहुनिमैं, परीसुछूटतनांहि ॥ महाप्रेमगहवरछके, गहबर गिरकैंमांहिं ॥ ४ ॥ गहवरागिरकेतिमरमैं, परीचमकिचकचौंधि ॥ सही स्यामघनसौंमिली, भामिनिदांमिनकौंधि ॥ ५ ॥ इतआवतिंबररसिकि नी, उतैंरसिकसिरमौर ॥ नागरियादुरिमिलतदोऊ, गहवरगिरकी ठौर ॥ ६ ॥ पदश्रीराग ॥ तालचपक ॥ गहबरगिरसांकरीगली ॥

लोल॥ निरषिमोमनसंगताकैंरह्योआतुरडोल ॥४॥ अरुनअधरनिद सनदमकतकरतजववतरांनि ॥ मनहुविद्रुमआलवालमैंप्रगटिहीरा पांनि ॥ ५ ॥ कामक्यारीसुभगश्रवननिप्रतिप्रसूंनझराय ॥ अलक ढिगासिंगारिवेली ॥ पवनलगिडिगुलाय ॥ ६ ॥ रतनझांईविवकपो लनिपरीनहिंठहरात॥किधौंमेरीदीठवहठांफिरतपगरपटात ॥७॥ चि वुककूपकैंरूपपांनिपपरतलोयनमीन॥देषिमुषसोभावढीगोभासुकां मनवीन ॥ ८ ॥ कंठकंचननालउपमांयहसमहैंन ॥ जलजलरछ विसिंधुलहरनिधारपगटहरैंन ॥ ९ ॥ अैंचअंचरलेतआंननलाजछि नछिनभोय॥वदनाविधुपटनीलवनदुरिदुरिप्रगटपुनिपुनिहोय॥ चाल चितइनपरतजवउतहोतबांहसचाल ॥ पीतनवलासीकिधौंहैंकनक कमलमृनाल ॥ ११ ॥ सर्वअंगसुढारसुखमांकहींनआवतवैंन ॥ नंदकीसौंज्यौंववीततजांनहैंमनमैंन ॥ १२ ॥ हारभूषनभारभां मनिडुलतचारुसरीर ॥ मनहुंदीपकलोयलहकतपरसमंदसमीर ॥ ॥ १३ ॥ स्वासवसआमोदतैंचहुकोदआलिभंकार ॥ तैंसियैंफेरानि कंवलछविपगनिझंझंकार ॥ १४ ॥ भेदगतिसंगीतसहजईपायपद्म निवास ॥ चरननखमनिचंद्रिकावनिअवनिकरतउजास ॥ १५ ॥ कौंनहैंकहानांवइनकोहरयोमोमनवांम ॥ कहोनागरीदासतवहसि कुंवरिराधानांम ॥ १६ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने एदोहा॥ नटनागरकलगांवहीं, वीचरागनटवैंन ॥ सुंदरतननटवरचलत, न टचेटकसेनैंन ॥ १ ॥ नटानटीतूकरतही, अवलपिरूपरसाल ॥ समैंभईनटरागकी, आवतनटवरलाल ॥ २ ॥ नटनागरलषिकैंउतैं, वेऊगुनसरसात ॥ घूंघटहीमैंनैंननट, उलटपलटकरिजात ॥ ३ ॥

जैंबराजोरी ॥ ठाढैंझगरतसांझभईअवहारिपसारतझोरी ॥ थहरत देहनठहरतसिरपरगरईलगतकमोरी ॥ टरतनहींहोडरतनहींहोकरत नहींहोथोरी ॥ जिनकौंतुमयहअंचरागहतहोसोहैंकुंवरिकिसोरी ॥ हियेओरकछुलालचललकैंपलकैंकरतनिहोरी ॥ प्यारेकुंवरछबीले नागरपाईचितकीचोरी ॥ ४ ॥ तिताल ॥ छांडिछांडिदैंरेअंचल चंचलछैला ॥ इतीकरतलंगराईललाक्यौंरोकिमहीकोगैला ॥ जां ननदेतदांनमांगतहठिठाढोव्हैंआडोअरैला ॥ सीषेकहांअनोपेना गरएजोबनकेफैला ॥५॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥

कंवलमालहियकरकँमल, कँवलनैंनसंगधैंनु ॥ प्रफुलितकँवलपरा गजुत, यौंमुषमंडितरैंन ॥ १ ॥ घटकीसटकीलाजसव, गोधनसंग लषिलाल, अटकीनटकीदृगनिमैं ॥ वहलटकीलीचाल ॥ २ ॥ आ छैंकाछैंवेषनट, गायनिपाछैंलाल ॥ चलैंकटाछैंफूलसर, भूलतिसु धिव्रजवाल ॥ ३ ॥ आवतलषिनंदलालकौं, झूंमिझरोषानिझांक॥ झलीफूलडारतअली, लिषिलिपिहितकेआंक ॥ ४ ॥ गोधूरिकवि रियांभई, मिटयोबिरहदुषदंद ॥ प्रफुलिततियकुमदावली, लषिना चंद ॥ ५ ॥ पदरागगौरी ॥ तिताल ॥ गोवर्द्धनगिरसिपर चढिफेरतपीतपिछोरी ॥ बोलीबहुरिगऊबंसीमैलैंलैनांमधूंम री ॥ सुनिधुनिधैंनुवैंनश्रवनानिमैंमोहँमगनआतुरउठिदोरी ॥ बिधिभांतिभूषननिअलंकृतरुनकझुंनकबजसब्दछयोरी ॥ उतरि गिनतु धनअपअपनींबोलतमोहनबचनठगोरी ॥ नागरीदासच लेनंदासुरगोपकुंवरिमिलिगावतगोरी ॥ १ ॥ इकताल ॥ रूपसिंह जीकृत ॥ बनतैंवांनिकबनिव्रजआवत ॥ वैंनबजायरिझायजुवति

रहीनसंभारदेहसुधिविसरीमिलीऔचकअपभांनलली ॥ दच्छिन करगेंदुककुसमनिकीवांमअंसभुजसुहृदअली ॥ अंचरडारेंआधेंसिर छबिमत्तदुरदगतिआवतिचली ॥ गुनप्रयोगसहचरिसंभरावतिहृदै रूपमूर्छासुचली ॥ नागरीदासमिटायलल्लकरतिमिलतउरजउरग तिबदली ॥ ७ ॥ चौताल ॥ व्हैंगईभेंटअचांनकबनमेंगहवरठौरअ षममगमाई ॥ गिरतरुसघनसांझअंधियारोतहांदोउलपटांनैंभुजभ रानिसुहाई ॥ सुपनौंसमझिनैंनमूंदिरहेइतउतछुटातिनअंकमालसुधि बिसराई ॥ अतिआशक्तअमलमूर्छितमनकंपितदेहसिथलसियरई ॥ आयसपीसंभरायनिवारेतबलोकलाजगुरजनसुधिआई॥नागरिदई व लेचितवतफिरिफिरिलगनिअगाधाराधाकुंवरकन्हाई॥८॥या अ हुन मकीअलापचारीमैंदेनें ए दोहा ॥ दांनकेलिजोमनवसैं, ताहिनक हूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकबहूंजाय ॥ १ ॥ मेरे नितचितमैंवसो, दंपतिदांनविहार॥ मुषपरझूठीझगरई, नैंननिकरत जुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनिको, दांनकेलिवतरांनि ॥ नैंननि हाहापानइत, उतभौंहैंसतरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसां ., उन ईनीरसनेह ॥ षोरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेहै ॥ ४ ॥ गोरस मांगतकरतदोऊ, नैंनसैंनसनमांन॥ नागरियाकैंहियवसो, दांनरंग बतरांनि ॥ ५ ॥ पदरागगौरी ॥ तिताल ॥ दांनदैरीअष भांनकुंवा रि, छाडिदेहुअबचाराबिचारकरतझगरईहोतअवार ॥ ह गोरस प्यारीकरतझगरईहोतअवार ॥ हाहागोरसप्यारीपाय ॥ यौंझकि झिझकतहैंअनपाय ॥ नागरिनैंननिकरिसनमांन ॥ हसिवसकरि लयेस्यामसुजांन ॥ २ ॥ तिताल ॥ लालनैंकमारगदै जैंपतीनकी

नौं ॥ मोतनमृदुमुसकायभायसौंचितवनिमैंकछुकीनौं ॥ इतउतच
लतनचरनथकीबिचटौंनांसोपढिदीनौं ॥ नागरियाग्वारनिमोहैमिग
प्रगटचोहैंनेहनवीनौं ॥ ४ ॥ इकताल ॥ आयआयहरिगलीहमा
री ॥ गायगायनिकसतगौरीसुनिबौरीमतिनाहिंजातसंभारी ॥ राग
रूपकीडारिठगोरीलयोसुलयोमनमांनिकभारी ॥ नागरियाहमतो
अतिभोरीबेजगतकेबठगियाबडेबटपारी ॥ ५ ॥ इकताल ॥ आजु
सषीभेटभईमोहनसौं ॥ आयअचांनकभुजभरिलीनीफिरनसकीगौ
हनसौं ॥ अजहुंकंपधकधकीहियमैंकहततोहिसौंहनसौं ॥ अबकैसै
नितिवचूंरोकिमननागरवृजजौंहनसौं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ आजुसषी
यातैंभईअबेर ॥ गईहुतीहूंपारिकनंदकैंगोदोहनकीबेर ॥ तहांठाडो
हुतोकुंवरसांवरोभईदृगनिभटभेर ॥ घूंघटबिसरिगईरहिइकटकनट
नागरमुखहेर ॥ ७ ॥ या पदके गायबेकेबीचबीचमैंदैने ए दोहा ॥
मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहुनिमन,
फूलनिबीनतफूल ॥ १ ॥ दोऊमिलिफूलनिबींनहीं, जमुनाकूल
निसांझ ॥ रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलिनिकेमांझ ॥ २ ॥ बन
फूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिरांम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल,
मिलिकैंगोरीस्यांम ॥ ३ ॥ नीलपीतपटछोरछबि, उरझेद्रुमकीभी
र ॥ मुरिसुरझांवनिदुहुंनिकी, मेरैंउरझिबीर ॥ ४ ॥ फूलनिमिस
तियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, फूलरं
गीलीसैल ॥ ५ ॥ पद ॥ जमुनांकैंकूलकूललतारहीझूलरी ॥ तहां
हैसषीहैंनीलेपियरेदुकूलरी ॥ गोधूलकबेरहूतैंव्हैंगईअबेरमैं ॥ देष
तठगीसीरहीदोऊतिहिंबेरमैं ॥ सांवरीओगौरीछबिसोहैंअलबेलीहैं॥

जनगौरीरागनिगावत ॥ वारिजवदनलालगिरधरकोनिरषिसपीस
चुपावत ॥ रूपकटाछिकरतप्यारीपररूपासिंहअलिभावत ॥ २ ॥
तिताल ॥ आवतसषाअंसपरधुके ॥ फेरतकँवलकँवलदलसेट्ट
गमदआलसबसझुके ॥ उरझतचरनमालबैजंतीचलतमंदगतिरुके ॥
नागरियामनलोचनसबकेहरिहीकेव्हैचुके ॥ ३ ॥ इकताल ॥ सब
व्रजकोजीवनिसांवरोसपिआवतहैचलिदेपिरी ॥ जोनिरपतसोरहत
ठगीसिदृगनहिंलगतानिमेषरी ॥ नैनकुसमसरभौंहधनुपसीतापैंकन
कक्तरेपरी ॥ नागरीदासगउनकैपाछैंकाछैंनवलनटबेपरी ॥ ४ ॥
॥ इकताल ॥ लालमनमोहनरी ॥ आवतगोधनसंग ॥ लाल ॥ ल
लितअमैंठाझुकिरह्यो ॥ मन० ॥ फैंटापियरेरंग ॥ लाल० ॥ फैंटा
पियरैरंगरंगभरे ॥ अंबुजनैंनबिसाल ॥ छबिसौंकरचकडोरफिरावैं॥
आवैंमदगजचाल ॥ सोहतसषासमूहचहूंदिसएकदेतमुपबीरी ॥ गो
कुलवधूनिरषिरहिइकटकलागतपलआधीरी ॥ १ ॥ देषिपौरिहिय
हिलगकी ॥ मन० ॥ जहांठाढेठहिराय ॥ लाल० ॥ मुक्तमालतो
रीतहां ॥ मन० ॥ सबकीदृष्टबचाय ॥ लाल० ॥ सबकीदृष्टिबचा
यकियोमिसस्यांमसुघररंगभीनैं ॥ चितवतआपपरोषिरकीदिसऔर
मोतियनिबीनैं ॥ स्वेदकंपघनस्यांमपुलकितनफुरतनहींकछुबैंना ॥
उतगईगइयांउतैंउरझिरहेनागरनागरिनैंना ॥ २ ॥ राग गौरीका
ख्याल ॥ तिताल ॥ बडडेमोतिनवारीलालमेरीबेसरिदे ॥ घरसासु
लरैंगीमतिहीनी ॥ बेसरिअतिरंगभीनी ॥ कहिकौंनकारनतैंलीनी ॥
परतहैंसांझकन्हाई ॥ मनकीमैंसबपाई ॥ चाहोसोनाहिंहौंनां ॥ प्या
रेनागरस्यांमसलौंनां ॥ ३ ॥ तिताल ॥ अरीइनवंसीवारेमेरोमनली

हर्जीकृत ॥ अनियारेलोयनमोहन ॥ माधुरीमूरतिदेषतहीलालच लागिरह्योमनगोहन ॥ हटकतमाततातयौंभाषतलाजनआवततौंह न ॥ हौंअपनैंगोपालरंगरातीकाहिदिवावतसौंहन ॥ संध्यासमैंषरि कतैंनिकसीलियैंदूधकोदौंहन ॥ रूपसिंघप्रभुनगधरनागरवसकी नैंभौंहन ॥ २ ॥ तालचपक ॥ इनअंषियनहौंहारिकौंबेची ॥ परब सभईदईकहाकीजैंपरिगईबातकुपेची ॥ प्रेमदांमतैंबांधिलईहौंआ तुरमदनंदलाल ॥ क्यौंछूटौंब्रजचारुचौंहटैछापदईकरभाल ॥ ना गरीदासजगतसुपियारोमोहिनांहिछिनचैंन ॥ जानैंसोईलगीहोयजा कैंमुसकानिचितवनिसैंन ॥ ४ ॥ इकताल ॥ फिरिफिरिजातहैंलो यनभारे ॥ रूपगरवसौंभरेछबीलेप्रीतमाहितमतवारे ॥ मृदुमुसक निसौंभीजिरहेबिचघूंमतमदनअपारे ॥ नागरियारहिजातचित्रसे चितवतनंददुलारे ॥ ४ ॥ या अनुक्रमकीअपचारीमेंदैने ए दोहा ॥ पिलतकमोदनिकुसमज्यौं, निरषिचंदकीकोद ॥ त्यौंजियसुनत प्रमोदव्हैं, मधुमयरागकमोद ॥ १ ॥ छैलछलीपनघटरह्यो, रागक मोदहिगाय ॥ मगमोहीपनिहारिनी, प्रेमबारुनीपाय ॥ २ ॥ प निहारीहारीपनाहिं, लषिमोहनमुसकात ॥ पनघटिगोसबकोसषी, इंहिमगपनघटजात ॥ ३ ॥ बिषसानियांदृगसरनिजिय, हरतचिक नियांलाल ॥ कनियांव्हैंआवतसपी, जातसुपनियांबाल ॥४॥ ना गरिसिरगागरिधरत, हरिलषिरहीलुभाय ॥ परीरूपबेरीपगनि, डगभरिचल्योनजाय ॥ ५ ॥ पदरागकमोद ॥ इकताल ॥ मतवा रोठाढोबाटमांझ ॥ कठिनभयोघरजैबोसजनीडरलागतत्यौंत्यौंप रतसांझ ॥ सोहतसीसलटपटीपगियां,छुटेबंदउरमदकेफैल ॥ नाग

सबहीसौंन्यारीन्यारीडोलतअकेलीहैं ॥ वीनतहैंफूलफलहिलहतुहैं॥ झमकिझुकावैंझूंमिडारनिगहतुहैं ॥ बेसरिअलकमालउरझतपातुरी॥ वाकीसुरझांवनिमैंउरझीहीजातुरी ॥ मेरीसौंकपटतजिपोलिमुपमौं नहैं ॥ नागरियामोसौंकहिसपीवेकौंनहैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ अर्णामें जोगनहोयाकित्थांजावांमनलैगयावंशीवाला ॥ इनगैलरियांआय कें ॥ मुजपरफूलचलाय ॥ इस्कलपेटीबातसौंकछुकहिगयामुरिमु सक्याय ॥ १ ॥ जबतैंकलपावांनहींपलनलगैंदिनरैंन ॥ कहरकले जेमैंलगीउनननैंनौंदीसैंन ॥ २ ॥ मनमोहनदेकारनैंफिरांउबाहिनपा य ॥ ढूंढांगभरूसांवला ॥ गयामनमथअलखजताय ॥ ३ ॥ रूपउजागरयारबिन ॥ राहिदानहींसयांन ॥ आवगलैंलगि भावते ॥ येनागरादिलज्यांन ॥ ४ ॥ इकताल ॥ जोगियाते रेकौंनटेवपरी ॥ भिछादैंदीलैंदानाहींआवतघरीघरी ॥ पलन हिंटारतहेरिरहतमुषआंपैंलोभभरी ॥ नागरस्यांमचवावचलैंगो यहज्जुरीनगरी ॥ ६ ॥ १६ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमें दै नें ए दोहा ॥ रूपधारघनस्यांमकी, छवितरंगकीझोक ॥ प्रेम प्यासकैसैंमिटैं, नैंननिनांन्हीओक ॥ १ ॥ पतिकुटंबदेषतसबैं, घूं घटपटदियैंडारि ॥ देहगेहबिसरेतिन्हैं, मोहनरूपनिहारि ॥ २ ॥ दृगपौंछतअंतरअधिक, सहीनजातनिमेष ॥ पलपलजलभरिआव हीं, रूपमाधुरीदेषि ॥ ३ ॥ बडोमंदअरिबिंदसुत, जिहिंनप्रेमप हिचांनि ॥ पियमुखदेखतदृगनिकौं, पलकरचीबिचआंनि ॥ ४ ॥ मनमोहनमुषनिरषिकैं, अंषियांनांहिअघात ॥ नागरिदृगनिचको रकैं, सबससिकहांसमात॥५॥पदरागकल्यांण ॥ तिताल ॥ रूपसिं

अबकरदेमुठमरदी॥अपनेसुषस्वारथकेलोभीनजांनतऔरकदरदी॥
नागरीदासमोहनांप्यारेभलेकढेबेदरदी ॥ तिताल ॥ नैंनांयैंहोंल
गेरीआछेनीकेजीयराकौंपरचोरीजंजाल ॥ काहेकौंगईआजुपनि
यांहूंहसिचितयेनंदलाल ॥ बिनजांनैंभईभेटअचांनकालिषीटरतनहीं
भाल ॥ नागरियामेरेदृगनिकरीअबसबसुषकीहठनाल ॥६ ॥ याअ
नुक्रमकीअलापचारीयेंदेने ए ॥ दोहा ॥ अंधियारीघूंघटलियें, नव
जोबनछकपूर ॥ गजगौंनीचलिकैंकरत, गजगरूरकौंचूर ॥ १ ॥
अतिगतिरूपसकौंनकहि, मत्तअदांहनिगौंन ॥ पीठिकटाछिनसौं
गिरैं, दीठसहारैंकौंन ॥ २ ॥ ललनरिझायेचलनिमैं, कलनपरत
दिनरैंन ॥ गतिकउतगलागेफिरैं, पाइनकेसंगनैंन ॥ ३ ॥ लांवनि
ढिगचमकतजरी, पायजेबपन्नांनि ॥ बसीपीयकैंहीयपग, ठुमकि
धरनकीवांनि ॥ ४ ॥ जहांजहांपगप्यारीधरत, तहांपियनैंनाविछा
य ॥ नागरियासुधिस्यांमकी, चलनिदेषिचालिजात ॥ ५ ॥ पद रा
गईमन॥चौतालताल॥ आलीमदनमोहनतैंमोहेरीवाकेनैंनांनितैंचलत
ननेरीयेचलनि ॥ मंदमंदहसिपगधरनिरहीहैंपागिहालिहालिउठैंलट
कुंडलहलनि ॥ हौंहीआईतेरैंगतिकौंतिगकैंहितप्यारीछाडिअैंडदैरी
पैंडगलनिगलनि ॥ नागरीदासलालतलपरचतसघननिकुंजमांझ
कंवलदलनि ॥ २ ॥ चौताल ॥ सोयेदोऊसुषसेजरगमगेस्यामा
स्यामपरमसुषदाई ॥ नेहविबसघुलिनींदघरीघरीचौंकिपरतभुजभर
तकहाई ॥ मुंदिमुंदिषुलतिमहाछविपावतदंपतिअंषियांअतिअल
साई ॥ नागरीदासरैंनियोंबितईनाहींबितईछबिहियमैंछाई ॥ ३ ॥
इकताल ॥ वृंदावनसरदरैंनराकाअभिरांम ॥ रचिहैंरुचिररसिकके

रियाअतिनिडरनंदको, नवजोबनछकिरह्योछैल ॥ १ ॥ इकताल॥ कैसैंकैंजांऊंपनियांभरनमगबिचठाढोकन्हैया ॥ भरीगगरियाआ इकैंरितवैडरतहैंनांहिजुदैया ॥ हौंभोरीवैसीनहिंजांनौंउतवहछैलछलै या ॥ नागरियाडरधरकतछातीहैंब्रजलोगचवैया ॥ २ ॥ इकताल॥ पनियांभरनगईअैसैंपनघटपनिहार ॥ ठाढोईरहैंजहांअरीनितलंग रनंदकुंवार ॥ छलसौंछलीचुराईइंढुरियादईसलिलबिचडार ॥ स कीनधरिकैंसीसगगरियाअतिव्हैगईअवार ॥ आयनिकटउरलाय लईकरिअधरपांनतिहिंवार ॥ नागरियामनलैमोहनकोव्हैंआईउर हार ॥ ३ ॥ इकताल ॥ अरीआजमोहिमोहनअतिभायेउन्हैंहौंहीं गईरीजुभाय ॥ हौंहूंरहीलषिथकितइतैंउतवेऊरहेलुभाय ॥ लोगकु टंबसबकछुकहोअबजियधरिभावकुभाव ॥ नागरियादृगलगनिला लसौंलगिगईसहजसुभाय ॥ ४ ॥ इकताल ॥ मीतपियारोमेरैंचोरी चोरीआवैं ॥ जोसोऊंदुरिअपनीअटातऊअचांनकआंनिजगावैं ॥ लोकलाजडरडरीजातहौंमतिकोऊलषिपावैं ॥ नागरियानिधरक मोहनजियरसबसरैंनिबितावैं ॥ ५॥ रागईमनकाष्याल ॥ तिताल॥ मीतमिलनकीमोहिपुमारीलगीरहैंदिनरैंन ॥ अंगअजकजकपरत नहींजियभरिभरिआवैंनैंन ॥ जबतैंमनमोहनभेटीहूंबिसारिगईसुष सैंन ॥ नागरियाफिरिअधररसासवपियैंबिनांनाहिंचैंन ॥ ३ ॥ इकताल ॥ वाठगियाकहिवालमेरोमनबांधिलीनौंसाथ ॥ नेहडोरि दृढबंधीगरैंइतउतमोहनकैंहाथ ॥ मनपरवसपरिगयोबिचारोजैसैं कोऊअनाथ ॥ नागरियाकहतनबनैंकछुकाठिनाहिलगकीगाथ ॥४ ॥ तिताल ॥ जालिमयारहोअैसीकिनवदी॥ इस्कलगायषबरनहिलीती

सिया ॥ मोहिभलेलगतइतेपैंनागरअंगअंगरसमासिया ॥ २ ॥
॥ तिताल ॥ माईइनिअँपियनिलगानिलगाई ॥ पहलैंआपजा
इकैंउरझीफिरिमोकौंउरझाई ॥ बिनदेषैंमुषकँवलकांह्नकेंअवन
हिंपरतरहाई ॥ नागरीदासआगिरुईबिचिकैसैंदवैंदबाई ॥ ३ ॥
॥ तिताल ॥ सांवरेमोहितेरीसौंरे ॥ बिनदेषैंछिनकलनपरतहैंनैंनानि
हाथबिकांनीहैंरे ॥ ठगताफिरतगोरीभोरनिकौंकछुहसिचितैंयौंयैंरे ॥
नागरियाअपनैंबसकरिकैंबहुरिचलततूअपनीगौंरे ॥ ४ ॥ तिताल॥
एरीनैंनाअटकेहटकनमांनैं ॥ घूंघटओटलाजगुरजनकीतनकनहीं
जियआंनैं ॥ जबहीदृष्टिपरतमोहनमुषइकटकव्हैंउररानैं ॥ नागरी
दासप्रीतिअंतरकोरहनिदेतनहिंछांनैं ॥ ५ ॥ तालचपक ॥ येरी
कांह्नैंजुकहाकरिजान्यौंतराकितरकिउत्तरदेतउतावरी ॥ घोषराज
श्रीनंदसुवनसौंझुकिझुकिझमकतहैंतूबावरी ॥ कोटिकांमबिजईमन
मोहनताकीतूबलिजावरी ॥ नागरियाअनषावनिकोछिनछाडि
छाडिसुभावरी ॥ ६ ॥ ताल ॥ कह्नइयातुमराधेजूकैंआवतहोनिक
टनिकटचलेऐसेकबतैंभयेहोधीट ॥ याबनघनबिचरोकिरहतानित
अंगुरीगहतफिरिगहतहौं पहुंचाचलिनदेतमगनीठ ॥ ऊपररिस
अंतररसपूरतमुखझूठीबातैंजुरेनैंनबसीठ ॥ नागरीदासहिलिमिलि
दोऊएकभएरहेहैंकुंजनिनिसरच्योअतिरंगमजीठ ॥ ७ ॥ इक
ताल ॥ दुरतनहींपटवोटआंपैंकनांवडी ॥ मोहनतनदैरहीपीठयहईठ
पंगपगपांवडी ॥ झुकीलाजकैंभारपरतहैंउमडिनिनेहअमांवडी ॥
सबदिसिसूधैंचलतनागरीडहिंदिसिआंवडीबांवडी ॥ ८ ॥ याअनु
क्रमकीअलापचारीमैंदैंने ए दोहा ॥ लगेरूपकेलोभसौं, रोकेनैंक

लिराधासंगभांम ॥ बैंनाबीनवलयमिलेकिंकिनीमृदंग ॥ नूपुरादि
गांनघोषछयोहैंसुधंग ॥ अंसअंसबाहुबंध्योमंडलअपंढ ॥ गोपिनि
बिचिबिचगुपालधरैंसिषीसिपंड ॥ नितैहोतअंचलचलतलसतपहुप
रैंन ॥ ज्यौंधुजासमूहफहरातमैंनसैंन ॥ मनहुंपवनप्रेरकामिलिगउर
स्यांमसंग ॥ मेघचक्रचंचलाबिलासरासरंग ॥ वासबसअधीरसंग
संगभौंरभीर ॥ झुलतहारपुलतबारनहींसह्मारचीर॥ गिरतकुसमकव
रिनितैंबिबसरसावेस ॥ लटपटायलगतकंठपुलकतनसुदेस ॥ नींवी
कुचपरसपांनचुंबनउगार॥ हावभावलहरबढयोसिंधुरसअपार ॥ मु
रछपरयोमदनवजीदुंदुभीअकास ॥ पहोपवृष्टिहौंनलगीजहांबिला
सरास ॥ बिथकतलपिरहीरैंनहोतहैंनभोर ॥ नागरनटनिरषिभयो
चंद्रमाचकोर ॥ १ ॥ तिताल ॥ थेईतथेईथेईथेईथेईथेईथेईथेई ॥
उघटतलालरसिकमनमोहनरंगभरीनिर्ततहैंप्यारी ॥ मुरजमृदंगट
कोरमिलावतगावतसषीसुघरदैंतारी ॥ ललितअंगभुवभंगचितैंपिय
बिवसभयेबोलतबलिहारी ॥ जगमगरहीरासमंडलमैंनागरियामुषचं
दउजारी ॥ २ ॥

अथ राग कानराका ष्याल ॥

॥ तिताल ॥ राधाप्यारीतैंसांवरेकोमनहरयो ॥ तेरैंहींरसलीन
रहतनितज्यौंजलमीनपरयो ॥ मदनमोहनपरतैंजुमोहनीमोहनमं
त्रकरयो॥ इतउतचितनाहिचलतनागरीरूपजालजकरयो ॥ १ ॥
॥ तिताल ॥ एहोप्यारेनंदलालरसियाकौंनबालउरबसीतिहारैं
तुमज्ञुकौंनउरबासिया ॥ इतीरैंनिबितईज्ञुकहांपियप्यारीबाहुजुगक

बहोछंदबंदकरिल्यावरीकिसोरीअंषियांरहतनहिवोरी ॥ ल्याइब
होदाईनलिवाईअलीगलीगलीधरकतउरलोकलाजभोरी ॥ नागरी
दासराधामोहनचकितदोऊपरीहैंरूपठगोरी ॥ १ ॥ ताल चपक॥
प्यारेहसिभेटीदुलही ॥ किहिंबिधिछूटैंमधुपपीयसौंतियलताफूल
उलही ॥ बदनदुरावतघूंघटपटमैंझलकतअंषियांछविज्ञुलही ॥
नागरियामोहनमुषषोलतसुंदरतातुलही ॥ २ ॥ इकताल ॥ आ
जुरंगहैंनिहोरनांपैंछहरिछहरिउठैंलहरिनेह ॥ प्रथममिलनप्यारी
मुपघूंघटापियषोलतनिजकंपदेह ॥ झीनेचीरझुकौंहींअंषियांसकुच
भरीसुषस्यामगेह ॥ ताहिनिरषिइकटकमनमोहननागरीदासवलइ
यालेह ॥ ४ ॥ इकताल ॥ आजुसुषरैंनविहाई ॥ घूंघट
षोलनिकामकलोलनिरसिगईनिसातिहाई ॥ सुरतरंगरसबसअल
सौंहींमुदतिषुलतिअंषियांरिझहाई ॥ स्यामास्याममिलायसुवायसे
जनागरिसषीसिहाई ॥ रागअडाणौं ॥ अपनीअटारीपरिप्यारी
छूटेबारठाढ़ीबासबसभुलेभौंरभ्रमतहैंकोरकोर ॥ मोहनचकोररहेदे
षिमुषचंदवोरचंदमुषिराधाझुकीदेषतचकोरओर ॥ उतपीतपटगि
रिगईबनमालइतनीलपटउरउडतनजांनैंछोर ॥ नागरियानागर
निहारैंरसरूपमातेसैंनानितैंहाहाकारिडारैंतृनतोरतोर ॥ ५ ॥ ताल॥
सीतलसुगंधपवनमनकौंहरनलाग्योचंद्रमाढरनलाग्योसूचतविहांन
कौं ॥ रहीरैंनिथोरीरिरंगबोरीकौंननींदपरीउठीअकुलायकैंरिझांवन
सुजांनकौं ॥ चातुरीपरमप्रीतआतुरचितनागरीसुजाकेकंठदीजैं
कहाकोकिलासमांनकौं ॥ आयगीअटारीपरछायगीसुगंधतबगाय
गईतांनानिरिझायगईप्रांनकौं ॥ चौताल ॥ आजुराधेजूमोहन

रुकैंन ॥ कहाकहौंइनकीदसा, महालालचीनैंन ॥ १ ॥ रूपरा शिधनपांवहीं, छिनकनतऊअघांनि ॥ नागरियाहगलालची, तजतनलालचवांनि ॥ २ ॥ पदरागनायकी ॥ तालचपक ॥ अहोनैंनमेरेरूपमदिरापियैं ॥ इकटकश्रौकरहतहैंलायैंपरतनांहि बिनचैनलियैं ॥ नंदनंदनरसछकेरैंनिदिनऔरतनकछबिनांहिंछि यैं ॥ नागरीदासमहामतवारेहोयकहातिन्हैंअटकाकियैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ नवलनिकुंजकांन्हरचितहैंसज्याइतउतकौंरहेरीलगि सुरतिश्रवननैंन ॥ नूपुरकीझांईसुनिबनकेचकोरमोरकुहकिकुहकि सबलागेहैंबधाईदैंन ॥ स्यांमचलेसौंहैंस्यामालईहैंभुजानिभारिटरत ननैंननैंनअधरअधरलैंन ॥ आनंदअपारकेलिकोककीकलानि बढ़ीनागरीदासमोपैंकहीनपरतबैन ॥ २ ॥ ताल चौताल ॥ बारसिवारसेमांझचंदसुपहारनबीचबंदहैंछूटे ॥ लटपटायदोऊरहे लपटिकैंअस्तबिस्तपटभूपनपूटे ॥ पौढेस्यामास्यामश्रमितसुपबल यपंडबिपरेकहूंफूटे ॥ नागरियाएकांतविपुनमौंनिसबटपारमदनल रिलूटे ॥ ३ ॥ याअनुक्रमकोअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ नैंनभंव रभयभारतैं, बैठिनसकतिनिसांक ॥ नवतदीठिकैंलगतही, लौंगल तासीलांक ॥ १ ॥ दुरेदुरायैंक्यौंकुंवारि, भौंनअंध्यारैंसांझ ॥ दिपैंअंगफानूसज्यौं, संगसषिनकैंमांझ ॥ २ ॥ नपसिषलौंअति सौंहनी, नांहिनकछुसमतूल ॥ रूपलतालागेमनौं, मुसकनिचित वानिफूल ॥ ३ ॥ नागरियालषिथकितहग, मतिबरनतभईपंग ॥ छबिउलहनिजातनकही, नवदुलहनिकेअंग ॥ ४ ॥ पदरागनाय की ॥ चौताल ॥ मोमनकुंवरिदेषिवेकीलागिरहीअतिढोरी ॥

थमुसकायनैंनभरिकहतजोरिकरप्यारो ॥ नागरियाहितसौंनाहिंऊ रनहौंनितरिनीतिहारो ॥ ११ ॥ तिताल ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलब्रजबाला ॥ अद्भुतमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनस रससुरलीनौं ॥ लीनौंसरससुररागरंजितबीचमिलिमुरलीकढी ॥ हौं नलाग्योनृत्यबहुबिधिनूपुरनिधुनिनभचढी ॥ डुलतकुंडलषुलतबैं नीझुलतमोतिनमाला ॥ धरतपगडगमगाबिबसरसरासरच्योनंद लाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अभिनयदृगभौंहानिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुकअंकमालभरिझेलत ॥ झेलतभुज निभरिअंकनिसंकतमगनप्रेमानंदमैं ॥ चारुचुंबनअरुउगारहिधर ततियमुखचंदमैं ॥ उडतअंचरप्रगटकुचबरग्रंथपटकसिछूटैं ॥ ब ढ्योरंगसुअंगअंगचितहावभावनिलूटैं ॥ पगनिगतिकउतिगमचैं ॥ कटिमुरमुरिमध्यलचैं ॥ सिथलकिंकिनीसोहैं ॥ मुकटलटकमनमो हैं ॥ मोहैंजुमननटमुकटलटकनिमटाकिगतिपगधरनकी ॥ भंवरभर हरचहूंदिसिछबिपीतपटफरहरनकी ॥ गिरचोलषिमनमथमुराछिलै भजिरतिमुषमधुअचैं ॥ नचतमनमोहनतृभंगीपगनिगतिकउतिग मचैं ॥ बृंदावनसोभाबढ्यो ॥ तापरव्यौंमबिमांनानिसौंबढ्यो ॥ दुं दभीदेवबजावैं ॥ फूलनिअंजुलिबहोबरषावैं ॥ बरषैंजुफूलनिअंजु लीबहोअमरगनकउतगपगे॥ बिबसअंकनिजवधूहियनिरषिमनमथ सरलगे ॥ ह्वैगयेचरथिरसुथिरचरसरदपूरनससिचढ्यो ॥ दासना गरिरासऔसरबृंदावनसोभाबढ्यो ॥ १२ ॥ इकताल ॥ रह्योरंगषे लतरासरसाला ॥ नूटिगयेहारछूटिगयेअंचरुश्रमडगमगनिमराला ॥ जुवतिजुथजुतधसेजमुनांबिचिमदनमोहनातिहिंकाला ॥ क्रीडतजनु

संगरंगभरींगावैं ॥ सुनितांनानिकीझांईकहाकांननिकौंआवैं ॥ आधीरातचनकमूंदिबिमलचंदचांद्रिकामैंहैंरहीथकितकुंजकोकिला लजावैं ॥ तैसियैंमृदंगकीटकोरहैंसुधंगरंगदेवीजूकेहाथकीसोभ्र वनसुहावैं ॥ नागरियानागरकेजीलकीतरंगानिसौंरंगभरेवृंदावन मोरकुहकावैं ॥ ७ ॥ इकताल ॥ नवलनिकुंजअटारीपरवृंदाव नकीसोभादोऊगावत ॥ निसउजियारीकहादूरतैंरागअडानेंकी धुनिआवत ॥ सुनतगांनबिथकतद्रुमबेलीपवननपातडुलावत ॥ पियनागरहूतैंप्यारीकीतांनरंगसरसावत ॥ ८ ॥ इकताल ॥ नंदनंदनचंद्रमावल्लबकुलकुमदवृंद ॥ जलदसघनकुंजचारुस्र वतसुधावेणुगानविपुनविपुनप्रतप्रकासअनुपमछबिदुतिअमंद ॥ अद्भुतस्वयंरूपदिव्यबिमलजौंन्हप्रव्रतरासकेलिकलाकोविदआनंद कंद ॥ नागरव्रजपतिकुमारपस्यतमुषसंबरारिविस्मयज्ुतनम्रग्रीव चरनकमलबंदवंद ॥ ९ ॥ इकताल ॥ हरिसंगहुतीसोअकेलीवह ठाढी ॥ दामिनिसीदेहकोप्रकासआसपासदेषिरहीद्रुमबेलनिमैंचि त्रकीसीकाढी॥ क्वासिक्वासिपियपियपियकहिकहिटेरतमहाबिरहकी बेदनिबाढी ॥ नागरीदासरासरसबरसायहायहायकितदुरेघनस्यांम दुषितहैंगाढी ॥ १० ॥ ताल ॥ वैठेजायपुलिनमैंरासिकाविहारी ॥ बीचिआपव्रजचंदमनोहरउडमंडलव्रजनारी ॥ नवनिचोलअपअ पनैंसबमिलिआयबिछायदये ॥ तनथिरदामिनसेंनिकसेपटबदराउ तरिगये ॥ बंकभौंहनैंनारसमातेछुटिअलकैंअलबेली ॥ प्रेमबिबस बूझतपियकौंतियहसिहसिप्रेमपहेली ॥ इकभजतेकौंभजतएकबिन भजतेभजई ॥ कहाकुंवरतेकौंनजेबइनिदुहूनिकौंतजई ॥ समझिस्र

+ परजतिताल॥चौपरिचतुरनिपेलकीबाजीरंगलेरही॥कुंजमहलरसकउतकसपियांसबमनअंषियांदेरही॥१॥ यौंसुषहीसुषवीतिगईनिससूचतसमैंसवैंराहि॥ नागरियापासनिउरझेपियक्यौंसुरझैंइहिवेरही॥२॥ दोहा॥ रगमगरहीचौपरिचहुल, प्रीतमरहेनिहारि॥ दीपकढिगजागिमगिरही, लडकीलीसुकुंवारि॥१॥ नथलटकनिकुंडलहलनि, हारनिझुलनिनिहारि॥ जबझुकिपासेडारहीं, लडकीलीसुकुंवारि॥२॥ दोहा॥ रूपलोभपक्केपिया, कच्चेहोतहैंसारि॥ त्यौंत्यौंचितवतसतरव्है, लडकीलीसुकुंवारि॥॥३॥ वचननिरादरपेलमैं, लालहिलगतसुप्यार॥ चालिरुगटीहंसकहतयौं, लड़कीलीसुकुंवारि॥४॥ दोहा॥ समझिदावपियचूकिकैं, सारिहिचलतसह्मारि॥ पकरिपिछौंहोंदेतकर, लडकीलीसुकुंवारि॥५॥ बेसरिबंसीपीतपट, हारदयेपियहारि॥ मनहूंलीनौंजोतिकैं, लढकीलीसुकुंवारि॥६॥ दोहा॥ लालचलेजुगजोरि

सूचना–

+ यह चिन्ह किया है सो (परज तितालका) पद ओर १ से लगाके ८ तक आठ दोहे इस पदके चौफेर चौपडकी आकृतिमें मूल ग्रंथमें था. परंतु स्थानके अभावसे इस पुस्तकके इस पृष्ठ मे स्पष्ट आशका नहीं इस लिये सीधा लिया सो इस मुजबहै विचमें परज तितात उस्के ऊपर १–२–अंकका दोहा. वामे तर्फ ३–४ का दोहा दहने तर्फ ५–६ का दोहाओर नीचे ७–८ का दोहा इस मुजब जानना चाहिये।

करनीसंगलीनैंमत्तद्विरदनंदलाला ॥ गौरैंअंगमहाछविपावतभीजे बारिबिसाला॥मनौंसीतलचंदनपुतरीनसौंलगीलपटिआहिमाला॥ छबिसौंछीटनिषेलमचावतप्रेमविबसब्रजवाला ॥ जनुउच्छवकालिंद्री ग्रहउछरतमुक्तनिकेजाला ॥ वाहुसुंडअवगाहिनीरिवलदीरचलेगज चाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरामिआयेगेहगुपाला ॥ १३ ॥ याचोप रिकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ प्यारीपियसपियनस हित, चोपरिपेलतबैठ ॥ मनौंमदनपुरचोहटै, लगीरूपकीपैठ ॥१॥ छलझनकचुरियांझनक, पासेठनकतसंग ॥ ब्रजवतगुनीअनंगमनु, जलतरंगजुतरंग॥२॥ स्यांमसारिगोरीचलत, चांपिचहुंटियनिचार॥ मनहुंकवलकेअग्रव्है, आवतभृंगकुमार ॥३॥ जरदनरदघनस्यांम पिय, द्वैअंगुरिनगहिलेत॥मनौंकोयलकीचंचुमैं, पीतअंवछबिदेत॥ नागरिपासपरानिकी, इहउपमादरसांन ॥ हाथरूपसरतैंमनौं, लह रैनिकसतजांनि ॥ ५ ॥ तिताल ॥ रागपरज ॥ मैंजांनेहोसुघरजैसें चोपरिषेलतरावरे ॥ सीषेहोकहांतुमसारिपासेएदेतअटपटेदावरे ॥ मांनतएकसारजुगव्हैबोअपनीचौंपकेचावरे ॥ नागरपियबरजोरी जीत्योचहोरंगीलेछबीलेअरबीलेलालकरिकरिकपटउपावरे ॥ २ ॥

दिनिरषिलुभांनी ॥ २ ॥ सबकीपलकलागतनांह ॥ आएतियमंड
लकैंमांह ॥ पियमुषफैंटाछौरिदियैं ॥ प्यारीघूंघटझुकनिलियैं ॥
लियैंघूंघटझुकनिलषिमतिथकीकरनिप्रसंसकी ॥ नंदसुतवृषभांनत
नयाचलतगतिकलहंसकी॥लेतभांवरिगंउरसांवरकलपद्रुमकीछांह॥
दुलहीदूलहदेषसबकीपलकलागतनांह ॥ ३ ॥ दोऊब्याहानिसकेर
समसे ॥ सषीनिकेनैंननिमांझबसे ॥ राजतजुगलनेहकेभरसौं ॥ जो
रनिअंचरअरुकरकरसौं ॥ करसौंजुकरजोरैंपरसपरपहुपबरषावैंस
षी ॥ कुंजकौतकरूपगहमहभईअंषियांमधुमषी ॥ रचीफूलनितल
पदिसचलिचितैंचितवनिमैंहसे ॥ रहोनागरहियबसेदोऊब्याहनिस
केरसमसे ॥ ४ ॥ इकताल ॥ चितवनिहीयहऔरपरमअनुरागकी ॥
उमडीहैंमैंनसैंनसैंनानिमैंबनीबनाकेभागकी ॥ अबचालिओटनिरषि
येनीकैंलीलालोचनलागकी ॥ नागरीदासधन्यवृंदाबनधनियहरी
तिसुहागकी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ गिरधरदूलहपरमसलौंनां ॥ वाकीह
सिचितवनिमैंटौंना ॥ दुलहदुलहनिरूपलुभाये ॥ प्यारीजूकछु
कचितैंमुसकाये ॥ प्रीतमअंकमालकरिलीनी ॥ बाढीहैंमनमथकेलि
नवीनी ॥ टूटेहारउरडोरी ॥ दुलहनिसुरतिसिंधुझकझोरी ॥ दोऊश्र
मितसेजामिलिसोये ॥ अधषुलेनैंनमैंनरंगभोये ॥ प्यारीजूनिद्रावसि
व्हैंजावैं ॥ तबउठिपियपायनिसहरावैं ॥ इहिंविधिसुषहीसुषनिस
बितई ॥ नागरीनवलकेलिदुरिचितई ॥ ६ ॥ या अनुक्रमकी अ
लापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ नितदुलहनिनवनागरी, हरिदूलह
नितहेत ॥ नितविवाहवृंदाविपुन, नितचौरीसंकेत ॥ १ ॥ दूलह
दुलहनिकँवलमुष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिदृगाचितवनिभांवेर,

कैं, नीलपीतरंगसारि ॥ समुझिसकुचिहसिझुकिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ७ ॥ बाजीबाजीउठिचली, बाजीलगनिविचारि ॥ हियवाजीनागरिमिली, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारिमैंदैने ए ॥ दोहा ॥ नितदुलहनिनवनागरी, हरिदूलहनितहेत॥ नितबिबाहबृंदाबिपुन, नितचौरीसंकेत ॥ १ ॥ दूलहदूलनिकंवलमुष, रहतानिहारिनिहारि ॥ अलिदृगचितवनिभावरैं, भरतदोऊरिझवार ॥ २ ॥ दुलहनिझीनैंचीरदृग, झांईछविझलकात ॥ लालजालघूंघटरुके, षंजरीटअकुलात ॥ ३ ॥ रसविवाहसुषनिरषिकैं, लोचनसमझिसिहात॥ मनामनोहीराषिये, बनावनीकीबात ॥ ४ ॥ फूलनकेसिरसेहरे, झलकतप्रगटसुहाग ॥ बसनसहांनेतनफबे, मनुपहरचोअनुराग॥५॥मंगलरैंनिसुहागको, गावतसषीप्रवीन॥ब्याहविलासअनंगरस, बाढ्योरंगनवीन॥६॥मंगलकुंजाबिबाहनित, दंपतिबितनबिलास॥ व्हैअलिनितिप्रतिलहतसुष, नवलनागरीदास ॥६॥ पदरागबिहागरो ॥ श्रीबृंदावनसुषदाई ॥ तामधिनवलानिकुंजसुहाई ॥ झुकिरहेबहोद्रुमफूलनिफूले ॥ डोलतमधुपबासबसभूले ॥ भूलेमधुपबसबासडोलतत्रीबिधिबहतसमीरहैं ॥ घुमंडिरहीधुंधरिकुसमरजमनहुमंडपचीरहैं ॥ कोकिलाकलकीरगावैंनित्यविहारनिकाई ॥ नृत्तकारीमोरतहांश्रीवृंदावनसुषदाई ॥ १ ॥ ललितादिनिरषिलुभांनीं ॥ अतिछबिपुंजकुंजदरसांनीं ॥ आनंदउरनसमावैं ॥ मिलिमिलिगीतमनोहरगावैं ॥ गावैंमनोहरगीतामिलिजहांवनीचौरीचारुहैं ॥ परममंगलरैंनराकारच्योव्याहविहारहैं ॥ मोरमोरीसीससजिकैंजोरसुंदरआंनी ॥ वसनमूहेतनलसनललिता

बिपुंजकुसमितमहाकरतअलिगुंजमनुरुंजबाजैं ॥ जौंह्लजगमगसुम
नवासरगमगतहांमदनडरढगमगतलाजभाजैं॥ कमलसैंनीयपरकम
लनैंनीकमलनैंनचैंनीरंगेरंगरैंनी ॥ लालकीअलकपरबालफूलहिध
रचौंफूलसौंलालरचीबालबैंनी ॥ हारमैंहारपियकरतमनुहारकर
हारटूटैंबिथुरिबारछूटैं ॥ सुरतसुखसुभटदोऊलिपटहींनिपटद्दढकं
चुकीपटकपटग्रंथपूटैं ॥ गउरसांवरअंगसंगअतिरंगभुवभंगद्दगद्दग
निमैंपंगकीनैं ॥ मंदबतरानिमैंदामिनीरदनदुतिछबिसदनबदनर
समदनभीनैं॥ मधुरमधुअधररसनांरसतहसतमुपहसततांबोलदैंहीं॥
बंधेभुजपाससुभवासपुलकितअंगनागरीदाससुषरासलैंहीं ॥ ४ ॥

मंगल चौंरी ॥

+ रागषंभावची ॥ताल॥ नवलरंगभीनीराति ॥ देषिदेषिमंगलकुंज
सिहाति ॥ राधामोहनब्याहचाहजुतमुपसोभाउफनात ॥ देषिथकी
निससमैंमनोहरभयोनचाहैंप्रात॥ नागरीदासकुसमद्रुमफूलेमनहुजौं

सूचना-

यह मंगल चौंरीका पद तथा दोहे मूल ग्रंथमें गोलाकार प्रका-
रथा. बिचमें पद राग षंभावची ताल ओर चाहुं ओर गोलाकृतिमें
दोहे ६ थे सो स्थाना भावसे आया नहीं सो इस प्रकार जानिये
इस पदके आस पास जो जो अंक सो सोही दोहे ।

४	१	२
	पद	
५	६	३

भरतदोऊरिझवार ॥ २ ॥ दुलहनिनैंचीरट्टग, झांईछबिझलका
त ॥ लालजालघूंघटरुके, पंजरीटज्यॉंगात ॥ ३ ॥ रसविवाहसुष
निरषिकैं, लोचनसमाझिसिहात ॥ गांमनिहींरांषिये, वनांबनी
कीबात ॥ ४ ॥ फूलनकेसिरसेहरे, झकतप्रगटसुहाग ॥ बस
नसहांनैंतनफब्यो, मनुपहरचोअनुराग ॥५ ॥ मंगलरैंनिसुहा
गको, गावतसषीप्रवीन॥ब्याहविलासअनंगन, वाढचोरंगनवीन ॥
॥ ६ ॥ मंगलकुंजविवाहनित, दंपतिबितनलास ॥ व्हैंअलिनि
तप्रतिलहतसुष, नवलनागरीदास ॥ ७ ॥राग ॥ तालचपक ॥
रहसिमंगलरा ॥ आजप्रगटचोहेहरिराधानेहवृंदवनन्वधाईयां ॥
रचनायेमाईरचीहैंबिवाहव्रजदेवीपधराईयां ॥ गाभाईमंगल
गीतजुवतीसबैंउमाहियां ॥ फूलेहैंद्रुमनानाभांतिवनधुमडाई
यां ॥ नाचैंयेमनमगनमयूरकोकिलकोहकसुनाईयां ॥दूलहयेन
वदुलहनिजोररुचिरसिंगारवनाईयां ॥ मौरीयेनवमंजुमौरदुहूं
निसीसछविछाईयां ॥ ल्यायोहेवरविप्रमनोजलगनन्त्रमिला
ईयां ॥ चौरीयेनवनिभ्रतकुंजसुवनसेजबैठाईयां ॥ तहांनयेको
ऊऔरसमीपसवसषीसमझिदुराईयां ॥ करसौंयेकरिपांनग्रहनअंचर
प्रीतिजुराईयां ॥ भांवरियेदईकुंजकुटीरजमुनांसाखिकराईयां ॥
चुंबनयेकरदयोउगारमदनदच्छिनांपाईयां॥ बिथुरेहैंवरवारविशाल
मनहुंचँवरफहराईयां ॥ किंकनीयेकलबजतानिसांननूपुरधुनिमन
भाईयां ॥ सुंनिसुंनियेललितादिकओटलेनहैंअलछबलाईयां ॥ इहिं
वनयेनितराधाकंतलीलाकरतसुहाईयां॥ नागरियाकहीबातनजातपैं
उरमैंउरराईयां ॥ ३ ॥ रागपंभावचीचर्चरी ॥ सषीदेषिनवकुंजछ

नैंगरबांहीतनफूलनिकेसोहतसिंगाररी ॥ फूलनिकीफूहीहलिवरषै लताईहोतैसीफूलनिकीवहतबयाररी ॥ फूलीहैंजुन्हाईफिरीमदनदु हाईरहेअरुझिगउरस्यांमगातरी ॥ फूलनिसफलकरीनागरियाआ जभईपरमसलौंनीयहरातरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ आंनकविक्रत ॥ सु रंगीसेजारंगमगरह्यासुषसैंण ॥ हारांउलझ्याहारहियारानैंणांउल झ्यानैंण ॥ मनमथअमलअगाधाबोलैंआधाआधाबैंण ॥ रसिकबि हारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतबितईछैरैंण ॥ ६ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ रापेनैंनबिछायकैं, लालपहोपदलगो द ॥ पायमहावरदैंनकौं, बढ्योमहाउरमोद ॥ १ ॥ रमापलोटतच रननित, जाकेसहजसुभाय ॥ सोवृषभांनकुमारिकैं, देतमहाउरपा य ॥ २ ॥ कंवलचरनापियचतुरलपि, इकटकरहेलुभाय ॥ लियैंम हाउरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजाय॥३॥रंगभरतपगदुहुनिअति,वाढ्यो रंगअनंग॥ नागरियाकेदृगनिवह, लग्योसुछुटतनरंग॥४॥पदरागवि हागरो॥तालचपक॥बीनबीनफूललालजावकबनायराख्योअैहैंप्यारी राधारंगपायनिमैंलगैहौं॥मंदपौंनपातकुंजआहटतैंचौंकपरैंजानैंकब देषिनैंननैंननिमैंषगैहौं॥आयमिलीबालअंकमालभरिबैठेलालपौंछत चरनआछैपीतांबरछोरसौं॥आधैंमुषघूंघटमैंआंगुरीदसनधरिनागरि निहारिरहीनैंननिकीकोरसौं ॥ १ ॥ इकताल ॥ लालरंगेरंगजावक सौंचरननिहारैं ॥ लीनैंकरकँवलमैंभीनैंरंगपायप्यारोताहिदेषिरीझि रीझिमनधनवारैं ॥ तबपियसीसनायनैंननिछुवायोचहैंदोऊमुषझे लिपगननिकारैं ॥ नाहिंनसम्हारैंअंगनागरनिहारैंरंगआधीरातकुंज वोरचंदउजियारैं ॥ २ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलेपगेप्रेमरसघातनि॥ हं

न्हमुसक्यात दोहा ॥ दुलहनिगोरीराधिका, दूलहस्यामसुजांन ॥ ब्याहसमैंसंकेतमैं, ललितारचतावितांन ॥ १ ॥ दोहा ॥ चहलपहल आनंदमहल, रंगरलीसुषहेत॥नेहग्रंथजोरैंवसन,दोऊभांवरैंलेत॥२॥ दोहा ॥ पवनपरसघूंघटहलत, रुचिररूपदरसात ॥ दुलहनिकोमु षनिरषिकैं, पियइकटकव्हैंजात॥३॥ दोहा ॥ दूलहदुलहनिकंवलमु ष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिदृगाचितवनिभांवरैं, भरतदोऊरिझ वार ॥ ४ ॥ दोहा ॥ करसौंकरजोरेदोऊ, करतहंसगतिगौंन ॥ गा वतमंगलगीतमिलि, चलेभांवतेभौंन ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कुसमसेज बिहरतदोऊ, तहांनकोऊपास ॥ व्हैंभँवरीदंपतजुगल, नवलनाग रीदास ॥ ६ ॥

आंनकाबिकृत ॥ रागषंभावची तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदुलहनिरंगभरेपियस्यांमसुंदरसुखदैंन ॥ रंगभरीसैंनरिचीज हांरंगभरयोउलहतमैंन ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसु षसैंन ॥१॥ आंनकाबिकृत ॥ या पदके बीच बीचमैं दैने ए दोहा ॥ गहगडसाजसमाजजुत, अतिसोभाउफनात ॥ चलिबिलसोमिलिसे जसुष, मंगलगलतीरात ॥ १ ॥ रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटिअनंग ॥ करोमदनमनुहारमिलि, सबरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चले दोऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीलालितगति, रंग रसमसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीसुखसदन, आयेरससरसात ॥ प्रे मबहुतथोरीनिसा, व्हैआयोपरभात ॥ ४ ॥ रागपरजतिताल ॥ स षीआज्ञनिराषिसुषपुंजरी ॥ तहांमैंनगांनअलिगुंजरी ॥ दंपतिहिय फूलनिलियैंहो॥बहुफूलनिसौंफूलीनवकुंजरी॥ फूलनिकीसैंनीपरदी

नकीप्रेमपहेली ॥ ८ ॥ तिताल ॥ होमेरोमनमोहिलयोस्यांमसुजा
न ॥ नैंननिनैंनांमिलायभायसौंचितवनिकरिसनमांन ॥ तबतैंकलन
परतब्याकुलनितभावतषांननपांन ॥ नागरीदासप्रीतिकीबेदनिजा
नैंनलोगअजांन ॥ ९ ॥ इकताल ॥ कन्हैयानांजांनौंकहाकीनौं ॥
तेरोमुषदेषतहीतेरैंव्हैंगयोमनआधीनौं ॥ भौंहनिमैंकिनैंनबैंननिमैं
टौंनासोपढिदीनौं ॥ नागरीदासमोहनांप्यारेमोमनतैंहरिलीनौं १०॥
आंनकबिक्रत ॥ इकताल ॥ तिताल ॥ रतनालीहोथारीआंपडियां॥
प्रेमछकीरसबसअलसांणींजांणिकंवलकीपांषडियां ॥ सुंदररूप
लुभाईगतिमतिहोइगईज्यूंमधुमापडियां ॥ रसिकबिहारीवारीप्यारी
कौंणबसीनिसकांषडियां ॥ ११ ॥ आंनकबिक्रत ॥ ताल ॥ मोह
नजीह्मारैंथेकांईहठलाग्याछोजी ॥ जाबाद्योघरछोडोछेहडोथेरसबा
तांपाग्याछोजी ॥ आंप्यांथांकीछैंरतनालीसारीनिसराजाग्याछो
जी ॥ रसिकबिहारीप्याराह्मांनैंथेओरांसूंअनुराग्याछोजी ॥ १२ ॥
आंनकाबिक्रत ॥ तिताल ॥ रंगिरह्याजुगलरूपरंगमांहीं ॥ कुंजमह
लमैंदर्पणसाह्मैंदियांरहैंगलबांही ॥ कदेकसंभ्रमव्हैंस्यामारैंनेडैंस्यां
मछतांहीं ॥ कदेकरीझिरहैंरसिकाबिहारीदेषिदेषिपडछांहीं ॥ १३ ॥
आंनकबिक्रत ॥ तिताल ॥ चिरतालीतैंनंदकुंवरमनमोह्योहेकांमण
गारी ॥ बसिकरिवारामंत्रतोजिसासीपीकुंणवृजनारी ॥ दिनअर
रैंणसैंणरैंकारणअंगअंगरहैंसंवारी ॥ भलोकियोआधीनआपणैंप्री
तमरसिकबिहारी॥१४॥आंनकबिक्रत ॥ तिताल॥ येबांसुरियावारे
असैंजिनबतरायरे ॥ यौंनबोलियेअरेघरबसेलाजनिदाविगइहायरे॥
हौंधाईयागैलहीसौंरेनैंकचल्योधौंजायरे ॥ रसिकबिहारीनांवपायकैं

सिहंसिकरतभांवतीबातनि ॥ दोऊचितचतुरलगावतचोरी ॥ देहैपगभूपनचोरीगोरी ॥ दुहुनिमैंप्रीतझगरैयांपरहीं ॥ प्रियजियप्रेमउमगिभुजभरहीं ॥ दुहुंनिमैंरसदुरिघुरिघुरिआवत ॥ मुरिमुरिअधरानिसैंनवतावत ॥ दुहुंनिकेउरझेतनमननैंना ॥ कहाकहूंनैंनानिकैंनाहिबैंना ॥ दुहुंनिकौंअंगसह्मारभुलांनी ॥ रंगमैंसबनिसिजातनजांनी ॥ दोऊजहांआईअमलजुन्हाई ॥ सोएलपिनागरिकुंवरकन्हाई ॥ ३ ॥ रागपरजकाष्याल ॥ इकताल ॥ एअंषियांनाहिंदुरैंदुराईं ॥ क्यौंरहैंदबीप्रीतिअंतरकीहोयकहाकीनैंचतुराई ॥ हटकीरहतनांहिलापनिमैंप्रेमछकीउरझैंरीमाई ॥ औरहीदसाभईतेरीसौंसुंदरसांवरैंरूपलुभाई ॥ प्रगटहौंनकैंहेतसपीमैंएअंषियांवहौबिधिसमझाई ॥ नागरीदासअंतमोमनकीतैंपाईसोपाईहीपाई ॥ ४ ॥ तिताल ॥ एरीमनसुंदररूपलुभायो ॥ गयोहुतोताहीछिनहूतैंबहुरिनमोपैंआयो ॥ घरघरैरुसह्योयाकाजैंसबग्रहकाजछुटायो ॥ नागरियामनजनमसंगातीव्हैंगयोमीतपरायो ॥ ५ ॥ तिताल ॥ चतुरहसिचितवनिमैंमोही ॥ गिरतसंभारिलईहूंभुजनिभरिसोसुधिनांहिंनकोही ॥ ताछिनतैंचितवढीचटपटीनिपटअटपटीगांस ॥ नागरीदासचुभीक्यौंनिकसैंबंकाबिलोकनिफांस ॥ ६ ॥ इकताल ॥ भुराईहैरेठगोरेनैंना ॥ देषतिहीरहिजाऊंभूलिकैंउडतउरजउपरैंना ॥ करतबिवसमोहभरीदृगनिमैंमदनमोहनीसैंना ॥ नागरीदासरूपकीआतिगातिकहींनपरतकछुबैंना ॥ ७ ॥ इकताल ॥ काहितनबनैंनिपटअटपटीबातहेली ॥ चिततैंछिनइतउतजुटरतनाहिंमोहनछबिअलबेली ॥ चढीनेहचितवनिकीलहरैंधीररहतनहिंपीरनवेली ॥ नागरीदासनवरानिसकौंकछुम

॥ जमुनांबिचझिलमिलकीसोभाकँवलकूलसुषकारी ॥ नावडगमगैं डरलपटावैंरसिकबिहारीजीसौंप्यारी ॥ २२ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ करिभौंहैंबांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंवैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीकेनैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसषीकिहिंकारनैं, पहरेपलटिसिंगारि ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकांन्हकैं, मांनकरोबेकाज ॥ राधाबल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअनषावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भयेतृभंगीस्याम ॥ ४ ॥ पदरागपरज ॥ इकताल ॥ मानगयेहैंछूटिसुंदरसांवरेसौंनेह ॥ सषीवचनसुनिगवनकीनौंमंगलरवनअछेह ॥ रूपकीआगरीनागरियावलिपुंहचीहैंआनंदैंगेह ॥ मिलीहैंगोकुलचंदसौंचंद्रिकाकौतिककुंजबिदेह ॥ १ ॥ तिताल ॥ कुंजतैंआवतहैंजमुनातटिनागरनागरिसंगलियैं ॥ चंदकीचांदनीछायरहीहैंतैसेईस्वेतसिंगारकियैं ॥ गावतरागजमावतसहचरिआवतआसवप्रेमापियैं ॥ देषिलगीनवकासलितातटनागरियाआनंदहियैं ॥ २ ॥ ति० ॥ विहरतनवकाबैठिबिहारी ॥ जमुनांजगमगजौंन्हिजामिनीकँवलकूलसुपकारी ॥ मिलवतबीनप्रबीनसहचरीगावतपरजपियारी ॥ कबहुकनीरनीरजकरलेतहैंभांमिनस्यांमसहारी ॥ उरकरपरसतचौंकिचाहिमुषनैंननिकांमकेलिबिसतारी ॥ अदभुतसुपसलितामैंषेलतनागरियाबलिहारी ॥ ३ ॥ तिताल ॥ वृंदाबनकीतलहटीडौलैंजमुनातीरतीर ॥ जटितश्वेतनगनावबैठिदोऊसांवलगौरसरीर ॥ चलवतचपलचारुचंपावलिसजिसहचरितनसषाचीर ॥ गावतजातस्यामसुंदरगुनपूरि

क्यौंइतनौंइतरायरे ॥ १५ ॥ रागसोहनी ॥ इकताल ॥ अमांनीअं षियांदरसदिवांनी ॥ रूपआगबिचब्रेसकहूईगिरदीहैंउररांनी॥इस्क अमलसौंझुकीरहैंदींछिनछिनवरषतपांनी ॥ नागरनवलइतेपरादिल बरहूवारहतगुमांनीं॥१६॥तिताल॥ मनमेरोरीवरज्योनहिंमांनैं॥प्रगट करतहैंअंतरकीसवरहिनदेतनाहिंछानैं॥ नेहबायबौरांनेकीगतिजोजा नैंसोजानैं ॥ पैंच्यौरहतनजायलगतहैंनागररूपनिसांनैं ॥ १७ ॥ ॥ चौताल ॥ अरीइनिअंषियनसौंपचिहारी ॥ एमेरैंबसनांहिभईं हौंअपनैंबसिकारिडारी ॥ इतउतउझकतरहतचकितव्हैंदेषैंविनां दुष्यारी ॥ जबहिंदृष्टपरतमोहनमुषजातनतनकसह्मारी ॥ कबल गिलैंनिबहौंइनिभांतिनगृहकुलकांनिबिसारी ॥ नागरिदासभईये बैरनिदैंहुंकहाकहिगारी ॥ १८ ॥ आंनकविक्कत ॥ तिताल ॥ प्यारीजीरासाल्हूडामैंआवैछैंसुगंधीरूडीवास ॥ अंगमरगजीगंधलु भायांभंवरभवैंआसपास ॥ लटपटैब्रेसआणिऊभारह्याआंगणाकुंज निवास ॥ रसिकविहारीपवनढुलावैंषासाहोयषवास ॥ १९ ॥ आ नकविक्कता ॥ तिताल ॥ होरंगीलीबाजीलागिरहीछैंनैंणांमैं ॥ जांणींकामकटाछांहींकादेषिदावदैंणांमैं ॥ कांपैंअंगअनंगरंगसुर भंगहुवोबैणांमैं ॥ रसिकविहारीमनफूलबढीहुईहारजीतसैंणांमैं ॥ ॥ २० ॥ तिताल ॥ देषोसषीरीदेषोदोऊबैठेनावमैं ॥ गावतआवत चपलचलावतसहचरचंपाचावमैं ॥ स्यामास्यामादियैंगरबहियांन वकाबिचरसभावमैं ॥ नागरनवलसषीनिकीअंषियांलगिलपटील पटावमैं ॥ २१ ॥ तिताल ॥ आंनकविक्कत ॥ आजकीरात आछीलागैछैंउजारी ॥ बिहरैंस्यामास्यामचावसौंसुंदरनावसिंगारी

जमनकौंअगम, सेवतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअ षंडितरंग ॥ १ ॥ प्रेमरासिदोऊरसिकबर, बिलसतनित्तबिहार ॥ ललितादिकनितलेतहैं, तिहिसुषकोरससार ॥ २ ॥ नैंननिनैंनसिरावही, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुहांचहींजियज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतंत्र ॥ ३ ॥ कहूंउजारोचंदको, कहुंपातनकीछांह ॥ रंगभरेराजततहां, पियप्यारीगरबांह ॥ ४ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचबृंदाबनबाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यामास्यामसुहाग ॥ ५ ॥ पद राग परज तिताल ॥ राजतदोऊदीनैंगरबांही ॥ रहींछायनिससरदजुन्हैयानवनिकुंजकैमांही ॥ अरुझिरहेतनमनआनंदमैंआधीरातिद्रुमनिकीछांहीं ॥ नागरीदासलतारंध्रनिलषिरीझिरीझिबालिजांही ॥ ६ ॥ तिताल ॥ सोहतहैंअलसौंहेंनैंना ॥ लटकिलटकिपियपरअरसावतसिथलकहतमुषआधेआधेबैंना ॥ बहोतगईनिसिप्रियाजंभावतचुटकीदेतलालसुषदैंनां ॥ नागरीदाससषीछबिदेषतबिसरिबिसरिजातउरउपरैंनां ॥ ७ ॥ तालतिताल ॥ अंषियनिभावभरयोहैरसको ॥ घुरिघुरिसनमुषरहतरसीलीरूपबढयोआरसको ॥ आधेआधेबचनकहतकछुमंत्रपढतमांनौंपियबसको ॥ नागरिनवलरासिकनहींपौढतनींदभरीदेषनकोचसको ॥ ८ ॥ तिलाल ॥ आईअबदुहुनिपैंजौंह्निजगमगरी ॥ गईपरछांहीपाछैंदेतहैंदिषाईआछैंह्यांईरहोचंदआगैंधरोजिनपगरी ॥ तनतनसौंमनमनसौंअरुझेदेषिअधषुलेनैंनरहेनैंननिमैंपगरी ॥ रसबसपागेनवनागरियास्यांमजागेआधीरैंनिहुतीसोऊबीतगईसिगरी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ चंदचंद्रिकामंदकी, दंपतिअंगउजास ॥ लताकुंजरंध्रनिकढयो, किरननिनिकरप्रकास ॥

रहोउरप्रेमपीर ॥ निसउजियारीफूल्योवनद्रुमलतारहीझुकीपरासि नीर ॥ मुदितस्यामलषिबैंनबजावतसुनिकुहकिउठतमोरनिकीभीर ॥ नवलविहारनवलनवकाविचनवलप्रियागिरधरनधीर ॥ नागरी दासरैंनिकछुवितईबहुरिवसेमिलिधीरसमीर ॥ ५ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमैंदैंने ए दोहा ॥ जबतैंचितयेनैंनभरि, तबतैंछिननहिं चैंन ॥ मनमोहनगोहनाफिरत, जागतसुपनैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनल षिमोहनभई, कहालग्योयहहौंन ॥ सबसूझतमोहनमई, दईभईग तिकौंन ॥ २ ॥ सुधिबुधिसबहीहरिलई, मनमोहनमुसकाइ ॥ एदइयाकैसीवनी, घरअंगनानसुहाइ ॥ ३ ॥ लगीलगानिहरिमुप निरपि, डारचोसबसुपरूंद ॥ जोहूंऐसोजानतीरहतीनैंनानिमूंद ॥ कौंनघरीकीलगनियह, अरीभरीनाहिंजात ॥ मिटतनांहिंदिनराति जिय, स्यांमरूपउतपात ॥ ५ ॥ घरबनहूनहिंलगतमन, रहत स्यांमतनलीन ॥ अरीढटौंनानंदकैं, कछुटौंनांपढदीन ॥ ६ ॥ नैंन निदुषनैंननिलगैं, तनमनदुपदुषगेह ॥ एदइयाकौंनैंदयो, दुषको नांवसनेह ॥ ७ ॥ हरिसौंलगनिलगायकैं, भरीरहतानितनीर ॥ रिझवारनिअंखियांनिसौं, हौंहारीरीबीर॥८॥ नागरसैंननिसैंनमिलि, बनीजुनैंननिनैंन ॥ बनतबनतऐसीवनी, कहतबनतनहिंबैंन ॥ ॥ ९ ॥ पदरागपरज ॥ तिताल ॥ घाइलमारसुमारभईहियम दनमोहनदृगबानलगे ॥ सुधिनरहीहैंघटपटकीकछुइकटकनैंन निनैंनपगे ॥ मूर्छितहोतागिरतगहिभुजभरिअधरसुधारसपांनप गे ॥ नागरियाआसक्तअमलमैंदोऊमिलिकैंसबरैंनिजगे ॥ ॥ १ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दैंने ए दोहा ॥ नवनिकुं

पारसरैंन ॥ १७ ॥ नागरिनैंननिरूपव्हैं, दोहापढिनैंनांनि ॥ अ
छरनहूकेनैंनभये, कहिनसकतबैंनांनि ॥ १८ ॥ यारूपारसरैंनिकौं
तवहीसकैंनिहारि ॥ तनकेनैंननिमूंदिदैं, मनकेनैंनउघारि ॥ १९ ॥
नागरिनैंननिजिहिंलष्यो, यहरूपारसरैंन॥ तिनकेनैंनसुनैंनहैं, और
नैंननहिनैंन ॥ २० ॥ इतिरैंनरूपारस ॥ १० ॥ तिताल ॥ हेमाती
नींदकीअंपियांसोहैंलाल ॥ कांमकेलिकैंरंगरसमसीछुटीअलकत
टीमाल ॥ लपटांनेबनवारीप्यारीअरुझेबाहुमृनाल ॥ नागरियाढि
गभंवरनिवारतलीनैंहाथरुमाल ॥ ११ ॥ इकताल ॥ अंषियांअरुन
रसमसीघुरहीं॥लाजभरीछबिभारभरीरूपछकीआलसजुतढुरहीं ॥
अमितबदनपियचिबुकउठावतकहीनपरतजबहंसिहसिमुरहीं ॥ र
हीघरीद्वैरातिजुहैयानागरीछैलतऊनविछुरहीं ॥१२॥ रागसोरठका
ष्याल ॥ इकताल ॥ रेसांवलियोसाजनह्मारो ॥ रूपठगोरोकांमण
गारो ॥ मोहैंमनसगलांरो ॥ हियमैंबसियोरसियोलोभीमदनमंत्रबैं
णांरो॥नागरीदासहुवोमनचेडोमतवालानैंणांरो ॥१॥ तिताल॥होसां
वलियोह्मानैंसैंनांहींसमझावैं ॥ लाजमरांछांसारांमांहींमनरीबातज
णावैं॥प्रेमछक्योप्रीतममतवालोतिणसौंजियसकुचावैं ॥नागरीदास
देषिनैंणाविचपडवादिसीबतावैं॥॥ तिताल॥हेलीह्मारोमोहनमीतामि
लाय ॥ अलवलियोसांवलियोसुंदररापौंकंठलगाय॥ पियरसियोउर
अंतरबासियोउणबिनरह्योनजाय ॥ नागरीदासछैलसुखबागांजागी
रैंणविहाय॥३॥तिताल॥कलनपरतादिनरातियांअहोपियनैंननिकीनी
बोरी॥ सोवतजागतचलतफिरतअबमोहितलफतहीबीतताछिनैंछिन
लगीइहिंमुषकीढोरी ॥ इननैंननिकैंहाथबिकांनीदेपनकौंउठिदोरी॥

॥ १ ॥ मैंनरंगरससरगमगे, जगेउजारीरैंन ॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहैंनैंन ॥ २ ॥ अंषियनिआरसछबिलषैं, अमलउजारी मांहि ॥ बहुरिचंदकीडीठडरि, करतमुकटकीछांहि ॥ ३ ॥ पलकैं पांननपीकसौं, रंगीजुरंगनवाल ॥ रीझिरहेसोईनिरषिनिस, नींदभ रेहृगलाल ॥ ४ ॥ सहजछकेसेरसछके, छकेनींदअरसांन ॥ छके छकावैंपीयकौं, नैंनरूपमदपांन ॥ ५ ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैं ढुरैंरहिजांहिं ॥ लोइनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहिरैंनांहिं ॥ ६ ॥ श्रवननिछवैंछबिसौंफिरैं, लोयनवंकविसाल ॥ षुलैंनआरसअधषुले, करतलालपरहाल ॥ ७ ॥ अरसांनैंघूंमतझुकत, सरसांनैंछबिअैंन ॥ बिहसिढुरांनैंपीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥ ८ ॥ रैंनिघटैंत्यौंत्यौंबढैं, आरसरूपझकोर ॥ नींदभरेपियउरअरैं, नैंननिपैंनीकोर ॥ ९ ॥ जवपलआवैंझुकतापिय, दरपनदेतदिषाय ॥ तवअपनीअंषियांनप र, अंषियांरहतलुभाय ॥ १० ॥ नींदझुकीपलनिरषिपिय, देतहैं पांनबनाय ॥ उतनैंननिकेषुलतही, इतबीरीछुटिजाय ॥ ११ ॥ भौं रनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगावतलालतव, षुलैंनैंनमुसकात ॥ १२ ॥ सषीलषैंदुरिढुमानिमैं, व्हैगईचित्रसरीर ॥ निसउनदौंहैंहृगनिपैं, भईहृगनिकीभीर ॥ १३॥ अरसांनीनिरषत प्रिया, जातबिहांनीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ॥ १४ ॥ घरैंचिवुकतरहाथहृग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकैंरह चटैं, पौढतनहिंरिझवार ॥ १५ ॥ लषिउरझेसुरझैंनहीं, सबनिस गईबिहाय ॥ आरसउरझेहृगनिपैं, पीयरहेउरझाय ॥ १६ ॥ क्यौं सुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाकेहियबसो, यहरू

तहां, दीठनहींठहरांति ॥ ५ ॥ मनमोहनमुषनिरषिकैं, अंषियांन हींअघात ॥ नागरिदृगनिचकोरकैं, सबससिकहांसमात ॥ ६ ॥

॥ पदरागसोरठ ॥ तिताल ॥ रीमुषअंबुजअटकहमारी ॥ लगीरह तितहांसौतिमुरलियादेहिंकहाकहिगारी ॥ वहसुनिछकीअधरआस वसौंआवतधुनिमतवारी ॥ नागरियासहनौंनपरैंजियदैहिउराहनौं भारी ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ आतुरबैंनधुनिसुनिचली ॥ करनिकुं जनिवारतीद्रुमलतागहबरगली ॥ दृगनिदेष्योदूरिपियबनातिमरमां झप्रकास ॥ श्रवनधुनिनूपुरनिछाईनासिकासुभवास ॥ ब्रजचंदनि यरैंझूमिआईनवचकोरीबाल ॥ दासनागरिरहीइकटकलषितृभंगी लाल ॥ २ ॥ इकताल ॥ बोलैंत्तत्तथेईतथेईतथेईरसरासरसरदरैंन ॥ निरषतभयोचंदचकितथकितरह्योगैंन ॥ गांनतांनमांनपरनिमिलि मृदंगबीन ॥ उरपतिरपअलगलचकतकटिछीन ॥ नचतरवनीरव नमदनमथतअंगअंग ॥ चलिकटाच्छभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ प्रेमम गनभरतअंकलंकलागिनिसंक ॥ छाडतनाहिंलालहिंतिहिंकालहिं निधिरंक ॥ उरबिहारतुटतहारछुटतबारवास ॥ बिवसरस बिलासदासनागरिसुषरास ॥ ३ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलिमंडल नृत्यतडोलैं ॥ इकादिसकुंडललोलएकादिसलगेकपोलकपोलैं ॥ गर बांहियांतनअरुझेपियरेनीलनिचोलैं ॥ नागरियागतिमैंगतिवदलैंवद लैंवदनतमोलैं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ मनमोहनतृभंगीनवरंगीनंदलाल॥ हसिलीनीहैंभुजनिभरिनवदामिनिसीबाला ॥ तनमनहिलनिमिलनि बनवादीहैंरंगरलियां ॥ तहांफूलपुंजफूलेअलिगुंजकुंजगलियां ॥ उ रहारबंदडोरीजियलाजटूटिटूटैं ॥ षुलिअंचरसुवनासिरबरबैंनीछूटि

नागरियाघरबराजितराजरहीहौंनरहीजियलराजिडारीतुमसुंदररूपठ गोरी ॥ ४ ॥ आंनकविक्कत ॥ तिताल ॥ बहिमनबासियोरसियोरी मोहनलालनगीनौं ॥ बृजकोभूषनरतनअमोलकअतिसुंदररंगभी नौं ॥ मैंपायोमेरैबडभागनिंसिरबिधनांलिषदीनौं ॥ रसिकाबिहारी पियसुषकारीकंठलायमैंलीनौं ॥ ५ ॥ आंनकविक्कत ॥ तिताल ॥ बिचब्रजनारयांरैझुंडराधारूपहैरूडो ॥ ग्रीवझुकायांझूमकनाचैसी सकेसांरोजूडो ॥ केसरिरंगरंगीसाडीमैंझलकिरह्योछैंचूडो ॥ देषि छक्यापियरसिकबिहारीरह्याधीरधरकूडो ॥ ६ ॥ सूरफाषत ॥ दई कीजैंकहामेरीअंपियांबैरनिभई ॥ बरजीनरहैंबुरीटेवइनलई ॥ कां न्हसुषचंदमधुपांनमातीरहैंहोतअतिछिनहिंछिनचाहाचितनई ॥ ओ टघूंघटदियेंहूंनमांनतहटकतजिदईलाजहरिरूपठगठई॥ नागरीदास उपचारलागतनकछुमाधुरीनिराषिभईकृष्णतनमई ॥ १०॥ तिताल॥ वहघरीकौंनहीलागेमेरेहोनैंन ॥ जबलागेतबकछुनहिंजांन्यौंअवला गेदुषदेंन ॥ चितवनिबिषकीलहरिचढीरहैंजागतसुपनैंसैंन ॥ नाग रनवलरूपकोबेदनिमिटंतनहींदिनरैंन ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकोअलाप चारीमैंदैने ए दोहा ॥ रूपधारघनस्यामकी, छबितरंगकीझोक ॥ प्रेमप्यासकैसैंमिटैं, नैंननिनांन्हीओक ॥ १ ॥ पतिकुटंबदेषतसबैं, घूंघटपटदियैंडारि ॥ देहगेहबिसरेतिन्हैं, मोहनरूपनिहारि ॥ २ ॥ दृगपौंछतअंतरअधिक, सहीनजातनिमेष ॥ पलपलजलभरिआव हीं, रूपमाधुरीदेष ॥ ३ ॥ वडोमंदअरबिंदसुत, जिहिंनप्रेमपहिचां नि ॥ पियमुषदेषनदृगनिकैं, पलकरचीबिचिआंनि ॥ ४ ॥ झल ककपोलनिकहाकहौं, मुषपांनिपवहोभांति ॥ आंषियांरपटतचितैं

पियप्यारीनसह्यारीपरैंआज्ञुयाहीकुंजरहोनैं ॥ सुरतसिथलगतिमत वारीसीमोहनबहियांगहोनैं ॥ बिथुरिअलकआईआंननपरियहछ बिट्टगनिचहोनैं ॥ रहीरैंनथोरीनागरमिलिअबसुषसैंलहोनैं ॥ ५ ॥ तिताल ॥ रह्यादेपिपियचिबुकउठायवोनैंणामैंअलसांणघणीछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषवणीछैं ॥ अलकांसिथलसिथ लहुईपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरीचितवनि मिलिरहीअणीअणीछैं ॥ ६ ॥ ताल ॥ प्रीतमसंगपौढीप्यारीअर सांनी ॥ पलकैंमुंदीषुलीढिगअलकैंअधरथकितमुसिक्यांनबेसरपर सांनी ॥ बैंनासिथलललितमोतीलरढरकिबदनपरआईछबिसरसां नी ॥ नागरियाहियमांझबसोयहकौतिककेलिअनंगजोरीरंगबरसां नी ॥ ७ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैंने ए दोहा ॥ करिभौंहैं बांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंबैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीके नैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसं पीकिंहिंकारनैं, पहरेपलटिसिंगार ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकान्हकैं, मांनकरोबेकाज ॥ राधाबल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअनषावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भये तृभंगीस्यांम ॥ ४ ॥ पदराग रायसो ॥ इकताल ॥ बिलसतकुंजसद नसुषसुंदरिनायकनंदनंदनरंगभीनौं ॥ सरदचंदप्रफुलितद्रुमवेली बिवसमदनमनकीनौं ॥ छूटेबारहारउरटूटेषुलेबंदबिगलितपटझी नौं ॥ लटपटायदोऊरहेलपटिकैंतनगुलाबजलमहकिनवीनौं ॥ या रसहीरसबीतिगईनिसिफिरफिरिअधरसुधारसलीनौं ॥ इहिंबिधिछूट तनहिंऔसैंनागरियाजैसैंजलमीनौं ॥ १ ॥ तिताल ॥ कुसमकँवल

छूटैं ॥ मचीहैरंगभनीआनंदकेलिहेली ॥ सषीदुरिदेषतनागरिया मनदेहसौंअकेली ॥ ५ ॥ इकताल ॥ आवरीदेषिजोरीपियसांवरो राधागोरी ॥ सुरतश्रमितदोऊमिलिसोये ॥ अधषुलेनैंनमैंनरंगभोये॥ अरुझिरहीबाहियांमैंबाहियां ॥ फूलेतरवरकीपरछहियां ॥ इहिंवनये विलसोइनचैंननि ॥ नागरियाकेबसोहियनैंनानि ॥ ६ ॥ याअनुक्रम कीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ नीलपीतमानिक्रांततन, नाहिंदूरेइं हिंरात ॥ वेदनउजेरैंरूपकैं, सघनकुंजमैंजात ॥ १ ॥ तनसुगंधडो रैंलगी, भँवरभीरचहूंओर ॥ देषिदुहुंनिधोषैंपरे, बोलतमोरचकोर ॥ ॥ २ ॥ नीलपीतपटछोरछबि, उरझेद्रुमकीभीर ॥ मुरिसुरझांवनि दुहुनिकी, मेरैंउरझीवीर ॥३॥ चलिहुसंगनागरसषी,नूपुरझांईपाय॥ सुपदेषैंदुरिदुमानिमैं,अपनौंअंगदुराय॥४॥रागसोरठ ॥ रीहौंचाहिरही दोऊइतनिकसेआय ॥ पियघनस्यांमअंगढिगभामिनिदामिनिदुति दरसाय ॥ अतिसुंदरमुषचंदकिरनबनडारचोतिमरामिटाय ॥ नाग रियाचलिकुंजओटद्दुरिदेषैंरैंनाबिहाय ॥ १ ॥ तालचपक ॥ प्यारी जूकोवदनआनंदकंद ॥ पियकिसोरचकोरहितनितप्रगटपूरनचंद॥ गंभीरकारेचिकुरबरबदरांनिबीचअमंद ॥ पीवतइकटकवोकअमृत नवनागरनंननंद ॥ २ ॥ ताल ॥ अबसुनिकांनदैदैवतरांन ॥ नूप रकिंकिनीकंकनरनकतझनकहोतबलयांन ॥ मैनमंत्रसेवैंननसुनि सुनिछुटतधीरठहरांन ॥ नागरियाहियमांझरहोनितियहसुरतसनमां न ॥ ३ ॥ तिताल ॥ पुलिगएसौंधैंभीनैंवार ॥ देषिसषीयहरीतिअ नोषीवंधिगयोमनरिझवार ॥ झूलिरह्मोवैनोग्रीवाढिगटूटिरहेउरहार॥ नागरयहछविहिएबसीबिचमनमथरंगबिहार ॥ ४ ॥ ताल ॥ अहो

नांतोहांतोकारिकितराहियें ॥ नागरीदासमीतकपटीभयैंकहूंठौरनां लहियैं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ नैंनालागेबेपरवाईदेनाल ॥ एकप लकभीकलनहिंपावांरहदाहरदमहाल ॥ दिनदिनजीदाज्यांन असाडाउसनागरदेष्याल ॥ नागरियाबंसीवालेदाइस्कनहींजंजा ल ॥ ९ ॥ तिताल ॥ अषियांलागिगईमोहनप्यारेसौं ॥ तब गरजीबरजीनरहीरीअबकहाहोयपुकारेसौं ॥ पीवनकौंपियबदन माधुरीलगीरहैंसांझसवारेसौं ॥ नागरीनवचकोरज्यौंअटकीपियव्र जचंदउजारेसौं ॥ १० ॥ तिताल ॥ रेलगनिकोपैंडोन्यारो ॥ चा तिगस्वातिबूंदरुचिमांनैंसरसरिताजलषारो ॥ नेहनगरकोडगरन पावैंनैंमीअंधबिचारो ॥ नागरीदाससीसबकसीसैंतऊनांहिनिरवा रो॥११॥तिताल ॥ रीकांसौंकहियैंबीररीपीर ॥ बिनदेपैंतलफतयेअ षियांनांहिधरतचितधीर ॥ निकसनहूदूभरभयोअंगनाघरगुरजन कीभीर ॥ नागरीदासप्रेमबसजाकैंसोधौंनिपटबेपीर ॥ १२ ॥ ति ताल ॥ नवजोबनलाडगहेलीप्यारीतूरहतमदनमदछाकी ॥ रूपरं गरसश्रवतमाधुरीबदनबिलोकनिवाकी ॥ अतिआशक्तअमलमोजैं प्रेमपियालेपीयैंरहतलालमदछाकी॥नागरीदासनवरंगबिहारीबिहार निनेहनिसाकी ॥ १३ ॥ तिताल ॥ अलमस्तभयेअलबेलेलालला डलीकेरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंबरबसनीनैंनानिमैंमुसकाते ॥ मुषअंबुजबरस्यांममधुपमकरंदपीवतनअघाते॥दासनागरीरूपरंगर सअंगपीयालेराते ॥ १४ ॥ तिताल ॥ लीनौंहठहेरीमेरोकान्हम हीरी ॥ आवतदेपिबैठिमारगमैं अचांनकआंनगहीरी ॥ दीनौं नहींमोलकीनींबरजोरीकिहाकरौंसबहीसहीरी॥ नागरीदासभईसुभई

दलसज्यारचीहैकुंजकैआंगनचंदकेसौंहैं ॥ मिलिपौढेतहांप्रीतम प्यारीसुरतरंगरसबसअलसौंहैं ॥ गौरस्यांमतनसौंतनउरझेसुंदर बांहनिबांहगसौंहैं ॥ नागरीदासरहिगएइतउतइकटकनैंनानिनैंनह सौंहैं ॥ २ ॥ रागकाफीकाष्याल ॥ तिताल ॥ अरेहूंबाटनजांनूंरे कोईबतावैवाकोधांम ॥ याबनमांझअचांनकहूंउरलाइलईआभिरां म ॥ मनलैगयोनांमनहिंजांनौंहोसुंदरतनस्यांम ॥ नागरीदासठगी हौंअनलाअबनकछूबसवांम ॥ तनभयोसिथलचरनकांपतसरमार तानिर्दईकांम ॥ ३ ॥ तिताल ॥ एरीआलीसुंदरनंदकुंवारठाढोललित कदंबतरैंजमुनांतटनवघनस्यांमसरीर ॥ सोहतहैबनमालमोहातिमह किमालतीरहीचहूंदिसभईभँवरनकीभीर ॥ चलिरीचलिबलिआज नैंननिरूपअमींरसपांनकरहिंकिंनहरहिंबिरहउरपीर ॥ तूंगौरीवे स्यांमजोरीजगतबिभूषननवलनागरीवासियेधीरसमीर ॥ ४ ॥ ति ताल ॥ गौरीलटकंदीचलैंजोबनादेभार ॥ करदेकहरकमरनाज कपरसिरसटकारेबार ॥ मतवालीअंषियांजानिमांणीकरैंजनरबर छीदीवार ॥ नागरीनवलअजबमहरेटीमोहनदीदिलचंगीयार ॥५॥ तिताल ॥ बांकेनैंनाबिंदुरातीभाल ॥ कुटीलटफंसीलटकीलीचाल ॥ फूलनकीबधियापतरोंहीबाल ॥ नागरीकटिकीपटलीपैंफुंदियांकी हाल ॥ ६ ॥ तिताल ॥ यारीदाकुपेचमैंडेनैंनूदीकमाइयां ॥ देषिदे षिमैंहुईदिवांनीउसदीबेपरवाइयां ॥ रैंनिदिनांसमझायरहीहौंदुक दिलनिचनहिंआइयां ॥ नागरियामोहनसौंहनपरतोभीघोलघुमाइ यां ॥ ७ ॥ तिताल ॥ जासौंलाईप्रीतितासौंओरनिबांहीचहियैं ॥ भलीबुरीसिरधारिजगतकीकहीसुनीसबसहियै ॥ सबमैंबडोनेहकौं

दा ॥ कोईमिलावैंरसिकबिहारीनूंहैंयहकांमसबाबदा ॥ २१ ॥ तिताल ॥ रीकोऊअपनींअटापरगुडीउडावतछैलसांवरैंअंग ॥ गुडियां उडावतदेषिसषीमनउडयोफिरतहैंसंग ॥ जियरारीगोतषातमेरोत्यौं त्यौंदेतहैंगोतपतंग ॥ नागरीदासऊंचीनींचीचितवनिदेंझकझोरत्र नंग ॥ २२ ॥ तिताल ॥ वारीस्यामाइहींकुंजमगआयजा ॥ प्रीतम नैंनचकोरतृषतहैंबदनचंददरसायजा ॥ मुषतैंनैंकानिवारनीलपटछ बिसौंमुरिमुसकायजा ॥ नागरनवलकिसोरलालपरचितवनिरसबर सायजा ॥ २३ ॥ आंनकबिकृत ॥ तिताल ॥ मुरलीवारोमोहनांव हिकहिहेलीकहांपाउंरी ॥ घरबनमनलागैंनहींहौंबावरीभईकितजां उंरी ॥ सिथलअंगपगथरहरैंहौंउठिउठिकैंमुरझांउंरी ॥ रसिकबिहारी बनवारीबिनकैसैंजीवजिवांउंरी॥२४॥ तिताल ॥ मोहनामनभावनां मेरावो ॥ आंषडियांउदमादियांईरहैंमुषबेषणदाचाववनेरावो ॥ उ ठदीदिलबिचदुषकलमलियांजबगलियांटुकआवैंअबेरावो ॥ नाग रदिलदादरदनबुझदाकौंनकरैंयहन्यावनवेरावो ॥ २५ ॥ तिताल॥ राजबनरोमैंवारीम्हांमैंकांईजांणैं ॥ गायचरावणहारग्वालियोसो क्यौंरतनपिछाणैं ॥ दधिदांनीचंचललोभीजीजैंरौमननहारहैंछैठि कांणैं॥ नागरीदासकहोकपटीनैंकुंणथांसूंरंगमाणैं॥२६॥ तिताल ॥ तोपेनैंनकह्लाइतैंडेपलपलषूंनकरंदे ॥ भौंहैंतोकमांनतनींपलकैंतीर परंदे ॥ कित्तेघायलपरेकराहैंदिलनहींधीरधरंदे ॥ रसिकबिहारी नितिवारकरंदेटारेनहींटरंदे॥२७॥ तिताल ॥सबकीहैंचोटानिसांनेपैं॥ नैंनांबांनछुटैंचहुंघांतैंचांद्रिकाबहरकबांनेपैं ॥ लाषांनिहूकीभीरलगीर हीमनलोचनपरसांनेपैं ॥ जानागरपरयहब्रजअटक्योसोअटक्यो

अबबातनजातकहीरी ॥१५॥ तिताल ॥ सांवरेकेनैंनसलौंनैं ॥ जबहींदृष्टपरतमेरैंमगपरिनसकतपगपैंडआगौंनैं॥ कांननलौंअनियारे चंचलरंगभरेअतिरीझरिझौंनैं ॥ नागरियाजिनकीचितवनिबिचिचे टकनाटकटावकटौंनौं ॥ १६ ॥ रागकाफी तिताल ॥ हौंतोरहींदेषि छबिमदनगुपालकी ॥ कहाकहूंसोभाअहारसिकरसालकी ॥ सीसपैं सुमनभीरअलिनकेजालकी ॥ एकऔररहीधुकिलालपावलालकी॥ हसतअधरदुतिलसतप्रवालकी॥मोहिलईहेरनिहौंनैंननिबिसालकी ॥ मेरोमनझूलनिझुलायोबनमालकी ॥ चलतललितगतिगंजनमराल की॥नागरियामेरीमतिमदनसचालकी॥ कहाकरौंकितजांऊंकासौंक हौंहालकी ॥१७॥ तिताल ॥ नैंननिमिलायमिलायमनलीनौंहेलीसौंह नैंसलौंनैंस्यांममंदमुसकायकैं॥ भूलिघरडगरियागगरियागिरीमुपमो हनकोदेंपिदेपिरहीहौंभुलायकैं ॥ पनघटभीरभईलोकलाजभूलिगई अंचरबिसरिरहीतनथहरायकैं ॥ तबतैंनचैंनपरैंलाग्योवुषदैंनमैंन नागरियाऊठौंअकुलायअकुलायकैं ॥ १८ ॥ तिताल ॥ अणीपेच दारझुलफैंवाला ॥ मैंतोरहींदेषिहैरतमैंअजबतरजकाग्वाला ॥ चा बतपांनछैलकांनपरधरैंफूलगुललाला ॥ नागरनवलसांवलासुंदरक रिगयादिलबेहाला ॥ १९ ॥ आंनकाबिक्रत ॥ तिताल ॥ मनला याक्यौंकान्हअनोषेसौं ॥ अबपाछितांयेंक्याहौंदांणीभूलिप्रीतकरी ओपेसौं॥निसदिनघुटिदीतूघरअंदरसासननददेहोधोपेसौं ॥ गुरजन बुरेरसिकबिहारीनूंबेषणदेतनगोषेसौं ॥ २० ॥ आंनकाबिक्रत ॥ व हिसौंहनांमोहनयारफूलहैंगुलाबदा ॥ रंगरंगीलाअरुचटकीलागुल होरनकोईजबाबदा ॥ उसाबिनभँवरेज्यौंभवदाहैंयहदिलमुजबेताब

होयबदिलबेहाल ॥ रहैंधरेंहींजहांअवस, चिलतैंबगतरढाल ॥ ३ ॥ गबैंउडावैंसबँके, अजबजबँकेनैंन ॥ लगैंसोईकहिकहिउठैं, हाय हायदिनरैंन ॥ ४ ॥ चस्मतेगनागरचलैं, इस्कतेज़कीधार ॥ और कटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवार ॥ ५ ॥ तिताल ॥ अरीप्यारीरा धागतिलेतअलबेलीयसुजांन ॥ रंगभरीयौंहैंमनमोहैंचितवनिअल बेलीअलबेलीमुसकांन ॥ बदनचंदआनंदसुललकैंअलकैंअलबे लीअलबेलीबतरांन ॥ कमलनैंननागरपियमोहेरासमैंअलबेली अलबेलीलेलेतांन ॥ ३४ ॥ तिताल ॥ श्रीराधेराधेनांमठाढेस्यांम कहैं ॥ अरीअकेलेकालिंदीतटछबीलीभांतिद्रुमलतागहैं ॥ मूंदत दृगनिध्यांनमनभेटतषोलतहीमगओरचहैं ॥ नागरपुलकिप्रेमजल नैंननिफिरिफिरिडारिउसासरहैं ॥३५॥ तिताल ॥ यहमेरोरूपभयो मेरोजियकौंजंजालदुषभरयोनहींजावैं ॥ दुतियाकेससिलौंदेषनिआ वैं ॥ मिलिमिलिमोहिअंगुरीनिबतावैं ॥ घूंघटमैंनैंककहूंनैंनदरसावैं जबआंपिनपैंआंपिनकीभीरउररावैं ॥ सांवरेकोनांवलैलैश्रवनसु नावैं ॥ दियासुनिसुनिबोलीठोलीहीयोसकुचावैं ॥ नागरियागोकु लमैंबसिबोनभावैं ॥ अबभईहौंतमासोजियलाजनलजावैं ॥ ३६ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ करिभौंहैंबांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंबैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीकेनैंन ॥ १ ॥ चितचिताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसषीकिंहिंका रनैं, पहरेपलटासिंगार ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकान्हकैं, मांनकरोबेका ज ॥ राधाबल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअ नपावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भयेतृभंगीस्यांम ४

वरसांनेपैं ॥ २८ ॥ तिताल ॥ होप्यारीजूमोहिदीजैंयहदीजैं ॥ हा
हावारीगायगायकैंगातिलीजैंअबतोगातिलीजैं ॥ दीयोविछायपीय
पीतांबरसुलपकीजैंयापैंसुलपकीजैं ॥ बढ्योनिर्तनागररसभीजत
निसभीजैंत्यौंत्यौंनिसभीजैं ॥ २९ ॥ रागछायानटतिताल ॥ वो
लतथेइतथेईथेईरंगभरेनिर्तितहैंपियप्यारी ॥ बजवतबीनप्रबीनलीन
धुंनिगुनसलितालालितारी ॥ अरझीअलकछबिसौंबेसरिमैंअरझी
पीतपटसारी ॥ नागरनागरीरीझिपरसपरकहतवारयोहौंवारी॥३०॥
रागअडांणोतिताल ॥ आज्जुसषीप्यारीजूस्यामाहिंसिषावहीलैंलैंग
तिभेदहिवतावहीं ॥ चतुरसिरोमानिजांनिअजानिभयेललितसुल
पसरसांवहीं ॥ तालिमकौंदेतस्यांमांनाचतमैंरंगबढ्योसपीसुपनि
रषिसिहांवहीं ॥ नागरिकटाछनिकीलगतचमोटीचोटत्यौंत्यौंपिय
गतिहिंभुलांवहीं ॥३१॥ आंनकाविकृत ॥ तिताल ॥ होस्यामाप्या
रीवोमैंडीजिंदलगीहैंतैंदेनाल ॥ जबहसिवेपैंतबतबजीवांरहिंदाहो
यनिहाल ॥ तुहीअसांढेनैंनप्रांनवसपयातुसाढेवाल ॥ यौंकहिंदाक
रजोरिकुंवरिसौंरसिकविहारीलाल ॥ ३२ ॥ तिताल ॥ वोमोहना
सोहनयारदेनैंणांदीझोकां ॥ सीनैंदेबिचुलगीअसाढेवारपारभईनो
कां ॥ रुकदीनहींरोकिमैंहारीलाजघूंघटदेरोकां ॥ रसिकविहारी
दानांवलेछेकरैंसबब्रजनोकांटोकां ॥ ३३ ॥ तिताल ॥ नैंनौंदामा
रयापंछीमरजांदामांनसकौंनबिचारा ॥ दोहा ॥ पंडितपूजापाक
दिल, येदिमागमतल्याय ॥ लगैंजरबअंषियांनिकी, सबैंगबउडि
जाय ॥ १ ॥ चस्मजरबसौंक्यारहैं, दीनगरबकौताब ॥ छूटिगिरैं
सबषासतैं, तसबीअसाकिताब ॥ २ ॥ लगिवरछीतिरछीनिगह,

गौंहनमोहनलाल ॥ कुंजद्वारहसिभेटिये, उठिगजगामिनिबाल २॥

दोहा ॥ येआयेनंदलालइत, देषोग्रीवउठाय ॥ करजोरैंबिनती करत, मुकटछुवावतपाय ॥ १ ॥ चितईकछुमुसकायकैं, लईअंक भरभांम ॥ नागरियाहियसेजपर, विहरतस्यामास्याम ॥ २ ॥

॥इकताल॥ रचीपियमोहनकलकेलिनवेली ॥ मचीभुजनिविच कलहमनोहरटूटतहारहमेली ॥ परिरंभनअरुझेनाहिंसुरझतज्यौंद्रुम कंचनबेली ॥ नागरीदासदुरायअपनपौंयहसुषलषतअकेली ॥१ ॥ ॥ इकताल ॥ अबपौढनकोसमैंभयो ॥ इतआईद्रुमकीपरछांहींउत ढरिचंदगयो ॥ इंहींभांतिनिबहौंनिसबासरनितिप्रतिरंगनयो ॥ सुनि सोयेनागरियानागरअतिसुषद्दगनिदयो ॥२॥ रागमलारकाण्याल ॥ तिताल ॥ बाजैंबाजैंबाजैंसुदंसीबनबाजैंरी ॥ रैंनअंधेरीघटारहीझु कितैसीपरीगरैलाजैंरी ॥ मोरउठतकरिसोरघोरसुनिनवमलारसुरगा जैंरी ॥ नागरीदासस्यांमसुंदरसौंकैसैंमिलौंचलिआजैंरी ॥ ३ ॥ इ कताल॥ आजुघनगरजगरजबरसैंसरसैंनेहमिलिदंपतिकलगांवहीं ॥ कुहकतमोरमलारसुरनिसुनिबदराघेरिधरिआवहीं ॥ कांननश्रव तसुधाताननिमैंमूर्छितमदनजिवावहीं ॥ नागरियानागरनिकुं जरसरीझनिभीजिभिजावहीं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ कहाकरौं रेकहाकरूंदइयालाग्योबरसानिमेह ॥ जोहूंऐसोजांनतीतोछाडती नगेह ॥ बंसुरियावारेतेरीकमरियादेह ॥ भींजैंगीचुनरियामेरीचुहचु हैरंग ॥ छतनांवनायलेकैंचलिमेरेसंग ॥ आयनीरैस्यांमभींजिगात लपटात ॥ नागरियाबनगयैंबनिगईबात ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मेरैंआ एभींजेहोगात ॥ रिमझिमरिमझिममेहबरसैं ॥ येरीआलसांवनसु

मानमवास ॥

+दोहा ॥ बहोभांतिनफूलीलता, भौंरनकीअतिगुंज ॥ तहांतु लावतसांवरो, चलिरीनवलनिकुंज ॥ १ ॥ फुलकंवलकेदलनिह रि, निजकरसेजबनाय॥तुवआगमआवनअरी, रापेनैंनबिछाय॥२॥

इकताल ॥ मेरोकह्योमांनिमानिनी ॥ तजित्रयांनछांडियेमां नजांतिजामिनी ॥ प्यारीलालसंगबालबहुतअतिसुहामिनी ॥ १ ॥ तोसमकोऊनांहिऔरजोकीभामिनी॥प्यारीदीनजांनिंबोततोमांनमं दगामिनी ॥ उठिचलिहिलिमिलिये॥ जायमतिरामकीस्वामिनी२॥

दोहा ॥ तूहीजीवनिलालकी, तोबिनरह्योनजाय ॥ उत्तरहून हिंदेतबालि, इतीनिठुरक्योंहाय ॥ १ ॥ भूल्योहसिबोषेलिबो, पर तसषिनकेपाय ॥ तुवमिलापकीआससुष, राधाराधानांम ॥ २ ॥

दोहा ॥ नीचीचितवनिकारिरही, मांनतनांहिअयांन ॥ उतैंसां वरोबिबसव्हैं, यहकहालेनीबांनि ॥ १ ॥ सुनिरीकछुनूपुरभनक,

---

सूचना-

+ मानमवास इकतालवाले पदके चौफेर प्रत्येक दो दो दोहा मूल ग्रंथमें हैं. परतु स्थानाभावसे उस मुजब आया नहीं इस लिये सीधा लियाहै सो इस मुजव, बीचमें इकतालका पद और उसके ऊपर को (बहोभातिन फूलीलता,) ये दो दोहा हैं, बामे तर्फ (तूही जीवनि लालकी.) ये दो दोहा है, दहने तर्फ (नाची चितवनि करिरही,) ये दो दोहा हैं. और नीचे (ये आये नंदलालइत,) ये दो दोहा है इस मुजव जानना.

तमदनकोराज ॥ २ ॥ बरिषाघनघहराततब, धीरनहींठहराय ॥ उठैंज्हियहहरायमनि, तपतारीछुटिजाय ॥ ३ ॥ कीनौंमैंनिरधारसुनि, पावसघनघहरांन ॥ सबकेमनजीतेमदन, बाजतसदननिसांन ॥ ४ ॥ घुंमडिमेहचुंबतधरनि, अंधकारबाढिगैंन ॥ बिछुरिगयेचकवाचमकि, समझिग्यौसकौरैंन ॥ ५ ॥ कनकमालदामनिहलैं, श्रमजलकनबरषांन ॥ कांममेघरतिभूमिकौं, देतमनारतिदांन ॥६ ॥ घनधाराझरहरिकरत, अवनोफारिप्रवेस ॥ चलेबहोसरसमरमनौं, करनमूर्छितसेस ॥ ७ ॥ उतझरलाग्योमेहको, ! इतसैंननिझरनेह ॥ गउरस्यांमचाढिचाढिअटा, भीजतरीझिबिदेह ॥ ८ ॥ घटाबतावैंभांवती, छटाबतावैंस्यांम ॥ रसभीजेसैंननिकरैं, जलभीजेचढिधांम॥ ॥ ९ ॥ भुवधनुकचधुरवाछुटे, दसनदामिनीवृंद ॥ रूपघटाराधेअटा, गानगरजिधुंनिमंद ॥ १० ॥ घनतनदामिनीपीतपट, बगमुक्ताअभिरांम ॥ मुरलीगरजनिरंगझर, बरसतहैंघनस्यांम ॥ ११ ॥ हरिमलारपूरितअटा, घुंमडीघटाअछेह ॥ ज्यौंज्यौंबाजैंमुरलिया, त्यौंत्यौंबरषैंमेह ॥ १२ ॥ स्यांमघटाब्रजस्यामघन, गउरघटासुकुंवारि ॥ नागरियाहियभूमिबिच, नितबरसोरसबारि ॥ १३ ॥

॥ पदरागमलार तालचपक ॥ रूपसिंहजीकृत ॥ कैसैंआंऊदांमिनिमोहिडरावत ॥ जबजबगवनकरौंदिसिप्रीतमचमकनिचक्रचलावत ॥ वेचातुरआतुरअतिसजनीरजनीयौंबिरमावत ॥ गाजतगगनपवनचलिचंचलअंचलरहननपावत ॥ सुनिपियबचनचतुरचलिआयेभामनिसौंमनभावत ॥ रूपसिंहप्रभुनगधरनागरमिलिमलारसुरगावत ॥ तिताल ॥ कुंजमहलकैंआंगनमाधिपियप्यारीवां

हावनीरात ॥ रंगमहलरंगहीरंगमैंएरीआलीरैननजांनीजांत ॥ कहो
कहांलैंजायनागरीएरीआलीस्यांममिलनकीबात ॥ ६ ॥ इकताल
लूहर॥इहिंरितुऔसरआजुसमैंसुपदाईहैं ॥ प्यारीरीघुमंड़िघटाघहरा
यकैंब्रजपरआईहैं ॥ रह्योदिवसअंधियारिजनूंयहजांमिनी ॥ प्या
रीरीकरिरहीबदरनिमांझझमाझमदामिनी ॥ हरितभूमिपरझूमिझूमि
द्रुमफूलेहैं ॥ प्यारीरीबोलतमधुकरमत्तवासरसभूलेहैं ॥ तैसोईमोर
नसोरचहूंऔरलायोहैं ॥ प्यारीरीसीतलमंदसुगंधसमीरसुहायोहैं ॥
मंदमंदअबबरसतमेहकीबूंदेरी ॥ प्यारीरीतोंबिनपियकोआजुमद
नमनरूंदेरी ॥ डारतलालउसासधीरनांहींधरैं ॥ प्यारीरीदामिनि
कीदुतिदेषिदेषिदृगजलभरैं ॥ हौंपठईअबलैंनिबेगिचलिभांवती ॥
प्यारीरीछिनछिनआवतहैंवरपासरसांवती ॥ वाहिसुनिमिलीमल्हा
रबैंनधुंनिआवहीं ॥ प्यारीरीकहिकहिराधेतोहिबुलावहीं ॥ सुनत
अंगअंगरायकछूमुसकायकैं ॥ प्यारीरीभीजतहीघनमांझचलीअ
कुलायकैं ॥ सनमुषआएस्यामभुजनिभरिझेलीहैं ॥ प्यारीरीलपटी
तरुनितमालयनूंछबिबेलीहैं॥ यौंदंपतिनितिकरतहैंतहांविलासकौं॥
प्यारीरीबृंदावनदयोबाससोनागरीदासकौं ॥ ७ ॥ आंनकविकृत॥
॥ तिताल ॥ आयाबृजपरछायाजीजलबादलझरिया ॥ हरियातर
वरचूवैंपाणीबहोसरवरभरिया ॥ इणसमयेसुषलेणामनोरथदंपति
हियधरिया ॥ मिलियारसिकबिहारीप्यारीसहुकारजसरिया ॥ ८॥
याअनुक्रमकीअलापचारीमैं दैंने ए दोहा ॥ जडअवनीरतवलव्हैं,
रसमैंनीरसठौर ॥ भीजीपावसरितुरची, रूपीरितुसबऔर ॥ १ ॥
आवैंवदराकांमदल, मोरनकीबअवाज ॥ फिरैंदुहाईसवसदंन, हो

नोंव ॥ फिरिदेपेदामिनिकैंझमकैंसोरसनांसकतनहिछींव ॥ ७ ॥
॥चौताल॥सोयेदोऊमिलिमूलकदंबकैंकालिंदीकूलहैंभायो॥एकओ
रघनघटाआईझुकिएकऔरषुलीचंदचांदिनीवृंदावनछबिछायो ॥
बोलतमोररहीनिसिथोरीअदभुतसमैंसुहायो॥नागरीदासराधामोहन
बिपुनबसिपावसरितसुषपायो ॥ ८ ॥ पुनःमलारकोचतुर्थअनुक्रम॥
गउरस्यांमबिलसतसुषसैंनी ॥ वाजतबूंदैंद्रुमपातनिपरश्रवनलगत
सुषदैंनी ॥ सीतलपवनतनपरसतत्यौंत्यौंभुजदृढहोतगहैंनी ॥ नाग
रियापावसनिसराजतरंगेसुरतरंगरैंनी ॥ ९ ॥ पुनः मलारकोपंचम
अनुक्रम ॥ सोयेसुरतसेजअरसाय ॥ कामउदधिअवगाहिप्रियापि
यनेहमेहबरसाय ॥ षुलीअलकअरुपलकअधषुलीरहेरूपसरसाय ॥
नागरिसर्पीओटकरिठाढीजितघनकीपरसाय ॥ १० ॥ पुनः मला
रकोछठोअनुक्रम ॥ बरसतमेहनेहसरसाई ॥ बिछुरीदामिनघनपैंआ
ई ॥ धाइजायतियकंठलगाई ॥ प्रीतममनहुंरंकनिधिपाई ॥ हसिह
सिरसिकनिचोवतसारी ॥ लईउढायकमारियाकारी ॥ झुकीरैंनिपाव
सअंधियारी ॥ बिहरतनागरनागरियारी ॥ ११ ॥ बाढ्योवनघनमें
अतिनेह ॥ कांमरितांनिबितांनबनायोलाललतानितरगेह ॥ सुरति
रंगरसपागतफिरिफिरित्यौंत्यौंआवतमेह ॥ दामिनितिमरमिटावत
निसदृगनागरिचैंनअछेह ॥ १२ ॥ सोयेदोऊमिलिमूलकदमकैंका
लिंदीकूलहैंभायो ॥ एकओरघनघटाआईझुकिएकओरषुलीचंद
चांदिनीवृंदावनछबिछायो ॥ बोलतमोररहीनिसथोरीअदभुतसमैंसु
हायो ॥ नागरिदासराधामोहनबिपुनबसिपावसरितसुषपायो ॥१३॥
पुनः मलारकोसातमोअनुक्रम ॥ उमगिमिलीइतउतदुहुंदिसतैंगउर

हांजोरीबिहरतरगमगे ॥ अरुनवसनधारैंमोतिनकीमालगरैंचिंहुटे
सरीरचीरनीरसौंसगबगे ॥ छूटेबारभीजिलगेललितकपोलनिसौंकुं
डलबिमलनगभूषनजगमगे ॥ नागरीदासघनबरषतपांनीतामैंरूप
केजिहाजमांनौंडोलतडगमगे ॥ २ ॥ पुनः मलारकोअनुक्रम ॥ ब
रसतमेहअतिआईघटाकारीहैं ॥ तामैंचलीप्यारीउतआवतविहारीइ
तदुहुंनिकेमिलिवेकीचाहचितभारीहैं ॥ सूझतनपंथद्रुमलतारहीझूं
मिझूंमिसबजलमईभूमिझुकीअंधियारीहैं ॥ दांमिनीदमाकिगईतामैं
भटभेरभईनागरियादोऊहसिभरीअंकवारीहैं ॥ ३ ॥ इकताल ॥
एकछतनांतरैंदोऊरहेलपटिलपटाय ॥ कियेमनोरथसांचविपुनब
सिराधामोहनराय ॥ बरषतजलधरधारअपंडितरवरचलेचुचाय ॥
नागरियातनमनउरझेसोकिंहिंबिधिसुरझेजाय ॥ ४ ॥ ताल ॥ रा
जतबंसीबटकैंनिकटदोऊरंगभरेपियप्यारी ॥ सीतलसुगंधमंदपवन
गवनतहांतैंसीलूंमिझूंमिआईघटाकारी ॥ बरसतघोरिघोरिदांमिनी
कौंधतिजोरहैंरह्योचहूंओरमोरसोरभारी ॥ ऐसेसमैंनागरबिहा
रीसंगप्यारीडरलपटिलपटिजातसुरतसुघरसुकुंवारी ॥ ५ ॥ पुनः
मलारकोतृतीय अनुक्रम ॥ ताल चपक ॥ देषिराधेअबछबिवृंदा
बनकीहरीभूमिद्रुमहरेभरेसरबोलनिपिकमोरनकी ॥ ठौरठौरस्वेत
फूलनिबिचसांवलतामधुपनकी ॥ मनहुंविपुनधरनैंनकरोरनिसोभा
लषतस्यांमघनकी ॥ चलिभामिनदांमिनतनतूदुतिगिरधरमेघबरन
की ॥ नागरियासुंनिमिलीलालसौंछहियांनवकुंजनकी ॥ ६ ॥
॥ ताल चपक ॥ कहाकहूंसुंदरताकीसींव ॥ रसबसनवनागरनाग
रियाधरैंदोऊभुजग्रीव ॥ बरषतसघनबढततिमरनिसिदेतसुरतसुष

र इकताल ॥ होकहारंगभीनीरितुहैसांवनकी।फिरिफिरिझमकिझम
किझूंमिमेहआवें ॥ चात्रिगमोरकरतसोरतैसियेगहरीघनकीघोरका
रेकारेबदरानिबिचबिचबिज्जुरीचमचमावें ॥ सीतलसुगंधपवनगवनप
रसपरसदेषिफूलनिसौभरीभरीहरीहरीडारियांलहिलहावें ॥ तैसेईवि
लासपुंजनागरियानागरनिकुंजनेहमेहभिजएमिलिमिलिमल्हारगा
वैं ॥ ३ ॥ तिताल ॥ झूलतहैंदोऊसषीझुलावें ॥ सौंधैंकीझकौरें
स्यांमतनगोरैंआंवें ॥ हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावें ॥ नागरझक
झोरैंहारडोरैंउरझावें ॥ ४ ॥ हिंडोराकेइत्यादिपदनकोअलापचारी
मैंदैने ए दोहा॥ उतरिझमकिझूलैंचढैं, रँगरँगपहारिनिचोल ॥ लाल
मुनीयनकेमनौं, झुंडनिमचीकलोल ॥ ५ ॥ नीलबसनगौरैवदन,
झूलतातियरसकंद ॥ आवतजातबिमांनज्यौं, घटालपेटैंचंद ॥ २ ॥
रमकतप्रियाहिंडोरनैं, छबिदुरिदेषतपीय ॥ वेझूलतवेश्रमितकटि,
लचकनिलचकतजीय ॥ ३ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिलषि, रहेलालसु
धिभूल ॥ फहरतअंचलचंद्रिका, बैंनीबरषतफूल ॥ ४ ॥ झूलतछ
बिउमचीअधिक, मचकतद्रुमचीबांम ॥ उचटैंचोटीपीटमनौं, लगैं
चमोठीकाम ॥ ५ ॥ दांवनलांवनिदुहुंनिके, बाजतआवतजोर ॥ बैं
नींहारहिलोरहीं, बढिझोटाझकझोर ॥ ६ ॥ झूलतझोटाचढिगगन,
बैंनगरजसमनूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरषतहारनिफूल ॥ ७ ॥
नागरीदासहिंडोरनैं, सोभामनअवरेपि ॥ प्रेमझुलनिझूल्योकरौं,
दंपतिझूलनिदेपि ॥ ८ ॥ रागमलार ॥ ताल ॥ झूलतरसिकमोहन
राय ॥ संगभामिनिदामिनीघनबीचमनौंदरसाय ॥ कटिलचकिम
चकनिचलतअदभुतलेतचितकौंचोर ॥ बढिगईझूलनिझननझनन

घटाअरुस्यांम ॥ गरजनिमधुरकिंकिनीनूपुरचात्रगवचनरचनमु ग्वाम॥श्रमजलवरषतफुहीसुहीफविहसानिदसनदामिनञभिराम ॥ उडिउडिचलतमनूंबगपंकतिबिलुलितमुक्तादाम ॥ कुसमसेजअ वनीबिचलितभईअतिआनंदहियैंनृपकाम ॥ नागरियाइहिंबिधि नितपावसबृंदाबनसुपधाम ॥ १४ ॥ आजअतिपावसराजतकुं ज ॥ गउरसांवरीघटारहीमिलिबरसिरसपुंज ॥ नूटिहारविथुरेओला सेगजमुक्ताफलगुंज ॥ नागरियातहींरूपपंकदृगनिकसिसकतनहिं लुंज ॥ १५ ॥ सरसरसबरसिरहेपियप्यारी ॥ कछुकछुदृष्टिपरतअ बपौंदेसांवनानिसिअंधियारी ॥ दामिनिदेषिदिपावतहैंउरझीबांहिं यांअंषियांअनियारी ॥ नागरियाहियमैंयौंरहोनितश्रीबिहारनिकुं जबिहारी ॥ १६ ॥ गोवर्द्धनगिरवरकैंऊपरचढिदेषतब्रजसोभास्या म॥ पीतांबरफहरातपवनबसमंदमंदलहकतबनदाम ॥ तैसीयछूटिर हीघनमालाठौरठौरसरभरेसुठाम ॥ नागरीदासबिलोकतप्यारोनव जोवनबृंदाबनअभिराम ॥ १७ ॥ रागहिंडोराकाप्याल ॥ सुंदरनंद कुंवारझूलतललितकदंबतरैं ॥ जमुनांतटिनवघनस्यामसरीर ॥ सो हतफहरतमालमोहतमहाकिमालतीरहीचहूंदिसभईभंवरनकीभीर ॥ चलिरीचलिआजुनैंननिरूपअमीरसपांनकरहिंकिनहरहिंमदनतन पीर ॥ तूंगोरीवेस्यामजोरीजगतबिभूपननवलनागरीबसियधीरस मीर॥१८॥तिताल॥ झूलतरंगहिंडोरैंनवलदोऊमनमोहनमोहनिछवि पांवहीं॥द्रुमपरव्हैंव्हैंकढतबढतछबिपरसिपरसिधुरवामनौंआंवहीं ॥ पुलिबैंनीउरहारटूटिपटछूटिछूटिअंचरफहरांवहीं ॥ नागरियावढी रमकरंगीलीतामैंझकिझकझोरनिमिसुलपटांवहीं ॥ २ ॥ रागमल्हा

रेसे॥ प्यारीछूटेबारबैंनाबेसरिसरकिगयेउततूटीबनमालासिथलकिं
कनीकाटिषुलेफेंटापेचसुषसुरतझकोरेसे॥ सँवारतभूषनबसनआयस
पीजनमनवारैंरीझिरूपनिरपिठगोरेसे।नागरीदासदोऊश्रमितव्हैंसो
येसेझदेषिछबिभुरयेरीमेरेनैंनाभोरेसे ॥१४॥ रागसोरठ॥इकताल॥
नितिगरजगरजगरजकैंबरसनिघटालगी ॥ पावसरितुब्रजमेंरसरंग
रगमगी ॥ हरितभूमिगहबररहेनवकदंबअंब ॥ कुसमकलितभँवर
भारझुकिझुकिरहीझंब ॥ निति० ॥ १ ॥ झूलैंजहांझुंडनिमिलिव
लबकुलनारि ॥ जिनमधिनायकवृषभानकिकुमारि ॥ गांनकरतच
हूंऔरजुवातिनकीभीर ॥ पहरैंमनहरनितरुनिबरनबरनचीर ॥ नि
त० ॥ २ ॥ रूपचहलपहलबिचाहिंडोरनांसलोल ॥ मांनूंमुंनियनि
लालकैंझुंडनिमचीकलोल ॥ केकीसुरकुहाकिकुहाकिगावैंनववाल ॥
सुंनिसुंनिमलारमेघघुंमडिआवैंतिहिंकाल ॥ ३ ॥ नित० ॥ द्रुमनि
मांझझूलतबरबैंनीपुलिजात ॥ ज्यौंउडतमोरतरलपच्छपुच्छाफह
रात ॥ छूटिगयेअंचरउरटूटिहारडोर ॥ मचकनिमैंलचकतकटि
झोटाझकझोर ॥ ४ ॥ निति० ॥ आईश्रीराधाजबसोभाहैंबढी ॥
सांवरीसहेलीझूलैंसंगलैंचढी॥कहींनपरततासमयकीघिरसपर्‍योरंग॥
नागरियानिरषिभईनैंननिगतिपंग ॥ ५ ॥ नित० ॥ १५ ॥ राग
विहागरो ॥ इकताल ॥ जमुनाकेंतीरबीरजुवतिनकीभीरजहांपरम
रंगवोरनांरच्योहिंडोरनां ॥ बाजतमृदंगबैंनवीनसंगरागरंगपावस
रितुहोतासिंधुरसझकोरनां ॥ झूलतप्रियनवकिसोरझोटाझकझोरजो
रझननननननकिंकिंनीसोरछबिहिलोरनां ॥ नागरबढिनेहमेंहरमक
निमैंरंगरह्योचालिकटाच्छदुहूंओरदृगनिहोरनां ॥ १६ ॥ रागगोरी

निकिंकनींधुनिसोर ॥ नीलपीतदुकूलफहरततुटीनवबनमाल ॥ गयोअंचलछूटिउरडरमिलतझुकिझुकिबाल॥ छईचहुंदिसिमेघमाला छयोरागमलार ॥ दासनागरिरीतिहिंसमैंसुपबढ्योविपुनाविहार ॥ ९॥ चौताल ॥ भिजहींभिजहींरीझिभिजहींझूलतलालभिजहींनवलनेह रसअटके॥ झोटालेतहरैंहरैंभुजमूलग्रीवधरैंहासिहसिवातैंकरैंनियरैंनिपटलूंबिलटके॥ भीजतपटलपटेप्रगटअंगअंगलषिरहेइकटकहगनागरनटके ॥ नागरीदासमेहबरसतानिसभईचपला चिराकठईतऊनपरताचितहटके ॥ १० ॥ रागअडाणौ॥ इकताल ॥ झूलतहिंडोरैंलालनवलवृंदबालसंग ॥ चहूंओरठनकमनकजुवतानितनवानियबनकमनहुंमदनवागबसनसोहतहैंरंगरंग ॥ फूलनकेबरनबरननवलासीलीनैंकरनिप्रीतममनहरनतरुनिदीपतदुतिदामिनीअंग ॥ बजवतबींनानवीनगावततियगनप्रबीनगहगडगतिगांनतांनमांनपरानिमिलिमृदंग ॥ घहरतनभवटाकारीठहरतनाहिंचपलारीफहरतपटनीलपीतनिरषतमनलोचनपंग ॥ रमकनिमैंरंगरह्योजातनांहिमोपैकह्योनागरियादासरसप्रवाहवह्योअतिउमंग ॥ ११ ॥ तिताल ॥ हौंतोसोभादेषिलुभाईमेरीअंषियांजलभरिआई ॥ झूलतकदंबतरैंजमुनांतटसुंदरकुंवरकन्हाई ॥ झलकतनिकसतमुकटलतानिबिचपितांबरफहरांनिसुहाई ॥ नागरियातबतैंमोजियमैंफिररहीमदनदुहाई ॥ १२ ॥ रागबिहागरो ॥ तालचपक ॥ तूंदेषिरीसोभायाबारियां ॥ बढिजुगयेझोटाद्रुमपरसतअरुाझिरह्योपीतांबरडरियां॥ तूटिगईबनमालाहिलोरतछूटिकिंकनींकटिढरहारियां॥ नागरीदासप्रियाअंचलचलडारिलगिजातदेहथरहारियां ॥१३॥ तालचपक॥उतरेझूलेतैंसोभासिंधुझकझो

तीनलोकमैंगाइयैं, मनमोहनकोबैंन ॥ २ ॥ नेहमुरलियाकोगिनौं, रहतजुअधरनिपास ॥ मरिबोजीबोआपको, हरिकैंसासउसास ॥ ॥ ३ ॥ मुरलीकोमालाकरी, नंदलालाबसहेत ॥ राधेराधेजपति नित, गूढमंत्रसंकेत ॥ ४ ॥ अलकचँवरचांपतकरनि, अधरउसीसा लाल ॥ कौंनपुन्यकियबांसुरी, यहसुषलहतरसाल ॥ ५ ॥ नागरि यादोऊएकरस, रहतपरसपरलीन ॥ जलमुरलीव्रजमीनहै, व्रजज लमुरलीमीन ॥ ६ ॥ व्रजमुरलीनांतोसुदृढ, होतनकबहूदूर ॥ नाग रमोहनमुरलिया, व्रजकीजीवनिमूर ॥ ७ ॥ रागधन्यासरी ॥ तथा भीमपाली ॥ तिताल ॥ तूसुंनिमोहनबैंनबजावत ॥ मनमोहनबैंनब जावही ॥ उरअंतरमैंनजगावहीं ॥ सुंनिधुनिछिनुरह्योनजावहीं ॥ कहाकीजैंआलीबनमालीसैंनसुनावत ॥ सैंनसुनावतबनमालीसुं दरकरपल्लवचलचाली ॥ सुनिकोगहैंधीरतरुनिबाली ॥ कैसैंसचु पावैंफूकनिमंत्रचलावत ॥ फूंकनिमंत्रचलतबनतैंगिरवरतरुप्रे मद्रवततनतैं ॥ तरुठाढेस्यामत्रिभंगनितैंजलगवनथक्योरीपवन नपातडुलावत ॥ पवनपातडुलावतरी ॥ नागरियाधुनिसु निगावतरी ॥ कहूंषगमृगधेनुनिधावतरी ॥ धिरिटाढेइक टकमुषतैंनदृष्टिदुरावत ॥ १ ॥ पदबांसुरीकेरागजैजैवंती ॥ ॥ इकताल ॥ बांसुरीसुंनिसांवरेकीबावरीसीभईहूंहेली ॥ बिनबाजैं होंबंसीडरतैंबैठीजायअकेली ॥ आयपरैंधुनिश्रवननिमैंजबलागिउ ठैंतलबेली ॥ बिसरतसुधिनैंननिजलवरषतभीजतहारहमेली ॥ ना गरिदासनवरनिसकौंकछुमनकोदसादुहेली ॥ १ ॥ आलीकौंनैंबन मुरलीबजाई ॥ मोहनमादिकसौंभरीकांननधुनिमंडराई ॥ कांन

तिताल ॥ नईकौंनयहझूलनिहारि ॥ स्यांमांकैंसंगछविभरीसोहतस
षीनवेलि ॥ अतिसुंदरतनसांवरीअरीमनहुनीलमंनिवेलि ॥ स्वेदकं
परोमांचव्हैंजांनिपरतकछुतोत ॥ झुकिझुकिझोटामैंमिलैंहसिकुंव
रिलजौंहाहोत ॥ निरषौंफूलनिनेहकीसषीचतुरसिरमोर ॥ हमजांनी
जांनीसबैंअरीयहझूलनिकछुओर ॥ सवैंछकायेनागरीदृगनिसुधा
सौंप्याय ॥ कपटरूपधरिमोहनौंअरीप्रगटिभईव्रजआय ॥१७॥ आं
नकविकृत ॥ रागसोरठ ॥ इकताल ॥ ह्वंतोवारिहौंवारीगईदेपिहि
डोलैंहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ झूलणमैंझुकिझूमिरह्यापियप्यारीजीरैं
रूपलुभाय ॥ भीजैंतनतरवरचुवैंलागागलबांहींलपटाय ॥ रसिक
विहारीकोयौंझूलिवोम्हारामनमैंझोटापाय ॥ १८ ॥ रागअडाणौ
॥ तित ल ॥ येहोलालझूलियैंनैंकधीरैंधीरैं ॥ काहेकौंइतनीरमकव
ढावतहुभउरझतचीरैंचीरैं ॥ क्यौंतुमझुकिझुकिझोटाकैंमिसआवत
होनीरैंनीरैं॥ येवरजतत्यौंत्यौंबेनागरलेतभुजनबिचभीरैंभीरैं ॥१९॥
रागसोरठ॥तिताल॥दोऊमिलिझूलतरंगहिडोरौं॥ नीलपीतअंचलच
लचंचल बेनीहाराहिलोरैं॥ भंवरभीरलपटतसंगआवतलगिसुगंधकेंडो
रैं ॥ नागरियानागररमकनिमैंमिलिगावतथोरैंथोरैं ॥ २० ॥ रागव
डहंस ॥ व्रह्मताल ॥ वालविनोदीमेरेहियमैंझूलतनित्तवसो ॥ रतन
जटितकैंललितहिंडोरैंवछियासहितलसो ॥ रमकनिमैंलडुवामांष
नकोबिचिबिचिलेतगसो ॥ नागरियाछुसरारिकीकोऊहसैंसुभलैंह
सो ॥२१॥ वांसुरीकेपदगावनेतिनकोअलापचारीमैंदैंने ए दोहा॥
वंसवंसमैंप्रगटभइ, सवजगकरतप्रसंस ॥ बंसीहरिमुषसौंलगी, ध
न्यबंसकोबंस ॥ १ ॥ जिनमोहीसबव्रजबधू, बिसरिगईगृहचैंन ॥

विबसमोहिअधरसुधारसप्याइ ॥ ६ ॥ इकताल ॥ बाजैंबाजैंमधुर धुनिबंसीरीबाजैं॥जोसुनिहालहियेमैंबीतैंसोकहतजुआवैलाजैं।लगी पीयमुषसौंतिमुरलियानिसदिनासिरपरगाजैं ॥ नागरीदासकहांलगि निबहैंइनबातानिग्रहकाजैं॥७॥तिताल॥एरीबंसीअधरसुधारसराची। लायेरहतसुंदरमुषसौंमुषनूंहीसुहागानिसाची ॥ पियकैंसासउसासनि हारेतेरेप्रीतिनाहिंकाची॥ नागरियाहरिअधरअमृतहितबहोतनाचह मनाची ॥ ८ ॥ निलजबंसीलगीपियमुषगाजैं ॥ लाजभरीनकी लाजछुडावततऊआवतनहिंलाजैं ॥ करनहुतोसुतोपहिलैंकीनौंकर नमतैंकहाआजैं ॥ नागरकुंवरकैंप्रेमगहेलीतूमतिबाजैंरीमतिबाजैं ॥ ॥ ९ ॥ तिताल ॥ दईयाआवैंरीधुंनिवार ॥ बीचिबहैंनदियागहरी रीकैसैंउतरौंपार ॥ यहमुरलीमनलीयैंजातहैंनांहींअंगसह्मार ॥ ना गरियाकछुबसनचलतअबकीजैंकौनबिचार॥१०॥ तिताल ॥हेलीमु रलीधुंनिसंकेतमैंवाहीबरकीछांह ॥ श्रवनसुनतहींमोहिलईरीधी रनहींमनमांह ॥ नवलकह्नाईसांवरोबिनदेपैंकलनांह ॥ गुरजनड रजरिजाहुसबैरीकोऊगहोजिनबांह ॥ मोहिबुलावतकांनदैंरीलैलै राधानांम ॥ चपलाज्यौंचलिनागरीमिलीजायघनस्यांम ॥ ११ ॥ ॥ तिताल ॥ कान्हबांसुरीबजावैंनिसदिननींदनआवैं ॥ सुनिसुनि रह्योनपरतसदनमैंमदनसंतावैं ॥ हियरैंअचूकनिकेपढिपढिफूंकनि केमंत्रचलावैं ॥ नागरियाकरूंमुरलीकीसैंननमैंमोहिबुलावैं ॥१२॥ ॥ इकताल ॥ मुरलियास्यांमकीबाजैं॥इनहिंबरजोरीकोऊआजैं ॥ चढीसिरसौंतिसीगाजैं ॥ लगीदुपदैंनकैंकाजैं ॥ भयौहैंकामहिय छौहन ॥ करतहैंकरेजासौहन ॥ लगाईपीयमुषमोहन ॥ परीहैं

नधुनिमंडराईकंपपगडगभारिचल्योनजाई ॥ थिरव्हैंनीररह्योजमु
नांकोथथितभईवनराई ॥ थथितभईवनराई रैंनिमैंचंदरह्योठहरा
ई ॥ नागरीदासचकितपगमृगकुलमैंनव्यथासरसाई ॥ मैंनव्यथा
सरसाईसपीसुनिनांहिनपरतरहाई ॥ २ ॥ तिताल ॥ एरीमाईदेपि
रीतूदेपिस्यामैंमनकौंहरतुहैं ॥ मुरलीअधरधरैंसोहैंवनमालगरैंठाढो
व्हैंतृभंगीलपिरह्योनपरतुहैं ॥ चहुंओरपगमृगठाढीगऊतृनताजिइक
टकलायैंदृगअंसुवाढरतुहैं ॥ नागरीदासगोपीधुनिसुनिमत्तभईध्यां
नरूपमाधुरीकौंअंकनिभरतुहैं ॥३॥ तिताल ॥ अणीसिरधुंणिधुंणि
रहांकैंनूंकहांसहांपीरजमुनांदेतीरहैंसुनैंदीवंसीबाजदी ॥ सांवलासौं
हनाग्वाललैंदामनमुरलीवालासुनिबीतैंहालासोगलकैंनूंआपांला
जदी॥अधरौंदाअमृतरसलैंदीछिणुभीवैंननमौंनिगहैंदीसुंणिसुणिह
मनसहैंदी ॥ वहसोतिसीसपरगाजदी ॥ नागरियाजिंदडुहेलीसीनें
देविचतालाबेलीचैंननुपावांरौनिअकेलीडुभरघरीआजदी ॥४॥ राग
काफी बांसुरी ॥ तिताल ॥ मोहनबंसीधुनिउचरी ॥ शिवसमाधि
छुटिगईश्रवनसुंनिबिवसजटाविपरी ॥ जकिथकिचकिरहिगयोमद
नकरधुनहीछूटिपरीनभविमांनभईभीरसुरबधूउरअंचरविसरी ॥ ना
गरियासुंनीतांनकांनजाकीधीरजलाजटरी ॥ ब्रजगोपिनकैंहेतमुर
लियासवजगबिजईकरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ बांसुरीबनबाजैंदईकी
जैंकौंनउपाइ ॥ मैंनतीरबेधीगईहौंधीरबिनांअकुलाइ ॥ सिथलदेह
पगकांपहीमोपैंडगभारिचल्योनजाइ ॥ थक्योपवनरविरथथक्योस
वपगमृगरहेलुभाइ ॥ श्रवतप्रेमजलजडनिकैंरह्योजमुनांजलठहरा
इ ॥ बंकनैंनभुवतरुनतृभंगीपीतवसनफहराइ ॥ नागरियाधरबदत

तनकभनकधुनिसुनिताविमलचंदाथाकिरह्योगैन ॥ आजलौंरहीरी लाजराषीपारिपरिपइयां ॥ नागरीनवसकहाकीजैंगुसइया ॥ २०॥ तिताल ॥ बंसीमनमोहनीबाजैं ॥ बंसीबाजैंसुनिरीआजैंटूटतलाज कीपाजैं ॥ ठाढोहैंरंगीतृभंगीसषीमुषअंबुजबैंनाबिराजैं ॥ नागरीनं दललाबनमालीसौंआलीमिलौंकैसैंआजैं ॥ २१ ॥ तिताल ॥ बैंन बाजैंजमुनांकैंतीर ॥ उमगिचलीसांवनसरित्ताज्यौंजुवतिनकीभीर॥ हाइदईनिदईमोहिरोकीकितजांऊवीर ॥ नागरीदासप्रेमपथआगैंपं हुंचीछांडिसरीर ॥ २२ ॥ रागपरजकीबांसुरी ॥ हेलीमोहनमुरली धुंनिसुनीमोहितबतैंकछुनसुहाइ ॥ वहरवविषज्यौंरमिरह्योहोंलहर निलईदबाइ ॥ घायलज्यौंघूंमतफिरौंधरपरतडगमगेपाइ ॥ कुंवर सजीवनिसांवरोवाहीपैंमंत्रपढाइ ॥ वहमुषमोहनमाधुरीनिसदिनउर बिचउरराइ ॥ भरिभरिलोचनआंवहींजियबिनदेषैंअकुलाइ ॥ पी रपूरनपासिपरहीछबिगडीतृभंगीआइ ॥ नागरियाप्रियप्रांनजांनम निजिंहिंतिंहिंभांतिमिलाइ ॥ १ ॥ इकताल ॥ मुरलियाकौनैंण्याल परी ॥ काजकरनसुंनिथकीद्वारइतउतपगडगनधरी ॥ मातपितापि तुबंधसबनिमैंप्रीतिहिप्रगटकरी ॥ नागरियाव्रजजुवतीजनसबप्रेम जालकरी ॥ २ ॥ तिताल ॥ बंसीधुनिमनलियैंजाय ॥ बिरहबिथा कीपीरबढीसुनिधीरनहींठहराय ॥ नैंनजलमईश्रवनबैंनमईहियैंठई हरिमूरतिआय ॥ नागरियामुरलीमोहनकीगोहनलागीहाय ॥ ३ ॥ ॥ इकताल ॥ बनबाजैंमुरलियास्यामकी ॥ सुनतहीहौंजकिरहीस सौंहींसुघिभूलीधामकामकी ॥ घरीएकबीततनांहींदिनरैंनचैंनबि श्रामकी ॥ श्रवनमूंदिदूरह्योजातनाहिंनागरमोमतिवामकी ॥ ४ ॥

मारैंगोहन ॥ नागरियावहतहैंअंसुरी ॥ उठतहैंकसकविचपंसुरी ॥ अरीबंसुरीअरीबंसुरी ॥ अरीनूछिमाकरिबंसुरी ॥ १३ ॥ तिताल ॥ गईकरिबीरबांसुरी ॥ गरैंकटीनैंकडरैंनदईतैंढरैंआंसुरी ॥ तांननकेतीरमारतपीरपांसुरी ॥ तूंनागरअधरारसलैंहमलैंउसासुरी ॥ १४ ॥ इकताल ॥ सुनिरीआईधुंनिहैंबनबंसीबाजैं ॥ रुक्योपवनअरुगवनचंदाथिरजमुनाउलहतपाजैं ॥ मनमथमनहिमरोरैंमारतअबनरहतकछुलाजैं ॥ नागरनवलतृभंगीसौंसपीकैसैंमिलैंचलिआजैं ॥ १५ ॥ राग बंगालाकी बांसुरी ॥ इकताल ॥ आवैंआवैंहोबांसुरीधुनिआवैं ॥ सुंनिसुंनिमनबौरावैं ॥ अबमोहिगृहअंगनांनसुहावैं ॥ मेरोमिलनप्रांनअकुलावैं ॥ मनमथलहरिघुमावैं ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ नागरीदासचल्योनाहिंजावैं ॥ उठिउठिफिरिमुरछावैं १६ ॥ तिताल ॥ सीतलकदंबतरैंबंसीबाजेंधीरैंधीरैं ॥ सुनियतहैंजमुनांकैरीजमुनांकैंतीरैंतीरैं ॥ मनहुतृभंगीसनमुषठाढोसनमुषठाढोनीरैंनीरैं॥ नागरियाभुजबीचनआवैंनभरीभुजभीरैंभीरैं ॥ १७ ॥ तिताल ॥ बनमालियारेबंसीवजाईसुनियतबूरिजमुनांपार ॥ मुरलीअधरधरीपरीजियषरभरीसुंदरतृभंगीरेरंगीकीनौंकौंनउचार ॥ अगमबिषमबनबीचजलधाराअनपारलंघईयोरेस्वामीमारैंसरमार ॥ चल्योईचहतमगपगनचलतदईनागरीरिझईरीहूंस्यामैंनाहींअंगसम्हार ॥ १८ ॥ तिताल ॥ गहरैंगहरैंमुरमुरलीसुनिदूरिबाजैं ॥ मैंनभरीधुनिसैंनसुनावैंराहिवोनआजैं ॥ तरुनतनइयातीरवाहीबनछईया ॥ नागरीनवलतृभंगीवनमालीविचअमरईया ॥ १९ ॥ तिताल ॥ सुंनिबंसीबाजैंबंसीबाजैंसरदजुन्हइयारैंन॥

तिबिसारी ॥ बिस्वबिजईबितनगर्वषंडनकरनवरहरनघोषजन कीजियारी ॥ नागरीनवलब्रजगोपिकनिहितकुंबरधराधरधरनानित बैंनधारी ॥ ३ ॥ चर्चरी ॥ जयतिबनमालनवलसतहुलसतप्रभावस तबिहरतसदाउरबिसाला ॥ फूलफलमंजरनिदलनिमयदेहआनंद आमोदभारंभ्रमरजाला ॥ बिपुनतनयातरुननितिछबिलहलहाति पिलियसुषझेलिझुकिझुलियमाला ॥ दासनागरिआर्छयाकेहितलो चनबिसालीनांवबनमालीभयेनंदलाला ॥ ४ ॥ चर्चरी ॥ जयतिल लितादिदेबीयब्रजश्रुतिरिचाकृष्णप्रियकेलिआधारअंगी ॥ जुगल रसमत्तआनंदमयरूपनिधिसमरसुषसमयजिमछांहसंगी ॥ गउरमु षहिमकरनिकीजुकिरनावलीश्रवतमधुगांनहियहरितरंगी ॥ नागरी सकलसंकेतअधिकारनीगनतगुंनगननिमतिहोतिपंगी॥५॥ चर्चरी ॥ जयतिबृंदाबिपुनबिस्वबंदनमहीमहिमाअद्भुतनिगमगाजगाजैं ॥बन निबनराजब्रजराजसुतप्रियतहांसहजसुषनित्तरितुराजराजैं ॥ कथ तश्रीमुषकथाकृष्णबलिप्रतियथाफूलफलझूमिछबिछाजछाजैं ॥ कोशदसदोयअनुरागरैंनीरचीपरसिमनत्रिरंगताभाजिभाजैं ॥ जुग लकलकेलिविचकुंजरचनारुचिरनूपुरनिशब्दप्रतिबाजबाजैं ॥ दा सनागररंगवागराधासदानिरषिदृगकांमरतिलाजलाजैं ॥ ६ ॥ च र्चरी ॥ जैतश्रीगांवगोकुलरमणनंदसुतअवनिउच्छवरूपअतिआभि रांम ॥ भीरआभीरबढिधेनुसागररह्योजितहिंतितहोतगुनगांनस्यां म ॥ रहतधुनिछईतहांमेघमथनांनिकीफिरतहारिहरतदधिवांमधांम॥ सबनरनारिगोपाललीलामगनदिवसनिसजातजांनतनजांम ॥ पारि कसुषसंपदानिरषिचितचकितसुरलोकतजिचहतभुवबासग्रांम ॥ ना

रागकेदाराकीबांसुरी ॥ इकताल ॥ अरीबांसुरीपरीहैंकौंनटेवतिहा
री ॥ पैठतआंनिआंनिकांनानिमगप्रानिगहतकहारी ॥ लोकला
जग्रहकाजछुटावतसुधिबुधिहरतहमारी ॥ काहेकौंबैरकरतव्हैकैंतू
नागरपियकीप्यारी ॥ १ ॥ इनपदकीअलापचारीमैं दैने ए
॥ दोहा ॥ नीलांबरासिरचंद्रिका, गउरअंगअभिरांम ॥ सोमेरेहि
यमैंबसो, मोहनमोहनभांम ॥ १ ॥ साधोकोरिकजतनतउ, सरैंन
एकोकांम ॥ राधाआधोनांमहूं, लियैंहोतबसस्यांम ॥ २ ॥ राधा
रजपदपद्मतब, आराधैंसुषरास ॥ जबवृंदावनप्रेमरस, लहतनाग
रीदास ॥ ३ ॥ तालचर्चरी ॥ जयतिश्रीकृष्णनवनीलआनंदघन
रूपसिंगाररसवनविलासी ॥ मदनमदमथनव्रजगोपकुलरतनतन
परमसुंदरप्रियाउरनिवासी ॥ बेणुमुषधरनचितवधूव्रीडाहरनचंद्रि
काधरननिसरासबासी ॥ दासनागरप्रणितनंदसुतरसकंदराधिका
चंदमुषदृगउपासी ॥ १ ॥ चर्चरी ॥ जैतिश्रीचंद्रिकाचारुकलधूत
केसूतकृतचित्रबहुरंगअंगे ॥ कृष्णचूडारुचिररूपविस्तारनीबरहित
नयामूलमुक्तिसंगे॥ सर्बअवतंसपरउच्चआरूढपदघोषजनदृगकरपि
करनपंगे ॥ चढियमनुसिषरासिंगारमंदिरधुजाउठतफरहरानिबिचछ
वितरंगे ॥ प्रियापदजुगलजावकभरतकरततबइंद्रधनुरंगअभिमान
भंगे ॥ नागरीदासचितचढियनैननिचढीचढीहरिसीससुंदरउछंगे॥
॥ २ ॥ चर्चरी ॥ जैतिश्रीमुरलीकाबपुधरनभारतीलालमृदुअधरस
व्यानिहारी ॥ कँवलमुषमधुरमकरंदसींचतसदाछिनकाबिनप्रानत
जिदैंनहारी ॥ कृष्णप्रियपरससंकेतहितदूतिकारासरसकेलिघन
कौसतारी ॥ अषिलब्रह्मंडधुनिभेदव्यापकभईअमरनरनारिधृतिम

यारे ॥ बिचरतकरतपुनीततीरथनिअगनितजीवउधारे ॥ अबक रिकृपादासनागरिकहैंमेटोतापहमारे ॥ २ ॥ इकताल ॥ मुनिसब लोकपावनकरे ॥ प्रगटिश्रीभागौतकीनौंकरुनांसागरढरे ॥ ल्याय भागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे॥ तुमजुसबउरभवनमैंभक्तिदीपकधरे॥ कृष्णचरिताबिचित्ररसमदप्रेमगहबरभरे ॥ सहजश्रीसुकचरननव कादासनागरतरे॥३॥ रेषता ज़ुबानके इन धुरपदौं षियालौंकी अला पचारीमैं दैनें ए दोहा॥उसहीकीसुंनिसिफ़्तकौं, किसीज़ुबामैंहोय॥का दरनादरहुस्नका, कृष्णकह्यायासोय ॥ १ ॥ उजलेमैलेषलकमैं, फै लेमज्बअनेक ॥ इस्कबाजसिरताजकौं, इस्कपियाराएक ॥ २ ॥ इस्कबाजवैसानकोउ, वैसासूरतषूब ॥ नागरमोहनसांवला, कद रदांनमहबूब ॥ ३ ॥ मजामज्बजोषलकमैं, सोदिलकछुनसुहाय अज्बउसीकेइस्कका, परैंगजबजबआय ॥ ४ ॥ राग इकताल ॥ अज्बसषसजिंदबक्सबेनजीरदस्तगीरहितनिबाहवाहसबषूबियौंका भारासा ॥ इस्कबाजदरदबंदकदरदांनजांनमनजांनप्रानप्याराच स्मौंकातारासा ॥ नंदकाफ़रज्यंदपूबनागरसलौंनास्यामफैल रह्याब्रजमैंउसहुस्नकाउजारासा ॥ कादरअज्बरूपनादरगुसांई अैसादेषानसुनाहैंकहूंसाहिबहमारासा ॥ १ ॥ रागइकताल ॥ जिसनैंनहींपीयाहैंउसइस्ककापीयाला ॥ तिसनैंआयषल्कमैंअब स्कैंपायडाला ॥ दीनवोदुनियांकेदिलदिमाकसौंवहन्यारा॥इस्कसौं न्यारानहींआसिकनिवाजप्यारा ॥ ज़ुल्फ़कोजंजीरसण्तादिलकौं दस्तगीरकीया ॥ उस्कौंपुदाबंदहरेकफंदसौंछुटायलीया ॥ अब्रू यदुकजतेगचस्मषंजरमदहोस ॥ इनसौंकतलहौंनैंबिनजोंनांअफसो

गरीदासधनधन्यसोकुलजहांगांवहींरसनांगोकलसुनांम ॥ ७ ॥ चचंरी ॥ जयतिगिरराजकृतछत्रव्रजराजसुतसहजसुरराजगतिगर्वहारी ॥ वर्यहरिदासजनघोषसुषरासरितुसर्वदाहरितहुल्लासकारी ॥ सकलरसबर्द्धनंदेवगोवर्द्धनं प्रणतिइंद्रादिसुरलोकचारी ॥ बिपुनमधिनायकंभूमिछबिभायकंपायकंनीलमणिपीतप्यारी॥परमप्रियहेतसंकेतसुपकंदरातहांनिसदिवसबिहरतबिहारी ॥ नागरीदासलघुबुद्धिबरनैंकहाउतहिंनगप्रगटजगमहिमांभारी ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥जपतपसंजमनेमव्रत, जोगजग्यकरिपूर ॥ भक्तिभागवतसंगबिनु, भक्तिनउपजतमूर ॥ १ ॥ सुनैंभागवतभक्तिव्हैं, भक्तिभयेंव्हैचैंन॥ जक्तमांझआशक्तक्यौं, दुषबितवैंदिनरैंन ॥ २ ॥ संमृतबेदपुरानहैं, सबहींहरिकेअंग ॥ रंगनलागैंभक्तिको, बिनाभागवतसंग ॥ ३ ॥ जक्तभक्तबहौभांतिकहि, नानामतकेमांहि ॥ सुकसुषकेबिनफलद्रवैं, ब्रजरसपावैंनांहि ॥ ४ ॥ नागरीदासाबिचारिजिय, अफलजायनहिंदेह ॥ चाषिभागवतअमृतफल, जनमसफलकरिलेह ॥ ५ ॥श्रीमत भागवतकी कथाके समैं ए पद गांवनें राग प्रभातकेमैं तथा सारंगमैं गांवनें ॥तिताल॥ आरतीश्रीभागौतकीकीजैं ॥ श्रवनसुनतजीवनफललीजैं ॥ गोघृतरचितकपूरकीबाती ॥ निरषतजोतिजोतिभईछाती ॥ जनमजनमकेबंधनजारे ॥ भवसागरमैंबहतउबारे॥ तीनतापकरिडारेमंदे॥ नागरीदासफिरतआनंदे ॥ १ ॥ तिताल ॥ जैंजैंश्रीसुकमुनिमतवारे ॥ कृष्णरूपगुनमत्तवारुनीउनमीलतदृगभारें ॥ सीतलसुषदप्रसन्नबदनाबिधिलषिहियमिटतअंधारे ॥ जगमगातनवक्रांतिमाधुरीप्रेमपुंजउजि

निसस्तगाहकीया ॥ इककश्रभीवाहिरकेआयेक्योंकिजायजीया ॥ नागरदिलपुसनांपुसअपियांदुषजिमैकरिलीया ॥ आंसूपल्करुमाल इसारतबोलैंबीयाबीया ॥ ७ ॥ राग सोरठ तिताल ॥ उसहुस्नके तकाबलकरनांबयांनक्याहैं ॥ फिरिचस्मविनविचारीसायरजुबांन क्याहैं ॥ महताबमुषकोंदेषैंबेताबहोतदिलहैं ॥ उसआगूंकिसकेम नकारहतासयांनक्याहैं ॥ हररोजवासजनकीमुजमारतीअदाहैं ॥ इसतर्जवेतकुल्लहफजीकाजियांनक्याहैं ॥ नागरअगरगिरफतैं दरदस्ततेगषूंनी ॥ अवइस्कपेतउसकूंलेनांमियांनक्याहैं ॥ ८ ॥ ॥ इकताल ॥ निगाहकेमिलतैंहोंचस्मौंपैगांमाकिया ॥ रिसवतमुस क्यायदियादिलकोंलुभायलिया ॥ पुकारतीथीयारकोंमिजगांकि विया ॥ सुरझैंनहीइस्कनजरउरझीमुझवीचहिया ॥ सांवलासाहि बजमालछैलछलनिवालतिया ॥ नागरकहाओपियाउसविननहीं जायजिया ॥ ९ ॥ इकताल ॥ आंषियोंसौंमैंकहाथाकरोमतहुस्न परस्ती ॥ जबतोंनहींरहीविचसोषअसरमस्ती ॥ अबविरहकीअ वाईदिलपरपरीहैंताजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैमुस्कलहैंइस्कबाजी ॥ ॥ १ ॥ दोहा ॥ नैंननबेहुकर्मीनकों, वहोतरहीसमुझाय ॥ हायइ स्कआफतअबस, सिरपरडारीलाय ॥ १ ॥ अपनेंजांनिनसिहिन किए, बहोतबहोतदिनरैंन ॥ मैंअपनीसीकारिथकी, अपनेहुएननैं न ॥ २ ॥ मनाकिस्तीहैंसिकस्तीदरियालगनमेंगहरैं ॥ तुजरूहरु यरुपौंहीउठतीहैंकहरलहरैं॥ अपसोसकेभंवरमैंरष्यूंसदादियाजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैं ॥ मुस्कलहैंइस्कबाजी ॥ २ ॥ दोहा ॥ परीइ स्कदरियावदिल, नावनपावतओर ॥ बेपरवाईरावरी, पुरवाईझक

स॥ गुलगुलाबसदं संदलल्याताक्याअंग॥ सनमकोहुस्नरोसनोंपरहो कैंजलपतंग ॥ नागरहौंउसगलीकापायषाकपूब ॥ सबैपुसअदाह सौंजहांचलतामहबूब ॥ २ ॥ राग तिताल ॥ सुंदरसलौनैंबदनकं वलपरएअंषियांहैंभंवरगिरीक्यौं ॥ फेरिरहीमैंनासियतकरकरगज बकीमारीफिरनाफिरीक्यौं ॥ हायअबसमैंजायपरीदिलहुस्नलाय कीलपटलगीहैं ॥ इस्ककीआफतलिषीहमनासिरसोअबहरदमरहैंत गीहैं ॥ छुटैंनजियसौंवजैंललनकीचिमनमैंषुसदिलहोनिकलनकी॥ कलगीमालाजुल्फहलनकीअदाहउसकेलटकचलनकी ॥ कहौंसंदे सजहांवहपीयातुजाफिराकसौंजलताहीया ॥ जहरजुदाईप्यालादी याजायनहींबिनदेषैंजीया ॥ अरेपीयारेमुझैंजिलारेगलीहमारीतोदु कआरे ॥ तजीसहेलीरहूंअकेलीजिंदहुहेलीदरसदिषारे ॥ करीदि वांनीदरदहुण्यारीजाहरहुईसबनिपरयारी ॥ एमनमोहननागरवारी लाजतजैंकीलाजहमारी ॥ ३ ॥ इकताल ॥ कीहैंहसियारनिगाह अज्बइमरोजरस्मौं ॥ जीयादैंइस्ककीआमदसराबमस्तचस्मौं ॥ दीयाभरिरुषपीयालौंहीयासरसारबस्मौं॥ कीयादिलनागरबेअषत्या रउसीदिलदारकोकस्मौं ॥ ४ ॥ राग हमीर ॥ तिताल ॥ अजौं मददजिगरइस्ककयाहकीममरजपावैं ॥ चस्मकीदारूनअबसन ज्बदस्तलवैं ॥ मनगकेदराफिराककुछाजिकरषुस्नआवें॥ दिलकौंर फाहोयतबनागरदरसदिषावैं ॥ ५ ॥ राग इकताल ॥ फीराकदि लसौंदरहरतरीकजुदानहोस्यायत ॥ लिषीहैंइस्ककीआफतनसी बमन्नकवायत ॥ नहींहैंदुकगौदिलदर्दरफायत ॥ सांवलानागरबे परवाहनिहायत ॥ ६ ॥ राग बंगला तिताल ॥ हीयामन्नमहबूब

सिकदिलअंपियौंकीजगमैंसबसैंअकहकहांनीहैं ॥ फिरनफिरैंमहबूबकरैंजबहांसिचितवनिमहमानीहैं॥ बेसकबदनपरहेजनिहायतइनाहिंनलालचहैंजीका ॥ हुस्नजहरकागिजामुकररऐसीअजबअयानीहैं ॥ उनाबिनसनमऔरनहींसूझैं ॥ हरदमएकउसीकूंबूझैं ॥ इसमतलबमैंनिपटसयांनी ॥ औरनकहूंलुभांनीहैं ॥ मस्तहालसबसुधिविसरांनीप्यासीमरैंपरीबिचपांनी ॥ एगरीबउसरूपदिवांनीउहिनागरअभिमांनीहैं ॥ २ ॥ देषामनमोहनसौंहनप्याराफैंटासिरवासजकजदार ॥ तिसपैंधरेबनायगुलगुलावनौबहार ॥ हैंरहैंरदुजुल्फबदरौंमैंरोसनमुषचंद ॥ ज्यांनडसैंकालीकालियांसीमतवालियांभौंहबुलंद ॥ महरभरेचस्मौंकीसहरसीनिगाह ॥ स्यामरंगअंगअंगअजबषुसअदाह ॥ बदास्तनीलोफराफिरावताआवताविचउमंग ॥ उसकीकिरनमैंफिरतादिलहैंहुंनराफिरंग ॥ चालमौंचितचालडालडालाजंजाल ॥ हुवानिहारनागरछबिइस्कमस्तहाल ॥ ३ ॥ तिताल ॥ कौकरांमैंरांनीविहांनीनींदनआवैं ॥ वहीरूपआंपडियांआगैंआंनिआंनिमंडरावैं ॥ मैंडाहालनबुझदामोहनसौंहनबेपरवाहकहावैं॥ नागरियासांईनकिसीकौंइस्कफंदबिचलावैं ॥ इकताल ॥ हुवाहैंइस्कदामनगीर ॥ स्यायतभीनरफायतदेतादिलकौंदुगनीपीर ॥ सुवैंस्यामसोतैंजगतैंसंगलगीरहैंबिरहबहीर ॥ नागरकुल्फकरीअंषियांअबजकरिजुल्फजंजीर ॥ इकताल ॥ मोहिक्यौंपिलायानींइस्ककापियाला ॥ ल्यावल्यावस्याकीमहबूबांहायहायमतवाला ॥ अबधीरजकेपायनठहरैंजायनअमलसंभाला ॥ नागरियावहरूपमोहनदागलबिचपयाजंजाला ॥ ५ ॥

झोर ॥ १ ॥ परिगईनावकुदावचित, किससैंकरूंपुकार ॥ प्रीतम भंवरकेपेचतैं, कौनउतारैंपार ॥ २ ॥ मेरीदसादुहेलीयहकिसकौं कहिसुनाऊं ॥ परीप्रीतकेसमदमैंकहूंपारभीनपाऊं ॥ नागरनवल पियारेतुमतोहोषुसमिजाजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैंमुसकिलहैंइस्क बाजी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ अकथकहांनीप्रीतकी, कहीनमानैंकोय ॥ कोइयकजांनैंपलकमैं, जिससिरबींतीहोय ॥ १ ॥ रहैंहालहरदम लगा, छुटताहैंजियधीर ॥ पीरनपावैंइतेपर, यारनिपटबेपीर ॥ ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥ अव्ररूमहरावपानैंमिजगांअं सवौंकाफरंगफव्वाराकिया॥ पुतलीमसनदमुलायमकाजिनहारकि सींनैंनसफसछिया ॥ तुजइस्कहीकारोसनसमेजहांजिनजुलनातनि कासदिया ॥ पुकारैंनिगाहसबोरोजनागरबियारेवियाएपियारेपि या ॥१॥ इकताल ॥ लवआबकियाषसपांनांपंषावंधावाजगस्तीफ हिरैंफहिरैं ॥ परदेदरफरसएसंदलकेसबरंगरंगेगहिरैंगहिरैं ॥ जल चादरहोजजहांआबसारैंफवारेचलैंनहिरैंनहिरैं ॥ इहांनागरिनागर साहिबऐसउठैंसुषकीलहिरैंलहिरैं ॥ २ ॥ राग ललित ॥ तिताल॥ सुनिरीसषीसयांनी॥मुजइस्ककीकहांनी॥ देषामैंस्यामसलौंनां ॥ उ सकेहुस्नमैंटौंनां ॥ भौंहैंबुलंदमुषवीरा ॥ सिरजाफरांनीचीरा ॥ जो बनमैंमस्तआंषैं ॥ गोयाकंवलकीपांषैं ॥ नींमांमिहीनतंग ॥ जिस मैंझलकताअंग ॥ कसैंतनबदनजवांहिर ॥ नैवजवांउमरषुस जाहिर ॥ उसकीअजबअदायैं ॥ दिलडालतीझुलायैं ॥ अबवहि सजनजहांहीं ॥ मुजलेचलोजहांहीं ॥ तलफौंलगीतालावेली ॥ नागरबिनाजिंददुहेली ॥ १ ॥ रागभैरूं ॥ तिताल ॥ श्रा

यैंअदालतजुलमकी, जहांबैठामहबूब ॥ १५ ॥ आसिकपीरहमेस दिल, लगैंचस्मकेतीर॥ कियाफुदामहबूबकौं, सदासन्तवेपीर॥१६॥ आसिकासिरअपनाअरे, धरिदैंपैरूंलाय ॥ बेनिसाफमहबूबकैं, करैंदूरअनषाय ॥ १७ ॥ षूनकरैंलडवावरे, महबूबौंकेनैंन ॥ आसिकसिरकीगैंदसौं, पेलैंतवहीचैंन ॥ १८ ॥ सुरषचस्ममहबूबनैं, पंजरकियेसँवार ॥ निकलैंलोहूसौंरंगे, आसिकपंजरपार ॥ इस्कषेतसौं नहिंटलैं, अवैंबेउसवास ॥ चस्मचोटसौंसिरउडैं, धडबोलैंस्यावास २० ॥ पलककियाषालिकअरे, हसनैंहींकौंषूब ॥ सहनैंकौंआसिककिये, मारनकौंमहबूब ॥ २१ ॥ चस्मोंसौंजंगकरैं, रसगस्मौंबिचपेत ॥ लटतस्मौंसौंबांधिकैं, दिलबस्मौंकरिलेत ॥ २२ ॥ पंडितपूजापाकदिल, ॥ एदिमाकमतिल्याय, लगैंजरबआंषियांनकी, सबैंगरबउडिजाय ॥ २३ ॥ पावसकैंनहिठहरिकैं, छुरीचरमकीपीर ॥ जोजानैंजिसकेलगैं, कहरजहरकेतीर ॥ २४ ॥ तीरनिगाहूकेलगैं, दरदमुकरराहाय ॥ जरराहभीजरराहसौं, मिलैंनउरकेवाय ॥ २५ ॥ एतबीवउठिजाहुघर, अबसहुवैंक्याहाथ ॥ चढीइस्ककीकैफयह, उतरैंसिरकेसाथ ॥ २६ ॥ कस्मौंतुम्हैंकरीमकी, सुनियोसबैंजिहांन ॥ चस्मौंकीलागीगिरह, छूटैंछूटैंज्यांन ॥ २७॥ क्याराजाक्यापातसा, क्यागरीबकंगाल ॥ लागेतैंछूटैंनहीं, नैंननिबडोजंजाल ॥ २८ ॥ लगातीरजमधराछिपैं, छिपैंछिपाईसैफ ॥ नहिंउतरैंनांहिनछिपैं, हैफइस्ककीकैफ, ॥ २९ ॥ अरेपियारेक्याकरौं, जाहिरहोहैंलाग ॥ क्यौंकरिदिलबारूदमैं, छिपैंइस्ककीआग ॥ ३० ॥ आतसलपटैंरागकी, पुंहचीदिलबिचजाय ॥

अथ इस्कचिमनके ॥

दोहा—उसहीकीसुनिसिफ्तकूं, किसीजुवामैंहोय॥ कादरनादरहुस्नका, कृष्णकहायासोय ॥ १ ॥ इस्कउसीकीझलकहैं, ज्यौंसूरजकीधूप ॥ जहांइस्कतहांआपहैं, कादरनादररूप ॥ २ ॥ कहूंकियानहिंइस्कका, इस्तैंमालसंवार ॥ सोसाहिबसौंइस्कवह, करिक्यासकैंगंवार ॥ ३ ॥ सरमिंदाहोयइस्कसौं, सोदेवैंसवखोय ॥ निंदासहदांनैंवजैं, सोईचुनिंदाहोय ॥ ४ ॥ दुनियांदारफकीरक्या, हैंसबजितनींजात ॥ बिगरइस्कमस्तीअरे, सबकीपिस्तीबात ॥ ५ ॥ सादेजेप्यादेसबैं, जद्यपिधनअनपार ॥ इस्कअमलमस्तीलियैं, सो हस्तीअसवार ॥ ६ ॥ सबमहजबसबइल्मअरु, सबैंअसकेस्वाद ॥ अरेइस्ककेअसरबिन, एसबहीबरवाद ॥ ७ ॥ आयाइस्कलपेटमैं, लागीचस्मचपेट ॥ सोईआयापलकमैं, औरभरइयापेट ॥ ८ ॥ जरबाजीबिनपलकके, कामनसंवरैंकोइ ॥ एकइस्कबाजीअरे,ज्यां बाजीसौंहोइ ॥ ९ ॥ सीसकाटिकरभूधरैं, ऊपररप्पैंपाव ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, असाहैंतोआव ॥ १० ॥ जिनपावौंसौंषल्कमैं, चलैंमुधारिमातिपाव ॥ सिरकेपावौंसौंचला, इस्कचिमनमैंआव ॥ ११ ॥ कोइनपुंहचाउहांतलक, आसिकनामअनेक ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, आयामजनूंएक ॥ १२ ॥ इस्कचिमनमहबूबका, जहांनजावैकोय ॥ जावैसोजीवैंनहीं, जीवैंसोबौराहोय ॥ १३ ॥ अरेइस्ककेचिमनमैं, सम्हालिकैंपगधारिआव ॥ बीचराहकेबूडनां, ऊबटमांहिबचाव ॥ १४ ॥ मारेफिरिफिरिमारिये, चस्मतीरसौंएब ॥ कि

र ॥ ४६ ॥ इतिश्रीपुस्तकश्रीमहाराजकुंवारश्रीसांवतसिंहजीद्वुती यहरिसमंधनामश्रीनागरीदासजीकृतपदमुक्तावलीसंपूर्ण ॥

कवित्त ॥ छप्पै ॥ परमधर्मप्रतिपालसमरपंडितअतिभारी ॥ गुनमंडितमतिविमलभक्तिनवधाअधिकारी ॥ रसिकानिमनकौंमंत्र विमोहितसिंहबाहादर ॥ स्यामास्यामसनेहगेहकरिराष्योउरबर ॥ धुरधरनिभांनसासिसत्तरिपचिरंजीवजोलौंसुपद ॥ नृपराजराजमृगराजसुवधन्यधन्यजगजसविसद ॥ १ ॥ यापदकेगावनेमैंदैंने ए दोहा ॥ परमपुष्टिरसजलअमित, उर्मीप्रेमावेस ॥ नागरप्रगटिआनंदनिधि, वल्लभसुतविठलेस ॥ १ ॥ वलभाचारजकलपतरु, फललाग्योविठलेस ॥ याफलकोरसरूपहैं, गोकुलनाथब्रजेस ॥ २ ॥ धनवल्लभविठलेसधन, धन्यसातसुतवंस ॥ भवनिस्तारनिहितप्रगटि, नागरजत्तप्रसंस ॥ ३ ॥ राग ॥ श्रीवल्लभाचारिजकुमारकुमदकुलनिसेस ॥ भक्तिजनप्रसंसितश्रीमतविठलेस ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायचूडामणिचार ॥ नागरप्रणमाम्यहंअंन्हिकल्हार ॥१॥ राग ॥ क्रीडतरासिकरासरससरंगे ॥ प्रफुलितविपुनव्रहतमलयानिलउदयतिससिसर्वंगे ॥ सरदबिमलराकानिसस्रुपकृतकलरववेणुतृभंगे ॥ रासारंभव्यौमधुंनिपूरतमहुवरमुरजमृदंगे ॥ गउरस्यामभुजग्रीवरचितपदसंगीतसुधंगे ॥ अंदोलितअलकावलिकुंडलगुनिमुक्तावलिभंगे ॥ रसानंदआवेसत्रिवसपटनीवीसिथलसुअंगे ॥ रूढविमानअमरप्रेमातुरमुर्छितअवनिअनंगे ॥ श्रीवृंदावनराधामोहनकेलिकलपब्रहोसंगे ॥ नागरियागोलोकअषंडितकथतकथासुकभृंगे ॥ २ ॥ राग ॥ग्रीरितुमलयसमीरमंदगतिबहतिपरासिद्रुमफूलं ॥ चंद्रोदय

दबीइस्कवारूदकी, भभकानिलागीलाय ॥ ३१ ॥ उठैंआगि
उरइस्ककी, जलैंअैसअरांम ॥ चलैंनकैफीचस्मविच, घुटैंधुवैं
केधांम ॥ ३२ ॥ गिरेरहैंभीजेरहैं, मुतलकभीसह्मलैंन ॥ हुस्न
पियालेपीयकैं, हुयेहैंमदवेनैंन ॥ ३३ ॥ गिरेतहांहीगिरिरहे, प
लभीपलउघरैंन ॥ पूरेमदवेहूस्नके, मजनूंहींकिनैंन ॥ ३४ ॥ चली
कहांनीपलकमैं, इस्ककमायाखूब ॥ मजनूंसेआसिकनहीं, लैली
सीमहबूब ॥ ३५ ॥ मजनूंकौंकहैंसवअसल, औरनकलकेभाय ॥
कछूहोयदिलमैंअसल, तबसकैंनकलभीलाय ॥ ३६ ॥ नकलसांच
सौंसरसकरि, करिलीनैंदिलदस्त ॥ हरिदासकेहालमैं, दरदिवाल
भीमस्त ॥ ३७ ॥ इस्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय ॥
हरिदाससवकौंगया, चेटकरूपदिपाय ॥ ३८ ॥ इस्कहुस्नकीबात
क्यौं, सकैंसुषनमैंआय ॥ दिलचस्मौंकेजुवानहोय, तवकछुकहैं
सुनाय ॥ ३९ ॥ कहीजायकहांइस्ककी, कहेनमांनैंकोय ॥ जा
नैंसोजांनैंअरे, जिससिरवीतिहोय ॥ ४० ॥ पलकनमांनैंएकभी,
अवसकियैंबकवाद ॥ पूवकमावैंइस्ककौं, तबकछुपावैंस्वाद ॥ ४१ ॥
मजाअजायबहुस्नका, चष्पैंचस्मजुवांन ॥ इस्कचिमनरष्पैंसोई,
आवादांनसुजांन ॥ ४२ ॥ चस्मौंकिचस्मांझरैं, झरनाआवफिराक ॥
इस्कचिमनतबसब्जरहैं, दिलजमींनहोयपाक ॥ ४३ ॥ इस्कचि
मनआवादकरि, इस्कचिमनकौंगाव ॥ नागरवरमहबूबके, इस्क
चिमनमैंआव ॥ ४४ ॥ जिगरजष्मजारीजहां, नितलोहूकाकीच ॥
नागरआसिकलुटिरहे, इस्कचिमनकेबीच ॥ ४५ ॥ चलैंतेगनाग
रहरफ, इस्कतेजकीधार ॥ औरकटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवा

बिहाइ ॥ बारबारसुपनैंहूंसूचतसुरतरंगकेभाइ ॥ यहसुषनिरषिसषी
जनप्रमुदितनागरीदासबलिजाइ ॥ ८ ॥ राग ॥ सटपटातकिरननि
कैंलागैं ॥ उठिनसकतलोचनचकचौंधतऔंचिऔंचिओढ़तबसनदो
उजागैं॥ हियसौंहियमुषमिलवतहसिलपटातसुरतरसपागैं ॥ नागरी
दासनिरषिअंषियनिसुषमतिकोऊबोलहुजाहुजिनिआगैं॥९॥ राग॥
प्रातसमैंदोऊउठेपरजंकपरसौरभसरसस्वादलपटात ॥ लोचनललि
तअरुणनिसिजागेसुरतअंतपुनिललचात॥अतिरसमत्तसुरतसुषसाग
रबचनरचनकहिमृदुमुसकात॥ नागरीदासदंपतिसंपतिबिलासिविल
सिसुषएनअघात ॥ १० ॥ राग ॥ स्यांमाजूसँवारतहैंबेसरि
बिहारीजूकीबिहारीजूचंद्रिकासंवारैंसुषबारहार ॥ पीतपटपौंछैंपीय
मुषश्रमप्यारीजूकोप्यारीनीलअंचलचंचलकैंकरैंबयार ॥ एककर
छबिसौंबलैयालेतलालरीझरीझरीझबालतृनतोरगहिडारैंवार ॥ ना
गरियावारीवारचौंकहतपरसपरबिहरतअंकमाललेतहासिबारबार ॥
॥ ११ ॥ राग ॥ प्यारीजोरीजोरिकरजतनुमोरति ॥ बंकबिसालछ
बीलेलोचनभुवबिलासचितचोरति ॥ कनकलतासीआगैंठाढीमनअ
रुदृष्टिअगोरति ॥ उघरीबरकुचतटीपटीतैंछबिमरजादहिफोरति ॥
अतिरसबिबसपियहिंउरलावतिकेलिकलोलझकोरति॥ नागरीदास
ललितादिनिरषिसुषलैंलैंबलाइतृनतोरति ॥ १२ ॥ राग॥ अबदेषो
देषोरीदोऊप्रातरंगीलेदृगउनमीलेबसनरसनढीलेढीले॥ गउरस्याम
रसीलेसोहतलटपटीलछुटिरहेचिकुरछबीले ॥ लताभवनतैंनिकसि
सकतनहींसकुचिलेतनमनउरझीले ॥ नागरिसषीसुसीलेसोहैंठाढी
आरसीलेलषिमुषलजतलजीले ॥ १३ ॥ राग ॥ रीदोउऊठेभोर

नभअमलचांद्रिकाव्यापकजमुनांकूलं ॥ राधामाधवकेलिसमर
रसमत्तग्रीविभुजमूलं ॥ परिरंभनअधरासवतंद्रागतिसुधिगलितदुकू
लं ॥ निभ्रतकुंजास्थितकामातुरजुगलरूपसमनूलं॥नागररमणसुआ
श्रयपस्यतिकदलीपंभस्थूलं ॥ ३ ॥ रागतिताल ॥श्रीवंसीधरजैव
लवीरे ॥ हरेहरेविहारीधीरसमीरे ॥ सजलजलदसमस्यांमसरीरे ॥
विज्जुलताचलचीरे ॥ सस्मितबिंबाधरवेणारदहोनंदसुवस्थितजमु
नांतीरे ॥ वेपथअंगअतनआकुलकृतहोनागरीप्रेमपुलकदृगनीरे॥४
रागईमन ॥ तिताल ॥ श्रीकृष्णचंद्रचारुवदनमदविभंग ॥ दामि
निदुतिवसनसजलमेघस्यांमअंग ॥ कुणितवेणुअधरबिंबकुंवरब्र
जमहीस ॥ कुंडलमनिकिनैंअलकसिपिसिपंडसीस ॥ सव्यअरुअ
सव्यकुसमदामभव्यअंस ॥ भ्रंगारवकरतनिकटकांमजयप्रसंस ॥
भूपनव्रजतरुनीनैंनरसिकवरकदंब ॥ नागरियाउरसिअवसिबसहु
बिनाबिलंब ॥ ५ ॥ रागईमन ॥ तिताल ॥ जयव्रषभानसुताचंदा
ननवृंदाकाननअवनिविहारी ॥ नवतनतडितलतासमसंभ्रमसजल
जलदनीलांवरधारी॥ पृयअहलादकल्पद्रुमगोभारासोत्सवनिधिरस
विस्तारी ॥ प्रणतनागरीदासेस्वरीश्रीराधाकृष्णानंदकारी ॥ ६ ॥
पदचर्चरी ॥ यथासमैंराग ॥ वेईगायगोपवृंदगोकुलमधिसंततसुष
संपदांनिघोषमोषपगनिपेलिडारी ॥ वेईनंदवल्लवसुतभएहैंप्रगटिब
ल्लभगृहसोभितदुजकुलललांमधांमव्रजविहारी ॥ वेईप्रेमपरकरनिति
गोबिंदकुंभनादिसंगललितलुब्धलीलारसपुष्टिकोसतारी ॥ वेईदास
नागरकेप्रेरकमनमनसुवेसवेईबिठ्ठलेसवेईगोवर्द्धनधारी ॥७॥ राग
अवहीनैंकुसोयेहैंअलसाइ ॥ कामकेलिअनुरागरंगभरेजागे तरैं

के ॥ गौरगरबगंभीरगुनवतेंमंडनममउरमंगलजीके ॥ उदितउदो
तनैनमनसषीरीनषछबिपरबलिनगरंगफीके ॥ नागरीदासचरणजु
गजीवनिप्यारिकेरोंमरोंमप्रांनांनिपीके ॥ १७ ॥ राग ॥ अलमस्तर
हैंअलबेलेलालल्लाडिलेकिरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंबरबरुणीं
नैंनांनिमैंमुसिकाते ॥ मुषअंबुजबरस्यांममधुपमकरंदपिवतनअघा
ते ॥ दासिनागरिरूपरंगरुचिअंगप्रीतिभएराते ॥ १८ ॥ राग ॥
प्यारीकेपाइलगेलालजावकदैंनचरनकमलचितहितलगाइ ॥ सी
कसनेहसंवारिस्यामघनलिषतचित्रबहुबिधिबनाइ ॥ नषमनिजो
तिनिरषिथकितभयेसिथलभयेरंगरंग्योनजाइ ॥ नागरीदासिह
सिकहतिकुंवरियैंरहौजूरहोजूरहोपगरहीहैंछिपाइ ॥ १९ ॥ राग ॥
जवतैंजावकचरणदयो ॥ तनमनचितवितितिहकौंजुभयौ ॥ हियरा
हिलगाफिरतसंगलाग्योजियराललकिरह्यो ॥ नागरीदासितनमनध
नजीवनिमंगलयहविढयो ॥ २० ॥ दोहा ॥ अद्भुतपदपल्लवप्रभा,
मृदुसुरंगछबिअैंन ॥ छिनछिनचूंवतप्यारसौं, रहतलाइउरनैंन ॥
॥ २१ ॥ ठोकरहतनहिंलीकपर, फैलतरंगसुजांन ॥ व्हैअवेरउरझे
रपिय, जियजितीकललचांन ॥ २२ ॥ प्रथममाधुरीकुंजलैं, छहर
सभोजनपांन ॥ पुनिइहिंरसगासिसेजलस, करहुसैंनसुपदांन॥२३॥
जैंवतस्यामास्यामामिलि, नागरियासुषदैंन ॥ कोजनकाबिबरननक
रैं, दौंजनभोजनलैंन ॥ २४ ॥ देतगसामिलिपीयकैं, चितईकरिभु
वभंग ॥ रह्योकौरहीहाथमैं, भईद्दगनिगतिपंग ॥ २५ ॥ सरसपर
सकौंतरसजिय, लालकौरकरलेत ॥ चतुरचौंकितवलाडिली, अध
रह्वुवननहिंदेत ॥ २६ ॥ कौंरलेतकरकंपव्हैं, देतबीचह्वुटिजात ॥

लषिलताभवनमैंआरसअरझेअंग ॥ रैंनरसमसेआननराजतपांनन
फीकेरंग ॥ स्यामासोहैनैंनलजौंहैंभौंहैंचापअनंग ॥ चिबुकउठाय
निरषिरहेनागरभईदीठगतिपंग ॥ १४ ॥ राग ॥ सोरहीनिकुंजतैंउ
ठिचलीहैंकुंवरिराधा ॥ अरुननैंनसिथलबसनरूपछबिअगाधा ॥
बिथुरेबारहारउरझिआलसबसगोरी ॥ मनहुंमधुपकनकलतानिधर
कझकझोरी ॥ सारदासचीसीलुठतसहचरीनचरनैं ॥ तिनकीचक्र
चूडामनिकैसैंकहिबरनैं ॥ रंगभरीभांमानिसवसंगसुघरसुपसमाज ॥
कमलासीकरनिलियैंअपनैंअपनैंसाज ॥ काहूपैंअतरबरगुलाबजुत
सुगंधसीसी ॥ काहूपैंबिमलदर्पनकलकांतिचंद्रकीसी ॥ काहूपैंसु
ठिसुगंधसहतपांनदांनबीरा ॥ काहूपैंहारधरेउतारिझलमलातहीरा ॥
काहूपैंचँवरचारुचपलभँवरनिनिरवारैं ॥ काहूपैंकुसमकलितबिजनां
मंदमंदढारैं ॥ काहूपैंमालपरगजीहैंसुरतसेजटूटी ॥ ध्यावतसुघिसमैं
बासमदनपुरीलूटी ॥ काहूपैंबनकबानियठनियकनकपीकदांनी ॥
काहूपैंधूपदांनजरतबहुसुगंधसांनी ॥ काहूपैंमूरजमुपीसुच्छमोरपि
च्छवारी ॥ मुकटभावउदैंहेतनाहिंनकरतन्यारी ॥ काहूपैंसुघरसारो
सूवामधुरबचनबोलैं ॥ काहूपैंबीनअंससोनवीनबरअमोलैं ॥ आवत
धुनिजंत्रमैंनमंत्रसेबजावैं ॥ रैंनकेबिहारगायमादिकसोपावैं ॥ रंग
रागनवसुहागआनंदरसबोरी ॥ नागरियाहूदैंवसोभानकीकिसोरी ॥
॥ १५ ॥ राग ॥ देषिदेषिचितवततौंही ॥ इतउतदृष्टिनहोतनिरंत
रबातकहतहासिगौंही ॥ मालसुधारतकेससंवारतचोजमनोजनयेल
सचौंही ॥ बसिश्रीनागरीदासकिस्वामिनीस्यामैंदैसुषस्यामायौं
ही ॥ १६ ॥ राग ॥ एकसरचूराअरुघुघरुजावकजुतलागतपगनी

सुरकांननिछकायेपियप्रांननिओंछूटिगिरचोअंसजंत्रस्यामनैंसंभारचोहैं ॥ रीझमुरिछावैंमुरछायठहरावैंअंगनागरितरंगतांनमनबोरिडारचोहैं ॥ जाहिकियोबिबसधुजायगतिमतिडारीजाकीवांसुरीनैंव्रजबडोसोरपारचोहैं ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ संगमृदंगसुधंगगति, रागरंगअभिराम ॥ स्यांमरिझाईनागरी, नागरिरिझयेस्यांम ॥ ३४ ॥ ॥ राग ॥ प्यारीजूप्रबीनबीनमधुरबजावैं ॥ तांनकीतरंगनिचितस्यांमकौंघुमावैं ॥ १ ॥ रागरसमादिकसौंचढिगईभौंहैं ॥ रीझिरीझिनावैंसीसलालप्रियासोहैं ॥ २ ॥ कुंजकेबिहंगमसबजांकिथाकिसुनैं ॥ नागरियामौंनिगहैंसषीसीसधुनैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जदपिकहावतहेबहुत, प्यारेस्यामसुजांन ॥ पैइनतैंअतिबढिपरचो, प्यारीजूकोगांन ॥ १ ॥ कबहुचेतबलिहारकहि, कबहूहोतअचेत ॥ प्यारीतांनतरंगमैं, पियमनबूडैंलेत ॥२॥ धुकेधरनिकौंसांवरे, ललितागहेसंभारि ॥ रागरूपकीचोटसौं, गिरैंक्यौंनरिझवार ॥ ३ ॥ जीतीमेरीस्वांमिनी, गुननिधिराधालाम ॥ मीनकेतरसषेतमैं, मुरछितपौढेस्याम ॥ ४ ॥ ३६ ॥ राग ॥ कुंजमैंमूर्छितस्यांमजगाए ॥ आतुरआयपियायअधरमधुभुजभरिकंठलगाये॥ अलकमालसुरझावतपौंछतनैंननिनैंनपगाए ॥ नागरियाचितएबडभागनिइहरसप्रांनपगाये ॥ ३७ ॥ राग ॥ लाडतलाललडैतेसौंलाडिलीरीदेषिवैठेहैंभरिअंक ॥ निकुंजभवनरसिकरवनप्रांनप्रियप्रेमभरेमुदितमदनमयंक ॥ हसतबिलसतपरस्परसुषमुषविलोकतवंक ॥ बलिनागरीदासिकीस्वामिनीस्यांमसदाबिहरैंरसनवनेहनिसंक ॥ ३८ ॥ रागगौरी ॥ दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥

स्वेदसिथलसियराततन, छुवतअधरमुसकात ॥ २७ ॥ राग ॥ जैव
तरसिकरासिकनसंग ॥ पियहाठिकौंरदेतप्यारीमुषपरसतअधरहो
तभुवभंग ॥ बीचिबीचिबतरांनिमधुरईअतिरसभोजनबाढथोरंग ॥
नागरिसषीसौंजालियैंठाढीइकटकभईद्दगानिगतिपंग ॥ २८ ॥ राग॥
गांनकियोचहैंपांननषातछुटिलटआंनिकैंरंगभरचौंई ॥ मोनहींमैंझ
लकीसुघराईहियेगुनकौंमनकौंसौंधरचौंई ॥ पीचितचंचलकौंप्या
रीनागरिघेरिअदायनमैंपकरयौंई ॥ लैंनतमूराहीकीमैंलयोमनगाय
बोधौंरह्योआगैंधरचौंई ॥ २९ ॥ दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं,
तैसेचतुरकिसोर ॥ गांनतांनरसरहसिकी, वहसिबढीदुहुंओर ॥ १॥
होतरागसारंगधुनि, दंपतिकुंजनवीन ॥ बिचिबिच्चिगायबजांवहीं,
बीनानिपरमप्रवीन ॥ २ ॥ धीरजपगठहरैंनहीं, सुरगहैंगुन
गांन ॥ रागरसासवसिंधुकी, लहरैंउपजततांन ॥ ३ ॥ कहाबी
नजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ हलहलातनीकीउठैं,
तांननिरंगाहिलोर ॥ ४ ॥ ३० ॥ नागरिहसौंहैंमषसौंहौंबिथरौंहैंबार
उरजउठौंहैंसोभाहारनिसमेतहैं॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंस्या
मकिधौंमंत्रधुनिमीनकेतकोनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचोकाकीच
कहोतअछिनितिरीछैंतैंकटाछिसरदेतहैं ॥ बेरबेरओटदेतंबूराहसिहे
रिहेरिफेरिफेरितांननिफिरायमनलेतहैं ॥ ३१ ॥ श्रीराधामोहनकुं
जभवनमैंकरतविहसिकलगांन ॥ छायरह्योसारंगरंगमैंलेतपरसपर
तांन ॥ अनाघातआवतदुहुंघांतैंजैसीसुनीनकांन ॥ कोघटिबढिगुन
निधिनागरिगुनआगरस्यामसुजांन ॥ ३२ ॥ राग ॥ दोऊसीसजू
रासौंहैंहाथनितंबूराबीनपरमप्रवीनगोरीगांनलैंउच्चारचोहैं ॥ छायो

सुषकारी ॥ मिलवतबीनप्रवीनसहचरीगावतपरजापियारी ॥ कब हुकबहुंझुकिनीरनीरजकरलेतहैंभांमिनिस्यांमसहारी ॥ २ ॥ उरक रपरसतचौंकिचाहमुषनैंननिकांमकेलिविस्तारी ॥ अदभुतसुषसलि तामैंषेलतनागरीदासनिरषिबलिहारी ॥ ३ ॥ ४१ ॥ राग ॥ देषो सषीरीदेषोदोऊबैठेनावमैं ॥ गावतआवतचपलचलावतसहचरिचंपा चावमैं ॥ स्यामास्यामदियेगरबहियांनवकाबिचरसभावमैं ॥ नाग रनवलसषीनकीअंषियांलगिलपटीलपटावमैं॥४२॥ राग॥आंनकवि कृत ॥ आजकीरातिआछीलागैंछैंउजियारी॥बिहरैंस्यामास्यामचा वसौंसुंदरनावसिंगारी ॥ जमुनांबिचिझिलिमिलिकीसोभाकंवलकूल सुषकारी॥नावडगमगैंडरिलपटावैंरसिकाविहारीजीसौंप्यारी४३ राग ॥ सरितासैंरप्रवाहमाधिउज्जलमंडलदेष॥ उतरेनवकालगायचितचढे जुचावबिसेष ॥१॥ तहांपियप्यारीमनकियो ॥ निरषिउज्यारीरैंन ॥ नृत्तिगांनआरंभमिलिकीजैंसबसुषदैंन ॥ २ ॥ रसबिलासनवकुंज सुपरासकरनकैंकाज ॥ कितियकसहचरिकरालियैंअपनेंअपनेंसा ज॥३॥बीनतमूराषंजरीबाजनलगेसुधंग॥ एकतालसुरसांचमिलिमि लिमृदंगमुहचंग॥४॥ अंगसजीलेछरहरे ॥ बंकलजीलेनैंन॥मनउम हेछबिलहलहे॥रंगगांनगतिलैंन॥कबहुकप्रियमंडलकढत॥ अतिगति बढतसुधंग ॥ हरिकेमनलोचनफिरत, उरझेपायनसंग ॥ ६ ॥ ला ललईउरलाइलषि, रीझेगतिसरसांनि ॥ मंडलमैंसुरझैंनहीं, अंकमा लउरझांनि ॥ ७ ॥ उतअरुझीकुंडलअलक, इतबेसरिबनमाल ॥ गउरस्यांमअरुझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ ८ ॥ गरबाहियांगतिलेत मिलि, श्रमबससिथलतपाय ॥ डारेमनलैसबनिके, डगमगडगनिडु

इतउतबाढोदुहुंनमन, फूलनबीनतफूल ॥ १ ॥ झूंमिझुकावतद्रुमल
ता, उघरतउरउरमाल॥फूलनतोरतदेतफल, मनमोहनकौंबाल॥२॥
दोऊमिलफूलनबीनहीं, जमुनांकूलनिसांझ॥रंगरलीअतिव्है रही, कुं
जगलीकेमांझ॥३॥फूलनसैंबेनीगुहत, रचतफूलकेहार॥फूलभरेलप
टातदोऊ,भुजभरिदृढअंकवार॥४॥कौतिकलागेबालकैं, संगडोलत
नंदलाल ॥ छुवतिजुहीकेफूलकौं, होलजुहीकीमाल ॥५॥ दुरिदुरिभे
टतद्रुमनिमैं, फूलभरीसुकुंवारि ॥ लंपटमधुपनवावहीं, पीतजुहीकी
डार ॥ ६ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिरांम ॥ सबैंकरी
फूलनिसुफल, मिलिकैंगौरीस्यांम ॥ ७ ॥ धरतप्रियाकेश्रवनपर,
लालकुसमकमनीय ॥ बहुरिबलैयालेतपिय, निरपिबदनरमनी
य ॥ ८ ॥ छवैंकपोलछबिसौंरहे, नहिंउपमांकोऊमूल ॥ हालहाल
दिलहालकरि, करनफूलपरफूल ॥ ९ ॥ फूलनकीबेनीगुही, रचत
फूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोऊ, भुजभरिदृढअंकवारि ॥ १० ॥
दोऊलटककलहंसगति, निसआगमगतसांझ ॥ आयेविपनबिहार
करि, कुंजजुन्हैयामांझ ॥ पद ॥ रागकामोद ॥ आजउजियारी
रैंनपुलीहैं ॥ जागिरहीउज्जलदुतिजिततितकोउउपमांनतुलीहैं ॥ तैं
सीयेफूलफूलद्रुमसापाजमुनांकूलझुलीहैं ॥ नागरियाब्रजचंद्रचंद्र
कातहांभरिभुजनजुलीहैं ॥ ३८ ॥ रागपरज ॥ कुंजतैंआवतहैंजमु
नांतटनागरनागरिसंगलियैं ॥ चंदकीचांदिनीछायरहीहैंतैसेईसेत
सिंगारकियैं ॥ गावतरागजमावतसहचरिआवतआसवप्रेमपियैं ॥
देपिलगीनवकासलितातटनागरियाआनंदहियैं ॥ ३९ ॥ राग ॥ बि
हरतनवकाबैठेबिहारी ॥ जमुनाजगमगजोन्हजांमिनीकंवलकूल

नतजीभधरोकिधौंआंषिनितहां ॥ चितबिततरुवनितरातिरीझैतनत किकियेंफिरतछहां ॥ नागरीदासिचरनजुगजीवानियहसुषमोकौंअ नतकहां ॥ ५ ॥ राग ॥ मोहिकाजयाहीइकजियसौं ॥ सबैसुअर्पि निपटमनअटक्योप्रानभांवतीप्रियसौं ॥ मर्मबिथाममडरकीसजनी गुदरिचतुरबरतियसौं ॥ सुनतसजललोचननागरीदासउमगिलगा वताहियसौं ॥ ६ ॥ राग ॥ मोपरकरतहैंसपिनेहु ॥ हौंतोउरजवधरौं मृदुलपटमांनतधनिकारिदेहु ॥ तूकहिमोअनुचरआतुरकौंअधरसु धादैलेहु ॥ नागरीदासअकुलायअंकभरीआंषियनबरष्योमेहु ॥ ७ ॥ ॥ राग ॥ मेरेनैंनाहींयहजांनैं ॥ जेतिकभीरपरतअवलोकतठौरठौर छबिमांझबिकानैं ॥ रूपअगाधअवाधिसषीअंगरसनावपुरीकहाब षानैं ॥ तनमनबूडिजातदेषतहीकहाहोयउरभीतरआंनैं ॥ सुधिबुधि बलबितचतुरचातुरीकछुनसरैकोटिकजोठांनैं ॥ प्रांनप्रियासंभराये समुझियेंकहाकहायेंआपसयानैं ॥ हौंतोदारुपुतरीयाकरनचवताहितु करजैसैंजांनैं ॥ सरबसुसुषथितजीवनिबलबितनागरीदासहमहाथ बिरानैं ॥ ८ ॥ राग ॥ छुटीचुरीएकसिरचूरानूपुरमंडितजावकजुत पग ॥ अबअबअमितरूपगुनसागरछबिआगरमेरेमनहिलगैं ॥ गौ रचरनजुगचालचंद्रनषअतिरुचिराचिपचिचितचातुरषग ॥ नागरी दासिज्यौंफनिमनिजीवनिपाइप्रियापरकासकममजग ॥९॥ राग ॥ रूपनिधांनभांवतीअतिलडजोईछिनजोईपलनिकटपाईयतुहैंजीव निजनसोईभागनिवड ॥ भांतिभांतिकीठौरठौरछबिममआंषियांनमैं परीरहतगड ॥ नागरीदासयहअकहबातहैंहियहसिमुझैंचौंपचायच ड ॥ १० ॥ राग अडानो ॥ ललितसुडोरीकसिउकसीहैंनाभिठौर

लाय ॥ ९ ॥ लेतबलइयारीझिदोउ, दोउपौंछतश्रमबारि ॥ नचत सनीअतिरंगसौं, बनीमदनमनुहारि ॥ १० ॥ उतैंब्रजकौंहौंनवमुकट, इतैंचंद्रिकाचारु, ॥ भयेरासरसमगनतन, सरकेसकलसिंगार ॥ ॥ ११ ॥ षूटिषूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेबार ॥ श्रमितरासरससरंगमैं, टूटिटूटिगयेहार ॥ १२ ॥ नागरियाकहांलागिकहैं, कविमति मंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहबिलासमैं, कोरिकोरिव्हैंरास ॥ १३ ॥ रागकेदारो ॥ रासमंडलमधिछकेस्यामास्यामलैंलैंगातिलपटिलपटि जातभरेरंग ॥ गांनधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैसैंमधुरमधुरबीनांबाजत मृदंग ॥ चंद्रिकासिथलइतमुकटझुकौंहौंउतव्हैंगयेबिबसरससुधिन रहीहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैंननिकीभईपंगसुरछिगिरचौहैंरतिसहित अनंग॥१॥राग परज॥थकेरासकेचावलषि,छकेआसकेभाव॥सैंनमहलकीअरजसुन, पुनचढिचालेनाव॥२॥राग॥बृंदाबनकीतलहटीडोलैंजमुनांतीरतीर॥ जटितस्वेतनगनावबैठिदोऊसांवलगौरसरीर॥१॥ चलवतिचलपचारुचंपावलिसजिसहचरितनसषाचीर ॥ गावतजात स्यांमसुंदरगुनपूरिरहीउरप्रेमपीर ॥ २ ॥ निसउजियारीफूलेंद्रुम लतारहीझुकिपरसिनीर ॥ मुदितस्यामलषिबैंनबजावैंसुनिकुहाके उठतमोरनकीभीर ॥ ३ ॥ नवलबिहारनवलनवकाविचनवलप्रिया गिरधरनधीर ॥ नागरीदासरैंनकछुबितईबहुरिबसेमिलिधीरसमीर ॥ ४ ॥ रागकेदारो ॥ पियाकेलोभछोभउपजायो ॥ धीरजकहां मधुपकौंमधुतैंकैसैंजातझुठायो ॥ इतलजिबाकीमनतनदुहुंदिसारिसपरतनधायो ॥ नागरीदासहासमुषरोक्योलैंउसासासिरनायो ॥४॥ ॥ राग ॥ परतप्रेमनिधिपाइरुचिरजहां ॥ सुनिरीसषीमेरोज्योजां

वहुतगईनिसिप्रियाजंभावतचुटकीदेतलालसुपदैंनां॥ नागरीदासस
पीछविचितवताबिसारिबिसारिजातउरउपरैंनां ॥ ॥ १७ ॥ राग ॥
यहजोबनयहरूपमनोहरयहसमांनजोरीरंगबोरी ॥ यहवृंदावनन
वनिकुंजयहकुसमितपवनवहतथोरीथोरी ॥ यहअनुरागरागपूरित
धुनिसषीसुघरबिथकतचहुंओरी ॥ यहलडकीलीविधिनागरकैंग्रीव
धरिरहानिवहियांगोरी ॥ १८ ॥ राग ॥ झुकिझुकिरहीद्रुमडार ॥ च
हुंदिसतातरबिछईसुंदरसैंनी ॥ ललिताजूलतनिओटदुरिदेषतपौढे
हैंकंवलनैंनमृगनैंनी ॥ तनसौंतनमनसौंमनउरझेमिलिरहीअंपिय
निअंपियांपैंनी ॥ नागरियासुपदेतद्दगनिकौंसांवरगउरजोरमनलैं
नी ॥ १९ ॥ रागपरज ॥ राजतदोऊदीनैंगरबांहीं ॥ रहीछायनि
सिसरदजुन्हैयानवनिकुंजकेमांही ॥ अरुझिरहेतनमनआनंदमैंआ
धीरातीद्रुमनिकीछांहीं ॥ नागरीदासलतारंध्रनिलषिरीझिरीझिब
लिजांहीं ॥ २० ॥ राग ॥ अंपियानिभावभरचोहैरसको ॥ घुरिघु
रिसनमुषरहतरसीलीरूपबढचोआरसको ॥ आधेआधेबचनकहत
कछुमंत्रपढतमांनौंपियबसको ॥ नागरियापियरसिकनपोढतनींद
भरीदेषनकोचसको ॥ २१ ॥ राग ॥ आईअबदुहुंनिपैंजौंन्हिजग
मगरी॥ गईपरछांहींपाछैंदेतहैंदिषाईआछैंछांईरहीचंदआगैंघरोजि
नपगरी ॥ तनतनसौंमनमनसौंअरुझेदेषिअधपुलेनैंनरहेनैंनानिमैं
षगरी ॥ रसबसपागेनवनागरियास्यांमजागेआधीरैंनिहुतीसोउवी
तिगईसिगरी ॥ २२ हेमातीनींदकीअंषियांसोहैंलाल ॥ कांमकेलि
कैंरंगरसमसीछुटीअलकतुटीमाल ॥ लपटांनैंबनवारीप्यारीअरु
झेबाहुमृनाल ॥ नागरियाढिगभैंवरनिवारतलीनैंहाथरुमाल ॥२३॥

लचकतलंकलोललहगाकोघेरहैं ॥ सारीसेतपटलीचुनावटचुनोहै चोटमानौंषीरसागरतरंगकोउरेरहैं ॥ कंचुकीकेकसकोकसनउकस नकुचनचनमनोजकोटदामनोउजेरहैं ॥ मंदगतिआवतठठकिहसि हेरहेरपीयमनहोतमहाआनंदकेढेरहैं ॥ ११ ॥ रागपरज ॥ हेआज रंगहैंनिहुरनापै ॥ चिहुरचिहुरउठिलहरिलेह ॥ प्रथममिलनप्यारीमु षघूंघटपियषोलतनिजकंपदेह ॥ झीनैंचीरझुकोहिअंपियांसकुचभरे उरस्यांमगेह ॥ ताहिनिरपिइकटकमनमोहननागरीदासबलइयाले ह ॥ १२ ॥ रागबिहागरो ॥ आंनकविकृत ॥ दंपतिरंगमहलमधि गावत ॥ तांननमैंहांननकोबातियांसुनतसपीसुषपावत ॥ कबहुकअ धरनिअधरछुवाकैंमंदमंदमुसकावत ॥ विबसहोयमोहनप्यारीकूंभु जभरिउरलपटावत ॥ श्रीरसिकविहारीकौंसुपरंगीनिरषतनैंनसिरा वत ॥ १३ ॥ कजराघुरिरह्योऔरबैंदीरौरीकी ॥ पियसुहागकीझल कनिमुषपरललकनिनेहदसागौरीकी ॥ सहजसिंगारसलौंनीभामि नकहाकहौंबातनिभौरीकी ॥ नायकनंदनंदनकोजीवनिनागरियाब लिरसबौरीकी ॥ १४ ॥ राग ॥ हसिहसिदोऊबातनिकरहीं ॥ अध रपुलनिचमकनिचौंकाकीलाडभरीबतरानिउचरहीं ॥ कबहुकबहुर हिजातएकटकबहुरिछकीअंषियांढुरहीं ॥ नागरीदासमोहनीमोहन रीझिपरसपरअंकनिभरहीं ॥ १५ ॥ राग ॥ छबीलेदृगघुरिघुरिह सिमुरिजांहि ॥ नेहरूपचितवनित्यौंनारींपियदेषतनअघांहि ॥ इककरलेतबलइयाबिथकतइककरचिबुकउठांहि ॥ बलिहारीकहत बिहारीनागरजबप्यारीमुसकांहिं ॥ १६ ॥ राग ॥ सोहतहैंअलसोहैंनैंना ॥ लटकिलटकिपियपरअरसावतिसिथलकहतमुषआधेआधेबैंना ॥

क्योंप्रेमसुमारसमारेचपलनैनचितचोर ॥ अधरसुधाप्यावतहीचे
त्योऔरहीनहीनिहोर ॥ हौंन्यौंछावरिवेगिसुन्यौंनूपुरकिंकिनकी
घोर ॥ देषौंमदगजचालछबीलीअलबेलीबैशकिशोर ॥ मृदुमुस
क्यांनचुंभिरहीजियमैंनांकजलजमानिढोर ॥ नागरीदासिउठिमि
लीअचांनकपोषेपियतृषितचकोर ॥ ३० ॥ रागपरज ॥ रचीपिय
मोहनकलकेलिनवेली ॥ मचीभुजनिबिचकलहमनोहरटूटतहारह
मेली ॥ परिरंभनअरुझेनहिंसुरझतज्यौंद्रुमकंचनवेली ॥ नागरी
दासढुरायअपनपोयहसुपलपतअकेली ॥ ३१ ॥ राग ॥ मेरोझू
मतहथियामदको ॥ पियाहियहिलगपरीपगसांकलमैंमतअपनींसद
को॥सुरतनदीमरजादाढाहतमांनगुमांनअनुरागउलदको ॥ नागरी
दासिबिनोदमोदमृदुआनंदवरविहारबेहदको ॥ ३२ ॥ राग ॥ जी
वतपरसपररूपरहचटैं॥ बित्रसभूषनजुतअवअवछाबिपरससरससेझ
समाजठटैं॥ भोगसंजोगीभोगीबिलसतप्रमुदितपुलकिअनुरागअटैं॥
चुंबनचषमुषमधुपीनागरीदासलोभीलालललकनघटैं॥३३॥ राग॥
पलपलपांनिपअधिकबढीरी ॥ हासहुलासआलिंगनचुंवननवनव
चाइचढीरी ॥ वरबिहारकेरससमाजसजिगुनगनफेरगढीरी ॥
नागरीदासिबलिकोतिककोबिदयहबिधिकहौंघौंपढीरी ॥ ३४ ॥
राग ॥ लाडगरबकीफ़ूलगातमैं ॥ ईषदस्यांमदसनमुषदमकतउदि
तउदोतसुभगउरजातमैं ॥ चंचलहारअलकटगकुंडलमत्तहोतमन
इष्टपातमैं ॥ नागरीदासिलालउरआसनवैठीबिचामिलिअनेकघा
तमैं ॥ ३५ ॥ राग ॥ नैंननिमैंनैंनमिलिमनसौंमनसपितनसौं
तनरूपछयो ॥ जियसौंजियाहियसौंहियलसिगासिहासिहासिसुष

राग ॥ अंषियांअरुनरसमसीघुरहीं ॥ लाजभरीछबिभारभरीएरू
पछकीआलसजुतढुरहीं ॥ अमितबदनपियचिबुकउठावतकहीन
परतजबहंसिहंसिमुरहीं ॥ रहीघरीद्वैरातिजुन्हैयानागरिछैलतऊन
बिछुरहीं ॥ २४ ॥ राग ॥ नवजोबनलाडगहेलीप्यारीतूरहतमदन
मदछाकी ॥ रूपरंगरसश्रवतमाधुरीबदनबिलोकनिबांकी ॥ अ
तिआसक्तअमलमोजेंप्रेमपीयालेपीयेंरहतलालमदछाकी ॥ नाग
रीदासनवरंगबिहारीबिहारनिनेहनिसांकी ॥ २५ ॥ अलमस्तभ
येअलबेलेलाललाडलीकैंरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंवरवरुनीनैं
ननिमैंमुसकाते ॥ मुषअंबुजवरस्यांममधुपमकरंदपीवतनअघाते ॥
दासनागरीरूपरंगरसअंगपियालेराते ॥ २६ ॥ रागकछुमोपैंकह्यो
जातनहेलीरमिरह्योरागसुहात ॥ पियप्यारीतांनानिरसबरसतनव
निकुंजमैंभीजरहीअधरात ॥ चनकमूंदमैंबीनझनकधुनिमंदमधुर
सुरगात ॥ नागरनागरिगांनकरतहींरीझिरीझिलपटात ॥ २७ ॥
राग ॥ तनकतनकबाजैंझनकचुरीनकीओगरैंहरवाईबातमनकसु
हांवती ॥ टूटेहारफूलनकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभा
सरसांवती ॥ लटपटीमूरतिगुलाबजलभीजिरहीबिगलितबारबा
समदनबढांवती ॥ रूपबसरासिकाबिहारीहासिहारिहारिफेरिफेरिभेट
तभुजांनभरिभांवती ॥ २८ ॥ राग ॥ मेरीतूचतुरचिंतामानि ॥ सु
निसुकुंवारिममसुकृतपुंजफलपलकनिकीओटहोहुतिनि ॥ सर्वसु
प्रांनअधाररसिकनीयाहीतैंमांनतआपुनधानि ॥ नागरीदासियहमं
त्रमनोरमिरसनांश्रीराधानामरुचिरगानि ॥ २९ ॥ सुनिसाषिउरज
अन्यारेकोर ॥ ममबछस्थलभेदिछेदिकैंनिसरतपैलेओर ॥ कहि

दपवनलागतहैंसियरी ॥ द्रुमनकुंजकुंजनमैंपंछीहूजागे ॥ हार
नकेमोतीतनसीतलकछुलागे ॥ करनकरापिकंचुकीकसनैंकबांधि
दीजैं ॥ देहुमेरोनीलवसनपीतबसनलीजैं ॥ तुमतोमगनस्वारथस
नैंकहूंनअरसौं ॥ काहेकुंवरकंवलसेदृगपायनसौंपरसौं ॥ बहुतप्रेम
थोरीनिसिसुरझिसकतनांहीं ॥ नागरियारंगबढयोपातनकीछांहीं ॥
॥ ४१ ॥ राम कली ॥ प्यारीजुतैंमोहिमोललियो ॥ तेरीकृपामद
नदलजीत्योतेरोजिवायोजियो ॥ उमडीसैंनमहामनमथकीतैंअधरा
मृतदियो ॥ श्रीरसिकबिहारीकहतदीनव्हैंधनिस्यांमाकोहियो ॥
॥ ४२ ॥ राग ॥ अलकलडीअलबेलीनवरंगछबीली ॥ सुरतरंगअं
गासिथलअलबेलेलालसंगपेली ॥ अलबेलीमौजांबिलोकेबिहारीबि
हारनिनेहनवेली ॥ श्रीनागरीदासतबकुंजमहलअलबेलीसंगसहे
ली ॥ ४३ ॥ कवित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआननपैंआधें
सीससीसफूलवैंनांझुकिगोतहां ॥ टेढीभईवेंदीहारसरकेसिंगारलपि
मोहूसूंव्हैंन्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ नागरियास्वेदमुपअरुनाईपिय
राईआईअबकैसेंनैंनसिथलदुरैंअहा ॥ रूपहैंकिछकोरीहैंकिनैंनानिठ
गोरीहैंकिसुपनौंकिसंभ्रमकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ४४ ॥ राग ॥ मरग
जीबासबसआसपासभौंरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांद
नीमैंसोयेमिलिसुरतअमितअंगआनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥
झीनौपटफारिफैलीबाहरिवदनकांतिमानौंजोन्हिजीतिबेकौंचलीहै
उमाहिकैं ॥ महारूपसीवग्रीवअरुझेमृनालभुजपुलिजातआपेंजब
रहिजातचाहिकैं ॥ ४५ ॥ तिताल ॥ प्रीतमसंगपौढीप्यारीअरसां
नी ॥ पलकैंमुंदीपुलीढिगअलकैंअधरथकितमुसकयांनबेसरपरसां

मधुपानदयो ॥ रीझिभीजिछबिदरसिपरसपरनेहसहजसवदांकि लयो ॥ बिमलबिनोदमोदमतिदोऊनागरीदासिगुनपलटुभयो ॥ ॥३६॥राग॥ बिलसतकुंजसदनसुषसुंदरनायकनंदनंदनरंगभीनौं ॥ सरदचंदप्रफुलितद्रुमबेलीबिबसमदनमनकीनौं ॥ छूटेबारहारटूटेपु लेबंदबिगलितपटझीनौं ॥ लटपटायदोउरहेलपटिकैंतनगुलाबजल महकिनवीनौं ॥ यारसहीरसबीतिगईनिसिफिरिफिरिअधरसुधारस लीनौं ॥ इहिंनिधियेछूटतनहिंअैसैंनागरियाजैसैंजलमीनौं ॥ ३६ ॥ ॥राग सोरठ॥पुलिगयेसौघैंभीनेबार॥देषिसषीयहरीतिअनोषीबंधिग योमनरिझवार ॥ झूलिरह्योवैंनाग्रीवांढिगटूटिरहेउरहार॥ नागरयह छबिहियेबसीबिचमनमथरंगबिहार ॥३७ ॥ राग ॥ अहोपियप्या रीनसह्यारीपरैं ॥ आजुयाहीकुंजरहोनैं ॥ सुरतसिथलगतिमतवारी सीमोहनवहियांगहोनैं ॥ बिथुरिअलकआईआंननपरियहछबिदृग निचहोनैं ॥ रहीरैंनथोरीनागरमिलिअबसुषसैंनलहोनैं ॥ ३८ ॥ ॥ राग ॥ रह्यादेषिपियचिबुकउठायवोनैंणामैंअलसांणघणीछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषबणीछैं ॥ अलकांसिथल सिथलहुईपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरी चितवनिमिलिरहीअणीअणीछैं ॥ ३९ ॥ राग ॥ सौंधैंसगब गीरगमगीसेध्रसुषकेसीफबीहैंफैलीआंननपैंअलकैं ॥ नीकेमुषचंद मैंअमीकेमनुश्रमकनफीकेभयेअधररंगीहैंपांनपलकैं ॥ अंषियांझु कौंहींव्हैंलज्यौंहीतिरछौंहीदीठचितदतस्यांमतनआतिछबिछलकैं ॥ हियरेआनंदभीनेनियरेनागरतहांपवनढुरावैपियापियरेअंचलकैं ४० ॥ राग भैरुं ॥ अवतोस्यामसोवनदैंहोतहैंपहपियरी ॥ यहसुगंधमं

लियपलकांचितवतमुषमोरिमोरि॥ मंदमंदचलतचारुचरननमंजीरश
ब्दडगनिकउतकलपिमदनलुटतकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूमिझूं
मिझूंमिललित।दिकलतनिओटदेपतदुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नाग
रियासंगसुषस्वेदपेदचिहुंटिचीरसुषवतप्रियछबीलीपीठिबिजनांपव
नढोरिढोरि५१॥ आंनकाविक्रत॥लूर॥पावसरितवृंदावनकीदुतिदिन
दिनदूनीदरसैंहे ॥ छबिसरसैंहे ॥ लूमझूमसावनघनोवनवरसैंहे ॥
॥१॥ हरियातरवरसरवरभरिया ॥ जमुनानीरकलोलैंहे ॥ मनमो
लैंहे ॥ प्यारीजीरोबागसुहावणोंमोरबोलैंहे ॥ २ ॥ आभाआभा
वीजचीमकैं ॥ जलधरगहरोगहरोगाजैंहे ॥ रितुराजैंहे ॥ स्यामासु
रमूरलीरली ॥ वनबाजैंहे ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीजीरोभीज्योंपितां
बर ॥ प्यारीजीरीचूनरसारीहे ॥ सुषकारीहे ॥ कुंजांकुंजांझिलर
यापियप्यारीहे ॥ ४ ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ रिझवारनकैंबससदा, रीझ
वारासिरदार ॥ बातरीझहारेनपैं, रीझहारव्हैंहार ॥ १ ॥ बिधिबात
नपुहुंचतनहीं, बिधिबातनपुहुंचात ॥ बिधेबातबल्लभरसिक, ति
न्हैंबातकीबात ॥ याबोलनकेंरसबसे, याहीमैंदिनरात ॥ डोलैंडुलैं
नऔरदिस, मोलअमोलसिहात ॥ ५२ ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ रा
गनायकीकाण्याल ॥ तथा पद छूटक तिताल ॥ आजमोहनमिलेरी
मगमहियां॥येरीतरुनिकरसघनपरछहियां ॥ सुगरसलौंनैंपियनंददु
लारेहंसिलीनीगहिबहियां ॥ परगईपरबसबसनचल्योकछुभलीबुरी
सबसहियां ॥ नागरियाकीनींमनमांनींहौंकरतरहीनाहियांनाहियां ॥
॥ १ ॥ तिताल ॥ अरीहूंलईलगाय ॥ लालनउरदेपिदेपिललचाय ॥
दिनअरुरैंनचैंननहिंअबमोहिबिनमिलैंरह्योनजाय ॥ जिहिंतिहिं

नी ॥ बैनांसिथलललितमोतीलरढरकिबदनपरआइछबिसरसांनी॥ नागरियाहियमांझवसोयहकौतिककेलिअनंगजोरीरंगञरसांनी ॥ ॥ ४५ ॥ राग ॥ भोरव्हैआयोनभायोदुहूंनिकौंबोलेविहंगमबांनी सुहाते ॥ बीननिमांझप्रबीननिरागबिभाससुनायजगायेजहांते ॥ बैठेतबैंउठिआरसअंगकहाकहूंरूपमहाउफनाते ॥ नींदभरेलगिआवतलोचनरूपकेलोभपुलैंरसमाते ॥ ४७ ॥ राग बिभास ॥ तालचर्चरी ॥ आलसरसरंजितरमनीयरूपरासिमिथुनलटपटातप्रातजगेबिथुरतवरबैंनी ॥ चंचरीकचहूंओरबिचरतसुषमदंधमहकतसुगंधअंगछलकतरंगरैंनी ॥ प्रबलपवनरवनकेलिबिलुलितापियकनकवेलिदृगसिथलदेहसुलसतसुपसैंनी ॥ बिसमयहुयरहतकुंवरनिरषवदनछबिअभूतपौंछतपलपीकपांनप्रीतमम्रृगनैंनी ॥ घुरतढुरतजुरतसुरतनैंनमीनसिंधुसुरतिथकिछकिचकिचलतचारुचितवानिमनलैंनी ॥नागरियानेहउरझिबिवससकतनहिंनसुरझिउठिउठिचालिमिलतमगनमुरिमुरिढुरिबैंनी ॥ ४८ ॥ राग ॥ बनिदुकूलबैठेपरजंक ॥ कमलनैंनअंगअंगछबिनिरषतप्यारीभरैंजुअंक ॥ धन्यधन्यापियमांनिअपनपौज्यौंनिधिपायेरंक ॥ श्रीरसिकबिहारीयहसुषबिलसततहांनिकटनिरसंक॥४९॥ तालचर्चरी॥पियकेसुषसंगतैंचलीभौरकुंजआवतप्रियामरगजेउरहारहियैंबारपीठछूटे॥ सिथलरसनवसनहसनमंदमंदअधरनिमनौंचंचलदृगरंजनपियषंजनजुगजूटे॥ अस्तब्रिस्तअभरनबरबाजूबंधढरनतैंसेलगिलगिरहेकरानिनिकरबलयषंडफूटे॥ नागरीचहूंओरभीरभंवरनिटारतअधीरऔरचकोरमोरनिरषिपरतटूटे ॥ ५० ॥ तालचर्चरी ॥ चलेहैंभौरनवाकिसोरसंगलगेललाचेताहिरसबसअधघु

तमआंनिगहीकरघात ॥ ८ ॥ तिताल ॥ अटकेराधारूपकन्हाई ॥
हाथचिवुकधरिबदनबिलोकतसगरीरैंनबिहाई ॥ नैंननैंनमिलिरहेर
समांतेफिररहीमैंनदुहाई॥नागरियाद्रुमतरदोऊराजैंजिंहिंठांअमलज्यु
न्हाई ॥ ९ ॥ इकताल ॥ अनोपीमांननमांनैकाहूकेप्रीतकीनजां
नैं ॥ सहजकहुंकोईबातरावरीत्यौंत्यौंअतिरिसठांनैं ॥ रुषरूषीसौंहैं
नाहिंचितवतफिरिफिरिभौंहैंतानैं ॥ नागरीकांन्हतिहारीप्यारीकोब
हियांगहिआनैं ॥ १० ॥ चौताल ॥ आतुरलालरसिकसुषदायक ॥
सषीबचनसुनिचलेचपलगतिपीडतमनमथसायक ॥ कहूंउरझिरहि
गयोपीतपटकहुंबनमालमुरलिकाभायक ॥ नागरियाढिगआयकहत
पियपरमप्रेमभीजेवायक॥ रागतिताल॥अरझिरहेहैंबिहारीप्यारीरंग
मैं॥पंगभईअंपियनिबिचआंषियांअधषुलीअमलअनंगमैं॥तंद्रारूपनैं
नदेषनिकौंनैंनभयेसबअंगमैं ॥ अतिरसछकनिछकीछबिउछरतअ
धरदबानितैंनागरियाभुवभंगमैं॥ तालजात्रा ॥ आजसखीरसिकनीर
सिकनित्ततभलभलैं॥जुवतिजनमंडलाकारबृंदाविपुनबीचघनस्यांम
प्रियदामिनीझलमलैं॥बींनरसलींनबाजिरुणितकलाकिंकनीमैंनकेमंत्र
सीजंत्रधुनिधुनिरलैं॥भ्रमततनचपलमिलिपरतनाहिंदृष्टजबदरसहित
परसमननैंनदोऊकलमलैं ॥ मुकटसिरझलकअरुरलकहारावलीझुल
तबिबअलककलषिपरतनांहिनकलकलैं ॥ नागरीदासभुजअंसधरि
दोऊचलतकोटिकंदर्पतबचरनतरदलमलैं ॥ १३ ॥ इकताल ॥ अ
रीरासमैंरंगभरीनचतसरससस्यामाप्यारी ॥ चितवतचक्रतरहिगईच
पलामींडतहाथबिचारी ॥ गांनसुनतपगमृगमनमोहेलज्जितभईको
किलानारी ॥ नागरीदासचकोरसांवरोदेषतइकटकबदनचंदउजि

भांतिमिलायमोहनकौंतिहारीलैंहूंवलाय ॥ नागरिदुपदेतसुपनमैं
बैरीउरलपटाय ॥ २ ॥ तिताल ॥ आधीरातिउजियारीगावतरंगी
लीचढिअपनीअटारी ॥ सुनतहीतांनगयोचैंनसुपभीनीरैंनसोवत
हीचौंकिपरेचतुरविहारी ॥ तूटीफूलमालगयोगिरिउपरैंनाआली
लीनौंवैरवांसुरीकोबिवसकियेहैंप्यारी ॥ नागरीदासवृजमोहनी
सीपूरिरहीसुनींजींहितिंहिंतवसुधिलैंबिसारी ॥ ३ ॥ इकताल
तथा चौताल तथा चपक ॥ अरीयहकौनहैंठगवारठाढोआगैंतापैं
तुमोहिलैआई ॥ कहाकहौंमेरीयामतिकौंतेरेकहैंवौराई ॥ उल
टिजाहुंगीघरअपनैंवीरहौंइनवार्तानिधाई ॥ नागरियाइहिंचौथचंद
कीभलीकलादरसाई ॥४॥ रागअडाणो ॥ तिताल ॥ अंपियांमेरीभ
ईसांवरेरूपकीचेरी ॥ इकटकदरसटहलमैंअटकीतनकनहोतअने
री ॥ पावतरीझिअधिकमनमांनीमृदुमुसकानिधनिढेरी॥नागरियाल
गिआपलोभवसमनहूकीगतिफेरी ॥ रागअडाणो ॥ तालचपक ॥
अरीमोहिव्रजगोपिनरिझयो ॥ उनकीरीतिप्रीतिअंतरकीविनगर्थ
मोलिलयो ॥ जिनकैंरूपवदनवारिजपरमोमनअलिगिधयो ॥ ति
नमैंराधानामकुंवरिजिहिंटौनांटगानिदयो ॥ ताकोनांममंत्रमुरलीमैंर
टरटादिनबितयो॥ नागरियानागरिविनभेटैंसबसुपविसरिगयो ॥६॥
तालचपक ॥ अरीतोहितनकहूसुधिनरही ॥ डगमगाततनदेपीबि
व्हलतबमैंदौरिगही ॥ जोगतिभईनिरापिमोहनसुपसोनाहिंपरतकही॥
नागरियामोहितासौंचलितोहिमिलाऊंसही ॥ ७ ॥ तिताल ॥ अ
छनपगधरतअंधेरीरात ॥ ललिताकिंकरपरकरधरैंकरतहरैंहरैंवात ॥
झांकीकरउचावहासिप्य,रीलताकुंजद्रुमपात ॥ नागरियापाछैंव्हैंप्री

सषीकुंजमहलमैंरंगभरीरातडलीहोसुहाई ॥ सेजडिलीरगमगिरह्यो दंपतजालरंध्रजहांआईजुन्हाई ॥ नहींसुलक्षैतनमनआनंदमैंसगलीरैं णाविहाई ॥ रसिकबिहारीप्यारीप्यारीप्राणसूंमनमांनीनिधिपाईसुष दाई ॥ दोहा ॥ आवतराधेसषिनमैं, निरषरासिकासिरमौर ॥ पर निलगीडगडगमगत, गतिबदलीकछुऔर ॥ १ ॥ २० ॥ दोहा ॥ आलीकालोतैंअधिक, बंसीबिषउतपात ॥ वहकाटेतैंचढतहैं, यह फूंकैंचढिजात ॥ १ ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अहेबांसकीबैंसुरिया, तैंत पकोनैंकौंन॥अधरसुधापियकौंपियैं, हमतरफतबिचभौंन॥१॥२२॥ अथ बंसीका दोहा ॥दोहा॥ अहेबांसकीबंसुरियां, तैंतपकौनैंकौंन॥ अधरसुधापियकोपियैं, हमतरसतबिचभौंन ॥ १ ॥ अरीछिमांक रिमुरलिया, परततिहारेपाय॥औरसुपीसुंनिहोतसब, महादुषीहमहा य ॥ २ ॥ कियोनकरिहैंकौंनन्हिं, पियसुहागकोराज ॥ अहेबाव रीबंसुरिया, मुंहलागीमतिगाज ॥ ३ ॥ तोकारनगृहसुपतजे, सह्यो जगतकोवैर ॥ हमसौंतोसैंमुरलिया, कौंनजनमकोबैर ॥ ४ ॥ एअभिमांनोमुरलिया, करीसुहागनिस्यांम ॥ अरीचलायेसवनि पैं, भलेचांमकेदांम ॥ ५ ॥ मुषमूदैंरहुमुरलिया, कहाकरतउतपात॥ तेरैंहांसीघरबसी, औरनकेघरजात ॥ ६ ॥ हरिचितलियोचुराइकैं, रह्योपरतनाहिंभौंन ॥ तापरिबंसीबाजमति, देतकटेपरलौंन ॥ ७ ॥ तूहूब्रजकीमुरलिया, हमहूब्रजकीनारि ॥ एकबासकीकांनिकरि, पढिपढिमंत्रनमारि ॥ ८ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नांतोइतोविचारि॥ तीनलोकसंगगाईये, बंसीअरुब्रजनारि ॥ ९ ॥ सबकोमनलैहाथ मैं, पकारिनचाईहाथ ॥ एकहाथकीमुरलिया, लगिपियअधरनि

यारी ॥१४॥ राग ॥ तालचपक ॥ अलछलपेदोऊकुंजकुटीमें ॥ मैं वरानिभीरछायरहीऊपरनूपुंरसुंनिमैंनसैंनजुटीमैं ॥ गउरस्यांमतनजोतिबिमलकेसोतरहेकढिछिपाछुटीमैं ॥ नागरीदाससुरतबांनोंकीभनकपरतहीधरानिलुटोमैं॥१५॥ इकताल॥अरीमोहिठगिगयोछैलकन्हाई ॥ तोसौंकहादुरांऊंसपीरीदुरतनकछूदुराई ॥ हौंअबलावसकहारीमेरोवहिकीनींमनभाई॥ नागरियाअबवापियविनाछिननांहिनपरतरहाई ॥ १६ ॥ राग षंभायची ॥ ताल ॥ आज वरसांनैंअतिओपबाढीनई ॥ देषिसषीन्याहकीरीतमंगलमई ॥ मिलनिसमधांनिकीभीरगहमहठई ॥ गांननीसांनधुनिभेदसुरपुरगई ॥ परमसुंदरसुघरस्यांमदूलहबन्यौंदुलहनींरूपनिधिकुंवरिकीरतजई ॥ सेहरासीसनगजटितजगमगरहेछोरमुपदियैंदुहूंओरअतिछबिछई ॥ भरतभांवरभलेलगतसांवरगउरचलेकलहंसगतिसबनिमनकीभई ॥ दएमहाराजवृषभांनबहोदांनतहांनागरीदासिकौंमहलकीटहलदई ॥ १७ ॥ ॥ ताल ॥आइहैं सरदसुहाई॥ फूलनिबिपुनमाल्लिकाछाई ॥ सीतसुगंधपवनबहैंमद ॥ निसमुषप्रगटितपूरनचंद ॥ चंदनिसप्रगटतद्रुमानिमैंअरुनकिरनैंरगमगी ॥ छईबृंदाबनछिपाछबिपुलिनजलतटजगमगी ॥ निरषिसोभासमैंवेबरदैंनवीतैंसुधिकरी ॥ मदनमोहनतनतृभंगीबेणबिंबाधरधरी ॥ सुनिबंसीबनबोलैं ॥ जियरातानननकैंसंगडोलैं ॥ कांननअमृतसौंप्यावैं ॥ प्रांननमुरछितमैंनजगावैं ॥ मैंनमुरछितकौंजगावैंमधुरमादिकसुरालिया ॥ भौंनैंछुटावतभरीटौंनैंअरीमोहनमुरलिया ॥ लोकबेदाबिसारिकैंसबउठीतजिसुधिनेमकी॥ दासनागरिकौंनरोकैंनदीउमडतप्रेमकी ॥ १८ ॥ तिताल ॥ आज

की, अनबोलीरहुबीर ॥ २६ ॥ गांठगंठीलेबंसकी, महाद्रोहकीषांन ॥ मतिमारैंरीमुरलिया, तांनानिबिषकेबांन ॥ २७ ॥ हमहारीगारीझुदैं, जडसौंकहाबसाय ॥ मौंनगहतनहिंमुरलिया, हायहायफिरिहाय, ॥ २८ ॥ मुरलीसुनितनमैंभई, आसूदृगनिबिसाल ॥ मुषत्र्यावैंसोईकहैं, प्रेमबिबसब्रजबाल ॥ २९ ॥ नागरिहियहरिहिलगकी ॥ दारूधरीदबाय ॥ आगरागवंसीलपटि, पुहचिउठीभभकाय॥३०॥ रागसोरठ॥इकताल॥ इस्कबाजीमुसकिलहैंवोज्योकोईइस्ककमायालोडै ॥ सिरधरिसूलीअंगनमोडै ॥ १ ॥ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ इतैंउतैंइकटकरहे, फसेनेहकेपंक ॥ नागरनैंनानिमीतदोऊ, अंकानिभरतनिसंक ॥ ३२ ॥ रागचौताल ॥ उज्जलमहलउच्चसुच्छचंद्रकाप्रकासमंदगतिसीतलबयारसुषकारीजू ॥ कसतसुडौरीसेझचौसरिचमेलीबेलीफैलिरहीफूलनिकीबासमनुहारीजू ॥ चौकीचारुअतरगुलाबसीसेचमकतससिकीमयूषैंमिलीकौंतकउजारीजू ॥ पूरनसरदरैंनिबिलसतसुषसैंनीकोककलानागरबिहारनिबिहारीजू ॥ ३३ ॥ ॥ इकताल ॥ उरांहनींदैंहासिंचितैंरही ॥ मनमोहनसैंहनप्यारेतबसुंदरबांहगही ॥ करतकेलिकलअमलअटाचढिसुषसलिताउबही ॥ नागरियादंपतिहितकीगतिनैंकुंनजातकही ॥ ३४ ॥ तिताल ॥ उणींदाछैजीरातरा ॥ बैंणसिथलअरनैंणझुक्याहीआवैलगिवैठापरभातरा ॥ पलकांपीकअधरफीकैरँगरसअलसायागातरा ॥ रसिकाबिहारीप्यारीपूरणकरीमदनदेवरीजातरा ॥३५॥ दोहा ॥ उभैंसरोवररूपके, हंससपिनकेनैंन ॥ अद्भुतमुक्ताचुगतहैं, मुसकनिचितवनिसैंन ॥ ३६ ॥ उर्हींगलीठाढोअली, छलीछबीलोछैल ॥ ति

साथ ॥ १० ॥ पीयहमारेकौंलियो, अधरसुधातैंछीन ॥ हमतलफ
तसुनिबांसुरी, ज्यौंबिनजलकीमीन ॥ ११ ॥ बोलचलावतमुरलि
या, कहासुहागकोतोत ॥ तोसौंपियटेढेरहैं, हमसौंसूधेहोत ॥
॥ १२ ॥ हमहींकोतूदूतिका, मुरलीसबजगसापि ॥ हमहींपर
गाजतभली, जूठहमारीचापि ॥ १३ ॥ बाजैमतिमतिबांसुरी,
मतिपियअधरनिलागि ॥ अरीघरबसीदेतक्यौं, रोमरोममेंआगि ॥
॥ १४ ॥ फूंकनिकेचलतीरतन, लगैंपरतनहिंचैन ॥ अँगअँगआ
पबिधायकें, हमहूवेधतबैन ॥ १५॥ हाहाअनरहुमौनगहि, मुरली
करतअधीर ॥ मोसीव्हैजोतूसुनैं, तबकछूपावैंपीर ॥ १६ ॥ सब्द
सुनावतहमाहिंतू, देतनहींछिनचैन ॥ अनबोलीरहुतनकतो, एवक
बादीबैन ॥ १७ ॥ अमलचलायोआपनौं, मुरलीगरजगुमान ॥
हियसूनंकरतियनिके, कौनबसायेप्रान ॥ १८ ॥ घूमैंभूमैंधुकिउठैं,
तुवबंसीसुरलाग ॥ कहरजहरलहिरैंचढी, डसीभुवंगमराग ॥ १९ ॥
जिहिंमोहीसबब्रजबधू, ॥ मोहनमृदुमुसकाय, ॥ सोमोहोतैंमुर
लिया, बनघनमेंलैजाय ॥ २० ॥ अहेमुरलियामोहनी, तोसौंकहा
बसाय ॥ अधरसुधारसपायकें, प्रीतमलियोछिनाय ॥ २१ ॥ पीय
लियौंपियमनलियो, लियोअधररसझूंम ॥ इतोलियोतैंकहादियो,
बैरनबंसीसूम ॥ २२ ॥ बंसीबंसीनामयह, काहूधरयोप्रवीन ॥ तां
नतांनकीडोरसौं, बेधतहैंमनमीन ॥ २३ ॥ बडकटेगुनबांसुरी, बां
वनसीलघुवेस ॥ भलीनचाईनाचहम, तोकौंहैंआदेस ॥ २४॥ आ
पसुदीतूकरतरी, भईमुसद्दीमैंन ॥ गुद्दीपरक्यौंचढतहैं, मुद्दीव्हैकारि
बैंन ॥ २५ ॥ कहाजानैंतूबांसुरी, भीजेमनकीपीर ॥ कोरीसूकेहीय

जलकनिमुखश्रवतसुधारी ॥ ४४ ॥ रागकेदारो ॥ तिताल ॥ किन
बिरमायोमनमोहनासुंदरसुघरातियायेरी ॥ परीबिरहकौरौरापिया
बिनठौरनहींमतिमेरी ॥ हाहाकहिमोसौंरीहेलीलैऊंबलैयातेरी ॥ को
नागरिश्रैसीरूपकीआगरिजिहिबसिस्यांमकरेरी ॥४५॥ रागबिहाग
रो॥इकताल॥कठिनलगनदाहालनीमैंकैंनूंआषां॥ जेहीकुछादिलअंद
रबितैंसोदिलदीदिलहीबिचराषां ॥ मोहनदीगल्लांबिनकहियांघूंटघु
टनदीचाषां ॥ नागरियाकोईमहरमनांहींबेमहरमहलाषां॥४६॥ताल
चपक ॥ कुंजसदनकीकनकभूमिबिचसहचरिचौंपरिचारुरची ॥
हंसिहंसिपेलतहाथकगहिठेलतदांवनिचांवनिचौंहलमची ॥ स्यामा
स्यामइहींरसअटकेफिरफिरहोतहैंनरदकची ॥ नागरियाचतुरनि
कोपेललषिहौंजकिरहीजैसैंचित्रपची ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कंजनहूतैं
डहडहे, बिनअंजनछबिऐंन ॥ षंजनगतिगंजनमहा, पियमनरंज
ननैंन ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ कुंजसबैंब्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥
आईदेपनसगुनमतु, निगुनब्रह्मकीजोत ॥ ४९ ॥ कीनेंमृगमदआड
रचि, गोरैंवदनमयंक ॥ मनुपियमोहनमंत्रकी, राजतअवलीअंक ॥
॥५०॥ दोहा ॥ कीनोंमृगमदआडरचि, नागरियानवबाल ॥ मानौंर
ससिंगारकी, लहरैंउपजतभाल ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ परोपरिकमुषसां
वरो, चरनलकुटलपटाय ॥ मोमनलीनौंफेरिकैं, कंवलफिरायफि
राय ॥ ५२ ॥ इकताल ॥ गोकुलगांवकोपैंडोन्यारोयहसांचकहा
वतहौंदरसाई ॥ कौनैंदांनलयोब्रजमैंतुमऊबटबाटचलाई ॥ अंचर
छुयोकुंवरिकोतोअबनिकसैंगीठकुराई ॥ समझिजाहुनागरजियअप
नैंरापैंहैं नैंकबडाई ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ राहरेरूपनबीचवह, स्वेतअटा

यअंपियांकौतिगझुकी, रुकीपरिककोगैल ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ उं
हींगलींठाढोअली, छलीछबीलोछैल ॥ तियअंपियांकौतिगझुकी,
रुकीपरिककोगैल ॥ ३८ ॥ तिताल ॥ एकब्रजबसतमोहनीबाल
अरीजिहिंकीनैंलालबिहाल ॥ मोहनहूकौंमोहिलयोहसिचितवनि
नैंनबिसाल ॥ अतिअभिमांनीभएरहतहेफसेरूपकैंजाल ॥ ताहित
नकदेपैंबिनव्याकुलबढतबिरहजंजाल ॥ मुरलीमैंताकेगुनगावतलै
लैनांमरसाल ॥ निसदिननहींसुरझतनागरवेपरेरसिकरसण्याल ॥
॥ ३९ ॥ राजसिंहजीकृत ॥ तिताल ॥ एअंपियांप्यारेजुलमकरैं ॥
एमहरेटीलाजलपेटीझुकिझुकिघूंमैंभूंमिपरैं ॥ नगधरप्यारेहोहुनन्या
रेहाहातोसौंकोटिररैं ॥ राजसिंघकोस्वामीश्रीनगधरताबिनदेपैंदिन
कठिनभरैं ॥ ४० ॥ तिताल ॥ एरीराधेतैंरिझसेनंदनंद ॥ हौंसुनि
आईउनकेहियकीबतियांमधुरसुछंद ॥ याहीरूपपागिरहेआलीमद
नमोहनरसकंद ॥ नागरियातेरोमुपदेपैंफीकोलगतहैंचंद ॥ ४१ ॥
॥ राग ॥ कौनकुसमसज्यासैंन ॥ गउरसांवरोअंगमिलिरहेमहाछ
बिकेऐंन ॥ खुलीअलकैंमुदीपलकैंबदनललकैंचैंन ॥ सषीनागरि
निकटचरननिकहैंकहांनीमैंन ॥ ४२ ॥ तिताल ॥ कैसीलागतसमैं
सुहाई ॥ दौऊजहांकुसमछबिछाई ॥ महकिगुलाबरहीभिजएउरतै
सीयैअमलजुन्हाई ॥ भौंरभीरगुंजतचहुंओरानिफिररहीमदनदुहाई॥
नागरियातनगउरस्यांमकीउरझनिहियउरझाई ॥ ४३॥ इकताल ॥
कुंजसदनबढीबिमलचांदिनीमिलीचंदसौंचंद्रिकारी ॥ कोमलस्वेत
सुपेसलसज्याबिहरतमृगरथपरपियप्यारी ॥ दरपनभूमिअकासबि
मलबिचबिथुरितउरमुक्तातारारी ॥ नागरीदाससुरतिरसदोऊश्रम

लतरह्योरंग॥ दोऊहरिदोऊतनमनजीतेबाजोरसनिसबितईसंग॥ सेजबिसांतसलौटरसमसभिईठईकलकेलिअनंग॥ सोईसारैंनागारियासोयेजुगमिलिगउरसांवैरअंग॥ ६१॥ दोहा॥ चलतदायरेपैंचपलचारूंअंगरियनिरूप॥ अछियांमछियांसेनिचैंमनौंअमृतकेंकूप॥ ६२॥ दोहा॥ चंगैंमुंहमुंहचंगतियबजवातिहैंगतिकार॥ बैठ्योकँवलदराराबिच, मनौंअलिकरतगुंजार॥ ६३॥ दोहा॥ चितैंवदनब्रजचंदको, रीझिचंदभयोचूर॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमय, कुंजनिबिखरयोनूर॥ ६३॥ दोहा॥ चितवतइकटकहीरहैं, नागारियाएनैंन॥ कीनौंचेटकचंद्रिका, परननदैंचितचैंन॥ ६५॥ दोहा॥ चौंपरमिससंकेतराचि, करतझगरईतोत॥ हितपक्केनांहिंउठैं, फिरिफिरिकच्चेहोत॥ ६६॥ तालचपक॥ छईबनचंद्रचंद्रकाचार॥ पत्रपत्रप्रतिचंद्रचांद्रिकाभयोबिस्तार॥ गोकुलचंदकीगउरचंद्रिकाचितैंकियोअभिसार॥ तनभूपनजगमगतचंद्रिकाचांद्रिकासीससुढार॥ मिलतलालसौंबढ्योकुंजमैंचंद्रिकापुंजअपार॥ नागरियावातनिमैंफैलतदसनचांद्रिकाजार॥ ६७॥ दोहा॥ छबिसौंठाढोसांवरो, हौंनिकसीतहांजाय॥ परीरूपबेरीपगनि, गिरीअंधेरीआय॥ ६८॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रीवपुनइहिंभाय॥ ससिकारीगररूपहरी, अफसांकियोबनाय॥ ६९॥ छुटीअलकमालातुटी, मैंनलुटीसीअंग॥ एसपिफीकेअधरक्यौं, लग्योकपोलनिरंग॥ ७०॥ छबिझलकैंअलकैंसिथल, सबतनसिथलसिंगार॥ सूचततेरीसिथलता, निसदृढलगनबिहार॥ ७१॥ पद॥ जैसेहोमोहनतुमचातुरऐसीनामिलीकोऊतुह्मैंनारि॥ यहमहरेटीलाजलपेटीकोऊछछंदनिगो

छबिदेत ।। कढततहांतैंगांनधुनि, प्रांनहरैंहीलेत ॥ ५४ ॥ गांनक
लानाग रदोऊ, दूररहेहैंगाय ॥ सुरधारानटवरतज्यौं, चढिमनपहुं
च्यो जाय ॥ ५५ ॥ गहगहाटबरबदनपर, स्यांममिलनकीचाड ॥
बातकरतहसिहरतचित, परतकपोलनिगाड॥५८॥तालचर्चरी॥चली
हैंभोरभांमिनउठिनवकिसोरसंगताहिरसबसअधघुलीयपलकाचितव
तमुषमोरिमोरि॥ मंदमंदचलतचारुचरनानिमंजीररवडगनिडगनिक
उतिकलषिमूर्छितरतिकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूमिझूमिझूमिल
लितादिकलतनिओटदेषतदुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नागरियासंग
मसुषस्वेदपेदचिंहुटेचीरसुपवतापियछबीलीपीठबिजनापौंनढोरिढो
रि ॥ ९७ ॥ चौताल ॥ चुभेईरहतपीयहियमेंअरीतेरेनैंनअैसेअ
तिअनियारे ॥ नवजोबनपरसांनचढायेबिनकाजरकजरारे ॥ दि
नअरुरैंनचैंननहिंदैंहींमिहामैंनबिसहारे ॥ नागरीदासमदनमोहन
कौंइनघाइलकरिडारे ॥ ५८ ॥ चर्चरी ॥ चलीसिंगारसजिसहज
अभिरांमिनी ॥ हारअरुबारकैंभारलचकतलंकडगनिडिगुलात
आनंदभरिभामिनी ॥ सुनतझंकारनिजदाबिरसनांदसनसकुचि
फिरधरतपगमंदगजगामिनी ॥ उरसिअंचलउडतसरसपरसतपवन
रवनपैंगवनबिचपिलियमधुजामिनी ॥ कुंजघनद्रुमनकीपांतितर
जातिछिपिछांहछाडतनहींचतुरिमानिस्वामिनी ॥ नागरीदाससुष
रासमाधवमिलीअंगप्रतिअंगछबिमनहुंघनदामिनी ॥ ५९ ॥ तालच
पक ॥ चलीराधानिकुंजभवन ॥ ठटकिठटकिद्रुमडारगहतफिरिमदग
जराजगवन ॥ घूंघटपटउघरतआंधियारीपरसतमंदपवन ॥ नागरी
दासमदनगढतोरनिजोरनिप्रीतरवन ॥ ६० ॥ तिताल ॥ चौपरिषे

निरषिलुभांनी ॥ २ ॥ सबकीपलकलागतनांह ॥ आयेतियमंडलकैंमांह ॥ पियमुपफैंटाछोरादियें ॥ प्यारीघूंघटझुकनिलियें ॥ लियैंघूंघटझुकनिलषिमतिथकीकरनिप्रसंसकी ॥ नंदसुतबृपभांनतनयाचलतगतिकलहंसकी॥ लेतभांवरगंउरसांवरकलपद्रुमकीछांह ॥ दुलहनींदूलहदेषिसबकीपलकलागतनांह ॥ ३ ॥ दोऊव्याहनिसकेरसमसे ॥ सषीनिकेनैंननिमांझबसे ॥ राजतजुगलनेहकेभरसौं ॥ जोरनिअंचरअरुकरकरसौं ॥ करसौंजुकरजोरैंपरसपरपहुपबरषांवैंसषी ॥ कुंजकौतकरूपगहमहभईअंषियांमधुमषी ॥ रचीफूलनितलपदिसचलिचितैंचितवनमेंहंसे ॥ रहोनागरहियबसेदोऊव्याहनिसकेरसमसे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ तियलषिमगमोहनरही, गोहनपरैंनपाव ॥ दुहूंओरसुरझैंनहीं, नैंननिकोउरझाव ॥ ७८ ॥ तिताल ॥ देषिरीकोऊग्वारनिगोरीनितिजसुमतकैंघरआवैं ॥ जोवनजोतिजगमगैंघूंघटबाहिरव्हैंदरसावैं ॥ ललितअंगगतिदीपकलोयज्यौंपवनलगैंझिकुरावैं ॥ भूलीतनसुधिज्यौंमदपीयैंउरअंचरांहिभुलावैं ॥ मोहनकीदिसअंषियांछाकीइकटकरहिराहिजावैं ॥ सुधिआयैंतैंलाजानिभींजतघटपटओटाछिपावैं ॥ फिरवैसैंहींरूपबिवसव्हैलोकलाजबिसरावैं ॥ रौंमरौंमचितवनिविषचाढिगयोमनमथलहरिघुमावैं ॥ स्वेदकंपभएसिथलचरनगतिघरलगिकोपहुंचावैं ॥ देषतहसतओरबृजनारीनयोनेहउफनावैं ॥ इतयहउतवेनंदनंदनरासियारसरूपलुभावैं ॥ औंडीलगनकनौंडीअंषियांडौंडीप्रगटबजावैं ॥ नागरियायहप्रीतनिगोडीतनकदवनिनहींपावैं ॥ ७९ ॥ चौताल ॥ दोनैंगरबांहींगतिलेतडोलैंमंडलमैंबोलैंतत्तथेईथेईमुषरूपललकैं ॥व्है

पकुंवारि ॥ नैंनबैंनतुमबाढतपरतनकाहूकेफंद ॥ जदपिचको
रीएसबगोरीआपप्रकासचंद ॥ रीझभीजकरिदयाछवीलेतरफतहैं
व्रजबाल ॥ राजसिंघकोस्वामीश्रीनगधरकाहियतहैंप्रतिपाल ॥७१॥
दोहा ॥ ज्यौंज्यौंधुनिकांनानिपरैं, त्यौंत्यौंछूटतधीर ॥ नागरियासु
निबांसुरी, बाजैंजमुनांतीर ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ ठाढोव्रजकीपौरि
हरि, कीनेचंदनपौरि॥ उहींठौरलषिहियपरी, अरीमदनकीरौरि ७४
तिताल ॥ तोसौंनबोलूंगीहोनंददुलारे ॥ काहेकौंइतनीबातबनावत
काहेकौंकरतहाहारे ॥ तोहिपियारीओरुभांवतेहोओरनिकेप्यारे ॥
नागरमोहनसौंहतिहारीजांनतसबैंकलारे ॥ ७५ ॥ चौताल ॥ तेरे
नैंनबांनउरमोहनकेलगेआंनितबतैंनवाकेवीरधीरठहरायहैं ॥ पल
कनिमूंदिमूंदिगहरैंउसासलेतहोतनसचेतमुपरटैंहायहायहैं ॥जमुनां
कोकूलकुंजसीतलकुसमपुंजलागैंतनतातेतेजाविषमवलायहैं॥ एरीच
लिनागरीतूसींचसुधाचाहनिसौंआंषिनकेघाइनकौंआंपैंहींउपायहैं
॥ रागकेदारो ॥ तिताल ॥ श्रीवृंदाबनसुषदाई ॥ तांमधिनवलनिकुं
जसुहाई ॥ झुकिरहेद्रुमवहौफूलनिफूले ॥ डोलतमधुपवासबस
भूले ॥ भूलेमधुपबसबासडोलतत्रिबिधिवहतसमीरहैं ॥ घुमडि
रहीधूंधरिकुसमरजमनहुंमंडपचीरहैं ॥ कोकिलाकलकीरगांवैनित्य
विहारनिकाई ॥ नृत्तकारीमोरतहांश्रीवृंदाबनसुषदाई ॥ ललिता
दिनिरषिलुभांनी ॥ अतिछबिपुंजकुंजदरसांनी ॥ आनंदउरनसमा
वैं ॥ मिलिमिलिगीतमनोहरगावैं ॥ गावैंमनोहरगीतामिलिजहांब
नींचौंरीचारुहैं ॥ परममंगलरैंनराकारच्योव्याहविहारहैं ॥ मौर
मौरीसीससजिकैंजोरसुंदरआंनी ॥ बसनसूहेतनलसनललितादि

न ॥ ताहीछिनहूतैंभईऔरदसामेरीआलीनागरीदासगृहनींदनपरत रैंन ९० तिताल॥प्यारीजूकीजेतोएकसमैंसिरअवहठनकरियैं॥सुघर सलौंनैंपियस्यामसुंदरसौंरससहीरसढरियैं ॥ यहनिकुंजयहबिमलचांदनींऔसरअनुसरियैं ॥ नागरिपियकैंअंसरइंहिंसमैंहसिबहियांधरियैं ॥ ९१ ॥ चौताल ॥ प्यारीरीजूतुममेरैंमूरतिआनंदकी ॥ तेरेईं आनंदरैंनदिनतोबिनांछिनदुषदंदकी ॥ यौंकहिकामकेलिबिस्तारी जहांचांदनीचंदकी ॥ नागरियादृढकसेमनोहरकसनबाहुजुगफंदकी ॥ ९२ ॥ इकताल ॥ प्यारीनिधिपाईहैंपियारैं ॥ मदनबिवसछकेबदनानिहारतगउरअंगउजियारैं ॥ नागरीदासकिंकिनीधुनि सुनिबिधिगयेषगमृगमैंनबांनअँनियारैं ॥ ९३ ॥ तालचपक ॥ पहिरैंकलझूमकसारीझूमिरह्योपियकोलोभीमन ॥झूमतकंचनचलदलघूमतनैंननिपलालगनिलीनौंपन ॥स्यांमबसनबिचचौकासितदुतिफैलिरहीसोभासंपतिघन ॥ नागरीदाततोरितृनप्यारोवारतज्योजोबनसर्वसधन ॥ ९४ ॥ इकताल ॥ प्यारीनिहारियैंरीरातिमतिवारी ॥ इकदिससषीदियैंकरकापियांइकदिकरसिकबिहारी ॥ नूटयोहारछुटयोअंचरछबिछकनिबढीहैंमहारी ॥ नागरियाआगैंफैलतआवैंबदनचंदउजियारी॥९५॥ तिताल॥प्यारीअलबेलीकैंसैंठाढीव्हैरहीरी ॥ ललिततृभंगअंगछीनकटिछूटेबारद्रुमडारिगहीरी ॥ हरीलतनिमेंकनासीछबिहियैंफूलउलहीरी ॥ नागरपियरहेरझिलेतफलनैंननिबहीरी॥९६॥दोहा॥पियप्यारीकीमधुरधुनि, आवतसुनिबनओ ज्यौंज्यौंगावैंउच्चसुर, त्यौंत्यौंबोलैंमोर ॥९७॥ पीतफूलतुवबर, मालापहारिसुजांन ॥ तेरोमगजोवतकरत, तेरोईंगुनगांन९८

गयेबिबसमनश्रमितभयेरीतनपिसैंफूलसीसतैंसिथलभईअलकैं ॥ इ तकिंकनीछूटीउतबनमालतूटीलोलहारकुंडलकपोलझांईझलकैं ॥ नागरीदासराधामोहननचतदेषिभूलीसषीगांनतांनलागतनपलकैं ॥ ॥ ८० ॥ चौताल ॥ देषिस्यामाजूश्रमितभईरासमैं ॥ वहोनृत्तभेद षेदसरकेसिंगारहारासिथलकुसमकेसपासमैं ॥ रसिकरवनानिजक रतैंपवनकरैंहरैंहरैंल्यायेनिवासमैं ॥ नागरियासोयेकुंजकंवलनिकी सैंनीपरबैंनीबिथुरैंनीहींबिलासमैं ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ दंपतिढिगनवकुं जसषि, करतगांनसारंग ॥ बीनतमूरापंजरी, बजिदायरमुहचं ग ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ धुकीरहतनितचंद्रिका, मोहनसीससु ढार ॥ बडीबढाअंषियांनकि ॥ बहोतदीठकैंभार ॥ ८३ ॥ धांमनिमैंबल्लभवन्हैं, तुवसंकेतसुधांम ॥ अतिबल्लभनिजनांममैं, रा धावल्लभनांम ॥ ८४ ॥ नागरितुवहितकारनैं, बिसरेसुपधनधाम ॥ हांसीघरघरहोतहैं, अहोबिसासीस्याम ॥ ८५ ॥ नवनिकुंजराकारु चिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटिकफांनूसनभ, बिचससि दीपप्रकास ॥ ८६ ॥ नागरियामुषछबिलषैं, अमलउजारीमांहि ॥ बहुरिचंदकीडीठडारि, करतमुकटकीछांहि ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ निस सर्दोत्फुलमल्लिका, ककुभकिरणराकेस ॥ गहीबैणहरिनिरषिबन, रासरवणआवेस ॥८८ ॥ नागरिउरझीस्यांमसौं, आरसउरझेबैंन ॥ तेरीउरझीअलकमैं, मेरेउरझेनैंन ॥ ८९ ॥ तिताल ॥ पनघटटा कोऊसांवरोसलौंनौंढोटादीनौंरीउठायघटबिनहींकहेंतैंबैंन ॥ हौंतौं देषिवदनाबिमोहितठगीसीरहीनागरिकेनीचैंव्हैरह्योरीमिलायनैंन औरवातकहाकहौंकहतसकुचआवैदईहांसिहोटोनिसौंनिलजनईसैं

तबूंद॥विपुन, धारेअगनितनैंन॥१०७॥फूलमईसबबनभयो, चंदजोतिमइरैंन॥तीयभईमोहनमई, चलीमिलनसुपलैंन१०८फूलेफूलेफिरतहैं, दोऊदियैंगरबांह॥लपिफूलीनागरसषी,फूलीकुंजनमांह१०९फटकिसारगहिलटकसौं, धरतछबीलीबाल॥ परतझगरईपेलबिच, होतश्वेततैंलाल ॥ ११० ॥ पद ॥ बदनहसैंहैंबैठीसौंहैंप्यारीप्रीतमकैंउरजउठैंहैंसोभाहारनिसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंश्रौंनकिधौंमंत्रधुनिमीनकेतकैंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौंकाकीचमकहोतअछनिअलछितकीकटाछसरदेतहैं ॥ नागरियाओटदैंतैंमूराहसिहेरिहेरिफेरिफेरितांनानिफिरायैंमनलेतहैं ॥ ११ ॥ तालचपक ॥ वेदेपिद्रुमगहबरबनकेनीरैंचलिमिलिकहाजोपैंरजनीजुन्हाई ॥ बिपुनअंध्यारोपरमपियारोतहांकहौंकहौंकुंजकुटीसुखदाई ॥ सुनतबचनजियमैंरूचिबाढीहियमैंपियमूरतिमंडराई ॥ नागरीदासबिहारनिबनिठनिगवनकियोजितरवनकन्हाई ॥ ११३ ॥ रागबिहागरो ॥ ॥ तिताल ॥ बंसीबाजैंकालिंदीतीर ॥ भईमैंनमईपरीधुनितहौंसीसदईकछुनबसायबिनधीर ॥ रजनीबिहांनीनबिहांनीधुनिप्रांनहरिलीयैंजायरीबीर ॥ नागरियारंगीमिलिभेटिहौंतृभंगीजायकैसैंरहूंजायउरपीर ॥ ११४ ॥ तिताल ॥ बंसीहमसौंबैरकियो ॥ पियकोअधरसुधारसबनमैंनिधरकजायपियो ॥ याबेदनिकोदुपजानैंजबदेखैंपैठिहियो ॥ नागरियाब्रजजुवतिंनकोतैंसरबसछीनलियो॥११५॥ दोहा ॥ बडेबारछबिसौंछुटे, अंसबीनकटिछीन ॥ सबरिझवारनिकेमनौं, मनभरिकाढरिलीन ॥ ११६ ॥ बिचबटपारेनागज्यौं, कोइककारैंगात ॥ उहींबाटजोजाततिय, खाटधरीघरआत ॥ ११७॥

पूरनससिनिसिसरदकी, चलिवनमलयसमीर ॥ होतवैणरवरास हित, तरुनतनैयातीर ॥ ९९ ॥ परमप्रेमआरूढरथ, विपमपंथधुनि बैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहित, चलीमदनगढलैंन ॥ १०० ॥ पीतसा रघनस्यांमकैं, स्यांमसारसुकुंवार ॥ पेलसारललितादिलपि, मन धनडारतवारि ॥ १०१ ॥ पियजीतैंनागरिसलज, चितईजुतअं गरांनि ॥ बाजीबाजीलपिउटी, बाजीठहरीजांनि ॥ १०२ ॥ पद तिताल ॥ फूलेफूलेललितद्रुमनितरकरतस्य.मधुपसंग ॥ आईअं तरलतनजुन्हाईदरसाईद्युतिअंग ॥ चितवतउजियारीवदननकीऔ रैंओपउमंग ॥ दृगनअनंगतरंगवढीभुवभंगभंगमैंरंग ॥ कसेवाहु एकांतकुंजनिसफसेरूपचहलैंमनपंग ॥ नागरीदासकिंकनीधुनि सुनिउठतिहिंबोलिविहंग ॥ १०३ ॥ रागविहागरो ॥ तालचपक ॥ फूल्योबहुफूलनिसौंवृंदावनसोभादेततामैंफूलीराकानिसअतिछावि छाईहैं ॥ कुंजकुंजफूलगुंजगुंजतमधुपमातेफूलनिमिलीमंदपौंनसि यराईहैं ॥ सौंहैंस्यामास्यामपैंसिंगारसजफूलनिकेफूलभईहियेंलपि फूलीबनराईहैं ॥ नागरियाहिलिमिलिफूलनिसुफलकरीभुजधरि अंसफूलेफिरैंसुपदोईहैं ॥ १०४ ॥ तालचपक ॥ फूलमहलफूली जौन्हजगमगी ॥ तामैंफूलेकरैंकेलिस्यामास्यामसुपझेलिफूलनि मरगजीबासरगमगी ॥ फूलनकीसैंनीपरराजतबिथुरीवैंनीफूलीहैं बदनजोतिमदनअगमगी ॥ फूलसरअरसांनैंफूलरंगभोयेसोयेनाग रियामोहेमनरीझनडगमगी ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ फैलीचमकतचं द्रिका, बिचनिकुंजबनबाग ॥ कतरस्वेतमुक्केसमनौं, रतिपतिपे ल्योफाग॥१०६॥फूलेफूलनिस्वेतबिच, आलिवैठेमधुलैंन॥ दंपतिहि

मुक्ताहलदांम॥ नागरीदासहौंनलागीवृजमैयेअतिगातिकितजैहैंबांम ॥१२७॥तिताल॥ मेरोमनआपबसिकरलीनौंस्यांमसलौनां ॥ देषिबदनमनगयोहाथवाकेंहसिचितवनिमैंटौनां ॥ सुंदरपियमनमोहनसौंहनअंगअंगरूपरिझौंनां ॥ नागरियाकछुऔरनभावतभावतनंदढटौनां ॥ १२८ ॥ तिताल ॥ मेरीमतिसुंदरस्यांमहरीहैं ॥ चितैंचतुरमुसकायभायसौंहगडौरनिजौरनिजकरीहैं ॥ अबछिनहूछूटतनहिंहेलींनिपटदुहेलीगतिपकरीहैं ॥ नागरियाहरिललितरूपकीअतिहृढवेरीपरीहैं ॥ १२९ ॥ तालचपक ॥ मीतमिलनिमैंरंगरह्योरी ॥ नैंननिनैंनबैंनबैंननिसौंमनसौंमनतनतनहिंलह्योरी ॥ कोककलांनिकुंवरकोविदअतिलीलासिंधुप्रवाहवह्योरी ॥ नागरीदासरहसिरसदंपतिसुषमोपैंनहिंजातकह्योरी ॥ १३० ॥ तालचपक ॥ मोरबोलहींबिमलचंदउजियारी ॥ पुनप्रतिसब्दहोतवृंदाबनगरजतागिरकंदिरासारी ॥ अतिआनंदभयोकोलाहलरहीपाछिलीपहरनिसारी ॥ नागरीदासस्यामस्यामारतिसमैंअनूपमऊंचीअटारी ॥ १३१ ॥ इकताल ॥ मोहनमोहलईब्रजबाला॥ गईहुतीजलभरनिअकेलीसुंदरनैंनाबिसाला॥ नागरचलीसीसलैंगागरिउतआयेनंदलाला॥ थकितरहीलषिबदनमाधुरीभुलिगईगजचाला ॥ १३२ ॥ दोहा ॥ मनलूटतअवलांनिको,अहेचंद्रिकामीत ॥ सीसचढाईस्यांमतू, यातैंकरतअनीत ॥ १३३ ॥ मनमोहनसिरचंद्रिका, मंदमंदफहरात ॥ परसतलोयनबालके, कंपभयोमजुगात ॥ १३४ ॥ मुषतेरोईनामरटि, तोछबिहियसुकुँवार॥तोतनआवैंपरासिसो, आंकौंभरतबयार १३५ मृगमदआडलिलाटतिय, कीनीसरससुधारि ॥ मनुमधुपावलिकैंव

ब्रजमोहननागरिनिरषि, मगबिचबिसरीदेह ॥ वहुरिदईकागतिभई, कोमोल्याईगेह ॥११८॥बिनांसंवारैंईसहज, बांनप्रहारैंमैंन ॥ नाहिं उबारैंद्दष्टमैं, ॥ मारैंडारैंनैंन ॥ ११९ ॥ वंसीधुनिदूतीपठैं, वोलिलई ब्रजवाल ॥ समरविजैंआरंभरस, रासकरनिनंदलाल ॥ १२० ॥ बिमलजुन्हैयाजगमगी, गईबैंनधुनिछाइ ॥ प्रेमनदीतियरगमगी, वृंदाकांननआइ ॥ १२१ ॥ इकताल ॥ भरीभीरमैंमिलीरीनैंननिसौंदूरजाइफिरचितईकनपिइनकीनैंबिवसजूमार ॥ तबहीतहांतैं लाईकुंजमांझसषियांसुहाथदीयैंकपियांडगमगचरनसुमार ॥ नाम सुनिराधेराधेषोलतहैंनैंनआधेकहांतैंमंत्रसाधेमूर्छितनंदकुमार ॥ नागरीदाससुनितेरोक्ततेरेकांनऔरहूकहैंगीआंनिबाढीद्दगबांनपुमार ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ भलेप्रहारततियनकौं, वांनतिहारेनैंन ॥ हायहायकहिकहिउठत, स्यांमानिसासुपसैंन॥१२३॥भामिनिदामिनि स्यांमघन, गावतसमैंसुहात ॥ वरसरहेहैंरंगए, भीजिरहीहैंरात ॥ ॥ १२४ ॥ भांनभवनभइभीरमिलि, झुंडनिझूलतबाल ॥ सषीवेष तहांदेषिहीं, रूपलालचीलाल॥१२५॥ तिताल ॥ मनमोहनसोंहन रिझवार ॥ गोंहनलाग्योनंदकुमार ॥ बाटघाटव्हैंआडोआंन ॥ नैंन निकरतमैंनसनमांन ॥ छौंहनव्हैंचितऊउहिंओर ॥ तोहुनरहतच तुरचितचोर ॥ अपनींअलकछुवनकैंभाय ॥ इककरसैंननिलेतब लाय॥कहाकरूंदैयाकितजाऊं ॥ चंचलकुंवरचवाईगाऊं ॥ मेरैंहूउ पजतललचांनि ॥ नागरियारोकतकुलकांनि ॥ १२६ ॥ इकताल॥ मेरीइंदुरियालैंराषीऔरहूकीनींलंगरायौंस्याम ॥ गईहुतीतैसोफल पायोबहुरिनलैंहूंपनघटकोनांम ॥ डारिदईहैधरानिमटुकियाअरुतोरे

छोरछनकतछला ॥ नागरीदासदोऊनिर्तश्रमडगमगेरगमगेबारपुलि उरनिचलिअंचला ॥ १४५ ॥ इकताल ॥ रासरंगबरसुधंगनिर्ततहैं प्यारी ॥ तत्तरंगधुमकटितकथेइतथेइतथेईथेईथेईथेईउघटतजुवतीस मूहबाजतसमतारी ॥ बीनपरनआवतमिलिगावतललिताप्रवीनछीन सुकटिभंगसौंहैंभंगभुवअन्यारी॥नागरिछबिलषिरसालइकटगपिय दृगबिसालवारतमनमाललालबोलतबलिहारी ॥ १४६ ॥ तिताल॥ रेकन्हैयानैंनानिकोपैंडोन्यारो ॥ ज्यौंज्यौंहटकतत्यौंत्यौंअटकतचल तनचारौंहमारो ॥ दीसतहीकछुऔरनदोसैंदीसतरूपतिहारो ॥ नागरियाहमकौंतुमप्यारेतुमकौंकपटपियारो ॥ १४७ ॥ इकताल ॥ रंगीलीसबप्रेमभरीबृजनारि॥ अतिआतुरचितनंदनंदनपरिरिझईफि रतरिझवारि॥ बिसरिबिसरिघूंघटनैंननिसौंभरतरूपअंकवारि॥ अट कपरीहियनागरनटकीसकैंकौननिरवारि ॥ १४८ ॥ इकताल ॥ रीनूपुरधुनिप्यारीश्रवनपरीसुषदैंन ॥ हरबरायआतुरउठिआयेपिय मोहनमनमैंन ॥ कुंजद्वारहसिलईभुजनिभरिमिलेमीतदृढहितकेअैं न॥नागरियादैचलेअंसभुजकरनिकुंजसुषसैंन॥१४९॥ दोहा ॥ रस संपतिमिलिविलसहीं, दंपतिदैंगरबांह ॥ ढिगबीनांवीनांसषी, व्रज वतिद्रुमकीछांह ॥ १५० ॥ रैंनजातहैंचैंनकी, चलिनागरिसुकुंवा रि ॥ लैंनमईपियव्हैरहे, तेरेनैंननिहारि ॥ १५१ ॥ रचेलालपलपां वडे, तुवआंवनिकैंहेत ॥ नागरियाहियसेझपर ॥ बिहरोमिलिसंके त ॥ १५२ ॥ रँगरँगभूषनफूलके, रहैफूलतनझूल ॥ अंतरकीबाहि रमनौं, प्रगटीअंगअंगफूल ॥ १५३ ॥ इकताल ॥ लग्योरहैंअंषि यनिमैंपररंभनपलअंतरनपरैं ॥ अधघुलीचितवनिअधरउचैंहासिमैं

लपर, बैठीसभासंवारि ॥ १३६ ॥ मृगमदआडसुनीलमैंनि, मनुसं
वारिकैंसाज ॥ बदनरूपसरपररची, पैरीमनमथराज ॥ १३७ ॥ मृ
गमदआडलिलाटतिय, कीनीहैंछबिअैंन ॥ बदनरूपसरबीचमैं,
मनूसतेसामैंन ॥ १३८ ॥ मंतिमारैंसरतांनिकैं, नातोइतोविचारि ॥
तीनलोकसंगगाइये, बंसीअरुव्रजनारि ॥ १३९ ॥ मनहीमनज्ञुसि
हातसी, मनहींमनमुसकात ॥ तूमनमोहनसौंमिली, पाईमनकीबा
न ॥ १४० ॥ यहजमुनावृंदाविपुन, यहउजियारीरैंन ॥ यहदंपति
कलगांनधुनि, बरनतबनैंनबैंन ॥ १४१ ॥ पद ॥ इकताल ॥ राधि
काआनंदरूपपियकौंआनंददीनौं॥ रचीहैंअतिआनंदकेलिबाहुजुग
निझेलिझेलिमेलिमेलिउरसौंउरआनंदभीनौं॥ आनंदसषीश्रवननैंन
आनंदनिकुंजअैंनमिलिकैंआनंदघनसौंदामिनआनंदकीनौं॥ पूरना
नंदबढ्योजातिनांहिमुषतैंकढ्योनागरियादासिभयैंआनंदरसलीनौं
॥१४२ ॥ तिताल ॥ रेकांन्हांजबतत्रछबिनिरषतहीहूंतोबावरीभई ॥
तनकलषैंजाकीजायलाजछुटियहगतिकठिनदई ॥ बनतनभवनका
जमोपैंछिनछुधिबुधिबिसारिगई ॥ नागरीदासभईयेअंषियांमोहनरू
पमई॥१४३॥चोताल॥राजतहैंजोरीघनदामिनीबरनकी ॥ केलिक
लाकुसलकांन्हकेलनिकीकुंजबीचबातैंकरैंघातनिसौंमनकेहरनकी॥
सुषहिंसकेलिबेकौंबैठेहैंअकेलेदोऊबनीबिधिआजलाजगढबिषरन
की ॥ नागरीदासरतिकेलिकेलिकेनिकेतउभैंउरनिमैंचाहकलकेलि
केकरनकी ॥ १४४ ॥ ताल चर्चरी ॥ रसिकरसरासनवरंगनितत
लला ॥ संगउरंगगरबांहछबिदेतप्रियसजलघनमांझमनुचमकिरही
चंचला ॥ बलयकंकनकुणितछीनकटिकिंकिनीपगनिछिगुनोंनिके

कहासिफूलडारतकइककांकरीकइकमगछाडिरहीसांकरीलगमगी॥ नागरीदासहरिमाधुरीपांनकरिराहिनकछुठौरमतिमदनवसडगमगी॥ १६० ॥ चौताल ॥ सषीरीअंषियनिसौंअंषियांमिलीबतियनिसौंबतियांमिलींअतिरसबसरसिकलालबाल ॥ सबतनतनमिलेमनसौंमनमिलेरीभुजनिसौंभुजमृनाल ॥ फूलनिकीसैंनीसौंमिलीहैंबैनीबिथुरैंनीनूपुरनिनादसौंमिलीहैंकिंकिनीजाल ॥ नागरीदाससुषसुरतिमिलनिमांझलैलैउरबीचतैंबिहारीप्यारीन्यारीकरीमुक्तमाल॥ ॥ १६१ ॥ तिताल ॥ स्यामतलपरचीहैंसुषसुरतिसचीहैंतामैंकोककीकलानिकेलिमोहनमचीहैं ॥ हावभावअंगसंगअमलअनंगमातेअधषुलेनैंनसैंनभृकुटीनचीहैं ॥ अधरनिहरैंहरैंबचनबिलासहोतदसननिजोतिदेषिदांमिनीलचीहैं ॥ नागरीदासजुगबाहुबिचघनस्यांममांनौंनीलमनिकलकुंदनषचीहैं ॥१६२॥ तिताल ॥ सोयेस्यामास्यामसेजसुषअँगअँगसुरतिरंगललकैंहो ॥ तैसोहीसननुपअमलचंद्रमाबदननिदुतिझलकैंहो ॥ टूटिरहीगजमोतिनकीलरफैलिफबीआंननअलकैंहो ॥नागरियामनरंगडारयोइनपीकरंगीलीपलकैंहो१६३॥तालचर्चरी॥सरससुघरनवकिसोरगतिसुघंगनांचैं॥नूपुरादिमिलिमृदंगबीनलीनअनुपमधुनिसहचरिकलगानरंगचहचारि व्हैंमाचैं ॥ कहिनपरतभुवबिधांननवघनतनलहलहांनिबिलुलितबनमालशृंगलपटतिसंगआवैं॥ अभिनयजुतउरपातिरपधरनचरनचपलचारुमंजुलझुकिमुकटससिगतिमतिबिसरावैं॥ दांवनबिचपवनपरसिफैलफैलपरतफिरतगतितरंगसागरवढिरंगमांझबोरैं ॥ नागरियानिरषिबदनश्रमजलकनझलमलातप्रेमाबिवसबालनीलअंचरमुषढोरैं ॥

नानिसैंनकरैं ॥ मुषनियरैंमुपसुषफूंकनिसौंसात्विकस्वेदहरैं ॥ नागरिनागररूपअमलबसमनतंद्रानटरैं ॥ १५४ ॥ रागपरज ॥ तिलल ॥ लोइननींदभरैं॥अधषुलीपलकनिमैंमुसकातेझुकिपियऔरपरैं॥ हरिटारतमुषतैंपरछांहींकरपरलताधरैं॥ नागरीदासचंदटजियारैंद्दग नितैंद्दगनिटरैं॥१५५॥दोहा॥ ललिततमूरावालढिग, सोहतहैंइहिंभाय ॥ समरजीतिसरद्दगनिसौं, तरकसलियोछिनाय ॥ १५६ ॥ लौंनैंतिरछौंनैंचलैंकौंइनकौंनैंसाछि ॥ लगतलजौंनैंद्दगनिकी, टौंनैंभरीकटाछि ॥ १५७ ॥ लोकबावरेकहतसब, भईबावरीबाल ॥ तियनकरीक्यौंबावरी. रूपबावरेबाल ॥ १५८ ॥ पदतिताल ॥ सजनीनयेनेहकीबातकहाकहंहुयरी ॥ गहबरिआवतकंठकहीनहींजायरी ॥ मोदिसरहेलषिलालरासिकरसष्यालमैं ॥ तबउरझेयेनैंनरूपकेजालमैं ॥ मेरैंजियअकुलांनित्यौंहींउतस्यामकैं ॥ मिलनिबिनांदिनरैंनघुटैंबिचधामकैं ॥ घूमतघायलप्रांनजैसैंमदरापियैं ॥ लोकलाजगृहकाजकीबिसरीसुधिहियैं ॥ आजअचांनकभेटव्हैंगईबाटमैं ॥ गईइकौंसैंन्हांवनजमुनांघाटमैं ॥ सघनद्रुमनकेंमांहिलैगयोमोहिरी ॥ मिलेदोउलपटायकहाकहौंतोहिरी ॥ नागरियारसमगनअधरआसवछकी ॥ मिटीनअबलौंदेषिहियेमैंधकधकी ॥ १५९ ॥ तालचर्चरी ॥ सुनतधुनिबैंनमधुरागगोरीरुचिरचढियनिजभवनतियरवनहितअगमगी ॥ जांनिघनस्यांमआगमनगोकुलबधूअटनिदुहूंदिसनिमांनूंदामिनीजगमगी ॥ सांझसुषसमैंआनंदगहमहठईउडिरैंनधैंनबहुगलिनबिन्दरगमगी ॥ संगगोपालनटबेषरहीदेषिसबपलकनाहिंलगतमुषअलकरजसगबगी ॥ कइ

न, अमलजुन्हाईरैंन ॥ लगतसुहाईदृगानिकौं, कुंजनिछबिसुषदैं न ॥ १७३ ॥ श्वेतफूलफूलेलतानि, बिलुलितहीराहार ॥ जौन्हओढिपटरुपहरी, कुंजनकरेसिंगार ॥ १७४ ॥ सुनतबैंनबनतियचली, मुनिमनभयेअधीर ॥नागरलषिरसरासनभ,भईबिमांननिभीर१७५ पदतिताल ॥ होलालझूठीझूठीबातनिचितचोरचो ॥ मनओरमुषओरकहतओरकीओरडारतक्यौंमोपैंतुमकपटनेहउरझेरो ॥ सीवेकहोकहांठगहौंनांबैंननमांझघनेरो ॥ नागरियासबजानतहौंतउरहतनांहिभनमेरो ॥ १७६ ॥ रागअडाणो ॥ चौताल ॥ होकाजरबिनकारेरीतेरेनैंनमतवारेभारेढरारेहावभावचातुरीनिमदनसंवारे॥सुंदरताछायेछकेजोबनमदअरसायेरसनिधिस्यामारिझायेलागेनैंननिनैंनपियारे ॥ षंजनअरुमीनमृगअमलकँवलकलइनहूतैंआलीअतिसरससुढारे ॥ नागरीदासपियसहिनसकतस्यामपलकनिओटभयेन्यारे ॥ १७७ ॥ चौताल ॥ हौंतोदोऊदेषतदेषरही ॥ स्यामतमालप्रियाछबिबेलीलगिलपटायरही ॥ फूलपरैंहलिलतालतिऊपरझुकिझूंमिरही ॥ नागरीदासकुंजबिचतैंसीजगमगजौंन्हरही ॥ ॥ १७८ ॥ दोहा ॥ हरिचितलयोचुरायकैं, रह्योपरतनहिभौंन ॥ तापरवंसीबाजमति, दतकटेपरलौंन ॥ १७९ ॥ राग ॥ ॥ तिताल ॥ झूलतहैंदोऊसषीझुलावैं ॥ सौंधेंकीझकोरैंस्यामतनगोरैंआवैं ॥ हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं ॥ नागरझकझोरैंहारडोरैंउरझावैं ॥ १८० ॥ राग ॥ बंगालाकी ॥ तिताल ॥ बैंनबाजैंजमुनांकैंतीर ॥ उमगिचलीसांवनसरिताज्यौंजुवतिनकीभीर ॥ हायदईनिदईमोहिरोकीकितजाऊंवीर ॥ नागरीदासप्रेमपथआगैंप

॥ १६४ ॥ तिताल ॥ सरदनिसरासासिंधुबढ्योअनूपमउपजततां
नतरंग ॥ सुघटसंगीतसुधंगसुलफगतिहोतदुहुनिमैंहावभावभुवभं
ग ॥ मधिमंडलश्रीराधामोहनलषिमुरछितरतिअवनिअनंग ॥ नाग
रीदासअकासचंद्ररथचलतचक्रगतिपंग ॥ १६५ ॥ तिताल ॥ सि
गरीनिसाबितईरीकुंजकुटीकैंद्वार ॥ करतसैंनषुलिजातनैंनतबइक
टकरहतनिहारउरझेबाहुमृनालपरसपरउरहारनसौंहार ॥ नागरी
दाससोयेरसभोयेहरिब्रषभांनकुँवारि ॥ तालचपक ॥ सषीसुषदाई
स्यामामिलायेफेरिकैं ॥ सघनकुंजछात्रिपुंजकीछहियांलीनैंरंगभीनैं
हरिहेरिकैं ॥ मिलनहींबाललालसौंबांकेबैंनकहततिहिंबेरिकैं ॥ ना
गरियातबतैंअबपायेकौंनैंविरमायेघरघेरिकैं ॥ १६७ ॥ इकताल ॥
सुनिमुरलीकीटेरचपलचली ॥ निरजनबनतहांऔरनकोऊश्रीब्रष
भांनलली ॥ मिलीजायघनस्यामलालसौंदामिनरंगरली ॥ लता
ओटरंध्रनिअविलोकतनागरीदासअली ॥ १६८ ॥ तिताल ॥ स
षीसुनिबांसुरीबनबोलैं ॥ समरषेतसंकेतमैंहेलीरहीहैंनिसांनवजाय
अकेलीहमारेपउरषप्रेमाहिंतोलैं ॥ लोकलीकसबश्रुतमर्जादारहनि
देतनहिंआज ॥ लाजकियैंअबलाजनराहिहैंलाजतजैंरहैलाज ॥ ना
गरियासुनिबैंनचलीयोंवृजजुवतिनकीभीर ॥ ज्यौंदुंदभिसुनिसन
मुषनिकसैंमहासुभटरनधीर ॥ १६९ ॥ दोहा ॥ सषीरूपकीमं
जरी, पंजरीटसेनैंन ॥ बजैंकरानिमैंपंजरी, लजैंपरेवाबैंन ॥१७०॥
सिंघपौरिठाढेकुंवर, नैंननिसरबरसात ॥ उहींबाटआवतजोई, षा
टधरीघरजात ॥ १७१ ॥ श्रवनलगायोबैंनरव, द्दगनरूपसंताप ॥
घेरवढायोघरानिमैं, निठुरइतेपैंआप ॥ १७२ ॥ सरसाईवृंदाविपु

॥ दोहा ॥ गतधीरजवढिचौंपअति, परतनांहिचितचैंन ॥ व्है आतुरचातुरलगे, पायमहावरदैंन ॥ १९१ ॥ कँवलचरनपियचतुरलषि, इकटकरहेलुभाय ॥ लियैंमहावरहाथमैं, रंगभरयोनाहिंजाय ॥१९२॥ रंगभरतपगदुहुंनअति, वाढयोरंगअनंग ॥ नागरियाकेहगनवह, लग्योसुछुटतनरंग ॥ १९३ ॥ होतरागसारंगधुनि, दंपतिकुंजनवीन ॥ विचिविचिगायवजावहीं,वीननिपरनप्रवीन॥१९४॥ ॥ दोहा ॥ धीरजपगठहरैंनहीं ॥ सुरगहरैंगुनगांन ॥ रागरसासवसिंधुकी, लहिरैंउपजततान ॥ १९५ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ लहलहातनीकीउठैं, तांननिरंगहिलोर॥१९६॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचवृंदावनबाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यामास्यामसुहाग॥ १९७॥ राग सारंग ॥ ताल चपक ॥ प्यारीजूबजावैंबीनगावतहैंपियप्रवीनप्रीतमबजावैंतबगावैंसंगप्यारी॥प्यारीजूसराहैंजबप्रीतमनँवावैंसीसप्रीतमसराहैंतबमुसक्यातप्यारी ॥ प्यारीजूरिझायैंप्रियरंगभरीतांननसौंप्रीतमरिझाईरूपगुनभरीप्यारी ॥प्यारीजूदईहैंरीझचितबनमांनमांनीपियलईलायउरनागरियाप्यारी ॥ १९८ ॥ इतीश्रीनागरीदासजीकृतपदमुक्तावलीसंपूर्ण ॥

॥ राग सोरठ ॥ होझालोदेछैरसियानागरपनां ॥ सारादेपैंलाजमरांछांआंवांकिणजतनां ॥ छैलअनोषाकह्योनमांनैंलोभीरूपसनां ॥ रसिकविहारीनिणदबुरीछैंहोलाग्योझांरोमनां ॥ १ ॥ राग ॥ अरीयहकौंनजमुनांतीर ॥ द्रुमलतागहिदेषिठाढोललितस्यामसरीर ॥ चरनपरचरनसोभितबहुनषनक्रांतउदोत ॥ मनहुपंकजदलिनपरजगमगतजगनूजोति ॥ लपटरहीहैंपगनिव्हैंव्हैंजलजलरछविपुं

हुंचोछाडिसरीर ॥ १८१ ॥ दोहा ॥ मैंनरंगरससरगमगे, जगेउजा
रीरैंन ॥ पगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहैंनैंन ॥ १८२ ॥ राग ॥
॥ तिताल ॥ प्यारीराधेजूअहाकहाछविपावतगावतचंदकेसौंहैंकि
येमुष ॥ सिरजूरादिगफव्योहैंतमूराकरमुंदरीचूराचमकतचमकत
चौकापानरंगमुष ॥ प्रीतमभैंवरानिवारतनियरैंपियरैंपटछविछोरगहैं
करद्दगचकोरअरझेहैंसासिमुष ॥ नागरव्हैंरहेरूपमईमुष ॥ १८३ ॥
॥ दोहा ॥ उदौफैंटासिरफबैं, जरतारीकीभांति ॥ सोहतअलबेली
कुंवरि, हसतिलसतिकिलकांति ॥ १८४ ॥ दोहा ॥ लालधरैंअलि
बेषमुष, अग्रनचतसुषदैंन ॥ देतरीझमुसकनिप्रिया, जगमगायरहि
रैंन ॥ १८५ ॥ दोहा ॥ लेतउछंगनिभुजभरैं, सषीसांवरीगात ॥ अ-
द्भुतकउतकमाचिरह्यो, देषैंहींवनिआत ॥ १८६ ॥ दोहा ॥ रतनष
चितकुरसीलसैं, नागरियाअवरेषि ॥ कहाकहूंछविआजकी, सषी
देषिरीदेषि ॥ १८७ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ तिताल ॥ आजसषीदे
षिरीदेषिनैंननिभरिभरिकैसीलगतहैंजगमगायरहीरात ॥ हीरनष
चितकनककुरसीपरलसीहैंकुंवरिराधेजरतारीफैंटावांधैंसिरकलगी
छविसरसात ॥ १८८ ॥ रहैंनीरीललितावीरीदैवातकरतप्यारीमुस
कात॥ नागरस्यामसषीनिर्त्ततआगैंगानघुमंडिरह्योकउतिगकुंजसुहा
त॥ ताल चपक ॥ जुन्हैयाआयरहीहैंदुहनपरअवदुतिनिरषिअमंद॥
इतएहैंपरछांहद्रुमनकीफिरउतजैहैंहरिचंद ॥ मंदमंदकलगानकर
तसुनिछकेमदनआनंद ॥ नागरिनागरवसेकुंजनिसलसेसेजमैंकसे
जुगलभुजफंद ॥ १८९ ॥ दोहा ॥ ठीकरहतनहिंलीकपर, फैलत
रंगसुजांन ॥ व्हैंअवरेउरझेरपिय, जियजितीकललचान ॥ १९० ॥

रिताऐंसैल ॥ झोपिणाछिपाआडीहुवां, आलाडील्योछैल ॥ १ ॥
औसरइणनरपंचसर, चौसरहरपरधार ॥ सतरअतरवशकरअडर,
कंवरभँवरबरवार ॥ २ ॥ कंवरिकेलिरीकामिसी, कोमलबैसशरीर
छांदैंलाडलडीतणैं, होलौंझालौधीर ॥ ३ ॥ दुजतीछणातासहिरहै,
गहैंचरणमृदुबोल॥करसणप्रतिसुपजोगकरि, भोगलहैंवहुतोल ४॥१

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥

अथ श्रीनागरीदासजी कृत उत्सवमाला ॥



प्रथम श्रीकृष्ण जन्मोत्सव ॥

दोहा ॥ जसुदाकैंसुतहोतभयो, गहगडगाननिशान ॥ गयोछा
यपुरमोपलौं, मंगलघोपवितान ॥ १ ॥ ब्रजथिरचरआनंदमय,

ज ॥ ढिगमहावरस्यांमतामिलहोतमुक्तागुंज ॥ ३ ॥ लसतपटकंच
नतरैंजुगजानजंघसुढार ॥ ज्यौंब्रजमुनांनोरपररविझलककिरनन
जार ॥ ४ ॥ वज्रकनहाटिकजटितकटिकिंकनींयहभाय ॥ जांनि
कैंव्रजचंदउडिगनचढेकाटितटिजाय ॥ ५ ॥ उरसपीनउतंगपरनग
त्रिविधिहारविहार ॥ नीलगिरमनिसिपरतैंनिरझरतत्रिवेनीधार ॥
॥ ६ ॥ बाहुजुगसांचेभजांसिलेपचंदनगैरें ॥ जुवतिधीरजधर्मकोव
लदूरहींतैंहरैं ॥ ७ ॥ कामध्वजफहरातअंचलपीतपटफहरात ॥ नि
रषनहिंठहरातहैंमनलाजहियहहरात ॥ ८ ॥ कंठद्योतसुदेसमोतील
रनविचदरसाय ॥ गिरचोलपिछतचिबुकऊपररूपतृपतसुभाय ॥
॥ ९ ॥ अधरमृदुमुसक्यातसेबिचदसनकोचकचौंध ॥ अरुनफूली
सांझमैंजानौंउठतचपलाकौंध ॥ १० ॥बिमलदर्पनसेकपोलनलग्यो
मनललचाय ॥ अलकमनमथफांसकुंडलपरीझांईआय ॥ ११ ॥
उच्चनासापरसुबेसररह्योमुक्ताझूल ॥ ताहिलपिउपमानआवैंपरतम
नभ्रमभूल ॥ १२ ॥ मदविधुर्नितनैंनसौंहैंसहजभौंहैंवंक ॥ जुवति
मनवसमंत्रकीलषिभालअवलीअंक ॥ १३ ॥ फव्योफैंटासीससुंदर
दाहनेदिसढरयो ॥ निरपपेचकुपेचमैंमनजातहैंधौंपरयो ॥ १४ ॥
रतनअवलीमोरचंदासुमनगुच्छसुरंग ॥ बासवसचहुंधांमधुपलषिलु
टतकोटिअनंग ॥ १५ ॥ निकटमूरकदंबकैंतरमहामूरतमैंन ॥ दास
नागरनिरपइकटकरहतनांहिंननैंन ॥ १६ ॥ राग सोरठ ॥ लाडी
हठमाड्योजीमांझलरात॥ तिरछीलपैंलजीलानैंणांवैंणाबांकीवात॥
छिपीसौंहसुणिभौंहांझिझकैंबिझकिदुरावैंगात॥ नागरीदासआसउ
मंगैंपियहियैंऊकलापात ॥ दोहा ॥ आउजियालीऐंमहल, आस

गमगरह्योनंदग्रहपूरनप्रगटोहैंगोकुलचंद ॥ लोचनतृषितचकोरनके चितमिटिजुगयेदुषदंद ॥ नागरीदासजुशिकमलासंगावतजुवतीवृंद ॥ ५ ॥ इकताल ॥ अबहींनेकपोढीहैंवृजरानी ॥ पुत्रजन्मउत्सवरससानींआनंदितअरसांनी ॥ लालनहूपालनमेंसोयेकमलनैंनपयपांनी ॥ नागरिगोपीगांनमनोहरफिरिकरियोसुषदानी ॥ ६ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ नंदजीरैंचालोनैंधरां ॥ म्हामनोहरपुत्रहुवोलखिलोयणसुफलकरां ॥ दहीघ्यालसोंभरांभरांभरांवाहांसिहंसिफेरिभरां ॥ रसिकबिहारीनांवकुंवरजीरोआगमजांणिधरां ॥७॥ रागषमायची तिताल ॥ बधाईबधाईबधाईहोआजवृजछायरही ॥ जसुदाकेसुतभयोसुनिउतकानदैंदैंमेघसेनिसानबाजिसहनाइरही ॥ ठढीनंदआंगनमेंमंगलकलशलियेमंगलरसओपीगोपीसबगायरही ॥ नागरियासुखसांनीदधषेलनअरसानीपटभीजिअंगरंगझरिलायरही ॥ ८ ॥ आनकविकृतरागसोरठइकताल ॥ कांनपडीनसुणीजैनंदघरआजैं ॥ घुरैंनिसांणाघणांमंगलमयजाणैंनभभादौंघणगाजैं ॥ गोपींगीतगावतीआवैंचालंताछविछाजैं ॥ गोकुलरागलियांरांचहुंवांबहुवांरांरमझोलबाजैं ॥ श्यामवरणसुतजायोराणीरूपअनूपमराजैं ॥ होसीरसिकबिहारीनांवयांरोअबहीमदनवदनलखिलाजैं ॥ ९ ॥ ताल चर्चरी ॥ गोकुलआजपरमरंगरली॥ भयोहैंसुतनंदरानीजूकैंसुभसुनियेबातभली ॥ वृजबधूनिकेंहियेंवाढीमोदमनकलमली ॥ मनुउमगिसलितारूपकीआनंदआतुरचली ॥ लंकलचकतथारकरभरभारहारावली ॥ गांनमंगलनूपुरनिधुनिछायरहीसबगली ॥ छिरककैंदधिनाचतमगनजहांनंद

आनंदाविस्वअमंद ॥ आजप्रगटभयोनंदग्रह, रूपधरैंआनंद ॥२॥ दीपकप्रगटयोनंदघर, निर्मलजोतिअभंग ॥ उडिउडिपरनलगेजहां, दानवदुष्टपतंग ॥ ३ ॥ श्रीजसुदाकैंसुतभयो, नषसिषसुंदर सर्व ॥ रससिंगारकैंवरनतन, करनकांमगतिगर्व ॥ ४ ॥ नागरसुत भयोनंदकैं, मनमोहनसुकवांर ॥ यामोहनहितमोहनी, अवब्रजप्रगटनिहार ॥ ५ ॥ पदरागषट्तालजात्रा ॥ आजब्रजराजकैंसुत भयोसुनिसखीउमगिउपहारलैंलैंचल्योमहरांवनौं ॥ थारकरहारभरिभारलचकतलंकबसनअतिभारउरफब्योफहरांवनौं ॥ इतहिंधुनिगानअरुमंगलनिशानधुनिउतहिंनींकोलगतघननघहरांवनौं ॥ नागरीदासब्रजचंदप्रगटतभयोनंदनिधिहियैंआनंदलहरांवनौं ॥ १ ॥ ॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ आजभयोनंदभवनआनंद ॥ ब्रजजन उमंगिचकोरचलेमिलिप्रगट्योपूरनचंद ॥ गावतमंगलगीतगलिनमैं आवतियुवतीवृंद ॥ नागरीदासउत्साहछकेसबमिटज्ञुगयेदुषदंद ॥ ॥ २ ॥ राग अडाणौं चौताल ॥ नंदगोपराजअहोऔरैंब्रजओप आजतेरैंपुत्रभयोभैयापुन्यफलजापको ॥ ब्रह्मरिषद्वारबहोदेवताबिमाननपैंछायोसुरवेदगांनभेदकअलापको ॥ घरघरसंपदाअपारबढीदेखियतहमपैंनकीनौंजातबर्ननप्रतापको ॥ नागरियावेरबेरग्वालकहैंटेरटेरतेरोघरमानोंपरमेश्वरकेबापको ॥ ३ ॥ राग परज ॥तिताल ॥ वाजैंवधाईब्रजमेंनंदघरनिसुतजायो ॥ गोपीगीतमनोहर गावतआवतभावतनभतानतरंगनिछायो ॥ कौतिगमोहेदेखिदेवगनदेवलोकबिसरायो ॥ नागरीदासउछाहछकेअतिआनंदउरसरसायो ॥ ४ ॥ तिताल ॥ आजअतिब्रजमेंवढ्योहैंआनंद ॥ ज

रिजसोमतिकैभयोसुतफूलीअंगनमाइयां ॥ रसिकबिहारीप्रानजी वनलषिदेतअसीससुहाइयां ॥ १४ ॥

अथ राधाजन्मोत्सव लिष्यते ॥

इनबधाइनकीअलापचारीमें देनेये दोहा ॥

दोहा ॥ प्राचीकीरतिकूषतैं, कन्याभईअनूप ॥ भानसिंधुआनंददा, चंदमंजरीरूप ॥ १ ॥ कुलमंडनवृषभानकी, भूपनजगतअभूत ॥ वारौंकोटिननृपनके, याकन्यापरपूत ॥ २ ॥ बेगवढोआरोग्यतन, भागबडोउत्साह ॥ नंदरायकेकुंवरसौं, बेगहिहोहुविवाह ॥ ३ ॥ होबृंदावनईस्वरी, गुनपूरनसुषरास ॥ बिधिनासोंमांगतइहैं, जाचकनागरिदास ॥ ४ ॥ पदरागईमन चौताल ॥ निसमेंसुमनलह्योताकेफलकीविधिबरसांनैंप्रगटीसुषदाई ॥ गउरश्यामइकजोरीअंगतसुषसोवतसुपनैंदरसाई ॥ जनोंबहुकरतबिहारबिपनमैं गानरंगबरपाबरषाई ॥ गिरतरुकुंजपुंजबनबीथनरससिंगारनंदीसरसाई ॥ नागरियासुमसुगनहोतहैंघरघरआनंदउरनसमाई ॥ लीलाललितकरनदोउप्रगटेइतराधाउतकुंवरकन्हाई ॥ १ ॥ राग परज ॥ तिताल ॥ ढाढनिनाचैवृषभानकीमंदिररसमाती ॥ गावतसरसबधाईमुंदरलटकिचलतमुसकाती ॥ नंदसुवनअरुकुंवरितिहारीबेगबढोदिनराती ॥ नागरीदासरंगीलीविचिबिचिदेतअसीससुहाती ॥ ॥ २॥ या बधाईके गायबेमें बीच बीच दैनेये दोहा॥ देसदेसके गुनीजन, जाचनआयेद्वार॥ धनघनउनयोभानजू, बरषतरिद्धअपार ॥१ ॥ ढाढनश्रीनंदरायकी, बधूबृंदलैसंग ॥ आईश्रीवृषभानकें,

सदनस्थली ॥ दासनागरछकीउछवकरतकोतिकअली ॥ १० ॥
रागकाफी इकताल ॥ बाजैंवधांइयांबेसईयेनंददेदरवार ॥ हुवा
सुतसोहनांवे ॥ मनदामोहनांसुकुंवार ॥ आईंसुनिगोपियांवे ॥
हिलिमिलिगावहींपुसियाल ॥ जुरेसबलोकमंगनवे ॥ गुनीगुनबोल
दैंदैंताल॥गुनीदेतालानाचैं ॥वाहवा॥ आंगनपहपटमाचैं ॥ वाहवा ॥
नंददालालाजीवो॥ वाहवा, दूधांअमृतपीवो ॥वाहवा॥षुसीदिलपाव
झूमां ॥ वाहवा ॥ लखांदीनूंनीचूमां ॥ वाहवा ॥ उसदामंगलगावां
वाहवा ॥ दानदुपट्टापावां ॥ वाहवा ॥ पावांपटदानमोतीवो ॥ जा
वांदिलफूलदेघरमांह ॥ असाढाहाथटोडरवो ॥ बाजूबंधझूलदेवि
चुबाह ॥ तुजपरघोलियांवो ॥ जसोदेबोलियांदैंसुनाय ॥ धनिध
निआजदादिनवो ॥ दैंदीदानक्यौंनमंगाय ॥ महरनैंदानमंगाया,
वाहवा॥ कंचनझरबरषाया, वाहवा॥हैंवडभागनतूरी॥ वाहवा ॥करी
मुरादापूरी ॥ वाहवा ॥ बीचषुसीदिलगाढे ॥ वाहवा ॥ मंगलमुषी
तुसाढे ॥ वाहवा ॥ जन्मजनमगुनगावां ॥ वाहवा ॥ नागरदरसन
पावां ॥वाहवा॥११॥तिताल॥ नंदजूकैंबाजतबधाईआजद्वारैं ॥ गह
महमंगलमहागानधुनिछायरहीवृजसारैं॥ अतिआनंदभयोसुनिसज
नीबनतनकछूउचारैं ॥ नागरियाजसुमतिसुतजायोचलोरीबदन
निहारैं ॥ १२ ॥ तिताल ॥ होघरनंदकैंबाजतआजबधाइयां ॥ झां
झझनकमिलिमधुरटकोरानिपूरिरहीसहनाइयां ॥ आंगनझूंमिझूंमक
दैंदैंगोपीगावतआइयां ॥ नागरवृजघनश्यामप्रगटभयोसुषबरषा
बरषाइयां ॥१३॥ आनकबिक्रत॥रागकाफी ॥ बाजैंआजनंदभवन
बधाइयां ॥ गहमहआनंदरंगरलीअतिगोपीसबमिलिआइयां ॥ मह

गिमुपदेषैं ॥ तुममिलितनककरोबिश्राम॥ माईमनबांच्छितभयेका म ॥ अबभईनिद्रावसश्रीरानी ॥ ढिगसषीनागरिकहतकहानी॥८॥ रागसोरठतिताल ॥ भईभानजूकैंकन्याबधाईबधाईचलिदेपितूनि करकैं॥ किधौंकीरतकोकीरतप्रगटोस्वरूपधरिकैं ॥ बरसानैंआ जुहेलीमहामंगलधुनिछाई॥ सुनिकांनदैंनिसांनसंगबाजतसहनाई ॥ निकसिभवनभवनतैंतियलागतभलीहैं ॥ उपहारथारलैंलैंसबगावत चलीहैं ॥ नहिंअंचरासंमारैंउरहारडोरटूटैं ॥ गिरैंफूलबहोगलिनमैं सिरकेसपासछूटैं ॥ मिलपेलतश्रौनाचतदधिकादौंभयोहैं ॥ आनं दकोकुलाहलबढिब्यौंमलैंगयोहैं ॥ सुपकीचहलपहलअतिव्हैरही महलमैं ॥ तहांडोलतहैंउमगीनागरसषीटहलमैं ॥ ६ ॥ इकताल ॥ रीवृषभानकैंबधाईसुनिबाजैंधुनिपूरिरहीसहनाय ॥ हैंकहासषीश्रा जुरावरमैंरंगरह्योसरसाय॥ बेरबेरपूछतनंदरानीमोहिनीकोबातसुना य ॥ नागरतुवसुतश्यामकीजोरीप्रगटीहैंगोरीआय॥१०॥राग भैरूं तथा सोरठ इकताल ॥ बाजैंबधाईबधाईवृषभानजूकीपोरि ॥ रा वरिमेंरंगहोतदेषिसषीदोरि ॥ भईकीरतिकैंकन्यकासुलोचनाबिसा ल मनहुंचंद्रजोतिरूपमंजरीरसाल॥१॥ जसुधाश्ररुनंदहुवैआनंद मैंअधीर ॥ आयेरनवासकैंनिवासभईभीर ॥ सुनतनाहिंतहांतन ककानिलगिरह्यो ॥ गोपिकासमूहगानगरजिवृजरह्यो ॥ २ ॥ हौं नलगेमंगलकौतूहलनिबिधान ॥ सबहीआवेसचितभूलेहैंसयान ॥ नाचतवृषभाननंदजोरैंदोउबाह ॥ फुलतपेंचहलततोंदआनंदाहिय मांह ॥ ३ ॥ महरांनीहस्तसबैंकोतिगनिहार॥दोरिदो रैदुहुंनिपैंघट ढोरतवृजनारि ॥ दधिकादौंमांझनिकरभांमिनीसलोल ॥ मनौंक्षीर

रावरमाच्योरंग ॥२॥ नाचैंगावैंढाढनी, कहैंवधाईपांउ ॥ हुलरावति श्रीराधिका, लैलैकुलकोनांउ ॥३॥ कीरतिरानीयौंकह्यो, गोपराज सिषमोर ॥ येजाचकनंदरायके, जोदीजैसोथोर ॥४॥ पूछोढाढनि नांवकौं, कहोकीरतिमुपषोलि॥नवलायाकीनांवहैं, बिजैंसखीकह्यो बोलि ॥ ५ ॥ तिताल ॥ हेलीआजकीघरीछिनभलियां ॥ घनआ नंदसकलबृजबरषतकीरतबेलसुफलियां ॥ इतप्रगटीगोरीउतश्याम हिहियआनंदकलमालियां ॥ नागरियाजोरीअतिलौंनीहौंनीहैंरंगर लियां ॥ ३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ आजवृषभानकैंबधाई॥ गहमहभीरभईरावरमैंगावतअलीसुहाई ॥ हंसिहंसिगोपीमिलतपर स्परआनंदउरनसमाई ॥ प्रगटभयेउतरसिकबिहारीइतप्यारीनिधि आई ॥४॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ वधावणोंहेहेलीआजरली ॥ भईभीरवृषभानभवनमैंकीरतिबेलिफली ॥ जुवतीवृंदघरघरतैंमंग लगावतआवतचली ॥ रासिकबिहारीचंदहेतजनुप्रगटीकुमुदकली ॥ ॥ ५ ॥ आन कवि कृत राग षमायच तिताल ॥ होछैवृषभानरैंघर लाषांरीबधाईआज ॥ कुंवरिलाडिलीजनमलियोछैंमोहनरेंसुषका ज ॥ हुलरावैंमंगलगावैंढाढनिलीयांसुघरसमाज ॥ रसिकबिहारीम नआनंदहुवोप्रगटीनिजसिरताज ॥ ६ ॥ आनकविकृततिताल ॥ होछैंवृषभांनरैंघरआनंदरलीवधावणौं ॥ जनमीराधावृजसुखसाधा लिरपिनेंगासुखपावणौं ॥ आंगणग्रहमहभीडहुईछैंआजकोदिवससु हावणौं ॥ प्रगटीछैंरासिकबिहारीकीजोडीहुवोमनोरथभावणौं ॥७॥ रागबिहागरोतिताल ॥ कीरतजूकोअबहौंपलकलगीहैं ॥ सबदिन उच्छवजनमजगीहैं ॥ पोढीनिकटललीलघुबेषैं ॥ मइयाजागिजा

दासभुवमंडलअकाशराजतनिसांन ॥१६॥ इनबधाईकेबीचबीचगा यबेमेंदैने ये दोहा॥ बेटीहुईभांनकैं, रुनंदकैंफरजंद ॥ गयाहैदुषदंद आज, वृजमैंआनंद ॥१॥ हमसेगुनीबृजकेतुमबृजकेसिरताजा हम सेनहींगुनीअरुतुमसेमहाराजा ॥२॥नाचैहैंग्वालिनी, नाचैहैंग्वाल ॥ कीरतकेकन्याभई, जसोदाकैंलाल ॥ ३ ॥ वेगावैंकौतूहल, करिना चैंषुसियाल ॥ दूधदहीहरदजरद, रंगेसबग्वाल ॥ ४॥ बैठेहैंआयकैं, वृषभांनरायबाहिर ॥ बषसैंदिलखुसीहुवे, जरजरीजवाहिर ॥ ५ ॥ नितानितहोस्यादियां, जैसोहैंआज ॥ भांनरायनंदराय, जीयोमहा राज ॥ ६ ॥ अरेलोगौंआजइहांसादीसीक्याहैं ॥ गोपियांहुगोप, दांनदेतेल्याल्याहैं ॥ ७ ॥ स्यादीबृजराजजूकैंरोसनीलगाई ॥ फिरिरिरिरिरिरिरिरि, छूटतिहवाई ॥ ८ ॥ गायबखसीबैलबखसे, औरबखसेघोड़े ॥ हुवेनिहालअमलदार, टूटेअरुपोड़े ॥ ९ ॥ कुसी सबहुए, वृषभानकैंउत्साह ॥ जट्टूजिसकेलठाजो, इनकाबदषा ह ॥ १० ॥ ठाढ़ेहैंभट्टथट्ट, देखतेमिसर ॥ सुवासारोमोर मैनाउड़ते हैंफर॥११॥ तिताल॥ आजवृषभानकेंदरबारखुसबखतियां॥लीया जनमजिहानकीसाहिबघोलियामैंइसबखतियां ॥ परेग्वानभरिभरि कैंआगैंकोहैंफरसफरूस ॥ नागरगुनीगवैयागावैंअजबजलूसजलू स ॥ हुईअजबजलूसजगमगी ॥ आईगोपियांसकलरगमगीगोया घरघरमंगलकाज ॥ बषसतजरीजवांहरआजयेहोऐसीहोयसदा ईसादियां ॥ स्यादियांदिलउदमादियां ॥ लेलेनजरफजरउठि आईबडडीसाहिबगोपजादियां ॥ अगरधूमअरुबटैंअरगजाअतर वगरतम्बोल ॥ नागरअंदरमहलमहलमेंचहलपहलकल्लोल ॥ चह

सिंधुमध्यदामिनीकलोल ॥४॥ झूंमिझूंमिझूमकातियनाचतीसुहात ॥ घूंमिघूंमिलंहगनिकीलावनिलहरात ॥ जूरासिरषुलतडुलतमोतिन कीमाल ॥ चूराहेचमकिचमकिकुंडलकीहाल ॥५॥उत्सवरसमत्तमिटतनाहिंउरउमंग॥छुटतबसनतुटतहारबेसह्मारअंग॥ आनंदकैंआनंदहुवैंआनंदरह्योपूरि ॥ नागरियाप्रगटभई॥ आनंदकीमूरि६॥११॥

आन कबिकृत राग सोरठ तथा मलार तिताल ॥वृषभानकैंमंदलराबाजैं । सुभघरीदिनसुभमहूरतगहरैंगहरैंगाजैं ॥ गावोमंगलरहसिबधाईपाओंरानीकीरतकैंघरकाजैं ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीभयेमनोरथआजैं ॥ १२ ॥ रागकाफीइकताल ॥ हाहामुबारकबादियां ॥ अरीरानीऐसीयांनितसादियां ॥ राधाचंदमुखीप्रगटीबेटियां॥ औरतारनिसींगोपजादियां ॥ फूलियांअंगनमावैंसलौनियांरंगभरीरसबादियां ॥नागरीदासषुसीदिलमैंआजुगोपीफिरैंउदमादियां१३ तिताल ॥ आजुझबिछाईहैंमाईबरसानौंलागतसुहावनौं ॥ भवनभवनकंचनकलशनिधुजाफहरफहरफहरांवनौं ॥ तैसियभादौंउमाड़िघुमड़िघटाघहरघहरघहरांवनौं॥राधाजनमउमगिनागरमनमहरमहरमहरांवनौं ॥१४॥ रागआसावरीतिताल ॥ अरीमाईश्रीकीरतिरांनीकैंकन्याअनूपभई ॥ सुबरिसदनकोतिमरगयोमिटिभयेप्रकाशमई ॥ महरानैंमंगलघरघरकछुऔरेंओपठई ॥ नागरियाआनंदचंद्रिकासबब्रजमांझछई ॥ १५ ॥ रागटोडीचौताल ॥ वृषभांनभवनभईभीरआंगानितनिरह्योमंगलधुनिवितांन ॥ टूटेंहारमोतिनकेछूटैंसीसजूराबारबेसह्मारआनंदमैंगोपीझूमिकदैंदैंकरतगांन ॥ कीरतजईहैकन्याअनूपमरूपगोभासकलब्रजकीसोभासुषानिधांन ॥ नागरी

तिहठांवस्योञ्जुगांम ॥ ताहीतैंयाकोभयो, सुषवरसानानांम ॥ २ ॥ बिमलमहलऊंचीअटा, रतनकिरनिमिलिजोति ॥ बिबिधिरंगमणि नगजटित. जगमगजगमगहोति ॥ ३ ॥ भूपतिबन्दीजननकी, भी ररहतिनितद्वार ॥ आननृपतिबंछितरहैंकरैंकृपाप्रतिहार ॥ ४ ॥ ऐ सोबरसानौंप्रगट. गावतवेदपुरान ॥ महाराजवृषभानको, सरवोप रिअस्थान ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ भयेप्रथमनृपनीपउदार ॥ तिनकेजू पप्रसिधसंसार ॥ नृपदयादितिनकेसुतजानौं ॥ अधिकप्रतापजग तजिहिंमानौं ॥ धर्मधीरतिनकेअतिधीर ॥ कुलअवतंसबंशआभीर॥ महीभाननृपतिनकेसागर ॥ सुतातिनकेनवभानउजागर ॥ २ ॥ म हीभानमाहिमंडलनाथ ॥ जिनकीजगसबपावनगाथ ॥ सत्यभान सुभसत्यकीसीवां ॥ दईजगतमेंजसुकीनीवां ॥ ३ ॥ श्रीगुनभान भानसमराजैं ॥ दूरितिमिरदेखततिहिंभाजैं ॥ धर्मभानधरधर्मधुरं धर ॥ जाकोजससुनिलजितपुरंदर ॥ ४ ॥ श्रीरुचिभानरुचिरजग मंडन ॥ तासमऔरनाहिंनवषंडन ॥ श्रीबरभानमहाबरजानौं ॥ बं दीजनपंकजरविमानौं ॥ श्रीसुभानरतिभांनमहामति ॥ अतिअनू पसमऔरनांहिछिति ॥ ६ ॥ दोहा ॥ चंद्रवंशअवतंसकुल, महारा जवृषभान ॥ सुरनरपगबंदितसदा, गावतवेदपुरान ॥ १ ॥ अष्ट सिद्धिनवनिद्धिजिहीं. टहलकरतनितधाम ॥ कंवलादासीलौंफिर ति, महलटहलदिनजाम ॥ २ ॥ मुक्तिरहतिद्वारैंपरी, आज्ञाबसक रजोर ॥ किंकरकेकिंकरसोऊ, चितवतनाहिंद्दगकोर ॥ ३ ॥ जबवै भवबडभागसुष, अतिऐश्वर्यउदार ॥ इनबातनकोनेकहू, पावतना हिनपार ॥ ४ ॥ ऐसेश्रीवृषभानकें, रानीकीरतिनाउं ॥ हौंवाकेवड

लपहलकल्लोलनिडोलनि ॥ ज्ञनकमनकपगनूपरबोलनि ॥ मनमोतीपटलेहोलेहो ॥ रावरियहधुनिस्नुनियतएहो ॥ ८ ॥ तिताल ॥ कीरतिकेकन्याहोतमाचीदधकादौंअतिमानौंलोपतीरकौंचल्योसमुद्रछीरको ॥ वेदधुनिगानधुनिपटहनिसानधुनिब्रह्मलोकगईपुरभेदसनासीरको ॥ मोतिनकेभारभरीमोरतिनकेहारदेतजुरीहैंरमासीगोपीपारहेंनभीरको ॥ नागरियादेवलभदेपिकहैंबारबारधन्यआजअवनीमैंभवनअहीरको ॥ ६ ॥ तिताल ॥ अरीरानीतेरीचिरजीवोराधासोहनी ॥ होतहीप्रगटमहाआनंदकीडारिदईब्रजमोहनीनंदसुवनअरुकुंवरीतिहारीजोरीबढोजगजोहनी ॥ नागरीदासअसीसतडाढानिमहलमहल सुख बोहनी ॥ १७ ॥ तिताल ॥ तूंसुनिबाजतआजबधाईबाजतआजबधाईरी ॥ मोहनमंगलधुनिछाईरीबहिपूरिरहीसहनाईरी ॥ चलिबेगबधायैंकीरतिकन्याजाईरी ॥ १ ॥ छिनछिनउत्सवअबसरसानैं ॥ उठिबेगबधूजिनअरसानैं ॥ दधकादौमाचीबरसानैं ॥ सुपबरसरह्योरीबरननिनजातहीकाई ॥ २ ॥ मिलिचलीचपलगजगामिनी ॥ उपहारलियेअभिरामिनी ॥ आईसालिताज्योंभामिनी ॥ रससागरउमग्योगावतगीतसुहाई ॥ ३ ॥ वृषभानभवनमैंसुपकारी ॥ माच्योकोलाहलअतिभारी ॥ झूमकदेंनाचैंबृजनारी ॥ तननाहिंसह्मारैंनागरियासुषदाई ॥ ४ ॥

अथ वृषभानजीकी बंशावली ॥

दोहा ॥ मोहनमोहनिपदकँवल, धरउरकरनिप्रसंस ॥ वरनोश्रीवृषभानको, जगतप्रचुरबरबंस ॥ १ ॥ बरसानपरबतसुपद,

झारि ॥ पदरागदेवगन्धार ॥ चोताल ॥ मोहनमुखलखिमोहिर
ह्योनपरतघरीहूनघरमाई ॥ बीथनिमेंफेरीकरैंहरैं २ पैंडभरैंशीशपैं
दहेरीधरैंप्रेमरसछकानिछकाई ॥ संगभौंरभीरचलैंनैननमेंनीरवीर
पीरहियैनहबिषलहरिदबाई ॥ नागरियाकृष्णरूपभईभूलीदेहदधि
नामभूलीकहैंटेरलेहुरीकन्हाई ॥ १ ॥ यापदकीअलापचारीमें देने
ए ॥ दोहा ॥ दानकेलिजोमनबसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ ताजिबृन्दा
बनमाधुरी, अनतनकबहूंजाय॥१॥मेरेनिताचितमेंबसो, दंपतिदानि
बिहार ॥ मुखपरझूठीझगरई, नैननिकरतजुहार ॥ २ ॥ मोमनला
गीदुहुंनकी, दानकेलिबतरानि ॥ नैननिहाहाषानइत, उतभौंहेंस
तरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह ॥ पौरिसां
करीगिरतहां, दानरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरसमांगतकरतदोउ, नैंन
सैंनसनमान ॥ नागरियाकेहियबसो, दानरंगबतरान ॥ ५ ॥ पद
रागबिलाबलख्याल ॥ तिताल ॥ मागैंघनश्यामदानदई ॥ गोर
सदानसुन्योंनहिंकबहूंयहअबकैसीभई ॥ दीयोनहिंलेतहायहसि
हेरतनेककरतगई ॥ नागरीदासकौनबिधिबनिहैयहब्रजरीतिनई१॥
तिताल ॥ नितदानमांगैगहबरगैलमैंकितजांउरी ॥ सांवरोसोधोटा
अरबीलोहैंमनमोहननांवरी ॥ अंचरगहिहसिचाहिरहैंमुषहूंजियमें
सकुचांवरी ॥ नागरीदासडतैंउरझेरोइतैंचवइयागावरी ॥ २ ॥
पदरागसारंगतिताल ॥ तजिदीजैंगोहनसोहनमनसोहनगुमांनी ॥
परीबुरीयहटेवनिडरअतिअंचरछुवतनयेदधिदानी ॥ झूटैंझगरतड
गरतजतनहिंअहाकहालंगराईठानी ॥ नागरकंवरातिहारेमनकीमैं
अबसबजानीजूजानी ॥ १ ॥ तिताल ॥ जोतोअबइनहिंछुवोगेद

भागको, तनकपारनहिंपाउं ॥ ५ ॥ ताकेकन्यापुत्रभए, जनप्रसि द्धहैंनाम ॥ बरणौंअबश्रीराधिका, तिनसोंमेरेकाम ॥ ६ ॥ प्राची कीरतिकुक्षितैं, कन्याभईअनूप ॥ भानसिंधुआनंददा, चंद्रमंजरी रूप ॥ ७ ॥ कुलमंडनवृषभानकी, भूषनजगतअभूत ॥ वारौंको टिकनृपनके, याकन्यापरपूत ॥ ८ ॥ वेगबढोआरोग्यतन, भागब ढोउत्साह ॥ नंदरायकेकुंवरसौं, वेगहिहोहुबिवाह ॥ ९ ॥ होवृंदाब नईश्वरी, गुनपूरनसुषरास॥ विधिनांसैंमांगतरहैं, जाचकनागरीदा स॥१०॥ इति वृषभानजीकीवंशावली ॥ आन कविकृत राग गौरी ॥ तिताल ॥ आजबरसानैंमंगलमाई ॥ कुंवरिललीकोजनमभयोहै घरघरबजतबधाई ॥ मोतिनचौकपुरावोगावोदेहुअसीससुहाई ॥ रसिकविहारीकीयहजीवनिप्रगटभईसुषदाई ॥ ११ ॥ आनकवि कृतरागनायकीतालचपक ॥ आजबधावोवृषभानकैंधाम ॥ मंग लकलशलियेआवतगावतव्रजकीबाम॥ कीरतिकैंकीरतिप्रगटीहैंरू पधरैंअभिराम ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीहोनीराधानाम॥२॥ इति राधाउत्सव ॥ अथ दान या यापदकी आलापचारीमे देने ए

दोहा ॥ हरिमूरतिचितमेंचुभी, नैंनविपुलकृतनीर, सोसगग रियागिरतसी, जकिरहीयमुनातीर ॥१॥ घैरुहोतजान्योंनउर, उ डतनजान्योंचीर ॥ गिरतनजानीगगरिया, रहतनछानीपीर ॥२॥ हरीहरीकहिलेहुरी, बिसरीराधिकोनांव॥ कृष्णमईग्वारिनभई, कौत गलाग्योगांव ॥ ३ ॥ महारूपमदिराछकी, चलतडगमगतपाय ॥ जोदेखतग्वारिनछकी, निहैंछकनिचढिजाय ॥४ ॥ गिरैंनग्वारिनघु किउठैं, घायलमनरिझवार॥नागरियारनसुभठज्यौं, रहतसह्मारिस

लता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहूंनमन, फूलनिबीनतफूल १ ॥
दुहुंमिलिफूलनबीनही, जमुनाकूलनिसांझ ॥ रंगरलीअतिहुवै, कुं
जगलिनकैंमांझ ॥ २ ॥ बनफूल्योफूल्योज्ञमन, फूलबेसअभिराम ॥
सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगौरीश्याम ॥ ३ ॥ नीलपीतपटछो
रछवि, उरझेद्रुमकीभीर ॥ मुरसुरझावनदुहुनकी, मेरेउरझीबीर ॥
॥ ४ ॥ फूलनिमिसतियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरिया
केहियबसो, फूलरंगीलीसैल ॥ ५ ॥ राग गौरी तिताल ॥ जमुना
कैंकूलकूललतारहीझूलरी ॥ तहांहैसषीहैंनीलेपियरेदुकूलरी ॥ गोधू
लकवेरहूतैंहुवैंगईअबेरमैंदेषतठगीसीरहीदोऊतिहिंवेरमें ॥ बीनतहैंफू
लफूलफलहिलहतहैंझमकिझुकावैंझूमिडारनिगहतहैं ॥ सांवरीओ
गोरीछबिसोहैंअलबेलीहैंसबहींतैंन्यारीन्यारीडोलतअकेलीहैं ॥ बेस
रिअलकमालअरुझतपातरीताकोसुरझावनिमैंअरझीहीजातरी ॥ मे
रीसौंकपटतजिखोलतमुषमौंनहैं ॥ नागरियामोंसौंकाहिसषीवाहिकौं
नहैं ॥ १ ॥ श्रीराग तिलाल ॥ रंगसरसानैंबरसानैंबनबागश्यामापेलैं
सांझीसांझबहोसाथनिसिंगारिकैं ॥ नूपुरनिनादपूरिरह्योहैद्रुमनि
मांझजहांतहांलेतलडकीलीकुसमउतारिकैं ॥ सांवरीनवेलीबालनी
लमनिवेलीसीअकेलीफिरैंवाहांजोरीसंगसुकुवारिकैं ॥ डारहीनवावैं
मिलिबीनैंफूलपावैंफलनागरियावारैंमनकौतिकहारिकैं ॥ २ ॥ श्री
राग ॥ तिताल ॥ सोहैंमुखकमलपैंभौंहैंलटभ्रंगपांतिनैंनअलसोहैंक
लगाकीजनुपषियां ॥ नासिकासरूसीक्यारीअधरदुपैरियाकीमुस
कनिमंदमकरंदसीमैंलषियां ॥ प्रीतसांझीकाजकीनीकामकाछीछ
बिआछीऔरसाछीकोहैंताकीसाछीसबसषियां ॥ फूलीबयसंधिसां

धिदानी ॥ तोएगोपकुंवरिहमहूतैंनांहींरहैंगीसतरांनी ॥ ज्यौंतुमनं
दनंदनत्यौंएऊअपनेकुलअभिमानी ॥ जाहुचलेनागरगुनआगरसू
धेंगैलगुमांनी॥२॥ राग ॥ इकताल ॥ गईहूतीबेचनगोरसकैं ॥ रोकी
आंनिदानमिसुमोहनवाकीचितवनिमेरेहियमांझकसकैं ॥ अंचराग
हिफिरवहियांगहीरीकरमेरोमसक्योसुअवलौंचसकैं ॥ नागरीदास
कठिनमोहिंबीततउहितोमनलीन्होंहांसिहांसिकैं ॥ १ ॥ पदरागगो
रीतिताल ॥ दांनदैंरीव्रपभानकुंवारि ॥ छांड़िदेहुअबचारविचार
करतझगरईहोतअबार ॥ हाहागोरसप्यारीकरतझगरईहोतअवार ॥
हाहागोरसप्यारीपाय ॥ क्योंझुकिझिझकतहेंव्रनपाय ॥ नागरिनैं
ननिकरसनमांन ॥ हसिबसकारेलयेश्यामसुजांन ॥ ४ ॥ तिताल॥
लालनैंकमारगदीजैंएतीनकीजैंबराजोरी ॥ ठाढ़ैंझगरतसांझभईअ
बहारिपसारतझोरी ॥ थहरतदेहनठहरतासिरपरगरईलगतकमोरी ॥
टरतनहींहोडरतनहींहोकरतनहींहोथोरी ॥ जिनकौंतुमयहअंचराग
हतहोसोहैकुंवरिकिसोरी ॥ हीयेऔरकछुलालचललकैंपलकैंकरत
निहोरी ॥ प्यारेकुंवरछबीलेनागरपाईचितकीचोरी ॥ ५ ॥ तिता
ल ॥ छांड़िछांड़िदैरेअंचलचंचलछैला ॥ इतीकरतलंगराईलला
क्यौंरोकिमहीकोगैला ॥ जांननदेतदांनमांगतहठिठाढ़ोहुवैआडोअ
रैला ॥ सीषेकहांअनोषेनागरएजोबनकेफैला ॥ ६ ॥ रागतिताल॥
लीनौंहठहेरीमेरोंकान्हमहीरी ॥ आवतदेषिबैठिमारगमैंअचानक
आंनिगहीरी ॥ दीनौंनहींमोलकीनौंवरजोरीकहाकरौंसबहीसहीरी॥
नागरीदासभईसुभईअववातनजातकहीरी ॥ ७ ॥ इतिदानं ॥

अथ सांझिउत्सव ॥

यापदकीचलापचारी मैं दैने ये ॥ दोहा ॥ मिलतनवावतनव

कभुवबंकछवीलैनैननयकीदुरनिअरुनअधरनपरबरनतबनैंनबैंन ॥ चिवुकचारुझलककपोलनिकुंडलरतनसुरंग॥ उरऊपरपदकनीकी पांतिकटिछीनछरहरैंअंग ॥ १ ॥ मनहूलताअनुरागकीपूजलसांझसांझ ॥ त्योंउडगनमैंचंद्रमात्योंस्यामाजूसखियनिमांझ॥ स्यामाजूसषियनमांझछबिभरीआरतीआयउतारैं ॥ सोभारहिसबदेखितिहिसमैंअपनौंमनधनवारैं ॥ बजिउठैंबीनमृदंगमहुवरगीतमहरगायें॥ अर्चितदेवीगहिगंडिमाच्योंतियनपहुपबरषायें॥ यहसोभादुरिदेखतहेपियधरनिधुकतिहिंबार ॥ नागरिसषीहाथदैकपियांरापेस्यामसझारि ॥ २ ॥ रागपूर्वी ॥ इकताल ॥ रहेदोउबदननिहारिनिहारि फूलनबीनतस्यामसषीउतइतश्यामासुकुवारि ॥ लताकरनिमैंरहिगइतउतसकैंकौनानिरबारि॥ नागरियामिलिनैंनदुहुनिकेवडेठगनिठगवारि॥३॥ आंनकबिकृत इकताल ॥ पेलैंसांझीसांझप्यारी॥ गोपकुंवारिसाथपिलियांसाथेचावसौंचतुरसिंगारी ॥ फूलभरीफिरैंफूलले एज्योंफूलरहीफुलवारी ॥ रह्यांठग्यालपिरूपलालचीप्रीतमरसिक बिहारी॥ ८ ॥ रागकामोद इकताल ॥ अरीआजसांझीमैंजमुनांकैंकूलफूललेतफलपाये ॥ हेरतहेरतसघनद्रुमनमैंचितवतहीताहिचायनचितचिकनाये ॥ महामुदितवृषभानभवनकागावतचलीबधाये ॥ नागरियासांझीकेपूजतइहिंवृंदावनभयेमनोरथभाये ॥ ६ ॥ तिताल ॥ कोऊगोपकिसोरीसांझीपूजनआवैं ॥ सांवरेअंगकवलदलनैंननिसुंदरताऊफनावैं ॥ भानभवनराधेजूकेसंगमिलिमिलिगीतनिगावैं ॥ कारनकौनकुंवरिनागरिदिसिदेषिदेषिमुसक्यावैं ॥ ॥ १० ॥ राग गौरी तिताल ॥ फूलनिबीननहौंगईजहांजमुना

झराधारूपबागमांझडोलैंआजफूलभरीनागरकीअंपियां ॥ ३॥ राग
गौरी तिताल ॥ दुहुंनकीअंषियांअषियानिमाझ ॥ अपियांहीसां
झीपेलतहैंअंषियनिफूलीसांझरूपवगीचनिफिरतफूलभरीगरवहि
यांदैंअंपियां॥ गउरश्यामअंपियनकीउरझनिउरझीनागरसषियां ४
॥ तिताल ॥ रूपलालचीलालहुवैरूपमलनियां ॥ छविबिछियनि
छनकायकैंचलीहैंछलनियां॥तिहिविरियांडरियांलैंभरियाहारकी ॥
संगअलिंदधुनिमंदमंदगुंजारकी॥पहुंचीजायसुभायसुभायकहतमें॥
मीनकेतरसपेतसुबनसंकेतमैं ॥ उततैंगावतआवतदेषीभावंती ॥ वृ
जयुवतिनजूथनिंमिलिछविसरसावंती ॥ तरुतरुअंतरसवैंरगमगीभा
मिनी॥मनुबादरवादरप्रतिदमकतदामिनी ॥ परमप्रवीननवीनसुफू
लनवीनही ॥ द्रुमबंशीउरझीजनुकंचनमीनही ॥ रहिगईकुंवरिइ
कौंसीश्रीवृषभानकी ॥ जगमगरहीमुखजोंतिदवीदुतिश्रानकी ॥
प्रेमजंजालनिमालनिलषिसुकुवारकौं ॥ नियरैंठाढीआनिलियेउप
हारकौं ॥ लीमालिनिबैनमैनअनकूलियैं ॥ बनदेवीकैंधामचढैयेफू
लयैं ॥ लैंगईबनअंधियारगउरकौसांवरी ॥ वैठिअकेलेनैंननिपरसे
पांवरी ॥ पहराईमालामालिनितिहिकालमैं ॥ उयरथाईसबबातकर
निचलचालमैं ॥ कुंवरिसकुचिमुसकाइदसनअंगुरीधरी ॥ छलीछ
बीलैंछैलरासिकअंकनिभरी ॥ नागरियादोउमीतअधरआसवपियैं॥
गउरश्यामतनउरझिनिउरझीमोहियैं ॥ ५ ॥ ॥ तिताल ॥ कुंवरि
अलबेलीरीअतिसुन्दरसुकुवारि ॥ श्रीराधेकेरूपपरवारौंसुरानिनर
निकीनारि ॥ वारौंसुरनरनारिनिरषिमुषतनकपलकनहिंलागैं ॥ ब
दनविमलराकेसचंद्रिकाजगमगायरहीआगैं ॥ शीसफूलश्रीमंतअल

सांझीचीत ॥ स्वेदसिथिलसियरीभईबहिरहेथाहिरथहराय ॥ छुवत छबीलीकीछांहकौंवाकोतनपिघल्योसोजाय ॥ रीझिव्यथाप्रगटन लगीजबंस्यामाश्यामनिहारि ॥ निजमंदरलैंआइकैंभरीरंगअंकवारि ॥ नागरियारसरंगरगमगेदोऊकुसमसेझकैंमांझ ॥ सांझीपूजतपियमिलेपरमसलौंनीसांझ ॥ इतिसांझीउत्सवसमाप्तम् ॥

अथ शरद उत्सव ॥

समयबेणुगीत॥ पद राग बिलावल तथा धनाश्री तथा सोरठ ताल फिरती ॥ प्रथम चपक ॥ पाछे इकताल ॥ सुनिरीसषीसुषदाई ॥ देषिअमलसरदऋतुआई ॥ आईसरदगतिपंकभुवभइस्वच्छअंबुअकाशहैं ॥ कुंजकाननअतिप्रफुल्लितछईकुसुमसुवासहैं॥ ठौरठौरसरोवरीबिचअमलकमलनिपुंजरी ॥ तहांभ्रमतअलिंदमातेकरतआतुरगुंजरी ॥सुभगवृन्दाबनअवनिवहैंत्रिबिधिरोचकपवनहैं ॥दासनागरदेखितिहिकरतमोहनगवनहैं ॥ १ ॥ उरमंडितबनमाला ॥ डोलैंगायनिसंगगुपाला ॥ संगगायनिकैंगुपालाभेषनवनटवराकियें ॥ मोरपच्छप्रसूनपुंजप्रबालजूराशिरदियें ॥ कंजकरननिकरानिकातनधातगुंजावलिलसैं ॥ दसनिकिरननिजारकोउरहारफैलतजबहसें॥ मदत्रिघूर्णितनैंनसोहैंबंकभौंहैंमनहरैं ॥ दासनागरस्यामघनलखिमुरलिकाअधरनिधरैं ॥ २ ॥ पशुपंछीचहुंदिशिरी ॥ मुनिधुनिगांनदेहसुधिबिसरी॥ बिसरीजुसुधिषगसृगचकितचितमुखनकहूंकनत्रिनछियें ॥ बैंनबरषतनीरनैननिनाहिंबछरापयपियें ॥ थक्योमंदसमीरसुनिद्रुमपातहुनपल्लवहलैं ॥ वियकिजमुनाजलर

कूलद्रुमनिकोभीर ॥ अरझिगयोअरनीकीडारियांतिहिंछिनमेरोअं चरबीर ॥ तवकोउनिकसिअचांनकआयोमालतीसघनलतानिर वारि ॥ विनहीकहेमेरोपटसरुझावतइकटकमोदिसरह्योनिहारि ॥ होंसकुचनिझुकिदबिजातइतउतवाहिनैंननिहाहापात ॥ मनउर झायबसनसुरझायोकहाकहौंऔरलाजकीबात ॥ नामनजान्यो श्यामअंगहैंपियरैंरंगवाकोहुतोदुकूल ॥ अबवहीबनलैचलिनागरि सषीफिरिसांझीबीननिकौंफूल ॥ ७ ॥ तिताल ॥ आजूरंगहैंसां झीमांझि ॥ भईपरमसलौंनीसांझि ॥ दोहा ॥ हरीभूमिसौंझूमिकैं, मिलेकुसमझुकिझौंर ॥ मिल्योजुपवनसुगंधसौं, मिलेलताअरुभौंर॥ ॥ १ ॥ पीतजुहीकुबलैंकुसम, मिलेपेलिझिलिझेलि ॥ मिलेबिंब फलफलभलैं, अरूतमालसौंबेलि ॥ २ ॥ कदलीमिलिजुअंबसौं, अरुकदंबकचनार ॥ मिलामिलीनितहीरहो, इहिबनकरतबिहार॥ ॥ ३ ॥ नागरिमनभायेभये, चलीभवनमिलिबाल ॥ पायोफूल नबीनतैं, रतनअमोलकलाल ॥ ४ ॥ तिताल ॥ आईहैंमालनियां कोऊफूललियैंरंगरंग ॥ नषसिषलौंअतिसोंहनीमानौंमोहनीसांवरैं अंगचलितललितगतिहंसकीतनओढैंझीनीचीर ॥ रूपअचंभोव्है रह्योधाकेंचहुंदिसमाचीभीर ॥ फूलफूलसौंभेटिकियेजहांसांझीरचैं सुकुंवारि ॥ ताहिलाडिलीरीझिकैंदईमोतिनमालउतारि ॥ बाला मालापरसिकैंभयेकंपरोमांचितगात ॥ बिस्मयव्हैंसषियांरहींलषि कनअंषियांमुसक्यात ॥ क्यौंकंपतबूझयोललीउहीकह्योजोरबिंब पांन ॥ तुममहींद्रवृषभांनकुवरिहौंदींनप्रजाभयमांन ॥ ज्यौंज्यौं करप्यारीगहैंकहैंतूमतिमानैंभीत ॥ सांझीचीतनचीतव्हैंसिसकैंन

ल ॥ समरबिजैंआरंभरससरासकरननन्दलाल ॥ ३ ॥ परमप्रेमआरूढ़रथविषमपन्थधुनिबैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहितचढ़ीमदनगढ़लैंन ॥ ४ ॥ बिमलजुन्हैयाजगमगीगईबैंनधुनिछाय ॥ प्रेमनदीतियरगमगीवृन्दाकाननआय ॥ ५ ॥ सुनतबैंनबनतियचलीमुनिमनभयेअधीर ॥ नागरलषिरससरासनभभईबिमाननभीर ॥ ६ ॥ पदरागबिहागरोइकताल ॥ जुरेकरनिकरकमलतियनके ॥ मंडलहोतनित्तचलअचलचंचलकुंडलहारहियनके ॥ वायबंध्योकलगांनबांसुरीबिवससुरबधूअंकापियनके ॥ अंगअनंगनियरिरंभनिबहोहावभावभौंहैंअंपियनके ॥ प्रियासंगलैंदुरिगयेहरिबनहेरतसघनवृंदसषियनके ॥नागरियाछबिसागरबिनमनौंतलफतजूथमैंनमाछियनके ॥१॥ इकताल ॥ हरिसंगहुतीसोअकेलीवहिठाढी ॥ दांमिनिसीदेहकोप्रकाशआसपासदेषिरहीद्रुमबेलिनिमैंचित्रकीसीकाढ़ी ॥ कासिकासिपियपियकहिटेरतमहाबिरहकीबेदनबाढ़ी ॥ नागरीदासरासरसबरषायहायकितिदुरेघनस्यांमदुषितहैंगाढी ॥ २ ॥ इकताल ॥ बैठेजायपुलिनमेंरासिकबिहारी ॥ बीचआपबृजचंदमनोहरउडमंडलबृजनारी ॥ नवनिचोलअपअपनेंसबमिलिलायबिछायदये ॥ तनथिरदांमिनसेनिकसेपटवदराउतरगये ॥ बंकभौंहनैंनांरसमातेछुटिअलकैंअलबेली ॥ प्रेमबिबसबूझतपियकौंतियहंसिहंसिप्रेमपहेली॥ इकभजतेकौंभजतएकाबिनभजतभजई ॥ कहीकुंवरतेकौंनआहिजेइनदोउनकौंतजई ॥ समुझिअर्थमुसकायनैंनभरिकहतजोरकरप्यारो ॥ नागरियाहितसौंनहिऊरनहौंनितरिनीतिहारो ॥ ३ ॥ तालचपकतथातिताल ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलब्रजबाल॥

ह्वोरथभाननहिंआगेचलै ॥ नभाबिमाननिगिरतसीतिग्रपतिरुछं गनिवारदी ॥ दासनागरसुनतधुनिसुरवधूदेहाविसारदी ॥ ३ ॥ री तैंकौनपुण्यतपकीन्हौं ॥ पियकोअधरसुधारसलीनौं ॥ लीनौंअध ररससुधाबनमेंअरीबैरनबांसुरी ॥ हमभवनतलफतपरीपरीकियो धीरजनासुरी ॥ उडतअंचरउरजउघरतबैनधुनिसुधिहरिलई ॥ क वरिछुटिभइसिथलनींवीमदनपीडतानिरदई ॥ कहसखारिसखारि कबहूकबहुआवतसांवरो ॥ दासनागरध्याननतनमयभरतअंकनि तांवरो ॥ ४ ॥

अथ सरद रास बांसुरी ॥ राग केदारो ॥

सुनिधुनिबैंनचलींहैंबृजजुवातिनकीभीर ॥ ज्योंदुंदभिसुनिसन मुखनिखसतसमरसुभटरनधीर ॥ प्रेमषेतवृन्दाबनमगरह्योछयोघोष मंजीर ॥ नागरिनागरमिलतहींमैंचलेकामकटाछनितीर ॥ तालच रचरी ॥ चतुरअहदूतिकाबांसुरीस्यामकी ॥ नवलबृजबधुनिकेआ यकाननलगीदूरिकारिलाजकुलकानसबबामकी ॥ भवनिप्रतिभव नितैंलैचलीबिपनकौंभुराकिदइडारिकैंमंत्रपढ़िकामकी ॥ करिकैंति यअतनमइमिलइनागरिनईदइनसुधिरहनिअपअपनैंसुखधामकी २

सरदरासोत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ निसिसर्दोत्फूलिमल्लि काककुभकिरनराकेस ॥ गहीबेणुहरिनिरपिबनरासरमणआवेस ॥ ॥ १ ॥ पूरनससिनिसिसरदकीचलवनमलयसमीर ॥ होतबेणुरव रासहिततरुनतनइयातीर ॥ २ ॥ बंसीधुनिदूतीपढ़ैंबोललईबृजबा

जनुउत्सवकालिंदीग्रहउछरतमुक्तानिकेजाला॥ बाहुसुंडअवगाहिनी रवलबीरचलेगजचाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपा ला ॥५ ॥ रागकेदारो तालयात्रा ॥ आजसषीरसिकासिरमौरनाच तभलैं॥ जुवतिजनमंडलाकारवृंदाविपिनवीचघनस्यामप्रियदामिनी झलमलैं॥बीनरसलीनबजिरुणितकलकिंकनीमैंनकेमंत्रसीजंत्रधुनि धुनिरलैं ॥ भ्रमततनचपलमिलिपरतनहिंदृष्टिजबदरसहितपरसम ननैंनदोउकलमलैं ॥ मुकटसिरझलकअरुरलकहारावलीझुलतबि बअलकलपिपरतनाहिनकलैं ॥ नागरीदासभुजअंसधरिदोउचल तकोटिकंदर्पतबचरनितरदलमलैं ॥ ६ ॥ रागइमनइकताल ॥ वृं दाबनसरदरैंनराकाअभिराम ॥ रचीहैंरुचिररसिककेलिराधासंग भाम ॥ बैंनबीनबलयमिलेकिंकिनीमृदंग ॥ नूपुराधिगानघोषछा योहैंसुपंग ॥ अंसअंसबाहुबंध्योमंडलाअषंड ॥ गोपिनाबिचमध्य बिचगोपालधरैंसिषिसिपंड ॥ नृत्यहोतअंचलचललसतपहुपरैंन ॥ ज्यौंधुजासमूहफरहरातमैंनसैंन ॥ मनहुंपवनप्रेरकमिलिगउरश्या मसंग ॥ मेघचक्रचंचलाबिलासरासरंग ॥ बासबस अधीरसंगसंग भौंरभीरझुलतहारपुलतबारनाहिसम्हारचीर ॥ गिरतकुसमकबरानितैं बिबसरसावेस ॥ लटपटायलगतकंठपुलकतनसुदेश ॥ नीवीकुच परसपानचुंबनउदगार ॥ हावभावलहरबढयोसिंधुरसअपार ॥ सुर छपरेउमदनवाजिदुंदुभीअकाश॥ पहोपवृष्टहोनलगीजहांबिलासरा स॥ बिथकितलषिरहारैंनहोतहैंनभोर ॥ नागरनटनिरषिभयोचन्द्र माचकोर ॥ ७ ॥

अद्भुतमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनसरससुरलीनौं ॥ लीनौंसरस
सुररागरंजितवीचिमिलिमुरलीकढ़ी ॥ हौंनलाग्योनृत्यबहुबिधिनू
पुरनिधुंनिनभचढ़ी ॥ डुलतकुंडलपुलतबैंनीझुलतमोतिनमाला ॥
धरतपगडगमगाबिवसरससरासरच्योनंदलाला ॥ चितहावभावनिलू
टैं ॥ अभिनयदृगभौंहनिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुं
कअंकमालभरिझेलत ॥ झेलतजुभरिभरिअंकनिसंकितमगनप्रेमा
नंदमैं ॥ चारुचुंबनअरुउगाराहिधरततियमुषचंदमैं ॥ उड़तअंचल
प्रगटिकुचबरग्रंथकसपटछूटैं ॥ बढ्योरंगसुअंगअंगनिहावभावनिलू
टैं ॥ पगनिगतिकउतकमचैं ॥ कटिमुरिमुरिमध्यलचैंसिथलकिंक
नीसोहैं ॥ मुकटलटकमनमोहैं ॥ मोहैंयमुननटमुकटलटकनिमट
कगतिपगधरनकी ॥ भंवरभरहरचहूंदिसछबिपीतपटफरहरनकी ॥
गिरयोलषिमनमथमुरछलैंभजीरतिमुषमधुअचैं ॥ नचतमनमोहन
तृभंगीपगनिगतिकौतुकमचैं ॥ वृंदाबनसोभाबढ़्यो ॥ तापरव्योम
बिमाननिसौंमढ़्यो ॥ दुंदभिदेवबजावैं ॥ फूलनिअंजुलीवहोबरषा
वैं ॥ बरषैंजुफूलनिअंजुलीवहोअमरगनकौतुकपगे ॥ बिबसअंक
निब्रजवधूहियनिरषिमनमथसरलगे ॥ व्हैंगयेचराथिरसुथिरचरसरद
पूरनससिचढ़्यो॥दासनागररासओसरबृन्दाबनसौभाबढ्यो ॥४ ॥
इकताल ॥ रह्योरंगषेलतरासरसाला ॥ तुटिगयेहारछूटिगयेअंचर
श्रमडगमगनमराला ॥ जुवतिजुथजुलधसेजमुनाबिचमदनमोहनति
हिंकाला॥क्रीड़तजनुकरनीसंगलीनैंमत्तद्विरदनंदलाला॥गोरेअंगम
हाछबिपावतभीजेवाराविसाला ॥ मानौंसीतलचंदनपूतरीनिसौंलगी
लपटिअहिमाला ॥ छबिसौंछींटनिपेलमचावतप्रेमबिवसब्रजबाला॥

॥ राग अडाणौं ॥ चौताल ॥ रासमंडलमधिछविछकेस्यामास्याम लैंलैंगतिलपटपलटिजातभरेरंग ॥ गानधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैंसों मधुरमधुरबीनाबाजतमृदंग ॥ चंद्रकासिथलइतमुकुटझुकौंहौंउतव्हैं गयेविवसरससुधिनरहीहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैंननिकीभईपंग मुरछिगिरयोहैंरतिसहितअनंग ॥ १ ॥ तिताल ॥ दौनैंगरबाहियांग तिलेतडोलैंमंडलमैंबोलैंततथेईथेईमुषरूपललकैं ॥ व्हैंगयेबिवसमन श्रमितभयेरीतनपिसेंफलसीसतैंसिथिलभईअलकैं ॥ इताकेंकिनीछू टीलोलहारकुंडलकपोलझांईझलकैं ॥ नागरीदासराधामोहननचत देपिभूलीसखीगांनतांनलागतनपलकैं ॥ २ ॥ चौताल ॥ देखिस्या माजूश्रमितभईरासमैं ॥ वहोनिर्तभेदषेदसरकेसिंगारहारसिथलकुस मकेसपासमैं ॥रसिकरवननिजकरतेंपवनकैंरहरैंहरैंल्यायेनिवासमैं॥ नागरियासोयेकुंजकंवलनिकीसैंनीपरवैंनीबिथुरैंनाहैंबिलासमैं ॥३॥ तिताल ॥ आजुसपीप्यारीजूस्यांमाहिंसिपावहीं ॥ लैंलैंगतिभेदनिव नावहीं ॥ चतुरासिरोमनिजांनिअजांनभयेडुलतसुलपसरसावहीं ॥ तालिमकौंदेतस्यांमानाचतमैंरंगवढयोसषीसुषानिरापिसिहावहीं॥ ना गरिकटाछनिकीलगतचमोठीचौटत्योंत्योंपियगतिहिंभुलावहीं ॥४॥ राग केदारो ॥ ताल चर्चरी ॥ सरससुघरनवकिशोरगतिसुधंगनां चैं ॥ नूपरादिमिलमृदंगवीनलीनअनुपमधुनिसहचरिकलगांनरंग चहचरिव्हैंमांचैं ॥ कहीनपरतभुवबिधांननवघनतनलहलहांनविलु लितवनमालभृंगलपटतिगतिआवैं ॥ अभिनयजुतउरपतिरपधरन चपलचारुमंजुलझुकिमुकटसीसगतिमतिबिसरावैं॥ दांवनबिचिपवन परसिफैंलिफैंलिजातफिरतगातितरंगसागरबढिरंगमांजबोरैं ॥ नाग

अथ निकुंजरासोत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये ॥

दोहा ॥ कबहुकप्रियमंडलकढत, अतिगतिबढतसुधंग ॥ हरि केमनलोचनाफिरत, उरझेपायनसंग ॥ १ ॥ लाललईउरलायल षि, रीझेगतिसरसांन ॥ मंडलमैंसुरझैंनहीं, अंकमालउरझांन ॥२॥ उतउरझीकुण्डलअलक, इतबेसरवनमाल ॥ गउरस्यामउरझेदो ऊ, मंडलरासरसाल ॥ ३॥ गरबहियांगतलेतामिलि, श्रमवशसिथि लितपाय ॥ डारेमनलेसबनिका,डगमगडगनिडुलाय ॥४ ॥ लेतिव लैयारीझिदोऊ, दोउपूछतश्रमवारि ॥ नचतसनींअतिरंगसों, बनीं मदनमनुहारि ॥ ५ ॥ उतैंझुक्यौंहैंनवमुकुट, इतैंचन्द्रिकाचार ॥ भ येरासरसमगनमन, सरकेसकलसिंगार॥ ६ ॥ खूटिखूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेवार ॥ श्रमतरासरससरंगमैं, टूटिटूटिगयेहार ॥ ७ ॥ ना गरियाकहांलगिकहैं, कबिमतमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहाबिलासमैं, कोरिकोरिन्हैंरास ॥ ८ ॥ पद राग ईमन ॥ तिताल ॥ थेईतथेईथे ईथेईथेईथेईथेई ॥ उघटतरासरसिकमनमोहनरंगभरीनिर्ततहैंप्या री ॥ मुरजमृदंगटकोरमिलावतगावतसखीसुघरदैंतारी ॥ ललित अंगभुवभंगचितैंपियबिवसभयेबोलतबलिहारी ॥ जगमगरहीरास मंडलमैंनागरियामुषचंदउज्यारी ॥ १ ॥ राग छाया नट तिताल॥ बोलतथेईतथेईथेईरंगभरेनिर्ततहैंपियप्यारी ॥ बजवतबीनप्रवीनली नधुनिगुनिसलितालतिारी ॥ अरझीअलकछबिसौंबेसरिमैंअरझी पीतपटसारी ॥ नागरिनागररीझिपरसपरकहतवारवारेउहौंवारी॥२

त्यौंनिसभीजैं ॥ १ ॥ तालचचरी ॥ करतसुपसंगनवरंगललनाल
लन ॥ स्यांमजुगभुजांनबिचगउरतनभांमिनींसजलघनमांझमनौं
दांमिनींझलमलन ॥ छुटतवरवारअरुतुटतहारावलीपोलिहीं बिमल
बिधुवदनघूंघटवलन ॥ नैंनहसिहसिमिलतरसछकीदृष्टसौंतौंसियेछ
बिभरीवंकभृकुटीचलन ॥ महकिरहींमालतीकुंजकुसमितमहलटह
ललिताादितहांभूलिलागतपलन ॥ नागरीदाससुपरासलीलालालि
तकोरकोरकनिमदमदनदलदलन ॥ २ ॥ तालचर्चरी ॥ कुंजरस
केलिकवनीयदंपतिकरत ॥ परस्परहितबिबसरूपमादिकछकेदूरि
करबसनउरदृढअंकनिभरत ॥ पियतमधुअधरसुपसिंधुमैंमगनमन
निकटतिहिंसमैंचपच्यारखंजनलरतकबहुंभुवभंगजुतसीकरतरंगसौं
अंगप्रतिअंगापयपरसदैंमनहरत ॥ बिथुरेबिचकचनमुपगउरानिकस
तश्रमितचंदतैंसघनमनुंस्यांमबादरटरत ॥ सुरतसुपस्वेदतैंमहकिके
सरिचलीबासलहिनागरीदासधीरनधरत ॥ ३ ॥ इकताल ॥ नंदनं
दनचंद्रमांबल्लवकुलकुमदवृंद ॥ जलदसघनकुंजचारुश्रवतसुधाबे
णुगांनबिपुनाबिपुनप्रतप्रकाशअनुपमछबिदुतिअमंद ॥ अद्भुतस्वयं
रूपदिव्यबिमलजोहनप्रबतरासकेलिकलाकोबिदआनंदकंद ॥ ना
गरव्रजपतिकुमारपस्यतसुपसंवरारिबिस्मयजुतनम्रग्रीवचरनकमल
बंदवंद ॥ ४ ॥ तिताल ॥ अ [illegible]ब्यारीराधागतिलेतअलबेलीयसुजां
न ॥ रंगभरीयौंहैंमनमोहैंचितवनिअलबेलीअलबेलीमुसक्यांन ॥ व
दनचंदआनंदसुललकैंअलकैंअलबेलीअलबेलीव्रतरांन ॥ कमलनैं
ननागरपियमोहेरासमैंअलबेलीअलबेलीलेतांन ॥ ४ ॥ राग ॥
क्रीडतरासिकरासरससंगे ॥ प्रफुलितबिपुनबहतमलयानिलउदयातिस

रियानिरषिवनश्रमझलकनझलमलातप्रेमविवसबालनीलअंचरमुख ढोरै ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ रसिकरसरासनवरंगनिर्तंतलला ॥ संग गउरंगगरबांहछबिदेतपृयसजलघनमांझमानौंचमकिरहीचंचला ॥ बलयकंकनकुणितछीनकटिकिंकिनीपगनिछिगुनीनिकेछोरछनक तछला ॥ नागरीदासदोउनिर्तश्रमडगमगेरगमगेवारघुलिउरानिच लिअंचला ॥२ ॥ इकताल ॥ रासरंगवरसुधंगनिर्तितहैंप्यारी ॥ तत्त रंगधुमकटितकथेइतथेईथेईथेईथेईथेईउघटतिजुवतीसमूहबाजितस मतारी ॥ बीनपरनआवजामिलिगावतललिताप्रवीनछीनसुकटिभं गसीव्हैंभंगभुवअन्यारी ॥ नागरिछबिलषिरसालइकटगपियहृगवि सालबरसतमनिमाललालबोलतबलिहारी ॥ ३ ॥ राग सोरठ ताल चर्चरी ॥ बोलिततत्थेइत्थेईरच्योरसरासरसदरैंन ॥ निरषितभयोचं दचकितथकितरह्योगैंन ॥ गांनतांनमानपरनिमिलिमृदंगबीन ॥ उ रपतिरपअलगलागलचकतकटिछीन ॥ नचतरवनीरवनमदनमथत अंगअंग ॥ चलिकटाछिभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ प्रेममगनभरतअं कलंकलगिनिसंक ॥ छाडतनाहिंलालहिंतिहिकालहिनिधिरंक ॥ उ रबिहारतुटतहारछुटतबारबास॥ बिबसरसबिलासदासनागरसुपरास ॥ १ ॥ तिताल ॥ दोउमिलिमंडलनितंतडोलैं ॥ इकदिसकुंडलललो लएकदिसलगेकपोलकपोलैं ॥ गरबहियांअरझेअरझेपियरेनीलनि चोलैं ॥ नागरियागतिमैंगतिबदलैंबदलैंबदनतमोलैं ॥ २ ॥ रागकाफी तिताल ॥ होप्यारीजूमोहिदीजैयहदीजैं ॥ हाहावारीगा यगायकैंगतिलीजैंअबतोगतिलीजैं ॥ दयोबिछायपीयपीतांबरसुल पकीजैंयापैंसुलपकीजैं ॥ बढयोनिर्तनागररसभीजततनिसभीजैंत्यौं

गरीदाससुपरासमाधवमिलीअंगप्रतिअंगछविमनहुंघनदामिनी॥९॥
इति रासोत्सव ॥

अथ गोवर्धनोत्सव ॥

समय या पदकी अलापचारीमै दैनें ये दोहा ॥ प्यारीढिगपियर सपगे, गिरकरधरैंतूभंग ॥ रंगभरेकेसंगमैं, विपतमांझहूरंग॥ १ ॥ जेवंशीकेभारसौं, झुकेजातसुकुंवारि ॥ तिनप्रियव्रजजनकेलियैं, करपरधरयोपहार ॥ २ ॥ गयोतिमरऊपरजहां, बरसतहैंघनजोर॥ गिरतरचदउदैंभयो, भामिनभईचकोर ॥ ३ ॥ नागरिसोंललिता कहत, सबव्रजागिरकीछांह ॥ तुमचितवतपियश्रोरउत, त्यौंत्यौं कंपैंबांह ॥ ४ ॥ रागअडानौंइकताल ॥ हमारोगोपाललालवल्लभ कुलतिलकभालवृजजनसुपदाईकुंवरसांवरतनरूपजाल ॥ इंद्रको पिमेवमालपीवतलषिगोपीग्वालरापिलीनौंगिरकरधरछत्रछांहभुज मृनाल ॥ सतघोसगोवर्द्धनतररूपउत्सवभीरबालमनुचकोरमं डलीमधिसरदचंदनंदलाल ॥ नागरीदासनगनिवासइतकतूहल बढ्योरंगमघवाउतमनभंगव्हैंरह्योसमैंरसाल ॥ १ ॥ चौताल ॥ दे षिकैंसैंधौंछबीलोठाढोसुढारसौं ॥ एककरगिरधरैंएककरकटितट नाचतज्यौंनटवासह्मारसौं ॥ गोबरधनतरैंचंदमुषकैंउजारेमांझदीठ नटरतइकतारसौं ॥ नागरियासबकीभईहैंइकठोरीआषैंयाहीतैंतृभं गभारसौं ॥ २ ॥ ताल ॥ कुंवरिकिसोरीकहूंदरसीकुंवरकाह्नजाछिन तेंमिलिबेकीमातियहठानीहैं ॥ गोपिनकीमतिफेरिमघवाकीबलमे टीवरष्योपुरंद्रतवप्रलयपौंनपानीहैं॥छूटिगयीसहजैंबिपतमांझलोक

सिसबंगे ॥ सरदबिमलराकानिसस्रुपक्तकलरववेणुतृभंगे ॥ रासा
रंभब्यौमधुनिपूरतमहुवरमुरजमृदंगे ॥ गउरस्यांमभुजग्रीवराचेपदसं
गीतसुधंगे ॥ अंदोलितअलकावलिकुंडलगुनिमुक्तावलिभंगे ॥ रसा
नंदआवेसाबिबसपटनीवीसिथलसुअंगे ॥ रूढविमानअमरप्रेमातुर
मुर्छितअवनिअनंगे ॥ श्रीवृन्दाबनराधामोहनकेलिकलपबहोसंगे ॥
नागरियागोलोकअषंडितकथतकथासुकभृंगे ॥ ५ ॥ राग केदारो॥
रासमंडलमधिछकेस्यांमास्यांमलैंलैंगतिलपटिलपटिजातभरेरंग ॥
गांनधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैंसेमधुरमधुरबीनांबाजतमृदंगचंद्रिका
सिथलइतमुकटझुकौहैंउतव्हैंगयेबिबसरससुधिनरहीहैंअंग ॥ नाग
रीदासगतिनैंनानिकोभईपंगमुरछिगिरयोहैंरतिसहितअनंग ॥ ६ ॥
इकताल ॥ अरीरासमैंरंगभरीनचतसरसस्यामाप्यारी ॥ चितवतच
कतरहिगईचपलामोंडतहाथबिचारी ॥ गांनसुनतषगमृगमनमोहेल
ज्जितभईकोकिलानारी ॥ नागरीदासचकोरसांवरोदेषतइकटकवद
नचंदउजियारी ॥७॥ तिताल ॥ सरदनिसरासासिन्धुबढ्यौअनूप
मउपजततांनतरंग ॥ सुघटसंगीतसुधंगसुलफगतिहोतदुहूंनिमैंहाव
भावभुवभंग ॥ माधिमंडलश्रीराधामोहनलखिमुरछितरतिअवनिअ
नंग ॥ नागरीदासअकासचंद्ररथचलतचक्रगतिपंग ॥७॥ चर्चरी ।
चलीसिंगारसाजिसहजअभिरांमिनी ॥ हारअरुबारकैंभारलचक
लंकडगनिडिगुलातआनंदभरिभामिनी ॥ सुनतझंकारनिजदाबिर
सनांदसनसकुचिफिरधरतपगमंदगजगामिनी ॥ उरसिअंचलउडत
सरसपरसतपवनरवनपैंगवनबिचाषिलियमधुजामिनी ॥ कुंजघनद्रु
मनकीपांतितरजातिछिपछांहछाडतनहींचतुरिमानिस्वामिनी ॥ ना

गटिजगमहिमाभारी ॥ १ ॥ रागसारंगतिताल ॥ कैंसैंरहोदेपिवृष भानकीकिसोरीनैननिपलनिलगावैं ॥ वेउकरगिरधरेंसवनिकी चौरचितैंफिरद्रिगइतठहरावैं ॥ दुहुंनिकैंदुहूंवोरस्वेदरोमकंपहोत चहूंओरभारपैंपरमकौंनपावैं ॥ नागरीदासउतइन्द्रकोपिवरषत इतगिरधारीप्यारीरंगवरपावैं ॥ १ ॥ रागटोडी ॥ गोवर्द्धनधारीना मकुंवरकोअवहीतैंहमलीनों ॥ सातादिवसगिरिवरकरराष्योइन्द्रमां नभंगकीनों ॥ भलेंपावोचोरिदधिवृजमेंभलदानदधिछीनों ॥ ना गरियाघरघरकोमांपनआजुसुफलकरदीनों ॥ २ ॥ इति गो वर्द्धनउत्सव ॥

अथ दीपमालका ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ औरठौरदीपावली, धरैंदीवारीहोत ॥ सदादिवारीस्यामकैं, प्यारीजगमगजोत ॥ १ ॥ दीपमालस्यांमासहज, विहसजवैंवतरात ॥ हसतलसतऐसेजनूं, फू लझरीछुटिजात ॥ २ ॥ दीपमालप्रियहारउर, लसतसुमुक्ताआव ॥ पियचपलपिचपवोधव्हैं, छुटतमनौंमहताव ॥ ३ ॥ दीपमालनव नागरी, नवनागरसुपरास ॥ उरमैंबसोहियभवनये, नित्यनागरी दास ॥ ४ ॥ रागईमनतिताल ॥ कुहूकचचूनरीसितारेदारसोईनभ अंगआभासहजप्रकाशपुंजधारीहैं ॥ मनिगनभूपनसुदीपकजगीहैं जोतिमोतिनकीआवमहतावउनहारीहैं ॥ फूलझरीहासमैंनिवास महामोहनीकोकुंजनिकैंपुंजचपिचौंधिबिसतारीहैं ॥ ओरठोरदीप निकीदुति दिवारीहोतनागरबिहारीकैंदिवारीनितप्यारीहैं ॥ १ ॥

लाजराषींगिरधारीनीरैंराधारससांनीहैं ॥ विपमउपायकरिसींची हितबेलीऐसैंलगनलगेकीहेलीअहकहांनीहैं ॥ ३ ॥ ताल ॥ जांनैं रीबलैयाकितबरपैंप्रबलपांनीकितपरैंओलाकितमेघमालाअनीकी ॥ पायोप्रांनपीतमनिहारैंछबिगिरधरैंचंदाहिचकोरीजिमनेहचितवनीं की ॥ नागरीसुषवीरीदेतलेतरूपनैंनसुधापगिरहेवातनिपरमाहितस नींकी ॥ नागरादिनसातरैंनचैंनमैंनजानेजातघनींघनवरषामैंवनीव नांबनींकी ॥४॥ राग ॥ मतमोरचंद्रिकारतनपेंचपगियापैंसुन्दरसुम नगुच्छसोभानवभालकी ॥घुर्नितनयनबंकभुवमुपमंदहासपरसतपौं नजुगअलकसचालकी ॥ ठाढोव्हैंतृभंगानिसौंगिरराजकरधरैंतैसी झूकिझुलनिललितबनमालकी ॥ होतमदभंगमनमथराजसुरराज देषिसषीदेखिआजुछबिनंदलालकी ॥ ५ ॥ राग ॥ सजनींनिरषि नंदकुमार॥ धरैंगिरकरबढीछबिलपिमदनवोहवलिहार ॥ ललित अंगतृभंगकटितटिकनककिंकिनीजाल ॥ बंकभुवद्रिगअलकथर सतचरनपरसतमाल ॥ उदितबिचबृजचन्दपूरनतिमरमेट्योघोर ॥ तहांगोपीगनतरइयांभानकुंवरिचकोर ॥ उहांवाहिरइन्द्रवरपतप्र बलघनलियेसंग ॥ दासनागरगोवर्द्धनतरइहांबरपतरंग ॥ राग जथासमयअनुसारगावनौतालचर्चरी ॥ जयतिगिरराजकृतछत्र ब्रजराजसुतसहजसुरराजगतिगर्वहारी ॥ बर्यहरिदासजनधोपसु षरासीरतुसर्वदाहरितहुल्लासकारी ॥ सकलरसवर्द्धनंदेवगोवर्द्धनं प्रणितइन्द्रादिसुरलोकचारी ॥ विपुनमाधिनायकंभूमिछबिभायकं पायकंनीलमानिपीतप्यारी ॥ परमप्रियहेतसंकेतसुषकंदरातहांनिस दिवसबिहरतबिहारी ॥ नागरीदासलघुबुद्धिवरनैंकहाउताहिंनगप्र

यांझनक, पासेठनकतसंग ॥ बजवतगुनीअनंगमनु, जलतरंग ज़ुतरंग ॥२॥ स्यांमसारिगोरीचलत, चांपिचहुंटियनिचार ॥ मनहुं कँवलकेअग्रव्है, आवतभृंगकुमार ॥ ३ ॥ जरदनरदघनस्यांम पिय, द्वैअंगुरिनगहिलेत ॥ मनोंकोयलकीचंचुमैं, पीतअंबछबिदेत ॥ ४ ॥ नागरिपासेपरनिकी, इंहउपमादरसांनि ॥ हातरूपसरतेंमनों, लहरेंनिकसतजांनि ॥५॥ दोहा ॥ रगमगरहिचोपरिचहुल, प्रीतमरहेनिहारि॥दीपकढिगजगिमगिरही, लड़कीलीसुकुवारि॥६॥ नथलटकनिकुंडलहलनि, हारनिझुलनिनिहारि ॥ जबझुकिपासेडारही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रूपलोभपक्कोपिया, कच्चे होतहेसार ॥ त्यौंत्यौंचितवतसतरव्है, लडकीलीसुकुंवारि॥८॥वचननिरादरपेलमें, लालहिंलगतसुप्यार॥चलिरुगटीहंसकहतयों, लड़कीलीसुकुंवारि ॥ ९ ॥ दोहा ॥ समझिदावपियचूकिकैं, सारहिचलतसह्मारि॥ पकरिपिछौंहोंदेतकरि, लडकीलीसुकुंवारि॥१०॥ वेसरिबंसीपीतपट, हारदयेपियहार ॥ मनहूंलीनोंजीतिकें, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ लालचलेजुगजोरिकें, नीलपीतरंग सारि ॥ समुझिसकुचिहसिझुकिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १२ ॥ वाजीवाजीउठिचली, वाजीलगीनिविचारि ॥ हियवाजीनागरिमिली, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ हो रंगीलीबाजीलागिरहीछैनैणामैं ॥ जांणीकामकटाछांहीकादेपिदावदैंणामैं ॥ कांपेअंगअनंगरंगसुरभंगहुओवैणामें॥रसिकविहारीमनफूलवढीहुईहारजीतनैंणामें ॥ १ ॥ इतिदीपमालिकाउत्सव॥

अथ श्रीगुसांईजीको उत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ परमपुष्टिरसजलअमि

इकताल ॥ धरिदैंदीपसंवारोंजिनवाती ॥ दीपनिकीदुतिफीकीलग तहैंलुवमुखचन्दजोतिसरसाती ॥ निकसिआवदीपकमंडलतैंदीप मालिकातुहीसुहाती ॥ नागरीदासकरीन्यारीप्रियलाइलईउरमोह नघाती ॥ २ ॥ कवित्त ॥ सुन्दरसुघरस्यामराधाठकुरायनजू जोरीजगभूपनसुआनंदअगमगी ॥ तारकसीवसनजवाहिरकीजे बलसांबैठेकुरसोपैंप्रीतनौतनसगमगी ॥ जरवफ्तीसामियानैंसमैंदा नकिस्तसोजनागरअगरधूमिधूंधरिरगमगी ॥ दिपैंदीपमालछबिछूटै अग्नजंत्रजालअजबजलूसजोतिजीनतजगमगी ॥ १ ॥ कवित्त ॥ जसुदाकेफिरैंमुकतानकीबेलीसीनागरिराधेसिंगारकरें ॥ बरबेनीके भारऔहारनिकेडगपाइनकीडिगुलातधरैं ॥ अतिआननजोतिमईअं गनाभयोरूपकथाकहिकोउचरें ॥ जितजायसंवारतबातीबधूतित दीपनकीदुतिफीकीपरैं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नवकुंजकैचोकदिवारीकी रातिसुप्यारीजहांअतिसोभासची ॥ जरतारीकीसारीऔअंगजवां हिरसीसमुकैसकीषौररची ॥ इहिबांनकनागरिसंगसषीलषिलाल निकीमनसाललचीं ॥ सबपांतिन्हैंछोड़तफूलझरीतहांहोजपैंरूप कीमोजमची ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ जहांतहांदीपनकोदीपतादिपतदु नींज्योंजरीसजीवनिकेपोधालैंलगाएहैं ॥ कैंधोंदेपिदंपतिकीसंपाले बिहारचारइंद्रपारजातकेपहुपबरषाएहैं ॥ कैंधोंपुषरागनिकेनागर परेहेंओलाकैंधोंअंगअवनिसुनैंनसरसायेहैं ॥ कैंधोंनभमंडलतेंवृन्दा वनचन्दजूनंन्हेंकैंपांतिपांतिमिनछत्रछुरिआएहैं ॥४॥ या पदकी अ लापचारीमें दैने ये दोहा ॥ प्यारीपियसषियनसहित, चोपरिषेल तवैठ ॥ मनोंमदनपुरचोहटें, लगीरूपकीपैठ ॥१॥ छलाझनकचुरी

नमअभिरामदिन, वृंदाधामलसंत ॥ हरिराधाबंदततहां, मंगलकलसवसंत ॥ १ ॥ सुभकारिकवृंदाबिपिन, नवबसंतदिनआज ॥ आगममंगलगानधुनि, होतलगनकोराज ॥ २ ॥ इहिंवसंतरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि ॥ जडहूंकैंरोमांचव्है, व्यथामदनतनजागि ॥३॥ कुसमितद्रुमगहवरनिअति, रितुवसंतअभिराम ॥ छबिछाईवृंदाविपुन, मनुसरपंजरकाम ॥४॥ फूलभरेमंजुलकलस, पियप्यारीरसवंत॥नागरनितवृन्दाविपिन, मूरतवंतबसंत ॥ ॥ ५ ॥ रागहिंडोल इकताल ॥ पेलतवसंतवृजपतिकुंवार ॥ विच वृंदाविपुनविहारिचार ॥ झुकिद्रुमनवपल्लवकुसमभार ॥ उडिरजप्रसूनविचअलिगुंजार ॥ तहांसषासंगगावतधमार ॥ बाजैंमृदंगडफझांझरतार ॥ इतलियेवंदनकलसनारि ॥ मिलिदेतमधुरसुरसगारि ॥ चलैंविवधिरंगपिचकारिधारि ॥ गयेचहुंटिचीरसबतनसुढार ॥ द्रिगपलनलगतलगेसरहैंमार ॥ भयेरौंमकंपलोयननिवार ॥ रहेललितपरस्परछबिनिहार ॥ नागरनागरिनहींप्रीतपार ॥ १ ॥ तिताल ॥ कहिहोहोहोपेलतवसंतपियसंगराधेसुकुमारि ॥ गावतहिंडोलवाजतमृदंगडफझांझरतारकठतार ॥ चलतपीतपहुपनिकीपंपुरीसोभारहीनिहार॥नागरियानागरिवृन्दावनमधुरातिरंगविहार ॥ २ ॥ चौताल ॥ फूलेद्रुमबल्लीवनझूलैंअलिगंधबोलैंमदनसदनमानैंमंगलवधावनौं ॥ जहांतहांआवतधुनिगांनहिंढोलतैंसोकोकिलांनिकोयलक्कोसोरमनभांवनौं ॥ उमहींसकलबालआंईवृपभानजूकैंसीसलैंकलस [illegible] ॥ हियेहुलसंतविकसंतकुंजातियमुपनागरवसंतब[illegible] ॥ ३ ॥ तिताल ॥ अतिसुषदाईरीद्रुमनिकोयलि

त, उर्मप्रेमावेस ॥ नागरप्रगटआनंदनिधि ॥ वल्लभसुतविठले
स ॥ १ ॥ वल्लभाचारजकलपतरु, फललाग्योविठलेस ॥ याफ
लकोरसरूपहैं, गोकुलनाथव्रजेस ॥ २ ॥ धनवल्लभविठलेसधन,
धन्यसातसुतबंस ॥ भवनिस्तारनहितप्रगटि, नागरजक्तप्रसंस॥३॥
राग ॥ श्रीवल्लभाचारिजकुमारकुमदकुलनिसेस ॥ भक्तिजनप्रसं
सितश्रीमतविठलेस ॥ बिष्णुस्वामिसम्प्रदायचूरामडिचार॥नागरप्र
णमाम्यहंअंर्घ्हिकल्हार॥१॥पदचर्चरी ॥यथासमेंराग ॥ वेईगायगो
पवृन्दगोकुलमधिसन्ततसुखसंपदानिघोषमोपपगनिपेलिडारी ॥
वेईनंदवल्लभसुतभएहैंप्रगटिवल्लभग्रहसोभितदुजकुलललामधामव्र
जबिहारा ॥ वेईप्रेमपरकरनितिगोबिंदकुंभनादिसंगललितलब्धली
लारसपुष्टकोसतारी ॥ वेईदासनागरकेप्ररकमनमनसुवेसवेईविठले
सवेईगोवर्द्धनधारी ॥ १ ॥ राग ॥ प्रगटिविठलेसदिनकर
किरनससुतभक्तकुलकेवलआनन्ददयने ॥ नरनिउरनिविध्वंस
मंगलकरनकृष्णप्रतिबिंबजगमगतनयने ॥ विटपपंडनकठिनका
ठमायावादपुष्टरसबरषहींविमलबयने ॥ नागरीदासदुजराजजा
नौवेइसमेंसुरराजगिरराजलयने ॥ छप्पय ॥ धनिश्रीवल्लभवि
दितधन्यधनिकुंवरबिभूषन ॥ बिठ्ठलेससुतसातधन्यहरिअंसबंसध
न ॥ धनचौरासीभक्तजक्तहितपुरुसरूपछित ॥ धनिगोबिंदकुंभ
नादिप्रीतगिरधरनअपरमित ॥ धन्यभानभुवभागवतनागरियाहिय
तमहरन ॥ धन्यधन्यफिरधन्यहैंमहामंत्रकेवलसरन ॥ ३ ॥ इति
श्रीगुसांईजोकोउत्सव ॥

अथ वसंतोत्सव ॥

बसंत उत्सवका या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ काम ज

तनकहूहवोनहेत ॥ पालओढिसोमनुषकी, कियोमुलम्माप्रेत॥ ६॥
फागमासरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि॥जडहूकेरोमांचव्है, व्य
थामदनतनजागि ॥ ७ ॥ इहिंरितुश्रोसरफागकैं, होतलगनको
राज ॥ डफमोहनमुरलीसुनत, छुटतवधुनकोलाज ॥ ८ ॥ इहिं
होरीकेपेलकी, जगसौंउलटीरीति ॥ जीतनहींमेंहारहै, हारनहींमें
जीति ॥ ९ ॥ सुनिरींड़फबाजनलगे, सिरपरआयोफाग ॥ अब
कैंसैंदाविहैंदई, अंतरकोअनुराग ॥ १०॥ सुलगीलगनहियेनमें, जु
लगीहोरीश्राय॥ पुलगीग्रन्थबिचारकी, मीतमिलनदरसाय॥ ११॥
छिनदेपैंविनदेतदुप, लोयनपरैंजुगैल ॥ फागवावरोदिननमैं,
रूपवावरोछैल ॥ १२ ॥ ग्रहकोनैंजातनरह्यो, परतअगोनैंपाव ॥
नितहोरीकेपेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ १३ ॥ बरसानैंनन्दगांव
श्रति, उमगेदलदुहुंओर ॥ समरषेतसंकेतमैं, आजफागजुधजोर ॥
॥ १४ ॥ ढोलकिढोलमृदंगबजि, मुरलीडफसहनाय ॥ गहगड
गांनधमारधुनि, रह्योकुलाहलछाय ॥ १५ ॥ उडिगुलालआंधीप
हल, डफगरजनअभिरांम ॥ रंगधारबरसनलगी, गउरघटाश्ररु
स्यांम ॥ १६ ॥ मचीदुहुंनिमैंफागइत, राधेउतनन्दलाल ॥ जमु
नाघरगिरतरुलता, पगमृगभरेगुलाल ॥ १७ ॥ लालमईसबदेपि
यत, घुमड्योगगनगुलाल ॥ मनुदंपतिअनुरागको, डारयोब्रजप
रजाल ॥ १८ ॥ राजतधूंधगुलालमैं, भरिभरिभाजतवाल ॥ मा
नौंफूलीसांझबिच, चमकतचपलाजाल ॥ १९ ॥ दृगहीचाहत
लालकौं, तनचहडड़्योगुलाल ॥ धूंघरिमैंदुरिओछकां, भुजभ
रिलीजैंवाल ॥ २० ॥ सकैंनदृगभरिदेपिकैं, तिनकोवदनमयं

याकुहकमचाईनवबसंतरितुसरसाई ॥ छईसुवासभ्रमतमधुकरामि लिनूतमंजरनिकीडारियांकदलीकुंजगहबरिआई ॥ अंबसोरनवबा लबालललैंलालहिबहसिवंदाई ॥ पियप्यारीनागरिनागराहियफागपे लिसुधिआयछाई ॥ ४ ॥ इकताल ॥ होधुंधुंकारडफबाजततालमृ दंगझांझिमिलिबिचिमुरलीधुंनिथोरी ॥ वूकाबंदनचंदनाछिरकतकुंम कुंमरंगकेसरिलैंघोरी ॥ दिनबसंतगावतनाचततहांबनितागनिदुहुं वोरी ॥ नागरियाषेलतवृन्दावनपियघनस्यामप्रियातनगोरी ॥ ५ ॥ इकताल ॥ बनमदमातेपियप्यारीपेलतबसंतहसिहसिछकिछकिडा रिगरबांही ॥ कँवलपरागलियेकरकंवलनिकँवलबदनलपटाही ॥ परसपरआनदेतमनमाहींसषीकंजकिंजल्कनिषेलनगावतससिसर सांहीं ॥ नागरिनागरबनबिहरतफूलमनिनकीछांहींरंगभरेअंगअंग उरझांही ॥ ६ ॥ इतिबसंतसमाप्त ॥

अथ होरी उत्सव ॥

यापदकी अलापचारी मैं दैने ये दोहा ॥ कुसलनंदवृष भांनकी, तिनकेहैंजगबंद ॥ होरीडांडोआजसुभ, ओप्योवृजआ नंद ॥ १ ॥ नागरिनागरभावतैं, मंगलरूपरसाल ॥ नितमंगलवृ न्दाविपन, नित्यफागरसण्याल, ॥ २ ॥ प्यारेनाहिंप्यारेलगैं, सो फीसदाउदास ॥ इस्कश्रैंसमदिरापियें, कैफीफागुनमास ॥ ३ ॥ कियैंरंगीलेफागमैं, हियेंरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसवैं, महारं गीलीरैंन ॥ ४ ॥ फागजुरसिकनहितभयो, रसिकफागकेहेत ॥ चं दाबिननिससांवरी, निसबिनचंदासेत ॥ ५ ॥ जाकौंहोरीषेलसौं,

तिताल ॥ तैंऊवटबाटचलाईवहुतदिनअन्नक्यौंनारिनवइयां ॥ आ
ईहमवरसांनैंवारीनिकसिअरेनंदगइयां ॥ आगेआयरुहाहापायकैंप
रिसपियनिकेपइयां॥२॥ यौंकहिनागरऐंचिलयेगहिउडिगुलालनभ
छइयां॥ २ ॥ रागषट तिताल ॥ इतमतनिकसिचोथकेचंदादेपतक
लंकमोकौंलगिजायगोरे ॥ दूरितैंगुलालभरिजिनक्छुवैंछैलमोहिते
रोंस्यामरंगमेरैंलगिजायगोरे ॥ पायपरौंहाहाअवानियरैंनआवक
रनिचवावगांवलगिजायगोरे ॥ नागरनूलोभीफागस्वारथहीकोहैंमी
तमोमननिगोडोभूलिजायगोरे ॥ ३ ॥ तिताल ॥ सांवरेछैलछबीले
पिलारसौंगोरीकिसोरिजूहोरीमचावैंहोहोकहैंइततारीबजायजबैंउत
प्यारीगुलाललैंधावैं ॥ जाहिसबैंअवसांनजकोलगिकंपव्हैंलाल
हियेहहरावैं ॥ नागरिकीनअवाईथंभैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं
॥ ४ ॥ रागटोडी ॥ इकताल ॥ अरीयहकौंनहैरोनंदगांववारेनिमें
पेचहीपेचभरीबातैंगावैं ॥ ओटकियेंउतकौंडफकोइतकौंलषिकैंअंपि
यांठहरावैं ॥ सांवरेअंगकंवलसेनैंननिसैंनानिहाहाभावैं॥नागरिहोरीभ
ईतोकहाइन्हैंकोऊसपोसमुझावैं ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥
होरीयावगरमैंमाचिरहीहैंपानियांभरनिकैंसैंजाउं ॥ लाजलियेमेरीघू
घटपटसौंकिंहिंविधनिवहानिपाउं ॥ दौरिदौरिरंगभरतपरसपरतिन
सौंकहावसाउं ॥ नागरिकान्हक्छुवोमोहितोफिरिनांवधरैंसबगांउं ॥
॥ ६ ॥ तिताल ॥ छैलवहिकाहूसौंनडरैं ॥ आधीरातवृंदाबनमां
हीठोकदुपहरीकरैं ॥ आयनिकटललचायलालचीऔरहीढारढरैं ॥
नागरीदासरंगभरिभरिफिरिभुजभरिअंकभरैं ॥ ७ ॥ इकताल ॥
मोहनलयेहैंदबायलंगरहोरीकी ॥ मुरलीमालाछीनवहुरिडारीसौंज

क ॥ निजनकौंहोरीषेलमिस, अंकनिभरतनिसंक ॥ २१ ॥ कौंधि उठत्यौंदामिनी, भरतभांमिनीआय ॥ पियमनलैंकैंपलटिफिरि, मिलैंझुंडमैंआय ॥ २२ ॥ आवतमुठीगुलालकी, छबिसौंछैलब चात ॥ पैंअचूकिद्रिगलगिहियैं, बारपारभयजात ॥ २३ ॥ रोकतघूंघटओटसौं, झुरिपिचकारीधार ॥ यहैंबचावनदेषउत, बचतनहोंरिझवार ॥ २४ ॥ अजूकहाआंषैंभरो, कौनरीतिकोषेल ॥ इनबातनिरहिहैंनहीं, हमसौंतुमसौंमेलि ॥ २५ ॥ लगैंसुफिरनिकसैं नहीं, करीनभावतओटि॥होरीमैंअंषियांनकी, आंषनिहीपैंचोटि ॥ ॥ २६ ॥ आंषैंभरतगुलालसौं, यहधौंकौनसुभाय ॥ मदनमाधुरी पानमैं, अंतरपारतहाय ॥ २७ ॥ चतुराईकरिकैंदयो, पौंछनिद्रिग निगुलाल ॥ कहतचलावतउतगयो, भौंरेछूटिरुमाल ॥ २८ ॥ चलतगुलालनिझोरियां, माचीधूमधमारि ॥ फागकेलिझकझोरियां, फिरतगोरियांग्वारि ॥ २९ ॥ हारछुटतछूटतनहीं, रहे पेलिरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमानतकोय ॥ ३० ॥ नागरियागतिरीझिकी, क्यौंहूंजातकहीन ॥ दंपतिफागबिहाररसर, भयोलीनमनमीन ॥ ३१ ॥ राग भैरूं ॥ ताल चरचरी ॥ होरिषे लिषेलतजबरहेरैंनयोरी ॥ सोयेहैंरसिकलालसंगलैंकिसोरी ॥ पियरीयहजगिलगिदोऊचलेहैंरंगभीनैं ॥ सगबगेगुलालबसनअंसनि भुजदीनैं ॥ अस्तव्रिस्तअभरननगटूटेहारहीके ॥ अलकभौंहमूलरंगअधररंगफीके ॥ फागभरेलागभरेरजनीकेजागे ॥ फिरफिररस उरझतनहींसुरझतअनुरागे ॥ गउरस्यामललितअंगभुजलतांनिक सिया ॥ नागरियाहीयबसेफागुनकेरांसिया ॥ १ ॥ रागरामकली॥

पदकी अलापचारीमैं दैंने ये दोहा॥ उडिगुलालघूंधरभई, तनर ह्योलालबितांन॥ चौरिचारुनिकुंजमैं, ब्याहफागसुपदांन॥१॥ फूलनकोसिरसेहरा, फागरगमगेवेस॥भांवरहीमेंचलतदोऊ,लैंगतिसुलपसुदेस॥२॥ भीजेकेसररंगसौं, लगेअरुनपटपीत॥ डोलैंचाचरचौकमैं, गहिवहियांदोउमीत॥३॥ रच्योरंगीलीरैंनमैं, होरीकेबिचब्याह॥ बनोंविहारनरससनीं, रसिकबिहारीनाह॥४॥ आनकबिकृततिताल॥कुंजमहलमैंआजुरंगहोरीहो॥फागपेलमैंबनांबनींकीन्हैंरहीपटगठजोरीहो॥ मुदितव्हैंनारिगुलालउडावैंगावैंगारिदुहुंओरीहो॥ दूलहरासिकबिहारिसुंदरदुलहनिनवलकिसोरीहो॥ १५॥ राग धनाश्री॥ इकताल॥ मेरैंलाग्याईआवैं॥ साथरीनंदनंदनमनमोहनां॥ वृजबीथननिकुंजनिकुंजमैंआननतनद्युतिजोहनां॥ सैंननिहाहापातलालचाछीडतनहींछिनगोहनां॥ नागरनवलछैलहोरीकौंचितललचतलपिसोहनां॥ इकताल॥ फागनपेलतफागरह्योक्यौंजायरी॥सासननदडरआगैंपरतनहिंपायरी॥ अरीनंदनंदनसौंनेहसुनैंदुपकौंनरी॥ क्यौंचितवैंदिनरैंनअकेलैंभौंनरी॥ सूनौंसदननिहारिमदनपायोदावरी॥ मारतबाननिसंककरतउरघावरी॥ डफमुरलीधुनिआंनिपरतजबकांनरी॥ श्रवनरहतठहरायचलतयेप्रानरी॥ अरीनांहिंरह्यूंघरघरीवह्युरिकबफागरी॥ फिरिमोहनसौंभईद्रगनिकीलागरी॥ तोरिकैंलाजकपाटचलीगजगामिनी॥ मिलीनागरीदासमनौंघनदामिनी॥ १८॥ तिताल॥ फेरीदैंदैंबोलहींराजवैदगुनवैद॥ विरहबिथावसएकवृजबधूताहिकुटंबकोकैद॥ दोरिपोरिलैंझांकिसकतनांहिंभयेद्दिवसदसबीस॥ डफमुरलीधुनिसुनिसु

झटकिझोरीकी ॥ षैंचतझपटिपीतपटिकटिसौंदैंभाजतवैंदीरोरीकी॥
जीतीनांहिजातहैंक्यौंहूंनागरनवनागरओरीकी ॥ ८ ॥ तिताल ॥
षेलैंहोरीमनमोहनां॥ फैंटासीसकेसरीसुन्दरछूटीअलकमुषसोहनां॥
भरतरंगमनहरतफिरतलाग्योरसबसव्हैंतियगोहनां ॥ नागरिकंव
लकंवलप्रतिलपटतभंवरकंवरवृजजोहनां ॥ ९ ॥ इकताल ॥
फूटैंकरकीचुरियांमोहिहाहालंगरदैंजान ॥ होरीमैंभलीयेकरतबर
जोरीमच्योहैंकौनषेलिसुषदान ॥ तरकतकसदरकतहैंअंगियांधर
धरधरकतप्रांन॥दूरिहीतैंजुभलोपियनागरनैंनानिकोसनमांन ॥१०॥
॥ तिताल ॥ छैललंगरघनस्याममगमेरोरोकिरह्योरी ॥ उरपरडा
रिरंगपिचकारीअंचराआनिगह्योरी ॥ नैंनलगेअरुदिनहोरीकेयातैंस
वैंसह्योरी ॥ नागरियाछिनकलनपरतअवचारबिचारवह्योरी॥११॥
॥ तिताल ॥ नसहिहोंरीयाकोइतनीएलंगराई ॥ अरीयेअतिहीढीठ
हैंकान्हहमसोंकारिबरजोरीधूममचाई ॥ सबयाकीलैंलकुटीबंसीउ
रमालाछीनलेहुपिचकाई॥ अबतुमसकलसिमटिलैंलैंकरगागरिनाग
रिभरोरीकन्हाई ॥ १२ ॥ आनकविकृतरागषंभायची ॥ तिताल ॥
आजबरसानैंहेलीलागैंसुहांवणौं ॥ फागगातिगीतसुरछायोसुहायो
आजुनंदकुंवरआयोपाहुंणो ॥ उठोजीकिसोरीगोरील्योनैंगुलाल
ओलीभरहोलीअबसुषसरसांवणौं ॥ गहगडषेलधूमधूंधरअबीरमां
हींरसिकबिहारीकंठलगांवणौं ॥ १३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥
फागुणियारोघुमडिरह्योछैंष्याल॥ कुंजभूमिसोलाललालहुइहवाला
लतमाल ॥ उडिगुलालकीलालधूंधारिमैंभलकैंबैंणाभाल ॥ सषीला
लअरुलालबिहारनिरसिकबिहारीलाल ॥१४॥ आनकविकृत ॥ या

टिलटैंझुकिझूलतवेसरिकेसारिपोरिसंवारी ॥ भौंहैंकसौंहैंहंसोंहैंसेओं ठनिकैंबिचदामिनकौंधें ॥ अंचरछोडिचलैंगजज्यौंदरसैंअंगियारंग सौंधें ॥ होरीमैंरूपठगोरीभरीमुसकायकरीचितचोरी ॥ सांवरेकील गवारिबडीठगवारिहैंगवारानिगोरी ॥ फागभरीअनुरागभरीनिकसैं जबघूंघटमारी ॥ नागरियालपिलाग्योफिरैंरंगमोहनरिझवारी २३॥ आनकविकृत तिताल ॥ होराजथेछोडोजीकिशोरीजीरोछेहडो ॥ रापोरापोमनमेंचारबिचारि ॥ थेफागुणरसबावलाऐलाजभरीसुकुं वारि ॥ कांईहुवोहोलीहुवांसुणहसर्सीसोहसंसारि ॥ थेगायांकाग्वा लियाछौअरऐछैराजकुंवारि ॥ थांहरीयांहरीनहींछैंबराबरीजायपर सोदूजीनारि॥रसिकबिहारीथांरोनांवछैंकाईपेलोप्यालगंवारि॥२४॥ तिताल ॥ अणीकोईसांवलापेलनवाल ॥ सोहनांमुषसोभाजगमगि यांलागियांरंगगुलाल ॥ कर्नफूलपरफूलज्जुलफबिचहालहालकरैंहा ल ॥ नागरियामेरेआगैंअदबसौंलैंआंवदाहाथरुमाल ॥ २५ ॥ इ कताल ॥ सइयोमैंनूंकान्हबुलावें ॥ चढिकैंअपनीऊंचीअटारीनैंनौं दीसैनचलावें॥ केसरिदारंगभीनाचोलाहोरीदाछैलकहावें ॥ नागरी सासकहाकहौंरीलषिमैंडाभीजीललचावें ॥२६॥इकताल ॥ घेलिहौं नहींहोरीहौंहोरीरी ॥ लैउरसौंमसकीकसमैंससकीभरिनाकसकोरी कीनीहैबरजोरी ॥ छैलकैंहाथपरीछलसौंनहिंछूटिसकीबिचपोरी रससिंधुझकोरी ॥ बेनहोछंदभरेगुनआगरनागरहौंमतिभोरीकोअ धरारसचोरी ॥ २७ ॥ इकताल ॥ नंदकुंवरदेपिकैंकछुभीनरही ताव ॥ छूटिगयाघूंघटपटहुईबेहिजाव ॥ जोबनमदहोसहुस्नजादु हैंनिगाह ॥ लियैंपिचकारीदस्तअजबपुसअदाह ॥ इस्कबाजहोली

निकाननिपरीघुनतहैंसीस ॥ तापैंल्याईस्यामतबीवैंएकसषीहितपाइ ॥ इतउततैंअंसुवनिजलभरिभरिमिलेनैंनअकुलाइ ॥ छिनांसियरेछिनतातोतनहैंचमकिचल्योमुषस्वेद ॥ कंपतिहाथनारिकैंदेषतकोसमुझैंयहभेद ॥ ओपदकैंमिसलैंमुपदीनौंकरतैंपानउगार ॥ बहुरिकह्यौयहनीकीव्हैंहैंबतकौलगैबयार ॥ नागरियाइहिफागमैंहरिसबविधिपूरेकाम ॥ तपतबुझाईबालकोबनिनयेगुनीघनस्याम १९॥ ॥ राग काफी ॥ तिताल ॥ कोईइकजोगीरूपकियैं ॥ भौंहैंबंकछकौंहैंलोयनचलिचलिकोयनिकांनछियैं ॥ देषिस्यामतनवेषमनोहरबारबारजलबारिपियैं ॥ नागरमनमथअलषजगावतगावतबांधैबीनलियैं ॥ २० ॥ इकताल ॥ स्यामघनघेरचोनवलकिसोरीदांमिनतनदुतिगोरी ॥ करिविचारपिलवारिनारिसबदुरिसांकरीषोरी ॥ तहांगह्योचितचौरआपुनौंकरतप्रेमझकझोरी ॥ उडतगुलाललालगहवरबनधुनिसुनियतहोरीहोरी ॥ मनकौंहरनितहांअंकभरनव्हैंअधरपानकीचोरी ॥ वढिगयोरंगषेलिहोरीमैंक्यौंबरनौंमतिथोरी ॥ वृजजीवनिनंदलालनागरीचिरजीवोयहजोरी ॥ २१ ॥ तिताल ॥ नकीजियेंनजरभरिदिलइस्ककीनिगाहैं ॥ देषैंसबखेलिबीचिकूवोमतिवांहैं ॥ क्यापूंछनागुलालकारुमालकीअदाहैं ॥ नागरियानेहकीनजाहरीसलाहैं ॥ लगैंगाकलंकफेरबनैंगीनिवाहैं ॥ २२ ॥ तिताल ॥ जांनदैंतेरैंपईयांपरतहौंरेकन्हइया ॥ टुटिगयेहारछूटिगयोअंचरभीजिगईअंगियारेदइया ॥ यामगमांझनकरबरजोरीहैंगोकुलकोलोगचवइया ॥ नागरियाधननीतितिहारीधन्यषेलितूधन्यकन्हैइया ॥ २३ ॥ इकताल ॥ अंपियारंगरातीजोबनमतवारी ॥ छु

वैं ॥ १ ॥ सुनिचलीचपलजवभामिनीं ॥ हांरीअभिसारिकाका
मिनीं ॥ बिचपिलीबिमलमधुजामिनीं ॥ चलिमिलीस्यामघनदा
मिनीं ॥ अतिरसव्वरस्योहैंफागचैतामिलिगावैं ॥ २ ॥ बिचरचीरा
समंडलहोरी ॥ मिलबाहुनिबाहुलताजोरी ॥ पियस्यामसुघरराधा
गोरी ॥ गतिलैंलैंलेपतिमुखरोरी ॥ अतिरंगबढ्योरीकहतकह्योन
हिंआवैं ॥ ३ ॥ बजमृदुलमुरजटंकारतार ॥ किंकिनिनूपुरझंझं
झंकार॥ चंचलकलकुंडलअलकहार॥ छुटिछुटिअंचरगयेपुलेवार॥
मनुतियछविवेलीपवनलगैंडिगुलावैं ॥ छिरकैंकेसरकुमकुमासंग॥
चिउटेपटउघरेअंगअंग ॥ लपिसुरछिगिरचोआतुरअनंग ॥ रसरा
सफागमिलिवढ्योरंग ॥ थकितरह्योचंदनभपवनगवनबिसरावैं ॥
॥ ५ ॥ उडिगुलालवनभईघुमडानिपलटितगातिलैंलैंभरिरंगनिबढ
कामतरंगनपियसंगानि ॥ लपिगउरस्यामउरझेअंगअंगनि ॥ नैंन
निगतिभूलीवैंननिमैंनसमावैं ॥ ६ ॥ नितदंपतिसंपतिसुषसुहाग ॥
नितरासरहसिअरुनित्तफाग ॥ नितबृंदाबनआनंदबाग ॥ नितके
लकनूहलहियअनुराग ॥ नागरियनागरइहिंसुखसमैंबितावैं ॥ ७ ॥
॥ ३४ ॥ इकताल ॥ रंगहोहोहोहोरीउल्हयोफागसुपलागसंग॥
बेगआवसखीदौरिदौरिकैंदेषिअटाचढिकैंउतंग ॥ सुनियैंगानगहि
रीधुनिआवतबरसानैंकीओरआज॥ यानन्दगांवकेसांवरेऊपरगउर
घटाआईगाज ॥ हैंबिचकुंवारिकिसोरीगोरीदामिनसोद्युतिचमच
मात ॥ प्रीतपवनइतप्रेरिचलाईउमडीआवतउत्तरकौंआत ॥ नंदी
सुरतैंहैंआनिरगमगीबनउपवननिसरनिकैंकूल ॥ पीतरंगसबरंगीदे
षियतसरसौंसीरहीफूलफूल ॥ गलीगलीमैंअलीरलीसबसमध्यानें

बाजसांवलाछछंद ॥ दुदांमेइकतईपोसेबसंतीफैंटाकजबंद ॥ ति
सपैंचलैमूठउसकीसोहामस्तहाल ॥ गोयापढिपढिकैंसिरडालतागु
लाल ॥ मुझकौंकछुकियाहैंउसनैंत्रेलिवीचिआय ॥ पायपरौंहायव
हीनागरदिषलाय ॥ २८ ॥ तिताल ॥ हुस्नतमासेकाहैंअजायब
होलीकाषिलवार ॥ पिचकारीदरदस्तअजायबसजिफैंठाकजदार॥
रंगसांवलाजर्ददुपट्टाउरमरवारिदाहार ॥ हैंनागरस्यांमासाहिवकेय
हफरमांबरदार ॥ २९ ॥ इकताल ॥ दइयारेसबलोगजागैं ॥ धर
कैंहियरातनकांपैंजियडरअतिलागैं ॥ मकरचांदनीरातहैंमोहिआ
वतलाजैं ॥ सेझमोहनकीनचढौंपायलमोरीबाजैं ॥ फागरंगीलेरैं
नदईमोहिमैंनसंतावैं ॥ नागरसुन्दरस्यांमकौंअधरारसभावैं ॥३०॥
॥ इकताल ॥ रसियातेरेकारनैंनैंनानिभईहौंकनौंडी ॥ अपनैंस्वारथ
रीतिमगनतूप्रीतिरीतिअतिऔंडी ॥ तैंसोईफागनतैंसीयेवृजकीचार
चुवायानिभौंडी ॥ नागरघरघरडगरबगरमैंबजीनेहकीडौंडी ॥३१॥
॥ तिताल ॥ षेलिनजानैंनयोहोरीकोषिलवार॥ उररानौंहोंगरैंपरत
नहिंसमझतचारबिचार ॥ पुन्यबडनकैंसीष्योयहढंगयानीतकीहौंब
लिहार ॥ नागरवाघरजाहुचल्योकिनआतुरनिलजउतार ॥ ३२॥
॥ इकताल ॥ चूरियांझनकैंगोरीबाहुबहुरियां ॥ बाजूबंदफफूंदनि
फुंदवाअंगियांगडरहीगाढीमऊरियां ॥ आजारीमिलिसांवरेसोंगो
रीडारदैरीदिवरानीलहुरिया ॥ नागरियापियठाढेगरीदुरीभईजात
हैंपीरीपहुरियां ॥ ३३ ॥ तिताल ॥ तूसुंनिमोहनबैंनबजावैं ॥ मन
मोहनबैंनबजावैं ॥ रितुफागलागसरसांवहीं ॥ मुखनांवतिहारोगां
वहीं ॥ दूतीधुनिसैंनबुलांवहीं ॥ चलबेगछबीलीअबनहींभवनसुहा

लमानेहारनी ॥ लालचुरीदुहुंऔरस्यामचुरियांलियैं ॥ कंपतरोमकटयातकरनिजवकरछियैं ॥ चुनिचुनिछोटीचवारिचांपपहिरातरी ॥ कासिकसासिकसतरातसुकुचमुसकातरी ॥ थकीदीठमैंदीठबिथामनमथवढी ॥ समझितवैंयहभेदिसपींढिंगतैंकढी ॥ वलयाकरकोरीझिदैंनचितमेंठई ॥ देपिइकौंसीविरञ्चअंकमालादई ॥ भयेमगनसुषसिंधुअधररसपानमैं ॥ तनमनसुरझतनांहिरंगउरझांनमैं ॥ वोहोभांतिनिचितचोरकरतचितचोरियां ॥ लालरूपआसाक्तिभईव्रजगोरियां ॥ करतमनोरथसांचसवनिकेफागमैं ॥ नागरियानंदलालभरेअनुरागमैं ॥ ३८ ॥ राग ॥ दिठाग्वारगारिसुरमिठागावतइस्कलपेटा ॥ मदअलसौंहीनैंनसैंनदैंमारतमैंनचपेटा ॥ पियगोरीदाछैलहोरीदासुंदरअंगअंगेटा ॥ नागरीदासदिवांनीहुइयांदेषिअजवमहरेटा ॥ तिताल ॥ नैंनासोहनैंरंगपुमार ॥ दोहा—कामकेलिरसरगमगी, सवनिसजगीबिहार ॥ हमजानीमनमोहनां, तेरोहैलंगरलगवार ॥ १ ॥ आवैंआधीरातउठि, अगवारैंपिछवार ॥ तूबकंवलअलिसांवरो, रसलंपटरिझवार ॥ २ ॥ रहेतुटेहीहारउर, छुटेछबीलेवार ॥ पीककपोलनिहीरहैं, सबतनसिथिलसिंगार ॥ ३ ॥ हायपरीनूछैलकैं, नागरियासुकुंवारि ॥ तनझकझोरीसीरहैं, रंगहोरीकीयार ॥ ४ ॥ तिताल ॥ हौंजमुनाजलभरनगईतहांदुहुंदिसरीद्रुमगहवरगैल ॥ निकस्योहैंतहांआयअचानकरंगभीनौंहोरीकोछैल ॥ चलनिसकीलषिकेपगकंपतरहिजुगईतबहौंसिरनाय ॥ मदगजराजकीचाललालधुकिगहिलीयोरीअंचरमुसकाय ॥ तबघूंघटपटछूटिगयोहैंनिलजरहेनैंनामुपचाहि ॥ मींडतदुहुंनिकपोलगुलाल

कीगारिगाय ॥ रुकीडगरमहरावनमैं आनंदकुलाहलरह्यौछाय ॥ पहुंचिआयराजमंदिरमैंजसुमतिभीतारिलईगेह ॥ उडिगुलालछूटी पिचकारीबरासिपरयोअतिमेह ॥ मिलिमिलिदेतझमकिझूमकतहां बाजतचंगमुहचंगउपंग ॥ छूटतबसनहारउरटूटतिरावरिमैंमचिप रयोरंग ॥ दुरेलाललषिलयेसबनिमिलिपकरेतोरिरिकिंवार ॥ भई मनोहरभीरभुजनबिचभरिलाईअंकवारिनारि॥नंदजसोदाहसतदुरि ठाढेदेषिरहेरसरीतप्रीत॥ सुन्दरकुंवरलाडिलोनागरफगुवामैंलैंगईजी त॥इकताल॥ कहाकरौंरेकहाकरौंदइयादिनकठिनबिहाय॥ जबतैंल ग्योहैंमासफागुनआय ॥ भरननदैनंनदियापनघटपांनी ॥नाहरसी वैठीरहैंबाहरजिठांनी ॥ हौंहिएकरूपवंतवैसकिसोरी ॥ औरहुनको ऊकहागोकुलमैंगोरी ॥ बंसीडफसुनिसुनिहियोअकुलावै ॥ मेरेघ रआसपासछैलमंडरावै ॥ नागरिकुंवरआयोतोरिरिकिंवार ॥ होरीके षेलमिसिमिल्योलगवार॥३६॥ इकताल ॥होरीकेषेलमैंगुमानकैसोगु मानगुमानकीठोर ॥ कोरांनांकोरंकफागमैंजहांप्रेमकीरोर ॥ हिल गजहांनहींबिलगिमांनिबोलैंअबीरफिरिओर ॥ नागरीदासनिसंक स्यांमकौंभरहुकुंवरिदौरिदौरि ॥३६॥ इकताल ॥ दइयातैंकन्हैंइया करडारीहोंनकबानीकररे ॥ आछैहाथधोयपाछैपरयोनैंकदईतैंड ररे ॥ चुरियाफोरगढायोकंकनअंकनिभरभररे ॥ यहनागरताहोरी षेलिकीसीष्योकानैंघररे ॥ ३७ ॥ रागगौरी ॥ तिताल ॥ मानिहार निबनिस्यांमदेतफिरैंफेरियां ॥ संगलीनैंवहोरंगचुरिनकीढेरियां ॥ नैंनलगेंजिहिंगलीसुफिराफिरबोलहीं ॥ पीयवचनपहिचांनप्रियाचि तडोलहीं ॥ भईआतुरीचितरहीनसंम्हारनी ॥ भीतरलईबोलायनव

हैंदेपिफिदाहैंज्यान॥ कियाघरघरइस्कउजागरनागरस्यामसुजान॥

रागईमन ॥ इकताल ॥

इसहोरीपेलिबीचइतनीइजूतराबीक्या ॥ टुकरोकचलोदिलकौं इहांरुकतानहिक्या ॥ छूवोमतदेपतेहैंनिजरबाजलोग ॥ जाहिरजहांनबीचइश्ककरनाहैक्या ॥ आपहींगुलालसाथआतेहोक्या ॥ लिपटेहीजातेहोक्याजोयहक्यामस्तहालसाहिबहोतुमकौंनहीनंग ॥ नागरपियारेजानदेपोइतनाभीक्या ॥ ४६ ॥ रागअडानौ ॥ इकताल ॥ गांसगंसीलियेबातैंछिपाइयेइस्कनगाईयेगाईयेहोलियां ॥ गैंदवहानैंनबीराचलाइयैं ॥ सूघैंगुलालचलाइयैंझोलियां ॥ लोगबुरेचतुरेलपियांवैगेदावैरहोदिलप्रीतकलोलियां ॥ पांयपरौंजिनडरोपियनागरहायकरोमतिबोलियांठोलिया ॥ ४७ ॥ तिताल ॥ भरिभाजतइहिंओरसबनिमिलिगहिलीनौंचितचोर ॥ उरझिगयोपियबाहुलतनबिचपरेप्रेमझकझोर ॥ अपअपनौंमनभायोकरलईपिचकारीकरनमरोर ॥ नगरियालैंआईप्यारीढिगबांधिपीतपटछोर ॥ ४८ ॥ इकताल ॥ जाताकितैंकतरायैंलालरंगहोरीहैं ॥ व्हैंरहेयाबृजबीचदुवहियांआईनवलकिशोरीहैं॥ठाढेरहोअवबचैबहुतदिनकहाचाचरमैंचोरीहैं ॥ नागरछैलछछंदछलीतुमभैंकरियेसोथोरीहैं ॥४९॥ रागबिहागरोइकताल ॥ रंगहोहोहोहोरीषेलैंलाडिलीवृषभानकी ॥ दामिनअंगरूपअमिरामिनिस्वांमिनितियरसषानकी ॥ माससमायसुंदराकानिसमुषप्रथमपेलिआरंभहैं ॥ होरीडांडोरुप्योग्वैंरवैंमनौंमदनरनपंभहैं ॥ बाजतडफदुंदभिसहनाईगोमुपआनकभेर ॥ सरसानौंफागसुखऔसरबरसांनौंतिहिंबेर॥नवसतअंगसिंगारसाजिजेरंगभरी

निआयोअतिडरमदनउमाहि ॥ लईभुजनिकैंबीचसषीकसिकंपत सीतासिथिलभयोगात ॥ धीरजहरीहरयोमनमेरोकहाकहौंओरला जकीवात ॥ गुरजनलईकछुवातिजांनिअवनिकसनदेतभवनकैंवा र॥ अतिव्याकुलजियमरतमसोसनिसुनिसुनिमुरलीडफधुंकार॥ ला जसौंकाजसरयोनाहिंमेरोस्यांमअंगव्हैहौंवनमाल ॥ जिहिंतिहिंवि धिलैंचलिनागरियाजहांहोरीपेलतनंदलाल ॥ ४२ ॥ तिताल ॥ प नियांनजाउंरींआगैंमचिरह्योष्यालरी ॥ वीचवटपारोठाढोमदनगु पालरी ॥ तैसेईउपाधीहैंरीनिलजसंगुवालरी ॥ हाथनिमैंपिचकारी फैंटनिगुलालरी ॥ वहिदेषिआवैंछैलामदगजचालरी ॥ अवकित जाऊंरीदइयाडुरिइहिंकालरी॥नागरियाकंपैंपगहोतहैंविहालरी ॥ मे रोरूपभयोमेरेजियकोजंजालरी ॥ ४३ ॥ इकताल ॥ सुंदरसांवरी कोउआइहैनइनियांआज ॥ वैंदीदियेंजरायकीहैंलियेंद्रगनिमैंला ज ॥ घूंघटझीनौंचीरकोपहिरैंहारहमेलि ॥ अंगजोतिजगमगरही मानूंरचीनीलमानिवेलि ॥ झवामहावरउबटनौंलियैंधरतमंदगतिपां व ॥ रूपअचंभोव्हैरह्योवाकैंकौतुकलाग्योगांव ॥ समझिनैंनकीसैं नमैंघरलईविसाषाबोलि ॥ नायननायोसीसपायनिकौंकह्योभेदस वखोलि ॥ लैंआईजवनिकटकुंवरिरहीनिरषिरूपअभिरांम ॥ ना गरियाढिगबसीमहलमैंपूरेमनकेकाम ॥ ४४ ॥ इकताल ॥ अरीदे षियेमुरलीवालाप्रानजान ॥ फैंटाजरदअमैंठातिसपरतुररानाफरवां न ॥ जुलफकेपैंचपरेलषिआंननपांनचवांन ॥ भौंहैंकसौंहैंचस्मछ कौहैंमारतहैंमुसकान ॥ दिलकूंभावतगैंदचलावतगावतहोरीतांन ॥ ढोरीलगीदिलदोरीभईमनमोहनपरकुरवान ॥ होयसदाहैंअंगअदा

मैंप्यारीकरनफूलपायेलालकीअलकमैं ॥ ५२ ॥ तिताल ॥ चलें मिलिभावतेरसऐंन ॥ पेलिभागभुजअंसमेलिदोऊमत्तद्विरदगतिगैंन ॥ सोहतबसनगुलालसगमगेअरुआलसवसनैंन ॥ नागरीदासदोऊनमिलिकीनोंनवनिकुंजसुषसैंन ॥ ५३॥ रागपरज ॥ इकताल ॥ आज्जुहोरीषेलतसांवरो ॥ पिचकारनिधारनिबूकाबंदनउड़िछायरह्योनंदगांवरो ॥ निरषिमदनजोरीरंगवोरीआयागिरचोतनतावरो ॥ नागरीदासचतुरहसिढारतचितवनिमेंउरझांवरो ॥ ५४ ॥ तिताल ॥ होरीषेलैंमोहनीमोहनसंग ॥ धांवनिभरनियचावनिरीरह्योचाचरमेंमचिरंग ॥ वीननिपरनिप्रवीनामिलावैंनूपुरमधुरमृदंग ॥ गावतगारिधमारिनारिनवनित्ततस्यांमसुधंग ॥ रंगभरेलपटातभुजनिबिचरुकतनप्रेमउमंग ॥ नागरीदासभईअंपियनिकीनिरषिनिरषिगतिपंग ॥ ५४ ॥ तिताल ॥ रंगीलीगलिनबिचहोहोहोरी ॥ इतनंदनंदनरसिकलाडिलेउतवृषभानकिसोरी ॥ उड़तगुलालकछूनहिंसूझतझकझोराझकझोरी ॥ नागरीदासपरसपरढारतभरभरकनककमोरी ॥ ५५ ॥ इकताल ॥ गलेबिचइस्कपयाजंजाल ॥ क्यौंमैंगईदिवानीपेपनिनंदनंदनदाप्याल ॥ मुहगुलालपूछणनूंमेरेलायारिंदरुमाल ॥ नागरीदासहुईउसाछिणतैंसबसुषदीहटनाल ॥ ५६ ॥ तिताल ॥ अरीवृजमंडलपरमसुहावनौंइहांसदासहजरसरीत ॥ नंदगांववरसानैंकीअबवोहोविधिबाढ़तप्रीत ॥ उतैंकुंवरनंदरायकोइतश्रीवृषभानकुमारि ॥ लगनलाजउरझैंहैंदोउनाहिसकतानिरवारि ॥ गनतरहतादिनफागकेयहआयोसोफाग ॥ ठौरठौरडफबाजहीअबदवतनहीअनुराग ॥ आज्जुपेलिआरंभहैंउमग्योहियैंहुलास ॥ येइतउ

षिलवारीहो॥ अपअपनैंभवननितेंनिकसीबिचवृषभांनिकुंवारिहो ॥
कुंवरिकिशोरीजूकीसोभालषिसबहीतृणतोरैं ॥ सूरजमुषीझुकिजा
तफिरकंवलमनौंचौंरढोरैं॥ वाबाओकीरतिजूताछिनवारेरतनअमोल
हैं ॥ षेलनचलीराजमन्दिरतेंकुण्डलहारसलोलहैं ॥ देषीप्रियाजबै
आवतउतमनमोहनअतिसुषबनैं ॥ सावधानभयेगोपसिमटिसबबा
जिउठेबाजेघनैं ॥ दुहुंदिसिआरिघमारिनकोसुरमिलिमंडपगयोछा
यकैं ॥ शिवसमाधिछुटिगईश्रवनिसुनिमुनिमनरहेलुभायकैं ॥ उत
नंदनंदनरसिकसिरोमनिइतराधाअभिरामिनी ॥ उडतअबीरगुला
लगगनचढिभईदिवसतेंजामिनी ॥ वृजनारीपिचकारीधारादैरोकी
अंचरपांनकैं॥ मुरिमुरिभरनिबचावनिछबिसौंकोकारिसकैंबषानकैं॥
रूपलालचीलालबालकौंभरतहैंनियरैंआयकैं ॥ गहिलीनैंघनस्यां
मसबनिमिलिदामिनीसीलपटायकैं ॥ अंगपरासिमैंरंगबढ्योदोउप
रिरंभनिउरझानैं ॥ नागरियाजबफिरीजोतिकैंबजतचलेसहदानैं ॥
॥ ५० ॥ तिताल ॥ रंगहोहोहोहोरीमची ॥ अगनितछुटतकरनपि
चकारीदुहुंदिशिचमकतरतनषची ॥ लालगुलाललयोमुखमोडानि
मृगनैननिकीभौंहनची ॥ लिपटिगईघनस्यामलालसौंचमकिचम
किचपलाललची ॥ दुरतगहतफिरकरतमनोरथदंपतिअंषियांपोक
रची॥नागरीदासमिलनिझकझोरनिहोहाबोलनिकोउनवची ॥५१॥
इकताल ॥ होरीषेलिठाढेदोऊकेसरिकीकिचबीचमोतीबेशुमारपरे
हारानिरलकमैं ॥ रंगनिबसनिभीजेअंगनिलपटिरहेसरकेसिंगारदे
षिविसरीपलकमैं ॥ स्यामाकेसह्मारतहैंनागरियाभूषनकौंत्यौंहीस
षीस्यामकीसुआनन्दललकमैं ॥ लालनकेबेसुरीसुपाईप्यारीबेसरि

वैव्रजनारिगारिगाहिमहिभरिभईउमग्योहुलास ॥ होरीकोत्योंहार फिरिमिल्योसमधानौंतामेंआनंदकुलाहलव्हैवीचरानिबास ॥ नंद कोकुंवरवृषभानगोदलियैंबैठेलीयेनन्दवृषभानकीकुमारि ॥ दुहुनि केहाथदैंगुलालहिपिलायेजवनागरियाबहुतनिदीनैंप्रांनवारि ॥६०॥ आनकात्रिकृत ॥ तिताल ॥ रह्योरंगहोलीसरसाय ॥ एकणादिसि प्यारीहुईहुवाएकणादिसपियआय ॥ गावैसपीसुहावणीसाथेरुंजमु रजसोहैंसाज ॥ कुंजसदनरेंआंगणैंरह्योमदनझुझाउवाज ॥ फागु णासमेंसुहावणौपेलैंनवलरंगीलापेल ॥ उडिगुलालघुमडीघणौंवहि चलीधरणिरंगरेल ॥ लूंमझूमिलपटाइयादोन्योंसुषमांडणरैंप्याल ॥ रसिकविहारनिलाडिलीपियरसिकबिहारीलाल ॥ ६१ ॥ राग सोरठ ॥ कान्हानिलजगारिजिनदैंरे ॥ हौंहारीहाहाअबतोसोंनैं कलाजमुपलैंरे ॥ अबयाबगरभूलिनहिंऐहौंसौंहबबाकीहैंरे ॥ नाग रियानवबधूविगोईहोरीमांझसबैंरे ॥ ६२ ॥ इकताल हौंपियनैंननि कीनीवोरीकहाकहौंकलनपरतदिनरातियां ॥ सोवतजागतचलतफि रतअबमोहितलफतहीवीनताछिनछिनलगीइहिंमुपकीढोरी ॥ इननैं ननिकैंहाथबिकानीदेपनिकौंउठिदोरी ॥ नागरियाघरबरजितर जिरहीहौंनरहीजियलरजिडारीतुमहेरीमैंरूपठगोरी ॥ ६३ ॥ इकताल ॥ मोहनवारीत्रसिकीजैं ॥ हसिलीजैंहोरीमेंहोहारिऐसीगा रिक्योंदीजैं ॥ हाहापायपरतहैंप्रीतममोजियलाजनभीजैं ॥ नागर नवलबिहारीप्यारेजोचाहैसोलीजैं ॥ ६४ ॥ तिताल ॥ प्यारीजूकेपुलिगयेसौंधैंभनिंवार ॥ देषिसषीयहरीतअनोषी बंधिगयोमनरिझवार ॥ झूलिरह्योवैनाक्रीबाढिगटूटिरहेउरहार ॥

ततैं आयेदोऊबिचसंकेतनिवास ॥ गांनरंगगहगडमच्योबृजहोकु
लाहलछाय ॥ उड़तअबीरगुलालसौंनभदिनमनिनहिंदरसाय ॥ छै
लछलीछिपसांवरोफिरचल्योप्रियाभरिभाजि ॥ तबजुवतनिमिलि
गहिलयोइतउठीढुंदुभीवाजि॥ शोकिदियेबिचकुंजकैंरहीढिगश्यामा
मीति ॥ नागरियाइहिबिधिरहोनितबरसानेंकीजीति ॥ ५७ ॥ ति
ताल ॥ रगमगेबसनगुलालरंगदोउछबिसौंलगिलपटायपरे ॥ प्रति
बिंबिततनमौंजह्वोजपरछुटतफंवारेरंगभरे ॥ कुंजमहलरसफागमनौं
हररूपरीझिभीजिउधरे ॥ नागरिनागरबदनचंदमैंद्रगचकोरफिरि
फिरिनटरे ॥ ५८ ॥ इकताल ॥ दुहुंनिमैंआजुरहसिरसफाग ॥ ता
लतांनबंधांनगांनधुनिपरजगरजिरह्योराग ॥ बीनरबाबमृदंगमुरज
मिलिचल्योझमकिझंकार ॥ सषिनसहितदंपतिगतिलैंलैंचलिछोड
तपिचकार ॥ दुहूंघातैंआवनिउलटनिकीछबिबरनीनहिंआवैं ॥ अ
लबेलीसहचरिचाचरमैंचहचरिचहूलमचावैं ॥ नूपुरनादसुनतबिथ
कितरहेकोकिलमधुपमराल ॥ उड़तगुलालगगनआंगनसबहरित
कुंजमईलाल ॥ हुईअरुनसगबगेबसनतनरगमगेनेहनबीनैं ॥ लटप
टायलपटानैंतिंहिंछिनगउरश्यामरंगभीनैं ॥ सिथलअलकटूटीउर
मालागरबहियांमुसकातेनागरियाहियबसेमहलमैंहोरीकेमदमाते ॥
रागपंभायची तिताल ॥ आजुफागसुपसरसांनौंबरसांनौंशोभादेत॥
आयेश्रीवृषभानजूकेंगोपराज ॥ सुंदरसिंगारेसबबीचबलरामश्या
मसोहैंसंगरंगभरचोकुंवरसमाज ॥ कीरतिजशोदामिलिजारिनमैं
झांकैंझूमिमिलेबृजराजादोउउरलपटान ॥ होतरसरीतिनकेबिवि
धिबिनोदतहांघनघनबरषैंमईद्रवादावृषभान॥ ठैंरठौरबाजैंडफगा

टपीतपैंचिलीनौं ॥ वनमालाकौंउतारतवनमालहोतप्यारी ॥ यह छबिनागरियाटरैंनाजियसौंटारी ॥ ६७ ॥ आनकाबिक्रुत ॥ तिताल ॥ बिचवृजनारयांरैंझुंडराधारूपहैंरूडो ॥ ग्रीवझुकायांझूमकनाचैंसीसकेसांरोजूडो॥ केसरिरंगभीजीसाडीमैंझलकरह्योछैंचूडो॥ देपिछक्यापियरसिकविहारीरह्याधीरघरकूडो ॥ ६८ ॥ इकताल॥ वृजफागुनआजसुहायो ॥ आनंदरूपधरिआयो ॥ हुल्लासहियेनसमावैं ॥ नटनागरिधमारगावैं ॥ इतवधूवृंदसुपरासी ॥ उतरंगभरे वृजवासी ॥ दोहा ॥ वृजवासीरहेरंगभरि, मोहनकैंअनुराग ॥ जुवतिजुत्थसनमुपचले, मुदितमचावतफाग ॥१॥ मुदितव्हैंफागमचावें ॥ डफकुंजगुंजारितआवें ॥ भीनैंरंगसौंभातिभलीहैं ॥ मनुकामकीफौजचलीहैं ॥ सबकरतकतूहलग्वाला ॥ माधिनायकनंदकेलाला ॥ २ ॥ दोहा ॥ माधिनायकनंदलालउत, इतराधेसुकुवारि॥ संगछिपाकरिकैंमनौं, उडगनिसबवृजनारि॥उडगनसबवृजनारी॥ उमडीआवैंगावतगारी ॥ मुपतैंकछूघूंघटटारे ॥ सोहैंसुंदरश्यामनिहारे ॥ चलीअछनिअलच्छकटाछैं ॥ मांच्योनैंनपेलिअतिआछैं ॥ दोहा ॥ नैंनपेलिआछैंमच्यो, दुहुंदिशिचतुरपिलार ॥ रहेजुइतउतरीझिकैं, गउरश्यामरिझवार ॥ ३ ॥ रिझवारश्यामअरुगोरी, महामचीपरस्परहोरी ॥ पिचकारिनकोझरलायो, घनसांवनसौंदरसायो ॥ भयोउडिगुलालअंधियारो ॥ विचझलकतलालटिपारो॥ दोहा ॥ लालटिपारोझलकहीं, घूंघरिमांझगुलाल ॥ तिहिंसुधधावतभरनमन, हरनतरुनवृजबाल ॥४॥ मनहरानितरुनिवृजबाला॥ मनुपेलतिदामिनमाला ॥ इकभरतअंकघनश्यामैं॥इकपेचतमुक्ता

नागरियायहछविहियेंबसिबिचमनमथरंगाविहार ॥ ६५ ॥
इकताल॥ बोलैंरंगहोरीहोरीहोरीडोलैंरसमत्तगोपवृंद॥ तामाधिमाधि
नायकवृजचंदनंदनंद ॥ निकसतजहांजहांहोजकेसरिकीकीच ॥
करतहैंकुलाहलवृजवीथिनकैंबीच ॥ भरतहैंनिसंकजायतोरिकैंकि
वार ॥ छांडतमनभायोकरिफागमअग्वार॥ सुनिसुनिडफदुंदुभिबि
चमुरलिकारसाल ॥ झुंडनिमिलिझूंमिझूंमिआईवृजबाल ॥ गाइ
उठिगारिगरजिरूपकीघटा ॥ उडिगुलालदुहुंओरअटिगईअटा ॥२
होताबिबिधषेलिबढ्योसिंधुरसहिलोर ॥ गिरिगिरितहांपरतगलिन
मांझहारडोर ॥ नीकैंनाहिंसकतलषिजिनकेमुषमयंक॥ तिनकौंला
लधूंधिरमैंनिसंकभरतअंक ॥ ३॥ छूटिछूटिअंचारिगयेपूटपूटबार॥
हारटूटपगनिपरतमानतनहींहार ॥ राधेसैंनपायसिमाटिधाईसवबा
ल ॥ कहिहोहोहोरिहोरीपकरेनंदलाल ॥ ४ ॥ पैंचतइकाकिंकिनी
कटिफिरतसंगसंग ॥ रोरिलपटातएकलपटतअंगअंग ॥ गउररुयां
मउरझनिछबिबढ्यौरंगरंग ॥ नागरियानिरषिनैंनभयेपंगपंग ॥५॥
॥ ६६ ॥ इकताल ॥ रसफागआजुबाजेंडफदुंदभिसहनाई ॥ कल
गारनिधमारनिधुंनिगानरंगछाई ॥ सबषेलनिकोउल्हयेउतकंठतम
ननैंनां ॥ वोहोसाजिकैंचलीहैंमानौंअनंगसैंना ॥ उतमोहनारंगी
लोइतराधेरंगवोरी॥ वृजवांथनिपरसपरमांचीहैंरंगहोरी॥पिचकारीरं
गधारावोहोछूटतसुहाई॥घुंमडिगुलालधूंधरिकछुदेतनादिषाई॥ भरि
भाजतपकारिलैंसिरनावतकमोरी॥दुहूंओरव्हैंरहीहैंझकझोराझकझो
री॥पटअंचरउसारिगेउरहारडोरटूटे ॥ झुकिझूलतहैंवैंनाबरवारपी
ठछूटे ॥ तियदामिनीनघेरचोघनस्यांमरंगभीनैं॥कोऊलैंगईहैवंसीप

लापनिहूकीभीरलगिरहीमनलोचनपरसांनेपै ॥ जानागरपरयहव्रृजअटक्योसोअटक्योबरसानेपैं ॥ आंनकविकृत ॥ रागनाइकी ॥ तिताल ॥ होहोहोरीकहिबोलैंसबवृजकीनारि ॥ नंदगांवबरसांनेषेलमैंगावतइतउतरसकीगारि ॥ उड़तगुलालअरुनभयोअंबरचलतरंगपिचकारकीधारि ॥ रसिकविहारीभानदुलारीमाघिनायकदोऊमिलारि ॥ ७२ ॥ आनकविकृत ॥ इकताल ॥ एजुनीकैंतुमजाहुचलेजिनभरोमेरीसारी ॥ सुंनिस्यांमसुंनिस्यांमसोहैंतिहारीयाहीबेरछिनायलैंहुकरतैंपिचकारी ॥ अवकछुमोपैंसुन्यौंचाहतहोगारी ॥ घरमैंईसींपेढंगरसिकविहारी ॥ ७३ ॥ तिताल ॥ क्यौंसतरानैंहोरीहैंजूसुकुंवार ॥ गरैंपरैंबिनन्यारोरहौंक्यौंतिहारेहियकोहार ॥ पंडितमदनदयोमोकोंयहफागुनमंत्रबिचार ॥गारतिहारीप्यारीप्यारीलागतहैएनागरियाइहिंबार ॥७४॥ रागनाइकी इकताल ॥ सांवरोपेलअटपटोपेलैं ॥ कौंपेलैंवाकेंसंगसजनीबरवटधीटभुजनभरिझेलैं॥ मोहीसौंकछुवैरपरयौतकिपिचकारीउरबिचपेलैं ॥ नागरीदासलाजहौंभीजौंवडडेनैंननैंनसौंमेलैं ॥ ७५ ॥ आनकविकृत ॥ घासाचाकररहस्यांजीम्हेराजराचाकररहस्यांराजकुंवरकिसोरीजी ॥ फूलविछाताजास्यांआगैंलियांपीतपटझोरीजी ॥ सूरजमुषीहाथलियांफिरस्यांछांहिकियांमुखगोरीजी ॥ रसिकविहारीरह्याटहलमैंहोसीरंगरलीभारेहोरीजी ॥ ७६ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ भीजैंझारीचूनरीहोनन्दलाल ॥ मतिनापौंकेसरिपिचकारीहाहामदनगुपाल ॥ भीजबसनउघडयासीअंगअंगकौणनिलजयहष्याल॥रसिकविहारीछैलनिडरथेमानैतोजंजाल ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ मतिटोकोरोकोमती,

दामैं ॥ इकपौंछतिहैंमुपपानन ॥ इकलेतउगारहिंआनन ॥ दोहा॥ आंननलेतउगारइक, घायलबांननभैंन॥ इतउतदोऊरसपगे, पगेनैंन बिचनैंन ॥ ५ ॥ पगेनैंनबिचनैंना ॥ रंगकह्योपरतनाहिंबैंना ॥ टूटे हारडोरमनिमाला ॥ छूटेछबीलेबारबिसाला ॥ फूटिचुरियानीवी पुटीसी ॥ठाढीमैंनकीसैनलुटीसी॥दोहा॥ लुटीमैंनकीसैंनसी, थकीषे लिरसफाग ॥ जीतिलालकोंलैंचली, भरीमहाअनुराग ॥ ६ ॥ अनु रागभरीरंगमाहीं ॥ दईगउरस्यामगरबांहीं ॥ सौंहैंफागपेलिगठजो री ॥ मनमोहनसंगकिसोरी ॥ आयेकामकेकुंजनिवासनि ॥ सुप दीनोंनागरीदासनि ॥ ७ ॥ आलकविक्कत ॥ राग ॥ मनमोहनसो हनस्यांमनंदढटोनांरी ॥ बिनदेषेपलकलनपरतहैंमेरोजीबलगोनां री॥होरीमैंमोपैंठगोरीसीडारीहोंरिझईरीझिरिझोनांरी॥पेलौंगीमिलि रसिकाबिहारीसौंबाबिनषेलअलोनांरी ॥ ६६ ॥ रागधनाश्री ॥इ कताल ॥ तूहीकहकैंसैंकरूंमेरोरूपदुराऊंकिहिंभांतरी ॥ घूंघटमैं नाहिंदवतनिगोडीमेरेगउरबदनकीकांतरी ॥ निकसनसकौंभौंन तेंबाहरकौंनबन्यौंयहजोगरी॥हौंसुन्दरअरुयाब्रजकेहैंरूपबावरोलो गरी ॥ मोहनकुंवरलग्योंहैंआतुरअधिकअधीररी ॥ मोहिरूपील षिनारिनायरहीजातनैंनभरिनीररी ॥ बिनक्षोरीयहगातिजासौंकैंसैं रहूंवचायरी॥अबनागरडफफागझुझाऊमेरोसिरपरवाजेआयरी७० राग ॥ मोहिहोरीषेलनदेनंदबारेसौं ॥ छांड़िछांडिबहियांनंनदीय हउधमदेतसांवरेसौं॥ लैलांवनकासिलागवंसगहिपेदआउगोद्वारेसौं॥ नागरियेअबतोटारिदानाहिंफागुनरंगअपारेसौं ॥ ७१ ॥ राग ॥ सब कोहैंचोटनिसांनेपैं ॥ नैंनांबांनछुटैंचहुघांतैंचंद्रिकाबहरकवांनेपैं ॥

फिरतप्रेमझकझोरी ॥ ८१ ॥ बादणो ॥ प्रथमबोजनैंननिवयेसु
सकनिअंकुरजागेरी ॥ नेहबेलिरहीफूलकैंभरहोरीफललागेरी ॥
पेलोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ १ ॥ प्रगटहोनलगियारयांव्रजफागअ
मलसरसानौंजू ॥ नागरियाउरझेनंदीसरसुबसवसोवरसानौंजू ॥
पेलोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ २ ॥ वरसानैंनंदगांवमैंफागपेलव्हैंगर
वारीजीतिरहीवृजनागरीहारेहरिभरिवाभरवारी ॥ ३ ॥ ८२ ॥ पे
लोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ अथ होरी ॥ राग ॥ आजुपेलतहोरी
सांवरो ॥ पिचकारनिधारनिबूकाउठिछारझोनंदगांवरो ॥ १ ॥ नि
रपिमदनजोरीरंगबोरी ॥ आयगिरचोतनतांवरो ॥ नागरीदासचतु
रहसिडारतचितवनिमैंउरझावरो ॥ २ ॥ राग ॥ होरीषेलेमोहनी
मोहनसंग ॥ धावनिभरनबचावनरीरहोचाचरिमैंमचिरंग ॥ १ ॥
बीनानिपरनप्रबीनमिलावैंनूपुरमधुरमृदंग ॥ गावतगारिधमारिनारि
नर्ततश्यामसुधंग ॥ २ ॥ रंगभरेलपटातभुजनबिचरुकतनप्रेमउ
मंग ॥ नागरीदासभईअंपियनकीनिरषिनिरषिगतिपंग ॥ ३ ॥
॥ राग ॥ रंगमोहनकेअनुरागी ॥ लोचनकहादुरावतहेलीनवलरैं
नमिलिजागी ॥ झलकतउरआनंदरंगतुवअंगअंगरसपागी॥याहोरी
मैंनागरियादृगप्रीतश्यामसौंलागी ॥ ३ ॥ राग इमन ॥ मुरवारी
वेसरिकान्हसुधारी ॥ नैंनमिलायसकुचिउरझावतउरझेबालविहा
री ॥ उरझिगयेबनमालपीतांकिंकनिउरझीसारी ॥ नागरीदासफा
गमेंउरझेहियउरझेपियप्यारी ॥ इतिश्रीहोरीउत्सव ॥

अथ फूलरचना ॥

॥ दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ दंपति

चलाजाहुइणगैल ॥ रंगभरोमतिभांवता, मतिजीमतिपियछैल॥१॥ मनहांमैंएरहणद्यो, इसाअटपटाफैल ॥ रंगलग्योछिपसीनहीं, मति जीमतिपियछैल ॥ २ ॥ चुगलचवाईगांवयो, बुरालोगअणपेल ॥ कांईपेलोष्यालए, मतिजीमतिपियछैल ॥ ३ ॥ रसिकविहारीण्या लए, सीष्याभलाअडैल ॥ पगांपडांछांहाथजी, मतिजीमतिपि यछैल ॥ ४ ॥ राग ॥ कन्हैयामाईआंपिनहोरीमचावैं ॥ अंषियन मैंअनुरागअरुनईअंषियनिरंगरचावैं ॥ अंषियनमैंललचायलालची अंषियनमैंललचावैं ॥ नागरीदासपैठअंषियनिमैंफिरअंषियन तरसावैं ॥ ७८ ॥ राग झंझोटी ॥ राग झुरमटरा ॥ अनी हाहोनंदमहरदानागरमैंनरंगभैरवरबटरा ॥ क्योंकरपनींयांजा उंसजनीराहठाढोपनघटरा ॥ हाहाकरतभरतजूवतनकौंरसिकबिहा रीनटरा ॥ आन कबिकृत ॥ रागकाफी ॥ कैसैंजलजाउमैंपनघ टजाऊं ॥ होरीपेलतनन्दलाडिलोरीक्योंकरनिवहनपाऊं ॥ वेतोनि लजफागमदमातेहौंकुलबधूकहाऊं ॥ जोछुवैंअंचररसिकबिहारीतो हुंधरतीफारसमाऊं ॥ ७ ॥ रागकाफी ॥ आन कबिकृत ॥ मनमो हनमेरीआंगियांरंगडारीरे ॥ याहोरीमैंलाजरहैक्यूंसासननणंदडरभा रीरे ॥ तुमतोछैलगैलनितरोकोहोंआउंसंगनारीरे ॥ काहेनिडरधीट बटपारेहुवारसिकबिहारीरे ॥ ८० ॥ तिताल ॥ हरिसौंअटकीग्वार निगोरीलगिरहीरूपसुरतचितडोरी ॥ मदमोकलगजज्यौंगोकुलमैं कुलसंकुलगहितोरी ॥ बिनदधिहींदाधिबेचतबीथनिकछुसुधिरहीन थोरी ॥ बिरहबिबसजानीनगईकहूंसिरतैंगिरतकमोरी ॥ नागरिया कौंतिकसबलागीवालकबैसाकिसोरी ॥ पुलिगयेबारसुधिनअंचरकी

हंसखुहलाईफिरिमदनदुहाईहोइरहेआरातिगउरश्यामगातरी ॥ फूलनिसफलकरीनागरियाआजुझोभईपरमसलौनीयहरातरी. ॥ १ ॥ राग पंभायची ॥ ताल जात्रा ॥ सपीदेपिनवकुंजछविपुंजकुसमितमहाकरतअलिगुंजमनुरुंजबाजैं ॥ जौन्हजगमगतसुमनबासरगमगतहांमदनडरडगमगतलाजमाजैं ॥ कमलसयनीयपरकमलनयनीकमलनैंनचैंनीरिंगेरंगरैंनी ॥ लालकीअलकपरबालफूलहिधरचोफूलसौंलालरचोबालबैंनी ॥ हारपियकरतमनुहारकरहारटूटैंबिथुरबारछूटैं ॥ सुरतसुपसुभटदोऊलिपटहींनिपटद्रढकंचुकीपटकपटग्रंथपूटें ॥ गउरसांवरअंगसंगअतिरंगभुवभंगक्रगद्रगनिमैंपंगकीनैं ॥ मंदचलतानिमैंदामिनीरदनद्युतिछबिसदनवदनरसभीनैं ॥ मधुरमधुअधररसरसनारसतहसतमुखहसततांबोलदैंहीं ॥ बंधेभुजपाससुभवासपुलकतअंगनागरीदाससुखरासलैंहीं ॥ १ ॥ राग केदारो ॥ तिताल ॥ फूलभरेपियप्यारीफूलनिसौंपेलिहीं ॥ फूलनिकेहारझूलतझवाफूलनिकेफूलनिचलायझ्रकिझेलिहीं ॥ फूलीहैंजुन्हइयाकूंजफूलकेबिछौनातहांदोऊचढेआनन्दअलेलिहीं ॥ नागरियासपीसबफूलभरीआंपिनिमैंफूलनिकीकेलिहिसकेलिहीं ॥ १ ॥ इकताल ॥ महकिरहीफूलनिकीनवलनिकुंजसुबास ॥ फूलनिकीरचनालपिन्हैंजहांमहकिकामहुलास॥फूलनिकेभूपनदंपतितनचंद्रिकारहीप्रकास ॥नागरियागावतकेदारोतहांसपीसुघरआसपास ॥ राग अडानो ॥ ॥ इकताल ॥ एकगुलाबकेफूलनिकीपंपुरीबिपुरीसुपसेझझकोरैं ॥ एकहीमालागुलाबकेफूलकीझूलिरहीतनसांवरेगोरैं ॥ एकगुलाबकोसीसीलसीकररंगसौंअंगसुढारनिढोरैं ॥ एकगुलाबकेफूलकौंना।

हितवृंदाविपिन, धारेअगनितनैंन ॥ १ ॥ रंगरंगभूषनफूलके, रहे फूलतनझूल ॥ अंतरकीबाहिरमनौं ॥ प्रगटीअंगअंगफूल॥२॥बनफूल्योफूल्योझमन, फूलवेसअभिराम ॥ सवैंकरीफूलनिसफल ॥ मिलिकैंगौरीस्याम ॥ ३ ॥ फूलेफूलेलसतहैं, दोउदियेगरबांह ॥ लषिफूलीनागरसषी, फूलीकुंजनिमांह ॥ ४ ॥ पद राग विहागरो ॥ ताल चपक ॥ फूलेवहोफूलनिसौंवृन्दावनसोभादेत ॥ तामैंफूलीराकानिसअतिछविछाईहै ॥ कुंजकुंजफूलपुंजगुंजतमधुपमाति फूलनिसौंमिलीमंदपौनासियराईहैं ॥ सोहैंस्यांमास्यामपैंसिंगारस जैंफूलनिकेफूलभईहियेंलषिफूलीबनराईहैंनागरियाहुंफूलनिसफलकारिभुजधारिअंसफूलरहेसुखदाईहैं ॥ १ ॥ इकताल ॥ फूलनिकेवसनवत्रसनबनायलियेफूलनकोक्यारीसीकुंवरिअलवेलीहैं ॥ फूलनिकेभूषणवसनभांतिफूलनिकेफूलभरीछविभरीहरीयेनचेलीहैं ॥ अधरमधुरमकरंदलैंनफूलनिकौंफूलसौंअलिंदस्यामभुजानिसकेलीहैं ॥ फूलीहैंजुन्हाईतामैंफूलपंकबानिनकीनिरषैंअकेलीनागरिसहेलीहैं ॥ २ ॥ ताल चपक ॥ फूलमहलमैंफूलीजौन्हिजगमगी ॥ तामैंफूलेकरैंकेलिस्यांमांस्यामसुषझेलिफूलनिमरगजीवासरगमगी॥ फूलनिकीसैंनीपरराजतबिथुरीबैंनीफूलीहैवदनजोतिमदनअगमगी फूलसरअरसांनौंफूलरंगभायेसोवेनागरियामोहेमनरीझनडगमगी ॥ ॥ ३ ॥ राग परज तिताल ॥ सषीआजुनिरषिसुषपुंजरी ॥ तहांमैंनगांनअलिगुंजरी॥ दंपतिहिथफूलनिलियैंहैवहोफूलनिसौंफूलीनवकुंजरी॥ फूलनिकीसैंनीपरदीन्हेगरबांहींतनफूलनकेसोहतासिंगाररी ॥ फूलनिकीफूहीहलिबरषैंलताहैंहोततैसीफूलकीवहतबयाररी॥ फूली

अथ राम जनम वधाई ॥

॥ दोहा ॥ वढिगहगडगहमहमची, घनसेघुरतनिसांन ॥ उद याचलअवधेसपर, प्रगटघोरघुकुलभांन ॥ १ ॥ कोलाहलकलगां नलपि, आनंदचहुलउतंग ॥ इतछितकेरहेछकिउतैं, छकेविमानी पंग ॥ २ ॥ जनमसमयआयेजिते, विप्रगुनीवृन्दवाल ॥ लोकपा लसेतेकिये, दशरथअवधिनृपाल ॥ ३ ॥ विधिनांतोसौंकहतहौं, एपुरवोममआस ॥ वेगवढोफूलोफलो, जाचतनागरीदास ॥ ४ ॥ ॥ राग विलावल ॥ ताल जात्रा ॥ उदधिअवधेसअर्धंगप्राचीदिसाप्र गटेश्रीराकेसजगतमहरन ॥ गीतबहोवाद्यवेदादिआनंदरवपूरिरह्यो नादसुजसकृतगगनमंडलधरन ॥ बरषैंनृपनगरपरअमरपहुपांजुली कनकमणिमहलकैंसिपरसुपमांपरन ॥ नागरीदासरघुवीरवरजनम दिनडरतनिध्वंसबिचविश्वमंगलकरन ॥ १ ॥ रागबिलावल ॥ ताल जात्रा ॥ अवधिपुरधामआरामविश्रामसुनिप्रगटेजहांरामअ भिरामनयनं ॥ श्यामतनबरनमनहरनमंगलकरनधरनिविचउरनि नितिअमलअयनं ॥ हंसकेवंसमैंहंसहीउदितअवतंसजगयोग्यप्रसं सवयनं ॥ नागररघुनंदसुरवृंदबरवंदसोसच्चिदानंदकरैंपलनांसयनं ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ तिताल ॥ भयोहैंआजअवधिआनंदअरभी जिरहेनरनारि ॥ रामजन्मसुपसिंधुवढचोसवभूलेअंगसह्मारि ॥ गां ननिसानदांनमंगलधुनिछईभवनिप्रतिद्वारि ॥ नागरदेवविमांननिवि थकितआयेलोगविसारि ॥ ३ ॥ इकताल ॥ रामजनमदशरथघरवा जैंवधाई ॥ इतैंअवधिअरुउतैंअमरपुरदुहुंनिकोमिलिधुंनिछाई ॥

गरसूघैंदोउसुपसौंसुषजोरैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ फलनिकीसैंनीपैंपि यप्यारीमदनरंगरगमगे ॥ फूलनिकेहारमरगजेव्हैंरहेउरगुलावसग मगे ॥ काननफूललगिरहेआननपरमप्रेमअगमगे ॥ फूलीसषीना गरिकेनैंनणुभेदंपतिमैंफिरिनतहांतैंडगमगे ॥ २ ॥ तिताल ॥ फूल महलकालिन्दीकूलि ॥ फूलभरिद्रुमलताललितजहांजलपरसत झुकिझूलि ॥ फूलनिमैंफलमैंननिकेदोऊषरैंग्रीवभुजमूलि ॥ नाग रियानागररसवससषीनिराषिरहीसुधिभूलि ॥ ३ ॥ आनकविक्त ॥ ॥ राग पंभायची ॥ तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदु लहनिरंगभरेपियस्यांमसुन्दरसुखदैंन ॥ रंगभरीसैंनीयरचीजहांरंग भरयोउलहतमैंन ॥ रसिकविहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥ १ ॥ आनकविक्त ॥ यापदकोअलापचारी मैं दैने ए दोहा ॥ गहगडसाजसमाजजुत, अतिसोभाउफनात ॥ चालिविलसोमिलि सेजसुष, मंगलगलतीरात ॥१॥ रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटि अनंग ॥ करोमदनमनुहारमिलि, सवरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चलेदो ऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीललितगति, रंगर समसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकविहारीसुषसदन, आएरससरसात ॥ प्रे मवहुतथोरीनिसा, व्हैंआयोपरभात ॥ ४ ॥ आनकविक्त ॥ ॥ तिताल ॥ सुरंगीसेजांरगमगरह्यासुपसैण ॥ हारांउरझ्याहाराहि यारानैंणांउलझ्यानैंण ॥ मनमथअमलअगाधावोलैंआधाआधा वैंण ॥ रसिकविहारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतीवितईछैरैंण ॥ १ ॥ इतिफूलरचना ॥

अथ हिंडोराउत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देंनेंये

दोहा ॥ मानभवनभईभीरामिलि, झुंडनिझूलतवाल ॥ सर्षावेष तहांदेंपिहों, रूपलालचीलाल ॥ १ ॥ झूलतझूंडउमंडवहु, रंगरंग पहरिदुकूल ॥ वालालालाकोमनौं, रह्योवगीचाफूल ॥ २ ॥ उत रिझमकिझूलेंचढैं, रंगरंगपहरानिचोल ॥ लालमुनीयनकोमनौं, झुंड निमचीकलोल ॥ ३ ॥ नीलवसनगोरेंवदन, झूलततियरसकंद ॥ आवतजातविमानज्यौं, घटालघेटैंचंद ॥ ४ ॥ रसकतप्रियाहिंडोर नें ॥ छविदुरिदेपतपीय ॥ वेझूलतयेंश्रमितकटि, लचकनिलचकत जीय ॥ ५ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिलपि, रहेलालसुधिभूलि ॥ फहरत अंचरचंद्रिका, वेंनीवरपतफूल ॥ ६ ॥ झूलतछात्रेउमचीअधिक, मचकतद्रुमचीवांम ॥ उचटैंचोटीपीठमनौं, लगैंचमोटीकांम ॥७ ॥ दावनलावनदुहुंनिके, वाजतआवतजोर ॥ वैंनीहारहिलोरहीं, वढि झोटाझकझोर ॥ ८ ॥ झूलतझोटाचढिगगन, वैंनगरजसमतूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, वरषतहारनिफूल॥९॥ वरजैंदुनींहठचढैं, नास कुचनसंकाय ॥ तूटतकटिद्रुमचींमचकि, लचकिलचकिवचजाय ॥ ॥ १०॥ नागरीदासहिंडोरनैं, सोभामनअवरोपि ॥ प्रेमझुलनिझूल्यो करैं, दंपतिझूलनिदोपि ॥ ११ ५ रागमल्हार ॥ ताल ॥ झूलतरासिक मोहनराय ॥ संगभामिनदामिनीघनवीचमनौंदरसाय ॥ कटिलच किमचकनिचलतअद्भुतलेतचितकौंचोर ॥ वढिगईझूलनिझननननि किंकिनीधुंनिसोर ॥ नीलपीतदुकूलफहरततुटीनववनमाल ॥ गयो

षोजतरहेसदाशिवसुरमुनिजाकीरूपरसायनहाथनआई ॥ नागरध
न्यअयोध्याबासीसोघरबैठेनिधिपाई ॥ ४ ॥ रागकाफी ॥ तिताल
चलिरीआजुहैंमंगलचार ॥ राजादशरथकेंदरबार ॥ अतिसुन्दर
श्रीरामस्यामतनप्रगटेराजकुमार ॥ पावतगुनीदानबोहकंचनअरुम
निमुक्ताहार ॥ नागरीदासअमंगलमिटिगयेमंगललोकअपार ॥
॥ रागकाफी ॥ तिताल ॥ अवधिपुरबाजतआजबधाई ॥ भई
नगरपरभीरबिमाननप्रगटभयेरघुराई ॥ बरषतकुसुमधुजाकलसनि
परअतिशोभाउफनाई ॥ नागरीदासगांनमंगलधुनिछायरहीसुषदा
ई ॥ ६ ॥ इतिश्रीरामजनमउत्सव ॥

अथ श्रीमहाप्रभुजीको उत्सव ॥

राग ॥ राधाकृष्णगोवर्द्धनधारी ॥ बृन्दावनयमुनातटवारी ॥
ललितादिकवल्लभबिटलेस ॥ मोमनकरोकृपाआवेस ॥ १ ॥ श्रीन
गेंद्रधरनागरनायक ॥ निजवल्लभरसपुष्टिप्रदायक ॥ तस्यकृपाव्र
जभक्तउपासी ॥ सांवतेसबृन्दाबनबासी ॥ २ ॥ राग ॥ प्रगटेहैंश्री
बल्लभदेव ॥ वहोजीवनकेंभयेसुगनसुभसोंसमुझोमैंभेव ॥ गोकुलहर
षहरषगिरराजहिंव्हैहीबृजबड़ेभवसुषसेव ॥ नागरीदासगोवर्द्धनधा
रीहरषेनेहलाडकीटेव ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ समैंघोरकलिकालधर्मपद
छेदनकीनैं ॥ बिफलक्रोधकंदर्पजीतिजीवनिकौलीनैं ॥ लोभमोह
तैंकरीप्रवर्तिमारगमतिपंगी ॥ चितचंचलअतिअजितनीचसंगीबहो
रंगी ॥ नागरीदासनऔरकहुत्रिविधतापसीतलकरन ॥ प्रगटितवल्ल
भवदनतिहिंसरनमंत्रकोहौंसरन॥४॥इति श्रीमहाप्रभुजीकोउत्सव ॥

अंग ॥ वजवतबीनांनवीनगावततियगनप्रवीनगहगडगनिगांनतान परनमिलिमृदंग ॥ घहरतनभघटाकारीठहरतनहिंचपलारीफहरत पटनीलपीतनिरपतमनलोचनपंग ॥ रमकनिमैंरंगरह्योजातिनाहिं मोपैंकह्योनागरियादासरसप्रवाहबह्योअतिउमंग ॥ १ ॥ तिताल ॥ एहोलालझूलियेनैंकधीरैंधीरैं ॥ काहेकौंइतनीरमकबढावतद्रुमउर झतचीरैंचीरैं ॥ क्योंतुमझुकिझुकिझोटाकेंमिसआवतहोनीरैंनीरैं ॥ यहबरजतत्योंत्योंवेनागरलेतभुजभीरैंभीरैं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ हौंतौ सोभादेषिलुभाई ॥ मेरीअंषियाजलभरआई ॥ झूलतकदंबतरैंजमु नातटसुंदरकुंवरकन्हाई ॥ झलकतनिकसतमुकटलतनिबिचपीतां बरफहरानिसुहाई ॥ नागरियातवतैंमोहिजियमैंफिरिरहीमदनदुहा ई ॥ ७ ॥ राग अडानौ ॥ तिताल ॥ बैठेहैंहिंडोरैंबीचतपतमुरसैन कारीजेबसरदारीकीमजेजनभुलावही ॥ दुहूंओरचंवरचलावैंसपी चौंरदारसायवानसंगसोझुकायेहीझुलावही ॥ फुलेवारहारनिजबाहिं रजगमगातिदेषिसोहैंलालठाढेदीठनडुलावही ॥ नागरसुगंधकीझ कौरउठैंझौटासंगझूलैंस्यामासाहिबमुसाहिबझुलावहीं ॥ ८ ॥ इक ताल ॥ सषीसांवरीगोरीयेझूलतकौंनहैंझूलतदेषिहियोहहरैं ॥ ढर क्योअतिस्वेदरोमांचभयेलषिनैंननिलाजछटाछहरैं ॥ थहरैंतनफू लदुकूलषिसैंनसंभारैंदोऊअंचराफहरैं ॥ करकंपतडोरीनजायगही नहिंनागरयापटुलीठहरैं ॥ ९ ॥ इकताल ॥ झूलतरंगभरीअलबे ली मानौंपवनपरसतैंलहकतकंचनलतानवेली ॥ छूटिगयोउरअंच रफहरतदरसतहारहमेली ॥ नागरपियलपिरीझिरीझिकैंबीचभुज निभारझेली ॥ १० ॥ राग बिहागरो ॥ इकताल ॥ जमुनांकैंती

अंचरछूटिउरउरमिलतझुकिझुकिबाल ॥ छईचहुंदिसिमेघमालाछ
योरागमलार॥ दासनागरतिहसमैंसुपबढ्योबिपुनबिहार ॥ चर्चरी ॥
नवकदम्बअंबकेलिचंपागहबरतमालपरसतझुकिजमुनातीरलगिस
मीरलहर ॥ रच्योहैंतहांवरहिंडोलवल्लवीनकृतसलोलनवनिचोलरं
गरंगरमकतरहेफहरफहर ॥ पावसरितबनविहारगानरंगधुनिमलार
बीचरलीमुरलीसुनिआवतघनघहरघहर ॥ राधाहरिझूलतलपिबर
पैंकुसमसुरबिमानछबिनिहारनागरमनरातिपातिरहेहहरहहर ॥ २ ॥
॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ नई कौन हैं झूलनि हारि ॥ टेक ॥ दो
हा ॥ स्यामाकैंसंगछबिभरी, सोहतसषीनवेलि ॥ अतिसुन्दरतन
सांवरी, अरीमनहुंनीलमनिबेलि ॥ १ ॥ स्वेदकंपरोमांचव्हैं, जां
नपरतकछुतोत ॥ झुकिझुकिझोटामैंहसहि, कुंवरलजोंहींहोत ॥ २ ॥
निरषौंफूलनिनेहकी, सषीचतुरसिरमोर ॥ हमजानीजानीसबैंअरी,
यहझूलनिकछुऔर ॥ ३ ॥ सबैंछकायेनागरी, द्रगनिसुधासोंप्या
य ॥ कपटरूपधरिमोहनी, अरीप्रगटभईवृजआय ॥ ४ ॥ ३ ॥
राग इमन ॥ चौताल ॥ भीजहींभीजहींरीझिमीजिहींझूलतलाल
भीजहींनवलनेहरसअटके ॥ झोटालेतहरैंहरैंभुजमूलग्रीवधरैंहसिह
सिबातैंकरैंनियरैंनिपटलूंबलटके ॥ भीजतपटलपटेप्रगटअंगलषिर
हेइकटकद्रिगनागरनटके ॥ नागरीदासमेहबरसानिसिभईचपलाचि
राकठईतउनपरतबीचिहटके ॥ ४ ॥ राग अडानौं ॥ इकताल ॥
झूलतहिंडोरेलालनवलवृंदाबालसंग ॥ चहूंओरठनकमनकछुवतानि
तनठनियबनकमनहुंमदनबागबसनसोहतहैंरंगरंग ॥ फूलनकेबरन
बरननवलासीलीनैंकरनिप्रीतममनिहरनतरुनिदीपतिद्युतिदामिनी

टिझोटाझकझोर ॥ ४ ॥ नित० ॥ आईश्रीराधाजवशोभाहैवढी ॥ सांवरीसहेलीझूलैंसंगलैंचढी ॥ कहीनपरततासमयकीबरसपरचोरंग ॥ नागरियानिरपिभईनैंननिगतिपंग ॥ नित० ॥ ५ ॥
॥ तिताल ॥ दोऊमिलिझूलतरंगहिंडोरैं ॥ नीरपीतअंचलच्चलचंचलवेनीहारहिलोरैं ॥ भंवरभीरलपटतसंगआवतलगिसुगंधकैडोरैं ॥ नागरियानागररमकानिमैंमिलिगावतथोरैंथोरैं ॥ १५ ॥ आनकविकृत ॥ राग सोरठ ॥ इकताल ॥ होप्यारीजीनैंरसियोपीवझुलावैछैं ॥ रंगभरयाझोटादेसांम्हैंनैंणांनैंणमिलावैंछै ॥ वरसरह्योरसरंगहिंडोरैंमिलिमलारसुरगावैंछैं ॥ यांवातासूंसांवलियोह्यानैंरसिकाबिहारीवरभावैछैं ॥ १६ ॥ आनकविकृत ॥ इकताल ॥ हिंडोरैंहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ टेक ॥ हौंतौंवारीजीवारीगईदेषि ॥ झूलनिमैंझुकिझूमिरह्योपियप्यारीजीरोरूपलुभाय ॥ भीजैतनतरवरचूवैलागालवांहीलपटाय ॥ रसिकबिहारीजीरोझूलवो ह्यांरांमनमैंझोटापाय ॥ १७ ॥ ख्याल ॥ तिताल ॥ सुन्दरनंदकुंवारझूलतललितकदम्बतरैंजमुनातटनवघनश्यामसरीर ॥ सोहतफहरतमालमोहतमहकिमालतीरहीचहूंदिसिभईभंवरनकीभीर ॥ चलिरीच्चलिवलिआजनैंननिरूपअमीरसपानकरहिकिनहरहीमदनतनपीर॥ तूगोरीवेश्यामजोरीजगतबिभूपननवलनागरीबसियैंधीरसमीर ॥ १८ ॥
॥ तिताल ॥ झूलतहिंडोरैंनवलदोउमनमोहनमोहनीछबिपावहीं ॥ द्रुमपरव्हैंव्हैंकढतवढतछबिपरसिपरसिधुरवामनौंआंवहीं ॥ पुलिवैंनीउरहारटूटिपटछूटिअंचरफहरांवहीं ॥ नागरियाझोटाबढिरसकरंगीलीतामैंझुकिझकझोरानिमिसिलपटावहीं ॥ १६ ॥ तिताल ॥

रवीरज्जुवतिनकीभीरतहांपरमरंगबोरनांरच्योहिंडोरनां ॥ बजतमृदं
गबैंनबीनसंगरागरंगपावसरितुहोतसिंधुरसझकोरनां ॥ झूलतप्रियन
वलकिसोरझोटाझकझोरजोरझननननकिंकिनसिोरछबिहिलोरनां ॥
नागरबढिनेहमेहरमकनिमैंरंगरह्योचलिकटाछदुहुओरदृगनिहोर
नां ॥ ११ ॥ ताल चपक ॥ तूटेषिरीसोभायाबरियां ॥ बढिझुगये
झोटाद्रुमपरसतअरझिरह्योपीतांबरडरियां ॥ तूटिगईबनमालहिलो
रतछूटिकिंकिनीकटिढरहरियां ॥ नागरीदासप्रियाअंचलचालिड
रिलगिजातदेहथरहरियां ॥ १२ ॥ तालचपक ॥ उत्तरेझूलेतैंसोभा
सिंधुझकझोरेसे ॥ प्यारीछूटेबारबैंनाबेसरिसरकिगएउततूटीबनमा
लासिथलकिंकनीकटिषुलेफैंटापेचसुपसुरतिझकोरेसे ॥ सँवारतभू
षनबसनआयसपोजनमनवारैंरीझिरूपनिरषिठगोरेसे॥ नागरीदास
दोऊश्रमितव्हैंसोसेजदेपिछबिभुरयेरोमेरेनैंनभोरेसे ॥ १३ ॥ रा
गसोरठ इकताल ॥ नितगरजगरजगरजकैंबरसनिघटालगी ॥ पा
वसरितुब्रजमैंरसरंगरगमगी ॥ हरितभूमिगहबररहेनवकदंबअंब ॥
कुसमकलितभंवरभारझुकिझुकिरहीझंब ॥ १ ॥ नित० ॥ झूलैंज
हांझुंडनिमिलिवल्लभकुलनारि ॥ जिनमधिनायकवृषभानकीकुमा
रि ॥ गांनकरतचहूंओरजुवतिनकीभीर ॥ पहरैंमनहरनितरुनिवरन
बरनचीर ॥ नित० ॥ २ ॥ रूपचहलपहलविचहिंडोरनांसलोल ॥
मानूंमुनियनलालकैंझुंडनिमचीकलोल॥ केकीसुरकुहकिकुहकिगावैं
नवबाल ॥ सुनिसुनिमलारमेघघुंमडिआवैंतिहिंकाल ॥ नित०॥३॥
द्रुमनिमांझझूलतवरबैंनोंषुलिजात ॥ ज्यौंउडतमोरतरलपछपुछाफ
हरात ॥ छूटिगयेअंचरउरटूटिगयेहारडोर ॥ मचकनिमैंलचकतक

श्री॰

अथ रसिकविहारजी कृत पद लिख्यते ॥

तिताल ॥ नंदजीरैंचालोनैंघरां ॥ महामनोहरपुत्रहुवोलपिलोय णसफलकरां ॥ दहीण्यालसौंभरांभरांवांहसिहसिफेरिभरां ॥ रसि कविहारीनांवकुंवरजीरोआगमजांणिधरां ॥ १ ॥ रागसोरठ ॥ इकताल ॥ कांनपडीनसुणीजैंनंदघरआजैं ॥ घुरैंनिसांणघणांमंग लमयजांणैंनभभादौंघणगाजैं ॥ गोपीगीतगावतीआवैंचालंताछवि छाजैं ॥ गोकुलरागलियांरांचहुंवांवहुवांरांरमझोलबाजैं ॥ स्यामब रणसुतजायोराणींरूपअनूपमराजैं ॥ होसीरसिकविहारीनांवयांरो अवहीमदनवदनलपिलाजैं ॥ २ ॥ राग काफी ॥ बजैंआजनंद भवनवधाइयां ॥ गहमहआनंदरंगरलीअतिगोपीसवमिलआइयां ॥ महरिजसोमतिकैंभयोसुतफूलीअंगनमाइयां ॥ रसिकविहारीप्रान जीवनलपिदेतअसीससुहाइयां ॥ ३ ॥ तिताल ॥ आजवृषभानकैं वधाई ॥ गहमहभीरभईरावरमैंगावतअलीसुहाई ॥ हसिहसिगोपी मिलतपरसपरआनंदउरनसमाई ॥ प्रगटभयेउतरसिकविहारीइत प्यारीनिधिआई ॥ ४ ॥ तिताल ॥ वधावणोंहेहेलीआजरली ॥ भईभीरवृपभानभवनमेंकीरतिवेलिफली ॥ जुवतीवृंदघरघरतैंमंगल गावतआवतचली ॥ रसिकविहारीचन्दहेतजनुप्रगटीकुमुदकली ॥ ॥ ५ ॥ तिताल ॥ होछैंवृपभानरैंघरलापांरीवधाईआज ॥ कुंवरि लाडिलीजनमलियोछैंमोहनरेंसुपकाज ॥ दुलरावैंमंगलगावेंढाढनि

झूलतहैंदोऊसपीझुलावैं ॥ सोधैंकीझकोरैंश्यामतनगोरैंआवैं हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं॥नागरझकझोरैंहोरैंडोरैंडरझावैं २०॥ आंनकबिकृत॥राग काफी॥धीरांझूलोजीराधाप्यारीजी ॥ मचकरंगीलीथांरीमानैंबालीलागैं ॥ झुलावतहैंसषीसारीजी ॥ फरहरातअंचलचलचंचलल्लाजनजातसंभारीजी ॥ कुंजतओटदुरेलषिदेपतप्रीतमरसिकबिहारीजी ॥ राग मल्हारा ॥ इकताल ॥ होकहारंगभीनीरितुहैंसावनकीफिरफिरझमाकिझमाकिझमिमेहआवैं ॥ चात्रिगमोरकरतसोरतैंसियेगहरीबनकीघोरकारेकारेवादरनिविचबिचबिज्जुरीचमचमावैं ॥ सीतलसुगंधपवनगवनपरसपरसदोषिफूलनिसौंभरीभरीहरीहरीडारियांलहिलहावैं ॥ तैसेईबिलासपुंजनागरियानागरनिकुंजनेहमेहभिजएमिलिमिलिमल्हारगावैं ॥ राग बड हंस ॥ ब्रह्मताल ॥ बालबिनोदीमेरेहियमैंझूलतानितवसो ॥ रतनजटितकैंललितहिंडोरैंबछियासहतलसो ॥ रमकानिर्मलडवामारवनकोबिचबिचलेतगसो ॥ नागरियासुसरारिकीकोऊहसैंसुभलेहसो ॥२२॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजसांवतसिंहजी द्वितीयहरिसंबंधनाम नागरीदासजी कृत उत्सव माला संपूर्णम् ॥

रमांहेरिसिकाविहारीकंठलगांवणो ॥ १३ ॥ तिताल ॥ फागुणियारो घुंमडिरह्योछैंप्याल ॥ कुंजभूमिसोलाललालहुइहुवालालतमाल ॥ उडिगुलालकीलालधूंधरिमैंभलकैंवैंणाभाल ॥ सपीलालअरुलाल विहारनिरसिकविहारीलाल ॥ १४ ॥ या पदकी आलाप चारीमें दैंने ये ॥ दोहा—उडिगुलालधूंधरभई, तनरह्योलालवितान ॥ चौरी चारुनिकुंजमें, व्याहफागसुखदान ॥ १ ॥ फूलनकेसिरसेहरा, फागरगमगेवेस ॥ भावरहीमेंचलतदोऊ,लैं गतिसुलपसुदेस ॥ २ ॥ भीजेकेसररंगसों, लगेअरुनपरपीत ॥ डोलैंचाचरचौकमैं, गहिव हियांदोऊमीत ॥ ३ ॥ रच्योरंगीलीरैंनमैं, होरीकेविचव्याह ॥ वनीविहारनरससनी, रसिकविहारीनाह ॥४॥ १५ ॥ तिताल ॥कुंज महलमैंआजुरंगहोरीहो ॥ फागपेलमैंवनांवनीकोव्हैरहोपटगठजो रीहो ॥ मुदितव्हैंनारिगुलालउडावैंगावैंगारिदुहुंओरीहो ॥ दूलहर सिकविहारीसुंदरदुलहनिनवलकिसोरीहो ॥ १६ ॥ तिताल ॥ होरा जथेछोडोजीकिशोरीजीरोछेहडो ॥ रापोरापोमनमैंचारविचारि ॥ थेफागुणरसवावलाएैलाजभरीछुकुंवारि ॥ कांईहुवोहोलीहुवांसुणह ससीसोहसंसारि ॥ थेगायांकाग्वालियाछोअरअैछैंराजकुंवारि ॥ थांहरीयांहरीनहींछैंवरावरीजायपरसोदूजीनारि ॥ रसिकविहारीथां रोनावछैंकांईपेलोण्यालगंवारि ॥ १७ ॥ तिताल ॥ रह्योरंगहो लीसरसाय ॥ एकणदिसप्यारीहूइहुवाएकणादिसपियआय ॥ गावैं सपीसुहावणीसाथेसंजमुरजसौंहैसाज ॥ कुंजसदनरैंआंगणैंरह्याम दनझुझाउवाज ॥ फागुणसमैंसुहावणोपेलैंनवलरंगीलापेल ॥ उ डिगुलालघुंमडीघणींवहिचलीधरणिरंगरेल ॥ लूमझूमिलपटाइया

लियांसुघरसमाज ॥ रसिकविहारीमनआनंदहुवोप्रगटीनिजसिरता
ज ॥ ६ ॥ तिताल ॥ होछैंवृषभानरैंघरआनंदरलीवधावणौं ॥ जन
मीराधावृजसुषसाधानिरषिनैंणांसुषपावणौं ॥ आंगणगहमहभीड
हुईछैंआजकोदिवससुहावणौं ॥ प्रगटीछैंरसिकबिहारीकीजोडीहुवो
मनोरथभावणौं ॥ ७ ॥ राग सोरठ ॥ तथामलार ॥ तिताल ॥ वृष
भांनकैंमंदलराबाजैं ॥ सुभघरीदिनसुभमहूरतगहरैंगहरैंगाजैं ॥
गावोमंगलरहसिवधाईपावोरांनीकीरतकैंघरकाजैं ॥ रसिकबिहारी
कीयहज़ोरीभयेमनोरथआजैं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ आजबरसांनेमं
गलमाई ॥ कुंवरिललीकोजनमभयोहैंघरघरबजतबधाई ॥ मोति
नचोकपुरावोगावोदेहुअसीससुहाई ॥ रसिकाविहारीकीयहजीवनि
प्रगटभईसुषदाई॥९॥राग नायकी ॥ ताल चपक ॥ आजबधावोवृष
भांनकैंधांम ॥ मंगलकलसलियैंआवतगावतवृजकीबांम ॥कीरातिकैं
कीरतिप्रगटीहैंरूपधरैंअभिरांम ॥ रसिकाबिहारीकीयहजोरीहैंांनी
राधानांम॥१०॥इकताल ॥ पेलैंसांझीसांझप्यारी ॥ गोपकुंवारिसाथ
णिलियांसाथेचावसोचतुरासिंगारी॥फूलभरीफिरैंफूलले्एज्यौंफूलर
हीफुलवारी ॥ रह्यांठग्यालषिरूपलालचीप्रीतमरसिकविहारी॥११॥
तिताल ॥ होरंगीलीबाजोलागिरहीछैनैंणांमें ॥ जांणींकांमकटाछां
हींकादेपिदावदैंणांमें ॥ कांपें अंगअनंगरंगसुरभंगहुवोवैंणांमैं रसि
कविहारीमनफूलवडीहुईहारजतिसैंणांमैं ॥ १२ ॥ रागषंभायची ॥
तिताल ॥ आजबरसानोंहेलीलागेंसुहावणो॥फागगातिगीतसुरछायो
सुहायोआज्नुनंदकुंवरआयोपाहूणौं ॥ उठोजोकिसोरीगोरील्योनैंगु
लालओलीभरहोलीअबसुपसरसांवणौं ॥ गहगडषेलधुंमधूंधरअबी

इसात्र्प्रटपटाफैल ॥ रंगलग्योछिपसीनहीं, मतिजीमतिपियछैल ॥ ॥ २ ॥ चुगलचवाईगांवयो, वुरालोगअणवैल ॥ कांईपेलोण्यालए, मतिजीमतिपियछैल ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीण्यालए, सीण्याभलाअडैल ॥ पगांपडांछांहाथजी, मतिजीमतिपियछैल ॥ ४ ॥ राग झंझोटि ॥ रंगझुरमटरा ॥ अनीहाहोनंदमहरदानीघरमेंतुरंगभरैबरवटरा ॥ क्योंकरपनियांजाउंसजनीरहेठाढोपनघटरा ॥ होहोकरतभरतजुवतनिकोंरसिकविहारीनटरा ॥ ५ ॥ २६ ॥ रागकाफी ॥ कैसेंजलजाउंमैंपनघटजांऊ ॥ होरीपेलतनंदलाडिलोरीक्यैंकरनिवहनपांऊ ॥ वेतौनिलजफागमदमातेहौंकुलवधूकहांऊं ॥ जोछुवैंत्र्प्रंचररसिकविहारीतोहुंधरतीफारसमांऊ ॥ २७ ॥ राग काफी ॥ मनमोहनमेरीअंगियारंगडारीरे ॥ याहोरीमेंलाजरहैंक्युंसासननणदडरभारीरे ॥ तुमतोछैलगैलनितरोकोहोंआत्रूसंगनारीरे ॥ काहेनिडरधीटन्नटपारेहुवारसिकविहारीरे ॥ २८ ॥ राग पंभायची ॥ तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदुलहनिरंगभरेपियस्यामसुंदरसुपदैंन ॥ रंगभरीसैंनीयरचीजहांरंगभरचोडलहतमैंन ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥ २९ ॥ या पदकी आलाप चारीमें दैंने ए दोहा—गहगड़साजसमाजजुतअतिसोभाउफनात ॥ चलित्रिलसोमिलिसेजसुप, मंगलगलतीरात ॥ १ ॥ रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटिअनंग ॥ करोमदनमनुहारमिली. सवरजनीरससरंग ॥ २ ॥ चलेदोऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीललितगति, रंगरसमसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीसुषसदन, आएरससरसात ॥ प्रेमवहुतथोरीनिसा, व्हैंआयोपरभात ॥

दोन्यौंसुषमांडणरैंप्याल ॥ रसिकविहारनिलाडिलीपियरसिकबिहा
रीलाल ॥ १८ ॥ तिताल ॥ विचवृजनारचांरैंझुंडराधारूपहैंरूडो॥
ग्रीवझुकायांझूंमकनाचेंसीसकेसारोजूडो ॥ केसरिरंगभीजीसाडीमें
झलकरह्योछैंचूडो ॥ देषिछक्यापियरसिकविहारीरह्याधीरधरकूडो
॥ १९ ॥ राग ॥ मनमोहनसोहनस्यामनन्दढटोनांरी ॥ विनदेपेंपल
कलनपरतहैंमेरोजीवलगोनांरी॥होरीमैंमोपैंठगोरीसीडारीहौंरिझईरी
झिरिझोंनांरी ॥ षेलौंगीमिलरसिकविहारीसौंवाविनपेलअलोनांरी
॥२०॥ रागनाइकी ॥ तिताल ॥ होहोहोरीकहिवोलैंसबवृजकीनारि
॥ नंदगांववरसानैंषेलमैंगावतइतउतरसकीगारि ॥ उडतगुलालअरु
नभयोअंबरचलतरंगपिचकारकीधारि ॥ रसिकबिहारीभांनदुला
रीमधिनायकदोऊपिलारि ॥ २१ ॥ इकताल ॥ एजुनीकैंतुमजाहुच
लेजिनभरोमेरीसारी ॥ सुनिस्यामसुनस्यामसैंहैंतिहारीयाहीवेरा छि
नायलैंहुंकरतैंपिचकारी ॥ अबकुछमोपैंसुन्यौंचाहतहोगारी ॥ घरमैं
ईसीषेढंगरसिकविहारी ॥ २२ ॥ ॥ षासाचाकररहस्यांजीह्मेराज
राचाकररहस्यांराजकुंवरकिसोरीजी ॥ फूलविछाताजास्यांआ
गेंलियांपीतपटझोरीजी ॥ सूरजमुषीहाथलियांफिरस्यांछाहिंकियां
मूषगोरीजी ॥ रसिकविहारीरह्याटहलमैंहंसीरंगरलीभरिहोरीजी ॥
॥ २३ ॥ तिताल ॥ भीजैंम्हारीचूनरीहोनंदलाल ॥ मतिनांषोकेसर
पिचकारीहाहामदनगुपाल ॥ भीजवसनउघड्यासीअंगअंगकौंण
निलजयहप्याल ॥ रसिकविहारीछैलनिडरथेमानेंतोजंजाल ॥
॥ २४ ॥ दोहा—मतिटोकोरोकोमती, चल्याजाहुइणगैल ॥ रंग
भरोमतिभांवता, मतिजीमतिपियछैल ॥ १ ॥ मनहीमेंएरहणद्यो,

लसलोनैंजिनकारीनिठुरसुभाव ॥३७॥ राग सारंग ॥ तिताल ॥ मैं अपनौंमनभांवनलीनौं ॥ इनलोगानिकोकहाकीनौं ॥ मनदैंमोलल योरीसजनीरतनअमोलकनंददुलारोनवललालरंगभीनौं ॥ कहाभ योसवकैंमुपमेरैंमैंपायोपीयप्रवीनौं ॥ रसिकबिहारीप्यारोप्रीतमासि रविधनांलिपदीनौं ॥ ३८ ॥ इकताल ॥ तिताल ॥ रतनालीहोथा रीआंपडियां ॥ प्रेमछकीरसवसअलसांणींजांणिकंवलकीपांपडि यां ॥ सुंदररूपलुभाईगतिमतिहोइगईज्यूंमधुमांपडियां ॥ रसिक बिहारीवारीप्यारीकौंणबसीनिसकांपडियां ॥ ३९ ॥ ताल ॥ मोहनजीम्हारैंथेकांईहठलाग्याछोजी ॥ जावाद्योघरछोडोछेहडो थेरसवातांपाग्याछोजी ॥ आंप्यांथांकीछैंरतनालीसारीनिस राजाग्याछोजी ॥ रसिकबिहारीप्याराम्हांनैंथेओरांसूंअनुराग्याछो जी ॥ ४० ॥ तिताल ॥ रंगिरह्याजुगलरूपरंगमांहीं ॥ कुंजमहलमैं दर्पणसाम्हैंदियांरहैंगलवांहीं ॥ कदेकसंभ्रमव्हैंस्यामारैंनेडैंस्यामछ तांहीं ॥ कदेकरीझिरहैंरसिकबिहारीदेषिदेषिपदछांहीं ॥ ४१ ॥ तिताल ॥ चिरतालीतैंनंदकुंवरमनमोह्योहेकांमणगारी ॥ वसिकारि वारामंत्रतोजिसासीपीकुणवृजनारी ॥ दिनअररैंणसैंणरैंकारणअंग अंगरहैंसंवारी ॥ भलोकियोआधीनआपणैंप्रीतमरसिकबिहारी ॥ तिताल ॥ येवांसुरियावारेऐसेजिनवतरायरे ॥ यौंनवोलियेअरेघर वसेलाजनिदबिगईहायरे ॥ हौंधाईयागैलहीसौंरेनैंकचल्योधौंजाय रे ॥ रसिकबिहारीनांवपायकैंक्यौंइतनौंइतरायरे ॥४३॥ तिताल ॥ प्यारीजीरासालूडामैंआवैंछैंसुगंधीरूडीबास ॥ अंगमरगजीगंधलु भायांभँवरभँवैंआसपास ॥ लटपटैंवेसआंणिऊभारह्याआंगणकुंज

॥२७॥तिताल ॥ सुरंगीसेजांरगमगरह्यासुपसैण ॥ हारांउलझ्याहार हियारानैंणांउलझ्यानैण ॥ मनमथअमलअगाधावोलैंआधाआधावैं ण ॥ रसिकविहारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतवितईछैरैण ॥ २८ ॥ राग सोरठ तिताल ॥ होप्यारीजीनैंरसियोपीवझुलावैछैं ॥ रंगभ रयाझोटादेसांह्लेनैणानैणमिलावैछैं ॥ वरसरह्योरसरंगाहिंडोरेमिलि मलारसुरगावैछैं ॥ यांवातांसूसांवलियोह्मानैंरसिकविहारीवरभावै छैं ॥ २९ ॥ इकताल ॥ हिंडो रैहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ टेक ॥ हौंतो वारीजीवारीगईदेपिझूलनिमैंझुकिझूमिरहीपियप्यारीजीरोरूपलु भाय ॥ भीजैतनतरवरचूवैंलागागलवांहीलपटाय ॥ रसिकविहारी जीरोझूलवोमांरामनमैंझोटापाय ॥ ३० ॥ राग कार्फी ॥ धीरांझू लोजीराधाप्यारीजी ॥ मचकरंगीलीथांरीमानैंवालीलागैंझुलावतहैं सषीसारीजी ॥ फरहरातअंचलचलचंचललाजनजातसंभारीजी॥कुं जनओटदुरेलषिदेषतप्रीतमरसिकविहारीजी ॥ ३१ ॥ रागललित ॥ ष्याल ॥ जीनैंणांनींदघुलैछैं ॥ आयरहीछैंथोडीरात ॥ कांईकेडै लाग्याछोनंदलाल ॥ अतिअलसायोम्हारोगात ॥ घरघरचारचवाव चलैलोनिपटवुरीछैंयावात ॥ रसिकबिहारीथेरसलुब्धाव्हैंआसीपर भात ॥ ३५ ॥ तिताल ॥ होकांह्लजीरातराउणींदारंगराता ॥ निस रैंध्यानएमुंदीपलकआवैंललकमदनमदमाता ॥ अलकमांहिअण वटप्यारीरोल्यायाथेउलझाता ॥ रसिकविहारीलागोछोप्यारामुस क्याताअलसाता ॥ ३६ ॥ राग आसावरी ॥ तिताल ॥ प्यारेयेइ निगलियांआव ॥ नैंननिजलसौंधोयसंवारोंअछनअछनधरिपाव ॥ व्याकुलतृषतचकोरदृगनिकौंवदनचंददरसाव ॥ रसिकबिहारीला

धीरधरंदे ॥ रसिकबिहारीनितिवारकरंदेटारेनहींटरंदे ॥ ५१ ॥
॥ राग अडाणो ॥ तिताल ॥ होस्यामाप्यारीवोमैंडीजिंदल
गीहैतैंदेनाल ॥ जबहसिवेपैंतबतबजीवांराहिंदाहोयनिहाल ॥ तु
हीअसांढेनैंनग्रांनवसपयातुसाढेवाल ॥ यौंकाहिंदाकरजोरिकुंवरि
सौंरसिकबिहारीलाल ॥ ५२ ॥ तिताल ॥ वोमोहनासोहनयारदेनैं
णांदीझोकां ॥ सीनेंदेविचुलगीअसाढेवारपारभईनोकां ॥ रुकदी
नहींरोकिमैंहारीलाजघूंघटदेरोकां ॥ रसिकबिहारीदानांवलेलेक
रैंसबव्रजनोकांटोकां॥५३॥तिताल॥ आयाबृजपरछायाजीजलवाद
लझरिया ॥ हरियातरवरचूवैंपाणीबहोसरवरभरिया ॥ इणासमयेसु
फलेणमनोरथदंपतिहियधरिया ॥ मिलियारसिकबिहारीप्यारीसहु
कारजसरिया ॥ ५४ ॥ राग रामकली ॥ प्यारीजुतैंमोहिमोललि
यो ॥ तेरीकृपामदनदलजीत्योतेरोजिवायोजियो ॥ उमडीसैंनम
हामनमथकीतैंअधरामृतदियो ॥ श्रीरसिकबिहारीकहतदीनव्हैंन
निस्यामाकोहियो ॥ ५५ ॥ राग ॥ बनिदुकूलबैठेपरजंक ॥ कम
लनैंनअंगअंगछबिनिरपतप्यारीभरैंजुअंक ॥ धन्यधन्यपियमांनि
अपनपौंज्यौंनिधिपायेरंक ॥ श्रीरसिकबिहारीयहसुषविलसततहां
निकटनिरसंक ॥ ५६ ॥ लूर ॥ पावसरितुवृंदावनकीदुतिदिनादिन
दूनीदरसैंहैंछाविसरसैंहे ॥ लूंमझूंमसावनघनोघनवरसैंहे ॥ १ ॥ ह
रियातरवरसरवरभरिया ॥ जमुनांनीरकलोलैंहे ॥ मनमोलैंहे ॥
प्यारीजीरोबागसुहावणोंमोरबोलैंहे॥२॥ आभाआभाबीजचिमकै॥
जलधरगहरोगहरोगाजैंहे ॥ रितुराजैंहे ॥ स्यामासुरमुरलीरली ॥
बनबाजैंहे ॥ ३ ॥ रसिकबिहारीजीरोभीज्योपितांबरप्यारीजीरी

निवास ॥ रसिकबिहारीपवनदुलावैंषासाहोयषवास ॥ ४४ ॥ तिताल ॥ आजकीरातआछीलागैछैंउजारी ॥ बिहरैंस्यामास्यामचावसौंसुंदरनावसिंगारी ॥ जमुनाबिचझिलमिलकीसोभाकँवलकूलसुषकारी ॥ नावडगमगैंडरलपटावैंरसिकबिहारीजीसौंप्यारी ॥ ४५॥ राग सोरठ ॥ तिताल ॥ बहिमनवसियोरसियोरीमोहनलालनगीनौं ॥ बृजकोभूषनरतनअमोलकअतिसुंदररँगभीनौं ॥ मैंपायोमेरैंबडभागनिसिराबिधनांलिषदीनौं ॥ रसिकबिहारीपियसुषकारीकंठलायमैंलीनौं ॥ ४६ ॥ तिताल ॥ रह्यादेषिपियचिवुकउठायवोनैंणांमैंअलसांणघणींछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषवणीछैं ॥ अलकांसिथलसिथलहुइपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरीचितवनिमिलिरहीअणीअणीछैं॥४७॥ राग काफी॥ तिताल ॥ मनलायाक्यौंकाह्नअनोषेसौं ॥ अबपछितांयैंक्याहोदांणीभूलिप्रीतकरीओषेसौं ॥ निसदिनघुटिदीतूघरअंदरसासननददेहोषेसौं ॥ गुरजनबुरेरसिकबिहारीनूंबेषणदेतनगोषेसौं ॥ ४८ ॥ तिताल ॥ वहिसौंहनांमोहनयारफूलहैंगुलाबदा ॥ रंगरँगीलाअरुचटकीलागुलहोरनकोईजबाबदा ॥ उसबिनभँवरेज्यौंभवदाहैंयहदिलमुजबेताबदा ॥ कोईमिलावैंरसिकबिहारीनूंहैंयहकामसबाबदा ॥ ४९ ॥ तिताल ॥ मुरलीवारोमोहनावहिकहिहेलीकहांपांउंरी ॥ घरवनमनलागैंनहींहौंबावरीभईकितजांउंरी ॥ सिथलअंगपगथरहरैंहौंउठिउठिकैंमुरझांउंरी ॥ रसिकबिहारीबनवारीबिनकैसैंजीवजिवांउंरी ॥ ४७ ॥ तिताल ॥ तोपैनैंनकन्हाईतैंडेपलपलपूंनकरंदे ॥ भौंहेंतोकमांनतनींपलकैंतीरपरंदे ॥ कित्तेघायलपरेकराहैंदिलनहीं

नागरसमुच्चयका शुद्धाऽशुद्धपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१७	॥ चौपाई ॥	यहचौपाईसि श्रीभागवत याहीकीचाहिये ।
२	५	कंप्ल	कल्प
४	१६	संप्रदायकैं	संप्रदायकारिकैं
५	१३	इहितैं	इंहितैं
८	९	कछु	कछू
९	१६	पक्त	सक्त
१०	२१	मुहि	मुंहिं
१२	१४	यांतैं	यातैं
१३	१९	सर मापते	स रमापते
१५	११	जीनके	जिनके
१९	२	श्रुद्रा	शूद्रा
२१	४	हतवः	हेतवः
२२	२२	सिंधु	शंभु
२३	१	ग्रनी	ग्रमी
२४	१	राजन	राजन्
२५	१५	ज्यै	ज्यौं
२५	१९	तिनहीपैं	तिनहिंपैं
२६	८	विधिवतर करत	विविक्तक रतु
२६	१०	मिटी	मिटि
२६	१७	सुछम	सुच्छम
२७	१४	घाम	धाम
२७	१४	किहि	किंहिं
२८	१	उटि	उठि
२८	१३	जनसेवा	जन; सेवा
२९	१०	वास	वासि
२९	११	उाठ	उठि
२९	१३	जान	जानै
२९	१९	मेत्यान	मेत्यानि
३०	१३	क्वचिच्च	क्वचिच्च
३१	५	जोईढिग सोई	जोइढिग- सोइ
३४	४	घुरसौं	धुरसौं
३४	१५	अव	(अव)
३५	१	तेई	तेइ
३५	५	प्वारी	ख्वारी
३५	२०	कलोलैंपै वे कौं	कलोलैपैवे कौं
३६	४	टेर	ढेर
३८	१८	मतवार	मतवारे
३९	१०	धने	घने

चूनरसारीहे ॥ सुषकारीहे ॥ कुंजांकुंजांझिलरयांपियप्यारीहे ॥ ४ ॥ ५७ ॥ तिताल ॥ आजसषीकुंजमहलमैंरंगभरीरातडली होसुहाई ॥ सेजडिलीरंगमांगिरह्यादंपतजालरंध्रजहांआईजुन्हाई ॥ नहींसुलझैंतनमनआनंदमैंसगलीरैंणबिहाई ॥ रसिकबिहारीप्यारीप्यारीप्राणसूमनमानीनिधिपाईसुषदाई ॥ ५८ ॥ तिताल ॥ उणींदाछैजीरातरा ॥ बैंणसिथलअरनैंणजुक्याहीअ वैलगिवैठापरभातरा ॥ पलकांपीकअधरफीकैंरंगरसअलसायागातरा ॥ रसिकविहारीप्यारीपूरणकरीमदनदेवरीजातरा ॥ ५९ ॥ राम सोरठ ॥ होझालोदेछैरसियानागरपनां ॥ सारादेषैलाजमरांछांआंवांकिणजतनां ॥ छैलअनोषाकह्योनमानैंलोभीरूपसनां ॥ रसिकविहारीनणदवुरीछैंहोलाग्योम्हारोमनां ॥ ६० ॥ जाण्यांजाण्यांरेहोलोभीथाराछिछंदपणां ॥ नैंणलगायदिषायदयासीलेरउदासीमकरघणां ॥ यांबातांपलपलकुंणपडपैंबोलोछोसुणझूटघणां ॥ रसिकविहारीनावकहावोसोभापावोछोजीराजयहांलषणां ॥ ६१ ॥

॥ इति श्रीरसिकविहारीजी कृत पद संपूर्ण ॥



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११२	६	नगर	वगर
११२	१२	नये ॥ मिले	नये मिले
११२	२०	सम	सम
११३	६	कौम	कौल
११६	६	पौकौं	पयकौं
११७	२	करान	करनि
११८	३	अनचरनि	अनुचरनि
११८	२०	पताख	पताक
११९	१०	पटहि	पटह
१२०	१३	जडावत	जुडावत
१२१	१	रघुवारि	रघुवीर
१२१	१३	कव	(कव)
१२३	३	रूपको	रूपकी
१२४	३	म	मि
१२४	१६	दास चतुर्भुज	चतुर्भुज दास
१२७	१३	सुप	सुप
१२८	९	भक्तिन	भक्तनि
१२९	१०	कुसंसग	कुसंग
१३०	४	विनु	विन
१३०	१६	पतिननि	पतनिनि
१३१	११	घुराई	घुराई
१३१	१८	रित	ललित
१३२	६	हिति	हित
१३२	१६	सरोवरि	सरोवरी
१३२	१६	भ्नम	भ्रम
१३५	१९	अवैं	अचैं
१३७	६	धने	घने
१३७	९	स्याभ	स्याम
१३९	८	धट	घट
१४०	१२	अगर	अगर्
१४०	१३	कर्त्तार	कर्त्तार्
१४०	१३	निर्धारनिर्धार	निर्धारनि-धार्
१४०	१४	गदद्वारगज	गद्द्वारगज्
१४०	१७	दर विलायत	दर् विला-यत्
१४०	१७	तकिया	तक्या
१४०	१८	फरस	फर्स
१४०	२०	चांरं	चारं
१४०	२१	अदवहीत इ-तमाम	अद्वहोत इत्माम
१४१	७	विमल	विमल्
१४१	१५	गोकुल	गोकुल्
१४१	१६	झालर	झालर्
१४१	१८	परक्रमा	पर्क्रमा
१४१	१९	हरि	हरि्-यह व्यं-जनका चिन्ह शीघ्र वोलके (हरि) इन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१	२१	ज्यौं	(ज्यौं)
४२	१६	गति	गत
४८	१०	भई	भइ
५०	४	परानन	पुरानन
५०	२१	श्रीषण	श्रीकृष्ण
५१	८	दूमनि	द्रुमनि
५३	१९	अधावनौं	अघावनौं
५७	९	ठगन	ठगत
५८	५	तेरी	नेरी
५८	१९	मृति	मृत्ति
६२	२	विखै	विपय
६४	८	हरख	हरप
७१	२	धोप	घोप
७१	२०	चटकरू	चटकरु
७२	१६	रेचवात	हरेचवात
७५	२१	वई	वेई
७७	७	रुचिरर	रुचिर
७८	१६	वसी	वासि
८०	१६	न्यौहर	न्यौहार
८१	१२	नहीं	नाहिं
८२	१५	रितु	रितु
८२	१९	जात्त	जात
८३	१२	अमृत	अम्मृत
८३	१४	सव	(सव)
८३	२०	ल्यौं	लौं
८४	१	तव	(तव)
८४	७	राऊ	राज
८४	१०	तत्र	तत्व
८४	१४	वहौत	वहु
८६	११	साभिलाख	साभिलाष
८९	३	पद्धरि	पद्धरी
८९	१७।१६	तहांपद॥ गाये	तहांपदगाये
९०	१	गनै	गनत
९२	१७	मेत	समेत
९९	१६	कई	कइ
१०१	१३	कै	(कै)
१०२	८	दुहूं	दुहूजु
१०२	१४	निपठ	निपट
१०२	१६	कवि	फत्रि
१०४	६	सुनैं	सुनत
१०४	७	अरू	अरु
१०४	१७	चहूंचां	चहूंधां
१०६	६	भीरा	भीर
१०६	१९	धरि	धीर
१०७	९	हाल	हार
१०८	१३	पंदार्थ	पदार्थ
१०९	९	अंवु	अंव
११०	१	तरुनी	तरणी
१११	८	सिंध	सिंह

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६३	१२।१३	सगीत	संगीत
१६३	१६	सां	सी
१६३	१७	पुनिरास-लीलाखंड	यहबडे अक्षरोंमें चाहिये
१६३	२१	किसत	पिसत
१६४	४	पुनिरास लीलाखंड	वडे अक्षरोंमें चाहिये
१६४	९	गिरिगिर	गिरिगिरि
१६४	१८	यावई	पावई
१६४	१९	आवई	आवई
१६७	१५	अंक	अंश
१७०	१८	उयौ	ऊयो
१७३	९	व्है	वह
१७३	१९	ऊतर	उत्तर
१७५	११	छूवावत	छ्वावत
१७६	४	धित	धीर
१७८	१३	निरापि	निराधि
१८१	९	मारमा	रमारमा
१८१	१८	सवामि	बसामि
१८२	२२	तन्वित	तान्वितव
१८३	४	दिनेशं	निदेशं
१८५	६	सुप	सुख
१८५	६	गति	गत
१८५	१०	पतिति	पताति
१८५	१९	हृदये	हृदयं
१८५	२१	रीझि	रीझि
१८७	१९	पाग्र निपरे	पायनि परे
१९२	५	यह पद	यह पद पुस्तकमें नहीं था जिससे यहां नहीं लिखा
१९३	१	ईला	इस अनुप्रासकी दूसरी तुक पुस्तकमें नहीं थी जिससे यहां भी नहीं है
१९५	१५	गिधर	गिरिधर
२००	१८	मठाई	मिठाई
२०८	४	उताारि	उतारि
२०९	१५	गंघु	गंध्रु
२०९	१९	झुको	जूको
२१०	८	पपप्रसंग	पदप्रसंग
२१०	१३	नामां	नाभा
२१२	१३	सांजियो	सजियो
२१३	२२	धान	धातु
२१४	११	सुत आगन	सूत आंगन
२१५	१४	कफूर	कपूर
२१६	१७	गोधूलिक-वारियां	गोधूलिकविरियां

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			दोनों अक्षरोंका एक गुरु समझनेको है।
१४१	२०	अमरावती	अम्‌रावती
१४१	२१	सिरं	सिर्
१४२	१	कंवल	कंवल्
१४२	२	पुर	पुर्
१४२	२	अवर	अवर्
१४२	२	दुजवर	दुज्‌वर्
१४२	३	हरि	हरि्
१४२	३	गुनधुनि	गुन्‌धुन्
१४२	३	तनकी	तन्‌की
१४२	४	टहल	टहल्
१४२	४	वहो विधि	व्हो विध्
१४२	५	कर्राय	कर्‌राय
१४२	७	भजन	भज्‌न
१४२	८	उत्सव	उत्सव्
१४२	९	प्रथम	प्रथम्
१४२	९	अर्पण	अर्पण्
१४२	९	हरि	हरि्
१४२	१०	रुचिर	रुचिर्
१४२	१०	तुलसी	तुल्‌सी
१४२	१०	सहज	सहज्
१४२	१०।११	सीतल	सीतल्
१४२	११	रिषि	रिषि्
१४२	१२	कलि	कलि्
१४२	१३	विविधि	विविधि्
१४२	१३	तिनको	तिन्‌को
१४२	१९	पंडव	पांडव
१४५	६	तथा समय	यथा समय
१४६	१७	संनि	मुनि
१४७	८	वासरे	वासर
१४७	९।१०	वहुतक	वहुत
१४९	१५	त्रानतन	तनत्रान
१५०	२	मायाकैं	माया
१५१	२	हरप	हरष
१५२	१३	पद्द	पढ
१५२	१५	कना	करुना
१५७	६	नंद गृह	प्रथम नंद गृह
१५८	६	पांनादिक	पानादिक
१५८	७	पांन	पान
१५८	१९	अरू	अरु
१५९	५	अवरोपिहिं	अवरोपिहीं
१५९	१३	घामकैं	धामकैं
१६१	३	सुधो	सुधि
१६१	१०	रहो	रहि
१६१	१८	जन	जल
१६१	२१	विहासि	विहसिकैं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५४	४	कवल	कमल
२५४	२०	तदनांतर	तदनंतर
२५५	११	घीरज	धीरज
२५६	६	तदनांतर	तदनंतर
२५६	१५	भरारि	भारे
२५७	२	है	न्हैं
२५७	६	सुरतात	सुरतांत
२५९	५	पक्षि	पष
२५९	५	उडिराज	उडराज
२६०	५	चित	चित्त
२६०	८	फारी	फ़ारि
२६१	८	ऊचैं	ऊंचैं
२६१	१२	हाटिक	हाटक
२६१	१५	जोति	जोती
२६२	१७	विविस	बिवस
२६३	४	तीर	नीर
२६६	२२	वारियां	विरियां
२६७	११	झुकाति	झुंकनि
२७१	६	पीन	वीन
२७२	२	वाडी	वादी
२७२	५	छवै	ह्वै
२७२	२०	लषी	लखि
२७४	४	लग्नाष्टक	लगनाष्टक
२७४	१५	वनि	वनो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७४	२०	सोभाग	सोभाफाग
२७५	४	वोढि	ओढि
२७६	१८	फाग बिहार	फाग बिलास
२७७	११	भीजी	भीजि
२७८	२	पलटे	लपटे
२८०	१५	वघू	वधू
२८३	५	राकेसि	राकेस
२८३	१६	माति	गाति
२८४	२२	दय	दये
२८५	१	रासलता	रासरसलता
२८५	५	ज्यौन्ह	जौन्ह
२८५	५	रूपहरी	रुपहरी
२८५	१७	छाहि	छांहि
२८५	१८	रीझिर हे सोईनिराषि निसि	रीझिरहेसो-इ निराषि निस;
२८५	२१	छवै	ह्वै
२८६	१९	पक्वे	पक्के
२८७	१	सुप	सुष
२९०	७	जुवांहोय	होयजुवां
२९०	११	रच्यै	रच्यैं
२९०	१२	सज्व	सज्ज
२९१	१७	रही	रहि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१८	८	एक अपनौं	अपनौं
२१८	१९	तृभंगानिपर	तृभंगनि अंगनिपर
२२१	५	विवेष	विवेक
२२२	१	एकौं नहैं	एकौंन हैं
२२२	१७	वाकीन	वाकी न
२२३	११	वैष्णानव	वैष्णवन
२२३	१९	घाऊं	धांऊं
२२६	५	द्रव्य लियो	द्रव्य लियें
२२६	१०	हरि वंसजी	हरिवंसजी
२२६	२०	अनूराग	अनुराग
२२७	६	इषद	ईषद
२२७	१५	एकंठी	ए कंठी
२२८	१३	अव लौंकरैं हैं	अवलौं करैं हैं
२३०	१२	पर करमैं	परकरमें
२३०	१७	तत्तथेई	तत्तत्थेई
२३१	१७	निधान	निदान
२३१	२१	समझाय वेकौं	समझायवे कौं
२३२	२	अव लौंभी	अवलौं भी
२३३	३	परस	परस
२३३	१३	वहिमाला	वहि माला
२३४	१४	दोपे	देपी
२३६	१७	झुलावत	झुलावन
२३६	१९।२०	घटां	घटा
२३८	११	स्यामनदी	स्यामानदी
२३८	२२	अथ पद	अथ अन्यपद
२३९	१	वल्लभ रसिकजू	वल्लभरासिक जू
२३९	९	रीझनि बाही	रीझ निबाही
२४०	१३	यारी	यारि
२४२	६	यातें	(यातें)
२४३	८	छिनदू	छिनद्दू
२४३	१९	नागरन	नागर
२४४	८	रमां	रमा
२४४	१४	व्है	व्हैं
२४५	७	करुनामैं	करुनामय
२४५	७	करइ	करै
२४५	१७	सुरभीत	सुरभीन
२४८	१	जव	जवै
२४८	३	भरत	भरन
२४८	३	त्यागाव-हिनैं	त्याग वाहिनैं
२४९	९	धूंधिराति	धूंवराति
२५०	१६	तदनांतर	तदनंतर
२५१	३	प्रत्य	प्रति
२५२	१३	तदनांतर	तदनतर
२५३	४	पठ	पट

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१७	७	चित्त	चित
३१७	८	कुंड	झुंड
३१७	१०	॥ पेल	कवित्वं॥पेल
३१७	१४	॥ देवनि	सवैयो ॥ देवनि
३१७	१७	कहींयैं	कहींपैं
३१७	१८	॥ आई	कवित्वं॥ अई
३१७	२२	मसुरैं	मसूरैं
३१७	२२	॥ लाल	सवैयो॥ लाल
३१८	४	वादी	ठाढी
३१८	१०	॥ सिर	कवित्वं॥सिर
३१८	१२	रूमाल	रुमाल
३१८	१३	कित	किन
३१८	१५	॥ कीनी	सवैया ॥ कीनी
३१८	१८	॥ औंच	कवित्वं ॥ औंच
३१८	२१	छवाय	छ्वाय
३१९	१	॥गांस	सवैया ॥ गांस
३२०	२	वचनकवित्वं॥	वचन सवैया ॥
३२१	४	॥ आवते	सवैया ॥ आवतहे
३२१	११	कवित्त	सवैया
३२१	१३	जुवतिनि	जुवतीनि
३२२	३	तउ	तऊ
३२३	४	वहि	वही
३२३	७	हल्चल	हलचल्
३२४	५	छवैं	छ्वैं
३२६	१०	इत उतैं	इतैं उतैं
३२६	१७	गोरिनिकी श्रमसौंछ विवादीगु लालनिवा लसनीसि गरीजे ।	गोरिनिकी श्रमसौंछ- विवादीओ केसरिनीर सनीसिग रीजे ।
३२८	७	धन्यव्रज-धन्य	धनव्रजधन
३२८	७	धन्यव्रजप-रम	धनव्रजपरम
३२८	२१	॥छैल	॥१॥छैल
३२९	७	पेलि	षोलि
३२९	११	छवाय	छ्वाय
३२९	२०	धमारि घमारि	धमारि धमारि
३२९	२१	उदंगल	उदंगल
३३०	७	हीयो	हियो
३३०	७	कदंवतर	कदंवतरैं
३३०	७	वरसत्तहैं	वरसतहैं ॥१॥सवैया॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९२	१५	इह	इंह
२९५	१७	विंवैं	विंवैं
२९५	१८	हूकै	हूके
२९५	२२	ज	जा
२९६	१	पैं	(पैं)
२९६	५	अंधरे	अंधेर
२९६	२०	कोऊन	कोउन
२९७	११	सव	(सव)
२९७	१२	उततनैंकन्हू	उततनकन्हू
२९८	२	कहूंवै	कहुंवै
२९८	१६	दुलह	दूलह
२९९	२	सुरें	सुरे
२९९	११	कन्हू	कहूं
२९९	१४	ढुहूंयां	ढुहुंयां
३००	३	नागरी	नागरि
३०४	११	पुंन्य	पुन्य
३०४	२२	वधाई वधाई वधाई वधाई	वधाइ वधाइ वधाइ वधाई
३०६	१३	राधा	राधा
३०६	१७	॥लषिकैं	सवैया॥ लषिकैं
३०६	१९	नागरी	नागरि
३०६	२१	॥कीरतदा	कवित्वं ॥ कीरतदा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०७	९	देवा	देव
३०७	११	कुमेर	कुवेर
३०८	४	सम्हार	सम्हारैं
३०८	१७	॥ फूलन	सवैयो ॥ फूलन
३०८	१८	कईं	कइ
३०८	२०	साझी फूल	कवित्वं ॥ सांझीफूल
३०९	३	थाय	पाय
३१०	२२	होर	हार
३१२	१८	॥ छाई	सवैया॥ छाइ
३१२	१८	चितचिंतैं	चिंतैं चित
३१२	२१	॥ आई	कवित्वं ॥ आई
३१३	१	जोत	जोन्ह
३१३	९	॥ छाई	सवैयो॥ छाइ
३१३	१४	कुह	कुहू
३१३	१८	॥ जसुदा	सवैयो ॥ जसुदा
३१३	२१	॥ जहां	कवित्वं॥जहां
३१४	५	॥ नव	सवैयो ॥ नव
३१५	१२	भारीहैं गोवर्द्धन	गोवर्द्धन
३१६	१	छवैं	छवैं
३१६	१२	अनूंठी	अनूठी
३१७	३	॥ होरीमैं	सवैया ॥ होरीमैं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३४२	७	॥ ५१ ॥	॥५१॥कवित्वं ॥
३४२	११	॥ ५२ ॥	॥५२॥सवैया ॥
३४२	१२	सुघराई	सुघराई
३४२	१५	॥ ५३ ॥	॥५३॥कवित्वं ॥
३४२	१९	॥५४॥	॥५४॥सवैया ॥
३४३	११	॥५८॥	॥५८॥कवित्वं ॥
३४३	१५	॥५९॥	॥५९॥सवैयो ॥
३४३	१७	आवैरू	आवैरु
३४४	६	॥६३॥	॥६३॥कवित्वं ॥
३४५	९	तवहै	तवन्है
३४५	११	॥ ६९॥	॥६९॥सवैया ॥
३४५	२१	वंघे	वंधे
३४६	१४	न्है	न्है
३४६	१४	जैसीप	जैसीरूप
३४८	९	उछारैह॥	उछारैहै ॥
३४९	६	लछन	लच्छन
३४९	१८।१९	मुसक्यातहैं	मुसकातहैं
३५०	२१	षरम	परम
३५१	१३	हूलासतैं	हुलासतैं
३५१	१६	हूलासतैं	हुलासतैं
३५१	२०	व्रजरैं	प्रजरैं
३५३	१६	कन्हु	कन्हू
३५४	७	दोहा ॥ सोरठा ॥	॥ सोरठा ॥
३५५	१५	ऊंठ	ऊंट
३५५	१७	तामैं	तापैं
३५५	२१	कहत; सुनौं	कहत सुनौं
३५७	५	ब्रह्मादे	ब्रह्मादिक
३५७	८	श्रुकंल	शुक्ल
३५७	९	ग्रंस	ग्रंथ
३५८	१५	आंनांदित	आनंदित
३५८	२०	मनमैना	मननैना
३५९	१७	निहारे	निहारैं
३६०	८	राहिगईसुष	राहिगइसुप
३६०	२१	मेंटत	मेटत
३६१	२	धांई	धाइ
३६१	१२	डुलनिमैं ॥	डुलनिमैं॥४॥
३६१	१७	कंवनीय	कवनीय
३६२	१३	तांलनि	तालनि
३६२	१४	किंकिनींकुणित	किंकिनीकुणित
३६३	९	उठैं	ऊठैं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३०	८	सषीसांवरी गोरी	साषिसांवरि गोरि
३३०	११	॥ २ ॥	॥२॥कवित्वं॥
३३१	३	मुरसै	मुरस्सै
३३१	७	॥६॥	॥६॥सवैया॥
३३१	१२	जामिंनी	जामिनी
३३१	१६	॥ १ ॥	॥१॥सवैया ॥
३३२	२	॥ २ ॥	॥२॥कवित्वं॥
३३२	११	आई	आइ
३३२	१४	॥६॥	॥६॥सवैया॥
३३२	१५	झुकी	झुकि
३३२	१७	दोष	दीप
३३२	१८	॥ ७ ॥	॥७॥कावित्वं
३३२	२२	तरवरत	तरवरतर
३३३	१८	यौंन	पौंन
३३४	७	साचही	सांचहीं
३३४	१०	॥५॥	॥५॥सवैया॥
३३४	११	छवै	छ्वैं
३३४	१४	व्है	ह्वै
३३४	१४	प्रय	प्रिय
३३४	१७	॥ ७ ॥	॥७॥कवित्वं॥
३३५	२	जागी	जागि
३३५	६	धूमैं	घूमैं
३३५	८	॥११॥	॥ ११ ॥ सवैया॥
३३५	१८	अंषिय	अंषियां
३३५	१८	॥ १४ ॥	॥१४॥कवित्वं ॥
३३६	१४	॥ १८ ॥	॥१८॥सवैया ॥
३३७	२	॥ २१ ॥	॥२१॥ कवित्वं ॥
३३८	५	॥ २७ ॥	॥२७॥ सवैया ॥
३३८	७	टारीटरैंनड रैंनागर	नागरटारीटरैंनडरैं
३३८	१४	रिझिरिझा ईहैं	रीझिरिझा ईहैं
३३९	३	॥ ३२ ॥	॥३२॥कवित्वं ॥
३३९	१६	(अथअष्टक)	(अथअष्टकसवैया)
३४०	२१	॥ ४३ ॥	॥४३॥कवित्वं ॥
३४१	३	॥४४॥सषी	॥४४॥सवैया ॥ सषि
३४१	७	॥४५॥	॥४५॥कवित्वं
३४१	२०	॥४८॥	॥४८॥सवैया ॥
३४२	१	वाव नैन	वा वनैं न

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९७	१४	चालनि	चालनि ॥
३९८	१	ईहि	इंहिं
३९८	९	तनकत	तनक
३९९	४	रही	राहि
३९९	१६	दीध	दधि
४००	८	तऊ	तउ
४०२	६	थां मैं	थां मैं
४०२	१४	तटी	ताटि
४०२	१६	दुपटे	दुपट्टे
४०२	२०	घीर	धीर
४०३	१२	चवईया	चवइया
४०५	६	वित्तन	वितन
४०५	६	रही द्रुम	राहि द्रुम
४०५	१७	दूरिककारि	दूरिकारि
४०६	२	द्दहूं	ढुंढुं
४०६	५	मृद्दंग	मृदंग
४०६	१४	कीयैं	कियैं
४०७	४	कईक	कइक
४०७	४	कई	कइ
४०७	४।५	कईक	कइक
४०७	१९	कुह्की	कुहाकि
४०८	१०	लगि	लगी
४०८	२२	ताहि	ताही
४०९	१	गागरिया	नागरिया
४०९	२२	सुवामत्त	सुवासमत्त
४१०	३	नागीरय	नागरिया
४११	१	लई	लइ
४११	३	गऊर	गउर
४१४	११	कंमल	कमल
४१५	१३	फूरवी	पूरवी
४१५	२१	द्दिग	द्दग
४१७	१६	कवहून	कवहुन
४१७	१७	गउ	गऊ
४१८	१६	मेठै	मेह
४२०	९	लाल	लाल०
४२१	११	घूंवट	घूंघट
४२१	१८	उराझि	उरझी
४२२	५	॥ इन	॥ दोहा ॥ इन
४२२	६	कह्रु	(कह्रु)
४२२	९	गया	(गया)
४२८	२०	भई	भइ
४२९	२	दाईन	दाइन
४३१	१५	भजि	भजी
४३३	४	मगरही	मगराहिं
४३३	१३	लढकीली	लडकीली
४३३	१९	तितात	तिताल
४३४	१६	धुं	धूं
४३५	२२	भांवेर	भांवरे
४३६	९	रहासिमंग-लश	इस पदमें तुकके अंतमें (ई) है वह (इ) है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६५	५।६	भई	भइ
३६६	१	लखि	लखि
३६६	४	भई	भइ
३६८	७	रहैं	रही
३६८	१४	दामिनी	दामिनि
३६८	१५	कूंज	कुंज
३६८	२०	दोऊ	दोउ
३६९	१२	विथरां हैं वौंर	विथरोहैं वार
३७०	१३	दोऊ	दोउ
३७०	१६	कीं	कि
३७१	४	छवैं	छवैं
३७१	१३	व्रह्म	ब्रह्म
३७३	२	अवत	आवत
३७३	७	थह	थाह
३७४	१	दोऊ; दोऊ	दोउ; दोउ
३७४	१३	छुटैं	छुटे
३७४	२१	उरझाहिं	उरझांहिं
३७५	८	झूकत	झुकत
३७६	२०	पेंली	पेल
३७७	१	पाछ	पाछैं
३७७	१४	सिंघु	सिंधु
३८१	१६	घन	धन
३८३	३	सास्त्र	शास्त्रसु
३८४	१	वृंदावन	वृंदावनकी
३८४	९	जेवि	जेवी
३८३	११	आसाजात्री	आसामनु-जात्री
३८४	१२	काहू	काहूकौं
३८३	२०	पर	परम
३८५	२२	रांज	राज
३८६	१३	जंवूनींवू	जंवुफलनीवू
३८६	१७	पोवतमाला	पोवतानितप्र-तिमाला
३८६	२०	फै रंगही	फैटा रंगही
३८८	२१	हहां	इहां
३९०	१	वहुतव	वहुत
३९०	४	सरसायो	सवायो
३९१	११।१२	रासिक-ही रासिकही	रासिकाहि
३९१	१३	कुज	कुंज
३९१	१४	निसान	निस्सान
३९१	१५	विरंद	विरद
३९२	१४	भियारी	विहारी
३९३	४	मलातं	मलात
३९३	८	काहु पैं	काहूपैं
३९५	१	सूरत	सुरत
३९५	१९	सकुजीले	सकुचीले
३९६	१२	पय	पिय
३९७	३	कीनौं	कीनौं ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८०	१	प्रीतम	प्रीत
४८०	१०	नैनसफस	नैनफस
४८०	१९	नैव	नव
४८१	११	वदास्त	वदस्त
४८२	१५	ऐसा	ऐसा
४८४	५	हूस्न	हुस्न
४८४	८	तव	(तव)
४८४	१२	जुवान	जुवां
४८५	२	छप्पै	यह छप्पय महाराज श्री नागरीदास-जीकी प्रशं-साकी है। और इनके भतीज महा-राज श्रीवि-रदसिंहजी की बनाई है।
४८७	२१	सकुचिले	सकुचीले
४८९	१९	दौ	दोउ
४९०	५	त्रुटि	त्रुटी
४९०	१४	मप	मुख
४९०	१६।१७	चक	चमक
४९२	२	दोऊ	दोउ
४९२	११	छवै	छवैं
४९२	११	कोऊ	कोउ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४९२	१४	दोऊ	दोउ
४९३	११	नवका	नाव
४९४	२१	हियहसि	हियही स
४९८	१०	रागकछु	राग ॥ क
५००	८	सौंघैं	सौं धैं
५०१	११	परै ॥ आजु	परैं आ
५०३	९	चीमंकैं	चिमं
५०३	१०	मूरली	मुर
५०३	१४	पहुंचात ॥	प
५०४	६	जीं हिं	
५०६	८	समधानि	
५०६	१५	मद	
५०७	२१	गोईये	
५०८	२२	मूके	
५०९	४	आसू	
५१०	१	दो	
		र	
५११	९	ह	
५११	२२		
५१३	४		
५१३	१७		
५१६	१०		
५१६	१		
५१७			
५१७			
५१९			

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४४०	१	चौरी	चौंरी
४४०	२	चोरी गोरी	चौंरागोरी
४४३	११	आनंदैं	आनंद
४४३	२१	श्वेत	स्वेत
४४६	४	सोई	सोइ
४४६	८	छवैं	छ्वैं
४४६	१६	गई	गइ
४४७	११	गारो ॥ मोहैं	गारो मोहैं
४४९	१०	वोलैंत्तत्त	बोलैं तत्त
४५०	८	चहूं	चहुं
४५०	१७	नंन नंद	नंदनंद
४५१	३	सैलहोनैं	सैनलहोनैं
४५२	१४	जनर	नजर
४५२	२२	घारि	धारि
४५३	४	नागरदे	नॉगरदे
४५४	२	आगौनैं	अगौंनैं
४५४	४	टौंनौं	टौंनैं
४५४	१९	होधोषे सौं	धोषे सौं (होषेसौं) इत्यपि
४५५	१६	जीजैरौं	जैंरो (जीरो) इत्यपि
४५८	७	वीतती	वीनती
४५८	८	मिलिये ॥	मिलियेजाय
४५८	२०	नाची	नीची
४५९	१५	घिरिंधारि	घिरिघारि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५९	२२	वरसैं ॥	येरी वरसैंयेरी
४६०	२०	रतवत	रतिवंत
४६१	१२	दामिनी	दामिनि
४६२	१०	अखंडि· तरवर	अखंडितत· रवर
४६४	१५	तरैं ॥ जमुना	तरै जमुना
४६८	१४	हिंडोरौं ॥	हिंडोरैं ॥
४६९	१६	पषग	षग
४७०	१२	सहैंदी ॥ वह	सहैं दीवह
४७२	२१	छईया ॥	छइया ॥
४७२	२१।२२	अमर ईया॥	अमरइया ॥
४७३	१९	हंरि	हरि
४७४	९	आनंद्धन	आनंदघन
४७४	१९	मुरलीका	मुरलिका
४७७	७	सित्प	सित्फ
४७७	१५	पूव	षूव
४७८	२०	दरहरतरी-क	दरदहरतरी-क
४७९	७	तकुल्लहफ	तकल्लुफ
४७९	२०	रप्यूं	रष्यूं
४७९	२१	क्याहैं ॥ मुस्कल	क्याहैं मुस्कल
४८०	१	गई	गइ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१९	रझि	रीझि
४१९	१२	रूचि	रुचि
४१९	२२	धर	घर
४४१	१७	मुलि	भूलि
४४	१०	श्रवन	श्रवन
४४६	२१	संगउरंग	संगगउरंग
४४६	१०	कहंह्वायरी	कहुंहायरी
४४६	५	तितात	तिताल
		मन	मन
४४७	१	दत	देत
		विघुर्नित	विघूर्नित
४४९	१०	रप	निरष
४५०	८	महल	औमहल
४५०	१७	सैल	अैसैल
४५१	३	सैादाल	नागरीदास
४५२	१४	ज॰	घरां
४५२	२२	घारि	भरांवा भरांभरांवा
४५३	९	नागरदे	सइयें
४५४	२	आगौनैं	पावां
४५४	४	टौनौं	ह्यौ अदभुत
४५४	१९	होवोषे	थाको है
४५५	१६	जीजैरौं	भईआनंद सावरी
४५८	७	वीतती	
४५८	८	मिलिये ॥	ी ॥
४५८	२०	नाची	॥
४५९	१५	घिरिधारे	ि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५४१	१८	जिहीं	जिहिं
५४२	७	नागरी	नागरि
५४२	१२	घाम	धाम
५४२	१५	या पद	पद
५४२	१६	विपुलकृत	विपुलकित
५४२	२१	तिहिं	तिन्हैं
५४३	१	म्हारि	म्हारि ॥५॥
५४३	१९	मनसोहन	मनमोहन
५४४	३	हूती	हुती
५४४	१७	ह्वै	न्है
५४४	२२	सांझि	सांझी
५४४	२३	च॰लाप	आलाप
५४५	१	दहुंन	दुहुंन
५४५	२	ह्वैं	न्हैंरही
५४५	९	ह्वैं	न्है
५४६	२	अषियानि	अंषियानि
		माझ	मांझ
५४६	२	अषियांही	अंषियांही
५४६	३	सांझ	सांझ ॥
५४६	४	अषियनकी	अंषियनकी
५४६	५	ह्वैं	न्है
५४६	१६	उयरचाई	उघरचाई
५४७	१	नैन	नैंन ॥
५४७	२	पदकनीकी	पदकानिकी
५४७	८	धुकतिहि	धुकतितिंहिं
५४७	१०	रहिग	रहिगइ
५४७	१९	कवल	कंवल
५४७	२०	ऊफनावैं	उफनावैं
५४८	४	दविजात	दवीजात